प्रकाशक :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता—१

●

प्रथमावृत्ति :

जून, १६६०

आषाढ २०१७

●

प्रति संख्या

१५००

●

पृष्ठांक :

७२८

●

मूल्य :

बीस रुपये

●

मुद्रक :

रेफिल आर्ट प्रेस,

कलकत्ता

प्रकाशकीय

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनंदन में महासभा की ओर से तेरापंथ के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी की कथानकमय रचनाओ का यह संकलन प्रस्तुत करते हुए परम हर्ष हो रहा है। यह संग्रह "भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर" का द्वितीय खण्ड है। इसमें स्वामीजी द्वारा राजस्थानी भाषा में रचित २१ आख्यान हैं।

आख्यान अत्यन्त सरस ही नहीं परन्तु बड़े वैराग्य पूर्ण भी हैं। स्वामीजी की महान् कवित्व शक्ति का इनसे बड़ा अच्छा परिचय मिलता है। ये आख्यान सब के लिए उपयोगी हैं।

पाठक इस परम उपयोगी ग्रन्थ से अत्यन्त लाभान्वित होगे, इसमें कोई सन्देह नहीं।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता—१
२७ जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक,
साहित्य-विभाग

भूमिका

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर के इस द्वितीय खंड में स्वामीजी की कथानकमय २१ रचनाओ का संग्रह है। इन कथानको के संक्षिप्त सार इस प्रकार हैं

१—गोसाला री चौपाई

स्वामीजी ने मखलिपुत्र गोशालक का जीवन वृत्तात 'भगवती सूत्र' के १५ वें शतक से लिया है।

मखलि नाम का एक भिक्षाचर था। उसकी पत्नी का नाम भद्रा था। भद्रा गर्भिणी हुई। एक वार मखलि भिक्षाचर हाथ मे चित्रपट लेकर गर्भवती भद्रा के साथ शरवण ग्राम मे गोवहुल ब्राह्मण की गोशाला मे ठहरा। वही पर भद्रा ने एक पुत्र को जन्म दिया। गोशाला मे पैदा होने के कारण वालक का नाम गोशालक रखा गया। गोशालक वडा हुआ और वह भी पिता की तरह चित्रपट लेकर आजीविका करने लगा।

एक समय भगवान् महावीर स्वामी अपनी छद्मस्थ अवस्था मे विचरते हुए नालन्दा के तन्तुवाय शाला में चातुर्मास व्यतीत करने लगे। भगवान् ने विजय नामक गाथापति के घर मासिक उपवास का पारण किया। विजय गाथापति के दान से उसके घर मे पांच दिव्य प्रगट हुए। उस समय गोशालक भी तन्तुवाय शाला में चातुर्मास व्यतीत कर रहा था। उसने विजय गाथापति के दान से उसके घर पाँच दिव्य प्रगट होने की वात सुनी और भगवान् को प्रभावशाली पुरुष जान उनके पास आकर कहा—"भगवन्! आप मेरे धर्माचार्य हैं तथा मैं आप का शिष्य हूँ।" भगवान् ने गोशालक की इस वात पर ध्यान नही दिया। भगवान् ने कोल्लाग सन्निवेश की तरफ विहार किया। गोशालक भी उन की खोज करता हुआ उनके पास पहुचा और पुन वही वात दुहराई—"भगवन्! आप मेरे धर्माचार्य हैं, मैं आपका शिष्य हूँ।" भगवान् ने उसकी वात स्वीकार कर ली। ६ वर्ष तक गोशालक भगवान् के साथ रहा। इसी वीच अनेक घटनायें घटी। गोशालक नियतिवादी हो गया।

गोशालक एक समय भगवान् के साथ कूर्म गाव जा रहा था। गांव के वाहर वैश्यायन नाम का वल तपस्वी दोनो वाहुओ को ऊँचा कर सूर्याभिमुख हो सूर्य की आतापना ले रहा था। सूर्य की गर्मी से वैश्यायन के सिर से जूऐं नीचे गिर रही थी। वह दया से पुन उन जूओ को सिर मे रख लेता था। गोशालक यह देख वोला—"तुम मुनि हो या जूओ के शय्यातर ?" वार-वार इसी वात को दुहराने से मुनि कुपित हुआ। उसने गोशालक को भस्म करने के लिये तेजोलेश्या छोडी। भगवान् ने शीतलेश्या छोड कर गोशालक को वचा लिया। गोशालक ने भगवान् से तेजोलेश्या प्राप्त करने की विधि पूछी। भगवान् ने विधि वता दी। उसने भगवान् के द्वारा वताई गई विधि से तेजोलेश्या प्राप्त कर ली। वाद मे वह भगवान् महावीर से अलग हो गया। कुछ दिन के वाद गोशालक से छ दिशाचर आ मिले। तव से वह अपने आपको 'जिन' 'केवली' नही होते हुए भी 'जिन' 'केवली' कहने लगा। उसने एक नया सम्प्रदाय कायम किया। इस सम्प्रदाय का नाम आजीविक सम्प्रदाय पडा और वह उसका नेता वना। उसने ज्योतिष विद्या के प्रभाव से भूत एव भविष्य के निमित्त कथन द्वारा अपने लाखों उपासक वना लिये। वह भगवान् का प्रतिस्पर्धी वना। वात-वात पर वह भगवान् को नीचा दिखाने का प्रयत्न करता और अपने आपको सच्चा तीर्थङ्कर कहने लगा।

एक समय गोशालक ने सुना—भगवान् महावीर मुझे 'जिन' नही किन्तु 'जिनप्रलापी' कहते हैं। वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और अपने शिष्य समूह के साथ सावत्थी नगरी के कोष्ठक उद्यान मे, जहां भगवान् अपने शिष्यो के साथ बैठे थे, आकर अनर्गल प्रलाप करने लगा। यहाँ तक कि भगवान् को तेजोलेश्या द्वारा जलाकर भस्म कर देने की धमकी देने लगा। गोशालक की ऊटपटाँग बातें सुनकर सर्वानुभूति अनगार से नही रहा गया और वह गोशालक को भद्र व्यवहार करने के लिए समझाने लगा। गोशालक पर इसका उल्टा ही असर हुआ। उसने तेजोलेश्या द्वारा सर्वानुभूति अनगार को भस्म कर दिया। इसी तरह सुनक्षत्र अनगार ने विरोध किया तो उसने उसे भी जला दिया। भगवान् ने गोशालक को समझाया किन्तु उसने उल्टे भगवान् पर अपनी तेजोलेश्या छोड दी। वह तेजोलेश्या भगवान् पर उतनी असरकारक सिद्ध नही हुई बल्कि उसीके शरीर मे प्रविष्ट हो उसके शरीर को जलाने लगी। भगवान् ने बतलाया—"गोशालक! तू अपने ही दुष्कृत्यो से आज से सातवें दिन छद्मस्थ अवस्था मे ही काल-कवलित होगा।" गोशालक शरीर-दाह के कारण विक्षिप्त हो गया और उसी अवस्था मे वह कोष्टक चैत्य से निकल हलाहला कुम्भारिन के कुम्भकारायतन मे पहुचा। शारीरिक जलन की शान्ति के निमित्त वह कच्चा आम चूसता, मद्य-पान करता और बार-बार गीत गाता, नाचता, कुम्भारिन को हाथ जोडता और जल से देह को ठण्डा करता था। इसी प्रकार उन्मत्त अवस्था में उसने छ दिन व्यतीत किये, सातवे दिन अपना मृत्युकाल नजदीक आया जान उसे अपने पापो का भान हुआ और अपने पिछले कृत्यो का पश्चाताप करता हुआ वह कहने लगा "वस्तुत जिन मैं नही, किन्तु भगवान् महावीर ही हैं।" इस प्रकार पश्चाताप करते हुए उसने अपनी देह छोडी। गोशालक ने १६ वर्ष तक आजीविक सम्प्रदाय का प्रचार किया।

इस चौपई मे श्रमण भगवान् महावीर के जीवन की अनेक घटनायें प्रसग वश आई हैं उनमें एक घटना गोशालक को शीतलेश्या का प्रयोग कर बचाना है। महावीर के इस कार्य को स्वामीजी ने अहिंसा की दृष्टि से छद्मस्थ अवस्था की चूक मानी है। इस विषय मे उनका मन्तव्य सर्व सप्रदायो से भिन्न पडता है। जब उन्होने यह बात लिखी तो उनके शिष्य भारीमालजी स्वामी ने कहा—"गुरुदेव! इस गाथा को निकाल दें, लोग इसके कारण, व्यर्थ वितण्डावाद करेंगे।" स्वामीजी ने पूछा, "जो लिखा है वह सत्य मालूम देता है या नही।" भारीमलजी ने कहा, "है तो सत्य।" स्वामीजी ने कहा, "तब लोगो की परवाह नही।"

स्वामीजी ने महावीर के कार्यो तक को उन्हीकी सिद्धान्त-तुला पर तोला और आलोचना का भय न करते हुये अपने विचारो को स्पष्ट रूप से रखा। स्वामीजी के साहस एव स्पष्टवादिता का यह एक ज्वलत उदाहरण है।

भगवान् महावीर ने छद्मस्थ अवस्था मे गोशालक को शिष्य बनाया, इस घटना को तो सभी जैनी अछेरा—आश्चर्यभूत—मानते हैं। स्वामीजी ने महावीर की जो भूल बताई, उसमें वे अकेले ही हैं। स्वामीजी को सत्य के मार्ग मे अकेले चलते हुए भी कभी भय नही लगा।

गोशालक भगवान् महावीर का प्रत्यनीक था। उसने तेजोलेश्या का प्रयोग कर भगवान् महावीर के समीप ही उनके दो अनगारो को भस्म कर दिया पर महावीर ने अपनी शक्ति शीतलेश्या का प्रयोग कर उनकी रक्षा न की। अहिंसा की दृष्टि से महावीर का यह कार्य अर्थ-गभीर है।

गोशालक गुरु-निंदक था। इस कृति के अन्त मे शिष्यो को यह बोध मिलता है कि वे कभी भी गुरु की आशातना न करें :—

आचार्य नें उवभाए ना ए, प्रतणीक मत होयजो कोय।
अजस कीजो मती ए, वले आगुण मत बोलजो सोय॥

वले अकीरत करजो मती ए, कीधा हुवें दुख अनंत।
मों जिम संसार में ए, भमण करोला बार अनंत॥

२—चेडा कोणक री सिंध :

इस कथा के आधार 'निरयावलिका' और 'भगवती' सूत्र हैं।

चम्पा नगरी में श्रेणिक का पुत्र कोणिक नामक राजा राज्य करता था। उसकी पद्मावती नाम की अत्यन्त रूपवती रानी थी। श्रेणिक ने राज्य के ग्यारह हिस्से कर पुत्रो मे बाँट दिए थे। विहल कुमार को राज्य के दो रत्न हाथी और हार दिये। वह पिता के दिये हुए सेचनक हाथी पर आरूढ हो दिव्य कुण्डल, वस्त्र और हार को पहन विलास करता था। उन्हे देखकर पद्मावती रानी ने सेचनक हाथी एवं हार को अपने अधीन करने के लिए पति को प्रेरित किया। कोणिक ने रानी को बहुत समझाया परन्तु रानी ने हार और हाथी प्राप्त करने का हठ नही छोडा। अन्त में रानी की बात मान कर कोणिक ने विहल से हार और हाथी की याचना की। उत्तर में कुमार ने कहा—"आप मुझे राज्य का हिस्सा दे तो मैं हार और हाथी देने को तैयार हूँ।" कोणिक ने यह स्वीकार नही किया। तब कुमार हार और हाथी लेकर अपने नाना चेटक के यहाँ विशाला नगरी पहुच गया। कोणिक को जब यह मालूम हुआ तब उसने चेटक के पास दूत भेजकर कुमार सहित हार और हाथी की माँग की। साथ में यह भी कहला भेजा कि अगर कुमार और हार-हाथी को नहीं लौटाया, तो युद्ध के लिये तैयार हो जाय। चेटक ने दूत के द्वारा कहला भेजा—"हमें युद्ध मजूर है किन्तु शरणागत कुमार को हम लौटाने के लिए तैयार नही।"

इस प्रकार कोणिक अपने काल कुमार आदि दसो सौतेले भाइयो के साथ अपनी विशाल सेना लेकर आ गया। चेटक राजा ने भी अपने अठारह देशो के राजाओ को सेना सहित युद्ध के लिये बुला लिया। दोनो में घोर संग्राम हुआ। चेटक ने अपने अमोघ बाणो से दसों कुमारों को सेना सहित युद्ध में मार डाला। कोणिक ने, अपने दसो भाइयों को मरा हुआ देख, अपनी हार सुनिश्चित जान, देवाराधन किया। शक्रेन्द्र और चरमेन्द्र उपस्थित हुए। शक्रेन्द्र प्रसन्न हुआ और उसने राजा को वज्र कवच दिया जिसे पहनने के बाद उस पर बाणो का कोई असर नही होता था। इन्द्र के अमोघ कवच से कोणिक युद्ध मे जीत गया। महाशिलाकटक और रथमूसल के दो सग्राम हुए। पहले में ८४ लाख और दूसरे मे ९६ लाख मनुष्य मारे गये। महाराजा चेटक हार गये। उन्होने संथारा किया और वे मर कर १२ वें देवलोक में उत्पन्न हुए। हाथी अग्निकुण्ड मे गिर कर मर गया। हार देवता ले गये। विहल कुमार ने वैराग्य भाव से दीक्षा ली। युद्ध मे मारे गये काल कुमार आदि की दसो माताओ ने भी दीक्षा ली और रत्नावली, कनकावली आदि तप कर अपने जीवन को सार्थक किया। विहल कुमार, हार और हाथी कोणिक के हाथ नही आये।

इस सिंध के आरम्भिक अश मे कोणिक ने अपने पिता श्रेणिक को किस तरह कैद किया और किस तरह श्रेणिक ने आत्म-हत्या की इसका बडा हृदय-द्रावक वर्णन है।

लोभ युद्ध का मूल कारण किस तरह है, यह इस द्वितीय रत्न मे बडे मार्मिक ढग से बतलाया गया है। युद्ध का जैसा रोमांचकारी वर्णन इसमें है, उससे युद्ध की विभीषिका का भयानक चित्र सामने खिच जाता है और युद्ध से तीव्र घृणा उत्पन्न हो जाती है। "सग्राम मे मारे जाने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है"—इस मिथ्या धारणा को भगवान महावीर ने कैसे दूर किया, इसका उल्लेख इस आख्यान मे है। जब चेटक राजा संग्राम मे गया तो उसका सेनापति वरुण भी उसके साथ था। वरुण नागराज का पौत्र था। वह बेले-बेले पारण किया करता और जीव-अजीव आदि तत्त्वो

का जानकार था। चेटक ने उसे रथमूसल सग्राम मे भेजा। वेले के पारण का दिन था, पर जव राजा की आज्ञा से युद्ध मे जाना पडा तो उसने तेला कर लिया। वह यह अभिग्रह लेकर युद्ध-क्षेत्र मे प्रविष्ट हुआ कि मैं पहले किसी पर वार न करूंगा। रथ में वैठ वह सग्राम-भूमि मे आया। उसके साथ दर्भ का संस्तारक—विछौना था। कोणिक की पक्ष से वार करने का आह्वान किया गया। वरुण वोला, "मेरे अभिग्रह है। 'हूं पेंहली न करूँ पर घाव'—मै पहले पर-घात नही करता।" शत्रु के वाण से वरुण घायल हुआ। इस पर उसने भी वाण से वार किया और शत्रु को मार गिराया। इसके वाद वह संग्राम-भूमि से निकल एकान्त स्थान मे गया। डाभ का संस्तारक विछा, आलोचना कर निशल्य हो, सिद्धो को 'णमोत्थुण' कर सथारा—आमरण अनशन कर दिया। उसका वाल मित्र भी उसके समीप आया और उसका अनुसरण करते हुए उसने भी सथारा कर दिया। वरुण ने धर्म का आराधन करते हुए समाधि-मरण प्राप्त किया। यह जान कर देवी-देवताओ ने हर्ष से नाटक रचा और वरुण के कलेवर पर गधोदक तथा फूलो की वर्षा की और वडा महोत्सव किया। देवी-देवताओ को देख कर लोगो ने किंवदन्ती शुरू कर दी 'सगराम में लडनें मरें जी, वरें अपछरा आय'—जो सग्राम मे लड कर मरता है उसे आकर वरण करती हैं।" गौतम ने लोगो की यह वात महावीर तक पहुँचायी। भगवान् ने वरुण की सारी वात वता कर महोत्सव का सच्चा कारण वरुण का धर्माराधन वताया। स्वामीजी इसी वात को ध्यान मे रख कर कहते हैं :—

क्रोधी मांनी थका मरे तेहनें जी, न वरे अपछरा आंण।

वैशाली नगरी के पतन की कहानी तो मनुष्य के पतन की ही कहानी है। कोणिक की गणिका ने कुलवालुडा साधु का किस तरह पतन किया और उसके पतन से किस तरह वैशाली का पतन हुआ—यह कथा वडी ही रसपूर्ण और उपदेशप्रद है।

चेटक और कोणिक के युद्ध का मूल कारण कोणिक की रानी पद्मावती थी। अंत मे कोणिक की जो दुर्दशा हुई, उसके मूल कारण को लक्ष्य मे रखते हुए स्वामीजी ने कहा है :—

विरची तो वाघण सूं वुरी, अण विरची करे पीत अपार।
दोनूं परकारें कंत ने, मेल दें नरक मझार॥

इसके वाद स्वामीजी ने कुलक्षणी स्त्री का जो चित्र उपस्थित किया है, वह कवि की चरित्र-चित्रण की असाधारण विशेषता का वडा सुन्दर उदाहरण है और उनकी कल्पना-शक्ति की अत्यन्त उर्वरता को प्रकट करता है। कुलक्षणी नार के चरित्र को उपस्थित करने के वाद स्वामीजी कहते हैं :—

सगला नर सारिखा नही, नही सारखी नार।
केइ भला ने केइ वुरा, चलीयो जाय ससार॥

कवि ने इस उद्‌गार के द्वारा यह प्रगट कर दिया है कि सव नारियो के प्रति हीन भावना का पोषण करना सत्य से परे है। पुरुषो की तरह स्त्रियाँ भी सुलक्षणी कुलक्षणी दोनो हो सकती हैं।

इस व्याख्यान का उपसहार वडा ही सारगर्भित है। उसमे युद्ध के मूल कारण का निर्देश करते हुए कनक-कामिनी दोनो को विप के समान वताया है।

३—तामली तापस रो वखाण :

यह आख्यान 'भगवती सूत्र' शतक ३ उद्देशक १ से लिया गया है।

ईशान इन्द्र के नाटक को देख कर गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से प्रश्न किया—"भगवन्! यह ईशान इन्द्र पूर्व में कौन था और उसने कौन-सा ऐसा कार्य किया जिससे इसे ऐसा वैभव मिला ?"

तब भगवान ने फरमाया—"यह पहले बाल तपस्वी तामली तापस था। उसका कुछ परिचय इस प्रकार है ताम्रलिप्ति नाम की नगरी मे तामली नाम का गाथापति था। उसके पिता का नाम मोरीय गाथापति था। एक समय तामली गाथापति सोचने लगा—मैंने पूर्व जन्म मे बहुत पुण्य का उपार्जन किया है जिसके कारण ही मुझे इतनी प्रचुर मात्रा मे धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई है और मेरा परिवार विशाल है। अगर अब भी अच्छा काम करूँगा, तो भविष्य मे भी ऐसा ही वैभव प्राप्त होगा। अतः मैं विशाल परिवार एव मित्र, ज्ञाति-जन को भोजन करा, काष्ठ पात्र हाथ मे ले, बेले-बेले का तप कर तपस्वी जीवन व्यतीत करूँ। दूसरे दिन उसने अपने विचार के अनुसार ज्ञाति, मित्र आदि को भोजन कराया और उन्हें वस्त्रादि से सम्मानित कर आप तापस बन गया।

प्राणामा प्रवज्या को धारण कर वह सूर्य के सम्मुख बाहुओ को ऊँचा कर आतप सहने लगा। बेले के पारण के दिन वह जो आहार लाता उसे २१ बार धोकर नि सत्व बना कर खाता था।"

गौतम स्वामी ने बीच ही मे भगवान से पूछा—"भगवन्! प्राणामा प्रवज्या कैसी होती है ?" भगवान ने कहा—"जो भी जीव सामने मिले— चाहे वह सेठ हो या सेनापति, कौवा या कुत्ता उसे प्रणाम करना प्राणामा प्रव्रज्या है। तामली तापस ने इसी जिन-आज्ञा बाहर प्राणामा प्रव्रज्या को धारण कर तप किया। अन्तिम समय मे उसने पादोपगमन सथारा किया। उस समय बलिचंचा नगरी इन्द्र रहित थी। देवताओ ने तपस्वी तामली के मन मे इन्द्र-पद की कामना उत्पन्न करने की चेष्टा की। पर तामली ने अपनी तपस्या के बदले इन्द्र-पद की कामना नही की। साठ हजार वर्ष का आयुष्य पूर्ण कर तप के प्रभाव से वह स्वाभाविक तौर से ईशान देवलोक का इन्द्र हुआ।

"इधर बलिचचा राजधानी के देवताओ को जब यह मालूम हुआ कि तामली तापस ईशान देवलोक का इन्द्र हुआ है तब वे बहुत क्रुद्ध हुए और तामली तापस की मृत देह की दुर्दशा करने लगे। जब ईशानेन्द्र को इसका पता लगा तब अत्यन्त क्रुद्ध हो उसने तेजोलेश्या छोड़ी जिसके कारण देवी-देवताओ के शरीर जलने लगे। देवताओ ने अपने अपराध की क्षमा मांगी। ईशानेन्द्र ने उन्हें क्षमा प्रदान की। अब बलचचा राजधानी के देव ईशानेन्द्र का खूब सम्मान करने लगे और उसे अपना अधिकारी मानने लगे।" भगवान महावीर ने कहा—"गौतम! पूर्वोक्त तपस्या के प्रभाव से ही ईशान इन्द्र ने यह ऋद्धि प्राप्त की है।"

आगम मे कहा है—धर्म क्रिया केवल कर्मक्षय के लिए करनी चाहिये अन्य किसी सांसारिक हेतु के लिए नही। इस व्याख्यान मे स्वामीजी ने इस सिद्धान्त के साथ-साथ इससे सम्बन्धित एक अन्य सिद्धान्त पर भी प्रकाश डाला है। जैसे धर्म-क्रिया मोक्ष के लिये करना उचित है उसी तरह धर्म-क्रिया करने के बाद उसके बदले मे सांसारिक फल की कामना करना भी उचित नही। जो धर्म-क्रिया कर बदले मे निदान—सासारिक फल की कामना—करता है उसकी धर्म-करनी ससार-वृद्धि का कारण होती है। इस व्याख्यान के प्रारभिक दोहे बडे ही सुन्दर हैं और उसके सार को अच्छी तरह उपस्थित कर देते हैं

जिन सासण में इम कह्यो, करणी करनी छे मुगत रें काज।
करणी करे नीहाणो नही करें, ते पामे मुगत रों राज॥
करणी करे नीहाणो करे, ते गया जमारो हार।
सभूत नीहांणो कर ब्रह्मदत्त हूवो, गयो सातमी नरक मझार॥
करणी करें नीहांणो नही करे, ते गया जमारो जीत।
तामली तापस नीहांणो कीधो नही, तो इसाण इन्द्र हुवो छे वदीत॥

जब देवी-देवताओ ने बाल-तपस्वी तामली तापस को इन्द्र बनने के लिए निदान करने की प्रार्थना की तब उसके मन मे जो विचार उठे उनको स्वामीजी ने उसके मुह से बड़े ही मार्मिक रूप से प्रगट करवाया है। तामली सोचता है

> मून साझ रह्यो पिण बोल्यो नही, नीहाणो पिण न कीयों कोय।
> वले मन मे विचार इसडो कीयो, करणी बेच्या आछो नही होय॥
> जो तपसा करणी म्हारे अलप छे, घणो चितव्यो हुवे नही कोय।
> जो तपसा करणी म्हारे अति घणी, थोडो चितव्यो सताब सूं होय॥
> जेहवी करणी तेहवा फल लागसी. पिण करणी तो वाझ न कोय।
> तो नीहांणो करू किण कारणे, आछो कियां निश्चे आछो होय॥

इसके बाद स्वामीजी उपसहार करते हुए कहते हैं '

> जिन मत माहे पिण इम कह्यो, नीहाणो करे तप खोय।
> तेतो नरक तणो हुवे पावणो, वले चिहूं गति मांहे दुखीयो होय॥

इस व्याख्यान मे प्रणामा प्रव्रज्या के स्वरूप पर भी बडा अच्छा प्रकाश डाला है। प्राणामा प्रव्रज्या मे कौवे, कुत्ते तक को प्रणाम किया जाता है। स्वामीजी कहते हैं—इस तरह सब का विनय करने मे तामली तापस धर्म मानता था, यह उसका पाखण्ड था। तामली तापस बाल-तपस्वी था। तपस्या और आतापना के कष्ट से उसके कर्म अवश्य कटते थे। पर प्राणामा प्रव्रज्या मे धर्म नही मानना चाहिये, वह जिन-आज्ञा से बाहर हे

> प्रणाम प्रवजा लीधी छे इण रीते, ते विनों करे सकल नो ताहि।
> तिणमे धर्म जाणें छे तामली तापस, तिण सूं तिणने घाल्यो छे पाखडंया मांहि॥
> तिणरे कष्ट छे तपसा ने आतापना रो, तिण सू करम कटे छे ताम।
> वले घटाय दीधी तिसणा ने ममता, ओरा बिच इणरा सरल परिणाम॥

४—उदाई राजा रो बखांण :

यह आख्यान 'भगवती सूत्र' शतक १३ उद्देशक ६ से लिया गया है।

सिंधु सौवीर देश मे वीतभय नाम का एक नगर था। उसके अधिपति महाराजा उदायन थे। उनकी महारानी का नाम था प्रभावती और पुत्र का नाम अभीचि कुमार। महाराजा उदायन का भांजा केशी कुमार था। वह वही रहता था। उदायन राजा बारह व्रत धारी श्रावक थे। एक समय पोषध करते हुए रात्रि के अन्तिम प्रहर मे उनके मन मे विचार आया कि अगर भगवान महावीर स्वामी यहाँ पधार जावें तो मैं उनके दर्शन कर अपने जीवन को धन्य करूँ। भगवान महावीर स्वामी का पधारना हुआ। उदायन राजा दर्शन के लिये गया और भगवान के सामने दीक्षा की भावना प्रदर्शित की। भगवान को वदन कर वापस आते समय रास्ते मे सोचने लगा—"अगर मैं पुत्र को राज्य का भार सौपू तो वह राज्यश्री मे मुग्ध हो नरक गति मे जायगा। अत इस पाप-प्रवृत्ति से उसे अलग रखू, यही उसके लिए श्रेय है।" ऐसा सोच उसने अपने भांजा केशी कुमार को राज्य का भार सौपा और आप दीक्षित हो गया।

उदायन मुनि विचरण करते हुए एक समय पुन वीतभय नगर मे पधारे। राज्य के राव उमराव उदायन मुनि के पास आने-जाने लगे। राजा केशी को यह लगा कि कही मेरे मामा की मति तो नही पलट गई ? उमरावो से मिलकर कही मेरा राज्य न छीन लें। ऐसा सोच केशी कुमार ने उदायन मुनि को नगर मे न ठहराने का आदेश नगर निवासियो को दिया, और साथ मे ठहराने वाले पर

सख्त कार्यवाही करने का भी आदेश दिया। एक कुम्हार ने राजाज्ञा की परवाह न करते हुए मुनि उदायन को ठहराया। जब केशी को यह मालूम हुआ तब उसने एक वैद्य के जरिये उदायन मुनि को जहर पिला दिया। मुनि ने सोचा—"मैंने इसे राज्य देकर ऐसा जहर दिया है कि जिसके कारण यह चतुर्गति मे भटकेगा। इसने मुझे जो जहर दिया है, उससे मेरा मोक्ष रुक नही सकता। मेरा अपराध ही महान् है।" इस प्रकार समभाव का चिन्तन करते हुए उन्होने केवल-ज्ञान प्राप्त किया।

अभीचि कुमार वीतभय से निकल कर चम्पा नगरी के अधिपति कोणिक के पास चला गया और वही रहने लगा। वह श्रावक व्रत पालने लगा। किन्तु राज्य न देने के कारण अपने पिता मुनि के प्रति उसका द्वेष-भाव दूर नही हुआ। उसने अन्तिम समय मे १५ दिन का सथारा किया किन्तु पिता मुनि से क्षमा-याचना नही की जिसके कारण वह असुर कुमार देव बना। वहाँ का आयुष्य पूर्ण कर महाविदेह में जन्म-ग्रहण कर मोक्ष प्राप्त करेगा।

जब उदायन ने पोषध मे धर्म-जागरण करते हुए विचार किया—'यदि भगवान महावीर स्वय यहाँ आवें तो मैं उनसे दीक्षा ग्रहण करूँ'—उस समय भगवान चपा मे थे जो वहाँ से सात सौ कोस दूर थी। राजा उदायन के मनोगत भावो को जानकर भगवान उतनी दूर से वीतभय नगरी पधारे। भगवान की यह कितनी बडी कृपा थी इसको बताने के लिये स्वामीजी ने जो दोहे लिखे हैं, वे अत्यन्त भक्ति-रस से सने हुए हैं .

चम्पा ने वितभय विचे, कोस सात सो वीच।
परवत पाहड़ झगी घणी, विचे नदी खाल जल कीच॥
जल विण सूके रूंखडा, कुमलावे कूपल पान।
त्याने सीचे जल ल्यायने, बागवान बुधवान॥
जल सिंच्या रूख पालवे, हुवे डहडायमांन।
फूल फल सर्व नीपजे, नीला रहे तिहां पान॥
रूंख जिम भव जीवडा, बागवांन भगवान।
वाणी जल धारा जिम जाणजो, घालें भव जीवा रे कान॥
सवर निरजरा फूल जिम, फल जिम मुगत निधान।
जस कीरत महिमा पान जिम, ते जाणे बुधवान॥
राय उदाई रे कारणे, भगवत कीयो विहार।
चंपा नगरी थी नीकल्या, साथे साधां रो बहु परिवार॥

राजा उदायन को स्थान न देने की घोषणा करने पर भी कुम्हार उन्हे स्थान देता है। उस समय उसके मन मे जो भाव उठते हैं वे असहयोग की भावना के उत्कृष्ट उदाहरण है और उनमे सत्याग्रह के पावन बीज हैं। वह सोचता है ·

हू इण साध ने जायगा रहण देसूं, म्हांरो कांई करसी राजा रूठो रे।
भाडा बासण ने सगला गधेडा, पेहले छेहडे लेसी लूटो रे॥
इसडो तो धन म्हांरे घर मे न दीसे, राजा खोसे लेवे ते दीसें नांही रे।
कदा जीवा मारें तो मरणो कबूल छे, साधु ने तो उतारूं घर माही रे॥

राजा के कहने से जब वैद्यो ने मुनि उदायन को औषध मे जहर देना मजूर कर लिया तब स्वामी जी लिखते हैं ·

चाकर कूकर वेहू सरीषा, धनी चलावे ज्यू चाले रे।

अभीचिकुमार श्रावक और तपस्वी होते हुए भी द्वेष-भाव का त्याग न कर सका। इससे १५ दिन का सथारा करने पर भी वह जैन धर्म का विराधक रहा। स्वामीजी कहते हैं ·

एहवा धेष सूं समकत वरत खोवे, केइ अनंत ससारी होवे रे।
श्रावक ने एहवो धेष न करणो, परभव सूं अहोनिस डरणो रे।

५—सकडाल पुतर रो वखांण :

सकडालपुत्र का वर्णन 'उपासकदशा सूत्र' के सातवें अध्ययन मे आता है।

वह मंखलि पुत्र गोशालक का अनुयायी था जो आजीविक सम्प्रदाय का नायक था तथा जिसकी मुख्य मान्यता नियतिवाद की थी। एक समय भगवान महावीर स्वामी सकडालपुत्र की कुम्हार शाला मे पधारे। महावीर स्वामी के साथ शास्त्रार्थ कर वह उनका उपासक वन गया। उसकी पत्नी अग्निमित्रा भी भगवान की उपासिका बन गई। जब गोशालक को यह मालूम हुआ तब वह सकडालपुत्र के पास आया और भगवान महावीर के गुणगान करता हुआ उसे पुन अपना उपासक बनाने के लिये प्रयत्न करने लगा। किन्तु गोशालक अपने प्रयत्न मे सफल नही हुआ और वापस लौट गया। सकडालपुत्र पोलासपुर का रहने वाला था और उसके पास चार करोड की सम्पत्ति थी। उसने २० वर्ष तक श्रावक के व्रत पाले। पाँच वर्ष तक श्रावक प्रतिमा का पालन किया और एक मास का सथारा कर प्रथम देवलोक मे गया। वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर महाविदेह मे सिद्ध-पद प्राप्त करेगा।

यह व्याख्यान कई दृष्टियो से बडा महत्वपूर्ण है। नियतिवाद और पुरुषार्थवाद का अन्तर इस व्याख्यान से प्रगट होता है। गोशालक नियतिवादी था। भगवान् महावीर पुरुषार्थवादी थे। सकडाल-पुत्र ने किस तरह पुरुषार्थवाद स्वीकार किया, उसका बडा सजीव वर्णन इसमें है। महावीर मे कौन-कौन सी विशेषताएँ थी यह भी गोशालक और सकडाल पुतर के वार्तालाप रूप मे इस व्याख्यान मे सुन्दर रूप में वर्णित है। असयमी दान मे धर्म तप नही इसका स्पष्ट उल्लेख इसमे है। सकडालपुत्र ने धर्म-प्रज्ञप्ति ग्रहण की। देवता ने उसे धर्म छोड़ने के लिए कहा किन्तु वह अपने धर्म-मार्ग मे अविचल रहा। आखिर मे देव ने उसे धर्म से विचलित करने के लिए उसकी स्त्री को मार डालने का भय दिखाया। इस पर सकडालपुत्र के हृदय मे मोह अनुकम्पा जाग गई। इस भावना से कि कही देव उसकी भार्या को मार न दे वह उस देव को पकडने के लिए उठा। देव अर्न्तधान हो गया। सकडालपुत्र के हाथ मे खम्भा आया। इस समय उसकी स्त्री के मुह से स्वामीजी ने जो शब्द निकलवाये हैं वे गूढ दार्शनिक तत्व और धर्म-रस से भरे पड़े हैं .

बेटां री बेलां तो दिढ रह्या थे, चोखा राख्या परिणांमो॰ रे।
मोने बचावण उठ्या किण लेखे, ओ तो भूंडो कीयो थे कांमो रे॥ ३॥
जिण रीतें बेटा रो थे त्यागन कीधो, जिण रीतें त्यागी थे मोयो रे।
तो थे मोनें बचावण उठ्या इण बेला, वरता सांह्मो थे क्यू नही जोयो रे॥
थारो भागो पोसो वरत ने नेम, मोनें बचावण काजो रे।
थे तो श्रीजिण वचन साह्मो नही जोयों, थे तो मोटो कीयो अकाजो रे॥
पोसा मांहे ममता किणरी न करणी, सावद्य जोग तणा छे त्यागो रे।
थे मोनें बचावण रो सावद्य सेव्यो, पोसो नें व्रत नेम भागो रे॥
तिण रो प्राछित लो थे आलोवण करने, राखे सुध परिणांमो रे।
सल काढे सुध हुआं तिणसूं, सीझें आतम कामो रे॥
सकडालपुतर श्रावक सुणने, वचन कर लीधो परमांणो रे।
ते आलोय प्राछित ले सुध हुवो, अस्त्री नो वचन सत जांणो रे॥

> ओ तो अस्त्री नें बचावण उठ्यो, तिण अस्त्री न जांण्यों धर्मो रे।
> आ ओलखावण सावद्य निरवद री, तिण रो विरला जांणें मर्मो रे॥

६—सुबाहु कुमार रो वखांण

स्वामीजी ने यह आख्यान 'सुख विपाक सूत्र' के प्रथम अध्याय से लिया है।

सुबाहु कुमार हस्तिशीर्ष नगर के राजा अदीनशत्रु एव महारानी धारणी का आत्मज था। उसका विवाह पांच सौ राजकुमारियो के साथ हुआ। एक समय भगवान महावीर स्वामी पुष्पकरण्डक उद्यान मे पधारे। सुबाहु कुमार भी भगवान के दर्शन के लिए गया। भगवान की वाणी सुन उसने श्रावक के बारह व्रत धारण किये और प्रभु को वन्दन कर अपने स्थान को चला गया। सुबाहु कुमार के इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ रूप को देख कर गौतम स्वामी प्रभावित हुए और भगवान से प्रश्न पूछा—"भगवन्! सुबाहु कुमार ने ऐसा क्या दिया, क्या खाया, क्या किया और किस निर्ग्रन्थ श्रमण का एक भी सुवचन सुनकर धारण किया कि जिससे ऐसा वैभव उसे प्राप्त हुआ है।" उत्तर मे भगवान ने फरमाया—"सुबाहुकुमार पूर्व जन्म मे हस्तिनापुर नाम के नगर मे सुमुख नाम का वैभवशाली गाथापति था। उसने मास खमण तप करने वाले सुदत्त अनगार को अत्यन्त शुद्ध भाव से आहार दिया। आहार देते समय अपने उत्कृष्ट भावो के कारण उसने मनुष्य का आयुष्य बाँधा और संसार का आवागमन घटाया—ससार को सक्षिप्त किया। पूर्व जन्म के इस सुपात्रदान से सुबाहुकुमार ऐसा हुआ है।"

सुबाहुकुमार ने बहुत काल तक श्रावक व्रत पाला। पश्चात् भगवान महावीर स्वामी के पास दीक्षा ली और मासिक सथारा करके देवलोक को प्राप्त हुआ। अन्त मे महाविदेह मे सिद्ध-पद प्राप्त करेगा।

इस व्याख्यान मे यह बात स्पष्ट की गई है कि पूर्व भव मे दिये हुए सुपात्रदान से बाद के भव मे धर्म का पालन किस तरह आसान होता है और किस तरह मनुष्य साधु या श्रावक होकर अपना कल्याण कर सकता है।

> जेहवो बीज वावें तेहवा फल लागे,
> ज्यूं धर्म पामे भवो भव आगे।

मनुष्य जैसा बीज बोता है वैसा ही फल उसे आगे मिलता है। उसी तरह जो इस भव मे धर्म करता है उसे भविष्य मे भव-भव में धर्म करने का अवसर प्राप्त होता रहता है।

सुबाहुकुमार पूर्व भव मे सुमुख गाथापति था। वह मिथ्यात्वी था पर उसने साधु को बड़े हर्ष के साथ दान दिया जिससे ससार को घटा कर उसने मनुष्य-भव का बध किया और धर्म सुनकर श्रावक बना। बाद मे वह साधु होकर अनुक्रम से मोक्ष में गया। सुपात्र दान का फल बतलाते हुए कवि कितनी अर्थ-गभीर वाणी मे बोलता है

> बीज सारू फल लागसी, कर देखो मन मे विचार।
> ज्यूं दान सुपातर बीज मोख रों, आवागमण मिटावण हार॥
> उत्तम बीज बायां थकां, उत्तम विरख हुवे ताय।
> पान फलादिक सर्व पेहिली हुवे, अनुक्रमें छेहले फल थाय॥
> ज्यूं दान सुपातर ने दीयां, पुन बधे करम सोख।
> पेहला पुन बधीया ते भोगवी, अनुक्रमें पछे जाअें मोख॥

बीज के अनुसार ही फल होता है। सुपात्र दान मोक्ष का बीज है। वह आवागमन—जन्म-जन्मान्तर को मिटानेवाला है। उत्तम बीज के बोने से उत्तम वृक्ष होता है। पहले पान, फूल आदि

होते हैं और अंत मे फल होता है। वैसे ही सुपात्र दान से पाप का क्षय हो पुण्य का वध होता है। पुण्य वध के कारण पुण्योदय से वह पहले पान, फूल आदि के समान सांसारिक सुखो को भोगता है और फिर अनुक्रम से अतिम फल स्वरूप वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

स्वामीजी के इन वचनो मे साधन और साध्य का सम्बन्ध भी वडे सुन्दर रूप मे प्रगट हुआ है। जैसा साधन होता है वैसा ही फल मिलता है। सुपात्रदान मोक्ष का साधन है कुपात्रदान नही। जिसका साध्य मोक्ष है उसका साधन भी तदनुकूल होना चाहिए। विपरीत साधन से साध्य-मोक्ष की प्राप्ति नही हो सकती। पश्चिम की ओर जाने के मार्ग से कोई पूर्व नही पहुच सकता।

७—मृगालोढा रो वखांण :

यह आख्यान 'दुख विपाक सूत्र' के प्रथम अध्ययन के आधार पर है।

मृगा नगर मे विजय क्षत्रिय नामक राजा था। उसकी रानी का नाम मृगा देवी था। उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम मृगा पुत्र था। वह जन्म से ही अधा, वहिरा, गूगा और लगडा था। सस्थान भी उसका हुडक था। उसके हाथ-पैर आदि कोई अग-उपाग नही थे, केवल शरीर मे इनकी आकृतियाँ मात्र थी। मृगा देवी उसे छिपा कर मकान के तल घर मे रखती थी। वही पर उसे खाना-पीना देकर उसका पालन-पोषण करती थी।

एक समय भगवान महावीर स्वामी मृगा नगर मे पधारे। जनता दर्शन के लिए गई। एक जन्मान्ध पुरुष, जो अत्यन्त गन्दा था और जिसके चारो ओर मक्खियाँ भिनभिना रही थी, भगवान की वाणी सुनने आया। गौतम स्वामी ने उस जन्मान्ध पुरुष को देख कर भगवान से पूछा—"भगवन्! इस जन्मान्ध पुरुष से भी अधिक दुखी कोई है?" भगवान ने फरमाया—"गौतम! है। वह इसी नगर के राजा विजय क्षत्रिय का पुत्र व मृगा रानी का आत्मज है। उसके शरीर मे कोई अगोपांग नही। केवल लोदे जैसा आकृति मात्र पिण्ड है। महारानी उसे तल घर मे रखती है।" भगवान की बात सुन गौतम स्वामी ने मृगापुत्र को देखने की इच्छा व्यक्त की और भगवान की आज्ञा ले वे मृगारानी के यहाँ पहुचे। वहाँ तल घर स्थित मृगापुत्र को साक्षात् नरक जैसा दुख भोगते हुए देख वहाँ से वापस आ भगवान से पूछा—"भगवन्! मृगापुत्र ने ऐसा कौन-सा पाप किया था जिसका फल वह इस प्रकार भोग रहा है?"

गौतम की जिज्ञासा पर भगवान ने उसके पूर्व जन्म का वृत्तांत सुनाते हुए कहा—"गौतम! विजयवर्द्धन नाम का खेड था। उसका अधिपति इक्काई नाम का राष्ट्रकूट था। उसके आधीन पाँच सौ गाँव थे। वह वडा अधर्मी, अधर्मानुरागी, अधर्मजीवी, अधर्मसेवी, अधर्मप्रलोकी था। सदा मारो, छेदो, काटो जैसे घृणित शब्द उसके मुह से निकलते थे। प्राणियो की विविध प्रकार से हत्या करना, उन्हें उत्पीडित करना उसका व्यवसाय हो गया था। वह चोरो का साथ देता था। लूटना, ठगना और अधिक कर वसूल करना उसके काम थे। उसके अत्याचारो से जनता कांप उठती थी। इस प्रकार उसने घोर भयकर पापो से अशुभ कर्मो का उपार्जन किया।

"किसी समय इक्काई राष्ट्रकूट के शरीर मे १६ महा भयकर रोग उत्पन्न हुए। उसने विविध प्रकार से उपचार करवाये। किन्तु रोग घटने की वजाय वढते ही गये। ऐसी अवस्था में भी उसकी पापो के प्रति अभिरुचि कम नही हुई। अन्त मे उन भयकर रोगो की हालत में २५० वर्ष का आयुष्य काल पूरा कर वह प्रथम नरक मे पैदा हुआ। वहाँ एक सागर तक दुख भोग कर वह इक्काई राष्ट्रकूट का जीव मृगारानी के गर्भ मे आया। और यही मृगापुत्र अपने पूर्व जन्म के पापो

का फल भोग रहा है। यह मृगापुत्र कई जन्म-मरण कर अन्त में चारित्र-धर्म की आराधना कर महाविदेह में जन्म लेगा। वहाँ से पच महाव्रतो का पालन कर वह मोक्ष-गति को प्राप्त करेगा।"

मृगालोढा की स्थिति का कारण उसकी एकाइरठकूड भव की क्रूरता, पापवुद्धि और अन्तिम समय तक की आसक्ति थी। कैसी वृत्तियो से जीव की मृगालोढा की-सी दयनीय स्थिति होती है इसका चित्र स्वामीजी ने इस व्याख्यान की ढाल ८ वी मे दिया है। उसका कुछ अंश इस प्रकार है·

ते पांच सो गांम नो अधिपति जी, एकाइरठकूट थो नांम।
ते अधर्मी अधर्म रूचे जी, रीझतों माठें कांम हो॥
वले अधर्म मीठो तेहने जी, अधर्म री मुख वात।
तिणरो अधर्म सील आचार थों जी, धर्म किरतब नहीं तिलमात हो॥
आकरा डंड लेतो घणा जी, करतो जीवां री घात।
पर सुखीये दुखीयों हुंतो जी, माठो ध्यान रहतों दिन रात हो॥

८—उंवरदत्त रो वखांण :

यह आख्यान 'दुख विपाक सूत्र' अध्याय ७ के आधार पर है।

एक वार ग्रामानुग्राम विहार करते हुए भगवान पाटली खंड नामक नगर में पधारे। सिद्धार्थ इस नगर का राजा था। इस नगर में गोचरी के लिए जाते हुए गौतम ने कोढ, श्वास, कास, शोथ, भगन्दर आदि सोलह असाध्य रोगो से युक्त अत्यन्त दीन-हीन अवस्था वाले एक मनुष्य को देखा। विभिन्न दिवसो मे विभिन्न मार्गों से पुर में प्रवेश करते हुए गौतम ने उसे विभिन्न स्थानो पर देखा और देख कर उन्होने भगवान से उस रोगी के पूर्व भव का वृत्तान्त पूछा।

भगवान ने कहा—"यह व्यक्ति पूर्वभव में विजयपुर नामक नगर मे कनकरथ राजा के राज्य में आयुर्वेद विशारद धन्वन्तरि नामक वैद्य था। चिकित्सा में कोई दूसरा इसकी वरावरी करने मे समर्थ नही था। वह रोगो के शमनार्थ रोगियो को विविध प्रकार के माँस, मदिरादि अभक्ष्यो को खाने का उपदेश देता और स्वय उनका सेवन करता। अपनी ३२०० वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु के व्यतीत हो जाने पर मर कर वह छठी पृथ्वी के २८ सागर की स्थिति वाले नरक में नारकी पर्याय से उत्पन्न हुआ।

"वहाँ की आयु समाप्त होने पर वह इस पाटली खण्ड नगर के ख्यातनामा सम्पन्न सार्थवाह सागरदत्त की गगदत्ता भार्या की कुक्षि से पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। उंवरदत्त नामक यक्ष की आराधना से प्राप्त होने के कारण इसका नाम उंवरदत्त पडा। आरम्भ में यह अहीन परिपूर्ण पचेन्द्रिय शरीरी तथा सर्वजन नयनानन्दकारी था।

"भवितव्यता के अनुसार इसके पिता सागरदत्त सार्थवाह की लवण समुद्र में मृत्यु हो गयी और पति-शोकविह्वला गगदत्ता भी मर गई।

"अव यह उंवरदत्त आवारा हो गया। राजपुरुषो ने इसे घर से निकाल दिया। भक्ष्याभक्ष्य, गम्यागम्यादि विवेकहीन होने के कारण ही यह कोढ आदि सोलह भयकर रोगो का रोगी हो दुःख भोग रहा है। यह इसके पूर्वार्जित पाप कर्मो के फल हैं, जिनको यह भोग रहा है।"

उवरदत्त पूर्व भव मे धन्वतरि वैद्य था। उसकी चिकित्सा-प्रणाली वड़ी क्रूर थी। उसकी स्वयं की वृत्तियाँ भी वडी भयानक थी। उवरदत्त की दुर्दशा का कारण उसकी उक्त भव की क्रूरता पूर्ण वैद्य-वृत्ति और नृशंसता थी। स्वामीजी ने धन्वन्तरि वैद्य के जीवन-पट को इस प्रकार चित्रित किया है.

नाथ अनाथ इत्यादिक बहु जी, जो आवें धनंतर पास।
त्यां सगला रो रोग गमावतो जी, साता करतो तास॥
त्यांमे कितला एक रोगीयां भणी जी, मच्छ जीवा नो मांस खवाय।
एक एक ने काछवा तणो जी, वले गाहा नो मास बताय॥
एक एक नें मगरमच्छ तणों जी, एक एक ने पंखी सुसमार।
वले बोकडा गाडर रोभ नो जी, इम सूवर मिरग विचार॥
सूसला गाय भेंस तीतर तणो जी, बटेरा लावा पखी नों ताय।
कबूतर कूकडा मोर नो, यारो देतो मास वताय॥
जलचर थलचर खेचरा जी, इत्यादिक जीवा नी जात।
त्यारो मांस वतातो खावा भणी जी, यांरी दया न हूती तिलमात॥
पोते पिण या जीवां तणों जी, ग्रिधी थको मास मगाय।
सूला करे तल भूंज ने जी, ओ खातो सराय सराय॥
वले सुरा पान पीतो घणो जी, मन माहे हरख पांम।
इत्यादिक अकारज करे जी, भारी हुवो तिण ठांम॥

यह कथा आज की हिंसा-प्रधान चिकित्सा-प्रणाली पर भी लागू होती है और उस पर एक कड़ी टिप्पणी-सी है।

६—धना अणगार रो वखांण:

स्वामीजी के इस व्याख्यान का आधार 'अनुत्तरोववाई सूत्र' है।

काकन्दी नाम की नगरी थी। उसके अधिपति जितशत्रु नाम के राजा थे। वहाँ भद्रा नाम की सार्थवाहिनी रहती थी। वह विशाल धन-सम्पत्ति की स्वामिनी थी। उसके धन्ना नामक पुत्र था। युवावस्था मे ३२ श्रेष्ठी कन्याओ से उसका विवाह हुआ।

एक समय भगवान महावीर स्वामी काकन्दी नगरी पधारे। धन्ना सार्थवाह उनके दर्शन के लिए गया। भगवान की वाणी सुन उसे वैराग्य हुआ और अपनी माता को समझा कर वह साधु बन गया। जिस दिन उसने प्रव्रज्या धारण की उसी दिन धन्ना अनगार ने अभिग्रह किया कि मैं बेले-बेले का पारण करूँगा और पारण के दिन आयविल तप रखूंगा। इस प्रकार निरन्तर तप करने से उसका सारा शरीर सूख गया और केवल अस्थि-पजर ही शेष रहा। उसने नौ महीने तक इसी तरह कठोर तप किया। अन्तिम समय मे सथारा सलेखना पूर्वक शरीर का त्याग किया। वह मर कर सर्वार्थसिद्ध विमान मे देव बना। धन्ना अनगार की वीर प्रभु ने बहुत प्रशसा की और चौदह हजार मुनिवरो मे उसे श्रेष्ठ बताया।

यह अत्यत रोमाचकारी व्याख्यान है। धन्ना की उत्कट तपस्या का वर्णन आत्मिक-शौर्य की चरम पराकाष्ठा को प्रकट करता है। भगवान महावीर ने जीवन की साधना में ज्ञान, दर्शन और चारित्र जितना ही सम्मान तप को दिया है। उनके साधु कितने कठोर तपस्वी होते थे यह इस प्रकरण से प्रकट होता है। स्वामीजी ने लिखा है

भण्या इग्यारे अंग रे, तप करडा करे।
देही नें पाडे नित पातली ए॥
जे सूर करे पचखाण रे, ते एक धारा रहे।
त्यां जीतव जनम सुधारियो ए॥

जे कायर करें पचखांण रे, तो विकलाइ करें।
त्यां जीतव जनम विगाडियो ए॥
जे कीजें त्याग वेंराग रे, करम काटण भणी।
तो घना नीं परे पालजो ए॥

१०—मल्लीनाथ री वखांण :

स्वामीजी ने इस व्याख्यान की रचना 'ज्ञातासूत्र' के आठवें अध्याय के आधार पर की है।

विदेह की राजधानी मिथिला मे कुम्भ नामक राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम प्रभावती था। उसके मल्लि नामक एक पुत्री थी और मल्लदिन्न नामक एक कुमार। मल्लि रूप मे असाधारण थी। पूर्ण युवावस्था आ जाने पर भी उसने विवाह नही किया और आजीवन कौमार्य व्रत—ब्रह्मचर्य-व्रत—पालन करने का संकल्प कर लिया।

उस समय कोशल मे प्रतिबुद्ध, अग में चन्द्रच्छाय, काशी मे शंख, कुणाल में रूप्पि, कुरु मे अदीनशत्रु और पांचाल मे जितशत्रु नाम के राजा राज्य करते थे। मल्लि के अपूर्व सौन्दर्य की कहानी इन राजाओं ने सुनी और राजकुमारी के लिये मोहित हो उन सबने अपने-अपने दूत कुम्भ राजा के पास भेजे और विवाह का सन्देश कहलाया।

राजदूतो ने आकर अपने-अपने राजाओ की मांग पेश की परन्तु कुम्भ राजा ने सभी की माग को ठुकरा दिया। अपनी मांग को अस्वीकार होते देख छहो राजाओ ने मिथिला पर चढाई कर दी। दोनो पक्षो मे भयंकर युद्ध हुआ। छहो राजाओ की विशाल सेना के सामने कुम्भ नही टिक सका। लाचार हो उसने किले के फाटक बन्द करवा दिये। छहो राजाओ ने अपनी सेनाओ से मिथिला को घेर लिया।

मल्लि कुमारी ने इन छहो राजाओं को समझाने के लिये एक युक्ति निकाली। उसने अपने ही रूप की प्रतिमा तैयार करवाई। वह प्रतिमा भीतर से पोली थी और सिर पर पेचदार ढक्कन से ढकी हुई। प्रतिमा देखने मे इतनी सुन्दर थी मानो साक्षात् मल्ली ही खडी हो।

मल्लि कुमारी उस मूर्ति मे रोज खाद्य पदार्थ डालकर उसे ढँक देती थी। एक दिन उसने अपने पिता कुम्भ राजा से निवेदन किया—पिताजी! आप छहो राजाओ को मेरे पास भेज दें, मैं उन्हें समझा कर शान्ति स्थापित कर दूंगी। महाराज कुम्भ ने वैसा ही किया। छहो राजा पुतली घर में अलग-अलग मार्ग से एक साथ आये। उन्होंने मल्लि की प्रतिमा को ही साक्षात् मल्लि कुमारी समझा और अत्यन्त मोह-विह्वल हो गये। मल्लिकुमारी ने आकर प्रतिमा का ढक्कन उघाड़ दिया। ढक्कन के खुलते ही उसमें से इतनी भयकर दुर्गंध आने लगी कि सभी ने अपने-अपने नाक ढक लिये और वहाँ से निकलने का प्रयत्न करने लगे। उपयुक्त अवसर जान मल्लि कुमारी ने छहो राजाओ को सुन्दर लगती मानवी देह की असारता बताई और भोगो के दुष्परिणामो से अवगत कराया। राजा मल्लि कुमारी के उपदेशो से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने मल्लिकुमारी के साथ दीक्षा लेने की इच्छा व्यक्त की। छहो राजा अपने-अपने नगर लौट आये और पुत्रो को राजगद्दी पर बैठा मल्लिकुमारी के साथ दीक्षा ग्रहण की।

इस व्याख्यान में अशुचि भावना का बडा सुन्दर वर्णन है। स्त्री-वेद और तीर्थंकर-गोत्र बधने के हेतुओ का भी वर्णन है। महाबल कुमार के पूर्व भव मे मल्लिनाथ ने मित्रो से कपट कर अधिक तपस्या की। उसकी भावना अधिक तपस्या के सहारे उनकी अपेक्षा उच्च स्थान प्राप्त करने की थी, इससे उसके स्त्री-वेद का बंध हुआ।

तीर्थंकर गोत्र बंधने के हेतुओ का वर्णन इस प्रकार है:

वले वीसां थानका करी, बधे तीर्थंकर नाम कर्म।
ते बारूंवार सेविया, तिण सूं हुवे निरजरा धर्म॥
गुणग्राम करे अरिहत नां, वले सिधां रा करे गुणग्राम।
आठ प्रवचन माता रा गुण करे, गुरु रा गुण करे ले ले नाम॥
थविर बहुश्रुति नें तपसी तणा, त्यांरा पिण करे गुणग्राम।
बारबार उपयोग दे ग्यान ऊपरे, समकित ऊपर सुध परिणाम॥
विनो करे सात प्रकार नो, आवसग करे कालो काल।
सील व्रत पाले निरमलो, थोडो बोले वचन रसाल॥
अधिक तपस्या करे बोल चवद में, पनर मे साधु ने दे दान।
दस विध वेयावच करे सोल मे, तिणरो न्याय जाणे बुधवान॥
गुरुनो कार्य करे हर्ष सू, गुरु नें उपजावे सतोप।
अठार में भणे अपूर्व ग्यान नें, सूत्र भक्ति करे निरदोष॥
प्रवचन री करे प्रभावना, सूधो मार्ग देखा ले ताम।
समकित थापे मिथ्यात उत्थापने, ए वीसोई बोलां रा नाम॥
ए वीसोई बोल सेविया, महाबल नामे अणगार।
तीर्थंकर नाम कर्म बांधियो, ते होसी तीजा भव मझार॥

इस व्याख्यान के अन्तर्गत प्रसगवश अरणक श्रावक का वर्णन आया है। देवता ने उससे धर्म छुडाने की चेष्टा की, पर वह अडिग रहा। वह सोचने लगा

'ग्यांन दर्शन म्हारा वरत नें, इणरो कीधो विघन न थाय रे'। परिषह के समय श्रावक किस तरह सथारा व कायोत्सर्ग करे, इसका उल्लेख अरणक के प्रसग में बडे सुन्दर रूप मे आया है।

मल्लि कुमारी ने अहिंसात्मक उपदेश से युद्ध को किस तरह टाला, यह अहिंसा की शक्ति का बहुत बडा उदाहरण है। अशुचि भावना के उपदेश द्वारा मल्लि ने विपय-विप का किस प्रकार हरण किया यह भी उल्लेखनीय है।

ज्यूं आ मिनप तणी काया मांहि, असुध सारों सहीजी।
सुक्र ने लोही नो पिंड ताहि, मांही सुच कांइ नहीं जी॥
मल मूत्र नो भडार, लोही मास तेहमे जी।
तिणरे असुच बहे बारे दुवार, असुच भरें जेहमे जी॥
भूडा तिणरा सास उसास, दूरगध बारे नीसरे जी।
पित्त नीला पीला पाणी तास, वायु तिणरे सरे जी॥
थे रीझ्या एहवी नारी रे माहि, तिणरा काम भोग सुं जी।
थे लीन घणा हुवा ताहि, नारी ना सजोग सु जी॥
सडण पडण विधसण सभाव, मिनख नी देहनो जी।
ते विणस जाये इण न्याव, थे कीयो संग तेहनो जी॥
थे कनक नी पूतली देख, मल्ली जाणी एहने जी।
तिणरा रूप सू रीझ्या वशेख, भूला भर्म केहने जी॥
थे गिरधी काम भोग रे माहि, मूर्छित वले तेहमे जी।
वले इधकी इधकी थारे चाहि, खूंचे रह्या एहमे जी॥

चोखी सन्यासिनी दान और स्नान मे धर्म मानती और शौच मूल धर्म का उपदेश करती थी। शौच मूलक धर्म के स्थान मे मल्लि ने अहिंसा मूलक धर्म की श्रेष्ठता को उद्घोषित किया। यह प्रसग भारतीय चिन्तन की दो धाराओ—श्रमण और ब्राह्मण—को बड़े सुन्दर रूप मे सामने उपस्थित करता है—अब चोखी ने शौच मूलक धर्म का प्रतिपादन किया तब मल्ली बोली :

ए वचन सुणें मल्ली कहे चोखी ने, लोही सूं भरयो वस्त्र ताय।
बले तिण नें लोही सूं धोवीयां, चोखो थाअे के नही थाय॥
जब चोखी कहे लोही खरड्यों वस्त्र, लोही सूं उजलो नही थाय।
इण दिष्टंते चोखी धर्म ताहरो, ते सुण तूं चित्त लगाय॥
हिसा करें जीव मलीन हुवो छे, ते हिंसा सूं उजल किम थाय।
जेहवों छें चोखी धर्म तांहरो, जीव गाढा मेला होय जाय॥
हिंसा भूठ चोरी आदि सेवें अठारे, तिणसूं लागे पाप करम।
ते सेव्या में तू कहे धर्म छे, थारो घणों खोटो छे धर्म॥
वले सावद दान मे धर्म कहें तूं, तिहां मारी जाअे छ काय।
तिण हिंसा सूं न हुवे जीव उजलों, तूं सोच देख मन मांय॥
तूं धर्म कहे सोच सिनांन मे, तिहा पिण मारी जाअे छ काय।
तिण हिंसा सूं जीव न हुवे उजलो, ओ पिण सोच देख मन माय॥

लोही से भीना वस्त्र लोही से साफ नही हो सकता। हिंसा करने से जीव मलीन होता है। हिसा से वह उज्ज्वल कैसे होगा ? पाप से धर्म कैसे होगा ? यह बात सावद्य दान की हैं।

११—थावचा पुतर रो बखांण :

द्वारिका नगरी मे कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे। उसी नगरी मे थावच्चा गाथापत्नी रहती थी। उसके पुत्र का नाम थावच्चापुत्र था। उसके पास वैभव की कमी नही थी।

एक समय अर्हत् अरिष्टनेमि द्वारिका पधारे। थावच्चा पुत्र भी भगवान् अरिष्टनेमि के दर्शन के लिए गया। भगवान् की वाणी सुन उसे वैराग्य हुआ और दीक्षा की आज्ञा प्राप्त करने के लिए माता के पास आया। माता को इकलौते पुत्र के विछोह का बहुत दुःख हुआ किन्तु पुत्र की उत्कट वैराग्य भावना को देख उसने दीक्षा की आज्ञा दे दी। दीक्षा महोत्सव के लिये छत्र और चँवर प्राप्त करने के लिये थावच्चा गाथापत्नी कृष्ण वासुदेव के पास गई। कृष्ण वासुदेव ने थावच्चा पुत्र का निष्क्रमणाभिषेक स्वय मनाने की इच्छा व्यक्त की। बाद मे कृष्ण ने स्वय थावच्चापुत्र के पास आ उसे दीक्षा न लेने को समझाया। थावच्चापुत्र के वैराग्य के सामने कृष्ण का कुछ न चला। अंत में कृष्ण ने भी थावच्चापुत्र को दीक्षा की आज्ञा दी। साथ में सारी नगरी मे यह घोषणा करायी कि जो भी व्यक्ति दीक्षा लेना चाहे, ले ले, उसके परिवार का भरण-पोषण कृष्ण स्वय करेगा। इस घोषणा से हजार पुरुषो ने थावच्चापुत्र के साथ दीक्षा ग्रहण की और शुद्ध रीति से संयम का पालन करते हुए रहने लगे।

एक समम थावच्चा अनगार शेलकपुर पधारे। वहाँ के राजा शेलक थे और उनकी रानी का नाम पद्मावती था। पथक प्रमुख पाँच सौ उनके मन्त्री थे। थावच्चा अनगार का उपदेश सुन शेलक राजा ने पथक प्रमुख पांच सौ मन्त्रियो के साथ श्रावक के बारह व्रत स्वीकार किये। वहाँ से थावच्चा अनगार सोगन्धिया नगरी पधारे। वहाँ सुदर्शन नाम का सेठ था। उसने थावच्चा पुत्र से श्रावक धर्म स्वीकार किया। वहाँ शुकदेव नामक सन्यासी अपने हजार शिष्यो के समूह के साथ सोगन्धिया नगरी आये। वहाँ उन्होंने थावच्चा अनगार से शास्त्रार्थ किया। सुखदेव सन्यासी को थावच्चा पुत्र का मार्ग अच्छा लगा। वे हजार शिष्यो के साथ परिव्राजकत्व छोडकर पंच महाव्रत धारी साधु बने।

थावच्चा अनगार से शुकदेव अनगार ने ग्यारह अगो का अध्ययन किया और गुरु की आज्ञा ले स्वतत्र रूप से विचरने लगे। शुकदेव अनगार विहार करते हुए शैलकपुर पधारे। शैलक महाराजा ने शुक अनगार की वाणी सुन अपने पाँच सौ प्रधानो से प्रव्रज्या लेने की इच्छा व्यक्त की। पाच सौ प्रधानो ने भी शैलक राजर्षि का साथ दिया और प्रव्रजित हुए। शैलक राजर्षि ने अगो का अध्ययन किया और अपने पाच सौ शिष्यो के साथ विचरने लगे।

एक समय अत प्रात अरस विरस आहार के करने से शैलक राजर्षि व्याधिग्रस्त हो गये और विचरते हुए शैलकपुर पधारे। मण्डुक राजा ने कुशल वैद्यो से शैलक राजर्षि की निर्दोष चिकित्सा करवाई। शैलक राजर्षि स्वस्थ हो गये किन्तु वे उत्तम आहार में गृद्ध हो जनपद विहार न कर वही रहने लगे। शैलक को आचार मे शिथिल हुआ जान, पथक को शैलक के पास छोड, ४९९ अनगारो ने जनपद विहार कर दिया।

एक समय पथक अनगार ने चातुर्मासिक प्रतिक्रमण के पश्चात् क्षमा-याचना के लिये सुख से सोये हुए शैलक का पाद-स्पर्श किया। पाद-स्पर्श से शैलक जग गये और पथक पर इस व्यवहार से क्रुद्ध हो गये। पथक ने नम्रतापूर्वक चातुर्मासिक क्षमा-याचना का दिन बताया। शैलक को अपने शिथिलाचार का भान हुआ और पुन वे प्रायश्चित्त कर शुद्ध बने और पथक अनगार के साथ जनपद विहार कर दिया। अब शेष शिष्य भी शैलक राजर्षि से आकर मिले। शैलक राजर्षि ने शुद्ध सयम का पालन किया, अन्तिम समय मे सलेखना की और केवल-ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गति को प्राप्त हुए।

यह व्याख्यान वैराग्य-रस से भरा हुआ है।

दीक्षा के पूर्व जब थावच्चापुत्र नेमिनाथ भगवान के दर्शन के लिए गये उस समय नेमिनाथ भगवान ने उन्हे जो उपदेश दिया उसको स्वामीजी ने बडे मार्मिक ढग से उपस्थित किया है। उसकी कुछ गाथाएँ इस प्रकार हैं

लोकालोक नवोई पदार्थ, त्यांने रूडी रीत पिछाणो।
या जाण्या विण समकत नांही, तिणमे शका मत आणो॥
समकत सहीत सूस करेने, करम आवता रोको।
तप कर पूर्व करम खपावो, ज्यूं पामो अविचल मोखो॥
नव तत रो निरणो नही कीधो, ते समदिष्टी नाही।
समकत विना वरत नही छे, ओ निरणो करो घट माही॥
समकत विना कोइ करणी करे तो, करम निरजरा थावे।
शुभ जोग वरत्या सूं पुन बधे पिण, पाप करम नही रुकावे॥
समकत सहीत वरत करे तो, पाप कर्म रुक जावे।
तप करे पूर्व करम खपावे, ते बेगा मुगत सिधावे।
तन धन जोवन सगला कारिमां, कारिमो सगलो परिवार।
तिण माहे जे मुरभ रह्या छे, त्या जीतव दियो विगार॥
कुगुर तणी सगत नही कीजे, ते मिथ्यात घट मे घाले।
ते हिसा माहे धर्म धरावे, तिण सूं भव भव दुःख साले॥
कालो नाग छे अति ही भूडो, ते एकण हीज भव मारे।
कुगरु उधी सरधा सू, अनता जामण मरण वधारे॥
पांच इन्द्री ना कांम भोग छे, त्यारी विषे कही तेवीसो।
त्यामे गिरधी होय रह्या छे, ते बूडा वीसवावीसो॥

विषय कषाय ने विष सम जांणो, समता रस घट आंणो।
भोग रोग ने दूर तजो थे, ज्यू पामों पद निरवाणो॥
सर्व धर्म साधु रो पूरो, देस धर्म श्रावक रो जाणो।
ए मुगत मारग छे दोनूं निरवद, त्याने रूडी रीत पिछाणो॥

१२—द्रौपदी रो बखांण :

इस कथानक का आधार 'ज्ञाता सूत्र' का १६ वा अध्याय है।

चपा में सोम, सोमदत्त और सोमभूत तीन सहोदर भाई रहते थे। नागश्री, भूतश्री और जयश्री क्रमश इनकी पत्नियाँ थी। एक समय नागश्री ने एक तुम्बी का शाक बनाया। बनाने के बाद जब उसने शाक को चखा तो वह कड़ुवा था। उसने उसे मास खमन तप करने वाले तपोधनी धर्मरुचि अनगार को बहरा दिया। मुनि उसे अपने स्थान पर ले आये। धर्माचार्य ने उसे चखा तो उन्हे वह अत्यन्त कड़ुवा लगा और धर्मरुचि अनगार से उसे बाहर अचित्त भूमि में परठने को कहा। धर्मरुचि उस शाक को लेकर अचित्त भूमि में गये और वहाँ उस शाक का एक बूंद परठा। उसे सैकडो चीटियाँ आकर खाने लगी, और खा-खा कर मरने लगी। उन्होने सोचा—एक बूंद से इतनी चीटियाँ मर गई, अगर सारा ही यहाँ डालू तो न जाने कितने प्राणियो का सहार होगा। यह सोच उन्होने स्वय उसे खा लिया। कटु शाक के खाने से उनके शरीर मे अत्यन्त पीडा होने लगी। और वही पर सलेखना ले वे समाधिपूर्वक मृत्युगत हुए और सर्वार्थसिद्ध विमान मे देव रूप मे उत्पन्न हुए।

नागश्री के कारण धर्मरुचि अनगार की मृत्यु हो गई। यह सवाद जब उसके कुटुम्बियो ने जाना तो उसे घर से निकाल दिया। नागश्री के शरीर मे १६ महारोग हो गये और उन्ही के कारण उसकी मृत्यु हो गई। मर कर वह नरक मे गई। कई भव-भ्रमण के पश्चात् उसने चपापुर में सागरदत्त सेठ के घर पुत्री रूप में जन्म लिया। वहाँ उसका नाम सुकुमालिका रखा गया। सुकुमालिका का विवाह सागर नामक श्रेष्ठी पुत्र से हुआ। सुकुमालिका का शरीर-स्पर्श श्रेष्ठी पुत्र को अत्यन्त रूक्ष और तीक्ष्ण लगा। इससे दु खी हो उसने उसका परित्याग कर दिया। सागरदत्त सेठ ने सुकुमालिका का विवाह पुन एक भिखारी से किया किन्तु उसे भी उसका देह-स्पर्श अत्यन्त दुखदायी लगा। उसने भी उसका परित्याग कर दिया।

अन्त में सुकुमालिका आर्या गोपालिका से दीक्षा ले साध्वी बनी और कठोर तप करने लगी। मर कर वह देवलोक मे जन्मी। देवलोक का आयुष्य पूर्ण कर कपिलपुर के महाराजा द्रुपद के घर रानी चुलणी से उसने जन्म लिया। द्रुपद महाराजा ने उसका नाम द्रौपदी रखा। जब वह युवा हो गई तो उसका विवाह स्वयवर पद्धति से हस्तिनापुर के महाराजा पाण्डु के पाँच पुत्र पाडवो से किया। द्रौपदी अपने पाँच पति के साथ सुखपूर्वक रहने लगी।

एक दिन कच्छुल्ल नारद पाण्डुराज की सभा मे आये। उस समय महाराज पाण्डु, उनकी पत्नी कुन्ती, पाँच पाण्डव व द्रौपदी एक साथ बैठे बातें कर रहे थे। कच्छुल्ल नारद को देख महाराज पाण्डु, कुन्ती देवी और पाँचो पाण्डव खड़े हुए और सम्मानपूर्वक उन्हे आसन पर विठाया। द्रौपदी ने कच्छुल्ल नारद को मिथ्यात्वी जान न उनका सम्मान ही किया और न नमस्कार ही। इस व्यवहार से नारद बहुत क्षुब्ध हुए। इसका बदला लेने की भावना से कच्छुल्ल नारद धातकी खण्ड द्वीप की अमर-कंका राजधानी मे वहाँ के राजा पद्मनाभ के महल मे गये। पद्मनाभ ने नारद का सत्कार किया। नारद के मुख से उसने द्रौपदी के रूप का वर्णन सुना। अत्यन्त रूपवती द्रौपदी को पाने का उसने

निश्चय किया। नारद चले गये। पद्मनाभ ने देव की सहायता से द्रौपदी का अपहरण करवा कर उसे महल मे मगवा लिया।

द्रौपदी के अचानक महल से गायब होने पर पाचो पाण्डव एव महाराजा पाण्डु ने बहुत खोज की परन्तु द्रौपदी का पता नही चला। आखिर नारदजी से कृष्ण को द्रौपदी का पता मिल गया। पाँचो पाण्डवो को साथ ले श्रीकृष्ण अमरकका गये। वहाँ पद्मनाभ को हराकर द्रौपदी को वापस ले आये। कालान्तर मे द्रौपदी ने दीक्षा ली। बहुत वर्ष तक सयम की आराधना कर एक मास का सथारा किया। आयुष्य पूरी कर पाँचवें देवलोक मे उत्पन्न हुई। पाँच पांडवो ने भी दीक्षा ली और केवल-ज्ञान प्राप्त कर सिद्ध बुद्ध हुए।

यह व्याख्यान कई दृष्टियो से बडा महत्वपूर्ण है। अहिंसा के लिए धर्मरुचि का बलिदान बडा लोमहर्षक है। कही चीटियो की हिंसा न हो जाय इस दृष्टि से उन्होने अपने मानव-देह का उत्सर्ग कर दिया।

धर्मरुचि की इस समय की भावना को प्रकट करते हुए स्वामीजी लिखते हैं·

> एक बिंदू परठ्या इतनी कीड्या मुंई, ते सगलो परठ्यां हुवे अतंत संघार।
> तो मो ने श्रेय निरजरा धर्म हेतें, सगलाई तूंबा रो करणो आहार॥
> आप सूं मरता जीव जाणे नें, कडवा तूंबा रो कीधो आहार।
> कीडीया री अणुकंपा आणी, धन धन धर्मरुची अणगार॥

सुकुमालिका ने आर्या गोपालिका से अपने पति को प्रसन्न करने के लिये किसी मत्र, चूर्ण या औषधि बताने का निवेदन किया तब गोपालिका ने सयम और शील का उपाय बतलाया, यह सांसारिक और पारलौकिक दृष्टि का अन्तर है। ब्रह्मचारिणी श्रमणी सुकुमालिका ने बाहर उद्यान भूमि मे बेले-बेले की तपस्या करते हुए सूर्याभिमुख हो ध्यान करने की इच्छा प्रकट की। गोपालिका आर्या ने इसकी अनुमति नही दी और कहा कि ब्रह्मचारिणी श्रमणी अकेली बाहर नही जा सकती। यह घटना श्रमणियो के एक विशिष्ट नियम पर प्रकाश डालती है। इस नियम के भग से सुकुमालिका का जो पतन हुआ, वह अति रोमाचकारी है। सुकुमालिका आर्या अकेली बाहर उद्यान में तप करने लगी। एक वेश्या को पाँच पुरुषो के साथ सुख भोगते देख अपने तप और ब्रह्मचर्य के बदले में उसने वैसे ही पाँच पुरुषो को प्राप्त करने की कामना की। धर्म के बदले में ऐसे सांसारिक सुख की कामना करने को जैन-धर्म निदान कहता है और उसका फल ससार-वृद्धि मानता है। इसी कारण तीसरे भव में सुकुमालिका द्रौपदी हुई।

१३—तेतली प्रधान रो बखाण :

स्वामीजी के इस कथानक का आधार 'ज्ञाता सूत्र' का १४ वां अध्याय है।

तेतलिपुर नगर मे कनकरथ राजा था। पद्मावती उसकी रानी थी। राजनीति में कुशल तेतली उसका प्रधान था।

उस नगर मे मूषिका दारक नाम का एक स्वर्णकार रहता था। उसकी पत्नी का नाम भद्रा था। उसके रूपलावण्य में उत्कृष्ट पोट्टिला नाम की पुत्री थी। एक बार तेतली मत्री ने पोट्टिला को महल की आगासी पर क्रीडा करते हुए देखा और उस पर मुग्ध हो गया। उसने पोट्टिला के साथ विवाह कर लिया।

राजा कनकरथ अपने राज्य और अन्त पुर में इतना आसक्त था कि राज्य का कोई उत्तराधिकारी बने, यह वह नही चाहता था। अत वह अपने नवजात पुत्रो को ही मरवा डालता था। रानी ने

किसी तरह एक पुत्र को बचाने का निश्चय किया। उसने एक पुत्र को जन्म दिया और दासी के साथ उस नवजात शिशु को तेतली प्रधान के यहाँ भेज दिया। उसी समय पोट्टिला ने एक मृत पुत्री को जन्म दिया था। मन्त्री ने उसे रानी के पास भिजवा दिया। राजा को जब रानी के प्रसव होने का समाचार मिला तो वह शीघ्र महल मे गया परन्तु मृत पुत्री को देख वापस चला गया। मन्त्री के यहाँ राजपुत्र बडा होने लगा। उसका नाम कनकध्वज रखा गया।

एक समय पोट्टिला के प्रति तेतली का प्रेम कम हो गया, जिससे वह अत्यन्त दु खी हो गई। अपनी खिन्नता मिटाने के लिये वह श्रमणो और ब्राह्मणो को दान देने लगी। एक समय सुव्रता आर्या आहार के लिये पोट्टिला के यहाँ गई। पोट्टिला ने उससे अपने पति को वश करने का उपाय पूछा। परन्तु सुव्रता तो साध्वी थी, उन्हे ससार के कार्यों से क्या प्रयोजन ? उन्होने उसे ससार की असारता का उपदेश दिया। सुव्रता साध्वी के उपदेश से पोट्टिला साध्वी बनने का निश्चय कर तेतली के पास पहुची। तेतली ने उसे दीक्षा की आज्ञा दे दी। साथ में यह भी वचन लिया कि अगर वह मर कर देव बने तो उसे प्रतिबोधित करने के लिये आवे। उसने स्वीकार किया। वह साध्वी बनी और कालान्तर मे मरकर देव बनी। उसे तेतली मत्री को दिये हुए वचन का स्मरण हुआ। वह तेतली के समीप आकर उसे अनेक तरह से समझाने का प्रयत्न करने लगी। जब तेतली नही समझा तब पोट्टिला देव ने राजा और मत्री के बीच विरोध उत्पन्न किया। अब राजा भी तेतली से उदास हो गया। तेतली जब घर आया तो उसके माता-पिता भी विरोधी हो गये। अन्त मे इस दु ख से बचने के लिये आत्म-हत्या का निश्चय कर वह बाहर निकल पडा। उसने आत्म-हत्या के अनेक प्रयत्न किये किन्तु उस देव के प्रभाव से असफल रहा। तब पोट्टिला देव प्रगट हुआ और उसने पूर्व जन्म की बात याद दिलायी। आखिर तेतली को जातिस्मरण ज्ञान हुआ। उसने दीक्षा ली और आत्म-साधना करने लगा। अन्तिम समय मे केवल-ज्ञान प्राप्त कर सिद्ध बुद्ध बना।

इस व्याख्यान मे पोटिल्ला और तेतली के बीच परस्पर जो वार्त्तालाप हुआ वह बडा ही महत्त्वपूर्ण है। स्वामीजी ने उसे इस प्रकार व्यक्त किया है ·

हिवे कहे छें पोटल देव आय, तेतली प्रधान नें जी।
हिवे सुण तूं चित्त लगाय, म्हारो कह्यो मानने जी।
हिवे समभ तेतली प्रधान, कहे तोने पोटला जी॥
आगे तो ऊडी रवाड छे ताहि, पूठे हस्ती जिहां जी।
विहुं पासे अंधारो अथाय, बिचें बांण पडे तिहां जी॥
बले छे बेहूं रन नें गाम, कहे तूं जाइस किहां जो।
किण ठामे लेसी विश्राम, उत्तर दे मोनें इहां जी॥
बीहकण नें कुण सरणों आधार, कहे तूं तेतली जी।
बीहकण ने सरणो परवत पहाड, इसडी ठाम जेतली जी॥
मन ओपरिया नें आधार, पोता रा देश नो जी।
खुधा लागा अतंत अपार, आधार अनरो जी॥
तिरषावंत नें पाणी रो विश्राम, रोगी ने औषध तणो जी।
कपटी ने आधार गुप्त ठाम, तिहा सुख पामें घणो जी॥
अविसवासी ने आधार जाण, प्रतीतकारी तणों जी।
मारग थाका नें वाहण पिछाण, उपर बैठासूं हर्षपणो जी॥

पाणी तिरवानों कामी थाय, आधार छे जिहाज रो जी।
कोई बेरी परभावे आय, सखाई ना साफरो जी॥
खंत दंत जितेद्र ने नांहि, इतरा बोलां माहिलो जी।
थांरो भय न उपजे मन माहि, कदे न हुवे कायलो जी॥

१४—जिनरिख जिनपाल रो बखाण :

इस व्याख्यान की रचना का आधार 'ज्ञाता धर्म कथा सूत्र' का ६ वाँ अध्याय है।

चपा मे माकन्दी नाम का एक सार्थवाह रहता था। उसकी भद्रा नाम की पत्नी थी। उस सार्थवाह के दो पुत्र थे—जिन पालित और जिन रक्षित। एक समय दोनो भाइयो ने लवण समुद्र की यात्रा का विचार किया और माता-पिता से पूछकर जहाज में वाणिज्य-सामग्री भरकर रवाना हुए। रास्ते में समुद्र में तूफान आया और जहाज टूट गया। धन-माल के साथ जहाज डूब गया। किन्तु संयोगवश दोनो भाई बच गये और टूटे हुए जहाज की एक तख्ती के साथ रत्नद्वीप पहुच गये।

वह रत्नद्वीप एक रमणीय स्थल था। वहाँ के दृश्यो ने दोनो भाइयो का मन मोह लिया। वहाँ एक रयना नाम की अत्यन्त पापिनी देवी थी। अपने हाव-भाव से उसने दोनो भाइयो को मोह लिया। वे उस प्रासाद मे रयना देवी के साथ भोग भोगते हुए रहने लगे।

एक दिन रयना देवी शक्रेन्द्र की आज्ञा से लवण समुद्र की सफाई करने के लिये चली गई। उसने जाते समय दोनों कुमारो को दक्षिण दिशा की ओर जाने की मनाही कर दी। देवी के जाने पर दोनो कुमार दक्षिण दिशा के वन खण्ड मे चले गये। वहाँ का हृदय-विदारक दृश्य देखकर दोनो कुमार काँप उठे। उन्होने वहाँ शूली पर कराहते हुए एक पुरुष को देखा। उसने दोनो कुमारो को देवी की दुष्टता का परिचय दिया। अब दोनो ही कुमार देवी से त्राण पाने के लिये उससे उपाय पूछने लगे। उसने कहा—तुम पूर्व दिशा के वनखण्ड मे जाओ। वहाँ शैलक नाम के यक्ष की भक्ति करो। वही तुम्हें इन दु खो से उबार सकता है। उसकी वात सुनकर दोनो कुमार यक्ष के पास गये। यक्ष ने प्रसन्न होकर उन्हें बचाने का वचन दिया और साथ में कहा—जब मैं तुमलोगो को ले जाऊँगा, उस समय रयना देवी तुम लोगो को विविध प्रकार से अपने अधीन करने का प्रयत्न करेगी। अगर तुम लोगो ने उसके प्रति आसक्ति दिखाई तो मैं उसी वक्त समुद्र मे फेंक दूंगा।

कुमारो ने बात स्वीकार कर ली। यक्ष ने घोड़े का रूप बनाया और बोनो को पीठ पर चढा लवण समुद्र को पार करने लगा। रयना देवी को यह खबर लग गई। वह पुन आकर विविध हाव-भाव से कुमारो को अपनी ओर आकर्षित करने लगी। जिन पालित पर देवी के वचनो का कोई असर नही हुआ। वह बराबर दृढ रहा। किन्तु देवी के हाव-भावपूर्ण हास्य-रुदन से जिन रक्षित आकर्षित हो गया। शैलक यक्ष ने उसे समुद्र मे फेंक दिया। रयना देवी ने उसे हाथ में झेल कर तलवार से उसके टुकड़े-टुकडे कर दिये। इसके पश्चात् वह जिन पालित के पास आई किन्तु जिन पालित की दृढता से वह निराश हो गई। जिन पालित सुरक्षित घर पहुच गया।

यह एक रूपकमय व्याख्यान है। व्याख्यान मे त्याग के बाद पुन विषय-भोग की ओर मुड़ने वाले व्यक्ति की जो दशा होती है उसका हृदयग्राही वर्णन है। स्वामीजी लिखते हैं :

मन डोल्यो जक्ष जांण नें, उतारीयो तिण वार।
देवी आय उतावली, वचन कहे निरधार॥

क्रोध करे मार्यो घणो, खंड खंड कीया तिणवार।
दस दिसा टूक उछालनें, हरषित थाई अपार॥
जिनरिखियो दुखीयो हुवो घणो, जोया नां फल जाण।
चंपा नगर पोहचो नही, बिच में छोड्या प्राण।
वेरागें घर छोडने, विषें सामा नहाल।
शिव नगरी पोहचें नही, बिच में सहसी हवाल॥

स्वामीजी ने अन्य अनेक रचनाओ मे इस कथा को व्रत-अव्रत पर भी घटाया है।

१५—नंद मणिहार रो वखांण :

इस व्याख्यान की रचना का आधार 'ज्ञात धर्म कथा सूत्र' का १३ वा अध्याय है।

राजगृह नगर मे श्रेणिक राजा थे। उनकी भार्या का नाम चेलणा था। वहाँ नन्द मणियार नाम का एक वैभवशाली श्रेष्ठी था। एक समय नगर मे भगवान महावीर का पधारना हुआ। उनकी वाणी सुनकर नन्द मणियार ने श्रावक के १२ व्रत स्वीकार किये। एक समय वह अष्टमभक्त तप कर पोषधशाला मे पोषध करने लगा। ग्रीष्म ऋतु का समय था। रात्रि के पिछले प्रहर मे उसे तृषा लगी। तृपा की व्याकुलता से उसे अपने पोषध का भान न रहा। वह सोचने लगा—धन्य है उस पुरुष को जिसने पुष्करणी बनवाई है। इससे हजारो व्यक्ति लाभान्वित होते हैं। मैं भी प्रात राजा की आज्ञा लेकर एक विशाल पुष्करणी का निर्माण कराऊगा। प्रात नन्द मणियार ने अपने पूर्व सकल्प के अनुसार पुष्करणी का निर्माण प्रारभ कर दिया। थोड़े समय मे पुष्करणी तैयार हो गयी। उसके निर्माण के साथ उसने जन-मनोरजन के लिए अनेक साधन भी तैयार कराये। नन्द मणियार द्वारा बनाये साधनो से जनता लाभ उठाने लगी और उसकी भूरि-भूरि प्रशसा करने लगी।

एक समय नन्द मणियार के शरीर मे सोलह रोग उत्पन्न हुए। उन्ही रोगो की अवस्था मे मर कर वह अपनी पुष्करणी मे मेढक हुआ। मेढक ने जब नन्द मणियार की प्रशसा सुनी तो उसे अपने पूर्व जन्म का स्मरण हो आया। उसे अपने मिथ्यात्वपूर्ण सावद्य कार्य का बहुत पश्चाताप हुआ।

एक समय भगवान महावीर स्वामी पधारे। लोगो की परस्पर वार्त्ता से मेंढक को भी भगवान के आवागमन का पता चला और वह भी भगवान के दर्शन के लिए निकला। मार्ग मे वह श्रेणिक के घोडे के पैर के नीचे आ गया। मेढक ने अपना अन्तिम समय देख सम्पूर्ण पापो का प्रत्याख्यान किया और आलोचना पूर्वक देहोत्सर्ग किया और वह मर कर दर्दु र देव बना। भगवान के पास आकर उसने नाटक दिखाया। दुर्दु र देव के वैभव को देख कर गौतम स्वामी ने प्रश्न किया और भगवान ने उसके पूर्व जन्म का वृत्तांत सुनाया।

यह व्याख्यान सावद्य दया के कार्यो मे आसक्त होने से कितना अनिष्ट होता है, इसका सुन्दर बोध देता है। पुष्करिणी और कुआँ आदि हिंसा के कार्य कर उनमे उसने जो आनन्द का अनुभव किया उसके कारण वह मर कर अपनी ही खुदवाई हुई पुष्करिणी मे मेंढक हुआ। नन्द मणियार के निम्न उद्गार हमेशा स्मरण रखने योग्य हैं —

जब डेडको बाव मझार ए, सुणे लोकां कने वारुंवार ए।
इम साभल करे विचार ए, ओ कुण छे नंद मणियार ए।

इत्यादिक ध्यायो निरमल ध्यान ए, ऊपनो जातीसमरण ग्यांन ए।
जब जाण लीयो तिण ठाम ए, ओ नंदो म्हारो इज नाम ए॥
मे वीर जिणंद रे पास ए, बारे व्रत लीया था उलास ए।
पछें मानी पाखड्या री बात ए, तो म्हे पडवजियो मिथ्यात ए॥
आयो ग्रीषम रित ऊन्हाल ए, तीन पोसा कीया तिण काल ए।
जब भूख त्रिखा लागी आण ए, तब हू पर गयो उलटी ताण ए॥
ह गयो मिथ्यात मे खूच ए, परभाते श्रेणिक ने पूछ ए।
मे पोखरणी बाव खणाय ए, बले च्हिू दिस बाग लगाय ए॥
सगलोइ सबध विचार ए, आत्मा ने देवे धिकार ए।
में कीधो मोटो खून ए, तो हूं डेडको जबून ए॥
हू अधिन अनुप अभाग ए, रह्यो पाखड मत मे लाग ए।
हू भिष्ट हुवो बरत भाग ए, तिणसू निकल्या म्हारा साग ए॥

१६—पुंडरीक कुंडरीक रो वखाण

इस व्याख्यान का आधार 'ज्ञाता धर्म कथा सूत्र' का १६ वां अध्याय है।

पुण्डरीक और कुण्डरीक ये दोनो सहोदर भाई थे। ये पुष्कलावती विजय नगर के महाराजा महापद्म के पुत्र थे। महापद्म पुण्डरीक को राज्यगद्दी पर स्थापित कर तथा कुण्डरीक को युवराज बना आप धर्मघोष आचार्य के पास दीक्षित बने और चौदह पूर्वों का अध्ययन कर अपने जीवन को सफल किया।

कालान्तर मे स्थविरो के आगमन पर महाराजा पुण्डरीक ने श्रावक के व्रत धारण किये और कुण्डरीक दीक्षा लेकर स्थविरो के साथ ग्रामानुग्राम विचरण करने लगे। वे ग्यारह अङ्गो के पाठी बने। विहार काल मे कठोर तपस्या एव रूक्ष अत-प्रात आहार के सेवन से अनगार कुण्डरीक के शरीर मे दाहज्वर नामक रोग हो गया।

किसी समय धर्मघोष आचार्य कुण्डरीक के साथ विचरण करते हुए पुष्कलावती नगर के नलिनी वन उद्यान मे ठहरे। महाराजा पुण्डरीक मुनि-दर्शन के लिए आये। वहाँ उन्होंने कुण्डरीक अनगार को दाहज्वर से पीडित देख उनसे उपचार के लिए अपनी यान शाला मे पधारने का आग्रह किया। राजा के आग्रह से मुनिगण यान शाला मे पधारे। महाराजा ने कुशल वैद्यों से अनगार कुण्डरीक की निर्दोष चिकित्सा करवाई। मुनि स्वस्थ हो गये। धर्मघोष आचार्य ने विहार कर दिया किन्तु कुण्डरीक मनोज्ञ आहार पानी मे आसक्त बन वही रह गये।

जब महाराजा पुण्डरीक को यह मालूम हुआ तब वे मुनि कुण्डरीक के पास आये और उन्हे शुद्ध सयमी जीवन का भान कराते हुए उनसे जनपद विहार करने की प्रार्थना की। वे भाई के आग्रह को टाल नही सके और लज्जावश स्थविरो के साथ विहार कर दिया। विहार कर देने पर भी कुण्डरीक का मन सयम मे नही लगा और पुन भोग भोगने की इच्छा से स्थविरो का साथ छोड अकेले ही पुष्कलावती नगर आ गये और एक वृक्ष के नीचे आर्तध्यान करने लगे। खेद-खिन्न कुण्डरीक को महाराजा की दासी ने देखा और उन्हे कुण्डरीक के आने की सूचना दी। दासी से समाचार सुनकर महाराजा पुण्डरीक कुण्डरीक के पास आये और उन्हे पुन सयम मे स्थिर करने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु कुण्डरीक पर कोई असर नही हुआ। अन्त मे कुण्डरीक ने स्पष्ट रूप से राज्य श्री भोगने की

इच्छा व्यक्त की। पुण्डरीक को इससे बडा दु ख हुआ। उन्होने कुण्डरीक को राजगद्दी पर बिठला आप स्वय दीक्षित बन गये और महा स्थविर के पास आ चातुर्याम धर्म को धारण किया।

इधर कुण्डरीक को अत्यधिक आहार पान करने व अधिक समय तक जागरण करने से अजीर्ण और पित्तज्वर की व्याधि हो गई। इसी अवस्था में मर कर वह अधोगति मे गया। मुनि पुण्डरीक जनपद विहार करने लगे। अत्यधिक तपस्या एव रुक्ष अरस नीरस आहार के सेवन से उन्हे भी दाह-ज्वर हो गया। अपना अन्तिम समय जान मुनि पुण्डरीक ने आलोचना पूर्वक आहार का त्याग कर देह छोड दिया। वे मर कर सर्वार्थसिद्ध विमान मे देव हुए। वहाँ से देव आयु को पूरा कर महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध गति को प्राप्त करेगे।

इस व्याख्यान मे बतलाया गया है कि जो श्रामण्य ग्रहण कर पुन भोगो की कामना करता है वह व्यक्ति किस तरह दुर्गति को प्राप्त होता है। भोगाकाक्षी कुण्डरीक की दुर्दशा का वर्णन करते हुए स्वामीजी ने निम्नलिखित गाथा लिखी है

क्रोध कपाय ने वस पड्यो, आरत रुद्र ध्यान ध्याय रे।
आउखो पूरो करे, पड्यो नर्क सातमी जाय रे।
थोडा दिना रे आतरे, दुखा नो छेह न पार रे।
सजम ना सुख छोडने, ओ तो गयो जमारो हार रे॥
कामभोग तणी आसा कीयां, फल लागे विप समाण रे।
च्यार गत्या रो पावणो, पछे लग रहे ताणा तांण रे।
वेरागे घर छोडने, वले वाछेला कोइ भोग रे।
पडसी नर्क निगोद मे, पामे घणो रोग सोग रे॥

१७—भरत चरित :

स्वामीजी ने भरत चक्रवर्ती का अधिकार 'जम्बूद्वीप पन्नति' सूत्र से लिया है—

विनीता नाम की नगरी थी। इस नगरी का निर्माण शक्रेन्द्र के लोकपाल कुबेर ने किया था। वहाँ के राजा नाभि थे। उनके पुत्र ऋषभदेव थे। उनकी माता का नाम मरुदेवी था। ऋषभदेव ने युगलिया धर्म की प्रथा को समाप्त किया और इस भरत क्षेत्र के प्रथम राजा हुए। उन्होने ही लोगो को असि, मसि और कृपि का व्यवसाय सिखाया। पुरुप की ७२ कलाएँ, स्त्री की ६४ कलायें तथा १०० विज्ञान कर्म भी उन्होने सिखाये। उनकी दो पत्नियाँ थी। एक का नाम सुनन्दा और दूसरी का नाम सुमगला था। सुमगला रानी से भरत का जन्म हुआ। उसके साथ ब्राह्मी का भी जन्म हुआ। इस सुमगला के क्रमश ६८ पुत्र हुए। सुनन्दा रानी ने एक युगल को जन्म दिया। जिसमे एक पुत्र और दूसरी कन्या थी। पुत्र का नाम बाहुबलि और कन्या का नाम सुन्दरी रखा गया। इस प्रकार एक सौ पुत्र और दो पुत्रियाँ ऋपभदेव के थी।

तिरसठ लाख वर्ष तक ऋपभदेव ने राज्य किया। इसके पश्चात् उन्होने राज्य को सौ हिस्सो मे विभाजित कर पुत्रो मे बाट दिया और आप दीक्षित हो गये। भरतजी राजा बने। भरतजी के प्रबल पुण्य से सुदर्शन चक्ररत्न उत्पन्न हुआ। यह भरत के चक्रवर्ती होने का प्रथम लक्षण था। भरत ने अपने ६८ भाइयो से कहला भेजा—"मेरी आयुधशाला मे चक्ररत्न उत्पन्न हुआ है। अब मैं चक्रवर्ती हूँ। आप लोगो को अब से मेरी आज्ञा का पालन करते हुए मेरे अधीन रहना होगा।" ६८ भाइयो को यह सहन नही हुआ। वे परामर्श के लिए भगवान ऋपभदेव के पास गये और उनके सदुपदेश से राज्य का लोभ छोड दीक्षा ग्रहण की।

९८ भाइयो के राज्य को अपने कब्जे मे कर भरत ने वाहुवलि को दूत के द्वारा सदेश कहला भेजा कि तुम भी मेरी अधीनता स्वीकार कर लो वरना युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। वाहुवलि को यह स्वीकार नही हुआ और वे अपनी चतुरगिणी सेना सजा कर आये। भरतजी ने भी सेना को युद्ध के लिए तैयार कर लिया। दोनो की सेना युद्ध के लिए एक दूसरो के सामने खडी हो गई। इन्द्र को यह अच्छा नही लगा। उसने नर-सहार टालने का एक तरीका निकाला कि केवल भरत और वाहुवलि ही युद्ध करें। इन्द्र की वात दोनो ने स्वीकार कर ली। दोनो मे दृष्टि युद्ध आदि हुए। सभी युद्धो मे वाहुवलि की शक्ति के सामने भरत टिक नही सके। अन्तिम युद्ध मुष्टियुद्ध हुआ। पहले भरत ने मुष्टि प्रहार किया। वाहुवलिजी को करारी चोट लगी। वदले मे मुष्टि प्रहार करने के लिए वाहुवलि ने अपना वाहु ऊपर उठाई। इस समय उनके विचारो मे कायापलट हो गया। वे सोचने लगे—"मैं मुष्टि प्रहार कर क्यो अनर्थ कर रहा हूँ ?" ऐसा सोच उठाई हुई मुष्टि से पच मुष्टि लोचकर साधु वन गये। पूर्व दीक्षित ९८ भाई अवस्था मे वाहुवलि से छोटे थे पर दीक्षा-पर्याय मे वे बड़े हो गये। वाहुवलि छोटे भाइयो को वन्दन करना नही चाहते थे। वे केवलज्ञान प्राप्त कर केवली परिषद् मे सम्मिलित होना चाहते थे। इस अभिमान के कारण वे एक वर्ष तक एकान्त मे खडे रह तप करते रहे। भगवान् ऋषभदेव की आज्ञा प्राप्त कर ब्राह्मी और सुन्दरी उनको समझाने के लिए गई। ब्राह्मी और सुन्दरी ने उपदेश दिया 'वीरा मोरा गज थकी उतरो' इन वचनो का असर वाहुवलि पर हुआ और उन्होने अभिमान रूपी गज का परित्याग किया। अभिमान के नष्ट होते ही वाहुवलि को केवलज्ञान हो गया।

भरत ब्राह्मी पर मोहित हो गए और उसके साथ विवाह करना चाहते थे। ब्राह्मी को जव यह मालूम हुआ तो उसने दीर्घ तपस्या प्रारभ कर दी। शरीर अस्थि-पजर हो गया। अव भरत का मोह दूर हुआ। ब्राह्मी ने उनकी आज्ञा प्राप्त कर दीक्षा ली। सुन्दरी भी दीक्षित हुई।

माता मरुदेवी हाथी पर चढ कर भगवान के दर्शन के लिए गईं। भगवान को देख उनके मोह-विह्वल हृदय मे शान्ति आई। मरुदेवी के हृदय मे वैराग्य उत्पन्न और वह शुभ भावो की चरम सीमा पर पहुँच गई। गृहस्थ वेप को वदले विना ही उन्होने सर्व सावद्य का त्याग कर दिया। इस प्रकार मोह-जीत कर उन्होने केवलज्ञान प्राप्त किया।

भरतजी छ खण्ड का राज्य करने लगे। अपनी सेना ले वे दिग्विजय के लिए चल पडे। अल्प काल ही मे छ खण्डो पर उन्होने एकाधिपत्य स्थापित किया, चौदह रत्न और नवनिधियाँ भी प्राप्त की। भरत चक्रवर्ती के ८४ लाख हाथी और इतने ही घोडे तथा ९६ करोड़ पाद सेना थी। उनके ८४ लाख रथ की सेना थी। चार करोड मन अनाज हमेशा उनके यहाँ पकता था। ६४ हजार मुकुट वन्ध राजा उनके अधीन थे। उनके ६४ हजार रानियाँ थी। चौदह रत्न और नवनिधियो के वे धनी थे। ४८ कोस का सैनिक शिविर था।

ऐसा सव होते हुए भी भरत चक्रवर्ती के परिणाम वडे रुक्ष रहते। उनका लक्ष्य हमेशा आत्म-कल्याण पर रहता।

एक समय भरत चक्रवर्ती स्नान करके वस्त्राभूपण से समलकृत हो आरिसा भवन मे वैठे थे। उनकी एक अगुली से मुद्रिका गिर गई और उसके विना हाथ सुनसान और भद्दा लगने लगा। इसी पर वे ससार की असारता का विचार करने लगे। ससार की अनित्यता का विचार करते हुए भावो की उत्कृष्टता से उन्हें केवल ज्ञान हुआ और उन्होने वही गृहस्थ-वेष का त्याग कर देवताओ द्वारा प्रदत्त मुनि वेष पहन लिया। इस प्रकार ऋषभ प्रथम तीर्थंकर हुए और भरतजी उनके सवसे वडे अनगार ऋषभदेवजी के ८४ गणधर, वीस हजार मुनि एव तीन लाख साध्वियां थी।

इस व्याख्यान मे भगवान् ऋषभदेव के जन्म से लेकर उनके पुत्र भरत के केवल-ज्ञान की प्राप्ति तक का विषद वर्णन आ गया है।

भरत ने जब ९९ भाइयो को अपने अधीन राज्य करने का आदेश दिया तो यह कार्य भाइयो को अच्छा नही लगा और इस बात की शिकायत करने वे ऋषभदेव के पास पहुचे। ऋषभदेव ने उन्हे उपदेश देते हुए ऐसे राज्य को प्राप्त करने का उपदेश दिया जिसे कोई छीन नही सकता। स्वामीजी ने इस प्रसग को अत्यन्त सुन्दर ढग से उपस्थित किया है :

प्रतिबूझो रे, म्हे थांने दीधो राज।
तिण राज सूं काज सीझे नही, प्रतिबूझो रे।
जिण राज सूं सीझे काज, ते राज न दियो थांने सही॥
खोस्यो जाए राज, ते राज म जाणो आपरो।
इण थोथा राज रे काज, यूं ही पचे जीव बापडो॥
अविचल मुगत रो राज, ते लीधो न जाए केहनो।
तिहां भय दुख जाए सर्व भाज, अनोपम सुख छे जेहनो॥
इण थोथा राज रे काज, भाई भाई मांहोमां लड परे।
वले छोडे सर्म ने लाज, आपस मे मांहोमां कट मरे॥
तन धन ने परिवार, इहांका इहां रहसी सही।
परभव नावे लार, त्यांसूं गरज सरे नहीं॥
परहडे सगा नें सेण, परहडे सचियो धन हाथ रो।
बंधव त्रिया ने पूत, नहि परहडे धर्म जगनाथ रो॥
जब लग स्वारथ होय, तब लग मुख जी जी करे।
स्वारथ सरियां जोय, मुख दीठांई लड पडे॥
इंद्री विषय कषाय, ए अभितर भोमिया वस करो।
मेटो तृष्णा लाय, सुमता रस चित्त मे धरो॥
हिरदे विमासी जोय, तन धन जोबन असासता।
तिणमे म राचो कोय, ज्यूं सुख पामों सासता॥
एहवो अथिर संसार, थिर कोई वस्तु दीसे नहीं।
तिणने त्रिण धिक्कार, जे इणमे राच रहता सही॥
श्रद्धा सेंठी धार, नव तत्व रो निरणो करो।
साधुपणो ल्यो सार, ज्यूं सिवरमणी वेगी वरो॥
रिषभ जिनद कहे आम, चारित्र हिवडां थे आदरो।
तो पामो अविचल ठाम, ते छे थानक सदा समाध रो॥
थे आया राज रे काज, ते राज मारग छे नरक रो।
संजम लेवो थे आज, ओ मारग मुगत ने सरग रो॥

मात्र दो व्यक्तियो की स्वार्थ-सिद्धि के लिये संसार की खून-खराबी नही होनी चाहिये, स्वामीजी ने इस बात को इस प्रकार कहलाया है :

राज कीजो जीतो जिको, हूं भरसूं थांरी साख।
बीजा अनेरा लोकां भणी, काय मरावो अन्हाख ॥

सक्षेप मे अनेक वर्णनो (नगर-वर्णन, चतुरगिनी मेना-वर्णन, वैभव-वर्णन, भरत का दिग्विजय-वर्णन, रत्न की सप्राप्ति, साधु और साध्वियो के वर्णन) एव सदुपदेशो से भरा हुआ स्वामीजी का यह आख्यान उनकी कवित्व शक्ति एव दार्शनिक पाण्डित्य का एक सुन्दर निदर्शन है। भरत का जीवन अनासक्त जीवन का उत्कृष्ट नमूना है।

१८—जम्बूकुमार चरित :

इस व्याख्यान का आधार 'जम्बुपइन्ना' है :—

जम्बूकुमार द्वितीय पट्टधर सुधर्मा स्वामी के शिष्य थे। वे राजगृही नगर के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम ऋषभदत्त था और माता का नाम धारणी देवी। इनकी सगाई आठ श्रेष्ठी कन्याओ से हुई थी। एक समय सुधर्मा स्वामी राजगृह पधारे। जम्बूकुमार भी सुधर्मा स्वामी के दर्शन के लिये गये। सुधर्मा स्वामी की वाणी सुन उनको वैराग्य हुआ और उन्होने दीक्षा लेने का निश्चय किया। इन्होने घर आकर माता-पिता से अपने भाव प्रदर्शित किये। पर माता-पिता ने जम्बूकुमार का विवाह आठ कन्याओ से कर दिया।

अब जम्बूकुमार आठो पत्नियो के साथ महल मे आये और एक-एक को समझाना शुरू किया। आठो प्रश्न करती हैं। जम्बूकुमार सब का समाधान विविध दृष्टान्तो से करते हैं। अन्त मे विजय जम्बूकुमार की होती है। आठो स्त्रियाँ भी दीक्षा लेने के लिए तैयार हो जाती हैं। इसी बीच एक घटना घटी। प्रभव नाम का चोर अपने पांच सौ साथियो के साथ चोरी करने के लिये आया और जम्बूकुमार को दहेज मे जो कुछ भी मिला था उसको बटोरने लगा। जम्बूकुमार स्वय आखो से यह दृश्य देख रहे थे किन्तु उन्होने उसका विरोध नही किया। अपनी आठो पत्नियो के साथ जम्बूकुमार की जो वैराग्यपूर्ण बातें हुईं उन्हे सुनकर प्रभव चोर बहुत प्रभावित हुआ। उसने जम्बूकुमार से अनेक प्रश्न किये। अन्तत जम्बू कुमार की वैराग्यपूर्ण वाणी से प्रभावित हो वह उनके साथ दीक्षा लेने को तैयार हो गया। प्रभव चोर के साथियो ने भी दीक्षा की भावना व्यक्त की। इस प्रकार जम्बूकुमार आठो पत्नियो और पाँच सौ चोरो के साथ प्रात मात-पिता के पास आये और उन्हे भी दीक्षा के लिये प्रेरित किया। इस प्रकार माता-पिता, आठो पत्नियो और पाँच सौ चोरो के साथ वे दीक्षित हुए। जम्बूस्वामी आखिरी केवली हुए।

वैराग्य रस युक्त स्वामीजी का यह व्याख्यान पुन पुन. पठनीय है। भोगी और वैरागी जीवन की ऐसी वार्ता अन्यत्र दुर्लभ है। जबूकुमार और आठो पत्नियो का परस्पर वार्तालाप अत्यन्त रसप्रद और वैराग्यपूर्ण है।

इस चरित्र का उपसहार करते हुए स्वामीजी कहते हैं—एक हलुकर्मी भव्यजीव को समझाने से कितने जीवो का उपकार होता है। पात्र को उपदेश देना उचित है और अपात्र को देना अनुचित। स्वामीजी ने इन्ही विचारो को निम्न गाथाओ में व्यक्त किया है

एक जंबूकुमर नें समझावियां, हुवो घणो उपगार हो।
हुई वधोतर जिनधर्म री, वले हुवो घणा रो उधार हो।
किणही भारीकर्मा ने चारित्र दियां, हुवे छे घणोइज विगाड़ हो।
वले हेला हुवे जिनधर्म री, घणा रे वधे अनंत संसार हो।

पांचसो चोरां ने प्रतिबोधिया, त्यांमे हुता केई प्रकृति रा फूणिंद हो।
त्यांनें समझाय मारग आणिया, ते पिण पाम्यां परम आनंद हो।
केई काछ लपटी कुसीलिया, ते हुंता धाड़ापाड़ हो।
त्यांनें उपदेश देई ठाय आणिया, किया मोटा अणगार हो।
चोर हुता सगलाई पापिया, ते करता अनेक अकाज हो।
त्या सगला नें धर्म पमायनें, दियो मुगतपुरी नो राज हो।
भगवत श्री वर्धमान रे, पाटवी सुधर्म स्वाम हो।
त्यां सुधर्म स्वामी रे पाटवी, जंवू स्वाम त्यांरो नाम हो।
गजहस्ती री त्यांने ओपमा, पुरुषां माहे सीह समान हो।
त्यां सीह जिम सजम आदस्यो, सीह जीम पाल्यो चारित्र निधान हो।

१६—सुदर्शन चरित :

चम्पा नाम की नगरी थी। धात्रीवाहन राजा उस नगरी के अधिपति थे। उनकी पटरानी का नाम था अभया। उस नगरी में ऋषभदास नाम का वारह व्रतधारी श्रावक रहता था। उसकी जिनमती नाम की भार्या थी। वह भी श्राविका थी। उनके पुत्र का नाम सुदर्शन था। सुदर्शन युवा हुआ। उसका विवाह अत्यन्त गुणवती मनोरमा नाम की श्रेष्ठी कन्या से हुआ। पिता के धार्मिक सस्कारो का प्रभाव उस पर भी पडा और उसने भी श्रावक के वारह व्रत धारण किये। मनोरमा देवी ने भी वारह व्रत लिये। इस तरह दोनो ही पति-पत्नी धार्मिक वृत्ति से जीवन-यापन करने लगे।

सेठ सुदर्शन का कपिल नामक मत्री मित्र था। उसकी पत्नी का नाम कपिला था। एक समय सुदर्शन सेठ कपिला के घर ठहरा। वह उसके सौदर्य को देखकर मुग्ध हो गई। उसने किसी भी तरह से सुदर्शन को अपना अनुरागी वनाने का निश्चय किया।

एक दिन कपिल मंत्री दूसरे गाँव चले गये। कपिला को अच्छा अवसर मिला। उसने दासी के द्वारा सुदर्शन को कहला भेजा कि आपके मित्र कपिल वहुत बीमार हैं और आपकी याद कर रहे हैं। मित्र के स्नेहवश सुदर्शन कपिल के घर पहुचा। कपिला ने उन्हे अपने महल में ले जाकर दरवाजा वन्द कर दिया और सुदर्शन से भोग की प्रार्थना करने लगा। सुदर्शन यह सब देखकर चकित हो गया। वह उसके फन्दे से छूटने का प्रयत्न करने लगा परन्तु वह तो इतनी काम-विह्वला हो गई थी कि उसके शरीर से लिपट गई। किन्तु सुदर्शन इस स्थिति मे भी निर्विकार रहा। वार-वार उसके उत्तेजित करने पर भी जव सुदर्शन निर्विकार रहा तो उसने पूछा—"क्या आपमे पौरुप नही है?" सुदर्शन को यह अच्छा अवसर हाथ लगा। उसने कहा—"मैं नपुसक हूँ।" कपिला ने अन्त मे उसे छोड दिया। सुदर्शन अपने घर चला गया। इस घटना से सुदर्शन ने नियम किया कि आज के वाद मैं अव किसी के घर नही जाऊँगा।

एक दिन महारानी अभया ने धात्रीवाहन राजा से वसन्त महोत्सव मनाने की प्रार्थना की। महाराजा ने रानी की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन्होने समस्त नगरी की जनता को महोत्सव मनाने की आज्ञा दी और स्वय स्नान कर वस्त्रालकारो से सज्जित हो महारानी अभया के साथ उद्यान मे आये। कपिला भी वाग में पहुची। मनोरमा देवी अपने चार पुत्रो के साथ वाग में आई। रानी अभया ने देवकुमार सदृश चार पुत्रो को देखा और दासी से पूछा—"ये पुत्र किनके हैं?" दासी ने कहा—"ये सुदर्शन के पुत्र हैं।" कपिला पास ही मे वैठी थी। उसने कहा—"सुदर्शन तो नपुसक है फिर ये पुत्र कैसे हुए?" अभया ने कहा—"सुदर्शन ने तुझे ठग लिया है। वस्तुत सुदर्शन नपुंसक

नही, किन्तु अत्यन्त सुन्दर पुरुष है।" कपिला ने कहा—"मैं तो छली गई किन्तु आप अगर सुदर्शन से भोग भोगें तो आपका जीवन सफल मानूगी, अन्यथा आपका गर्व झूठा है।" अभया को अपने सौदर्य का अभिमान था। उसने मन ही मन सुदर्शन को पाने का निश्चय किया। उत्सव समाप्त हो गया। सब लोग अपने-अपने स्थान पर चले गये।

अब अभया सुदर्शन को पाने का उपाय खोजने लगी। इस काम के लिये उसने अपनी चतुर धाय-माता का सहारा लिया और सुदर्शन को किसी भी उपाय से महल मे लाने का कार्यभार उसे सौंप दिया।

धाय सेठ को लाने का उपाय खोजने लगी। उसे यह पता लगा कि सुदर्शन चतुर्दशी का पोषध कर रात्रि के समय श्मशान मे ध्यानस्थ होकर समय व्यतीत करता है। उसने कुशल कुम्भकार को बुलाया और उससे मिट्टी की पुरुष-प्रतिमा बनाने को कहा। कुम्भकार ने सुन्दर पुरुष-प्रतिमा निर्मित की। अब धाय प्रति दिन उस मिट्टी की प्रतिमा को महल मे लाती। द्वारपाल के रोकने पर धाय ने कहा—"रानी मध्य रात्रि में पुरुष-प्रतिमा का पूजन करती हैं। अत इसे मैं हमेशा ले जाती हूँ।" इस प्रकार धाय ने द्वारपाल का विश्वास प्राप्त कर लिया।

एक दिन चतुर्दशी की रात्रि मे पोषध करते हुए सुदर्शन को उठाकर धाय महल मे ले आई। अभया की इच्छा पूर्ण हुई। अब अभया सुदर्शन को अपने अधीन करने का प्रयत्न करने लगी। उसने सुदर्शन को वश मे करने के कई उपाय किये किन्तु वह तो सचमुच ही मिट्टी का-सा पुतला बना रहा। अभया के वचनो का उस पर कुछ भी असर नही हुआ। रानी अपने को असफल देख सेठ पर अत्यन्त क्रुद्ध हुई और क्रोध के आवेश में अत्यन्त कठोर शब्दो से उसकी ताडना करने लगी। रानी के हास्य, रुदन, क्रोध एव राज्यलोभ का सुदर्शन पर कोई असर नही हुआ। वह अपने आत्म-चिन्तन मे लवलीन रहा। अभया ने अब सुदर्शन के इस व्यवहार का बदला लेना चाहा। उसने अपने वस्त्र फाड डाले, अलकार इधर-उधर फेंक दिये और नाखून से शरीर को नोच डाला, बाल बिखेर दिये और जोरो से हल्ला करने लगी—"बचाओ! बचाओ!! सुदर्शन मेरा शील भङ्ग कर रहा है।" द्वारपाल आवाज सुनकर दौड़े आये और उन्होने सुदर्शन को कैद कर लिया।

धात्रीवाहन राजा आया। उसने अभया की बात पर विश्वास कर सुदर्शन को शूली पर चढाने का आदेश दे दिया। नगर की जनता ने राजा को बहुत समझाया परन्तु राजा ने किसी की भी बात न सुनी। अन्त मे सेठ को शूली पर चढा दिया गया।

अपने पर धर्म-सकट आया समझ सेठ ने सागारी अनशन कर लिया और 'नमुक्कार मंत्र' का ध्यान करने लगा। सुदर्शन के शील-प्रभाव से शूली सिंहासन बन गई। राजा को जब यह पता लगा तो वह दौड कर आया और सुदर्शन से अपने अपराध की बार-बार क्षमा-याचना करने लगा। इधर अभया को जब शूली के सिंहासन बन जाने की घटना का पता लगा तो महल से कूद कर उसने आत्महत्या कर ली। मनोरमा को जब यह मालूम हुआ कि सेठ को शूली पर चढा दिया गया है तो उसने भी अनशन कर लिया और ध्यानस्थ हो गई। सेठ सुरक्षित रूप से घर चला आया और उसने पत्नी को पुकारा। पति के आगमन पर मनोरमा को अत्यन्त हर्ष हुआ और उसने अनशन पूरा कर पारण किया।

उस समय चार ज्ञान के स्वामी धर्मघोष स्थविर चपा नगरी मे पधारे। सुदर्शन स्थविर-दर्शन के लिए गया और उनसे अपने पिछले जन्म का वृत्तान्त पूछा। उत्तर मे स्थविर ने फरमाया—"सुदर्शन! तू पूर्व जन्म मे गोपालक था और सेठ ऋषभदत्त की गायें चराता था। जगल मे एक मुनि के द्वारा प्रतिबोधित हो तूने 'नमुक्कार मंत्र' सीखा और उसका ही दिन-रात ध्यान करने लगा। 'नमुक्कार

मत्र' के ध्यान से तू मर कर ऋषभदत्त सेठ का पुत्र बना।" मुनिराज के द्वारा भावपूर्ण उपदेश एव अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुन उसे वैराग्य हुआ। उसने पंच मुष्टि लोचकर महास्थविर के पास दीक्षा ली और तपस्वी-जीवन व्यतीत करते हुए ग्रामानुग्राम विचरने लगा।

एक बार जब सुदर्शन मुनि एक महीने के उपवास के पारण के लिए जा रहे थे दवदत्ती नाम की वेश्या उनके रूप पर मुग्ध हो गई। उसने मुनि को अपने घर बुलाने का निश्चय किया। वह वेश्या से श्राविका बन मुनि की भक्ति करने लगी। एक दिन वह आहार के बहाने मुनि को अपने घर ले गई और दरवाजा बन्द कर मुनि को विविध प्रकार से अपने वश मे करने का प्रयत्न करने लगी। उसने तीन दिनो तक मुनि को अधीन करने का प्रयत्न किया, किन्तु मुनि ने जब वेश्या की बात नही मानी तो उसने उन्हे घर से बाहर निकाल दिया। मुनि श्मशान मे ध्यान करने लगे। अभया मर कर राक्षसी हुई। उसने मुनि को बहुत उपसर्ग दिया परन्तु वे अविचल रहे। इस प्रकार उन्होने शुभ ध्यान एव शुभ अध्यवसायो से चार घनघाति कर्मों का क्षय कर केवल-ज्ञान प्राप्त किया और सम्पूर्ण कर्मो से मुक्त हो अविचल निर्वाण पद प्राप्त किया।

यह वैराग्य एव शील की एक उत्कृष्ट कथा है। श्रेष्ठी पुत्र सुदर्शन 'घृत कुम्भ समा नारी, तप्ताङ्गार समः पुमान्' के कथन को अपनी अविचल दृढता से यह असिद्ध कर देता है। यह कथा अनूठे काव्य रस से ओतप्रोत है।

२०—चेलणा रो चोढालियो :

श्रेणिक महाराजा बौद्ध धर्मावलम्बी थे और उनकी पत्नी महारानी चेलणा जैन धर्मानुरागिणी थी। दोनो मे विवाद चलता था। महाराजा चेलणा को बौद्ध धर्मी बनाना चाहते थे और रानी चेलणा श्रेणिक को जैन बनाना चाहती थी। एक समय रानी ने बौद्ध साधु को भोजन के लिए बुलाया और उनसे चर्चा कर उन्हे परास्त किया। महाराजा को यह अच्छा नही लगा। उसने भी जैन साधुओ का अपमान करने की ठानी। वह अवसर की खोज करने लगा।

एक समय सुदर्शन नाम के अनगार राजगृह पधारे। महाराजा श्रेणिक को पता लग गया। उन्होने एक वेश्या को मुनि के स्थान पर जाकर उन्हे भ्रष्ट करने का आदेश दिया। वेश्या मुनि के स्थान पर गई और चारो ओर से दरवाजे बन्द कर मुनि को भ्रष्ट करने का प्रयत्न करने लगी। मुनि ने देखा—"यह परीक्षा का समय है और शासन की लाज भी रखनी ही होगी।" अत उन्होने लब्धि द्वारा एक योगी का वेष बनाया। जटा, कमण्डलु, रुद्राक्ष की माला पहन बैठ गये। श्रेणिक रानी के पास आकर बोला—"तुम्हारे गुरु तो वेश्या के साथ मौज कर रहे हैं।" तब रानी ने कहा—"वे मेरे नही किन्तु आपके ही गुरु होगे।" श्रेणिक चेलणा को साथ ले, जहाँ मुनि थे, वहाँ आये। दरवाजा खुलाकर देखते ही महाराजा चकित हो गये। उन्होने एक निर्ग्रन्थ मुनि के बदले एक योगी को बैठे देखा।

इस कहानी मे धर्म पर संकट मान निर्ग्रन्थ अपना रूप बदलता है। इस तरह लब्धि-स्फोटन करना स्वामीजी की दृष्टि मे धर्मसगत नही। उनकी दृष्टि से ऐसा करने पर बिना प्रायश्चित्त किये साधु की शुद्धि नही होती। निम्न दो पद इस बात को स्पष्ट कर देते हैं

करडी आण वणी तिण ठाम, साधु लब्धि फोरवी ताम ॥
ते पिण आलोवण कर मुनिराय, प्राश्चित ले सुद्ध हुवो ताय।
साधु तो अणसण कर ताम, सुरलोक मे गयो तिण ठाम ॥

चेलणा का शास्त्रार्थ करना इस बात को बतलाता है कि उस काल मे जैन श्राविकायें परम विदुषी होती थी।

२१—सास वहू रो बखाण :

वसन्तपुर नाम का एक नगर था। वहाँ धनावा नाम का सेठ था और उसकी पत्नी का नाम था भद्रा। धनदत्त और धनमित्र उनके दो पुत्र थे। दोनो विवाहित थे। सास का छोटी पुत्रवधू पर राग था। और वडी पर द्वेप। छोटी वहू को वह मानती थी और उसकी हर आवश्यकता की पूर्ति करती थी और वडी वहू के प्रति आन्तरिक द्वेप के कारण उसके साथ वह दासी का-सा व्यवहार करती थी। सास धर्म से भी द्वेप रखती थी। उसे कोई धार्मिक कार्य करता हुआ व्यक्ति नही सुहाता था। सास के द्वेष पूर्ण व्यवहार से वडी वहू सास की घात चाहने लगी।

एक दिन वडी वहू ने चोरी से थोडा दूध पी लिया। देवरानी ने सास से जाकर कह दिया। वस इसी बात पर सास-वहू मे झगडा हो गया। वडी वहू ने फाँसी लगा कर आत्महत्या कर ली और मर कर सर्पिणी बन गई और उसके घर मे आकर उसने देवर को डँस लिया। सास मरकर कावली बन गई और द्वेप वश सर्पिणी को मार कर खा गई। सर्पिणी मर कर बिल्ली बन गई और वह कावली को मार कर खा गई। कावली मर कर कुतिया बनी और उसने बिल्ली को मार दिया। दोनो ही मर कर पहली नरक मे गई। इधर धनावा सेठ ने अपने पुत्र के साथ दीक्षा ली और सयमी जीवन की साधना करते हुए मोक्ष गति को प्राप्त किया।

इधर दोनो सास-बहू अनेक योनियो मे एक दूसरे को द्वेप पूर्ण बुद्धि से मारती हुई सातवी नरक मे गई। वहाँ से व्रजपुर नगर मे दोनो वेश्यायें हुई। कालान्तर मे दोनो मे द्वेष जगा और दोनो ने एक दूसरे की हत्या कर छठी नरक मे जन्म लिया। इस प्रकार दोनो ही अनत ससार परिभ्रमण करती रहेंगी। द्वेप का परिणाम इसी तरह भयकर होता है।

राग और द्वेप ही कर्म-बीज हैं और कर्म-बीज ही ससार के हेतु हैं। यह जैन-धर्म की मान्यता है। ये राग-द्वेप जन्म-जन्मान्तर तक बराबर चलते रहते हैं। इस कृति का निचोड है

अनत काल निगोद मे रे, भोगव्या दुख अनत।
तिणरो कहितां पार आवे नही, तिहा दुख माहे दुख अत्यंत॥
आदि अत रहित ससार मे रे, भ्रमण करसी तिण माय।
इम जाणी राग द्वेष परहरो रे, ज्यू मुगत विराजो जाय॥
जिण घर मे राग द्वेष ऊपजे रे, तिणसू आछो कदेय म जाण।
अजस अकीर्ति हुवे अति घणी रे, अनेक वस्तु नी हाण॥

आगम मे भी कहा है

कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो व पवड्ढमाणा।
चत्तारि ए ए कसिणा कसाया, सिंचन्ति मूलाइं पुनब्भवस्स॥

अर्थात् क्रोध, मान, माया, लोभादि ही पुनर्भव रूपी वृक्ष का सिंचन करते हैं और इन्हीके वश होकर जीव बराबर क्लेश पाता रहता है।

स्वामीजी के जितने भी व्याख्यान इस सग्रह मे हैं वे काव्य-कला की दृष्टि से अति उत्कृष्ट एव रसप्रद हैं। स्वामीजी की सहज काव्य-शक्ति इनमे स्थान-थान पर मुखरित है। इन कृतियो के आधार मुख्यतया आगमिक वर्णन हैं परन्तु उन्होने उनको जिस रूप मे पल्लवित किया है वह उन्हे मौलिक

रूप प्रदान करता है। ये व्याख्यान वैराग्य के निर्झर हैं। इन व्याख्यानो के बीच-बीच मे ऐसे मौलिक सूत्र हैं जो जीवन मे हर समय दिशा-निर्देश करने मे अत्यन्त सबल हैं।

स्वामीजी तत्त्व-ज्ञान के अविरल स्रोत थे। उनकी वैराग्य-वृत्ति स्वाभाविक थी। वे सस्कार से ही ज्ञानी-गुरु थे। उनके ज्ञान, वैराग्य और तत्त्व-ज्ञान ने इन व्याख्यानो मे अद्भुत शान्त रस भर दिया है। सारे चरित्र-चित्रणो मे अद्भुत स्वाभाविकता है। प्रसगानुसार प्रत्येक चरित्र-चित्रण उत्कृष्टता को प्राप्त हुआ है। नि सदेह 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' का यह द्वितीय खण्ड राजस्थानी साहित्य का एक उज्ज्वल रत्न सिद्ध होगा। स्वामीजी की महान् साहित्यिक-प्रतिभा का यह एक ज्वलत उदाहरण है। आध्यात्मिक और तात्त्विक जगत मे स्वामीजी की देन जितनी महान् है उससे कम महत्त्वपूर्ण देन साहित्यिक क्षेत्र मे भी नही।

एक प्रतिभाशाली सहज कवि ज्ञानगर्भित-गिरा मे गम्भीर तत्त्वो को इतना सुगम करता हुआ आगे बढता है कि एक कृषक भी बिना कोश की सहायता से इन कृतियो को सरलता से समझ सकता है। यह स्वामीजी की कृतियो की एक बहुत बड़ी विशेषता है।

महासभा ने स्वामीजी की मूल कृतियो के प्रकाशन द्वारा एक स्तुत्य कार्य किया है। यह भावी पीढ़ी के लिये अति लाभदायक सिद्ध होगा, इसमे सन्देह नही।

१५, नूरमल लोहिया लेन,
कलकत्ता—७
३० जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

रत्न : १

गोसाला री चौपई

दुहा

अरिहत सिद्ध ने आयरीया, उवझाया सगला साध।
मुगत नगर ना दायका, ए पाचू पद अराध ॥१॥
नमूं वीर सासण धणी, ते सुतर देव अरिहत।
त्यां भाख्या ते गणधरां गूथीया, ते आगम सार सिद्धत ॥२॥
भगोती रा पनरमा सतक में, गोसाला रो इधकार।
तिण अनुसारे हूं कहूं, ते साभलजो विसतार ॥३॥
तिण कालैं ने तिण समे, नगरी सावत्थी नाम।
तिहा कोठग नांमे बाग थो, इसाण कूणने ठाम ॥४॥
हलाहल कुभारी तिहां वसे, तिणरे रिध घणी घर माहि।
ते गोसालारी छै श्रावका, मत झाल रही छै ताहि ॥५॥
ते गोसाला रा सिद्धत रा, लाधा छै अर्थ अनेक।
वले अर्थ ग्रह्या नें पूछिया, निरणो कीधो छै वशेष ॥६॥
हाड़ मींजा रंगी छै तेहनी, गोसाला रा धर्म मे ताहि।
अर्थ परम अर्थ गिणे तेहनें, सेष गिणे छै अनर्थ मांहि ॥७॥
इण विध आतमा भावती, विचरे छै दिन रात।
ते जांणे तीर्थंकर तेहने, तिणरे संका नहीं तिलमात ॥८॥

ढाल : १

[मम करो काया माया कारमी]

तिण हलाहल कुंभारी री जायगां मझे, पिरवार सहित आयो तास जी।
तिण काले गोसाला ने हुवा, पवज्जा लिया चौवीस वास जी।।
भाव सुणो गोसाला तणा।। आँकड़ी १।।
छ दिसाचर पास संतानिया, ते पूर्वधारी था ताय जी।
त्या जस कीरत सुण गोसाला तणी, ते मिलिया गोसाला मे आय जी।। भाव० २।।
साण[१] कलंद[२] कणियार[३] ने, अछिद्र[४] अगीवेसायण[५] तांम जी।
छठो गोमाउ नो पुत्र अर्जुन[६], ए छ दिसाचर नां नाम जी।। भाव० ३।।
जब गोसालो मन हरषत हुवो, ज्यू डाकण ने जरख मिले आंण जी।
ज्यू लीधी असवारा सांढ्यां भणी, ए दिष्टंत लीजो पिछाण जी।। भाव० ४।।
आठ महा निमत्त सास्त्र तके, गोसालो भण्यो मुख पाठ जी।
तिण सू लोकां ने भरमाय ने, सिष-सिषणी रो कीयो थाठजी।। भाव० ५।।
भूम कपे उतपात[७] हुवै वले, सुपना रो जाणो विचार जी।
उलकापात हुवै लोक मे, ते फल रो जाणो विसतार जी।। भाव० ६।।
अग फुरके डावो जीमणो, तेहना पिण अर्थ नो जाण जी।
स्वर कागादिक तेहना, ते पिण लिया पिछाण जी।। भाव० ७।।
मस तिलकादिक वंजणा, लषण सास्त्र जाणे ताम जी।
ए आठ महा निमत्त सास्त्र भण्यो, ते परूप रह्यो ठाम ठाम जी।। भाव० ८।।
तिण सू छ वागरणा मुख वागरे, जोतक भाखे अनेक जी।
तिण सू लोक मत मे पड़्या घणा, इह लोक रा अर्थी विशेष जी।। भाव० ९।।
ते लाभ अलाभ परूपतो, सुख दुख परूपे छै तेहजी।
जीवन मरण परूपतो, आ मुदे सिद्धाई छै एहजी।। भाव० १०।।
तिण सू कहे सावत्थी नगरी मझे, हू जिण वीतराग स्वयमेव जी।
हू अरिहन्त छू केवली, हूं सतवादी देवातदेव जी।। भाव० ११।।
गोसालो नहीं अरिहत केवली, ओ झूठाबोलो छै साख्यात जी।
पिण जिण अरिहत ज्यू पूजावतो, संके नही तिलमात जी।। भाव० १२।।
घणा लोक माहोमाहि इम कहे, आजूणा काल रे माय जी।
गोसालोजी तीर्थ कर चोवीसमो, कोई संक म राखजो काय जी।। भाव० १३।।
सावत्थी नगरी मे फेलीयो, गोसाला रो गूढ मिथ्यात जी।
घणा लोक गोसाला रा मत मझे, ते किण री सरधे नही बात जी।।भाव० १४।।

●

दुहा

तिण काले नें तिण समे, भगवंत श्री महावीर।
ते तीर्थंकर चोवीसमा, विचरत साहस धीर ।।१।।
गांवां नगरां विचरता, करता पर उपगार।
सावत्थी नगरी पधारिया, साथे साधां रो वहु पिरवार ।।२।।
सावत्थी नगरी रे वाहिरे, इसांण कूणरें मांय।
तिहां कोठग नामें वाग थो, ते छहूं रितु सुखदाय ।।३।।
तिण वाग माहे वीर ऊतर्‌या, भव जीवां रे भाग।
मारग दिखावे मोख रो, उपजावे वैराग ।।४।।

ढाल : २

[अरिहंत मोटका ए]

भगवत भलांइ पधारिया ए, भव जीवा रा तारणहार।
समजावे नर-नार ने ए, उतारे भव - जल - पार।।
भगवंत भलां आवीया ए।। आँकड़ी १।।
सावत्थी नगरी में फेलीयो ए, गोसाला रो गूढ़ मिथ्यात।
ते काढण आवीया ए, स्वयमेव श्री जगनाथ ।।भ० २।।
त्यां राग द्वेष दोय खय कीया ए, वले नहीं किण री पखपात।
निंद्या नहीं केहनी ए, नही य खुसामदी री बात ।।भ० ३।।
सावत्थी नगरी नी य परखदा ए, वाणी सुणे हरखत थाय।
वंदणा करे वीर नें ए, आया था जिण दिस जाय ।।भ० ४।।
पेहिले पोहर गोतम सझाय करी ए, वीजे पोहर ध्यानज ध्याय।
तीजे पोहर गोचरी ए, उठ्या सावत्थी नगरी रे मांय ।।भ० ५।।
लोक सावत्थी नगरी तणा ए, ठाम ठांम करे इम बात।
गोसालो जिण केवली ए, चौवीसमो जगनाथ ।। भ० ६।।
ए वचन गोतम सामी सांभल्यो ए, पाछा आया भगवत पास के।
आहार देखायने ए, हिवें प्रश्न पूछे आंण हुलास ।।भ० ७।।
हू आप तणी लेइ आगना ए, गयो सावत्थी नगरी माय।
तिहा लोक वाता करें ए, कहे गोसालो छै जिनराय ।।भ० ८।।
जो इच्छा हुवे सांमी आपरी ए, तो किरपा करे कहो जगनाथ।
उठाणपरिया* एहनीं ए, मांड कहो सहु बात ।।भ० ९।।

*नोट—उठाणपरियाणिय=आद्योपान्त वृतात

दुहा

गोतमादिक सहु साधा भणी, बोलाय कहे भगवंत।
जे गोसाला ने तीर्थंकर कहे, ते बोले छे झूठ एकत ।।१।।
ओ मखली पुत्र डाकोतरो, डाकोतरा री जात।
हिवे धुर सु उतपत तेहनी कहू, ते सुणजो विख्यात ।।२।।

ढाल : ३

[कपूर हुवै अति उजलो]

मखली भिख्याचर डाकोतरो जी, पाटीया दिखाले चित्राम।
आजीवका करतो फिरे जी, तिणरे भद्रा स्त्री रो नाम हो ।।
गोतम सुण गोसाला रो विरतंत ।।आँकड़ी १।।
ते गर्भवती भद्रा हुई जी, ते गोसालो गर्भ मे तांम।
तिण अस्त्री ने साथे लीयां फिरे जी, गांव परगाम ठाम ठांम हो ।। गो० २ ।।
तिण काले ने तिण समे जी, सरवण नामे सनीवेस।
तिहा सुखिया लोक वसें घणां जी, त्यारे रिधरो घणों परवेस हो ।। गो० ३ ।।
तिहा गोबहुल नामे ब्राह्मण वसे जी, तिणरे रिध घणी घर माहि।
ते च्यार वेद रो जाण थो जी, त्यारा अनेक सास्त्र जाणें ताहि हो ।। गा० ४ ।।
तिण ब्राह्मण रे गउसाला हुंती जी, ते मोटी घणी थी ताहि।
मखली भद्रा सहित फिरतो थको जी, आय उतरीयो तिण माहि हो ।। गो० ५ ।।
तिण गऊसाला मे जनमीयो जी, तिण सू दीयो गोसालो नाम।
ते बाल भाव मूक्या पछे जी, जोवन प्राप्त हुवो ताम हो ।। गो० ६ ।।
कला चुतराइ परगट हुई जी, पाटीए चित्र्या रूप अनेक।
ते पिण हाथे लीयां फिरे जी, करे पेट भराइ वशेष हो ।। गो० ७ ।।
हूं बीस वरस घर मे रह्यो जी, पछे लीधो मै 'सजम हुलास।
पख २ खमण करतो पारणो जी, अठी गाम कीयो चौमास हो ।। गो० ८ ।।
बीजे वरस मास २ पारणो जी, हूं करतो थो एकण धार।
हू नगरी राजगृही आवीयो जी, नालदा पाड़ा मझार हो ।। गो० ९ ।।
तिण नालंदा पाड़ा मझे जी, ततूवाय साला थी तिण माय हो।
तिहां आग्या लेइ हूं ऊतरयो जी, तिण मे दीयो चौमासो ठाय हो ।।गो० १०।।
गोसालो पिण तिण अवसरे जी, तंतूवाय साला मे आय।
एक देस मे उपगरण मेलने जी, गयो राजगृही माहि हो ।।गो० ११।।
कठै जायगां न मिली तेहने जी, जब पाछो आयो तिण ठाम।
तंतूवाय साला रा एक देस मे जी, ओपिण रह्यो चौमासो तांम हो ।। गो० १२ ।।

हिल मास खमणा रो मारे पारणो जी, जब लेवा ने उठयो आहार।
तू ।न साला थी बारें नींकल्यो जी, आयो राजगृही नगर मझार हो ।। गो० १३ ।।

●

दुहा

हूं राजगृही नगरी मझे, करतो सुध गवेस।
विजै गाथापती तेहनां, घर मे कीयो परवेस ।।१।।
तिण मोने आवतो देखने, घणों हरषत हुवो मन मांहि।
वले संतोष पांम्यों अति घणों, वले भगत विनों कीयो ताहि ।।२।।

ढाल : ४

[साधुजी भलांई पधारिया]

तिण आसण छोड्यो उतावलो जी, वले उभो हुवो मांन मरोड़।
वले कीयो उतरासंग जुगत सूं जी, वले अजली कीधी कर जोड़।
साधुजी भलांई पधारीया जी ।।आँकड़ी १।।
सात आठ पग साह्मों आयने जी, लुल २ नीचो जी थाय।
तीन परदिषणा दे मो भणी जी, वदणा कीधी सींस नमाय ।। सा० २ ।।
आज माह्री रे जागी दिवा जी, पूगी म्हांरा मन तणी कोड।
आज भलो भांण ऊगियो जी, आज भाग कीयो म्हांरे जोर ।। सा० ३ ।।
आज करतारथ हूं थयो जी, मुनीवर आया म्हांरे बार।
ज्यां रे पुरषां तणी चावना जी, त्यांरो म्हे दीठो दीदार ।। सा० ४ ।।
गुणग्रांम कीया म्हांरा अति घणां जी, ते पिण वारूं जी वार।
भाव सहीत मोंने वांदीया जी, भाव सूं कीयो नमसकार ।। सा० ५ ।।
मोंनें रसोड़ा घर मांहे ले जाय नें जी, प्रतिलाभ्या च्यारूंई आहार।
दांन देतां ने दीयां पछे जी, पामियो हरष अपार ।। सा० ६ ।।
दरब दातार दोनूं सुध था जी, तीजो पातर सुध जाण।
वले सुध तीन करण तीन जोग रो जी, इणरे इसड़ो मिलयो जोग आंण ।। सा० ७ ।।
इण विध मोंने प्रतिलाभियो जी, असणादिक च्यारूंई आहार।
तिहां देव आऊखो तिण बाँधियो जी, वले कीधो तिण परत संसार ।। सा० ८ ।।
तिहां सुगंध पांणी देव वरसावीयो जी, वले वूठा पंच वर्ण जी फूल।
वले विरखा करी सोवन तणी जी, वूठा वले वसतर अमूल ।। सा० ९ ।।
देव वजाइ देव दुंदुभी जी, आकास रे अंतर ठांम।
मोटे सब्दे घोष पारीयो जी, दांन रा कीया गुण ग्रांम ।। सा० १० ।।

धिन २ करे छे देवता जी, धिन २ करे नर - नार।
विजै गाथापति ने कहे जी, इण सफल कीयों अवतार।। सा० ११ ।।
वले राजगृही नगरी मझे जी, घणां लोक करे गुण ग्राम।
इण जीतब जनम सुधारीयो जी, तिण साधु प्रतिलाभिया ताम।। सा० १२ ।।
पांच दरब परगट हुवा जी, ओ पिण लोकां इचरज देख।
तिण सूं ठाम २ बातां करे जी, विवरा सुध वशेख।। सा० १३ ।।

●

दुहा

ए बात गोसाले साभली, घणा लोका रे पास।
ते सांसो काढण भणीं, चाल्यो आण हुलास ।।१।।
तिण विजै तणो घर छै तिहा, आयो गोसालो ताम।
सोंनइयादिक फूलां तणा, गिंज दीठा तिण ठाम ।।२।।
तिण विजय तणा घर मांही थी, मोने नीकलतो देख।
जब इण म्हांरा गुण जाण ने, हरषत हुवो रे वशेख ।।३।।
मुझने आय वंदणा करी, वोल्यो जोड़ी हाथ।
थे धर्माचारज माहरा, हु सिष थारो सामीनाथ ।।४।।
ए वचन सुणे म्हे गोयमा, इणने आदर न दीयो ताम।
वले भलो न जाण्यो एहने, मुन साझी तिण ठाम ।।५।।
तिवार पछे हूं गोयमां, तिहा पाछो आयो चलाय।
बीजो मास खमण मैं पचखीयो, ततूवाय साला मे आय ।।६।।

ढाल : ५

[सल्य कोई मत राखज्यो]

बीजा मास खमण रे हूं पारणे, राजगृही नगरी मे आयो जी।
तिहां आणंद गाथापति वसे, हू गयो तिण रा घर माह्यो जी ।।
वीर कहे सुण गोयमां ।। आँकड़ी १ ।।
आणंद हरष्यो मोंने देखी आवतो, विनो कीयो रूडी रीतो जी।
विजय गाथापती नी परे, अतरग भाव भगत सहीतो जी ।। वी० २ ।।
मोंने रसोड़ा घर मे लेजाय ने, खंड खाजादिक विविध पकवानो जी।
मोनें प्रतिलाभ्यो हरष्यो घणो, सतोष पांम्यो देइने दानो जी ।। वी० ३ ।।
तिण देव आऊखो वांधीयो, वले कीयो परत संसारो जी।
सेष विजै जिम जाण जो, सगलोइ विसतारो जी ।। वी० ४ ।।

जब पिण गोसालो मो आगले, विनो कर बोल्यो जोड़ी हाथो जी।
थे धर्माचारज माहरा, हू सिष थारो सामीनाथो जी ।। वी० ५ ।।
जब पिण आरे इणने म्हे नही कीयो, मून साझे रह्यो ताह्यो जी।
वले मासखमण तीजो पचखियो, ततूवाय साला मे आयो जी ।। वी० ६ ।।
तीजा मासखमण रे पारणे, हू राजगृही मे आयो जी।
तिहा सुदंसण गाथापति वसे, हूं गयो तिणरा घर मांह्यो जी ।। वी० ७ ।।
मोने देख्यो सुदंसण आवतो, विनो कीयो रूडी रीतो जी।
विजै गाथापति नीं परे, अतरग भाव भगत सहीतो जी ।। वी० ८ ।।
मोने रसोड़ा घर मे ले जाय नें, सर्व गुण भोजन सरस आहारो जी।
मोने भाव सहित प्रतिलाभियो, हरख सतोष पांम्यो अपारो जी ।। वी० ९ ।।
इण पिण देव आऊखो बांधीयो, इण पिण कीयो परत ससारो जी।
विजै ज्यू सगलोई जांणजो, गोसाला सुधो विसतारो जी ।। वी० १० ।।
जब पिण गोसाला मों आगले, विनोंकर बोल्यो जोडी हाथो जी।
थे धर्माचारज माहरा हू सिष, थारो सामीनाथो जी ।। वी० ११ ।।
जब पिण इण ने आरे म्हे नही कीयो, मुन साझी रह्यो ताह्यो जी।
वले मास खमण चोथो पचखियो, ततूवाय साला रे माह्यो जी ।। वी० १२ ।।
तिण नालदा पाड़ा थी ढूकरो, कोलाग नामे सनिवेसो जी।
तिहा बहुल नामे ब्राह्मण वसे, तिण रे रिध प्रभूत वसेसो जी ।। वी० १३ ।।
ते च्यारूंई वेद रो जाण थो, ब्राह्मण रा सास्त्र जाण्या अनेको जी।
तिण काती चौमासी जीमण कीयो, मधु घृत सजुगत वशेको जी ।। वी० १४ ।।
चोथा मासखमण रे हू पारणे, आयो कोलाग सनिवेसो जी।
तिहा बहुल ब्राह्मण रे घरे, म्हे तिण मे कीयो परवेसो जी ।। वी० १५ ।।
तिण पिण मोने आवतो देखने, विनो कीयो रूडी रीतो जी।
विजै गाथापति नी परे, अतरंग भाव भगत सहीतो जी ।। वी० १६ ।।
मोने रसोडा घर मे ले जाय ने, घृत मधु सजुगत आहारो जी।
मोने भाव सहीत प्रतिलाभियो, हरख सतोष पाम्यो अपारो जी ।। वी० १७ ।।
इण पिण देव आऊखो बाधीयो, कीधो परत ससारो जी।
विजै गाथापति ज्यू जांणजो, सगलोई विसतारो जी ।। वी० १८ ।।

●

दुहा

जब गोसाले मोने दीठो नहीं, ततूवाय साला रे माहि।
जब मोंने जोयवा नीकल्यो, नगरी राजगृही माहि ।।१।।

तिहां न दीठो मो भणी, जब जोवण गयो नगरी बार।
सर्व दिस विदिस घणो जोवियो, पिण खबर न पांमी लिगार ॥२॥
उण कठेइ न दीठो मो भणी, ते विलखो हुवो अथाय।
खप खीजे पाछो आवियो, ततूवाय साला रे मांय ॥३॥
तिहा पाटीयादिक दूरा कीया, वणायो साध रो वेस।
तंतूवाय साला थी नीकल्यो, आया कोलाग नामे सनिवेस ॥४॥
कोलाग सनिवेस रे बाहिरे, लोक कहे माहोमाहि श्राम।
धन २ करे बहुल ब्राह्मण भणी, विजै नी परेकरे गुणग्रांम ॥५॥

ढाल : ६

[स्वामी म्हारा राजा नें धर्म सुणावज्यो]

मुझने मूकीने थे किहां गया, कहे गोसालो श्राम हो।
गुर विण चेलो किहा रहे, किहा पांमे विसरांम हो ॥
स्वामी थे मुझने मूकीने किहां गया ॥ आँ० १ ॥
थां उपर म्हारो अति घणो, हुतो अतत सनेह हो स्वामी। स्वा०
इसडा सिष सुवनीत ने, थे काय दे चाल्या छेह हो ॥ स्वा० २॥
एहवी करे विचारणा, चाल्यो तिहा थी ताम हो। स्वा०
कोलाग नामे सनिवेस छै, आय जोया तिण ठाम हो ॥ स्वा० ३॥
कोलाग सनिवेस बाहरे, कहे मांहोमाहि श्रांम हो। स्वा०
बहुल नामे ब्राह्मण तणा, लोक करे गुणग्राम हो ॥ स्वा० ४॥
ए वचन गोसाले सांभल्यो, घणां लोका रे पास हो। स्वा०
जब सॉसो मन उपनो, पछे बोल्यो मन मे विमास हो ॥ स्वा० ५॥
जेहवी रिध जोत छै म्हारा गुरु तणी, जस बल वीर्य वशेख हो। स्वा०
वले प्राक्रम त्यामे अति घणो, इत्यादिक गुण अनेक हो ॥ स्व० ६॥
धर्माचारज माहरा, भगवत श्री विरधमान हो। स्वा०
इसडो म्हे एक दीठों नहीं, बले नही सुणियो म्हे कान हो ॥ स्वा० ७॥
इहाँ धर्माचारज मांहरा, आया दीसे इण गाम हो। स्वा०
इसड़ी करे विचारणा, जोवा लागो तिण ठाम हो ॥ स्वा० ८॥
कोलाग सनिवेस तेह मे, जोवे अभितर बार हो। स्वा०
सर्व दिस विदिस जोवे तिहा, फिरे छे एकण धार हो ॥ स्व० ९॥
कोलाग सनिवेस बाहिरे, मनोगम भूमि रसाल हो। स्वा०
म्हे कीयो विसराम तिण उपरे, तिहा आयो गोसालो तिण काल हो॥स्वा०१०॥

तिहा गोसालो मोने देखने, हरख्यो घणो मन मांय हो। स्वा०
तीन प्रदिखणा दे वादने, विनो करे बोल्यो वाय हो ।। स्वा० ११।।
थे धर्माचारज माहरा, हू सिष थारो सुवनीत हो। स्वा०
हूं धर्म अतेवासी तेहने, मोने मेल आया इण रीत हो ।। स्वा० १२।।
आप वीहार कीयां पछे, हू हुवो अतत उदास हो। स्वा०
मोने साला लागी डरावणी, हू नींठ आयो तुम पास हो ।। स्वा० १३।।

●

दुहा

हू राजगृही जोवण गयो, तिहा जोया अभितर वार।
म्हे कठेय न दीठा आपने, जब हुई फिकर अपार ।।१।।
पछे कोलाग सनिवेस छो, तिहा आय जोया ठाम ठाम।
तिहा जस कीरत सुणी आपरी, मोने धीरज आइ तांम ।।२।।
थे धर्माचारज माहरा, हूं रहसू आप समीप।
मोने अलगो आप म मेलजो, हू पिण आतम मेल सू जीप।।३।।
ए वचन सुणे ने गोयमा, इणने म्हे कीधो अगीकार।
जब गोसाले मो साथे कीयो, रमणीक भूम थी वीहार ।।४।।
लाभ अलाभ सुख ने दुख, वले सतकार ने असतकार।
छ वरस लगें इण भोगव्या, मो साथे लगे तिण वार ।।५।।

ढाल : ७

[वेग पधारो महल बार]

अणिच जागरणा जागतो, परिसा सहे दिन रात।
हिवे करम जोगे तेहने, किण विध आवे मिथ्यात ।।
वीर कहे सुण गोयमा ।।आँकड़ी १।।
एकदा मो साथे कीयो, सिद्धार्थ गाम थी वीहार।
कुर्म गाम ने चालीया, विचे तिल देख्यो तिण वार ।।वीर० २।।
ते पान फूले हरीयो घणो, सोभ रह्यो थो अतत।
ते तिल गोसाले देखने, मोने पूछ्यो ए विरतत ।।वीर० ३।।
ए तिल पाके ने नीपजे, के नही नीपजे हो साम।
इणरा फूल जीव इहा थी चवी, उपजसी किण ठाम ।।वीर० ४।।

तिण अवसर म्हे गोयमा, कह्यो गोसाला ने आम।
इण तिल मे निश्चे करी, तिल नीपजसी ताम।।वीर० ५।।
ए जीव सात फूला तणा, छोडे इहाथी ठिकाण।
इण तिलरे होसी एक सूघणी, तिहा सात तिल होसी आण।।वीर० ६।।

●

दुहा

गोसाले तिण अवसरे, ए मूल न सरधी बात।
परतीत मूल आणी नही, पडवजीयो मिथ्यात।।१।।

ढाल : ८

[प्रभवो चोर चोरा नें समझावे]

वीर सू गोसाले पडवजीयो मिथ्यात, ते वीर वचन नही माने रे।
जब वीर समीप थी हलवे हलवे, तिल कने आयो छाने छाने रे।
वीर सू गोसाले पडवजीयो मिथ्यात।। आँ० १।।
तिण तिल उखेलने अलगो न्हाख्यो, वीर ने झूठा घालण गोसालो रे।
जब दिव बादल हुवा तिण काले, पाणी बूठो ततकालो रे।। वीर० २।।
जड माटी सहीत तिल उखणियो हुतो, तिण पाणी थी पाछो थभाणो रे।
तिल फल फूल सहीत नीपनो, वीर कह्यो जिम जाणो रे।।वीर० ३।।
वले गोसाले वीर साथे चाल्यो, ते मन माहे जाणे छे एमो रे।
ए प्रतख झूठ बोले छे चोड़े, ओ तिल नीपजसी केमो रे।।वीर० ४।।
हिवै तिहा थी चाल कुर्म गांमे आया, तिहा कुर्म गाम रे वारे रे।
तिहा वेसायण नामे बाल तपसी, तपसा करे छे तिणू वारे रे।।वीर० ५।।
ते बेले बेले निरन्तर करतो, तेजू लेस्या तिण माह्यो रे।
सूर्य साह्मी आतपना लेवे, उची कर कर बाह्यो रे।।वीर० ६।।
तिणरे सूर्य रा आताप थी जूआ, नीकल पडे छे बारो रे
त्यारी अणुकपा आण वेसायण तपसी, पाछी मेहले सरीर मझारो रे।।वीर० ७।।
तिण वेसायण तपसी ने देखे गोसालो, तिण कने आयो वीर छाने रे।
तिण ने कहे तू मुनी के अमुनी, ओ उत्तर दे तू म्हाने रे।।वीर० ८।।
के तू जूआ रो सेज्यातर छै, ओ उत्तर दे तू पाछो रे।
जब तपसी ए वचन ने आदर न दीधो, मनमे पिण नही जाण्यो आछो रे।।वीर०९।।
वेसायण तपसी मुन साझी जब, गोसालो कह्यो दोय तीन बारो रे।
तू मुनी के अमुनी छै तू, के जूआने सेज्या रो दातारो रे।।वीर०१०।।

दोय तीन वार कह्या तापस कोप्यो, धिग धिगयमान हुवो तातो रे ।
आतापना भूम थी पाछो फिरीयो, कीधी तेजस समुदघातो रे ।।वीर० ११।।
तेजू लेस्या काढी तिण सरीर वारे, गोसाला ने वालण काजे रे ।
मोने खीजाय ने ओ जीवतो जाओ, तो वाल भसम करूँ आजो रे ।।वीर० १२।।
जव म्हे गोतम लव्ध फोरव ने, सीतल लेस्या म्हे मेहली रे ।
गोसाला री अणुकपा ने अर्थे, तेजू लेस्या ने पाछी ठेली रे ।।वीर० १३।।
सीतल लेस्या थी तेजू लेस्या हणाणी, गोसालो पिण वलीयो नाही रे ।
जव वेसायण उपीयोग देइ ने, मोने जाण लीयो उण ताही रे ।।वीर० १४।।
जव वेसायण तपसी इम वोल्यो, जाण्या २ हे भगवान थाने रे ।
थे गोसाला ने वलवा न दीधो, ते खवर पडेगी म्हाने रे ।।वीर० १५।।
जव गोयमा मोने गोसाले पूछ्यो, जूको रो सेज्यातर कहे काइ रे ।
जाण्या २ हे भगवान आपने जाण्या, ते मोने खवर पडी नाही रे ।।वीर० १६।।

●

दुहा

तिण काले म्हे गोयमा, कह्यो गोसाला ने ओम ।
तू मो छांने तापस कने, तिणने जाये पूछ्यो थें ओम ।।१।।
तू मुनी अमुनी कदाग्रही, के सेज्यातर जूआ रो ठाम ।
तव वेसायण थारा वचन ने, भलोई न जाण्यों तांम ।।२।।
जव दोय तीन बार तेहने, खिजायो वारूबार ।
जव वेसायण तो उपरे, कोप्यो सिघर अपार ।।३।।
तोने वालण कारणे, तेजू लेस्या मेहली तिण काल ।
जव थारी अणुकंपा आणने, सीतल लेस्या म्हेली ततकाल ।।४।।
तू नही वलीयो तेहथी, मोने ओलख कीधो याद ।
जाण्या २ हे भगवान आपनें, न वल्यो आप तणे परसाद ।।५।।
ए वचन गोसाले साभल्यो, भय उपनो मन माय ।
ए तेजू लेस्या किम नीपजे, मोने पूछ्यो सीस नमाय ।।६।।
जव म्हे गोयमा तिण समे, कही गोसाला ने एम ।
तेजू लेस्या इण विध नीपजे, ते सुणजो धर पेम ।।७।।
वेले २ निरतर तप करे, पारणो मूठी उडद आहार ।
उनो पाणी एक पूसली पीए, छ मास लगे एक धार ।।८।।
सूर्य साह्मी लेवे आतापना, उंची कर २ वाहि ।
तिणने छ मास रे छेहरे, तेजू लेस्या नीपजे तिण माहि ।।९।।

ढाल : ६

[रस गिरधीते हिलिया गटके]

जब गोसालो तिण वारो रे, म्हारो वचन कीयो अंगीकारो।
हिवे गोतम ओ म्हारी लारो रे, कुर्म गाम थी कीयो वीहारो ।। १ ।।
सिधारथ गाम ने पाछा चाल्या रे, तिल थभ कने आया हाल्या।
जब गोसाले पूछ्यो मोनें आमो रे, तिल नीपजसी कह्यो तामो ।। २ ।।
फूल तिल सूधी कही बातो रे, ते प्रतख झूठ मिथ्यातो।
ते जाबक तिल नीपनो नाही रे, नही नीपनो फूलादिक काई ।। ३ ।।
जब हू बोल्यो सुण तू गोसाला रे, तिण वेला कीया थै चाला।
म्हारा वचन री परतीत न आणी रे, थै म्हाने झूठा वोला जाणी ।। ४ ।।
तिण सू मुझ पासा थी धीरे धीरे रे, छाने २ आयो तिल तीरे।
तिल उखाड न्हाख्यो तिण कालो रे, जब बादल हुआ ततकालो ।। ५ ।।
पाणी वरसे तिल थभाणो रे, उ निश्चेई तिल नीपजाणो।
सात तिल फूल चविया ताह्यौ रे, सात तिल हुआ सुगली माह्यो ।। ६ ।।
वनसपती काय मझारो रे, इण विध करे पोटपरीहारो।
ते तिल उभो छे निश्चे आज ताइ रे, सका मत आणजे काई ।। ७ ।।
ए पिण वचन न मान्यो गोसाले रे, तिल आय जोयो तिण काले।
सुगली फोर काढ्या बारो रे, सात तिल गिणीया हाथ मझारो ।। ८ ।।
तिल गिणीया पछे तिण ठामो रे, उपनो अधवसाय परिणामो।
सर्व जीवारो एह विचारो रे, करे छे पोटपरीहारो ।। ९ ।।
इसडी उधी इण धारो रे, मो सू पड़ीयो गोसालो न्यारो।
मूठी उडद खाओ जबूनो रे, पूसली पांणी पीये उन्हों ।।१०।।
निरन्तर बेले तपसा कीधी रे, सूर्य सांह्मी आतपना लीधी।
दोनू उची कर कर बांहो रे, छ महीना लग ताह्यो ।।११।।
एहवो कष्ट कीयो इण करूडो रे, छ मास लगे तिण पूरो।
लब्ध छ मास रे अंत पाई रे, इण विध तेजू लेस्या उपजाई ।।१२।।
एकदा गोसाला रे माह्यो रे, छ दिशाचर मिलीया आयो।
आगे कह्यो छै जिम विसतारो रे, सगलोई लेवो विचारो ।।१३।।
अरिहत जिण केवली नाहि रे, इणरे अतिसय गुण नही काई।
अरिहत रा गुण इणमे न पावे रे, ओ झूठो नाम धरावे ।।१४।।
इण चोडे झूठ चलायो रे, इण सावत्थी नगरी माह्यो।
ओ डाकोत पुतर गोसालो रे, तिण रो काढ्यो वीर नीकालो ।।१५।।

थे पूछाकरी गोयम इण री रे, उठाणपरिया कही तिण री।
गोतम स्वामी बोल्या जोडी हाथो रे, आप सत कह्यो स्वामी नाथो ।।१६।।

●

दुहा

ए मोटी परखदा रे मझे, भाख्यो श्री भगवान।
वीर गोसाला री उतपत कही, ते पड़ी घणां रे कान ।।१।।
ए बात सुणी ने परखदा, आइ जिण दिसि जाय।
घणा लोक माहोमाही इम कहें, सावत्थी नगरी रे माहि ।।२।।
गोसालो कहें हूं जिण केवली, ते झूठ बोले छे ताम।
ओ तो मखली पुतर डाकोतरो, लोक बात करे ठाम ठाम ।।३।।
म्हे वीर जिणेसर रे आगले, सुणी गोसाला री बात।
ओ नही अरिहंत जिण केवली, यूही बोले झूठ मिथ्यात ।।४।।
वीर जिणंद चोवीसमा, ओ देवातदेव स्वयमेव।
ते निश्चे अरिहत जिण केवली, त्याने वादे कीजे नित सेव ।।५।।
ए लोक माहोमा बाता करें, ते सुणी गोसाले कान।
जब कोप्यो सिघर उतावलो, वले हुवो धिगधिगायमान ।।६।।
आताप भूम थी नीकल्यो, आयो सावत्थी नगरी मांय।
हलाहल कुंभारी री जायगा तिहा, पाछो आयो तिण ठांम चलाय।।७।।
घणा सिषा सहीत परवरयो थको, अमरस धरतो अतंत।
जाणे घात करू इण वीर नी, इसड़ो मन धेप धरंत ।।८।।

ढाल : १०

[धीज करें सीता सती रे लाल]

तिण अवसर श्री भगवत ने रे, अंतेवासी सिष्य सुवनीत रे। सुगण नर
ते आणंद नामें थिवर हुंतो रे लाल, तिणमें साध तणी रूडी रीत रे। सुगण नर
सुणजो गोसाला री वारता रे लाल ।।आँ०१।।
बेलें २ निरन्तर तप करे रे, पारणो पेहली पोहर सझाय।
बीजे पोहर ध्यान ध्यावे सदा रे लाल, तीजे पोहर गोचरी ने जाय रे ।। सु० २ ।।
ते वीर तणी लेइ आगना रे, उठ्यो सावत्थी नगरी माय रे।
ते करे समुदाणी गोचरी रे लाल, तीनूंई कुल में जाय रे ।। सु० ३ ।।
हलाहल कुंभारी री जायगा थकी रे, नेंड़ो जातो आणद ने देख रे।
जब गोसाले बोलायो आणद ने रे लाल, पिण अंतरंग मन माहे धेख रे ।। सु० ४ ।।

एक मोटो ओलंभो म्हारो रे, तूं साभल आणद इहां आय रे ।
जब आणंद थिवर इहां आवीयो रे लाल, गोसालो कहे बात वणाय रे ।। सु० ५ ।।
केई धन रा लोभी वांणीया रे, चाल्या मोटी अटवी मझार रे ।
त्यां अनेक वसतु सू गाडला भऱ्या रे, वले असणादिक च्यारूंई आहार रे ।।सु० ६।।
जब मोटी अटवी मे आगा गयां थका रे, नीठचा असणादिक च्यारूं आहार रे ।
जब मांहोमां सर्व भेला हुआ रे लाल, करवा लागा विचार रे ।। सु० ७ ।।
पांणी तो खूटों सर्वथा रे, तिण विनां पाछा जासां केम रे ।
हिवें करो पांणी री गवेसणा केम रे, ज्यू घरे जावां कुसल खेम रे ।। सु० ८ ।।
एहवी करे विचारणा रे, पाणी जोवा लागा ठाम ठाम रे।
एक मोटो वन खंड आयो जोवतां रे लाल, जोवा जोग घणो अभिरांम रे ।। सु० ९ ।।
तिण वनखंड रा मझ देस मे रे, तिहां एक मोटी जायगां वखाण रे ।
च्यार वलगू हुंता तिण उपरा रे लाल, त्यांरा ऊँचा सिखर वखांण रे ।।सु० १०।।
ते देखी ने हरख्या वाणीया रे, सहु भेला हुवे कहे आम रे ।
इण वनखंड मे च्यार वलगू अछे रे लाल, ऊँचा सिखर बंध वखाण रे ।।सु० ११।।
तो श्रेय किलाण आपां भणी रे, प्रथम वलगू भेदा जाय रे ।
तिणमा सू निरमल पांणी नीकले रे लाल, ते पीवां सगला रे साता थाय रे ।।सु० १२।।
त्यां मांहोमां करे विचारणा रे, प्रथम सिखर फोड़्यो आय रे ।
तिणमां सूं निरमल पाणी नीकल्यों रे लाल, जब हरख्या घणां मन माय रे ।।सु० १३।।
त्यां पांणी तो पीयों निरमलो रे, वले वाहण भरीया तिणवार रे ।
वले बीजा सिखर फोड़ण तणो रे लाल, कीधो माहोमाही विचार रे ।।सु० १४।।
पेहिलो सिखर फोड्यां पांणी नीकल्यो रे, तो सोनो नीकलसी दूजा मांहि रे ।
ए मिसलत मांहोमा कीधी तिहां रे लाल, बीजोइ सिखर फोड्यो जाय रे ।।सु० १५।।
तिण मा सू सोनों नीकल्यों रे, जब मन माहे हरखत थाय रे ।
त्यां भाजन भऱ्या गाडला भऱ्या रे लाल, तीजी बार विचारे मांहोमाही रे ।।सु० १६।।
पेहिलो सिखर फोड़्यां पाणी नीकल्यो रे, सोनो नीकल्यो बीजा मांय रे ।
तीजो फोड़्या मणी रतन नीकले रे लाल, तो तीजोई सिखर फोड़ां जाय रे ।।सु० १७।।
जब तीजो सिखर त्यां भेदीयो रे, मणी रतन नीकल्या तिण मांय रे ।
त्यां भाजन भरी भऱ्या गाडला रे लाल, ते मन मांहे हरखत थाय रे ।।सु० १८।।
वले लोभ लागो त्यांरे अति घणों रे, जब कहे माहोमा आम रे ।
ज्यूं चिंतवीयां ज्यू नीकल्या रे लाल, मन वंछित सरीया काम रे ।।सु० १९।।
तो चोथों सिखर फोड़्या वले रे, वजर रतन नीकले तिण माय रे ।
त्यां वजर रतनां सू गाडला भऱ्या रे लाल, तो कमी रहे नहीं काय रे ।।सु० २०।।
इतलां मांहे एक वांणीयो रे, त्यारा हित रो वंछणहार रे ।
त्यांने कह्यो अति लोभ न कीजीये रे लाल, चोथो सिखर म फोड़ो लिगार रे ।।सु० २१।।

पिहलो सिषर फोडयां पाणी नीकल्यों रे, सोनों निकल्यों बीजा मांय रे ।
मणी रतन तीजा मा सू नीकल्यां रे लाल, चोथों फोडयां अवस दुख थाय रे ।।सु०२२।।
तिणरों कह्यों त्यां मान्यों नही रे, चोथों सिषर फोड्यो जाय रे ।
तिणमा सू कालो सर्प नीकल्यो रे लाल, विष घणों तिण माय रे ।।सु०२३।।
सघट्यो हुवो तिण सर्प नो रे, जब कोप चढयों ततकाल रे ।
भंड उपधि सहीत सगला तणी रे लाल, बाले राख कीधी ततकाल रे ।।सु०२४।।
जिण वाणीये त्यांनें वरज्या हुंता रे लाल, तिण ने कुसल राख्यो तिणवार रे ।
ते रिध संपत ले आपरी रे लाल, कुसल आयो निज नगर मझार रे ।।सु०२५।।

●

दुहा

वांणीया ज्यूं थारां गुर म्हे घणों, लोभ तणो अति दोष ।
जस कीरत व्यापी तीन लोक मे, तोही आयो नहीं संतोष ।।१।।
वांणीया पांणी विण मरता तिहां, त्याने पाणी मिलीयो ताय ।
वले सोवन मणी रतन मिलीया, तोही तिसणा मिटी नही काय।।२।।
त्या चोथों सिषर फोडीयो, तो घात पांमी ततकाल ।
त्यां सरिखो थारों गुर लोभीयो, ते पिण करसी अकाले काल ।।३।।
घणो गाम नगर इण वस कीया, तोही आयो सावथी मझार ।
सर्व सिष्य सहीत हिवे तेहनी, बाले राख कर सू एक बार ।।४।।
एक वाणो सारा ने वरजीया, तिणरी सर्प न कीधी घात ।
ज्यू तूं थारां गुर ने वरजसी, तो थोरीं घात न करूं तिलमात।।५।।

ढाल : ११

[डाभ मूंजादिक नी डोरी]

इम साभल वीहनो आणंद, पाछो आयो जिहा वीर जिणंद ।
वंदणा कर बोल्यो जोड़ी हाथ, एक अरज करूं सामीनाथ ।।१।।
हूं आपरी आग्या लेई ताह्यो, गयो सावथी नगरी माह्यो ।
हूं गोचरी करतो तिण काले, मोंने देख बोलायो गोसाले ।।२।।
तिण रे मन माहे धेष अपारी, मोने दीयो ओलभो भारी ।
वाणीया री कीधी सर्प घात, ते माड कही सर्व बात ।।३।।
गुर सहीत थारा गुर भाई, त्यांरी घात करसू उठे आई ।
ते पिण घणां लोका री साख, बाल जाल भसम करूं राख ।।४।।

जो तू जाय कहसी सर्व बात, तो हू थारी न करसू घात ।
जब हूं भय पाम्यो तिण ठाम, ते पिण आप कने कही आम ।।५।।
गोसाले कही ते सर्व बात, वीर पासे कही जोडी हाथ ।
हिवें आणद पूछा करें आम, विनो करे सीस नाम ।।६।।
समरथ छै सामी ए गोसालो, सर्व साधां ने बाले सम कालो ।
इसडो तप तेज छै इण माय, सर्व साधा नें बाले इहा आय ।।७।।
समरथ छै आणद ए गोसालो, सर्व साधा ने बाले सम कालो ।
अरिहत भगवत ने बाले नाहि, एहवो तप तेज नही इण माहि ।।८।।
जेहवो तप तेज छै गोसाला रो, रुठो करे बोहत बिगाडो ।
इणथी अनंत गुणो साधु माहि, तप तेज खिमा गुण ताहि ।।९।।
साधु रा तप तेज थी ताहचो, अनत गुणों थिवरा रे माहचो ।
थिवरां रा तप तेज थी ताहचो, अनत गुणो अरिहत माहचो ।।१०।।
त्या अरिहता ने किम बाले, यूही झूठ बोल्यो गोसाले ।
अरिहंत रा तप तेज आगे, गोसाला रो जोर न लागे ।।११।।
वीर कहे आणद ने वाय, तू साधा समीपे जाय ।
कहीजे गोतमादिक सर्व साधा ने, भगवत कहचो छे थानें ।।१२।।
थे मत करजो गोसाला री बात, उण साधा सू पडवजीयो मिथ्यात ।
तोने कही गोसाले वाय, ते पिण दीजे सर्व सुणाय ।।१३।।
वीर ने आणद वादे हुलास, आयो गोतमादिक रे पास ।
सर्व साधा ने कहे बतलाय, थे साभलजो चितलाय ।।१४।।

●

दुहा

हू आज बेलारे पारणे, गयो सावथी नगरी माहि ।
मोनें गोचरी करतो देख ने, गोसाले बोलायो ताहि ।।१।।
जे "गोसाले कही तका, दीधी साधा ने सर्व सुणाय ।
मोने वीर मेहल्यो छै थां कने, तू कहीजे साधा ने जाय ।।२।।
गोसाला रा मत तणी, कोइ म करजो बात ।
गोसाले सर्व साध थी, पडवजीयो मिथ्यात ।।३।।
ए वचन आणद रो साभले, सर्व साधा कीयो अगीकार ।
गोसाला रा मत तणी, न करे वात लिगार ।।४।।

ढाल : १२

[पुज्य जी पधारो हो नगरी सेविया]

हिवे गोसालो मखली पुतर डाकोत रो, तिणरे मन मांहे द्वेष अपार रे। दोभागी।
हलाहल कुभारी री जायगां थकी, नीकले छे तिण वार रे। दोभागी।
चाल्यो रे गोसालो वीर सू झगडवा ।।दो० १।।
निज सघ सहीत गोसालो चालीयो, तिण रा दुष्ट घणा परिणाम रे। दो०।
वले अमरस वहितो मन मे अति घणो, साथे लीयो साथ हगाम रे ।।दो० २।।
ते क्रोध करे ने अति प्रजल्यो थको, मुख सू कहे विपरीत वात रे। दो०।
कासव सहीत सगला साधा तणी, आज समकाले करसू घात रे ।।दो० ३।।
तपतो थको चाल्यो सिधर उतावलो, आयो सावथी नगरी मझार रे। दो०।
ते सावथी रा मझ बाजार मे नीकले, लोका ने कहे बारुबार रे ।।दो० ४।।
थे कहो छो तीर्थ कर महावीर तेहने, तारण तिरण जीहाज रे। दो०।
हिवे आवो तो दिखालू तीर्थ करपणो तेहनो, थे अरूबरू देखलो आज रे ।।दो० ५।।
एहवो घोष सब्द करतो थको, सावथी नगर मझार रे। दो०।
ए सब्द गोसालो रो बहु जण साभली, घणा लोक हुवा तिण लार रे ।।दो० ६।।
स्वमती अनमती पाखडी अति घणा, ते पिण जोवा चाल्या ताम रे। दो०।
गृहस्थ अनेक ने वृद नरनार ना, ते पिण चाल्या छोडे घर काम रे ।।दो० ७।।
सावथी बारे गोसालो नीकले, आयो कोठग बाग रे माय रे। दो०।
जिहाँ भगवत महावीर देव बेठा तिहा, उभो गोसालो आय रे ।।दो० ८।।
नर नारी तो बोहत भेला हुवा, तिहा कोठग नामे बाग रे माहि रे। दो०।
हिवे गोसालो भगवत श्री महावीर ने, ओलभा वचन कहे ताहि रे ।।दो० ९।।

●

दुहा

अहो आउखावंत कासवा, तू कहे लोका रे माय।
ओ गोसालो सिष्य माहरो, ते प्रतख मूसावाय ।।१।।
थे आछो कह्यो आछो कह्यो, ते कह्यो ओलभा रूप।
हू गोसालो सिष्य नही ताहरो, तू साभल तेह सरूप ।।२।।
गोसालो हुतो सिष्य ताहरो, सूको भूखो तप कर ताय।
ते आऊखो पूरो करी, देव पणे उपनो जाय ।।३।।
हूं उदाइ नामे राजान छू, कुडीयाण गोत सधीर।
उरजन गोतम पुतर तेहनो, छोडे दीयो म्हे छठो सरीर ।।४।।

गोसाला रो सरीर सेठो घणों, ते म्हे पडीयो देख तिणवार ।
परवेश कीयो तिण सरीर मे, ते सातमो पोट परीहार ।।५।।

ढाल : १३

[जगत् गुरु तिसला नंदन वीर]

हिवे गोसालो कहे भगवत ने, म्हारा भाष्या सार सिद्धत ।
सिझ्या सिझे सीझसी घणा, तिण मे बोहत कह्यो विरतंत ।
हो कासव सुण तू म्हारो सिद्धत ।। १ ।। आँ०
चोरासी लाख महा कल्प हुवें, करें सात देव तणा अवतार ।
सात संजूह सात सनी गर्भ करे, करे सात पोटपरीहार हो ।। हो० २ ।।
पाँच लाख ने साठ सहंस उपरे, छसो वले अधिका जाण ।
तीन करमा रा अंस खपाय नें, गया जायें जासी निरवांण हो ।। हो० ३ ।।
एक दिष्टंत तोने साचो कहूं, ते सांभलजे चित ल्याय ।
एक मोटी गंगा लाबी घणी, तिणरों विवरों कहूं छू ताय हो ।। हो० ४ ।।
गंगा लाबी जोजन पाँच सों, अर्द्ध जोजन पेहली जांण ।
पाँचसो धनुष ऊंडी कही, ए गंगा नो परिमाण ।। हो० ५ ।।
एहवी सात गंगा भेली कीया, एक महा गंगा हुवे तांम ।
सात महा गंगा तिण थी हुवे, एक सादीण गंगा श्राम हो ।। हो० ६ ।।
सात सादीण गंगा भेली कीयां, एक मचू गगा हुइ जाण ।
सात मंचू गंगा भेली कीयां, एक लोहीय गगा वखांण हो ।। हो० ७ ।।
सात लोहीय गगा तिण थकी, आरवती गगा हुवे एक ।
सात आरवती गंगा तेहथी, एक प्रभावती गंगा वृशेख हो ।। हो० ८ ।।
एक लाख सतरे सहस उपरे, वले छसों ने गुणचास ।
एक प्रभावती गंगा तणी, एतली गगा हुवे तास हो ।। हो० ९ ।।
तेहनां दोय उधार परूपीया, ते सुण तू राखे चित ठाम ।
सुषम बोदी कलेवर ने वले, बादर बोदी कलेवर ताम हो ।।हो० १०।।
ते सुखम कलेवर थापने, कहू बादर रो विसतार ।
ते सो सो वरस गयां थका, एक कण रेत काढे बारहो ।।हो० ११।।
एके को रेत रो कण काढतां, सारी गंगा खाली थाय ।
जब एक सर परमाण हुवे, कह्यो छे म्हारा सिधंतरे मांय हो ।।हो० १२।।
एहवा तीन लाख सरा तणो, एक महाकल्प हुवे ताय ।
एहवा चोरासी लाख महा कल्प नो, एक महामाणस थाय हो ।।हो० १३।।

अनंता संजुगत तिहा करे, जीव चवी चवी तिण ठांम।
संजुगत उपर लें माणसे, देव पणे उपजे तांम हो ।।हो० १४।।
माह माणस नां समुदाय नी, हूं संख्या कहूं छू ग्यांन।
ते सर्व नदी हुवे एतली जी, सुणजे सुरत दे कांन हो ।।हो० १५।।
दोय हजार कोड़ा कोडने, वले नवसे कोड़ा कोड़ जांण।
वले चोसठ कोड़ा कोड़ उपरें, पिच्चितर लाख कोड़ वखांण हो ।।हों० १६।।
अड़तालीस हजार कोड़ उपरे, सर्व एतली नंदी जांण।
एक महामाणस हुवे तेहनी, ए संख्या कही परमांण हो ।।हो० १७।।
ते देव तणा भोग भोगवे, पूरों करे आऊखों ताय।
पेहिला सनी गर्भ ने मझे, जीव उपजें आय हो ।।हो० १८।।
ते जीव तिहा थी नीकले, मझले माणस में आय।
संजुगत पणें जे जीवडो, उपजे देव गति में जाय हो ।।हो० १९।।
तिहां देव तणा भोग भोगवे, बीजा सनी गर्भ मे उपजे ताय।
तिहां थी नीकल ते जीवडो, हेठला माणस मे आय हो ।।हो० २०।।
सजुगत पणे वले जीवडो, उपजे देवता मे जाय।
ते देव तणा भोग भोगवे, तीजी सनी गर्भ हुवे आय हो ।।हो० २१।।
छठा सनी गर्भ ताईं जीवडो, इणहीज विध उपने आय।
तिहां थी नीकल हुवे देवता, पाचमा देव लोक मे जाय हो ।।हो० २२।।
पाच मोटा आवास तेह मे, म्हे भोग भोगवीया ताय।
दस सागर आउषो पूरो करी, हुवों सातमों सनी गर्भ आय हो ।।हो० २३।।
हूं सवा नव मासे जनमियो, हूं रूप मे जाणे देव कुमार।
म्हे कुमार पणे चारित लीयो, कुमार पणे ब्रह्मचार हो ।।हो० २४।।
हूं बालपणे वैरागीयो, म्हे बीधाया पिण नही कांन।
ओ म्हांरो सातमो पोट परीहार छै, ते सुण तू सुरत दे कान ।।हो० २५।।
एणेज[1] ने मलराम[2] नो, मडिय[3] वले रोहो[4] ताम।
भारदाई[5] ने उरजन गोतम पुतर[6], गोसालो मंखली[7] आंम हो ।।हो० २६।।
नगरी राजगृही ने बारे तिहा, मंडीकुख उद्यान मे ताम।
उदाई कुंडीयाण गोत नों, म्हे सरीर छोड्यो तिण ठाम हो ।।हो० २७।।
पेठो एणेज रा सरीर मे, ए पेहिलो पोट परीहार।
बावीस वरस लग हुं रह्यो, एणेज रा सरीर मझार हो ।।हो० २८।।
उदलपुर नगर रे बाहिरे, चंदोतर बाग में जाय।
तिहां एणेज रो सरीर छोड़ने, पेठो मलराम रा सरीर मांय हो ।।हो० २९।।
मलराम रा सरीर मे, रह्यो इकवीस वरस मझार।
इण रीते कासप म्हे कीयो, ओ बीजों पोट परीहार ।।हो० ३०।।

चंपा नगरी ने बाहिरे, अग मिंदर वाग मे ताहि।
तिहां मलराम नो सरीर छोडने, पेठो मडिय ना सरीर माहि ।।हो० ३१।।
रह्यों मडिय ना सरीर मे हू, वीस वरस लग ताम।
तीजो पोट परीहार म्हे कीयो, हिवे चोथो कहूं छू आम हो ।।हो० ३२।।
वाणारसी नगरी रे बाहिरे, काम महावन वाग मे ताहि।
मडिय नो सरीर छांड ने, पेठो रोहा रा सरीर माहि हो ।।हो० ३३।।
रह्यो रोहा ना सरीर मे जी, उगणीस वरस मझार।
इण विध कासप म्हे कीयो जी, ओ चोथो पोट परीहार हो ।।हो० ३४।।
आलंभीया नगरी ने बाहिरे, पतकालक वाग रे माहि।
तिहा रोहा रो सरीर छाडने, पेठों भारदाइ रा सरीर मे आय हो ।।हो० ३५ ।।
भारदाइ ना सरीर मे, हूं रह्यो वरप अठार।
इण विध कासप म्हे कीयो जी, पाचमो पोट परीहार हो ।।हो० ३६।।
कठियायण उद्यान थो, वेसाली नगरी रे वार।
भारदाइ नो सरीर छाडने, गयो उरजन सरीर मझार हो ।।हो० ३७।।
रह्यो उरजन रा सरीर मे जी, सतरे वरस मझार ।।
इण रीते कासप म्हे कीयो जी, छठो पोट परीहार हो ।।हो० ३८।।
इण सावथी नगरी ने मझे जी, इण हलाहल कुभारी री हाट।
जब उरजन गोतम पुतर तेहनो, सरीर छोडचों इण माट हो ।।हो० ३९।।
तिहा गोसाला मखली पुतर नो, सेठो सरीर पडीयो देख।
परिसा खमवा समर्थ जाणीयो, थिर सघयण तिणरो विशेख हो ।।हो० ४०।।
उरजन रो सरीर छाडने, पेठो गोसाला रा सरीर मझार।
सोले वरस हुवा एहने, ए सातमो पोट परीहार ।।हो० ४१।।
एक सो तेतीस वरस में, कीधा सात पोट परीहार।
ते ग्यान नही तोने कासवा, तू बोल्यो विना विचार हो ।।हो० ४२।।
वले गोसालो भगवत ने जी, बोले ओलभा जेम।
भलो भलो कह्यो थे कासवा, हिवे नही बोलीजे एम हो ।।हो० ४३।।
इम गोसालो भगवत ने जी, बोल्यो घणो विपरीत।
वले झूठ बोले निसक सू, छोडी जाबक आगली पीत हो ।।हो० ४४।।

●

दुहा

थे कह्यो गोसालो सिष्य म्हारो, ते हू सिष्य थारो नाहि।
थे सरीर गोसाला रो देखने, भर्म भूलो तू काय ।।१।।

ते सिष्य कह्यो छे मो भणी, तें चोडे चलायो झूठ।
ते झूठ थारों म्हे सांभले, हूं आयो ठिकांणा थी उठ ।।२।।
एहवा वचन गोसाले कह्या थका, बोल्या श्री भगवांन।
ते दिष्टंत देई कहे तेह नें, ते सुणो सुरत दे कान ।।३।।

ढाल : १४

[दुलहो मानव भव]

हिवे वीर कहे गोसाला सुणे, थे वोल्यो झूठ बणाय रे। गोसाला
तूं गोसालो मखली पुतर छै, तें छिपाया छिपीयो नही जाय रे। गोसाला
तू झूठ वोलें आपो ढाकवा ।।१।। आँ०
ज्यू कोइ चोर चोरी करे नीकल्यो, तें आयों गाम रे बार रे।गो०।
तिण लारे वेग सताव मूं, पाछें आय लागी नेडी वहार रे ।।गो० तू० २।।
चोर वहार लगती आइ जाण ने, चोर जागा जोवा लागो ताम रे।गो०।
खाड गुफा झगी परवतादिक, चिहु दिस जोवे ठाम २ रे ।।गो० तू० ३।।
विषम दूरगम जायगा जोवें घणी, पिण चोर न लाभी काय रे।गो०।
तिणरे मरवारी मन माहे नही, हिया फूटा ज्यू होय रह्यो ताय रे ।।गो० तू०४।।
उन सिण रूइ नें तिणां तणो, एक मोटो गिंज तिण माहि रे।गो०।
चोर जाणे हू छिपीयों एह मे, पिण छिपीयो नही चोर ताहि रे ।।गो० तूं०५।।
आतमा ने तिण मूल ढांकी नही, ते ढांकी माने मन माय रे।गो०।
तिण चोर न छिपाइ आतमा, ते जाणे छिपाइ छे आय रे ।।गो० तू० ६।।
चोर जाणे अलगो न्हाठो वहार थी, पिण नेरी आये लागी बहार रे।गो०।
तिण ने आपो मूल सूझे नहीं, इसडो चोर मूढ गिंवार रे ।।गो० तू० ७।।
चोर जांणतो हू सेठो लुक रह्यों, मोने कोइ न जांणे ग्राम रे।गो०।
तिणनें वाहरू अलगा थका देखने, आय ऊभा तिण ठांम रे ।।गो० तू० ८।।
तिण चोरने वाहरू आय पकडीयो, कुण लेजावादे तिण ने माल रे।गो०।
सेठो कीधो वदीखाने न्हाखने, तिण मे पाड्या घणा हवाल रे ।।९गो० तू०।।
इण दिष्टते गोसाला तू जाण ले, थे पिण आपो छिपायो छे ग्राम रे।गो०।
पिण आपो छिपायो किम छिपे, चोर ज्यू चोडे दीसे छे ताम रे ।।गो० तू०१०।।
चोर चोड़े छिपे किण रीत सू, पाछे लागा वाहर रा पूर रे।गो०।
ज्यू तू मों आगे किण विध छिपे, उ जीवने उ मुख नूर रे ।।गो० तू० ११।।
हिवें इसड़ों झूठ न वोलीये, हू तो नहीं थारो सिष्य तेह रे।गो०।
तूतो सांप्रत गोसाला तेहीज छे, तिण मे मूल नही सदेह रे ।।गो० तूं०१२।।

तू गोसालो मखली पूत छै, निमाई निश्चे डाकोत रे।
उवाहीज भाषा बोली ताहरी, उहीज सरीर छाया तेज रे।।गो० तू०१३।।

●

दुहा

ए वीर वचन गोसाले सुण्या, जब कोप चढचों ततकाल।
मिस मिसाय मान करे घणों, अंतरग माहे उठी झाल।।१।।
उंच नीच वचन कहे वीर ने, निरभ छे वारू वार।
भूंडो बोंले निसंक सू, किणरी संक न आणे लिगार।।२।।
तूं नष्ट थयो रे कासवा, तूं विनष्ट थयो किण वार।
वले भिष्ट थयों तू किण दिने, तू नष्ट विनष्ट ने भिष्ट अपार।।३।।
आज हित नही हुवे तो भणी, थे माँडचो छे मूझ थी विवाद।
आज सुख म जाणे तू मो थकी, आज नही हुवे तुझने समाध।।४।।
थारा सिष्य सहीत आज ताहरी, बाल जाल भसम करू राख।
जब जांण लीजे तूं मो भणी, घणा लोकारी साख।।५।।

ढाल : १५

[थे तो समझो रे समझो]

हिवे सर्वाणुभूती अणगार, ते सिष्य भगवान रो जी।
तेतों गुण रतना रों भंडार, दाता अभय दान रो जी।
हिवे मांन गोसाला वचन, श्री भगवान रो जी।। आँ० १।।
तिणरे धर्म रों राग अतंत, भगवंत रे उपरें जी।
भद्रीक घणों मतवत, विने मे रूड़ी परे जी।। हिवे० २।।
वीर ना अवगुण बोल्या अनेक, गोसाले आकूट नें जी।
तिणरी वात न मानी एक, आयों तिहा उठने जी।। हिवे० ३।।
आय उभी गोसाला रे तीर, समझावे छे तेहने जी।
ओं एतो भगवंत श्री महावीर, दुखे नही केह ने जी।। हिवें० ४।।
अे तो तारण तरण जीहाज, अतिसे ग्यान तेहमे जी।
सहंस ने आठ लखण बिराज, रह्यां त्यारी देहमे जी।। हिवे० ५।।
तू काँय दे तिणा ने आल, चोड़े झूठ बोल ने जी।
हिवे मत बोले आल पपाल, अभितंर री खोल ने जी।। हिवे० ६।।
कोइ समण निग्रंथ रे पास, सीखे पद आण ने जी।
त्याँने वाँदे छे' आण हुलास, साचा गुर जांण ने जी।। हिवे० ७।।

तो ने तो दिख्या दे भगवान, मूंडन कीयो तो भणी जी ।
वहुसुरती कीयो दे विगनान, अणुकंपा करी तो तणीजी ।। हिवें ८ ।।
तो सू वोहत कीयों उपगार, ते वीसारे घालने जी ।
उलटो करवाने आयो विगार, सनमुख चालने जी ।। हिवे ९ ।।
इसड़ो नहीं बोलीजे झूठ, हूं गोसालो नही जी ।
हू तोनें कहिवा आयो छू उठ, भगवत साचा सही जी ।। हिवे १०।।
तू तो निश्चे गोसालो साख्यात, तिण मे सांसो नही जी ।
थै पडवजीयो मिथ्यात, भगवंत सूं थै सही जी ।। हिवें ११।।
इम साभलने कोप्यो ततकाल, निलाड़ी सल चाढने जी।
इणरी राख करू वाल जाल, तेजू लेस्या काढने जी ।। हिवे १२।।
तेजू लेस्या काढे ततकाल, माठी मन आदरी जी ।
पापी राख कीधी वाल जाल, उत्तम मोटां साध री जी ।। हिवे १३।।
वले वोले घणों विपरीत, आगा ज्यूं भगवांन ने जी ।
तिण साधु नें वाले वेरीत, चढचों अभिमांन मे जी ।। हिवे १४।।
वोलता २ हुई वार, चलावें झूठ नें जी ।
जव सुनखत्र नामें अणगार, आयो तिहां उठने जी ।। हिवे १५।।
ते पिण कहिवा लागो आंम, वाल्यो थै साध नें जी ।
हिवे मत वोले झूठ वेकांम, छोंड़े विषवाद ने जी ।। हिवे १६।।
सर्वाणुभूती नी परे तांम, समझावें एहनें जी ।
तू साख्यात गोसालो छें आंम, झूठो वोलो केहने जी ।। हिवे १७।।
समझावण लागों रूड़ी रीत, समझचों नही पापीयों जी।
वीर रा गुण करें वनीत, इणने उथापीयों जी ।। हिवे १८।।
जव ओ कोप चढचो ततकाल, निलाडी सल चाढने जी।
इणरी राख करू वाल जाल, तेजू लेस्या काढने जी ।। हिवे १९।।
इणने वालण लेस्या मेंहली आप, ओ तो वलीयों नही जी।
लेस्या थी उपनों परिताप, असाता हुइ सही जी ।। हिवे २०।।
तिण वांधा भगवंत रा पाय, सुमतारस मन धरचों जी।
साधु साधवी सर्व खमाय, आउखो पूरो करचों जी ।। हिवे २१।।

●

दुहा

दोय साध गोसाले वालीया, समोसरण रे मांय ।
तीजी वार गोसालो भगवांन सूं, झगडे सनमुख आय ।। १ ।।

रे कासव तू इम कहे, गोसालो म्हारो सिष्य छो एह ।
इसडो झूठ न बोलीये, तुझ मुझ किसो रे सनेह ।। २ ।।
गोसालो मंखलीपूतर हूं नही, तू मत कर म्हांरी बात ।
हिवे बोल्यो तो बाल भसम करूं, कर देसू सगलांरी घात ।। ३ ।।
आगे अजोग बोल्यों हुतो, तिणथी बोल्यों अजोग वशेख ।
आज सगलाने पूरा पाड़ सू, बाकी लारे न राखू एक ।। ४ ।।
दोय साधा गोसाला ने जिम कह्यो, तिम हीज कह्यों भगवत ।
बोहसुरति कीयो म्हे तो भणी, ओर सगलोई कह्यों विरतंत ।।५।।
तूं मंखली पुतर डाकोत रो, तूं निश्चे गोसालो साख्यात ।
हिवे तूं मोसू अन्हाखी थके, पडवजीयो मिथ्यात ।। ६ ।।

ढाल : १६

[रे जीव मोह अणुकंपा न आदरो]

एहवा वचन गोसालो साभले, ओतो कोप चढयों ततकाल रे ।
मिस मिसायमान करे घणो, अभितर लागी झालो झाल रे ।
लेस्या मेहली गोसाले वीर ने ।। १ ।। आँकडी
सात आठ पग पाछो ओसरे, तिण ठांमे कीधी समुदघात रे ।
तेजू लेस्या काढी तिण वाहिरे, भगवत री करवा घात रे ।। ले० २ ।।
तेजू लेस्या सरीर थी नीकली, वीर साम्ही आवे छे ताहि रे ।
ते किम पेसे त्यांरा सरीर मे, ते दिष्टंत सुणों चित ल्याय रे ।। ले० ३ ।।
उकलीया ने मडलीया वाय रो, पेसे पोली वस्तु रे माय रे ।
परवत ने थभादिक तेहथी, अटके तिण ठामे जाय रे ।। ले० ४ ।।
परवत थंभादिक ने वायरो, भेदतों फोड़तों मत जाण रे ।
वायरा ज्यूं तेजू लेस्या जाण जो, वीर सरीर थंभ समांण रे ।। ले० ५ ।।
ते किण विध पेसे त्यारा सरीर मे, तेजू लेस्या तिण वार रे ।
नोपकर्मी आउखो वीर नो, त्यारो कुण छै मारणहार रे ।। ले० ६ ।।
न हुई न हुवे होसी नही, तीनुंई काल मे बात जी ।
अरिहत भगवंत तेहनी, समर्थ नहीं करवा घात जी ।। ले० ७ ।।
लेस्या परिदिखणा करती थकी, आतो उंची चाली आकास रे ।
उचा थी हणाणी हेठी पडी, कठे रहिवा न पांम्यों वास रे ।। ले० ८ ।।
जब गोसाला रा सरीर मे, तेजू लेस्या पेठी आय रे ।
पोता री लेस्या थी पोते वले, तिणरे लागी सरीर मे लाय रे ।। ले० ९ ।।

ते वलूं वलूं करतो थको, कहे छे भगवंत नें एम रे।
सुण रे आउखावंत कासवा, तूं रह्यों मत जाणे कुसल खेम रे ॥ले० १०॥
तोने होसी छ मास रे छेहडे, रोग पितजर ततकाल रे।
जब तू बलूं वलू करतों थकों, छदमस्थ थकों करसी काल रे ॥ले० ११॥
वीर कहे गोसाला सांभले, हूं नही करू छ मासे काल रे।
छदमस्थ थको मरू नही, झूठ बोले तू आल पंपाल रे ॥ले० १२॥
हूंतो सोलें वरस लग विचर सू, गधहस्ती नी परें साहसीक रे।
केवल ग्यांनी थको जासू मुगत मे, ते तोने नही जाबक ठीक रे ॥ले० १३॥
थे मोंने तेजू लेस्या मेहली तका, पेठी थारा सरीर मे आय रे।
तिण थी रोग पितजर उपजे, दाह लागे सरीर रे मांय रे ॥ले०१४॥
जब तूं वलू वलू करतो थकों, असाता करे होसी हेरान रे।
काल करसी सातमी रात मे, छदमस्थ थकों विण ग्यान रे ॥ले०१५॥

●

दुहा

यांरे माहोमा विगट वाता हुई, ते पडी घणां रे कांन।
ते वात लोका मे विस्तरी, न्याय जाणे विरला बुधवान ॥१॥
हिवे सावथी नगरी रे मझे, घणां पथ मारग रे मांय।
लोक माहोमा वाता करे, ते सुणजो चित ल्याय ॥२॥

ढाल : १७

[वेवक जग ए देखी]

केइ लोक मिथ्याती त्यांमे नही ग्यांन, वले पूरो नही विगनान रे। समझू नर विरला
आज दोय तीर्थंकर रे झगडो लागो, तेतो सावथी नगरी रे वागो रे ॥ स० १ ॥
ओ दोनू माहोमा विवाद मे बोले, एक एक रा पड़दा खोले रे। स०
वीर तो कहे तू म्हारो चेलो गोसालो, मोसू मत कर झूठी झखालो रे ॥ स० २॥
गोसालो कहे हू थारो चेलो नाहि, थे कूड़ी कयी लोका माहि रे। स०
म्हे तो साधपणो था आगे न लीधो, म्हे तो गुर थाने कदेय न कीधो रे॥ स०३॥
वीर कहें गोसालो तीर्थंकर नाहि, तीर्थंकर ना गुण छे मों माहि रे। स०
गोसालो कहे हू तीर्थंकर सूरो, ओं तो कासप प्रतख कूड़ो रे॥ स०४॥

वीर नें सनमुख चोड़े बोल्यों गोसालो, तूं तो मो पेहली करसी कालो रे । स०
जब वीर कह्यों तू सुणरे गोसालो, तू करसी मो पेंहली कालो रे ।। स० ५ ।।
आप २ तणो मत दोनूई थापे, एक २ ने माहोमा उथापें रे । स०
या में कुण साचो कुण मुसावाई, केइ कहे म्हाने खबर न काइ रे ।। स० ६ ।।
या मे केइ कहे गोसालो जी साचो, इणने किण विध जाणो काचो रे । स०
या मे तो उघाड़ी दीसे करामात, तुरत कीधी बी साधारी घातो रे ।।स० ७ ।।
इण देखतो बाल्या दोय इणरा चेला, इण सू न हुआ पाछा हेला रे । स०
इणनें खोटो कहितों जब बोलतो सेठो, पछे अण बोल्यो काय बैठो रे ।। स० ८।।
गोसालो बोलें ते गूजार करतो, वीर पाछो बोल्यो तोही डरतो रे । स०
गोसालो जी सीह तणी पर गूज्या, वीर ना साध सगलाई धूज्या रे ।। स० ६ ।।
वीर री तो लोका देख लीधी सिधाई, इण में कला न दीसे काई रे । स०
सिधाई हुवै तो पाछी देखावत याने, जब ग्रे पिण ऊभा रहिता क्याने रे।।स०१०।।
ग्रो तो इण उपर चलाय ने आयो, इण कोठग बाग रे माह्यों रे । स०
ग्रो सूर पणो तो दीसे इण माहि, तिण मे कमीय न दीसे काई रे ।। स० ११।।
जद पिण हूंतो लोका मे इसडों ग्रधारो, ते विकला रे नही विचारो रे । स०
ग्रो गोसालो पाखडी प्रतख पापी, तिणनें दीयो तीर्थ कर थापी रे ।। स० १२।।
चतुर विचक्षण था तिण कालो, त्या खोटो जाण्यो गोसालो रे । स०
ग्रों गोसालो कुपातर मूढ मिथ्याती, तिण कीधी साधां री घाती रे ।। स० १३।।
खिमा सूरा अरिहंत भगवंत, त्यांरा ग्यांन तणो नही ग्रंत रे । स०
त्यारा कोड जीभा करे नित गुणगावें, तोही पार कदे नही आवे रे ।।स० १४।।
या लखणां कर तीर्थ कर पिछाणे, तेतो भगवंत महावीर जांणो रे । स०
ग्रे तो अतिसय ग्यान गुणे कर पूरा, याने कदेय म जांणो कूडा रे ।।स० १५।।
केइ तो भगवत ने जिण जाणे, ते तो एकत त्या ने वखाणे रे । स०
केई अग्यानी गोसाला री ताणे, ते जिण गुण मूल न॰जाणे रे ।।स० १६ ।।
केइ कहे दोनू जिण साचा, आपा थी दोनूई छें आछा रे । स०
आपा ने यारा झगड़ा मे नहीं पडणो, सगला ने नमण गुण करणो रे ।। स० १७।।
केइ कहे ग्रेतो दोनूई कूडा, कर रह्या फेन फितूरा रे । स०
आप २ तणो मत बॉधण काजे, तिण सू झगडो करता नही लाजे रे ।।स० १८ ।।
ग्रे तो पेट भरण रों करे छे उपाय, लोका ने घाले छे मत माय रे । स०
केयक इण विध बोले अग्यानी, भाषा काढे मन मानी रे ।।स० १६।।
इसडो ग्रधकार हुतो तिण कालें, उसभ उदे आपो न सभाले रे । स०
तीर्थ कर थका हुआ इसडा वेदा रे, ते तो अनाद क ाल रा सेदा रे।।स०२०।।
इम साभल उत्तम नर नारो, ग्रतरंग माहे कीजो विचारो रे । स०
पखपात किणहीरी मूल न कीजे, साचो मारग ग्रोलख ने लीजें रे ।। स० २१।।

दुहा

तिण काले ने तिण समे, जब उपगार जाणे भगवंत ।
कहे साध साधवी ने बोलाय ने, थे साभलो एक दिष्टत ।। १ ।।

ढाल : १८

[आउखो तूटा नें सांघो को नहीं]

तिगां काष्ट ने सूका पानडा जी, वले छालने तुसरा ढिगला जाण रे ।
त्याने जलावे कोयक आयने रे, अगन मेहले तिण माहे आण रे ।।
गोसालो लेस्या थी खाली हुवो रे ।।१ ।।
तिण अगन थी वल जल ने भसम हुवा रे, तिण राख में अगन नही लिगार रे ।
ज्यू इण म्हांरी घात करवा रे कारणे रे, सर्व तेजू लेस्या काढी इण वार रे ।। गो०२ ।।
हिवे गोसालो तप तेज रहित हुवो रे, ठाला ठीकर ज्यू हूवों निराधार रे ।
सगत नही मिनख बोलण तणी रे, इणरो डर मत राखो मूल लिगार रे ।।
गोसालो होय गयो ठाली ठीकरो रे ।। ३ ।।
तेजू लेस्या तो जाबक नीकली रे, लारे तो लेस्या नही असमात रे ।
मूदे तो आ सिद्धाई पूरी पड़ी रे, तिण सू मिनखां री करतो घात रे ।।गो०४।।
हिवे इछा हुवे तो साधां तुम तणी रे, तो थे धर्म री करो चोयणा जाय रे ।
वले प्रश्न थे पूछो गोसाला तणी जी, कारण वागरणा पूछो न्याय जी ।। गो०५ ।।
इम सांभल सगला साधु हरषीया जी, सगला हुवा छे साहस धीर जी ।
वीर ने वदणा करने नीकल्या जी, आय उभा गोसाला तीर जी ।। गो०६।।
गोसाला सू कीधी धर्म री चोयणा जी, पडिचोयणा कीधी वले वशेख जी ।
अर्थ ने हेत वागरणाँ तणा जी, प्रश्न पूछ्या तिण ने अनेक जी ।। गो०७ ।।
त्यारा पूछ्यां रो जाब न आयो तेहने जी, जब कोप चढ्यो तिण नें ततकाल जी ।
ते दात पीसे ने मन मे परजले रे, लागी अंतर मे झालो झाल जी ।।गो०८ ।।
जब गोसालो जाणे सर्व साधा तणी रे, इणरी इण ठामे कर दू घात रे ।
पीडा आवाधा कर सके नही रे, तेजू लेस्या नही तिणमे तिलमात रे ।।गो०९।।
थिवर गोसाला रा तिण अवसरे जी, त्यां पिण जांण्यों तिणने विपरीत जी ।
प्रश्न पूछ्या राजा बन उपना जी, वले साध मारण री जाणीनीतजी ।।गो०१०।।
जब केयक थिवरा गोसाला भणी जी, तिहाइज छोड़ दीयो ततकाल जी ।
पखपात न राखी चेला गुर तणी जी, गुणअवगुण निजनेणालीया निहालजी ।।गो०११।।
वीर जिणंद समीपे आय ने जी, त्या वदणा कीधी छे वारूंवार जी ।
त्याने जाणे मोटा तीर्थंकर केवली जी, त्यां पासे त्या लीधो संजम भार जी ।।गो०१२।।

केइ थिवरां गोसाला ने नही छोड़ीयो जी, तेतो रह्या छे तिण रे पास जी।
केइखोटोजांण्यों पिण मत छोड्यो नहीजी, केइ मन मांहे हुआ अतत उदास जी।।गो०१३।।
गोसाला रा थिवर आया भगवंत मे रे, जब केयक कहिवा लागा आम रे।
इण चेला गमाया लोकां देखता रे, इहां आय पडाई उलटी माम रे।।गो०१४।।
गोसाला रा थिवर लिया समझाय ने रे, त्यारे तो ग्यान तणी छे बात रे।
ओ गोसालो अग्यांनी दुष्टी पापीयो रे, इण कीधी सुधा साधारी घात रे।।गो०१५।।
घणा लोकां रे मन इम मांनीयो रे, गोसालो भाखे ते सतवाय रे।
वीर नही छे जिण चोवीसमा रे, अणहुतो बोले मूसावाय रे।।गो०१६।।
केएक उत्तम था ते इम कहे रे, गोसालो जिण नही करे अन्याय रे।
सतवादी वीर जिणद चोवीसमां रे, ए कदेय न बोले मूसावाय रे।।गो०१७।।
कितरांएक रों सासो मिटियो नही रे, म्हाने तो समझ पडे नही काय जी।
जिण दिन पिण सगला समझ्या नही रे, भोल घणी थी लोका माय रे।। गो०१८।।
श्रावक गोसाला रे सुणीया अतिघणा रे, इग्यारे लाख इगसठ हजार रे।
वीर रे एक लाख वले उपरे रे, गुणसठ सहस इधिक विचार रे।। गो०१९।।
जद पिण पाखडी था अति घणा रे, पिण गोसाला रो पाखड चालीयो जोर रे।
वीर जिणंद मुगत गया पछे रे, भरत मे होसी अंधारो घोर जी।।गो०२०।।
तिण मे धर्म रहसी जिण राज रों रे, थोड़ो सो आग्या नो चमतकार रे।
झबको पड़े नें वले मिट जावसी रे, पिण निरंतर नहीं इकवीस हजार रे।।गो०२१।।

●

दुहा

श्री वीर तणा समोसरण मे, दोय साधा री कीधी घात।
वले उपसर्ग कीयो भगवंत ने, तेतो अछेरो छे साख्यात।।१।।
हूंडा नामे अवसर्पिणी, ते काल उतरतो जाण।
दस बोला री तेहमे, समे २ अनंती हाण।।२।।
जे निश्चे होणहार टले नही, जो करे कोड उपाय।
व्यवहार रूप छे वारता, ते आगी पाछी पिण थाय।।३।।
कोई निश्चे होणहार तिमहीज हुवे, ते भोला ने खबर न काय।
ते भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो चितल्याय।।४।।

ढाल : १६

[आ अणुकंपा जिन आग्या में]

भगवते गोसाला ने चेलो कीधो, ते अषीण राग पणे कीयो जाणो।
इणरा परिचा थकी स्नेह थो इणथी, मोह अणुकंपा सभाव पिछांणों।
निश्चे होणहार टले नही टाल्यो ।। १ ।।
छदमस्थपणा थी इसड़ी मन आई, वले अवस भावी भाव टालणी नावे।
जे निश्चे भाव केवलीया देख्या ते, आगा पाछा कहो किण विध थावे ।।नि०२।।
तीर्थंकर छदमस्थ उपदेश न देवे, सिष्य सिष्यणी पिण न करे तिण कालो।
अवस भावी भाव टालणी नावे, जब कीयों भगवंत चेलो गोसालो ।।नि०३।।
जो धुर सू इणने वीर चेलो न करता, तो इसडा उदंगल क्याने थावे।
तिण समोसरण मे आय उपसर्ग कीधो, इण विनां अछेरो कुण उपजावे ।। नि०४।।
एक तिल देखने पूछा कीधी गोसाले, तिल नीपजसी वीर कह्यो विरतत।
जब वीर ने झूठा घालण गोसाले, तिल उखाण ने न्हाख दीयो एकंत।।नि०५।।
आगा जायने पाछा आया तिण ठामे, गोसाले कह्यो तिल नीपनों नाहि।
जब वीर कह्यो तिल निश्चे नीपनो, फूलरा जीव ऊपना सूगली माही ।।नि०६।।
थेट सू बात माडी कही सर्व तिल री, जिण विध जीवा कीयो पोट परिहारो।
इम साभल ने इण उधो विचार्यो, पोट परिहार करे छे सर्व संसारो ।। नि०७।।
इण उधी अकल सू उधी विचारे, पछे वीर सू अलगो पडीयो गोसालो।
सातमो पोट परिहार आपरो थाप्यो, सनमुखवीरसू झगड्यो तिण कालो ।।नि०८।।
जब गोसाला ने साधा झूठो घाल्यो, गोसालो कोप चढ्यो ततकालो।
जब भगवत ने तिण उपसर्ग कीधो, वले दोय साधा ने दीधा बालो ।। नि०६ ।।
जो गोसाला ने तिल बतावत नाहि, तो ओ पोट परिहार ओ क्यानें बतावे।
इणने पिण साधु झूठो* न कहिता, तो उपसर्ग अछेरो किण विध थावे ।।नि०१०।।
वले गोसाला ने वीर सीखाई, तेजू लेस्या नीपजे इण भांत।
तिण लेस्या उपजाई सावद्य सेवे, तिणरे मिनख मारण री मन माहे खांत।।नि०११।।
तिण लेस्या सू कीधा अनेक अकार्य, मत बाधे फेलायो लोका मे मिथ्यात।
वले लोही ठाण भगवत ने कीधो, वले दोय साधा री कीधी घातो ।।नि०१२।।
जो गोसाला ने लेस्या वीर न सीखावत, तो उपसर्ग किण विध करतो आय।
जो उपसर्ग नही करतो गोसालो, जब एक अछेरो घटतो थाय ।।नि०१३।।
ओ पिण निश्चे होणहार छे, तिणसू गोसालाने लेस्या वीर सीखाई।
ओ पिण भाव दिठा जिम हुवा, तिण माहे सक म आणो काई ।।नि०१४।।
फोड़वी लबद अणुकंपा आणे, गोसाला ने वीर वचायो।
छ लेस्या ने छदमस्थ हुंता, मोह करम वस रागज आयो ।।नि०१५।।

मोह करम उदे अवस आयो ते, टालण समर्थ नही जगनाथ।
वले अवस गोसालो अछेरो करसी, जद किण विध पामे गोसालो घात ।।नि०१६।।
अछेरा दस देख्या अनता अरिहता, ते न घटे उपाय करे जो अनेक।
जद गोसाला ने वीर नही बचावे, तो दसा अछेरा मे घट जाग्रे एक ।।नि०१७।।
साधा ने तो लबद फोरवणी नाही, जोवो सूतर भगवती मांय।
पिण अवस भाव निश्चे होणहारो, तिण माहे सक म राखो कांय ।।नि०१८।।
इसड़ा अजोग ने वीर दिख्या दीधी, वले इसड़ा अजोग ने वीर बचायो।
ते अवस भावी भाव टालणी नावे, एक अछेरारों निश्चे ओहीज उपायो ।।नि०१६।।
गोसाला कुपातर नें वीर बचायो, तिण माहे समक दिष्टी धर्म न जांणे।
जे धर्म जाणे तो भर्म मे भूला, ते सावद्य निरवद्य केम पिछाणे ।।नि०२०।।
असंजती गोसालो कुपातर, तिण ने साझ सरीर रो दीधों।
धर्म जाणे तो जगत दु.खी थो, वले वीर ए कांम कांय न कीधों ।।नि०२१।।
तेजू लेस्या मेल गोसालो, बाल्या दोय साधु भसम करी काया।
लबद धारी था साधु घणांइ, मोटा पुरषा आने क्यू न बचाया ।।नि०२२।।
गोसाला कुपातर ने वीर बचायो, तिणमे धर्म कहे ते विना विचारो।
तिण जिण मारग ने ओलखीयो नाहि, त्या घट माहे पूरो घोर अंधारो ।।नि०२३।।
गोसाला ने मरतो वीर बचायो, जो तिण माहे धर्म जांणे जिन राय।
तो आप तणा दोय साध न राख्या, ओ पिण किण विध मिलसी न्याय ।।नि०२४।।
गोसाला ने वीर बचायो तिण मे, धर्म जांणे सासण नायक सांम।
दोय साध वचावता आप तणा वीर, वले फिर२करता वीर ओहिज काम ।।नि०२५।।
जगत ने मरता देख्या भगवते, कठेइ आडा न दीधा हाथ।
धर्म जाणे तो आगो नही काढत, तिरण तारण हुंता श्री जगनाथ ।।नि०२६।।
जो गोसाला ने वीर नही बचावता, तो घट जातो अछेरो एक।
निश्चे होणहार ते किण विध टाले, समझो रे समझो थे आण विवेक ।।नि०२७।।
गोसाला ने वीर बचायो तिण सू, निश्चेई बधीयो बोहत मिथ्यात।
वले लोहीठांण भगवंत ने कीधो, वले दोय साधा री कीधी घात ।।नि०२८।।
त्यारा गोसालो बचीयांसू राजीहुआ ते, गोसाला रा केड़ायत जाणें।
तिण दुष्टी रा जीवीयां मे धर्म जाणे, त्यांरे मोह मिथ्यात उदे हुओ आणो ।।नि०२६।।
ज्यारी सरधा ने आचार दोनू खोटा छे, त्या तो गोसाला रो लीधों सरणो।
ते गोसालो २ कर रह्या मूरख, पिणगोसालारोपूरोनकाढे निरणो ।।नि०३०।।
गोसाला ने पाले पोसे मोटो कीधो, त्या माइता ने जो होसी पूनो।
तो तिणने बचाया त्याने पिण धर्म, तिणरो ओ परमार्थ ओहीज मर्मो ।।नि०३१।।
तठा पेहली तो जीतब रो उपगार, तेतो उपगार माइतांरो जाणो।
तठा पछलो जीतब रो उपगार ते, तो वीर तणो उपगार पिछाणो ।।नि०३२।।

तो सावद्य जीतब रो उपगार, ते तो मोह करम वस रागज आंण ।
वले पेहली उपगार कीयो गोसाला थी, ग्यांनादिक गुण रो ते तो निरवद्य जांण ।।निं०३३।।

●

दुहा

गोसालो खाली हुवो सर्वथा, कोठग बाग रे मांय ।
तप तेज गमायो सर्व आपरो, तोही गरज सरी नही कांय ।।१।।
वीर सहीत सर्व साधां तणी, जाण्यों घात करसूं तिण ठांम ।
सासण थाप सूं मांहरों, ते सर्यों न एको कांम ।।२।।
रूद्र दिष्टें देखतो थको, लांबा मेलतो निसास ।
दोढ़ी मूंछा रा केस उखणें, घणी खाज खणंतों तास ।।३।।
वले साथल बेहूं कूटतो थको, वले मसलतो वेहूं हाथ ।
दोनूं पगा सूं भूम कूटतो कहे, म्हांरी विगड़ गई बात ।।४।।
आज हणांणों हूं सर्वथा, हाहा करवा लागो आंम ।
हूं माठी विचार आयो इहा, म्हांरो बिगड़ गयो सर्व कांम ।।५।।
तो हिवे हूं जाऊं इहा थकी, करूं ओर उपाय ।
ज्यूं मन कुसले रहे माहरो, ते किण विध करें छें जाय ।।६।।

ढाल : २०

[धर्म आराधिये ए]

हिवे कोठग बाग थी नीकल्यो ए, आयों सावथी नगर मझार ।
जिहां निज श्राविका ए, हलाहली नांमे कुंभकार ।
गोसालो दुखीयो घणो ए* ।। १ ।।
तिणरी जायगा मे पाछो आय ने ए, अंब फल लीयों हाथ मझार ।
मद पांणी पीतों थको ए, वले गीत गावें बारूंवार ।।गो०२।।
वले बारूंवार नाचतों थको ए, कुंमारी ने नमे सीस नांम ।
दोनूं हाथ जोड़नें ए, वले करे तिणरा गुण ग्रांम ।। ३ ।।
सीतल पांणी माटी भरिया ठामड़ा ए, उलची २ नें ठांम ।
गात्र ने सींचतो ए, माटी नां लेप लगावें तांम ।। ४ ।।
वलू वलूं सरीर हुवो तेहनों ए, ते सीतल करवा काज ।
करें छे विटंबणा ए, पिण नाणे मन मांहे लाज ।। ५ ।।

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में पढ़ें

भगवंत कहे तिण अवसरे ए, श्रमण निग्रंथ ने बोलाय।
मोंने बालण कारणे ए, लेस्या काढी सरीर माथी आय ॥६॥
ते लेस्या हुंती अति आकरी ए, जाजलमान वशेख।
मोने म्हेली तिण थकी ए, बलजाग्रे सोले देस ॥७॥
अंग वग ने मगद देस मे ए, मलय ने मालव जाण।
अछा बछा देस ने ए, कोछा पाड ने लाढ वखाण ॥८॥
वज मोली ने मोसली भला ए, कोसल आवाहाज तांम।
सोलमों संभूतरा ए, ए सोले देसा रा नाम ॥९॥
तिण तेजू लेस्या थी सोले देस ने ए, बाले राख करें दे ताम।
एहवी लेस्या आकरी ए, मेली मोनें बालण रे काम ॥१०॥
ते लेस्या पेठी तिणरा सरीर मे ए, बलू बलू करे रह्यों ताम।
कुभारी री जायगा मझे ए, विटवणा करे तिण ठाम ॥११॥
तिण अब फल लीयों हाथ मे ए, जाव करे छे अजली करम।
करे छें विटंबणा ए, तिण छोडी लाज ने सर्म ॥१२॥
तो पिण उंधी करें छे परूपणा ए, तिणरे घट माहे ओघट घाट।
वज्र पाप ढांकवा ए, चरम परूपे आठ ॥१३॥
ओ छेह्लो पाणी[१] माह रे ए, वले छेहला गावूं छूं गीत[२]।
छेहलों नाटक[३] करूं ए, छेहलो अंजली[४] करूं इण रीत ॥१४॥
महामेह पुषल[५] संवर पांचमो ए, सीचाणह गंध हस्ती[६] ताम।
वले कहूं सातमों ए, महासिला कटक संगराम[७] ॥१५॥
हूं छेह्लों तीर्थंकर चोबीसमों ए, ते हूं आठमो चरम भगवंत।
इण अवसर्पणी काल मे ए, मोख जासू करमां रो कर अत ॥१६॥
सीतल माटी पाणी रा ठांम माहि थी ए, उलंची उलंची ठाम।
गात्र ने छांटतो ए, वले झूठ बोले छे आम ॥१७॥
हूं छेहलो तीर्थंकर चोबीसमो ए, इतरा कीया म्हां नही दोख।
ते कल्पे छे मों भणी ए, म्हांरें जाणो छे वेगो मोख ॥१८॥
जो हूं इतरा वान करूं नही ए, तो मोने लागे छे उलटा दोख।
इतरा कीया विनां ए, हूं जाय न सकूं मोख ॥१९॥
आतो थित छे काल अनाद री ए, ते छेहला तीर्थंकर नी जांण।
सका मत राखजो ए, इण विध कीया पोहचे निरवांण ॥२०॥
इसडी खोटी करे छे परूपणा ए, वज्र पाप ढाकण रे काज।
वीर कहे साधा भणी ए, इतरी करे गोसालो आज ॥२१॥

●

दुहा

वले कुण २ करें छे परूपणा, घणा लोका रे मांय ।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ।।१।।

ढाल : २१

[अरे हां सुज्ञानी पास जिनवा रे, अरे हां सुज्ञानी साहीवो]

ओं जस महिमा कीरत वधारण, वले मान बड़ाई तांम ।
ते तो गोला फेंके गालां ताणा, ते तो मत राखण रे कांम ।
गोसालो जिण नही रूडो छे, अरे हा अग्यानी भितर कूडो छें* ।। १ ।।
ते मन मांहें जाणे हूं प्रतख खोटो, साचा श्री विरधमांन ।
ते तो करमां वस जाणतों थकों, वले कुण २ करें छे तांन ।।गो० २।।
आप तीर्थंकर जेम पूजावे, भगवंत नें कहे इन्द्रजाल ।
अन्हाखी थकों बकवो करे, ओं तो देदे अणहुंतों आल ।। ३ ।।
सात पोट परिहार परूप्या, आपो छिपावण कांम ।
ओं झूठ बोलें निसंक सू, वले दुष्ट घणा परिणांम ।। ४ ।।
रूप रच्यो है साधु नों वारूं, गुण नही मूल लिगार ।
जाणे जुगां रो जूनो जती, वणियो सासण रो सिणगार ।। ५ ।।
गोसाले लोक धूतवा मार्टे, साधु रूप रच्यो अद्‌भूत ।
मूंहढें बाधी मूंहपती, ओघों लियो बिना करतूत ।। ६ ।।
नही उठाण[1] कम[2] बल[3] ने वीर्य[4], पुरखाकार प्राकम[5] नही ताय ।
ए पांचा रो कारण को नही, होसी होणहार ते होय जाय ।। ७ ।।
करणि रो कारण कोइ नहीं छें, होणहार तिम होय ।
एहवी उंधी करे परूपणा, घणां लोकाने दीधा डबोय ।। ८ ।।
सीतल पांणी पीधा सूं मोख नहीं अटकें, अस्त्री सेव्यां न अटके मोख ।
वीज हरीकाय भोगव्यां, त्यांमें पिण न बतावे दोष ।। ९ ।।
छेहलो तीर्थंकर बाजें लोका में, तिण सू हुवो घणों मगरूर ।
पिण अतिसय गुण एको नही, यूंही थोथो चलायो फितूर ।।१०।।
आठ चरम तिण छेहला परूप्या, ते पिण झूठ एकत ।
महा कल्प ते मन सू उठाय नें, तिणरा झूठ रो बोहत विरतत ।।११।।
आप तो जाबक गुण विन थोथो, थोथो सहु परिवार ।
पलाल ज्यूं पूंज दीसें घणो, माहें कण नही मूल लिगार ।।१२।।
इणरे सरधा माहे अतत अंधारो, आचार मे नहीं ठिकांण ।
भारी करमां हुंता ते जीवड़ा, पडिया खोटा मत में आण ।।१३।।

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में पढ़ें

जिण काले जिण केवली हुंता, कहिता मनोगत वात।
भारी करमां रे गोसाला तणों, मिटीयो नहीं मूल मिथ्यात ॥१४॥
वले वज्र पापनें ढांकवा काजे, पाणी परूपे च्यार।
वले अपाणी च्यार परूपिया, त्यांरो करे घणों विसतार ॥१५॥
एक तो पांणी परूपे थाल रो, वीजों पांणी छाल रो जांण।
तीजो पांणी फूलां तणों, चोथों सुघ पाणी पिछांण ॥१६॥
छ मास लगें सुध खादिम भोगवे, तिण मे दोय मास पुढवी संथार।
काष्ट संथारो दोय मास नों, दोय मास नों डाभ मंझार ॥१७॥
तिण नें छ मासें नीं छेहली राते, दोय देव आवें तिण पास।
पूर्णभद माणभद तेहनी, सेवा करे आंण हुलास ॥१८॥
सीतल अगोचो लेई हाथ मे, गात्र लूहे आय।
तिणने भलो जाणें तो तेह ने, आसीविस करम करे ताय ॥१९॥
जो ऊभलों न जांणे तेहनें, तो अगन सरीर में थाय।
तिण अगन सु सरीर प्रजले, घणों वलूं वलूं करे ताय ॥२०॥
इतरी रीत कीयां पछे ओं तो, जाअें मोख मझार।
इण विध सुध पांणी तणो, कहे घणों विसतार ॥२१॥

●

दुहा

एहवी उंधी करे छे परूपणा, ते झूठ में झूठ अनेक।
तिणरो श्रावक अयंपुल आयो तिहां, ते सुणजो आंण विवेक ॥१॥

ढाल : २२

[पुन नीपजें सुभ जोगं सूं रे]

सावथी नगरी मे तेह मे रे लाल, अयंपुल नांमें जांण हो। भविक जण*
ते श्रावक छें गोसाला तणों रे लाल, तिण रे रिध प्रभूत वखांण हो। भविक जण
श्रावक सुणजो गोसाला तणो रे लाल* ॥१॥
ते गोसाला रे मत मझे रे लाल, प्रवीण घणो अतंत हो। भ०
विचरे छे आतमा भावतो रे लाल, गोसाला रो मारग जांणे तंत हो॥भ०श्रा०२॥
ते रात समां रे विषें एकदा रे लाल, कुटंब जागरणा जागतो जांण हो। भ०
तिण अवसर मन मांहें उपनी रे लाल, हल रो छें कुण संठांण हो ॥ भ० ३ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अंतमें पढ़ें

वीजी वार अयंपुल मन चिंतवें रे लाल, मांहरा धर्म आचार्य ताहि हो । भ०।
गोसालो जी तीर्थंकर मोटका रे लाल, सर्व ग्यान दरसण त्यां मांहि हो ।। भ० ४।।
ते विचरें छे सावथी नगरी मझे रे लाल, हलाहल कुंभारी री जायगा मांहि हो । भ०।
संघ सहीत परवरयां थका रे लाल. आतमाने भावे रह्या ताहि हो ।। भ०५ ।।
तो श्रेय किलाण छे मों भणी रे लाल, सूर्य उगां पछे वांदू जाय हो । भ०।
सेवा भगत करूं तेहनी रे लाल, त्याने प्रश्न पूछू हित ल्याय हो ।। भ०६ ।।
एहवी राते किधी विचारणा रे लाल, सूर्य उगां पछे परभात हो । भ०।
निण मरदन सिनांन कीया तिहा रे लाल, चंदण सूं चरच्यों गात हो ।। भ० ७ ।।
मोल मूहघा नें हलका घणां रे लाल, एहवा कपडा गेहणा पेहरचा तांम हो ।भ०।
सगलोई अंग सिणगारीयो रे लाल, घर वारे नीकलीयों ग्राम हो ।। भ०८ ।।
हलाहल कुभारी री जायगां तिहां रे लाल, अयंपुल आयों तिण वार हो । भ०।
तिण देख्यों गोसाला ने दूर थी रे लाल, अंवफल देख्यो हाथ मझार हो ।। भ०९ ।।
जाव नमण करें कुंभारी भणी रे लाल, गात्र पांणी सीचतो देख्यो ताय हो । भ०।
जव अयंपुल लाज्यों मनमें अति घणों रे लाल, हलवे २ पाछा दीया पाय हो ।।भ०१०।।
जव गोसाला रा थिवरां जांणीयो रे लाल, अयंपुल लाज्यों देखी ताहि हो । भ०।
जव अयंपुलनें कहे छे वोलाय ने रे लाल, थारे इसडी उपनी मन मांहि हो ।।भ०११।।
ते प्रश्न पूछग तूं आवीयो रे लाल, तूं लाज्यो अंव फल देखे हाथ हो । भ०।
ए वात साची के साची नही रे लाल, अयंपुल कह्यों साची छें वात हो ।।भ०१२।।
तू लाज्यो अंव फल देखे हाथ में रे लाल, ते तूं सका मन में मत जांण हो । भ०।
भगवंत परूपे आठ चरम ने रे लाल, पछे पोहचे निरवाण हो ।।भ०१३।।
इण कारण अयंपुल गुर ताहरो रे लाल, सरीर छांटे पांणी सूं जाण हो । भ०।
आठ चरमादिक सगला वांना करी रे लाल, सीझे वुझे जासी निरवांण हो ।।भ०१४।।
ए वचन थिवरां सांभल्या रे लाल, अयंपुल घणों हरखत थाय हो । भ०।
हिवे तिहां थी उठी ने नीकल्यो रे लाल, गोसाला ने वंदण जाय हो ।।भ०१५।।
जव थिवर गोसाला कनें गया रे लाल, अंव फल दीयो एकंत नखाय हो । भ०।
अयंपुल आय वादे वेठों तिहा रे लाल, गोसालों कहे तिणनें वतलाय हो ।।भ०१६।।
इणरे मनमे उपनी तें थिवरां कही रे लाल, तिम हीज गोसाले कही जाण हो । भ०।
आठ चरमादिक सगली माडी कही रे लाल, हल छे वंसी मूल संठाण हो ।।भ०१७।।
वीणा वजावे गीत गावतो रे लाल, गावतो २ करे तांन हो । भ० ।
वीर गा २ मूख उचरे रे लाल, वीर भाइ २ करतो मान हो ।।भ०१८।।
एहवो वचन वे वे वेलां उचरे रे लाल, उनमाद नो कारण जाण हो । भ०।
तो पिण श्रावकां रे संका पडें नही रे लाल, ते पिण जांणे छें कारण निरवाण हो ।।भ०१९।।
ते श्रावक पिण मुख सू इम कहे रे लाल, आ छेहला तीर्थंकर नी रीत हो । भ०।
त्यांरी मत ढंकांणी मोह करम सूं रे लाल, तिण सूं गोसाला री पूरी परतीत हो।।भ०२०।।

वले प्रश्न अर्थपुल पूछीया रे लाल, त्यांरा अर्थ सुणें हरषत थाय हो। भ०।
भाव सहीत वंदणा करें रे लाल, पछे आयों जिण दिस जाय हो ।।भ०२१।।

●

दुहा

गोसालो मरण जांण्यों आपरो, जब थिवरां नें कहे पूरण खांत।
थे काल गयो जाणों मो भणी, म्हांरी महिमा कीजो इण भांत ।।१।।

ढाल : २३

[जंबू दीप मझार]

सुरभी गंध पांणी आंण रे। मुझ सरीर नें।
रुड़ी रीत नवराव जो ए ।। १ ।।
परमल अति सुखमाल रे। गंध कसाई ए।
तिण करे सरीर नें लूहजों ए ।। २ ।।
गोसीस चंदण आंण रे। सरस ततकाल नों।
मुझ गातर लेप लगावजों ए ।। ३ ।।
महा मोटां जोग वशेष रे। सपेत उजलों।
इसडो कपडो आंण ने ए ।। ४ ।।
ढांकजो मुझ सरीर रे। रुडी रीत सूं।
ज्यूं दीसें अति सोभतो ए ।। ५ ।।
अलंकार करो सर्व अंग रे। विभूसत करो घणो।
ज्यूं लागें अति रलीयांमणों ए ।। ६ ।।
सरीर घणों सिणगार रे। दीपक ज्यूं दीपतो।
देखतां नयण ठरे ए ।। ७ ।।
पुरुष उपाड़ें सहंस रे। एहवी सेवका।
ते रुडी रीत वखांणजों ए ।। ८ ।।
करजो हजारां रुपरे। सेवका मझे।
ते देखतां लोचन ठरे ए ।। ९ ।।
मावथी नगरी रे मांहि रे। घणां पंथ भेला हुवे।
तिहां कीजो उदघोषणा ए ।।१०।।
इत्यादिक रिध सतकार रे। मुझ सरीर ने।
नगरी वारें काढजों ए ।।११।।

वले मुख सू कहिजो आंम रे । संका मत आंणजो ।
आज हुवो अंधारो भरत ए ।।१२।।
इण अवसर्पणी माहि रे । चरम तीर्थंकर ।
ते करम खपाय मुगते गया ए ।।१३।।
जस कीरत गुण ग्रांम रे । कीजो अति घणा ।
ज्यू जिण मारग दीपे घणो ए ।।१४।।
गोसालो मखली पूतरे । जिण चोवीसमो ।
ते सीह तणी परे विचरता ए ।।१५।।
ते तारण तिरण जीहाज रे । भव जीवा तणा ।
इणविध कीजो उद्घोष ए ।।१६।।
ते पुरष गया छें काल रे । तो हिवे भरत मे ।
मिथ्यातज वधसी अति घणो ए ।।१७।।
ते सासण नायक साम रे । विछेद गयां थकां ।
हिवे कासप अति गूजसी ए ।।१८।।
कासप री मन खांत रे । आज पूरीजसी ।
जाणे मत फेलासूं मांहरो ए ।।१९।।
त्यां पुरुषां ने देख रे । पाखंडी धूजता ।
सनमुख कोइ न फुरकता ए ।।२०।।
आगा थी जाता भाग रे । पग नहीं मांडता ।
छिप जाता काने सुण्यां ए ।।२१।।
इत्यादिक बोल अनेक रे । कहिजो जुगत सूं ।
बहु जन ने संभलावता ए ।।२२।।
पाडे मोटे २ सब्द रे । एहवी उदघोषणा ।
ठाम २ करजो घणी ए ।।२३।।

●

दुहा

ए वचन गोसालो कह्या तके, थिवरां सुणें तिण वार ।
विने सहीत हाथ जोड ने, रूडी रीत कीयां अंगीकार ।। १ ।।
हिवें गोसालो सातमी रात मे, लाधो समकत सार ।
अधवसाय मन में उपनों, जब करें। छे कुण विचार ।। २ ।।
म्हें कूड कपट करे घणों, मत बांध्यों एकंत ।
हूं प्रतख झूठों निसंक सूं, साचा श्री भगवंत ।। ३ ।।

जो ए सल माहे रहें मांहरे, तो बधजाओ अनत ससार।
नरकादिक दुख भोगवू, तिणरो कहिता न आवे पार ॥ ४ ॥
तो हिवे सल न राखणो, आलोवण कीया सुध थाय।
हिवे करे आलोवण किण विधे, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल : २४

[चंद गुंपत राजा सुणों]

हूं तो निश्चें तीथकर छूं नही, हूं केवल ग्यानी पिण नाही रे।
जे अतसय गुण छे जिणेसर तणा, ते जाबक नही मो माही रे।
हा हा रे पापी मे स्यू कीयो* ॥१॥
हू तो गोसालो मखली पूत छू, भारी करमो मूढ मिथ्याती रे।
दोय साध भगवत रा, त्यारो हुवो हूं घाती रे॥ २॥
ओ तो वीर जिणंद चोवीसमा, ते तो च्यार तीर्थ ना थापी रे।
ते तो निश्चे तीर्थंकर केवली, ते म्हे जाणे उथाप्या पापी रे॥ ३॥
मोने दिख्या दे वीर चेलो कीयों, वले बहुसूरती मोने कीधो रे।
ते उपगार वीसारे मे घालीयो, त्याने उलटो म्हें दुख दीधो रे॥ ४॥
तेजू लेस्या जिण विध नींपजे, ते पिण मोनें वीर बताइ रे।
त्यारो विनों भगत तो जीहांई रह्यो, त्याने उलटो हुवो दुखदाई रे॥ ५॥
त्यारा दोय साधाने म्हे मारीया, तेजू लेस्या मेहली म्हे पापी रे।
वले लेस्या मेहली म्हे वीर ने, त्यांने मारण री मन मे थापी रे॥ ६॥
हूं प्रतणीक सर्व साधा तणो, त्यारो अंतरग माहे वेरी रे।
म्हे काण न राखी किण साध री, त्या सू दुष्ट परिणामे रह्यो गेरी रे ॥७॥
वले आचार्यने उवज्झाय नों, त्यारो अजस करतो वारूवारो रे।
त्यारा अवरणवाद बोल्या घणां, त्यांरी कीधी अकीरत अपारो रे॥ ८॥
अछता आल दीया म्हे अति घणां, त्यारी कर २ कूडी वातो रे।
म्हे च्यार तीर्थ सूं पापिये, पडवजीयो मिथ्यातो रे॥ ९॥
हूं तो पूरो विगूतो मिथ्यात मे, घणा जणा ने विगोया रे।
त्यांने संसार रूपीया समद में, उंधी सरधा मे न्हाख डबोया रे ॥१०॥
म्हे तेजू लेस्या मेहली वीर ने, ते लेस्या मोमे पाछी आई रे।
तिण तेजू लेस्या रा तप तेज थी, म्हारे बलण घणी छे माहि रे ॥११॥
तिण सूं रोग पितंजर उपनो, वले दाह लागी विकरालो रे।
तो आज सातमी रात छे, छदमसथ थको करसू कालो रे ॥१२॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में पढ़ें

जद वीर मोंनें न बचवाता, तो हू कुसले न रहितो पापी रे।
दोय साधा ने भगवंत रो, मूल न ह्वेतों संतापी रे ॥१३॥
हूं पापी जीव बचाया थकां, गुण किणरे ई नीपनों नांहीं रे।
म्हे हाण पाडी जिण धर्म री, उलट न्हांख्या मिथ्यतारे माहि रे ॥१४॥
मोटां २ अकार्य म्हे कीया, वले हुवें करमां सूं भारी रे।
मो जीव्यां थी ए गुण नीपनों, म्हांरो किम होसी निसतारी रे ॥१५॥
एहवी करे विचारणा, निज थिवरां ने बोलाया रे।
जब वचन लेई थिवरां तणो, भारी २ सूंस कराया रे ॥१६॥
भारी सूस कराय थिवरा भणी, पछे मांड कही सर्व वातो रे।
हू पूरो पाखंडी थेट रो, म्हें कीधी साधा री घातो रे ॥१७॥
तीथकर वीर जिणंद चोवीसमा, ते तो विचरे छे साहसीको रे।
हूं गोसालो मंखलीपूत छूं, हू रह्यो पाखंडमे तीखो रे ॥१८॥
थे काल गयो जाणो मो भणी, हूं कहूं ते सगला कीजो रे।
डावा पग रे बांध जो सीदरी, म्हारा मूढा मे थूकीजो रे ॥१९॥
सावत्थी नगरी ने मझे, तीन च्यार घणा पंथ तांमो रे।
तिहा आमो साह्मों सरीर घीसालजो, बारूंवार पारजो मांमो रें ॥२०॥
ठांम २ कीजो उदघोषणा, मोटे २ सब्दे विख्यातो रे।
गोसालो नही जिण केवली, पापी कीधी साधां री घातो रे ॥२१॥
तिण आउखो आज पूरो कीयो, छदमस्थ पणे कीयो कालो रे।
इत्यादिक निज आगुण कह्या घणां, ते कहिता म कीजों टालो रे ॥२२॥
तीथंकर अरिहत जिण केवली, तेतो समण भगवत महावीरो रे।
त्याने परगट कीजों सहर मे, घणां लोका रे तीरो रे ॥२३॥
मुझ सरीर नें भूडी तरे, काढजो नगरी बारो रे।
जे कही ते सर्व सरल पणे, पछे काल कीयों तिण वारो रे ॥२४॥

●

दुहा

गोसाले काढ्यों सल आपरो । तिण पाछ न राखी काय ।
मान अभिमान सर्व छोडने । निज अवगुण दीया बताय ॥ १ ॥
एहवी करे आलोवणा । ते तो विरला जांण ।
सल काढे मरे तिण पुरुष ना । जिणवर करचां छे रे वखांण ॥ २ ॥
हिवे गोसाला रा थिवरा तिहां । काल गयो गोसालो जाण ।
त्याने आय वणी छे साकड़ी । त्यांसू मेलणी नावे माण ॥ ३ ॥

ते वचन गोसाला रो राखवा । वले निज सूंस राखण काज ।
ते नाम मातर छांने करे । चोडे करता आवे लाज ।। ४ ।।
गोसाले तो खोटो मत छोडियो । तिण तो जाबक दीयो छे उठाय ।
जे भारी करमां जीवड़ा । त्यां सूं मत छोड्यो नही जाय ।। ५ ।।

ढाल : २५

[सुण हे सुवरी मत कर सुत नी आस]

थिवर माहोमाही चिंतवे रे । हिवे करवो कवण विचार ।
जे नायक था सासण तणा । त्या दीधी बात बिगाड ।
सुणों भाइ थिवरां । म करो मत रो उघाड ।। १ ।।
आपें तो याने जाणता । ए ग्यान गुणा भरपूर ।
त्या तो मुख सू इम कह्यो । म्हे जाबक कीयों फितूर ।। २ ।।
उघाड़ कीया मे गुण नही । खोटो जाणे रे लोक ।
जब पडे विखेरो मत मझे । सहु जाण लेवेला फोक ।। ३ ।।
आपां ने दिन काढणा रे । इणहिज मतरे रे माय ।
तिणसूं वात बारे मत काढजो । चुप राख्या गुण थाय । ।। ४ ।।
गोसाले कह्यों छे जिम करो । तो लागें घणी विपरीत ।
न्यात जात सर्व लोक में । जाभ्रे निज परतीत ।। ५ ।।
गोसालो काल गया थका रे । करवा लागा विचार ।
जब कुंभारी ना घर तणा । आडा जड्या किमाड ।। ६ ।।
कुंभारी नी जायगा मझे । बहु मझ देस मे रे जाय ।
नगरी आलकी सावथी । तिहा रूडी रीत बणाय ।। ७ ।।
डावा पगरे बाधी सीदरी । गोसाला रे तिण ठांम ।
तीन बार थूक्यो मुख तेहने । वले करवा लागा आम ।। ८ ।।
तिण सावथी नगरी मझे । तीन च्यार घणां पंथ मांय ।
आमो साह्मो घीसाल्यो तेहने । सीदरी हाथ संभाय ।। ९ ।।
नीचो २ मुख करी रे । सब्द कह्यो तिण काल ।
उदघोषणा करने कह्यों । ओ मखली पूत गोसाल ।।१०।।
ओ नही अरिहत जिण केवली रे । आ डाकोतरा री जात ।
इण कीयों अकार्य पापीये । कीधी दोय साधा री घात ।।११।।
छदमस्थ पणे ओ चल गयो । आसा अलूधो रे आज ।
वले करम बाध भारी हुवो । इणरो न सर्‌यो आतम काज ।।१२।।

श्रमण भगवंत महावीर जी । ओ निश्चे देवातिदेव ।
ते अतिसय गुण कर दीपता । त्यांरी इंद्र करे छे सेव ।।१३।।
गोसाले कह्यों थो जिम करचो रे । त्यां नगरी नें आलंक ।
ते जथातथ किण विध करे । जे भारी करमा बंक ।।१४।।
हिवें दूजी बार महिमा करे । ते मत राखण तिण वार ।
खोले डावा पगारी सींदरी । वले कीया उघाड़ा दुवार ।।१५।।
सुरभी गंध पाणी करी रे । नहवायो तिण काल ।
पेहिला कह्यों गोसाले तिम करचो रे । कीधा सगला बोल संभाल ।।१६।।
मोटी रिध सतकार सूं रे । काढयों नगरी रे बार ।
तिण रा कीया महोछव अति घणां रे । सुतर मे घणो विसतार ।।१७।।

●

दुहा

काल कितोएक वीतां पछे, भगवंत कीयो वीहार ।
सावत्थी नगरी थी नीकले, चाल्या जनपद देस मझार ।।१।।
तिण काले ने तिण समे, मेंढीगाम नगर थो ताहि ।
साण कोठ नामे बाग थो, इसाण कूण रे मांहि ।।२।।
तिण साण कोठ नामा बागथी, नेडो मालूआकच्छ थो एक ।
ते पान फूल फलां करी सोभतो, तिणमे रूडा विरख अनेक ।।३।।
तिण मेंढीगाम नगर मांहें वसे, रेवती गाथापतणी नाम ।
कोइ धन कर गंज सके नही, रिध प्रभूत छे ठाम ठाम ।।४।।

ढाल : २६

[हंस हंस बांधें]

तिहां भगवत श्री महावीर, विचरत साहस धीर । आछे लाल
मेंढ़ीगाम पधारीया ।। १ ।।
मेंढीगाम नगर रे बार, साणकोठ बाग मझार ।आ०
तिण बाग मे वीर समोसरचा ।। २ ।।
साथे मोटा २ अणगार, वले सिष्या रों बहु परिवार । आ०
मोटे मंडाणे वीर आवीया ।। ३ ।।
तिहां आया लोक अनेक, कीधीं सेवा भगत वशेख । आ०
जिण दिस आया तिण दिसे गया ।। ४ ।।

तिण अवसर श्री महावीर, त्यारे आतक रोग सरीर। आ०
वेदन वेदे अति आकरी ॥ ५ ॥
ते वेदन जाजलमान, कायर कंपे सुण कान। आ०
ते अहीयासता अति दोहिली ॥ ६ ॥
पितंजर परगट्यो सरीर, समे परिणांमे खमें महावीर। आ०
दाह उपनों सर्व सरीर मे ॥ ७ ॥
लोहीठाण हुवो तिण काल, ते वेदना अति विकराल। आ०
वीर वांणी अटके गई ॥ ८ ॥
च्यारूं वर्ण रे मांहोमाही ग्रांम, लोक वात करे छे ठाम - ठांम। आ०
भगवत ने करडो रोग उपनो ॥ ९ ॥
वीर गोसाला रे छे संवाद, हुवो कोठग बागमे विवाद। आ०
जब तेजू लेस्या मेली वीर ने ॥१०॥
तिण लेस्या रो लागो ताप, ते रह्यों सरीर मे व्याप। आ०
जब वीर वाणी अटकी तेह सू ॥११॥
छ मास तणे अंत जोय, जब रोग पितजर होय। आ०
दाह उपजसी सर्व सरीर मे ॥१२॥
छदमस्थ थको करसी काल, इम कह्यो थो जद गोसाल। आ०
ए वात मिलती दीसे तेहनी ॥१३॥
वीर कह्यो जद मूंग्रो गोसाल, तिणरो तो आयो निकाल। आ०
ते पिण वचन नही विगटीयो ॥१४॥

●

दुहा

तिण काले नें तिण समे, भगवत नो सिष्य सुवनीत।
सीहो नामे अणगार थो, तिण मे साध तणी सुध रीत ॥१॥
बेले २ निरंतर तप करे, सूर्य साह्मो लेवे आताप।
मालूआ कच्छ री पाखती, दोनू हाथा ने उचा थाप ॥२॥
तिण ठांमे ध्यांन ध्यावता, उपनों मनमे अधवसाय।
म्हारा धर्माचार्य वीर ने, रोग उपनो आय ॥३॥
छ मास रे छेहडें लेस्या थकी, छदमस्थ थका करसी काल।
इम सीहे सुणी लोकां कने, उठी मोह नी झाल ॥४॥

ढाल : २७

[बालम मोरा हो बिछाडियां]

हिवे सीहो अणगार तिण अवसरे, तिण पाम्यो घणो दुख अतंत।
मोटो दुख माणसीक मन उपनो, जांण्यो काल करसी भगवंत।
जिणद मोरा हो, तुझ विरहो मुझ दोहिलो।। आँ० १।।
हिवे हूं प्रश्न पूछ सू केहने, कुण देसी प्रश्ना रा मोंने जाब।
तुझ दरसण री हेती मोंने चावना, जब दरसण करतो सताब।। जि०२।।
तो हिवे सर्व पाखडी गूजसी, वले वधसी घणो मिथ्यात।।
अंधकार होसी भरत खेतर मे, जाण पूरी अमावस री रात।। जि० ३।।
आप विना इण भरत खेतर मझे, सर्व सासण होसी अनाथ।
वले हलूकरमा जीवा तणो, त्यारो कुण काढसी मिथ्यात।। जि० ४।।
आप विना इण भरत खेतर मझे, इसडी वाणी कुण वागरे आंम।
ते सुण २ भवीयण जीवा तणा, तुरत सुलटा हुवे परिणाम।।जि० ५।।
तीनसो ने तेसठ आप भाषीया, पाखडीया तणा मत जांण।
आप विनां पाखडी घणां जीवने, त्यारा मत मे न्हाखसी ताण ताण।। जि०६।।
अंतरंग माहे दुख व्याप्यो घणो, तिणरी छाती भराणी छे ताहि।
जब आतापणा भूम थी नीकल्यो, गयो मालूआ कच्छ माही।। जि०७।।
मालूआ कच्छ ने मझ तिहा गयो, तठै मिनख नही कोइ ताम।
तिहा मोटे २ सब्दे रोवे घणो, घणी कूक पाडे तिण ठाम।। जि०८।।
जो आप आउखो पूरो कीया, किणने कहिसू हीयारी हू वात।
मुझ ने आप तणो आधार छे, आप विना हू निश्चे अनाथ।। जि०९।।
इण विध आक्रंद करे घणों, मोटे सब्दा रोवे वागा पार।
तुझ विना तो हूं दुखीयो घणों, म्हारो किम नीकले जमवार।।जि० १०।।
ए मोह करम जोरावर जीव ने, तिणसू करे अनेक अकाज,
तिण उदे आया सवली सूझे नही, ते जाणे छे श्री जिणराज।।जि०११।।

●

दुहा

वीर जाण्यो सीहाने रोवतो, जब कहे साधा ने विचार।
अंतेवासी सिष्य माहरो, सीहो नामे अणगार।।१।।
ते रोवे छे मालूआ कछ मझे, सगली बात कही विसतार।
तेड ल्यावो हिवें तेहनें, म करो ढील लिगार।।२।।

साधु तिहाथी नीकल्या, आया सीहा रे तीर।
ते साध कहे छे सीहा भणी, तोने बोलावे श्री महावीर ॥३॥
हिवे सीहो तिहाथी नीकल्यो, आयो भगवंत पास।
वदणा करे श्री वीर ने, तिहा उभो अतंत उदास ॥४॥

ढाल : २८

[कपुर हुवे अति उजलो]

श्री वीर जिणद चोवीसमा जी, कहे सींहाने वोलाय।
जे जे सींहा रे मन उपनी जी, ते दीधी छे वीर बताय रे।
सीहा मत कर फिकर लिगार ॥ १ ॥
थारे ध्यान करतां मन उपनी रे, भगवत रे उपनो रोग आतक।
म्हांरा धर्माचार्य तेहनो जी, थे पडतो जाण्यो विजोग रे ॥ सी० २ ॥
थे जाण्यो धर्म गुर माहरा रे, छदमस्थ थका करसी काल।
केइ अण तीर्थी इम भाखसी रे, तिण सू उठी थारे मोह झाल रे ॥सी० ३ ॥
तिण कारण तू रोयो घणों रे, मालूआ कच्छ रे माही।
बागां पाडी छे अति घणी रे, मोटे २ सब्दे ताहि रे ॥सी० ४ ॥
सीहे विलाप कीयों तके रे, वले चिन्तवी थी मन माय।
ते वीर सगली सीहाने कही रे, ते सगली आगुच दीधी बताय रे ॥सी० ५ ॥
वीर कहे सीहा वारता रे, कहे साची कही के नाही।
जब सीहो कहे साची वारता जी, झूठ नहीं तिण माहिरे।
जिणेसर म्हारी कही मनोगत वात ॥ ६ ॥
हूं गोसाला रा ताप थी रे, काल न करूं छ मासा रे अंत।
लोक वाता करे ते झूठा थकारे, ते साच न जाणे मतवत रे ॥जि० ७ ॥
साढा पनरे वरसां लगे रे, केवल ग्यान सहीत।
गधहस्ती नी परे विचरसू रे, हिवे जावक रोग रहीत रे ॥जि० ८ ॥
हिवे जा तू सींहा इहा थकी रे, मेंढीगाम नगर रे माय।
तिहां गाथापतणी छै रेवती रे, तिण रे घर तू जाय रे ॥ जि० ९ ॥
तिण म्हांरे अर्थे नीपजावीयो रे, ते कोला पाक पिछाण।
तिण ने तू मत ल्यावजे रे, आधाकरमी दोषण जाण रे ॥जि० १०॥
जे उणरे अर्थे नीपनो रे, विजोडा पाक वशेष।
ते तूं ल्याव निसंक सू रे, सुध निरदोषण देख रे ॥जि० ११॥

दुहा

इम साभल ने सींहो मन हरषीयो, वले पांम्यों अंतत संतोष ।
तो हिवे जाय सताब सू, पाक ल्याउं निरदोष ।।१।।
हिवें भगवंत ने वंदणा करे, आयो मेंढीगाम मे ताहि ।
जिहा रेवती नों घर छे तिहा, परवेस कीयों तिण मांहि ।।२।।

ढाल : २६

[एहवा मुनिवर वांदिये]

रेवती देख्यो सीहों मुनि आवतोजी, हरषत हूई मन मांय ।
आंसण छोडे उभी थइ जी, सात आठ पग साह्मी आय ।
साधजी भलांई पधारीया जी* ।। १ ।।
तीन परिदिषणा दे करी जी, वांदे छे बारूं जी बार ।
पांचूंई अंग नमाय ने जी, मन माहे हरष अपार ।।सा०२।।
आज म्हारी रें जागी दिसा जी, पुगी म्हांरा मन तणी कोड ।
आज भलो भांण उगीयो जी, भाग कीयो म्हारे जोर ।। ३ ।।
आज करतारथ हूं थई जी, मुनीवर आया म्हांरे बार ।
ज्या पुरुषां तणी चावना जी, त्यारो म्हें तो दीठो दीदार ।। ४ ।।
किण प्रजोजन आप पधारीया जी, ते कहि ने बतावो जी मोय ।
जब सीहो कहें रेवती भणी जी, एक ओषध आप तू मोय ।। ५ ।।
कोलापाक थे वीर अर्थे कीयों जी, ते लेणों कल्पे नहीं मोय ।
बीजोरा पाक तुझ अर्थे कीयो जी, ते वेंहराय निरदोष जोय ।। ६ ।।
कुणने ग्यांनी हो थांरे एहवा जी, त्या कही म्हारी छांनी जी वात ।
थे परगट कही मों आगले जी, ते उत्तर दो सांमीनाथ ।। ७ ।।
वीर जिणंद चोवीसमां जी, त्यां सूं छांनी नहीं कांइ वात ।
ते लोक अलोक जाणे सर्वथा जी, त्यांरा कह्या सूं जांणू साख्यात ।। ८ ।।
ए वचन सीहां तणो सांभली जी, रेवती हरषत थाय ।
तिण दान दीयों सीहां अणगार नें जी, मन रलीयायत थाय ।। ६ ।।
दरब दातार दोनूं सुध था जी, तीजो पातर सुध जांण ।
वले सुध तीन करण तीन जोग सू, इणरे इसड़ी जोगवाई मिली आंण ।।१०।।
तिण ओषध वेहरायोंअति भाव सूं जी, वले उछरंग पांम्यो तिण वार ।
तिहां देव आउखो तिण बांधियो जी, वले कीयो छें परत संसार ।।११।।

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में पढ़ें

तिहां सुगध पांणी देव वरसावियो जी, वले वूठा पांच वर्ण जी फूल।
वले विरखा करी सोवन तणी जी, वूठा वले वसत्र अमूल ॥१२॥
देव वजावे देव दुदभी जी, आकास रे अतर ठांम।
मोटे सब्दे घोष पाडियो जी, दान रा कीया गुणग्राम ॥१३॥
धिन २ करे छे देवता जी, धिन २ करे नर-नार।
रेवती गाथापती ने कहे जी, इण सफल कीयो अवतार ॥१४॥
वले मेढी गांम नगर मझे जी, घणां लोक करे गुणग्राम।
इण जीतव जनम सुधारीयो जी, तिण साध प्रतीलाभीया तांम ॥१५॥
पांच दरव परगट हुवा जी, ओ पिण लोक इचरच देख।
तिण सू ठाम २ वाता करे जी, विवरा सुध वशेख ॥१६॥

●

दुहा

हिवे सीहो तिहा थी नीकल्यो। आयो भगवंत पास।
पाक सूंप्यो भगवंत ने। मन माहे अतत हुलास ॥१॥
ते पाक लेई वीर हाथ मे। प्रक्षेप्यो सरीर मझार।
ततकाल मिटी दाह वीर नी। सुख साता हुई तिणवार ॥२॥
रोग रहीत हुआ वीर सर्वथा। वल वधीयो सरीर मझार।
तेज प्राकम वधीयो अति घणों। ते कहितां न आवे पार ॥३॥
वांणी वागरवा समर्थ हुवा। चोवीसमां जिणराय।
जव कुण २ जीव हरषत हूआ। ते सुणजो चितल्याय ॥४॥

ढाल : ३०

[सोरठ देश मझार द्वारका नगरी सार आज हो वसुदेव राया]

वीर लीयों बीजोड़ा पाक, तिण सूं हुय गया चाक।
आज हो! सीहो मुनीसर ल्यायो वेहरने जी ॥१॥
साध साधवीया सुविसेष आज हो, त्या पांम्यो हरष सतोष।
मन रा मनोरथ फलीया तेहनां जी ॥२॥
वले श्रावक श्रावका जाण, ते पिण चुतर सुजाण।
हरष संतोष त्या पिण पामीयोजी ॥३॥
ए हरख्या तीरथ च्यार, त्या पाम्यो आणंद अपार।
विकसत हुआ कमल ना फूल ज्यू जी ॥४॥

वले देवी देवता तांम, ते हरख्या ठामो ठांम।
वीर सरीर निरोग सांभले जी ॥ ५ ॥
वले देव मिनख सुर लोक, त्यांरा विकस्या तीनूं जोग।
रलीयां पुराणी त्यांरा मन तणी जी ॥ ६ ॥
वले हरखी परखदा बार, ते सुणवानें हुआ त्यार।
वाणी रे चलू हुई जांणी वीर नीं जी ॥ ७ ॥
हिवे गणधर गोतम सांम, पूछे भगवंत ने आंम।
वंदणा करे ने वीर जिणंद ने जी ॥ ८ ॥
सर्वाणुंभूती अणगार, ते गुण रतनां रा भंडार।
ते उपनो पिछम ना जनपद देस नों जी ॥ ९ ॥
जद गोसाले तिण ठाम, तेजू लेस्या म्हेली तांम।
बाल जाले ने भसम कीयां तिहां जी ॥१०॥
ते पूछा करूं जोड़ी हाथ, मोंनें कहो तिलोकी नाथ।
काल करे ने मुनीवर किहां गयो जी ॥११॥
हिवे भाखे श्री भगवंत, सुणो गोतम मतवत।
सर्वाणुंभूती गयो सुर आठमे जी ॥१२॥
आठमां सुर मझार, आउखों सागर अठार।
देवतणा सुख भोगवसी तिहा जी ॥१३॥
ओं चवने जासी केत, वीर कहे महाविदेह खेत।
सजम लेई ने सिवपुर जावसी जी ॥१४॥
वले हाथ जोडी सीस नाम, पूछे गोतम सांम।
वंदणा करी ने वीर जिणंद ने जी ॥१५॥
उपनों कोसल देस मझार, सुनषत्र नांमे अणगार।
अंतेवासी थो सांमी तुम तणो जी ॥१६॥
तिण ने गोसाले तांम, तेजू लेस्या मेली तिण ठांम।
तिणरे परतापे मर ने किहा गयो जी ॥१७॥
हिवे भाखे श्री भगवंत, सुण गोतम मतवंत।
सुनषत्र साधु आयों मो कने जी ॥१८॥
मोंने वादे वारुंवार, वले फेर महाव्रत धार।
साध साधवीया सर्व खमाविया जी ॥१९॥
आलोए पडिकमे तांम, समाध पामे तिण ठांम।
काल करे गयो सुर बारमें जी ॥२०॥
इणरो आउखों सागर बावीस, ते भाख्यो जगदीस।
देव तणा सुख भोगवसी तिहां जी ॥२१॥

ओ चवने जासी केत, वीर कहें महाविदेह खेत ।
सजम लेई ने सिवपुर जावसी जी ॥२२॥
वले हाथ जोडी सीस नाम, पूछे गोतम सांम ।
वंदणा करे नें वीर जिणंद नें जी ॥२३॥
थारे कुशिष्य हुवो गोसाल, तिण कीयों इहांथी काल ।
किणने ठिकांणे जाए उपनों जी ॥२४॥
हिवें वीर कहे छे ताय, सुण गोतम चितल्याय ।
गोसालो कुसिष्य हुवो ते मांहरो जी ॥२५॥
घात कीधीं साधां री वाल, छदमस्थपणे कर काल ।
वारमे देवलोके हुवो देवता जी ॥२६॥
गोतम सांमी सुणें इम वाय, मनमे इचरज थाय ।
इसडो ने दुष्टी वारमें सुर किम गयो जी ॥२७॥
इण इसडा कीयां अन्याय, तिण सू पडे नरक मे जाय ।
तिण सूं हू इचर्य पांम्यो अति घणों जी ॥२८॥
गोतम पूछे जोडी हाथ, मोंने कहो तिलोकीनाथ ।
किण करणी कर गयो सुर वारमे जी ॥२९॥
जव मांड कही जगनाथ, गोसाला री वात ।
आलोवण कीधी ते सगली कही ॥३०॥
जद चोखी समकत पाय, तिहां पुन रा थाट उपजाय ।
तिण सू वारमे सुर हुवो देवता जी ॥३१॥
गोतम पूछे जोडी हाथ, उठै आउखो कितो सांमीनाथ ।
वारमे देवलोके तिण देवता तणो जी ॥३२॥
इणरों आउ सागर वावीस, ते भाख्यो श्री जगदीस ।
देव-तणा सुख भोगवसी, तिहां जी ॥३३॥

●

दुहा

देव आउखों पूरो करे । चव उपजसी किहां जाय ।
जव वीर कहे सुण गोयमा । सुण तू चित लगाय ॥ १ ॥

ढाल : ३१

[चतुर नर पीखो पांत्र०]

जीहो- जवूंद्वीप ना भरत में, पंडू जनपद देस मझार ।
जीहो सयदुवार नांमे नगर हुंतो, तिहां भरीया रिध भंडार ।
चतुर नर जोवो करम विपाक ॥ १ ॥

जीहो तिण सयदुवार नगरी अधिपति, सुमति नांमें राजांन ।
जीहो भद्रा राणी तिण राय ने, ते डाही चुतर सुजांण ।। च० २ ।।
जीहो बारमां देवलोक थी चवी, ते तो छोडसी तेह ठिकांण ।
जीहो भद्रा रांणी री कूख मे, पुतर पणे उपजसी आण ।। च० ३ ।।
जीहो सवा नव मास पूरा हुआ, जनम होसी तिण काल ।
जीहो सुदर रूप सुहामणों, वले सरीर घणो सुकमाल ।। च० ४ ।।
जीहो जनम होसी तिण रात नो, जद नगरी माहे ने वार ।
जीहो पदम रतनां तणी विरखा हुसी, इसरा पुन लेजासी लार ।। च० ५ ।।
जीहो वारमे दिन न्यात जीमावीयां, त्या ते मात पिता कहसी आम ।
जीहो म्हांरे पुतर हुवो छे तेहनों, म्हे तो गुण निपन देसा नाम ।। च०६ ।।
जीहो म्हारे पुत्र जनमो तिण रातनो, नगरी माहे बारै ठाम ठांम ।
जीहो पदम रतन तणी विरखा हुई, महापदम कुमर इण रो नाम ।। च०७ ।।
जीहो आठ वरस जाझेरो हुसी, वले डाहो चुतर सुजांण ।
जीहो मात पिता इणने हरख सू, राज देसी मोटे मंडाण ।। च० ८ ।।
जीहो ओं महापदम राजा होसी, मोटो हेमवंत ज्यू जाण ।
जीहो गांम नगर सर्व देस मे, सगले वरतसी इणरी आण ।। च० ९ ।।
जीहो काल कितोएक वीता पछे, दोय देव प्रगट होसी ताम ।
जीहो ते मोटी रिध सुखना धणी, पूर्णभद्र माणभद्र नाम ।।च० १०।।
जीहो महापदम राजा तणो, सेनापती पणो करसी आय ।
जीहो इसड़ा पुन भोगवसी तिहा, सुख साता माहे दिन जाय ।।च० ११।।
जीहो सयदुवार नगर तेहमे, माहोमा मिल कहसी आम ।
जीहो इण राजा री सेवा करे देवता, देव सेन दूजो देसी नाम ।।च० १२।।
जीहो देवसेन राजा तणे, हस्ती रतन उपजसी आण ।
जीहो उजलो संष तल* ज्यूं निरमलो, चउ दंतो हाथी रतन वखाण ।।च० १३।।
जीहो देवसेन राजा तिहा, तिण हस्त उपर चढे ताम ।
जीहो सयदुवार नगर ने मझे, वार वार नीकलसी तिण ठांम ।।च०१४।।
जीहो तिण काले सयदुवार नगर मे, घणा राजादिक सहू जाण ।
जीहो ते कहसी माहोमा तेडने, तिणरा करसी घणा वखाण ।।च०१५।।
जीहो देवसेन राजा तणो, विमल हस्ती उपनो ताम ।
जीहो तिणसू तीजो नाम दो एहनो, विमलवाहण राजा नाम ।।च०१६।।
जीहो माहापदम नांम पहिल रो, देवसेन राजा दूजो नाम ।
जीहो विमलवाहण नाम तीसरो, मोटो राजा होसी अभिराम ।।च०१७।।
जीहो सुखे समाधे राज करता थकां, माठी उपजसी मन माहि ।
जीहो घातक साधारो भव पाछिले, ते गूद मिटी नही ताहि ।।च०१८।।

जीहो छेहले अवसर आलोयने, सल काढ्यों थो तिण ठांम।
जीहो तिहा पुन बांध्या ते भोगव्या, पाछा आया मूलगा परिणांम ।।च०१६।।
जीहो गोसालो मंखली पूत थो, हुंतो डाकोतरा नीं जात।
जीहो लोही ठांण कीयों थो भगवंत नें, वले दोय साधांरी घात ।।च० २०।।
जीहो तेहीज लखण वले परगट्या, वले तेहीज खोटा परिणाम।
जीहो ते धेखी होसी सुध साधां तणो, ते कुण २ माठा करसी काम ।।च० २१।।

●

दुहा

काल कितोएक वीतां पछे, विमलवाहण राजान।
ते धेषी होसी जिण धर्म नों, वले खोटो रहिसी तिणरो ध्यांन ।।१।।
पाप करम रा उदा थकी, विगडे जासी वात।
श्रमण निग्रंथ अणगार थी, पडिवजसी मिथ्यात ।।२।।

ढाल : ३२

[इण पुर कंबल कोय न लेसी]

एक २ साधु ने आक्रोस करसी। एक २ री घात करतों न डरसी।
एक २ साधु नें उपद्रव देसी। एक २ नें निरभंछणा करसी ।।१।।
एक २ नें बंधण बांधसी तांम। एक २ ने रूंध राखेसी एक ठांम।
एक २ री करसी चामड़ी नों छेद। एक २ ने मारे गमासी विछेद ।।२।।
एक २ नें उपद्रव उपजाय। ते करतो संक न आणें कांय।
एक २ रा वसत्र छेदे तांम। पडिग्रह कंबल पायपूछणों आंम ।।३।।
एक २ रा उपध वशेषे छेदे। एक २ रा उपध वशेष भेदे।
एक २ साधु रा उपध ने चोरे। एक २ रा उपध ने फाडे तोडें ।।४।।
एक २ रो विछेद करसी भात पांणी। एक २ ने निगन करसी जांण जाणी।
एक २ ने निप्रष्ट करसी जाण जाण। एक २ ने दुख देसी तांण ताण ।।५।।
इत्यादिक साधां रो हुसी दुखदाई। दुख देतो सक न राखे काई।
साधां रो हुसी वले अतरंग वेरी। इसड़ो विमलवाहण राजा गेंरी ।।६।।
जे कोइ साध सती ने सतावे। ते जीव सुख किहांथी पावें।
ते राय साधांने दुख देसी जाण। तिणरे किण विध पाप उदे हुवे आण ।।७।।

●

दुहा

हिवे सयदुवार नगर ने मझे, लोक कहें माहोमां आम।
राजा इसर जुगराजादिक बहु, घणां वात करसी ठाम ठाम ॥१॥
विमलवाहण राजा हिवे, साधु सूं पडवजीयो मिथ्यात।
त्याने विविध पणे दुख दे घणों, तिण सू बिगड़ी दीसे छे वात ॥२॥
ते भलो नहीं आपा भणी, राजा नें पिण भलो नाहि।
राज देस बलवाहन भणी, ते निश्चे भलो नही कांय ॥३॥
पुर अतेवर ने भलो नही, नहीं किणरें सुख तिलमात।
विमलवाहण राजा साधा थकी, पडवजीयों मिथ्यात ॥४॥
श्रेय किलाण छे आपा भणी, राजा सू अरज करां जाय।
ए माहोंमां मिलि वाता करी, ते सगला रे आसी दाय ॥५॥

ढाल : ३३

[खटमल मेवासो]

सगलाइ मतों कर हाल्या, आसी राय कनें सहु चाल्या हो।
आय उभा रहसी राजा रे पास, हाथ जोडी विनो करसी तास हो।
राजंद वडभागी ॥१॥
जय विजय करे ने वधासी, वले विरदावलीया बोलासी हो।
तिहां बोलावसी मीठी वाणी, एक अरज करा म्हे जाणी हो ॥रा० २॥
थे साधा सू पडवजीयों मिथ्यात, ते आछी नही छे वात हो।
एक २ ने आक्रोसो तास, सगली माड कही राय पास हो ॥रा० ३॥
ते भलो नहीं छै थाने, वले भलो नही छे म्हांने हो।
वले राज देस नें भडार, भलो नही छे किणने ई लिगार हो ॥रा० ४॥
किणही साधरी म करो घात, मती पडिवजो त्यांसूं मिथ्यात हो।
दुख पिण मती देवो लिगार, आ अरज करा वारूंबार हो ॥रा० ५॥
इम साभल लोका री वाय, विमलवाहण नामें राय हो।
धर्म तप नही जाण्यो लिगार, खोटा मन सूं कीयों अगीकार हो ॥रा० ६॥
घणा लोका कही ते वात, मूढें तो मांन लीधी साख्यात हो।
पिण अतरग मांहे उवाहीज रीत, तिण रे साधु मारण री नीत हो ॥रा० ७॥
दिन काढसी इण परिणाम, साध ने दुख देवारी हाम हो।
हिवे किण विध साधु नें सतावे, किण विध कीधा रा फल पावे हो ॥रा० ८॥

दुहा

तिण काले ने तिण समे, विमलवाहण अरिहंत।
त्यांरो परपोतो सिष्य दीपतो, सुमगल साध महत ।।१।।
त्यारी जात मातारी निरमली, कुल पितारो निरदोष।
त्यारा गुण रो छेह आवे नही, गुण जाणो जिम धर्म घोष ।।२।।
तेजू लेस्या होसी त्यामे दीपती, तीन ग्यान करे ने सहीत।
बेले २ निरंतर तप करे, आतापना लेवे रूडी रीत ।।३।।
सयदुवार नगर रे बाहिरे, इसाण कुण मे ताम।
सूभूम भाग उद्यांन मे, आय उतरसी तिण ठाम ।।४।।

ढाल : ३४

[जाणे छैं राय तूं बात ए]

जद विमलवाहण नामे राय ए, एकदा बेससी रथ माय ए।
रथ कीला करण नें काम ए, नगर बारे जासी तिण ठाम ए।। १ ।।
सूभूम भाग उद्यान रे पास ए, रथ कीला करतो आसी तास ए।
तिहां सुमगल नामे अणगार ए, आतापना लेसी तिणवार ए।। २ ।।
तिण साधु ने राजा देख ए, तब जागसी राजा ने धेख ए।
आसुरते मिसमिसायमांन ए, वले कोप चढसी असमान ए।। ३ ।।
उभा सुमगल नामे अणगार ए, रथ सू हेठा न्हाखसी तिणवार ए।
रथ फेरसी सिर उपर तांम ए, रायना होसी दुष्ट परिणाम ए।। ४ ।।
वले सुमंगल नामे अणगार ए, हलवे हलवे तिण वार ए।
पाछो उभो होसी तिण ठाम ए, वले लेसी आतापना ताम ए।। ५ ।।
दुजी वार साधु ने देख ए, वले राय ने जागसी धेख ए।
वले कोप चढसी तिणवार ए, वले रथ फेरसी सिर मझार ए।। ६ ।।
वले सुमंगल नामे अणगार ए, वले हलवे हलवे तिण वार ए।
पाछो उभो होसी तिण ठाम ए, पछे अवधि प्रजूजसी ताम ए।। ७ ।।
अवधि प्रजूजसी तिण वार ए, गया काल रो करसी विचार ए।
इणरो पाछिलो भव लेसी जाण ए, इणने बोलसी एहवी वाण ए।। ८ ।।
राजा ना गुण नही तो माहि ए, विमलवाहण राजा तू नाहि ए।
तूं निश्चे नहीं देवसेन राय ए, भूडा लपण दीसे तो माहि ए।। ९ ।।
तू नहीं माहापदम राजान ए, तूं थोथो करे गुमान ए।
आज थी तीजा भव माहि ए, गोसालो मंखली पुत ताहि ए।।१०।।

साधा री घात कीधो थे बाल ए, छदमस्थ थके कीयो काल ए।
अजे उहीज थांरो ध्यान ए, तिण सू तू नही नेश्चे राजान ए।।११।।
जद थे कीधी साधा री घात ए, ते पिण समर्थ हुंता विख्यात ए।
बाले जाले भसम करे तोय ए, पिण यां क्रोध न कीधों कोय ए।।१२।।
समे परिणांमें रह्यों जांण ए, खिमता कीधी सुमता आण ए।
सर्वाणुभूति सुनखत्र साध ए, मूआ श्री जिण धर्म अराध ए।।१३।।
तिम भगवंत श्री महावीर ए, ते पिण रह्यां साहस धीर ए।
षिमा सूरा छे अरिहंत ए, त्या पिण षिमा कीधीं मतवंत ए।।१४।।
पिण त्यां जिस्यों हूं छूं नाहि ए, खिमता रस नहीं मों माहि ए।
तोने घोड़ा ने रथ सारथी समेत ए, बाले जाले भसम करूं एथ ए।।१५।।
ए साधु रा वचन सुणे कांन ए, घणो कोप चढसी राजान ए।
सुमंगल नांमें अणगार ए, त्यानें मारण री मन धार ए।।१६।।
तीजी वार होसी वले तयार ए, रथ फेरण सिर मझार ए।
तीजी वार रथ आवतो देख ए, साध ने जागसी धेख वशेख ए।।१७।।
साध होसी धिगधिगायमांन ए, घणो कोप चढसी असमान ए।
समुदघात करसी तिण काल ए, तेजू लेस्या काढसी ततकाल ए।।१८।।
राय घोडा रथ सारथी समेत ए, बाल जाल भसम करसी तेथ ए।
साधुने संतापसी जाण ए, तिण रे तुरंत फल लागसी आण ए।।१९।।
ते तो वांनगी मातर जांण ए, आगे दुख अनंत पिछांण ए।
खासी नरकादिक मे मार ए, तिण रो छे घणो विसतार ए।।२०।।
गोतम सांमी पूछा करी आंम ए, साधु उपजसी किण ठाम ए।
वीर कहे सुमंगल साध ए, घोर तप करे पासी समाध ए।।२१।।
घणां वरसां रो चारित पाल ए, काटसी करमां रा जाल ए।
तप करसी विचित्र परकार ए, एक मास तणो संथार ए।।२२।।
आलोए पडिकमे सुध थाए ए, उपजसी स्वार्थ सिध मांय ए।
तिणरो आउखो सागर तेतीस ए, गोतम ने कह्यो जगदीस ए।।२३।।
ओ चवने जासी केत ए, वीर कहे महाविदेह खेत ए।
उठे करें करमा रो सोख ए, तिहा थी जासी पाधरो मोख ए।।२४।।

●

दुहा

सुध साधां ने दुख देतां थकां, बांधीया करम अथाय।
ते छूटे नहीं विण भोगव्या, ते सुणज्यो चित ल्याय।।१।।

विमलवाहण राजा पापीयों, ते होय जासी जीतब रहीत।
तिणने साधु वाले भसम कीयो, घोडा रथ सारथी सहीत ॥२॥
विमलवाहण राजा तणी, पूछा कीधी गोतम साम।
आउखो पूरे करे, जासी कुणसे ठांम ॥३॥
वीर कहे सुण गोयमा, विमलवाहण राजान।
ते मरने जासी नरक सातमी, तिहा माहा दुखा री खांण ॥४॥
तिहां आउखो सागर तेतीस नों, खेत्र वेदना अनती जाण।
तिहा दुख मांहे दुख होसी घणो, उठे कुण छुडावे आण ॥५॥

ढाल : ३५

[साधु जी नगरी आया०]

सातमी नरक थकी ते नीकली रे, मछ पणे उपजसी आण।
तिहां पिण सस्त्र सू घात पामसी रे, बलु २ करतो छोडे प्राण।
करम थी न छूटे रे कोइ विन भोगव्या रे ॥ १ ॥
तिहां थी मरने जासी वले सातमी रे, तिहां उतकष्टी थित जांण।
वले सातमी नरक थकी ते नीकली रे, बीजी वार होसी मछ आण रे ॥ २ ॥
तिहा पिण सस्त्र सू घात पामसी रे, बलू २ करतों पाडे चीस।
तिहां थी मरने जासी छठी नरक मे रे, तिहा आउखो सागर बावीस ॥ ३ ॥
छठी नरक तणो नीकल्यो थको रे, अस्त्री पणे उपजसी आय।
तिहां पिण घात पामसी आगली विध रे, पडसी छठी नरक मे जाय ॥ ४ ॥
वले अस्त्री होसी छठी रो नीकल्यो रे, तिण हीज विध पांमसी घात।
तिहां थी मरने जासी नरक पाचमी रे, तिहा पिण सुख नही तिलमात ॥ ५॥
पाचमी नरक तणो नीकल्यो थको रे, सर्प होय ने पाचमी जाय।
पांचमी रो नीकल्यो वले सर्प होय ने रे, चोथी नरक मे जासी ताय ॥ ६ ॥
ते सींह होसी चोथी थी नीकली रे, वले परसी चोथी मे जाय।
वले सींह थई जासी तीजी नरक मे रे, तिहा थी नीकल पखी थाय ॥ ७ ॥
पंखी मर जासी तीजी नरक मे रे, तिहा थी नीकल पंखी फेर थाय।
ते पखी मर जासी बीजी नरकमे रे, तिहांथी नीकल सिरीसव होसी ताय ॥ ८ ॥
ते सिरीसव मरने जासी बीजी नरक मे रे, तिहा थी नीकल सिरीसव फेर थाय।
ते सिरीसव मरने जासी पेहली नरक मे रे, तिहा थी नीकल संनी मे जाय ॥ ९ ॥
ते संनी मरनें असंनी होय ने रे, वले पेहलें नरक मे जाय।
एकण पलरो भाग असंख्यातमो रे, एहवो आउखो पाय ॥१०॥

शेष आउखो सगलेई नरक में रे, उतकष्टो पांमसी तेह।
सस्त्र घात सगलेई पामसी रे, वलूं २ करतों मरसी एह ।।११।।
गोसाला रो जीव सातोंई नरक मे रे, जासी दोय २ बार।
एकसो ने पच्यासी सागर जाझीथकी रे, इतरी खासी नरक में मार ।।१२।।
साधां री घात कीधी थी पापीये रे, वले कीधी मिथ्यात री थाप।
उसभ करम उपाया तिण समे रे, ते भोगवसी इणविध पाप रे ।।१३।।
पाप री गुद सूं गुद वधसी घणी रे, भूंडा लारे भूंडोंइज होय।
इम सांभल ने थे भवियण जीवडा रे, किणरो भूंडो म कीजो कोय ।।१४।।
सातोंई नरक माहे दुख भोगव्या रे, तोही नावें करमां रो अंत।
शेष करम रह्या ते किण विध भोगवे रे, ते सुणजो मतवंत ।।१५।।

●

दुहा

दुख भोगवंता सातूं नरक मे, तिहां होसी घणोंइज हेरान।
गोसाले संचो कीयो थो जिण दिनें, तिण पाप री उघड़सी खान ।। १ ।।

ढाल : ३६

[कर्म भूगतीयांई छूटिये]

पेहली नरक थी निकली, जासी पंखी तणी जात मांहि लाल रे।
त्यांरा तो भेद अनेक छे, ते पूरा केम कहवाय लाल रे।
करम भूगत्या इज छूटीए ।। १ ।।

चर्म पंखी ने लोम पंखीया, समुग पखी वितितादिक पंखी माहि लाल।
लाखा गमें करसी भूव तेहमे, वारूंवार उपजसी ताहि लाल रे ।। २ ।।
सगले सस्त्र सूं घात पामसी, वलूं वलू करतों करसी काल।
तिहा दुख भोगवसी अति घणां, वेगी २ लागसी झालो झाल लाल रे ।। ३ ।।
थहचर पखी माहि थी नीकली, भुजपर री जात मे जाय लाल रे।
त्यारा पिण भेद अनेक छे, ते पूरा केम कहवाय लाल रे ।। ४ ।।
गोह नोलियादिक तेहमे, करसी लाखा गमे भव ताम लाल रे।
ते पिण थहचरनी री परे जाणजो, मर २ उपजसी तिण ठाम लाल रे ।। ५ ।।
त्यां सू नीकल जासी उरपर मझे, त्यारी पिण जात वशेख लाल रे।
अही अजगर ने असालीया आली, महोरगादिक भेद अनेक लाल रे ।। ६ ।।
लाखा गमें करसी भव तेह में, मर २ उपजसी वार २ लाल रे।
तिहा पिण दुख भोगसी घणा, थहचर जिम विसतार लाल रे ।। ७ ।।

ते भुजपर मांसूं नीकली, पछे जासी थलचर मझार।
तिहां भव करसी लाखां गमे, मर २ उपजसी वारूंवार लाल रे ॥ ८ ॥
एगखूरा दुखुरा गंडीपया, सणपया ते चउपद पिछाण लाल रे।
त्यांरा नांम जात अनेक छे, ते पिण पहुचरनी पर जांण लाल रे ॥ ९ ॥
ते थलचर माहि थी नीकली, पछे जासी जलचर मांहि लाल रे।
मछ कछ सुसमारादिक, त्यांरा नाम अनेक छे ताहि लाल रे ॥१०॥
त्यांमे भव करसी अनेक लाखा गमे, एकी की नाम जात मझार लाल रे।
तिहा पिण संघले सस्त्र सू मारीजसी, ते पिण पहुचर जिम विसतार लालरे ॥११॥
तिहांथी नीकल जासी चोइंद्री मझे, तिहा पिण लाखां गमे भव जांण।
इमहिज तेइद्री ने मझे, बेइंद्री पिण एम पिछांण लाल रे ॥१२॥
त्यां मांहि थी नीकल्यो थको, जासी वनसपती रे माहि लाल रे।
पांचू थावर मे वेहिला वीचसी, ते संक्षेप कहूं छूं ताहि लाल रे ॥१३॥
वनसपती ने वाउकायना, तेउ उपने प्रथवीकाय लाल रे।
त्यांरा पिण भेद अनेक छे, अनुक्रमे उपजसी त्यां मांय लाल रे ॥१४॥
लाखां गमे करसी भव तेहमें, एकी की काय रा भेद मांहि लाल रे।
त्यां पिण घात सस्त्र सूं पांमसी, बलूं २ करतों मरसी ताहि लाल रे ॥१५॥

●

दुहा

तिण काले नें तिण समें, नगरी राजग्रही तांम।
भमतो २ जीव गोसाला तणो, आंण उपजसी तिण ठांम ॥१॥

ढाल : ३७

[माधव इम बोले रे]

नगरी राजग्रही ने बाहिरे रे, अचोखी वेस्या रे ठिकांण।
अछेप मेंला कुल मझे रे, वेस्या पणे उपजसी आण रे।
करमा गति जोय जो ॥ १ ॥
तिहां अनेक माठा किरतब करें रे, त्यां पिण ससत्र सूं पांमसी घात।
बलू २ करती मरसी तिहां रे, वले करती अनेक विलापात रे ॥ २ ॥
काल करेसी तिहां थकी रे, चोखी वेस्या होसी दूजी वार।
ते राजग्रही नगरी मझे रे, माठा किरतब री करणहार रे ॥ ३ ॥
तिहा पिण सस्त्र सू घात पामती रे, बलूं बलूं करती तिण ठाम।
विल विलाट करती थकी रे, तिहा पिण दुखणी थकी मरण पांम रे॥ ४ ॥

पछे इण हीज जंबूद्वीप में रे, भरत खेतर सुठांम।
विभारगिरी ने मूले तिहां रे, होसी विभल सनीवेस गांम रे ॥ ५ ॥
तिहां ब्राह्मण ना कुल नें मझे रे, पुत्री पणें उपजसी आंण।
मात पिता नें वाली होसी रे, ते रूप मे अतंत वखांण रे ॥ ६ ॥
तिण नें माता पिता परणावसी रे, भरतार सूं करसी केल।
इष्ट कंत होसी भरतार नें रे, तिहां सुख रे संजोग समेल रे ॥ ७ ॥
ते गर्भवंती होसी एकदा रे, ते रहितां सासरा मांय।
ते सुसरा ना घर थकी रे, आवती कुलघर मांय रे ॥ ८ ॥
मारग दव लागो तिहा रे, तिण ज्वाला करी तेह।
पराभव पांमी अति घणो रे, दग्ध हुई तसु देह रे ॥ ९ ॥
अगन मांहें बलीयां थकी रे, काल करेसी ताहि ठांम।
दिखण दिसे अगन कुमार मे रे, देव पणे उपजसी जाय रे ॥१०॥
असूर कुमार थी नीकली रे, पांमसी नर अवतार।
तिहां समकत वोध ओ पामनें रे, वले लेसी संजम भार रे ॥११॥
ते चारित विराधी नें आपरों रे, काल करेसी तिण ठांम।
दिखण दिस असुर कुमार में रे, देव पणे उपजसी तांम रे ॥१२॥
वले मिनख हुवेंचारित विराधनें रे, देवता होसी नाग कुमार।
अग्न कुमार वरजी दीयो रे, जाव देवता थणीय कुमार रे ॥१३॥
नव वार चारित विराध नें रे, देवता होसी नवूंई वार।
असुर कुमार आदि दे रे, इम नवूंई लीजो विचार रे ॥१४॥
थणीय कुमार थी नीकली रे, वले मिनख तणो भव पाय।
चारित विराधी तिहां थकी रे, ज्योतिषी देवता होसी जाय रे ॥१५॥

●

दुहा

सुख भोगवे जोतषीयां तणा, वले पांमसी नर अवतार।
वले वांणी सुण साधां तणी, लेसी संजम भार ॥१॥

ढाल : ३८

[जाणपणो जग दोहिलो]

तिहां साधपणों सुध पालसी रे लाल, आश्रव नाला रोक सुविचारी रे।
करसी चारित आराधना रे लाल, जासी पेंहलें देवलोक सुविचारी रे।
गोसालो जिण धर्म आराधसी रे लाल ॥ १ ॥

पेंहला देवलोक में सुख भोगवी रे लाल, वले पांमसी नर अवतार।
उत्तम कुल में अवतरी रे लाल, वले लेसी संजम भार॥ २॥
रूडे रीतें चारित्त आराध नें रे लाल, करे तिहांथी काल।
देवता होसी तीजा लोक मे रे लाल, तिहां पांमसी भोग विसाल॥ ३॥
तिहां देव तणा सुख भोगवी रे लाल, वले थिति पूरी करे ताय।
वले मिनष तणों भव पांमसी रे लाल, उत्तम कुल में उपजसी आय॥ ४॥
तिहां वांणी सुणसी साधां तणी रे लाल, जब आसी वेराग अतंत।
मात पिता नें पूछ ने रे लाल, चारित लेसी मतवंत॥ ५॥
तिहां चारित्त आरावे चोखी तरे रे लाल, करे तिहांथी काल।
देवता होसी देवलोक पांचमें रे लाल, तिहां पांमसी भोग रसाल॥ ६॥
तिहां सुख भोगवे देवतां तणा रे लाल, वले पांमे नर अवतार।
तिहां पिण चारित्त आराधे होसी देवता रे लाल, सातमां देवलोक मझार॥ ७॥
सातमां देवलोक रो चव्यो थको रे लाल, लेसी उत्तम कुल अवतार।
तिहां पिण वाणी सुणे थिवरां तणी रे लाल, वले लेसी संजम भार॥ ८॥
तिहां पिण चारित्त सुध आरावसी रे लाल, काल करसी तिण ठांम।
देवता होसी नवमां देवलोकमे रे लाल, तिहां पिण सुख पांमसी अभिराम॥९॥
ते चवसी नवमां देवलोक थी रे लाल, वले लेसी मांनव अवतार।
तिहां पिण वांणी सुणे थिवरां तणी रे लाल, वले लेसी संजम भार॥१०॥
तिहां चारित्त आरावे रूडी रीत रे लाल, काल करसी तिण वार।
देवता होसी मोटको रे लाल, इग्यारमां देवलोक मझार॥११॥
इग्यारमां देवलोकथी रे लाल, चव लेसी मानव अवतार।
तिहां पिण वांणी सुणे थिवरां तणी रे लाल, संजम ले होसी मोटो अणगार॥१२॥
काल करसी चारित्त आराधनें रे लाल, जासी स्वारथ सिध मझार।
महा मोटों होसी देवता रे लाल, तिणरा सुखांरो घणो विसतार॥१३॥

●

दुहा

देवता मांहें सारे सिरे, स्वारथ सिद्ध मझार।
भारी पुन उपजाए तिहां उपनों, त्यांरा सुख घणा श्रीकार॥१॥
मेंहलायत मोटीं रलीयांमणी, तिहां लागी झिग मिग जोत।
अंधकार कदेइ हुवें नहीं, सदा होय रह्यो छें उद्योत॥२॥
तिहां सेज्यां अतंत रलीयामणी, तिण ऊपर चंद्रवों एक।
तिणरें लेहकें मोती नों झूबकों, ते शोभ रह्यो छे विशेष॥३॥

सोवन पांनडीयां करी, मोती रह्या छे तांम।
वले सोवन सर मे पोया थकां, त्यारो रूप घणों अभिरांम ॥४॥
मेहलायत सेज्यांने मोत्यां तणो, इधको घणों छें सरूप।
थोडो सो परगट करू, ते सुणजो अति चूप ॥५॥

ढाल : ३६

[वीर सुणो मोरी विनती]

इग्यारे सो जोजन री मेंहलायत, ते रतनां सेती जडिया जी।
साधपणों सुध जे नर पाले, त्यारें पानें पडीया जी।
इण स्वारथ सिध रे चन्द्रवें कांइ, मोती झूंबक सोहे जी ॥ १ ॥
तस झूंबक रे विचलो मोती, चोसठ मण रों जाणी जी।
च्यार मोती वले तस पाखतीयां, बतीस मण रां वषाणी जी ॥ २ ॥
तेहने पाषतीयां अति ही निरमल, सोंलें मणां रा आठ मोती जी।
सुन्दरता देखी हीयो हरखें, वधे आंखडीया री जोती जी ॥ ३ ॥
तस पाखतीयां सोले मोती, त्यांमे आठ २ मण भारो जी।
सोभा बोहत विराजे तेहनीं, ते दीठां हरष अपारो जी ॥ ४ ॥
बतीस मोती तस पाखतीयां, त्यांमें च्यार २ मण तोलो जी।
ते दीठां अति हीयो हरखे, ते मोती घणा अमोलो जी ॥ ५ ॥
तस पाखतीया चोसठ मोती, ते दोय २ मण छे तासो जी।
तेज उद्योत करे तिण ठामे, तेहनो घणो प्रकासो जी ॥ ६ ॥
त्यां पासे मोती मण २ रा, एक सों ने अठावीसो जी।
ते दीठां भूख त्रिषा मिट जावें, ते भाष गया जगदीसों जी ॥ ७ ॥
दोय सो ने तपन मोती, सर्व थइने मिणीया जी।
तिसला नन्दण वीर जिणेसर, केवल ग्यांनी गिणीया जी ॥ ८ ॥
वाउ जोगे मोती आफलतां, तो ही मोती मूल न फूटे जी।
मीठा सव्द गेहर गंभीरा, त्यां मोत्यां मांसूं उठें जी ॥ ६ ॥
ते सदा काल सासता मोती, त्यांने पवन चलावे जी।
मधूर सव्द त्यां मांसूं निकले, ते सुनें घणा सुहावें जी ॥१०॥
जांणे बतीस विध रा नाटक पड़े छे, छ राग त्यां मांसू होवें जी।
छतीस रागणी त्या मांसू नीकले, ते सुर ना हीया मोहे जी ॥११॥
वूर वनसपती पेंहल रूई नां, ऐसी ओपमा नाहली जी।
माखण ने रेसम ना लछा, तिण सू सेज्यां घणी सुहाली जी ॥१२॥

तेतीस हजार वर्ष नीकलीयां, भूख री मनसा थावें जी।
सास उंचा थी नीचों मूके, पख तेतीस जावे जी ॥१३॥
अवधि ग्यांन सूं नीचों देखें, नरक सातमी हेठो जी।
उंचों देखें ध्वजा पताका, तिरछों थेटा थेटों जी ॥१४॥
स्वारथ सिध ना सुख भोगवतां, हरखें विसवा वीसों जी।
त्यां एक धारा लहलीन रहे छें, सुर सागर तेतीसों जी ॥१५॥
तिण ठांमें जे जाय उपना, ते सगला एकावअतारो जी।
ते देव चवी नें मिनषज होवें, मोटा कुल मझारो जी ॥१६॥
सावपणों सुध चोखों पालें, इसडा मेहलज पावे जी।
थोडा दिनां मे करणी कर ने, चव नें मुगत सिधावे जी ॥१७॥

●

दुहा

ते जीव स्वारथ सिध मझे. सुर सुख विलसी एथ।
देव आउखों पूरों करी, चव ने जासी केत ॥१॥

ढाल : ४०

[धर्म अराधिये]

वीर कहे सुण गोयमा, ए चवसी हो गोसाला रो जीव।
माहा विदेह खेतर मझे, जनम लेसी हो मोटे कुल अतीव ॥ १ ॥
रिध कर नें अति दीपतों, वस्तीर्ण हो घणा महल आवास।
पिलग सिंघासण पालखी, रथ घोडा हो हाथी हुवे तास ॥ २ ॥
मांणक मोती जिहां घणा, सोनों रूपो हो धन वधतो व्याज।
भात पांणी जीमे घणा, उगरता हो नांखे एंठा नाज ॥ ३ ॥
दास दासी जेहनें घणा, गायां भेस्यां हों छाली प्रमुख जांण।
धन कर गंज सके नहीं, तिण घर में हो उपजसी आंण ॥ ४ ॥
पुत्र गर्भ आव्यां थकां, मा वाप हो धर्म मे दिढ थाय।
सवा नव मासे जनमसी, सुख माल हो पूरी इंद्री पांय ॥ ५ ॥
लषण वंजण गुण भला, परमाणे हों सहू सुंदर अंग।
सोम चन्द्रमा सारिखों, मन गमतों हो तिणरो रूप सुचंग ॥ ६ ॥
जनम महोछव थित करी, तीजें दिन हो चंद सूर्य दिखाय।
छठें दिन छठी जगावसी, बारमें दिन हो सुध होसी न्हाय ॥ ७ ॥

कहिसे न्यात जीमाइ ने, जिण दिन हो गर्भ उपनो तांम।
दिढ हूवा मे धर्म मे, दिढ पइनो हो देसां इण रो नांम ॥ ८ ॥
आगण गोडालीये चालणो, सीख्यो जब हो खरचे धन माल।
पगे चाल्या थडी कीयां, वसतूनी हो अग्रड ले झाल ॥ ९ ॥
जीमण कवल वधारीया, बोली सीख्या हो वींधाया कांन।
वरसी गाठज लेखव्यां, प्रथम मुडण हो ओछव दे दांन ॥१०॥
पाच धाए वीटचो थको, खीर धाइ हो पेहली कहवाय।
मजण धाय न्हवरावसी, मंडण धाइ हो सिणगार कराय ॥११॥
अंक धाय खोले लीये, कीलावण हो करासी केल।
देश अठारे री दासीयां, खोजादिक हो करने अति चेल ॥१२॥
कुबजा बाकी देसनी, चिलाती हो देसनी केइ जोय।
वामणी वामण देसनी, वड भीनो हो हीयों उंचो होय ॥१३॥
बबर चोसीया जोनीया, पलवीया हो ऋषी गणका जांण।
चरुणीया लासीया भणी, लउसीया हो दमलीया पिछाण ॥१४॥
सिघल अरब देसनी, पुलिंदी हो पंकणी वले देस।
मरूडी सबरी पारसी, आप आपणा हो देसना छे वेस ॥१५॥
ते दास्या डाही घणी, मन चित्या हो करे आफेइ कांम।
वय तुरणी विनयवंती, घणा खोजा हो अंतपुर अभिराम ॥१६॥
पालसी बालक ने प्रीत सू, हुसे लेसी हो सहू हाथो हाथ।
बाल लीला करावसी, नही मूके हो न्हेरों दिन रात ॥१७॥
एक खोला थी बीजे लीये, नचावे हो गाए गीत विनोद।
हालरीयो दे हेत सू, निज माने हो नित का प्रमोद ॥१८॥
मधुर वचन बोलावसी, रमावण रो हो सगलां उछरंग।
टोपी जुगो बोह्र रंगना, रतन जडचा हो सोभे गेहणा सुचग ॥१९॥
रमणीक मणी रतन जडचो, तिण आगण हो कीला करसी बाल।
विघन रहीत सुखे वधे, गिरी गूफा हो जिम चंपा नी डाल ॥२०॥
कला आचार्य ने सुपसी, जाझेरो हो वरष आठ परमाण।
कला बोहोतर सीखसी, अठारे देसी हो होसी भाषा रो जाण ॥२१॥
नव अग सूता जागसी, द्रव इन्द्री हो आठ ने मन जाण।
गीत रित गंधरव कला, नाटक मे हो डाहो चतुर सुजांण ॥२२॥
सिणगार सुदर रूप मे, हसण बोलण हो चालण री चूप।
समझसी लोक आचार मे, जुध जीपण हो सूरवीर अनूप ॥२३॥
भोग जोग समर्थ हुसी, अबीहतो हो फरसी काल अकाल।
मात पिता बहु धामसी, मन गमता हो काम भोग रसाल ॥२४॥

पिण ए कंवर न राचसी, विषीया रस हो गिरधी नही थाय।
जिम ए कमल कादे हुवो, जल बधियो हो पिण नही लिपाय ॥२५॥
तिम काम कादे उपनो, भोग जल सू हो वधसी जाणो एह।
पिण न लेपे काम भोग मे, सजन सू हो न लगावे नेह ॥२६॥

●

दुहा

तिण अवसर पधारसी, मोटा ऋष अणगार।
मुगत नगर नां दायका, ग्यान तणा भंडार ॥१॥
लोक जासी वादण भणी, थिवर पधारया जाण।
दिढ पइनो पिण जावसी, कर मोटे मंडाण ॥२॥
वंदणा करसी भाव सू, नीचो अंग नमाय।
मुनीवर देसी देसना, ते सुणसी चित लगाय ॥३॥
वांण अपूर्व सांभली, रूचसी अंगो अंग।
विरकत होय संसार सू, मुगती जावण उछरंग ॥४॥
मात पिता ने पूछे तिहा, संजम लेसी सूर।
तपसा करे घण घातीया, करम करसी चकचूर ॥५॥
केवल ग्यांन उपजसी तिहा, वांणी वागरसी तिणवार।
घणां जीवां ने समझाय ने, करसी मुगत ने तयार ॥६॥
केवल ग्यान उपना पछे, समण निग्रंथ ने बोलाय।
कहिसी पोते दुःख भोगवा तिके, वले निज आंगुण देसी सुणाय ॥७॥

ढाल : ४१

[भविक जन सांभलो ए]

घणा काल पेहली जीव माहरो ए, हू तो मखली पूत गोसाल।
घातक साधां तणो ए, थे सुणजो सुरत संभाल।
गोसालो इम भापसी ए ॥ १ ॥
पाछे हुई चोवीसी तेह मे ए, छेहला तीथकर महावीर।
जद हूं सिष्य थयो तेहनो ए, म्हे दिख्या लीधी त्यारे तीर ॥२॥
त्यांनेईज दुःख म्हे दीया घणा ए, लेस्या मेले कीयो लोही ठाण।
वले लेस्या थकी ए, दोय साधा ने बाल्या जांण ॥ ३ ॥
म्हे पाषंड चलायो अति घणो ए, भगवंत ने परूप्या इंद्रजाल।
वले अन्हाखी थकें ए, हूं तीर्थंकर बाज्यो तिण काल ॥ ४ ॥

म्हें महिमा वधारी अति मांहरी ए, झूठ वोल्यों तिहां विवध प्रकार।
तिहां सिष्य सिषणी तणो ए, भेलों कीयों बोहत परिवार ॥ ५ ॥
हूं आचार्य नें उवझाय तणों ए, प्रतणीक हुवों वारूंवार।
अजश कीयों अति घणो ए, घणा अांगुण वोल्या मुख फार ॥ ६ ॥
इत्यादिक सगली कहसी मांड ने ए, पछें छेहले अवसर सल काढ।
समकत पांमी तिहां ए, जद तो कांम सिराडे दीयो चाढ ॥ ७ ॥
पछें मरनें गयो सुर बारमे ए, तिहां थी चवे हूवों मोटो राय।
तिहां पिण साधां भणी ए, दुख घणों दीयों ताहि ॥ ८ ॥
वले सुमंगल नांमे अणगार नें ए, हेठो नांख्यो रथ फेरयो दोय बार।
तिण तेजू लेस्या काढ नें ए, मोनें वाले जाले कीयों छार ॥ ९ ॥
तिहां थी मरने गयो हूं नरक सातमी ए, तिहां दुख भोगवीया अपार।
सातोंई नरक में ए, हूं गयो छू दोय दोय बार ॥१०॥
पछें तिर्यंच में दुख भोगव्या ए, ते पिण माडे कही सर्व वात।
मिनषरा भव मझे ए, समकत आयों गयो मिथ्यात ॥११॥
दसवार चारित म्हें विराधीयो ए, गयो भवणपती रे मांय।
तिहां थी हूं नीकली ए, मानव नो भव पाय ॥१२॥
तिहां पिण चारित विराध ने ए, जोतषी देवता हूओं जाय।
पछे चारित आराध नें ए, सात वार गयो सुर मांय ॥१३॥
इण विध संसार मे हूं रूल्यों ए, तिणरो छे घणो विस्तार।
मो जिस करजों मती ए, वधारजो मती संसार ॥१४॥
आचार्य नें उवझाय ना ए, प्रतणीक मत होयजों कोय।
अजस कीजो मती ए, वले अांगुण मत वोलजों सोय ॥१५॥
वले अकीरत करजों मती ए, कीधां हुवें दुख अतंत।
मों जिम संसार में ए, भमण करोंला वार अनंत ॥१६॥
जद समण निग्रंथ इम साभली ए, भय पांमसी तिण ठांम।
आलोए पडिकमीए, प्राछित ले सुध होसी ताम ॥१७॥
दढ पइनों साधू तिण भव मझे ए, घणा वरस केवल प्रज्या पाल।
संथारो करे तिहां ए, मोख जासी काटे कर्म जाल।
आठु करम षय करी ए ॥१८॥
जठें जनम मरण नही सर्वथा ए, सासता सुख घणा श्रीकार।
त्यां सुखां ने नही ओपमा ए, त्यांरो पार्मे नही कोइ पार।
एहवा सुख पामसी ए ॥१९॥

एहवा सुख गोसालारो जीव पांमसी ए, विचे विघन घणा छे ताम।
बांध्या करम भोगवी ए, छूटेकों होसी ताम।
जिणेसर भाखियो ए ॥२०॥

ए चरित करचों गोसाला तणो, सुतर भोगती रे अणुसार।
पनरमा सतक मे ए, तिहा पिण जोय लीजो विसतार ॥२१॥

सवत अठारे छ्याले समे ए, काती विद सातमी रविवार।
चोपी गोसाला तणी ए, कीधी खेरवा सहर मझार।
जिणेसर भाखियो ए ॥२२॥

●

रत्न : २

चेडा कोणक री संधि

दुहा

सिध चेडा नें कोणक तणी, निरावलका भगोती मांय।
तिण अनुसारे हूं कहूं, किमहीक चोज लगाय ॥१॥
काल सुकाल महाकाल कुमर, किन्ह सुकन्ह माहकन्ह जांण।
वीरकन्ह रामकन्ह पीयश्रेणकन्ह, माहासेण कन्ह वखांण ॥२॥
ए दसोइ श्रेणक ना दीकरा, त्यांरी पुछा करी तिण वार।
किसे आरंभे करी ने गया, चोथी नरक मझार ॥३॥
कोणक ने चेडा री राड मे, ए दसोंइ आगेवाण।
भारी कर्म उपाय नरके गया, घणा जीवां रो करे घमसांण ॥४॥
कल तो लगाइ पदमावती, झेलू कोणक राय।
धुर सूं उतपत तेहनी कहूं, ते सुणजो चित लाय ॥५॥

ढाल : १

[वेंरागें मन वालियो]

राय श्रेणक रांणी चेलणा, तिणरो आतम जात।
कोणक गर्भ मांहे थका, डोहलो उपनो थो मात।
उतपत सुणजो कोणक तणी ॥ १ ॥
श्रेणक रा कालजा तणों, सूला करे मास पकाय।
ए मांस खाय मद पीवती, धिन २ तेहनी माय ॥ उ०२ ॥
ए डोहलो रांणी रो पूगो नही, सरीर गयो कुमलाय।
जव दासी जणायो राय ने, पूछ्यो श्रेणक आय ॥ ३ ॥
एक दोय वार कह्या थकां, उत्तर न दीयो लिगार।
तीजी वार पूछ्यो घणों, कह्यों श्रेणिक नें विचार ॥ ४ ॥
राजा कहे चिन्ता करो मती, हूं पुरूं डोहलो ताय।
इम घणी संतोषे नीकल्यों, बेठों सिंघासण आय ॥ ५ ॥

च्यारूं बुधां विचारीयों, बंध न वेसें लिगार।
आरत ध्यांन करतां थकां, आयो अभयकुमार ॥ ६ ॥
पिताने पूछे निरणों कीयों, म करो फिकर लिगार।
बुधकर डोहलो मांई तणो, पूरच्यो अभयकुमार ॥ ७ ॥
पछें चेलणा रांणी कीया, गर्भ गालणा रा उपाय।
सारण, पारण, मारण तणा, पिण कारी न लागी काय ॥ ८ ॥
हिवे जनम हूआं रांणी चितवे, ए पूत सपूत किम थाय।
इण गर्भ थकां पिण पापी ए, मांस पिता रो खाय ॥ ९ ॥
ए मोटों हुवों तो आछो नही, आणे म्हांरा कुल रो छेह।
उकरली आसोग वाडी मझे, न्हखायो दासी कने तेह ॥१०॥

●

दुहा

आसोग वाडी नीली थइ, सांभल्यो श्रेणक राय।
कोप्यो चेलणा रांणी उपरे, बालक देख्यो आय ॥ १ ॥
पुतर जाण्यों आपणो, करतल हाथ संभाय।
कोप्यों थकों रांणी कनें, आयो श्रेणक राय ॥ २ ॥
उंच नीच वचने करी, घणी निरभंछी राय।
म्हांरो पुतर आसोग वाडी मझे, कांय न्हांख्यों उकरली माय ॥ ३ ॥
दे घणी भलांवण तेहनी, पाछो सूंप्यो रांणी ने राय।
घणी लजाणी चेलणा, हिवे पाले पुतर ने माय ॥ ४ ॥
आंगुली कोणक तणी, कुकड़े कुरटी ताय।
ते पाकी कुलें रोवे घणों, तरे श्रेणक चूसे आय ॥ ५ ॥

ढाल : २

[इंडर आंबा आंबली]

अनुक्रमे मोटों कीयों रे, आठ परणाई नार।
संसार ना सुख भोगवें रे, पिण लोभ थी घणो विगाड़।
भव जन लोभ वूरो संसार ॥ १ ॥
कोणक अति लोभी थयो रे, भूल गयो उपगार।
कांमी अपजस करतो थको रे, न आणे संक लिगार ॥ २ ॥
हिवे कोणक मन मे चिन्तवे रे, ओ कुण २ करे अकाज।
श्रेणक ने घाल कठंजरे रे, हूं पोतें पालू राज ॥ ३ ॥

काली कुमरादिक तेडाय ने रे, कहे आपे बांटलां राज।
इग्यारे पांतीया करा रे, बेडी मे देइ श्रेणक माहाराज ।। ४ ।।
दसोइ भाइ सुण हरखीया रे, मानी कोणक री वात।
छल छिद्र जोवतो रहे रे, खेलें पिता उपर घात ।। ५ ।।
तक देखे श्रेणक ने पकडीयो रे, पिण न आणी लोकीक री लाज।
बेडी बंधण बाध ने रे, कोणक बेठो राज ।। ६ ।।
मन रा मनोरथ पूरीया रे, पिण कीयों घणों अन्याय।
हिवे कोणक राजा माताक नें रे, आयो वांदण पाय ।। ७ ।।

●

दुहा

आरत ध्यान ध्यावती चेलणा, देखी कोणक राय।
पग वांदे कहे हूं राजा हूआ, थाने क्यू नही हरख उछाह ।। १ ।।
चेलणा कहे हरखू किण विधे, थे कीधो बडो अकाज।
देव गुर समान पिता भणी, बेडी मे देइ लीयो राज ।। २ ।।
श्रेणक राजा हो मात जी, म्हारी घात रो वंछण हार।
अर्थी बंधण काटण तणो, मोसू हेत न जाण्यों लिगार ।। ३ ।।
जब चेलणा राणी मांडे कही, गर्भ डोहला पूरया री वात।
पाकी आगुली चूस मोटो कीयो, ते किम वंछे घात ।। ४ ।।
वचन सुणे माता तणो, बोल्यो कोण कराय।
म्हे भूंडों कीयों हो मात जी, हिवे तोडू बंधण जाय ।। ५ ।।

ढाल : ३

[हे जाया तुझ विन घड़ी रे]

ओ फरसी लेने उठीयो जी, बंधण तोडण जाय।
कोणक ने देखी आवतो जी, डरप्यो श्रेणक राय।
ओ कोणक दुष्टी करेलो अकाज ।। १ ।।
ओ अपत्थपथीयों कोणको जी, लज्या न दीसे लिगार।
फरसी ले आवे इहां जी, मोने कुण कुमीचां मार ।। २ ।।
ताल पुट विष खायने जी, छोडी श्रेणक काय।
कोणक आयने जोवीयो जी, प्राण नही तिण मांय।
कोणक करे घणो पिछाताप ।। ३ ।।

धसको पड़ धरती ढल्यो जी, पिता तणे रे विजोग।
सचेत हूवां रोवे घणों जी, करतो आक्रंद सोग ए ।। ४ ।।
विल विलाट करतो कहे जी, म्हे कीधो कवण अन्याय।
हूं अधन अपुन अकयपुनोजी, म्हे मारयो श्रेणक राय ए ।। ५ ।।
मोने पाल पोस मोटो कीयो जी, वले मोसू अतंत सनेह।
ते वेडी वंधण वांधने जी, म्हे दूष्टी दीधो छेह हो ।। ६ ।।
मो पापीरा पग थकी जी, कीधों श्रेणक काल।
मोटें शव्दे रोवतो जी, वले आंख्या आसु राल ए ।। ७ ।।
मोटें मंडाणे करी जी, दीयो पिताने दाग।
लोकीक कारज कीया घणा जी, पिण मनमे दुख अथाग ।। ८ ।।
मोह पितारो करें घणो जी, ए दुख सह्यो रे न जाय।
छोड़ राजग्रही नीकल्यो जी, वसीयो चंपा आय ।। ९ ।।
सोग रहित हूआ पछें जी, कालादिक ने वोलाय।
राज इग्यारें भागे कीयों जी, पिण मुदें कोणक राय।
श्रेणक नें घाल दीयो विसार ।।१०।।

●

दुहा

छोटो भाइ कोणक ने सहोदर, नामे वेहलकुमार।
तिणनें श्रेणक जीवता दीया, एक हाथी ने वकसर हार ।। १ ।।

ढाल : ४

[इण पुर कांवल कोय न लोसी]

सिचांण गंध हस्ती नें हार, साथे लेइ पोतारो पिरवार।
गंगा नदी जाअे वेहलकुमार, सिनांन करवा वारूवार ।। १ ।।
सूंड सूं हस्ती कील करावे, एक २ रांणी ने पूठे चढावे।
एक २ खंध उपर थापें, एक २ ने कूभाथल आपे ।। २ ।।
एक २ नें सिर उपर वेसांणे, एक २ ने दतूसल जाण।
एक २ ने आकासे वाहवे, एक २ ने सूड सू झाल हीचावे ।। ३ ।।
एक २ ने सिर नावे पांणी, इण विध कील करे छे राणी।
वेंहलकुमर पिण पामे साता, एहवा सुखमे काल गमाता ।। ४ ।।
नर नारी जोवण नें आवे, देख तमासो इचर्य पावे।
कहे राजलिक्ष्मी रो ए फल सार, तेतो भोगवें वेहलकुमार ।। ५ ।।

दुहा

लोक कहे राजा कोणक नहीं, राजा वेंहलकुमार।
सिंचाण गंध हस्ती तेहनें, वले बीजो वंकसर हार ॥ १ ॥
ए बात सुणी पदमावती, लागो लोभ अपार।
हार हाथी लेवा भणी, भरमावे भरतार ॥ २ ॥
कहिवानें थे राजवी, पिण राजा वेंहलकुमार।
हार हाथी नही थांरा राज मे, इम कह्यों कोणक नें नार ॥ ३ ॥
कोणक राजा सांभली, पदमावती री वांण।
अबोलो रह्यों बोल्यों नही, नो अढाइ नो परजांण ॥ ४ ॥
बार २ रांणी वीनवें, न छोडे तिणरी लार।
अवसर देखनें कहें, मांगो हाथी नें हार ॥ ५ ॥
कोणक री मति फिर गइ, मांनी रांणी री बात।
तो कुण २ अनरथ नीपजें, ते सुणजो विख्यात ॥ ६ ॥

ढाल : ५

[बिछिया नी देशी]

माठी मति छे नार नी, उंधी छे तिणरी चाल रे।
पांणी नी परें नीचों सभाव छें, आ नरक तणी दलाल रे।
धिन २ जे नारी परहरे ॥ १ ॥
वले भायां भेद घलांवणी, तोरावें सजन सुं नेह रे।
घणी पीत मांडे भरतार सूं, सवारथ नही पूगां छेह रे ॥ २ ॥
मात पिता सूं मन भांग दे, कामणी रा चारित अनेक रे।
कलह लगाय कुंमरों षेय करे, आछी नहीं बुध विवेक रे ॥ ३ ॥
आ तो मनमे ओर ही चिंतवे, वले कहें करे कुछ ओर रे।
कपटाइ घणी छें नार ने, संगत कीयां लागे झोंर रे ॥ ४ ॥
वले कलह करण आघी घणी, संके नहीं करती पाप रे।
हिवें कुण २ कलमत नीपजें, इण नारी तणे परताप रे ॥ ५ ॥
कोणक विषे रे वस पड्यों, मांनी लीधी नारी नी बात रे।
तो चेडा नांना सू नेह तूटसी, होसी दस भायां री घात रे ॥ ६ ॥
नारी री अकले लागनें, बोलायों वेंहलकुमार रे।
इण कोणक राजा सनमुखें, मांग्यो हाथी नें वंकसर हार रे ॥ ७ ॥
वेहलकुमर कहे पिता जीवतां, मोंनें दीधो श्रेणक माहाराज रे।
थांरें हार हाथीनी चावना तो, आधो वांट वो राज रे ॥ ८ ॥

ए वचन कोणक मांन्यो नही, राज तेज घणो अहंकार रे।
वारूवार मांगे भाइ कने, हाथी ने वंकसर हार रे ॥ ९ ॥
ओ खोस लेवारो अर्थी खरो, इम जांणों वेहलकुमार रे।
वारूवार मागे ते आछो नही, म्हारो हाथी ने वकसर हार रे ॥१०॥
तो हार हाथी ले नीकलू, अंतेवर सगलो परिवार रे।
जाए नांना रे सरणे रहू, इम चितव्यो वेहलकुमार रे ॥११॥
ओ तो छन छिद्र जोवतों रहें, पिण एक दिन अवसर पाय रे।
हार हाथी अतेवर ले चल्यों, कोणक ने विना जणाय रे ॥१२॥
चपानगरी थी नीकल्यो, रह्यो वैसाली नगरी जाय रे।
चेडा नाना रे सरणे गयो, ते साभल्यो कोणक राय रे ॥१३॥
हिवे कोणक मनमे चितवे, आछी न करी वेहलकुमार रे।
म्हारा राज थी वेहू ले गयो, हाथी ने वंकसर हार रे ॥१४॥

●

दुहा

तो हिवे वेग मगावणा, चेडा राजा ने कहिवाय।
दूत वोलायो सताब सू, कहे छे कोणक राय ॥ १ ॥

ढाल : ६

[भावना भावूं जगगुरू]

पेहिला दूतने इम कहे, तू कहिजे नाना ने जाय।
विनो भगत करे माहरो, वले कीजे घणी नरमाय।
नाना सू तू करजे कोणक री वीणती ॥ १ ॥
वेहलकुमर छाने ले आवीयो, हाथी ने वकसर हार।
ते मेहलजो वेग सताव सूं, हार हाथी ने वेंहलकुमार।
नाना सूं तू करजे कोणक री विणीत ॥ २ ॥
कोणक राय कह्या तके, आय चेडाने दीया सुणाय।
विनो भगत कर ने कह्यो, हार हाथी दो वेग पोंहचाय।
माहाराज आ कोणक री छे वीणती ॥ ३ ॥
जब चेडो कहे दोनू सारिखा, म्हारें फेर नही तिलमात।
श्रेणक राजा रा दीकरा, चेलणा राणी रा अंगजात।
दोनूंइ तूं जाए कोणक ने इम कहे ॥ ४ ॥

वेहलकुमार ने जीवता, दीधा श्रेणक माहाराज।
हार हाथी मागे एहना, तो आधो वांटे दे राज।
भाइ ने तू जाए कोणक ने इम कहे ॥ ५ ॥
दूत सतकार पाछो मोकल्यो, तिण आय कह्या समाचार।
कोणक राजा साभले, दूजो दूत कीयो तयार।
नाना रे ते वेसाली नगरी मेलवा ॥ ६ ॥

●

दुहा

तू जाए नाना ने इम कहे, थे अवसर नां जाण।
कोणक री एक वीणती, सुण कीजों परमाण ॥ १ ॥
भारी रतन कोइ उपजे, तो सोभे राज मझार।
घर रा धणी रे किम सोभसी, करजों आप विचार ॥ २ ॥
थे जूना राज रीत जाण छो, ए परपरा आचार।
तिण सू वेगा मेहलजो, हार हाथी वेहलकुमार ॥ ३ ॥
इम कहे दूत ने मेलीयो, वेसाली नगर मझार।
चेडा राजा रो विनों करने कह्या, कोणक रा समाचार ॥ ४ ॥
चेडे राजा तो इमहीज कह्यो, आगलाइज समाचार।
दूत आय कोणक ने कह्यो, विवरा सुध विचार ॥ ५ ॥

ढाल : ७

[चद्रगुप्त राजा सुणो]

दूजा दूत समीपे सांभले, अर्थ हीया मे धारी रे।
कोप्यों सिघर उतावलो, तो हिवे खबर चेडारी रे।
रूठो चपापुर धणी ॥ १ ॥
तीजा दूतने तेडीने इम कहे, तू वेसाली नगरी जायो रे।
चेडो राजा दरीखानो जोडने, वेंसे सिघासण आयो रे ॥ २ ॥
डावा पगरी दीजे सिघासणे, हूं कहू ते सगला कहीजे रे।
कागद चेडारा हाथ मे, भालारी अणीए दीजे रे ॥ ३ ॥
कोपे सिघर उतावलो, तीन लीटी निलाड चाढीजे रे।
तू काण म राखे तेहनी, करला वचन काढीजे रे ॥ ४ ॥
अपत्थ पत्थीयो तू खरो, काली अमावस जायो रे।
लज्या लक्ष्मी बाहिरो, भूडा लखण तो माह्यो रे ॥ ५ ॥
अकाले मरण वाछे नहीं, तिणरो तू वछण हारो रे।
सुध बुध विगरी ताहरी, पुन गयो पिरवारो रे ॥ ६ ॥

दोय दूता ने पाछा फेरीया, तो छाती दीसे काठी रे।
कोणक सूं करे बरोबरी, थारी अकल कठीने न्हाठी रे॥ ७॥
अजे हार हाथी उरा मेल दे, के डेरा बारें दीजें रे।
कोणक आवे तो उपरे, तूं सावधान थइ रहीजे रे॥ ८॥
इम दीधी सीखावण दूत ने, ते कर लीधी परमाणों रे।
वेसाली नगरी ने चालीयो, कर मोटे मडाणो रे॥ ९॥
दरबार जडीयो चेडा तणों, हाथ जोड़ी उभो तिहा आयो रे।
चेडा राजा ने वधाय ने, विनो कीयो सीस नमायो रे॥१०॥
ए विनो भगत सर्व म्हारा, हिवे सुणों कोणक राजा री रे।
करला वचन सनमुख कह्या, जोवो कागद मे विस्तारी रे॥११॥
चेडो राजा पिण सुणने कोपीयों, करलों बोल्यो चढ अहंकारो रे।
म्हारे सरणे आया मेलूं नही, हार हाथी ने वेहलकुमारो रे॥१२॥
जो कोणक आवे लडवा भणी, तो डेरा बारे यूं आयो रे।
सजकर ने सावधान छा, तू कहिजे कोणक ने जायो रे॥१३॥
तीजा दूत ने नही सतकारीयों, काढयो मोरी रे दुवारो रे।
दूत तिहाथी नीकल्यों, आए कह्यो कोणक ने विचारो रे॥१४॥
कोणक सुण कोप्यो घणों, बोल्यों मिस २ करतो रे।
आधो काढयां तो ठीक लागे नही, रखे मोने जाणेला डरतो रे॥१५॥

●

दुहा

दस भायां ने तेड कोणक कहे, हाथी ने वंकसर हार।
मोंने विगर जणावीया, ले गयो वेहलकुमार॥ १॥
चेडा रे सरणे गयो, जोरीदावे बेठो जाय।
तीन दूत पाछा ढेलीया, म्हारी काण न राखी काय॥ २॥
तीजा दूत ने नही सतकारीयो, मोरी दुवारे काढयो पाडी माम।
मोने चेडे जोम जणावीयो, तो हूं जाए करूं संगराम॥ ३॥
थे रिध सपत ले आपणी, वेगा आवो मोटे मडाण।
दस भाया कोणक रा वचन ने, कर लीधो परमाण॥ ४॥

ढाल : ८

[पाखंड वधसी आरे पांच में]

पोता २ री नगरी आवीया रे, सेन्या भेली करण राजान रे।
त्या सूरा सुभट बुलाया वेगसू रे, धरता मन माहे अति अभिमान रे।
सुभट सगरामे लड़वा संचरयारे॥ १॥

सुभट विछुडतां घर रा मिनखसूं रे, बोले मोहकारी मीठा वेंण रे।
थे जीत फतेंकर कुसले आवजो रे, म्हांने सुख होसी दीठां नेण रे ॥ २ ॥
एक२ कामण कहे भरतार ने रे, लारें न्हाना छें थांरा बाल रे।
चिंता कीजो पाछला पिरवारनी रे, अणीयां मीलीयां मूंह देजो टाल रे॥ ३ ॥
एक २ कामण कहे भरतार ने रे, थे राखजो खत्री कुल री रीत रे।
फोजा मे पाछा पग दिजो मती रे, साम्हा मडीया सगलें परतीत रे॥ ४ ॥
विछोवों परता वेदल हुवें घणा रे, मात पिता भाइ पिरवार रे।
भलावण देता वले आसु काढता रे, ते पूरो न कह्यो जाए विस्तार रे॥५ ॥
मित्र न्यातीलां सूं मिलता थकां रे, आगी कर लांबी बांह हुलास रे।
संतोषे पोता २ ना कुटंब ने रे, उभा छे आय धणी नें पास रे॥ ६ ॥
हाथी घोड़ा रथ कीया एकठा रे, एकीका रे तीन २ हजार रे।
पायक पिण सगलां रे छें सांवठा रे, तीन२ कोड कह्यों विस्तार रे॥ ७ ॥
एहवी सझाइ करनें नीकल्या रे, साथे लीयो खजानों पूर रे।
चपा नगरी बारें डेरा दीया रे, वाजंत्र बाज रह्या रिण तूर रे॥ ८ ॥
कोणक ने समीपें आय उभा रह्या रे, दसोइ भाइ जोड़े हाथ रे।
कोणक पिण नीकल्यो इण हीज रीत सूंरे, सगलोइ भेलो हुवो साथ रे॥ ९ ॥
हाथी घोड़ा रथ कीया एकठा रे. तेंतीस २ हजार रे।
पायक पिण सगला राजां तणा रे. तेंतीस कोड़ कह्यो विस्तार रे॥१०॥
चउरंगणी सेन्या ले नीकल्या रे, वेसाली नगरी सांम्हा जाय रे।
चेडो राजा सुणनें वेग सताव सूरे, बोलाया अठारें मोटा राय रे॥११॥

●

दुहा

नव मली जात रा राजवी, नव लछी जात कहवाय।
कासी ने कोसल देसना, आया अठारे राय॥ १ ॥
अठारे राजा नें चेडो कहे, सरणे आयो वेहलकुमार।
कोणक ने विगर जणावीया, हार हाथी ले लार॥ २ ॥
कोणक आवे मो उपरे, कीजे कवण उपाय।
पाछो मेलूं के लडणो सिरे, हिवे बोल्या अठारें राय॥ ३ ॥
सरणे आयो पाछो दीजीये, तो लागे घणी विपरीत।
जुझ करे साम्हा मडी, ए मोटा राजां री रीत॥ ४ ॥
जो कोणक आवे लडवा भणी, तो म्हे करसां संगराम।
जब चेडो कहे लावो साथ ने,ढील तणों नही काम॥ ५ ॥

ढाल : ६

[आय राजा नें इम कहें]

चेडा राजा रो वचन सतकार ने, नीकल्या अठारे रायो जी ।
पोता २ री नगरीया, सुभट भेला कीया आयोजी ।
जोयजो रे गरव राजा तणो ॥ १ ॥
हाथी घोडा रथ कीया एकठा, तीन २ हजारो जी ।
तीन २ कोड़ पायक एक रे, इम आया राय अठारो जी ॥ २ ॥
हाथ जोड चेडा ने इम कहे, म्हे फोजा ले आया पूरोजी ।
कोणक ज्यू चेडोइ नीकल्यो, वाजता रिण तूरो जी ॥ ३ ॥
उगणीसोइ राजा भेला हुआ, कोणक साम्हा जायो जी ।
विदेह देसने छेड़डे, फोजा उतरी आयो जी ॥ ४ ॥
हाथी घोडा ने रथ एकठा, सतावन २ हजारा जी ।
ए उगणीसोइ राजा तणा, सतावन कोड पायक लारोजी ॥ ५ ॥
एहवी रिधकर दीपता, साथरा आगरा थाटो जी ।
सजकर ने सावधान छे, जोवे कोणक री वाटो जी ॥ ६ ॥

●

दुहा

कोणक आय डेरा दीया, दस भाया सघात ।
एक जोजन रो आतरो, नही बडसाले री बात ॥ १ ॥
बेहू राजा खेत बूहारीया, विरख वढाए कीया दूर ।
सगराम मे मिलीया घणा, के कायर के सूर ॥ २ ॥
घोडे चढया सू घोडावालो लडे, हाथी रथ इमहीज जाण ।
पायक सू पायक लडे, एहवा सगराम मडाण ॥ ३ ॥
बेहू फोजा मे बेहूं राजवी, चेडो ने कोणक राय ।
हार जीत किण री हुवे, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : १०

[चेतन तोनें किण भरमाया]

सगराम मडाणो रे, वहे गोला ने वाणो रे ।
हलका रहया घणीया रे, मेली अणिया सू अणिया रे ।
सूरा ने सुभट मूछा बल घालता रे ॥ १ ॥

चेडो संगराम माह्यो रे, कालीकुमर तिहां आयो रे।
अंधकार तिण वेलां रे, रथ हो गया भेला रे।
वेर उगटीयो वशेषे देख ने रे ॥ २ ॥
कालीकुमर धायो रे, चेडाने बतलायो रे।
धीरो रह चेडा रे, पेच नाखे तेढा रे।
आज खबर पडेला रे रिण संगराम में रे ॥ ३ ॥
चेडे धनुष चढायो रे, डावे हाथ संभायो रे।
वीरासण वेसी ताण्यो रे, काना लग तीर आंण्यो रे।
कालीकुमर ने ढाह्यो परवत ना टूक ज्यू रे ॥ ४ ॥
माझी मरांणो रे, फोज परीयो भगाणो रे।
रथ होय गयो खाली रे, फोज डेरा मे चाली रे।
तीन कोड रो साहिबीयों पूरचों परचो रे ॥ ५ ॥
फोजां धणीयां विहूणी रे, उडी जाये ज्यू पूणी रे।
पागडा कुण छांडे रे, पगला कुण मांडें रे।
धणीयां ने विहूणा सूरा कुण लड़े रे ॥ ६ ॥
तरवारा झलकी रे, कायर गया सलकी रे।
पर गइ मन धाका रे, लूटचा धजा पताका रे।
दही नी परे मथीया हो चेडे राजवी रे ॥ ७ ॥
धणी विण किण रे पासो रे, लडे किण आसो रे।
गिदड ज्यू जाये भागा रे, पूठे वेरी लागा रे।
राजा विण सेन्या कुण ठांभे न्हासती रे ॥ ८ ॥
हूंता घणा अहंकारी रे, भूय होय गइ भारी रे।
केइ सूराने सेठा रे, झंगी परवतां पेठा रे।
पाछा डेरा मे जातां रा पग वहे नही रे ॥ ९ ॥
हार पर गइ हणांणा रे, घणा सुभट मराणा रे।
न्हासतां ने मारचा रे, रिण खेत मे पारचा रे।
दरीयां नीं परे जांणे माथा रडवडे रे ॥१०॥
कालादिक दस भायो रे, अडीया चेडा सू आयो रे।
आहीज रीत जाणो रे, मेल्यो एकीको वांणो रे।
दसूइ भायां ने चेडे मारीया रे ॥११॥

●

दुहा

जीत हुइ चेडा तणी, हुइ कोणक री हार।
दस भायां ने मरावीया, गलीयो गर्व अहंकार ॥ १ ॥
कथा मांहे तो इम कह्यो, हूइ दस दिन राड।
मानव मूआ अति घणा, ते नहीं सूतर मे विस्तार ॥ २ ॥
हार हाथी तो जिहांइ रह्यो, वले हाडे पड़ीयों वैर।
घरे जांणो भारी पड्यों, तरें इद्र बुलाया खेर ॥ ३ ॥
तेलो करे अराधीयां, दोय इंद्र उभा आण।
सकंद्र सुर उंचलों, चमंद्र हेठलो जांण ॥ ४ ॥

ढाल : ११

[नमिराय धन २ तूं अणगार]

जीहो इंद्र भीरी आयां पछैं, कीया संगराम जोवार।
जीहो जीत हुइ कोणक तणी, हूइ चेडा राजा री हार।
चतुरं नर जोवों करम विपाक ॥ १ ॥
जीहो बीजे दिन फेर पाछा मंड्या, वले जीतो कोणक राय।
जीहो चेडारी फोजां चल गइ, त्यांसूं पाछो मंडीयो न जाय ॥ २ ॥
जीहो धजा पताका लूंटावीयनें, तेतो गया दिसों दिस भाग।
जीहो दही नीं परें मथीया घणा, त्यां ने मारचा पूठें लाग ॥ ३ ॥
जीहो न्हाठा हीयारा उकरालीयो, एतो उगणीसोइ राजान।
जीहो पोता २ री नगरी गया, तेतो मेल्यों निज अभिमान ॥ ४ ॥
जीहो महासिला कंटक संगराम, हुआ चोरासी लाख धमसाण।
जीहो बीजा रथ मूसल मझे, छिनूं लाख मिनख परमाण ॥ ५ ॥
जीहो मूंआ दोनूं संगराम मे, एक कोडने असी लाख।
जीहो मांनव गिणती मे घालीया, भगोंती सूतर मे साख ॥ ६ ॥
जीहो नरक तिरजंच मे गया घणा, ते रुलसी इण संसार।
जीहो मूंआ क्रोध तणें वसें, तेतो गया जमारो हार ॥ ७ ॥
जीहो एक माछली री कूख में, जाए उपनां दस हजार।
जीहो दोय जीव सुध गति गया, एक देव मांनव अवतार ॥ ८ ॥
जीहो इंद्र ठिकाणें गया आपरें, आगों चाल्यों कोणक राजांन।
जीहो वेसाली नगरी घेरो दीयों, गाल्यों चेडा राजा रो मांन ॥ ९ ॥

दुहा

हिवें लारें काली रांगी चिन्तवें, म्हांरो कालीकुमर अंग जात ।
कोणक री भीरी गयो, ले पोता रो साथ ॥ १ ॥
जीवसी कें नहीं जीवसी, जीत होसी के हार ।
हूं जीवतो देखसूं के नहीं, ए चिंता फिकर अपार ॥ २ ॥
तिण काले नें तिण समें, चंपा नगरी ने बाग ।
तिहां श्री वीर समोसरया, भव जीवां ने भाग ॥ ३ ॥
काली रांणी सांभल्यों, भगवंत आया जांण ।
प्रश्न पूछण नीकली, कर मोटे मंडांण ॥ ४ ॥
अतसय देख भगवांन रो, रथ उभो राख्यो ठाय ।
हेठा उतर वंदणा करे, सनमुख बेठी आय ॥ ५ ॥
भगवंत दीधी देसना, सुणने हरषत थाय ।
हिवें काली रांणी पूछा करे, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल : १२

[नणदल नी देशी]

हाथ जोड़ी वीणती करें, नीचो सीस नमाय हो सांमी ।
म्हांरो कालीकुमर ले फोज ने, गयो संगराम मांय हो सांमी ।
हूं अरज करूं छूं वीणती ॥ १ ॥
ते जीवसी के जीवसी नहीं, जीत होसी के हार हो सांमी ।
हूं जीवतो देखसूं के नहीं, मोने कहो विचार हो सांमी ।
हूं अरज करूं छूं वीनती ॥ २ ॥
वलता वीर इसडी कहे, सूण तूं चित लगाय हे बाइ ।
थारा कालीकुमर नें एक बांण सूं, मारयो चेडे राय हे बाइ ।
नाख्यो पर्वत ना टूक ज्यूं ॥ ३ ॥
ए वचन काली रांणी सांभले, दुख व्याप्यो मन मांय हो सांमी।
धसके कर धरती ढली, मूर्छा गति सून काय हो सांमी।
म्हांरे काली कुमर ने चेड़ें मारीयों ॥ ४ ॥
सावचेत हूआं पछें, चित ने धीर्य ठाय हो सांमी ।
आप कह्यों ते साच छे, संका न रही काय हो सांमी ।
म्हांरे काली कुमर ने चेडे मारीयों ॥ ५ ॥
वंदणा करे रथ बेंस नें, आइ जिण दिस जाय हो सांमी।
हिवें गोतम सांमी पूछा करे, गयो किण गति मांय सांमी ।
ए काली रांणी नों दीकरों ॥ ६ ॥

श्री वीर कहें सुण गोयमा, कालीनामा कुमार हो गोतम ।
गयो करमा रो खांचीयो, चोथी नरक मझार हो गोतम ।
ए काली रांणी नों दीकरो ।। ७ ।।

●

दुहा

काली राणी ज्यूं नवोंइ राणीया, पूछा कीधी आय ।
वीर कह्यों थारा दीकरा, मारचा चेडे राय ।। १ ।।
कालीकुमर ज्यू नवोई गया, चोथी नरक मझार ।
आउखे दस सागर तणे, तिहां खायें अनंती मार ।। २ ।।
चोथी नरक थी निकली, ले मानव अवतार ।
माहा विदेह क्षेत्र मझे, जासी मुगत मझार ।। ३ ।।

ढाल : १३

[मम करो काया माया कारमी]

हिवे काली आदि दशोइ राणीया, साभल्या भगवत वेण रे ।
विरक्त हुई ससार थी, उवरया अंतर नेण रे ।
धिन २ श्रेणक नी राणीया ।। १ ।।
श्रेणक सरीखा परवस परया, अकाले मूंआ विष खाय रे ।
कालीकुमरादिक दीकरा, ते रह्या रिण संगरांम मांय रे ।।धि०२।।
एहवी कीवी विचारणा, जाणीयो इथर संसार रे ।
श्री वीर जिणेसर आगले, लीयो छे सजम भार रे ।। ३ ।।
चदणबाला समीपे भणी, पालती सुध आचार रे ।
गुरणी तणी लेइ आगन्या, पहरीया तप तणा हार रे ।। ४ ।।
चोथ छठादिक तप कीयो, काली राणी तिण वार जी ।
वले रतनावली तप कीयो, तेहनो सुणो विस्तार जी ।। ५ ।।
चोथ करे छठ तेलो कीयो, आठ बेला गुछ जाण जी ।
उवास थी सोला ताइ चढी, बेला चोतीस विच आण जी ।। ६ ।।
वले सोलाथी उवास ताइ उतरी, वले आठ बेला गुछ ठाम जी ।
अठम छठ कीयों चोथ नें, एक परपाटी करी आम जी ।। ७ ।।
पेंहिली परपाटी विगे लीयों, बीजी मे सहज लेपाण जी ।
तीजी मे कीया लूखा पारणा, चोथी मे आबल जांण जी ।। ८ ।।
एहवो रतनावली तप कीयो, च्यारूं परपाटीया तास जी ।
आयो संथारो एक मास नो, पोहती छे अविचल वासजी ।। ९ ।।

सुकाली कनकावली तप कीयो, ते रतनावली जिम जांण जी ।
पिण बेलां री ठोड तेला कीया, ते गुछाने मादल पिछाण जी ।।१०।।
महाकाली लघू सिंघ तप कीयों, फिर २ नव तांइ जाय जी ।
चढ २ पाछी उतरी, पारणा कीया उण न्याय जी ।।११।।
कन्हा रांणी महासिंघ तप कीयो, फिर २ सोले तांइ जाय जी ।
चढ २ पाछी उतरी, पारणा कीया उण न्याय जी ।।१२।।
सुकन्हा रांणी सतम सतमीया, दसम दसमीया लगे जांण जी ।
दात ले आहार पांणी तणी, ते गिणलेजो चतर सुजांण जी ।।१३।।
लघू सर्वतोभद्र तप कीयों, महाकन्हा रांणी सुविचार जी ।
ते एक सूं पाचां लगे चढी, ते पांच लता रो विस्तार जी ।।१४।।
महा सर्वतोभद्र तप कीयो, वीरकन्हा रांणी सूं विचारजी ।
ते एक सू सातां लगे चढी, ते सात लता रो विस्तार जी ।।१५।।
रामकन्हा भद्रोतर तप कीयो, पांच सू नव लगे जांण जी ।
पांच लतारी करे थापना, परपाटी च्यार वखाण जी ।।१६।।
पीय श्रेणकन्हा करी मुगतावली, विचें उवास करे २ तांमजी ।
पनरां तांइ चढ उतरी, सोलें कीया मझ ठांम जी ।।१७।।
आंबल विरधमांन तप कीयों, महाश्रेणकन्हा चतर सुजांणजी ।
सो ताइ आंबल वधारीया, एक उवास विचे २ आणजी ।।१८।।
सतम सतमियादिक ने वले, आबल विरधमांन करयो त्यारजी ।
आठां रा पारणा सारिषा, आठारी परपाटी च्यारजी ।।१९।।
अंग इग्यारे सगली भणी, एक मास तणो रे संथार जी ।
दसोइ राण्या दमें आतमा, पोंहती छे मुगत मझार जी ।।२०।।

●

दुहा

तिण काले ने तिण समें, भगवंत श्री विरधमांन ।
चंपा नगरी तिहां विचरता, ध्यावें आत्म ध्यांन ।। १ ।।
जाव जीव वेले २ पारणो, करे छे गोतम साम ।
त्यांरे दोय दिन पूरा हूवां, आयो पारणा रो दिन ताम ।। २ ।।
पेहले पोहर सझाय करी, दूजे पोहर ध्यांनज ध्याय ।
तीजे पोहर उठया गोचरी, चंपा नगरी मांय ।। ३ ।।
लोक मांहोमां वातां करे, चंपा नगरी मांय ।
संगराम मे झूंझी मरे, त्यांनें वरें अपछरा आय ।। ४ ।।

ए गोतम सांमी सांभले, पूछ्यों भगवंत नें आय।
वीर कहें सुण गोयमा, ए एकंत मूसावाय ॥ ५॥
वले गोतम सांमी भगवंत नें, पूछें जोडी हाथ।
तो किण कारण इण नगर में, करे मांहो मांहि वात ॥ ६ ॥
दोय जीव सुरगत किम गया, ते मूंआ रिण संगराम।
अपछरा वरणरो लोक क्यूं कहे, किरपा करे कहो सांम ॥ ७ ॥

ढाल : १४

[कपूर हुवै अति ऊजलो]

तिण काले नें तिण समें जी, वेसाली नगर मझार।
चेडा राजारो अनराव थो जी, ते आयो चेडा रे लार हो गोयम।
सुण तूं चित लगाय ॥ १ ॥
नाग राजा रो पोतरो जी, नांमें वरण वखांण।
बेले २ पारणों करें जी, ते जीवादिक नों जाण ॥ हो० २ ॥
रथ मूसल संगरांम में जी, तेडायों चेडें राय।
हूंतो बेला रे पारणें जी, तेलो दीयों तिण ठाय ॥ हो० ३ ॥
वले अभिग्रह एहवों कीयों जी, हूं पेंहली न करूं परघात।
रथ बेंसी आयो संगरांमनें जी, डाभ पूलो लीयो साथ। हो० ४ ॥
कोणक री फोज मांहिलें जी, तिण कह्यों वरण ने तूं वाव।
वरण कह्यो म्हांरे अभिग्रहो जी, हूं पेंहली न करूं परघाव ॥ हो० ५ ॥
तरे बांण मेल्यों तिण सांमनें जी, लागों मरम रो आय।
वरण कोप्यो तिण उपरे जी, पाछो मारण री मन मांय ॥ हो० ६ ॥
तीर कवांण हाथे लीया जी, क्रोध वस गाढी तांण।
न्हांख्यों परवत रा टूंक ज्यूं जी, ते मारयो एकण बांण ॥ हो० ७ ॥
हिवें संगरांम मांहियी नीकल्योंजी एकंत जायगां जाय।
रथ थी हेठें ऊतरयो जी, डाभ बिछायो आय ॥ हो० ८ ॥
पूर्वादिक बेंसी करी जी, आलोए निसल थाय।
नमोथूणं सिधां नें कीयो जी, दीयों संथारों ठाय ॥ हो० ९ ॥
वले तिगरें मित्री पूरेंलोहें जी, उण राखी पूरी परतीत।
ते देखीनें आयो तिण कनें जी, कीयों संथारो वदीत ॥ हो० १०॥
वरण धर्म अराधीयों जी, काल गयो ते जांण।
वांणमंत्र देवी नें देवता जी, त्यां नाटक पाड्यो आंण ॥ हो० ११॥
वरणरा कलेवर उपरें जी, गंधोदक वरसाय।
फूल तणी विरखा करें जी, त्यां कीया महोछव आय ॥ हो० १२॥

घणा लोका देख्या देवीदेवताजी, त्या दीयो झूठ चलाय।
सगराम मे लड़ने मरे जी, वरे अपछरा आय ।।हो० १३।।
देव महोछव देख ने जी, भूला भर्म अजाण।
क्रोधी मानी थका मरे तेहने जी, न वरे अपछरा आण ।।हो० १४।।
श्री जिण धर्म आराधने जी, सारचा आतम कांम।
वरण किहा जाय उपनो जी, किरपा करे कहो सांम।
प्रभूजी मुझ वीणती अवधार ।।हो० १५।।
पेंहलें देव लोके गयो जी, आउखो पल च्यार।
महावदेह षेतर मझे जी, जासी मोख मझार ।।हो० १६।।
तिण रो मित्री मरने गयो जी, मिनख तणा भव माय।
वले मिनख होय मोख जावसीजी, माहावदेह मे जाय ।।हो० १७।।

दुहा

वेसाली नगरी नं बाहिरे, कोणक पडीयों आय।
चिहू दिस घेरो घालीयों, कोइ बारे न सके जाय ।। १ ।।
चेडों राजा मन चितवे, बारे कोणक पडीयो आय।
इसडो साथ समाण नही माहरे, इणसू चोडे लडू बारे जाय ।। २ ।।
गोला नाल बाण सज करी, दरवाजा दीया जडाय।
मोरचा २ बेठा लडे, तिण सू नेडा न सके आय ।। ३ ।।
फोज चिहूं दिस वीट घेरो दीयो, रसत आवा नहीं दे माय।
तो पिण वेसाली नगरी मिले नही जब चितवे कोणक राय ।। ४ ।।
कोणक पूछ्यो निमत्या भणी, नगरी मिलें कवण उपाय।
जब तिण अवसर एक निमतीये, कह्यों कोणक ने आय ।। ५ ।।
इण वेसाली नगरी माहे रहे, कुल बालूडो साध।
तिणरा तप नेम रा परभाव सू, नगरी ने न हूवे उपाध ।। ६ ।।
कोणक राजा इम साभले, पडहो फेरचो तिण काल।
कोइ भिष्ट करे इण साध ने, तिणने आपू रिध रसाल ।। ७ ।।
ए कोणक री गणका सुणे, वीडो झाल्यो सनमुख आय।
साधु ने भिष्ट किण विध करे, ते सुणजो चित्त ल्याय ।। ८ ।।

ढाल : १५

[थे तो जीव दया धर्म पालो रे]

श्रावका वणी वेस्या नारो रे, आई वेसाली नगर मझारो।
साधु रे पासे उभी आयो रे, वीनो कीयो सीस नमायो ॥ १ ॥
वंदणा करें जोडी हाथो रे, हू तो आज हूई छू सनाथो।
आप तो मोटा सत रखेसर रे, तिरण तारण छो परमेसर ॥ २ ॥
लुल २ लटका करे वेस्या रे, इण रे कूड कपट री लेस्या।
थारो दरसण कीधो म्हे आजो रे, म्हारा सही सुधरसी काजो ॥ ३ ॥
नित आय सुणे वखाणो रे, मुख सूं बोले मीठी वाणो।
वले करे वीणतडी ग्रांमो रे, मोसू किरपा करो मोटा सामो ॥ ४ ॥
कदे म्हांरे पिण घरे पधारो रे, म्हारो पिण लेवो अहारो।
हूं भावना नित २ भाउ रे, जाणू बारमो वरत नीपाउ ॥ ५ ॥
इणरी वीणतडी साध मानी रे, कदे गया उणरा घर कानी।
जब घाल दीयो आहार रे माहिरे, वरेच लागे ते वसत वहराई ॥ ६ ॥
साधु आहार ले आय ठिकाणे रे, आहार कीधो उदर परमाणें।
लागी वरेच नें हूवों अचेतो रे, पडीयो अकबक नही सचेतो ॥ ७ ॥
फेरे गयो कपडा माह्यो रे, ते साधू ने खबर न कायो।
जब वेस्या आई ततकालो रे, करे साधुरी सार संभालो ॥ ८ ॥
कपडा डील धोवे वेस्या रे, इणरी माठी घणी छे लेस्या।
चापे मसले डील तेथो रे, हिवें साधु हूवो सचेतो ॥ ९ ॥
साधु जोवे ग्राख उघाडी रे, आ कुण आय बेठी नारी।
जब कह्यो वेस्या ने एमो रे, इसरो विरतंत हूवो केमो ॥१०॥
जब वेस्या कही बात माडी रे, इसडी दीठी म्हे भांडी।
तिण सू कीधी भगत म्हें आई रे, म्हारी संक म राखो काई ॥११॥
सुग आपरी किण विध ग्राणू रे, आपने हू मोटा पुरुष जाणू।
जिहा लगे आप चका थावो रे, त्या लगे सेवा भगत करावो ॥१२॥
हूं तो रहिसू आप हजूरी रे, मोने मत मेलो दूरी।
साधु ने वेस्या मोहि लीधो रे, थोडा मे आपरे वस कीधो ॥१३॥
साधू भिष्ट हूवो वरत भगो रे, इण वेस्या तणे परसंगों।
इसडी नार वेस्या धूतारी रे, तिण साधूने कीयो खुवारी ॥१४॥
खुवार करने कोणक पे आई रे, कोणक ने दीधी वधाई।
कोणक दीधो इणने सनमानो रे, आप्यो इणनें प्रीती दानो ॥१५॥

●

दूहा

साघु रा तप नेम पूरा हूवा, भिष्ट कीधो वेस्या नार।
कोणक मोरचा नेडा लीया, ताप पड्यो नगर मझार।। १ ।।
हिवे वेसाली नगरी भेलण तणों, कोणक रे अतंत उछाव।
वेर वाले करु बोल उपरे, तिण सूं करे कवण उपाय।। २।।
सगला दरवाजां बाहिरे, खाई खणाई कोणक राय।
खाई मे लकडा जलाय ने, उपर छिपत करी छे ताय।। ३ ।।
वेसाली नगरी बाहिरे, नीकलवा नही दू एक।
ए कोणक करडी धार ने, करे उपाय अनेक।। ४ ।।
मोरचा नेडा आया जांणने, नगरी मे हूवो भयंकार।
चेडो राजा साभल तिहा, करे कवण विचार।। ५ ।।

ढाल : १६

[प्रभवो चोर चोरा नें समझावे]

चेडो राजा मन एम विमासे, मोरचा नेडा लागा छे आयो रे।
नगरी भिलण री त्यारी हुइ छे, हिवें कीजे कवण उपायो रे।
चेडो राजा मन एम विमासे।। १ ।।
एतो घणा म्हे नगरी मे थोडा, किण विध याने हठावा रे।
जो वारे जाए जुझ करां तो, आटा लूण ज्यू होय जावा रे।।चें०२।।
सोर दारु आदि समांण घटीयो, तो हिवे नमीया सू कजीयो भागे रे।
हार हाथी ने वेहल कुमर ने, मेल दूं कोणक आगे रे।। ३ ।।
इसडो विचारीने चेडो माहाराजा, वेहल कुमर ने बोलायो रे।
कहे अठे रह्यां हिवे ठीक न लागे, नगरी भिलती दीसे ताह्यो रे।
चेडो राजा कहे वेहल कुमार ने।। ४ ।।
जो हार हाथी तूं साथे लेइ ने, कोणक रे पगां लागे जायो रे।
ज्यो थारो पिण कोणक नाम न लेसी, म्हासूं पिण कजीयो मिटे ताह्यो रे।।५।।
इम समझाएने वेहल कुमर ने, सीख दीधी चेडे रायो रे।
ओ पिण नाना आगे सीख मागी ने, निज ठिकाणे वेगो आयो रे।
हिवे वेंहलकुमार हुवो छे निराधारो।। ६ ।।
वंकसर हार गेला माहे पेहरयो, हस्ती हुवो असवारो रे।
नगरी बिचे २ होय नीकलीयों, आयो दरवाजा वारों रे।। ७ ।।
आगे छिपतरे आंतरे खाई धुकेछे, ते वेहल कुमार जाणें नांहि रे।
हाथी जांणें तिणसूं आगो न चालें, अवध गिनांन तिण माहि रे।। ८ ।।

हिवे वेहलकुमर कहें सीचांणा हस्तीने, तू आगो क्यूं नही चाले रे।
तोसूं तो करम हुवा छे घणाई, अजे आघो क्यू नहीं हाले रे ॥ ९ ॥
जब सिंचान गंधहस्ती वेहलकुमर ने, सूड सू मेल दीयो दूरो रे।
पोते चेह माहे जाय पड़ीयो, कीधो आउखों पूरो रे ॥१०॥
वंकसर हारने देवता लेगो, हिवे चितवें वेहल कुमारो रे।
हार हाथी दोंनू पड गया पूरा, सगलोई इथर ससारो रे ॥११॥

●

दुहा

वेहलकुमार चढचो वेराग मे, जाण्यो इथर संसार।
हिवे क्यांने जावू कोणक कने, हिवे लेसूं संजम भार ॥ १ ॥
एहवी करे विचारणा, गयो वीर जिणद रे पास।
सीह जिम संजम आदरचो, पाम्यो अतत हुलास ॥ २ ॥
चेडो राजा सथारो करी, आंणी मन संतोष।
बारमे देवलोक जाय उपनो, वेगो जासी मोख ॥ ३ ॥
कोणक मन विलखो थयो, करे घणो पिछाताप।
म्हें अनर्थ किया अति घणा, यूं ही वाध्या म्हे पाप ॥ ४ ॥

ढाल : १७
[डाभ मूंजादिक नी डोरी]

हार हाथी पिण हाथे नाया, दस भाया ने मूढ मराया।
हूवो खराब खजानो खूटो, चेडा नाना सू नेह तूटो ॥ १ ॥
इण परिग्रहा ने परसग, हूवा जोरावर जंग।
घणा मिनखा रो कीयो विणास, तिणसू बंध गई करमा री रास ॥ २ ॥
कोणक राजा पड़ गयो फीटो, लोका में पिण भूडो दीठो।
हाथी लेवारी थी मन आस, ते जावक हुवो निरास ॥ ३ ॥
अठार सरो वंकसर हार, जांण्यो पहर करूं सिणगार।
एहवी पदमावती रे थी आस, ते पिण होय बेठी निरास ॥ ४ ॥
धुर सू ए पग पदमा चलाया, घणा मिनखा ने जीवां मराया।
दस देवर री कराई घात, देराण्या ने कीधी रीते हाथ ॥ ५ ॥
लोका मे पिण भूडी दीठी, न्यात जात मे पड गई फीटी।
मूख सूं बोलें माठी गाल, इण करायो घणारो खेगाल ॥ ६ ॥

इण उंधी अकल कोणक नें दीधी, कोणक पिण माने लीधी ।
इणरी अकल सूं ए करम हूवा, घणा जीव अकाले मूंआ ॥ ७ ॥
कोणक नारी नीं अकले लागो, तो कुल ने लागो इसडो दागो ।
बडबडा भींच यूंही मराया, दस भायां नें जीवां गमाया ॥ ८ ॥
बांका पग बाई पदमां रा चाल्या, तिण इसडा बेधा घाल्या ।
कुल रों खेगाल करायों, ओ जस बाई पदमां ने आयों ॥ ९ ॥
कोणक वेहलकुमर सूं तूटी, आ पिण पदमां रा पग सूं उठी ।
नानी सुसरा नें पिण पोई, तिण नें पिण दीधो विगोई ॥१०॥
दस देराण्यां पदमां ने देखें, जब जागें अभिन्तर धेखे ।
इण पापणी वेधो घाल्यों, सगलो कलमथ इण सूं चाल्यों ॥११॥
म्हांने दीठाई आ न सूहाय, इणरें पगे पडां किम जाय ।
काढे गाल्यां नें देवें सराप, इणरे वेगो उदे हूवों पाप ॥१२॥

●

दुहा

एहवा करम नारी थी नीपनां, ते प्रसिध जांणे लोक ।
ते कामणी कंत नें केहवी, जाणक लागी जलोक ॥ १ ॥
विरची तो वाघण सूं बुरी, अण विरची करे पीत अपार ।
दोनूं परकारे कंत ने, मेल दे नरक मझार ॥ २ ॥
कोयक तों नारी हुवे सुलखणी, बाकी घणी कुलखणी नार ।
सहिजांइ सभाव नीचों हुवे, कूड कपट तणी भंडार ॥ ३ ॥
इणरा चाला चारित छे अति घणा, ते पूरा केम कहवाय ।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : १८

[जीव मोह अणुकम्पा न आंणीए]

दांन सीयल ने तपस्या तणी, अंतराय री पाडणहार रे ।
आ तो भिष्ट करे भरतार ने, पाधरों मेले नरक मझार रे ।
एहवी माठी मति छे नार नी★ ॥ १ ॥
दान देवा सूं मन भरतार नों, उलट परिणामां किण ही बार रे ।
जब कूड कपट कुकला करे, दांन देवा न दे तिणवार रे ॥ २ ॥
भरतार सीयल वरत आदरे, तो आ दुख दें विवध परकार रे ।
नित कलह करे धूखती रहें, करें कांचा रे वरत विगार रे ॥ ३ ॥

★यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वरजें तपस्या करतां भरतार नें, ते पिण आपरे मूतलब कांम रे।
जावक जिण धर्म थी चूकाय दे, एहवा छे दुष्ट परिणांम रे ॥४॥
ग्यांन दरसण चारित तेहने, विघन करण नें सूर रे।
भर्म में न्हाखें भरतार नें, लेजावें बहती रे पूर रे ॥५॥
इण नारी ने वस जे पड़या, रहें नारी ना आग्याकार रे।
वले कथन न लोपें तेहनो, त्यांरा पुरखपणा नें धिकार रे ॥६॥
घर मे हाल हुकम हुवे नार नों, तो सगलें वपरावे नांन रे।
आवरु गमांवे इण लोक में, बूडा नारी नी वातां मांन रे ॥७॥
जो नारी सूं डरतो रहें, तो करावे नीचा २ कांम रे।
वले काण न राखें कंत रो, पंचां बेठां पिण पाडे मांम रे ॥८॥
ईसको खेदो तिणरे घणों, वले घणो कडूवे काट रे।
वले लड २ करे अबोलणा, छेडवीया करे घुरराट रे ॥९॥
हाव भाव करे मन मोहिलें, मुख मीठा बोली नार रे।
लाल पाल पेला सूं करे घणी, बोले नही बंध लिगार रे ॥१०॥
खिण २ मांहे रंग विरंग होवे, खिण माहे हुवे हरख उदास रे।
खिण २ रोवे खिण २ आरडें, खिण २ माहे करें तमास रे ॥११॥
मल मातरो नाखवो ऐठ मांजवी, माथे गोवर वासीडो ताम रे।
पांणी पीसणो नें वले रांधणों, इण आदर लीया एहवा कांम रे ॥१२॥
सोग संताप नें वले रोवणों, हरख सूं माठी गाल्यां गवात रे।
इत्यादिक नीच २ कांमा तके, ते तो आया नारी ने हाथ रे ॥१३॥
तनी सेण सगां देखतां थकां, नाचे उंचा कर २ हाथ रे।
वखांण सुणती लाजा मरे, आ इचरज वाली बात रे ॥१४॥
सासरीयां पीहरीयां सुणतां थकां, गाल्यां गावती करे ओ गाज रे।
कहे वखांण साधां रो किम सुणू, चोहटा मे बेठां आवे लाज रे ॥१५॥
आ तो नारी लाज करें घणी, न देखालें मुख ने आख रे।
पिण गाल्यां गावणं नें उसरी, जांणें कपडा दीधा न्हांख रे ॥१६॥
कोइ चौगट री तिरको परचां, ते कीडयां काढे सोज रे।
ज्यूं आ मिनख मूंओ काढें सोध नें, तिण घर जाए घाले रोज रे ॥१७॥
ज्यां लग पर घर रोज घाल्यो नही, त्यां लग जक पडे नही ताय रे।
घसको पाड़े जाय सताव सू, रोज मांडे उण रा घर माय रे ॥१८॥
ते पिण रोवे नही छे तेहनें, रोवे आपरो मूओ सभाल रे।
इसडो अंधारो छे तेहनें, तिणरो कुण काढे निकाल रे ॥१९॥
पांच सात जणी भेली हुवें, जब करें पराई तात रे।
वले करती २ इधकी करे, करें घर भागण री वात रे ॥२०॥

सूधी बात करतां उंधी पडे, वले कीधो न गिणें उपगार रे ।
ज्यूं छेडवे ज्यूं उलटी पडे, बोले नहीं बंध लिगार रे ॥२१॥
इण सू गुण कीयां अवगुण गिणे, उलटी हुवे दावादार रे ।
तनी सेण सगां सूं तनक ने, तोडता नहीं ल्यावे वार रे ॥२२॥
इणरे पीत मुरीद किण री नही, विगड्यां छे घणी विकराल रे ।
मन सूं झूठी बातां उठाय नें, सके नहीं देती आल रे ॥२३॥
जो भरतार रांक गरीब हुवें, तो घुरकावे दिन रात रे ।
जो इण उपरलों आए मिले, तो जोड्यां रहें दोनूं हाथ रे ॥२४॥
न मिले आछो खांणों ने पहरणों, जब उधी बोले म्हाखे निसास रे ।
म्हे तो आछो खांधो पेहरयो नही, तो मोल्या माटी रे पास रे ॥२५॥
ओर कूडकपट तो जिहांई रह्यों, साधांने आल देवा सूर रे ।
पाव गिणावे टांक वहराय नें, करती फिरे फेन फितूर रे ॥२६॥
घर रा पोखें कुपातर तेड़ ने, जब तो पामे हरख वशेष रे ।
सुपातर दांन देतां देख ने, तो जागे अभिन्तर धेष रे ॥२७॥
पाडी नें मेले वेलों दूध रों, पाडा उपर निरदय परिणाम रे ।
तिणने भूख सू मारें बूरी तरे, ओछा वेवज रे काम रे ॥२८॥
घर में धन माल छतें थकें, पिण सासू न करे वहु नो वेसास रे ।
आछो खावा पहरवा दे नहीं, बादी नी परें रोलवें तास रे ॥२९॥
सासू दुख दीया ते भूले नही, आ पिण नारी नीं जात जहर रे ।
कदे डाव पडे जब एहनों, आ पिण लेवे सवेखो वेर रे ॥३०॥
जो दोनूइ हुवे वयोकडी, जब लडती काढे दिन रात रे ।
त्यानें फिट २ लोक करे घणी, परपूठें करें माहोमाहि तात रे ॥३१॥
वले कहि कहि ने कितरो कहूं, या तो मुतलब री छे यार रे ।
जो स्वारथ न पूगे आपरों, तो भरतार नें पिण दे मार रे ॥३२॥
कूड कपट चाला चरित घणा, ते तो कहता न आवे पार रे ।
हिवें केइयां रा नांव परगट करूं, ते साभलजो विसतार रे ॥३३॥
सूरीकंता राणी भरतार ने, जेहर दीयों मारयो ततकाल रे ।
अभीया रांणी सुदंसण सेठ ने, माथे दीयो अणहूतो आल रे ॥३४॥
महा सतक श्रावक रे घरें, हुई रेवती नार रे ।
सस्त्र विख सूं मारी बारे सोक ने, भिष्ट करवा आइ भरतार रे ॥३५॥
वले पूस नंदी राजा तणी, देवदत्ता पटरांणी जांण रे ।
वले सासू ने भारी कूचीच सूं, ते आपरो मूतलब जाण रे ॥३६॥
देवदता सोनार तेहनें, बेटा री बहु घणी अजोग रे ।
ते सूळी थकी धीज उतरी, देवी ने छती देखतां लोग रे ॥३७॥

कपिला रांणी चूकी मावत थकी, मावत सहीत काढी देस बार रे।
मावत नें मराए पापणी, पछें हुई चोर रे लार रे ॥३८॥
ब्रह्मदत्त चक्रवत बारमों, तिणरी चूलणी रांणी मात रे।
ते अवर पुरष सूं लूबधी थकी, करणी मांडी पूतर नी घात रे ॥३९॥
पदमावती रे चाह हाथी तणी, वले हार पेंहरण रो हुलास रे।
जब कोणक नें भरमाय ने, करायो कुटंब नों नास रे ॥४०॥
एहवी २ अजोग अस्त्री, इम हिज केई पुरख अजोग रे।
लपटी कूड कपटी कुसीलिया, त्यांनें हेले निन्दे बहु लोग रे।
केई पुरष पापी छे एहवा ॥४१॥
छठी नरक तांई जाये अस्त्री, पुरष सातमीं तांई जाय रे।
ते अस्त्री विचें पापी घणा, ओ देखो उघाडो न्याय रे ॥४२॥
सगली नारयां म जांणों सारिषी, केई गुण रतना री खांण रे।
त्यांरा वीर जिणद मुख सूं कह्या, वारें परषदा मांहें वखांण रे।
एहवी पिण सतीयां संसार रे ॥४३॥
मेंणरेहा सती भरतार नें, संथारो दीयों पचखाय रे।
ते मरनें गयो सूर पांच में, वेगो जासी मुगतगढ मांय रे ॥४४॥
भावदेव भेष साधु तणों, नांषण नें हुवो तयार रे।
तिणनें हेत युगतें करी, समझायो नागला नार रे ॥४५॥
सकडाल श्रावक ते वीरनों, चल गयो पोसा मांय रे।
तिणने अग्निमिता भारजा, उपदेस देई आण्यों ठांय रे ॥४६॥
इत्यादिक मोटी २ सत्यां, त्यांरो कहतां न आवें पार रे।
आप तिरी ओरां नें तार नें, कर दीयों खेवो पार रे ॥४७॥

●

दुहा

सगला नर सारिषा नहीं, नहीं सारषी नार।
केइ भला नें केइ बूरा, चलीयो जाय संसार ॥ १ ॥
जे नर नारी हुवा बूरा, त्यां सूं अनर्थ हूवा एह।
कनक कांमणी वस पडया, तिणसूं आंण्यो कुल रो छेह ॥ २ ॥
ज्यांरें ममता लागी अति घणी, ते परिग्रह मेलें दिन रात।
तिण सूं कुण २ अनर्थ नीपजें, ते सुणजो विख्यात ॥ ३ ॥

ढाल : १६

[ईडर आंबा आंबली]

चेडा ने कोणक तणो रे, हुवो भारी संगराम।
ते पिण कनक कांमणी कारणें रे, घणा सुभट मूंआ तिण ठांम।
भविक जण लोभ बूरो संसार ।। १ ।।
अति लोभें लिछमीपति रे, सागर नामें सेठ।
लोभ वसे समुदर मे मूंओ रे, जाय बेठो तल हेठ ।।भ० २।।
सोवन मिरग ना लोभ थी रे, दसरथ सुत माहा रांम।
सीता नार गमाय नें रे, फिरीया ठामो ठांम ।। ३ ।।
दुख नों दाता परिग्रहो रे, मोटो माया जाल।
दोनू भाया दुख सह्यारे, जिणरिख ने जिणपाल ।। ४ ।।
पेम घटारण सजनां रो रे, दुरगत नों दातार।
अण चिंतव्या अनर्थ करे रे, धन नें पडो रे धिकार ।। ५ ।।
धन थी अनर्थ नीपजे रे, करे बाहलां री घात।
धन सूं पडेज पिंजरें रे, तो पिण तज्यों रे न जात ।। ६ ।।
पाप अठारे अति बूरा रे, परिग्रह माहा विकराल।
पीत मित्राई ना गिणे रे, सब गुण देवे बाल ।। ७ ।।
दसमां गुण ठांणा लगें रे, लोभ तणो छे जोर।
सिवपुर जातां जीव ने रे, आहीज मोटीं षोड ।। ८ ।।
एक कनक दूजी कांमणी रे, ए दोनूइ जगत में पास।
यां दोनूइ नें तज नीकल्या रे, त्यां कीयों मुगत मे वास ।। ६ ।।
इण कनक कांमणी कारणें रे, आगे हूवा संगरांम अनेक।
ए दोनूंइ ले जावें नरक मे रे, तिहा सुख नहीं खिण एक ।।१०।।
एक कनक दूजी कामणी रे, सेव्यां बंधे पाप करम।
ते पेलां ने पकडावीयां रे, तिणमे मूरख जांणे धरम ।।११।।
एक कनक दूजी कांमणी रे, ए दोनूंइ विष समांण।
ते सेव्यां सेवायां भलो जांणीया रे असुभ करम लागे आण ।।१२।।
इम सांभल नर नारीयां रे, कनक कांमणी अनर्थ जाण।
यांने त्यागो माठी जाण नें रे, ज्यू पोहचो निरवांण ।।१३।।
चोपी चेड़ा नें कोणक तणी रे, पूरी कीधीं गांम सणवार ।।
संवत अठारें तयांलीसमे रे, मिगसर विद नवमी मगलवार ।।१४।।

●

रत्न : ३

तामली तापसो रो बखांण

दुहा

जिण सासण मे इम कह्यों, करणी करनी छे मुगत रे काज।
करणी करे नीहाणों नही करे, ते पामे मुगत रों राज ॥ १ ॥
करणी करे नीहांणो करे, ते गया जमारो हार।
सभूत नीहाणों कर ब्रह्मदत हूवों, गयो सातमी नरक मझार ॥ २ ॥
करणी करे नीहाणों नहीं करे, ते गया जमारों जीत ॥
तामली तापस नीहांणों कीधो नही, तो इसांण इंद्र हुवो छे वदीत ॥ ३ ॥
तामली तापस कुण हूवों, कुण करणी कीधी ताहि ॥
तिणरी वात कही विरधमान जिण, सूतर भगोती रे माहि ॥ ४ ॥
तिण काले ने तिण समे, इण जंबू दीप रे माहि।
ओ भरत खेतर रलीयामणों, तिणमें तामली नगरी थी ताहि ॥ ५ ॥
तिहां तामली नांमे गाथापती हुंतो, मोरी गाथापती रो अंगजात।
तिणरें रिध प्रभूत घर मे घणी, ते प्रसिध लोक विख्यात ॥ ६ ॥
एकदा तामली गाथापती, कुटब जागरणा जागता ताय।
मझ रात समाने विषे उपनो, मनोगत अधवसाय ॥ ७ ॥

ढाल : १

[प्रभवो चोर चोरां ने समझावें]

तामली गाथापती मन एम विमासे, म्हे पाछिल भव रे माह्यो रे।
सुभ किलाण कारणी म्हे करणी कीधी, म्हे पुन उपाया अथायो रे ॥ १ ॥
ते प्रतख पुन उदे हूआ म्हारे, ते पुन फल एह विशेखो रे।
ते पुन भोगवूं छू इण भव माहे, ते म्हे लीया अरूवरू देखो रे ॥ २ ॥
हूं धन धान सोनें रूपे कर वधीयो, पसू कर वधीयो तामो रे।
वस्तीरण कणग रयण मणी ने मोत्यां, त्यासू पिण वधीयों अमामो रे ॥ ३ ॥
इत्यादिक अनेक लिछमी करे वधीयो, वले दिन २ वधे छे रिध सारी रे।
तिण सू मित्र न्यातीला सयण सगादिक, मोने आदर देवे छे वारूंवारी रे ॥ ४ ॥
वले सतकार समांण देवें छे मोने, सेवा भगत करे छे सर्व म्हारी रे।
ते पाछिल करणी तणें परतापे, ए सुख जाता न लागे वारी रे ॥ ५ ॥

म्हें करणी कीवी तो आ रिध पाइ, वले करणी करसूं तो पासूं रे।
जो करणी विना पूरो करूं आउखो, ठालो होयने परभव में जासू रे ॥ ६ ॥
तो श्रेय किलाण मोने सूर्य उगां, काष्ट मांहे पातरो कराउं रे।
वले असणादिक आहार नीपाये, मित्र न्यातीलादिक ने जीमाउं रे॥ ७ ॥
वले वस्त्र गंध अलंकारादिक सू, सतकार देइ त्याने आपू रे।
त्यां न्यातीलादिक सर्व देखतां, वडा पुतर नें कुटंब ने विषे थापूं रे ॥ ८ ॥
पछे पूतर न्यातीलादिक त्याने पूछीने, काष्ट नों पातरो हाथे लेउ रे।
मूंड थइ प्रणामिक प्रवजा लेउं, एहवो तापस वेउ रे ॥ ९ ॥
प्रवजा लेइ ने अभिग्रह धारूं, जावजीव लग ताइ रे।
बेले २ पारणो करू निरंतर, तिणमे सागार नही लेउं काइ रे॥१०॥
वले सूर्य सनमुख आतापना लेउं, उंची कर २ दोनूं वाही रे।
एहवी आतापना लेतो विचरूं, ते पिण जीवू ज्या लग ताइ रे ॥११॥
बेला रो पारणो करूं जिण दिन, आतापना भूम थी पाछों आयो रे।
हाथे पात रो लेइ तामली नगरीमे, परवेश करूं तिण मांह्यो रे॥१२॥
उंच नीच ममझ घर त्यारो, समुदाणी घर नो ल्याउं आहारो रे।
पछे सुध काचो पाणी निरमल जाची, तिणसू धोउ इकवीस वारो रे॥१३॥
इकवीस वेला अहार पाणी सू धोए, अहार करूं जब अभिग्रह पूगो रे।
एहवी विचरणा करतां २, परभात हूवो सूर्य उगो रे ॥१४॥

●

दुहा

राते चिंतव्यों तिम हीज कीयो, नीपजाया च्यारुंई आहार।
सुध वस्त्र पहरया वहु मोल ना, भारी २ कीया अलकार ॥ १ ॥
पछे भोजन मंडप आय ने, सुखासण वेसें तिणवार।
पछे सयण न्यातीला सहीत सू, भोजन कीया तिणवार ॥ २ ॥
गेंहणा वस्त्र फूलादिक आपीया, न्यातीला ने सयमेव आप।
पछे न्यातीला उभा निज पुतर भणी, कुटव माहे इधकारी थाप ॥ ३ ॥
परिणांमीक प्रवजा आदरी, पुतर न्यातीला उभा ताम।
आगे चिन्तव्यो तिम हीज करे, तिणरा एक धारा परिणांम ॥ ४ ॥
वेलें २ पारणो करें, जावजीव अभिग्रह थाप।
बेहुं बांह्या उंची करी, सूर्य सनमुख लेवे आताप ॥ ५ ॥
आवें वेला रो पारणों, जब पातरो ले हाथ मझार।
करें समदांणी गोचरी, तामली नगर मझार ॥ ६ ॥

ते आहार इकवीस वार धोय नें, सार काढ्यां कूचों रहें लार ।
तिण सू करे बेला रों पारणों, जावजीव अभिग्रह धार ।। ७ ।।
प्रणामिक प्रवजा किम कही, ए पूछ्यों गोतम साम ।
जब वीर कहें सुण गोयमा, तिणरो अर्थ कहूं छू तांम ।। ८ ।।

ढाल : २

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

प्रणांम प्रवजा पर वादीयांरी, ते श्री जिण आगना बार ।
ते इंद्र खदक रुद्र सिव वेसमण ने, नमसकार करें वारूंवार ।
प्रणांम प्रवजा छें पर वादीयां री ।। १ ।।
राजादिक सेठ सेनापति सारा, त्यांने पिण नमण करे सीस नाम ।
वले उच नीच हर कोइ मिनष ने, विनों करे नमण करें तिण ठाम ।। २ ।।
वले काग कूताने तिरजंच सारा, त्यांरो पिण विनों करे छें सीस नमाइ ।
उंच देखे तो उचो होय नमे छे, नीचो देखे तो नमण करे नीचो थाइ ।। ३ ।।
जेहवो देखे तेहवो तिण रीते, प्रणांम विनों करे सीस नांम ।
तिणने वीर कही छे प्रणांम प्रवजा, ते विवरा सुध सांभले गोतम सांम ।। ४ ।।
प्रणाम प्रवजा लीधी छे इण रीते, ते विनो करे सकल नो ताहि ।
तिणमे धर्म जाणेछे तामली तापस, तिणसू तिणनेघाल्यो छे पाखंड्या मांहि ।।५।।
तिणरे कष्ट छे तपसा ने आतापना रो, तिण सू करम कटे छै ताम ।
वले घटाय दीधी तिसणा ने ममता, ओरा बिचे इण रा सरल परिणाम ।। ६ ।।
एहवो आकरो तप कीधो उदार परधान, वले वस्ती तप कीयो सहि २ दुखो ।
एहवो आकरो वाल तप कीयो तिण सूं, सरीर सूको ने वले पडि गयो लूखो ।।७।।
तिवार पछें तामली बाल तापस, एकदा मझ रात समा रे माह्यो ।
अणिच जागरणा जागतो तिण काले, अधवसाय उपनो छे ताह्यो ।। ८ ।।
म्हें आकरो तप कीयो तिण सेती, सरीर सूको भूखो दीसे नसांजालो ।
वल पराक्रम अजेस सरीर मे म्हारे, तो हूं सावधान होउं इण कालो ।। ९ ।।
तो हू जाय पूछूं तामली नगरी मे, पूर्व सगी न्यातीलादिक ताय ।
परजाय में छोटा बडा त्याने पूछे, हूं तामली नगरी रे बारें जाय ।।१०।।
पादु कूडीयादिक उपगरण सारा, त्यांने एकंत नाख देउं तिहा जाय ।
पछें इसाण कुण मे जायगां जोइने, भात पांणी त्यागे दूं ताय ।।११।।
तिण ठामें करूं पादुगमण सथारो, काल अण वांछतो विचरूं तिण ठांम ।
इसडो मनोरथ मन माहरे, सूर्य उगा पूरूं म्हांरा मनरी हांम ।।१२।।

राते पृथ्वी विचरणा करतां २, सूर्य उग गयो तिण वारों ।
राते चिंतव्यों तिम सगलोइ कीधों, पछें कीधों पादुपगमण संथारो ॥१३॥

●

दूहा

तिण काले नें तिण समें, बलचंचा राजधांनी नांम ।
इंद्र करेनें रहीत छें, इंद्र चवे गयो छे तांम ॥ १ ॥
बलचंचा राजधांनी तणा, घणा देव देवी तिण वार ।
तामली बाल तपसी नें देखीयों, चले जाण्यों तिणरो संथार ॥ २ ॥
जब घणा देवी नें देवता, बोलाय कहें छें मांहोमांय ।
आपे इंद्र करेने रहित छां, तिणरो करनो कवण उपाय ॥ ३ ॥
तामली बाल तपसी कन्हे छें, तामली नगरी रें बार ।
तिण इशांण कुण मांहें कीयो, पादुगमण संथार ॥ ४ ॥
तो श्रेय नियांण आपां भणी, तांमली नें विनवां जाय ।
तो करें नीहांणों इहां तणो, तो इंद्र पणें उपजें आय ॥ ५ ॥
इहवी करे मांहोमां विचरणा, घणा देव देवी नीकलीया तांम ।
जिहां तामली बाल तपसी छें तिहां, आया छें करें हुगांम ॥ ६ ॥
केइ तामली तापस थी ऊंचा थका, केइ उभा चिहूं दिसि आय ।
दिस विदिस सगलें उभा थका, कुण २ करें छें उपाय ॥ ७ ॥

ढाल : ३

[श्री जिण धर्म जिण आगन्या में]

इचर्यकारी छे रिध देवतां तणी, जोत नें कांत द्युति ही अनूप ।
दखां नाटक कीधा बतीस परकार ना, त्यां कीधा विविध परकार ना रूप ।
तापस मोरा हो, थे करो नीहांणो म्हांने चित धरो ॥ १ ॥
तीन प्रदिखणा देइ नेंहनें, वंदणा करें सीस नांम ।
गुण ग्रांम करें मुख सूं अति घणा, पछें बतावें छें नांग ठाग ॥ २ ॥
म्हें छां बलिचंचा राजधांनी तणा, घणा असुर कुमार देवी देव ।
म्हें वंदणा करां छा सर्व आप नें, गुण ग्रांम करे करां सेव ॥ ३ ॥
म्हांरे तो इंद्र माथा सूं खिस गयो, तिणसूं हुआ म्हें सर्व अनाथ ।
थें इंद्र हुवो म्हांरा सिर धणी, म्हें अरजी करां छां जोडी हाथ ॥ ४ ॥
वले बलिचंचा राजधांनी तणी, रिध बतावें वारूंवार ।
म्हें बोहत घणा देवी देवता, त्यांरी किरपा कर हुवो सरदार ॥ ५ ॥

थे आदर देवो म्हां सगला भणी, म्हाने भला जाणो मन माय ।
वले करो नीहाणो थे अम्ह तणों, तो इद्र होसो म्हारा आय ।। ६ ।।
हमे इंदराणी सारी उभी तेहसूं, भोग भोगवसो दिन रात ।
वले असंष देवी देवता तणा, आप होय जासो सिर धणी नाथ ।। ७ ।।
म्हे बारूंबार करां छां वीणती, जोडी २ दोनूइ हाथ ।
जो किरपा करो आप अम्हे तणी, सगला ने करों आप सनाथ ।। ८ ।।
बहवे असुर कुमार देवी देवता, त्यारा वचन सुणीया छे कान ।
ते मन मे पिण भलाइ न जाणीया, वले न दीयो आदर समांण ।। ९ ।।
मून साझ रह्यों पिण बोल्यो नहीं, नीहाणो पिण न कीयों कोय ।
वले मन मे विचार इसडो कीयों, करणी बेच्या आछो नही होय ।।१०।।
जो तपसा करणी म्हांरे अलप छे, घणो चिंतव्यो हुवे नही कोय ।
जो तपसा करणी म्हारे अति घणी, थोडो चिंतव्यो सताब सू होय ।।११।।
जेहवी करणी तेहवा फल लागसी, पिण करणी तो बांझ न कोय ।
तो नीहाणो करूं किण कारणे, आछो कीयां निश्चे आछो होय ।।१२।।
जिण मत माहे पिण इम कह्यो, नीहांणो करे तप खोय ।
तेतो नरक तणो हुवे पांवणो, वले चिहूं गति मांहे दुखीयो होय ।।१३।।
म्हारी तपसा ने करणी दीसे घणी, तिणसू करे छे म्हारी अरदास ।
तो हूं क्याने नीहाणो करूं एहवो, अडिग रह्यो चोखा परिणामा तास ।।१४।।
घणा असुरकुमार देवी देवता, लुल २ बादे दोय तीन बार ।
म्हे इंद्र रहीत बिल २ करा, तिणसू थे हूवो म्हारा सिरदार ।।१५।।
तो पिण गाढो सेठो रह्यो, चलीयो नही तिलमात ।
वले आदर न दीयो त्यारा वचन ने, वले भली न जाणी त्यारी बात ।।१६।।
यानें पाछो पिण जाब दीयो नहीं, मून साझ रह्यो मन माहि ।
जब असुर कुमार देवी देवता, आया था जिण दिस गया ताहि ।।१७।।

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, बीजा इसाण देवलोक माहि ।
इद्र रहीत हुवा छा देवता, इंद्र चवे गयो छे ताहि ।। १ ।।
जब तामली बाल तपसी कीयो, पादुगमण संथार ।
साठ सहंस वरस पाली प्रवजा, तपसा करी एक धार ।। २ ।।
दोय मास तणी सलेखणा, तिणरे मन माहे इधक आणंद ।
आउखो पूरो करे हुवो, इसाण देवलोके इंद ।। ३ ।।

इंद्र तणी रिध कर परवरयों, तिहा भोगवे भोग रसाल।
नाटक गीत बाजंत्र करी, सुखे गमावे काल ।। ४ ।।

ढाल : ४

[पुन नीपजें सुभ जोग सूं रे लाल]

बलचंचा राजधांनी रा देवता रे लाल, तामली तापस इंद्र हूवो जाण रे।
जब कोप्यो सिघर उतावलो रे लाल, मिस मिसायमाण हो भाविक जन।
वारता सुणजो तामली तापस तणी रे ।। १ ।।
चद्र रुद्र खुद्र हुआ अति घणा रे, वले चढीयो धेख अपार हो।
म्हे अरज वीणती कीधी अति घणी रे लाल, पापी मूल न मानी लिगार हो ।। २ ।।
ते कुडीया थका तिहाथी नीकल्या रे लाल, किडकिडी वाटता दात भीड हो।
ते आया सिघर उतावला रे लाल, जिहां छै तामली तापस नो सरीर हो ।। ३ ।।
डावा पग रे बांधी सीदरी रे लाल, पछे मुख मे थूके तीन वार हो।
पछें तामली तापस तेहनो रे लाल, हेलवा लागा वारूवार हो ।। ४ ।।
पछे तामली नगरी तेहमे रे लाल, घीसाल लेग्या तिण माय।
तीन च्यार मारग मोटा पथ मे रे लाल, आमो साम्हा घीसाले तिहा आय हो ।। ५ ।।
तिहां मोटे २ सब्दे करी रे लाल, उदघोषणा करे वारूवार।
तामली बाल तपसी तेहने रे लाल, इणरी प्रवजा नें देवे छे धिकार ।। ६ ।।
इणरी क्यारी छे प्रणांम प्रवजा रे लाल, इणरो क्यारो छे तपसा ने आताप।
ओ क्यारो इसांण इद्र हूवों रे लाल, ए जाणजो थोथो विलाप ।। ७ ।।
तामली बाल तपसी रा सरीर ने रे लाल, हेले निन्दे वारूवार।
गरहणा खिसणा करें घणी रे, तालणा तर्जणा देता अपार ।। ८ ।।
इम कहि २ सरीर ने घीसालता रे, पिण मूल न राखी किण री साक।
हेला निन्दा लोकां सनमुख करी रे लाल, एकंत दीयो सरीर नें नाख ।। ९ ।।
पछे असुरकुमार देवीदेवता रे लाल, बलिचचा राजधानी रा ताम।
घणी कुपीत करे सरीर ने रे लाल, पाछा गया निज ठाम हो ।।१०।।

●

दुहा

तिण अवसर इसाण देवलोक ना, बहवे विमाणवासी देवी देव ।।
ते आया था नाटक पाडवा, सरीर उपर सयमेव ।। १ ।।
जब बलचचा राजधानी तणा, घणा असुरकुमार देवी देव।
ते कुपीत करे कलेवर तणी, त्याने देख लीया सयमेव ।। २ ।।

कलेवर ने पगा बाधे सीदरी, आमो साह्यों तांणे छे तांम।
हेला निन्दां करे घणी, त्याने देख लीया तिण ठाम ॥ ३ ॥
जब इसांणवासी देवी देवता, त्या उपर कीयों कोप अतंत।
भिसमिसायमान करता थका, वले धेष मे धेष धरत ॥ ४ ॥
जिहा इसाण इंद्र हुता तिहां, देव देवी तिहा आय।
अंजली करे सीस नमाय ने, जय विजय कर नें वधाय ॥ ५ ॥
पछे कहे छे दोनूं हाथ जोड ने, घणा असुरकुमार देवी देव।
त्यां आप तणा कलेवर नें घीसाल ने, एकत न्हाख दीयो सयमेव ॥ ६ ॥
त्या हेला निन्दा कीधी घणी, तामली नगरी रे मांहि।
त्यां कीधी ते सर्व माडे कही, पछे गया ठिकाणे ताहि ॥ ७ ॥

ढाल : ५

[ये तो जीव दया धर्म पालो रे]

इसाण देविंदे देव रायो रे, त्यारी बात सुणी चित ल्यायो।
सुण नें आसुरत्ते रीसाणो रे, हुवो छें मिसमिसायमांणो ॥ १ ॥
तीन लीटी चाडी छें निलाडो रे, आंख्या लाल करी तिण वारो।
तिणहीज ठांम बेठां सोयो रे, करडी निजर त्या साह्यो जोयो ॥ २ ॥
जब बलचंचा राजधानी रे, उची नीची चिहूं दिस कानी।
हुइ अंगालभूत समांनो रे, ममुरभूत हूइ असमानो ॥ ३ ॥
छारभूत बलती जिम जाणो रे, तातो लोह गोला जिम पिछाणो।
बलती अगन हुवें जाजलमांनों रे, यां सारां विच ताप असमानो ॥ ४ ॥
बलचंचा राजधानी रे माह्यो रे, जाणे चिहू दिस लागी लायो।
इसडी हुइ बलचचा जांणो रे, इंद्र साह्यो जोवत पाणो ॥ ५ ॥
एहवो तप तेज करडो रे, सुणत पाण कोप्या छे जरूडो।
जब देव देवी जूआ २ रे, तेतों बलु २ सर्व हूआ ॥ ६ ॥
घणा देव देवी तिण वारो रे, भय भ्रांत हूआ छे अपारो।
बलचचा जाणी अगन वरणी रे, उंची नीची सर्व धरणी ॥ ७ ॥
बीहना थका नाठा ताह्यो रे, उदेग उपनो मन मांह्यों।
देव देवी आमा साह्यां ध्यावे रे, पिण रहवा ने ठोड न पावे ॥ ८ ॥
एक एक री काया माह्यो रे, बलता थका धस जायो।
तिहा पिण जक नही पावे लिगारो रे अगन तिणरा पिण सरीर मझारो ॥९॥
दुखीया हूआ गाढा तामो रे, काई रहिवा ने नही ठांमो।
अगन सगले लाय लागी रे, ते किण दिस जाए भागी ॥१०॥

हिवे देव देवी तिण वारो रे, करवा लागा मन में विचारो।
विचार करता पिछांणो रे, इसाण इंद्र कोप्यों जाण्यो ॥११॥
म्हे तो कीधी थारी घणी हेला रे, तिण सूं आय पडी म्हामे वेलां।
म्हे थारा सरीर मे कीधी कूपीतो रे, तिणसू म्हे हुवां छा फजीतो ॥१२॥

●

दुहा

इसांण इंद्र राय देवता तणो, तिणरी रिध जोत परधांन।
वले लेस्या परधान तिणरी आकरी, तिण सू हूआ म्हे सर्व हरान ॥ १ ॥
अगन विचे तेजू लेस्या आकरी, तिणसू बले रह्या छा ताम।
तो अरज करा हिवे तेहसूं, विनों करे सीस नाम ॥ २ ॥
दुखी घणा हुआ थका, विनों करे देवी देव।
भाव भगत किण विध करे, किण विध करे छे सेव ॥ ३ ॥
सर्व देवी ने देवता, सनमुख उभा रही तांम।
अंजली करे आवर्त्तन करे, सर्व देव देवी सीस नांम ॥ ४ ॥

ढाल : ६

[स्वामी म्हांरा राजा नें धर्म सुणवो]

हाथ जोडी वीणती करें, मुख सूं करे गुण ग्रांम ॥हो०॥
जय विजय हूवो तुम तणी, बधावे छे ठांम ठाम ॥हो०॥
किरपा करो थे म्हां उपरे ॥ १ ॥
म्हे देख लीधी रिध आपरी, वले देख लीधी ज्योत क्रान्त ॥हो०।
वले तेजू लेस्या देखी आपरी, तिण सूं हूआ भय भ्रांत हो ॥हो० २॥
म्हे अविनों कीयों छे घणों आपरो, वले बोहत कीयों अपराध ॥हो०।
म्हे सर्व खमावा छा आपने, वले इसडो न करां विवाद ॥हो० ३॥
आप मोटा खमावां जोग छो, म्हे खमावां वारूवार ॥हो०।
हिवे किरपा करों आप अम्ह तणी, म्हे दुखीया अतत अपार ॥हो० ४॥
म्हे बलू २ हूआ अति घणा, ओ दुख सह्यो न जाय ॥हो०।
ओ करडो तप तेज आपरों, हिवे जाण लीयो मन माय ॥हो० ५॥
म्हे हाथां कांम कमावीया, तें आप तणो नहीं दोस ॥हो०।
म्हे कीयों अकारज अन्हाखी थका, हिवे आप निवारों म्हांसूं रोस ॥हो० ६॥

म्हे सगला हूआ अति आकुला, वले व्याकुल हुआ छां अतंत ।।हो०।
चित ठिकाणे नही अम्ह तणों, हिवे आप करों म्हांरी संत ।।हो० ७।।
म्हे ओछी जात रा देवता, वले अधिर घणा अधीर ।।हो०।
म्हांरा कीया साह्मों जोवों मती, आप छो गिरवा गंभीर ।।हो० ८।।
म्हे छोरू जिम आप रा, आप मात पिता जिम ताम ।।हो०।
हिवें कुनिजर निवारो किरपा करी, सुनिजर करों म्हासूं आम ।।हो० ९।।

●

दुहा

जब इसाण इद्र इम जाणीयो, ए खमावें छे विने सहीत ।
वले मांन छोडे हूआ पाधरा, देख्या सुध अविने रहीत ।। १ ।।
जब इद्र तेजू लेस्या भणी, खांच लीधी तिण काल ।
जब देव देवी सगला तणे, साता हुइ ततकाल ।। २ ।।
बलचचा राजधांनी तणा, देव देवी सर्व असुर कुमार ।
तिण दिन सूं इसाण इंद्र तणा, सेवग जिम आगना कार ।। ३ ।।
सर्व देवता इसाण इंद्र भणी, देवे घणों सनमाण ।
सेवा भगत करे तिहाइ थका, विनो करें छोडे अभिमान ।। ४ ।।
वले आगना न लोपें तेहनी, वले राखे घणी मरजाद ।
सिरधणी जाणी लेखवें, तिणसू कदे न करे विषवाद ।। ५ ।।
इसाण इंद्र हूवो करणी करे, तिण नाटक पाड्यो आय ।
तिणरी रिध गोतम सामी देख नें, पूछा कीधी भगवत ने आय ।। ६ ।।
कुण हूतो ए परभवे, बसतों कुणसे ठांम ।
कुण करणीं इण आदरी, मोने किरपा करी कहो सांम ।। ७ ।।
जब वीर कहे सुण गोयमा, तामली तापस थो एह ।
तिणरी माड कही सर्व वारता, ते करणी कर इद्र हूवो तेह ।। ८ ।।
तिणरी रिध रो विसतार तो अति घणों, ते पूरो कह्यो न जाय ।
पिण थोडी सी परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ।। ९ ।।

ढाल : ७

[धीज करे सीता सती रे लाल]

ओ जीव छे तामली तापस तणो रे, बीजा देवलोक रो इंद रे । सोभागी ।
घणा देव देव्यां रो अधिपती रे लाल, इणरे दिन २ इधक आणंद रे ।।सोभागी १।।

इणरे दस सहंस तो देवता रे, माहिली परखदा रा जांण रे।
वारे सहंस विचली परखदा तणा रे, सोलेइ सहंस वाह्य परमांण रे ॥ २ ॥
असी सहंस सामांनीक देवता रे, ते रहें छे इंद्र रे हजूर रे।
तीन लाख नें वीस सहंस देवता रे, आतम रिष रहे छे कडा चूड रे ॥ ३ ॥
आठ छे अग्र महेषीया रे, अपछर रूप अनूप रे।
ते अपछरा एकेकी वेर्के करे रे, सोलें २ सहंस सरूप रे ॥ ४ ॥
आठोंइ अग्र महेषीयां रे, वेंके करें घणी श्रीकार रे।
ते रूप मे अति रलीयामणो रे, एक लाख नें अठावीस हजार रे ॥ ५ ॥
इतलाइ रूप इंद्र करे रे, भोगवें त्यासू भोग रे।
पूरे छें मन री मनरली रे, इणरे इसरो मिलीयो छे संजोग रे ॥ ६ ॥
अठावीस लाख विमांण नों रे, अधिपती छें इसाण इंद्र रे।
सगले आण वरते एहनी रे, त्याने दीठांइ पामे आणद रे ॥ ७ ॥
त्यांमे केयक विमांण मोटा घणा रे, लावा पेंहला जोजन असंख्यात रे।
त्यामे देव देवी पिण असख्य छे रे, त्या सगलां रो सिर धणी नाथ रे ॥ ८ ॥
नाटक वतीस परकार नां रे, तिणरे पडे रह्या छे दिन रात रे।
त्यांरा गीत नाद रलीयामणो रे, वले गणीका छे तिणरे सात रे ॥ ६ ॥
पेंसठ भोमीया तिणरे महल छे रे, तिणरो वहोत घणो छे विसतार रे।
गढ कोट किलादिक सर्व नो रे, राय प्रसेणी रे अणुसार रे ॥१०॥
वले गोतम सांम पूछा करी रे, इणरो आयु कितो छे सांम रे।
जव वीर कहें आउ एहनो रे, दोय सागर जाझेरो तिण ठाम रे ॥११॥
इंद्र आउखो पूरो करी रे, चव नें जासी केत रे।
जब वीर कहें इहा थी चवी रे, उपजसी महाविदेह खेत रे ॥१२॥
उत्तम कुल मे अवतरी रे, तिहा भरीया रिध भडार रे।
सुखे समाधे मोटो होसी रे लाल, दिढ पइना जिम विसतार रे ॥१३॥
तिण ठांमे थिवर पधारसी रे, त्या पासे लेसी संजम भार रे।
करणी करें करम काट नें रे, जासी मुगत मझार रे ॥१४॥
करणी करे नीहांणो नही करे रे, तिण सू लागी समकत री नीव रे।
इण उतपत सूं जासी मुगत में रे, तामसी तामस रो जीव रे ॥१५॥
समत अठारें गुणचासे समें रे, आसोज विद पाचम वुधवार रे।
जोड कीधी तामली तापस तणी रे, केलवा सहर मझार रे ॥१६॥

●

रत्न : ४

उदाई राजा रो बखांण

दुहा

तिण काले ने तिण समें, सिंधू सोवीर नांमें देस ।
तिहां वितभय नगर रलीयामणों, तिहा साधां रो घणो परवेस ॥ १ ॥
तिहां वितभय नामे नगर नें, इसांण कूण रे माय ।
मिग्रवन नामें वाग थो, ते दीठा नयण ठराय ॥ २ ॥
तिण नगर तणों छे अधपती, राय उदाई नाम ।
राणी तस पदमावती, रूप कला अभिराम ॥ ३ ॥
तिण राय उदाई नों डीकरो, राणी प्रभावती रो अंगजात ।
अभीचकुंवर अति दीपतो, ते प्रसिध लोक विख्यात ॥ ४ ॥
वले भाणेंजो तिण राजा तणो, केसी नामें कुमार ।
ते पिण रहे छे तिण नगर मे, तिण सूं हूंतो राजा रो प्यार ॥ ५ ॥

ढाल : १

[विना रा भाव सुण सुण गुंजे]

उदाई नामे मोटो राजान, राजा माहे सिंघ समांण ।
सिंधू सोवीरादिक सोलें देस, तिहा सगले वरते आण आदेस ॥ १ ॥
वितभय नगर आदि जाण, तीन सो तेसठ नगर वखाण ।
सोना रूपादिकनां आगर जेह, सइकड़ा गमे छे तेह ॥ २ ॥
माहाश्रेण प्रमुख दस राजान, दसूई मुकुट वध रिधवान ।
त्याने छत्र चमर दीया राय, सेवग थका रहे छे ताय ॥ ३ ॥
वले ओर घणा राजान, इसर तलवर पिण रिधवान ।
सारथवाह चलावे साथ, इत्यादिक सगलां रा नाथ ॥ ४ ॥
सगले वरत रही छे आण, राज करे छे मोटे मंडाण ।
हय गय रथ पायक अनेक, तिणसू गंज सके नही एक ॥ ५ ॥
इसडो मोटों उदाई राय, तिणरी रिध पूरी केम कहवाय ।
संज सूत छे तिणरे ताजा, सोलें देस तणो छे राजा ॥ ६ ॥
श्रावक रा व्रत चोखा पालें, निजगुण अवगुण नें संभाले ।
जीवादिक नव तत रो जांण, रूडी रीत सूं कीधी पिछांण ॥ ७ ॥

एक दिवस उदाई राय, पोसो कीयों पोषध साला माय।
धर्म जागरणा तिहा जागे, चढीयो मन अतंत वेरागें ॥ ८ ॥
याद आया वीर जिणंद, रोम २ मे हुवो आणंद।
वीर विचरे छे तिण ठाम, धिन २ ते नगर ने गांम ॥ ६ ॥
धिन २ राजादिक जेह, वीर वांदी सेवा करे तेह।
धिन २ त्यारो अवतार, भगवत रो करे दीदार ॥१०॥
धिन २ छे जे दातार, प्रतिलाभे च्यारूई आहार।
प्रभूजी नें दे दे सनमाण, हरख सहीत हाथे दे दान ॥११॥
धिन २ जे सुणें वीर वांणी, वीर वचन सरधे सत जाणी।
धिन २ जे वीर रे पास, श्रावक रा व्रत लेवे हुलास ॥१२॥
जो वीर जिणंद इहा आवे, तो म्हारो मन रलीयामण थावें।
तो हू लूल २ वांदू वीर पाय, सेवा भगत करू चित ल्याय ॥१३॥
हूं छोड देउ ग्रहवास, दिष्या लेउं भगवंत पास।
जो करम हलका छे म्हांरे, तो भगवत आप पधारे ॥१४॥
इसड़ी भावना भावे राजंद, भला परिणांमां इधक आणंद।
नित नित वीर नी वाट जोवे, हिवे भला लारे भलो होवे ॥१५॥

●

दुहा

तिण काले नें तिण समें, भगवंत श्री विरधमांन।
चंपा नगर समोसरचा, पूर्णभद्र नामें उद्यान ॥ १ ॥
भगवंत भव जीवां तणों, देखे तिरण रो डाव।
राय उदाई तेहनां, जांण्या मनोगत भाव ॥ २ ॥
चम्पा नें वितभय विचें, कोस सात सो वीच।
परवत पाहड़ झंगी घणी, विचें नदी खाल जल कीच ॥ ३ ॥
जल विण सूकें रूंखड़ा, कुमलावे कूंपल पान।
त्यांनें सीचे जल ल्यायनें, वागवांन वुधवान ॥ ४ ॥
जल सिंच्या रूंख पालवे, हुवे ड हुडायमांन।
फूल फल सर्व नीपजें, नीला रहे तिहां पांन ॥ ५ ॥
रूंख जिम भव जीवडा, वागवांन भगवान।
वाणी जल धारा जिम जांणजो, घालें भव जीवां रे कांन ॥ ६ ॥
संवर निरजरा फूल जिम, फल जिम मुगत निधान।
जस कीरत महिमा पांन जिम, ते जाणें वुधवांन ॥ ७ ॥

राय उदाई रे कारणे, भगवंत कीयो विहार।
चंपा नगरी थी नीकल्या, साथे साधा रो बहु परिवार ॥ ८ ॥

ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

तिण काले नें तिण समें रे, चोवीसमां जिणराज रे।
गामा नगरा विचरता रे लाल, तारण तिरण जीहाज रे।
श्री वीर जिणद समोसरचा रे लाल ॥१॥
सिंधु सोवीर देस मे तिहां रे, वितभय नगर मिरगवन वागरे।
तिहां श्री वीर पधारीया रे लाल, राय उदाई रे सिर भाग रे ॥ २ ॥
आगना लेइ ने उतरचा रे, मिरगवन नामे वाग रे।
मारग दिखावे मोखरो रे लाल, उपजावे वेंराग रे ॥ ३ ॥
खबर हुई तिण नगर मे रे, लोक वादण ने जाय रे।
राय उदाई पिण सांभल्यो रे लाल, तिण रे मन मांहे हरख न मायरे ॥ ४ ॥
चतुरगणी सेन्या सझी रे, वीर वांदणने जाय रे।
कोणक नी परे नीकल्यो रे लाल, वांद बेठों सनमुख आय रे ॥ ५ ॥
पदमावती आदि राणीयां रे, कर मोटें मंडाण रे।
ते पिण आई वीर वांदवा रे लाल, वांद बेठी सनमुख आण रे ॥ ६ ॥
भगवत दीधी देसना रे, कह्यो जीवादिक नो सरूप रे।
वले साध श्रावक रो धर्म कह्यो रे लाल, ते सांभल हरख्यो भूप रे ॥ ७ ॥

●

दुहा

वाणी सुणनें परखदा, आइ जिण दिस जाय।
राय उदाई तिण अवसरे, किण विध बोले वाय ॥ १ ॥
हाथ जोड़ी नें इम कहे, म्हे सरध्या तुम नां वेण।
थे तारक भवि जीवनां, मोने मिलीया साचा सेण ॥ २ ॥
राज थापे बेटा भणी, लेसूं संजम भार।
म्हें संसार जाण्यो कारिमों, एक मुगत तणा सुख सार ॥ ३ ॥
वलता वीर इसडी कहे, थांरे लेणो संजम भार।
जका घड़ी जाश्रें ते आवे नहीं, मत कर ढील लिगार ॥ ४ ॥

ढाल : ३

[धर्म अराधिये ए]

वीर वांदे राय नीकल्यो ए, हस्ती उपर बेठों आय।
नगरी माहे आवतां ए, विचार करे मन मांय।
राजा मन चिंतवे ए ॥ १ ॥
म्हारे अभीचकुवंर अति दीपतो ए, एका एक पुत्र रतन।
इष्ट कंत बाहलो घणो ए, मोटो कीयो म्हे घणे रे जतन ॥ २ ॥
इणने राज देइ दिख्या लेउ ए, तो ए राज मे ग्रिधी थाय।
लोभी हुवे राज रो ए, वले काम भोग मे लपटाय ॥ ३ ॥
लोभी लपटी गिरधी थकों ए, बाधे करमा रा जाल।
तो धर्म आवे नहीं ए, कर जाए राज मे काल ॥ ४ ॥
राज मांहे मूंआ जाय नरक मे ए, तिहां खाएं अनती मार।
पछें रुलसी ससार मे ए, तिहा दुखां रो छेह न पार ॥ ५ ॥
तो राज न देणो एहने ए, इणसू म्हांरे हेत अतंत।
तिणने नहीं विगोवणो ए, ओर करू विरतत ॥ ६ ॥
तो निज भांणेज छें म्हारे ए, तिण ने राज बेसाण।
पछे भगवंत कने ए, दिख्या लेउ मोटे मडाण ॥ ७ ॥
एहवी करे विचारणा ए, आयो निज घर माय।
उवठाण साला तिहां ए, हस्ती सू उतरीयो राय ॥ ८ ॥
पूर्व साह्मो बेसी सिंघासणे ए, कहे कोटंबी पुरख नें बोलाय।
नगर ने माहे बारनें ए, जल सूं छडको ताय।
आ जेज करो मती ए ॥ ९ ॥
गोबरादिक सूं लीप नें ए, धूपादिक उ खेवो ठाम २।
फूल बखेर ने ए, धजा उपर पताका करो तांम ॥१०॥
अमंगलीक वरजो सरवथा ए, मगलीक करो ठाम २।
इत्यादिक सुभ कारज करी ए, म्हांरी आग्या पाछी सूपो तांम ॥११॥
चाकर पुरख सुणे हरखत हूवो ए, कीधा सताब सू जाय।
पाछो आयो वेग सू ए, आगना सूपी आय ॥१२॥
दूजी बार कुटंबी पुरखनें ए, बोलाय कहे इम वाण।
केसी कुमार नें ए, राज बेसांरो मोटे मंडाण ॥१३॥

●

दुहा

वचन सुणे राजा तणो, मेली सगला साज ।
केसीकुमर भांणेज नें, दीयों सोले देसनों राज ।। १ ।।
केसीकुमर राजा थयो, हेमवंत ज्यूं प्रसिध ।
राय उदाई नी परे, भोगवें राज नें रिध ।। २ ।।
हिवें राय उदाई एकदा, पूछे भाणेज नें आय ।
हिवें दिख्या लेणी छे म्हारे, वीर समीपे जाय ।। ३ ।।
जब राय उदाई तेंहनां, केसी नाम कुमार ।
दिख्यारा महोछव कीया घणा, ते सूतर मे विसतार ।। ४ ।।

ढाल : ४

[बेग पधारो महल थी]

हिवें राय उदाई तिण अवसरे, वीर समीपे आय ।
हाथ जोड़ी बंदणा करें, नीचों सीस नमाय ।
वेरागें मन वालियो ।। १ ।।
कहे जनम मरण री लाय थी, मोनें बारें काढो आप ।
किरपा करो मों उपरें, पचखावो सर्व पाप ।। २ ।।
राय उदाई तेंहनों, जाणीयों इधक वेंराग ।
जब वीर कराया तेंहनें, सर्व सावद्य रा त्याग ।। ३ ।।
आचार सीखें पडपक हूओ, तपसी मोटो साध ।
सींह जिम संजम पालतो, दिन २ इधक समाध ।। ४ ।।
काल कितोएक बीता पछे, रोग उपनों छे आय ।
समें परिणामे वेदन सहें, फिकर चिंता नही काय ।। ५ ।।
बीहार करतां आविया, वितभय नगर मझार ।
आय उतरीया बाग में, वादण आवें नर नार ।। ६ ।।
राजा आयो वादण भणी, कर मोटे मंडाण ।
बंदणा कर बेठो सनमुखे, सगपण मांमारो जांण ।। ७ ।।

●

दुहा

लोक आवे जावे तिहां अति घणा, वांणी सुणवा ताय ।
हूवे वधोतर धर्म री, ते धेख्यां नें न समाय ।। १ ।।

त्यां राजा ने भरमावीयो, कूड़ी बात उठाय ।
काचा काना रा राजवी, त्यांने फिरतां वार न काय ॥ २ ॥
वात लोकां री मांन ने, उंधी धार बेठो मन मांय ।
उपगार कीयो ते गिणीयो नही, उलटो वेरी हुवो राय ॥ ३ ॥
साध सती नें छेडव्या, भलो कठा सूं थाय ।
हिवे किण विध अनरथ नीपजे, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : ५

(प्रभवो चोर चोरां नें समझावे)

संसार मे सगपण स्वारथ नो छे, तिण मे संका मत जाणो रे ।
एहवो वचन जिणेसर भाख्यो, ते अंतर मांहें पिछाणो रे ।
संसार मे सगपण स्वारथ नो छे ॥ १ ॥
राय उदाई साध थइ ने, वितभय नगर तिहां आयो रे ।
राय उदाई नां उमराव हूंता ते, वांदण हरष सूं जायो रे ॥ २ ॥
उमरावां ने जातां आवतां जांणी, केसी राजा रे मन नही भावे रे ।
रखे ए सगला मांमा सूं मिल जावें, पाछा आंणी राज बेसावें रे ॥ ३ ॥
इतला मे किण ही चाडी खाधी, थारा मांमारा परिणांम भागा रे ।
राज करण सू मन हूवो दीसे, एं उमराव सगलाई लागा रे ॥ ४ ॥
इम सांभलने राय मांमा ऊपर, कोप्यो छे केसी नांमे भांणेजो रे ।
जब मांमा ने मारण री मन धारी, जाबक लूटो मांमा सूं हेजो रे ॥ ५ ॥
बागवांन ने राजा कहवायो, तू काढ दीजे बाग बारे रे ।
सहर मे कोइ रहिवा जायगां म दीजों, पडहो फेराय दीयो सारे रे ॥ ६ ॥
बागवांन बाग बारे काढ्या, जब आया नगर रे मांही रे ।
राजा रूठों ने पडहो फेरायो, तिणरी खबर साधू ने नाही रे ॥ ७ ॥
नगर मे रहवा कोई जायगा न देवे, ते जाणे राजाने घणो दूठो रे ।
आंण भाग्यां राजा कोप चढे तो, जीवा मारे लेवे घर लूटो रे ॥ ८ ॥
एक कुंभार रे मन करुणा आई, तिण जाणीयो राय उदाई रे ।
ए सोलें देसांरो साहिब हूंतो, इणमे इसड़ी विपत पडी आई रे ॥ ९ ॥
हूं इण साध नें जायगां रहण देसू, म्हांरो कांई करसी राजा रूठो रे ।
भांडा वासण नें सगला गधेड़ा, पेहले छेहड़े लेसी लूटो रे ॥१०॥
इसड़ो तो धन म्हांरे घर मे न दीसे, राजा खोसें लेवे ते दीसे नांही रे ।
कदा जीवा मारें तो मरणो कबूल छे, साधु ने तो उत्तारूं घर मांहीं रे ॥११॥

कूंभार करड़ी धारी तिण काले, साधू ने उतारचो घर मांह्यो रे।
ते सुणनें केसी राजा एम विमासे, हिवे करवो कवण उपायो रे ॥१२॥
जो कूंभार रा घरसूं परा कढावूं, तो उमराव सगला रीसावे रे।
तो मांमा जी सू मिलनें करे उदंगल, म्हांरो जावक राज उठावे रे ॥१३॥
राय उदाइ जीवे जा लग, हूं तो जक कदेय न पावूं रे।
चोड़ें मराउ तो आछी न लागे, तो वेदां आगासूं जहर दरावूं रे ॥१४॥
इसड़ी विचारीने वेद बोलाया, म्हांरो नांम कठेइ मत लेजो रे।
साध उदाई ओषध नें आवें, तिण मांहें जहर घाली दीजो रे ॥१५॥
उण साह्मो थे मूल म देखो, ओलख लीजो मांने रे।
राय उदाई नें थे जीवा राखोला, तो जीवा मारूंला थांने रे ॥१६॥
ए राय वचन बेदा मांन लीधो, साध मारण रो सोवो झाले रे।
चाकर कूकर वेहूं सरीखा, धणी चलावे ज्यू चाले रे ॥१७॥
राय उदाई राज दीयो थो, निज भाणे जो जाणी रे।
तिण री पिण पापी घात करतां, अणुकंपा मूल न आंणी रे ॥१८॥
पेहलो सगपण मांमा रो हूं तो, बीजो सगपण राज दीधांरो रे।
तीजों सगपण मांमे मोटों कीयो थो, त्यांरी दया न आंणी लिगारो रे ॥१९॥
इसड़ो अनरथ करणो मांडचो, इण प्रग्रहा ने काजो रे।
निज मांमा ने मारणो मांडचो, पापी छोड़ी सर्म नें लाजो रे ॥२०॥
मांमा रे घर मोटों हूवो थो, मामा सू हिलीयो मिलीयो रे।
वले मामे तिणने राज दीयो थो, तिण सू पापी नहीं टलीयो रे ॥२१॥
इसड़ाई पापी वेंद हूंता जां, तिण राय तणी वात मांनी रे।
पाप करसी ते परगट होसी, ते बात रहसी किम छांनी रे ॥२२॥
हिवे ओषध पूछंना साधुजी आया, बेदां रा घर माह्यों रे।
विष सहीत दही स्वांधां ने दीधो, वेदां पिण कीधों भारी अन्यायो रे ॥२३॥
राय उदाई ओषध लीधो, ते रोग गमांवण कामो रे।
ततकाल जहर चढ्या हूइ वेदन, वलू वलूं हूइ छें तांमो रे ॥२४॥
समे परिणांमें वेदनां खमतां, उपनो अवधिगिनानो रे।
जब जाण लीयों जहर दीयो भांणेजो, तोही चूका नही सुभ ध्यांनों रे ॥२५॥
भाणेजे उपर धेष न आण्यो, निज अवगुण संभाले रे।
में घर छोडण री मनमें धारी, राग धेष कियो तिण काले रे ॥२६॥
राज सूं दुरगत जातो जाणी नें, न दीयो अभीच कुमर ने राजो रे।
तेहीज राज दीयो भाणेजो ने, ते दुरगत जावारो साजो रे ॥२७॥
इण तो जहर दीयो छे मोनें, ते एकणहीज भव मारें रे।
मे तो जहर दीयो इणने भारी, अनंत जनम मरण वधारे रे ॥२८॥

इण तो जहर दीयो छै मोंनें, तिणसूं मोख मारग नहीं अटके रे।
में इणने जहर दीयोछे तिण सूं, चिहू गति माहे भटके रे ॥२९॥
में राज रूप जहर इणनें दीधो, इणरी अणुकंपा मूल न आंणी रे।
राय उदाई समभाव राख्या, निज अवगुण लीयो जांणी रे ॥३०॥
राग धेष करम बीज बालेंने, चढीयो सुकल ध्यांनो रे।
ततखिण केवल ग्यांन उपाए, गया पांचमी गति परधानो रे ॥३१॥
प्रभावती मर देवता हूई, तिणरे हूंतो पीतम सू प्यारो रे।
राय उदाई नो मरण देखीने, जाग्यो क्रोध अपारो रे ॥३२॥
केसी राजा रा उसभ उदासू, तिण नगरी मे आपदा दीधी रे।
कुंभकार नों घर वरजे ने, पटण दटण सर्व कीधी रे ॥३३॥
तिण एक पापी रे उसभ उदा सू, उसभ घणा रे उदे आया रे।
अन्हाखी थके दुख दीधा साधा ने, कीधा जिसा फल पाय रे ॥३४॥
इम जांणी उतम नर नारी, साधां ने दुख नही दीजो रे।
सेवा भगत चोखें चित्त करने, नर भव लाहो लीजे रे ॥३५॥

●

दुहा

काल कितो एक बीतां पछें, अभीच कुंवर रे मन मांय।
कुटब जागरणा जागतां थका, उपना कुण अधवसाय ॥ १ ॥

ढाल : ६

[श्रेणिक मन इचरज थयों रे]

हिवे अभीच कुंवर मन चिंतवे, राय उदाई थो मोटो रे।
तिण वीर कने संजम लीयो, पिण अंतरंग माहे खोटो रे ॥ १ ॥
हूं राय उदाई नो डीकरों, अभीच नाम कुमारो रे।
इतला दिन हूं जाण तो, ओ सगलोई राज थो म्हारो रे ॥ २ ॥
मो में लषण सर्व राज रा, खोड़ न दीसे कांई रे।
पिण वेर जाग्यों मों उपरे, तिण सूं अकल उंधी आई रे ॥ ३ ॥
राज देतां न आणी लाजो रे, दस राजा ने उमरावा देखता।
निज पुत्र छोड़े भांणेजा ने, इण कीधो कुण अकाजो रे ॥४॥

पुत्र थकां भाणेज ने, राज दीयो किण लेखे रे।
ओ अंध हूवो राग धेष सूं, ते निज अवगुण किम देखे रे ।। ५ ।।
इणरे धेष हूतो मो उपरे, ऊंडो अंतरंग मांहि रे।
इण रा छाना कपट दगा तणी, ते खबर पड़ी मुझ नांहीं रे ।। ६ ।।
मों सू मुख उपर हेत राखतो, बोलावतों मीठी वाणी रे।
पिण मांहें लखण था पाडुवा, त्यांरी अबे पडी छे पिछाणो रे ।। ७ ।।
ओ साधपणों लेवा उठीयो, तो ही आ पिण न सूझी सवली रे।
ते साधपणो किम पाल सी, इणरी धुरसूंई चलगत अवली रे ।। ८ ।।
केसी कुमर तो राजा हूवो, तिणरो हुकम सगलेई चाले रे।
वले आंण वरते सालें देस मे, ते मोंनें अंतरंग साले रे ।। ९ ।।
दस मुगट बंध राजा एह नें, वले अमराव ने सर्व साथो रे।
ते सेवा भगत करे एह नी, उभा रहें जोड़ी हाथो रे ।।१०।।
तो हिवें मोनें इहां रहिवों नहीं, जिहां वरते इणरी आंणों रे।
ओ दुख खमणी न आवे मों थकी, तो हिवें वेगो सताव सूं जाणो रे ।।११।।

●

दुहा

एहवी करेय विचरणा, अंतेवर सर्व परिवार।
वले रिध संपत ले आपणी, ले नीकलीयो लार ।। १ ।।
वितभय नगर थी नीकल्यो, गयो चंपा नगर मझार।
आस छोडी तिण राज री, पिण मन माहे दुख अपार ।। २ ।।
तिण चंपा नगरी रो अधपती, कोणक नामे राय।
ते अभीचकुमर साह्मो आयने, मिलीयो अंग सू अंग लगाय ।। ३ ।।
जथा जोग विनों करें, घणों आदर सनमांण दीयों राय।
पछे नगरी माहें आंण ने, उतारयो भारी मेहला मांय ।। ४ ।।
भाइ लागे बेटो मासी तणों, तिण सगपण साह्मों देख।
वले जांणे इणने मोटो राजवी, तिण सूं राखे कुरब वशेष ।। ५ ।।
चंपा नगरी रहितां थकां, राज लिछमी वधी छें वशेष।
पांच प्रकार नां सुख भोगवे, तो ही राय उदाई सूं धेख ।। ६ ।।
वले भगवत आगे समझीयो, आदरीया व्रत बार।
तो ही राय उदाई उपरे, धेष न मिटीयो लिगार ।। ७ ।।

ढाल : ७

[आसण रा रे जोग]

अभीचकुंवर श्रावक ना व्रत पाले, पिण निज अवगुण नही संभाले रे।
जीवादिकनों हूवों जांण प्रवीण, राग धेष न पाड़्यो खीण रे।
सुमता रस विरला ॥ १ ॥
सर्व जीव रास खमावे तिण काले, जब राय उदाई ने टाले रे।
याद आया उलटो धेष आवे, जस कीरत पिण काना न सुहावे रे ॥ २ ॥
समायक पोसो जब करणो, जब राग धेष परहरणो रे।
पिण अभीचकुंवर समाइ पोसा मांहि, उदाई ने खमावे नाहि रे ॥ ३ ॥
म्हांरो राज हूंतो ते भांणेजो ने दीधो, इण इसड़ो दगो मां सूं कीधो रे।
तिण सूं निरंतर हू दुख पाउं, तिणने हूं केम खमाउं रे ॥ ४ ॥
बाप तो हेत वांछ्यो थो बेटा रो, पिण बेटे न कीयो विचारो रे।
तिणरे राजकरणरी थी मन मांहि, तिणसूं सवलो न सूझे काई रे ॥ ५ ॥
इण रीते श्रावक नां व्रत पाले, ओर दोष तो सगला टाले रे।
पिण राय उदाई सूं अंतर धेषों, तेतो दिन २ इधक वशेषों रे ॥ ६ ॥
पनरे दिन रो संथारो आयो, जब पिण नही खमायो रे।
ते श्री जिण धर्म विराधी ने मूंओ, तेतो मरने असुर देव हूवो रे ॥ ७ ॥
हारचो विमाणीक रा सुख भारी, ते वण गई धेष सूं खुवारी रे।
उंचणी पदवी सूं नीची पदवी पांमी, पड़ी अनंत सुखां री खामी रे ॥ ८ ॥
ते देव आउखो पूरो करे तेथ, उपजसी महा विदेह खेत रे।
तिहा थिवरां री वांणी सुणे साध थासी, करणी करे मोख सिधासी रे ॥ ९ ॥
एहवा धेष सूं समकत वरत खोवे, केई अनंत संसारी होवे रे।
इणरे करम थोड़ासूं वेगो छे नीकलो नही तो रूलतो अनंतो कालो रे ॥१०॥
इम सांभलने उत्तम नर नारी, किणसूं धेष न राखो लिगारी रे।
भूंडो भूंडा री कमाई जासी, करसी जिसा फल पासी रे ॥११॥
श्रावक ने एहवो धेष न करणो, परभव सूं अहो निस डरणो रे।
पिण अभीचकुवर सूं न हूवो टालो, ते करम तणों छे चालो रे ॥१२॥
वरस बयाले नें समत अठारो, वेसाख सुद चउदस सुक्रवारो रे।
जोड़ कीधी उदाई राजा री, ते तो गांव गोघूंदा मझारो रे ॥१३॥

*

रत्न : ५

सकडाल पुत्र रो बखांण

दुहा

उपासगदसा रा सातमा अधेन मे, सकडाल पुतर नो इधकार।
ते श्रावक हुंतो गोसाला तणो, तेह्नो कहूं विसतार ॥१॥
तिण काले ने तिण समे, पोलासपुर नगर सुठांम।
तिहां सहंसब नामे उद्यान थों, इसांण कुण में तांम ॥२॥
तिण नगर नों अधिपती, जितसत्रु नांमें राजांन।
ते प्रसिध हेमवत नीं परे, रायलषण गुण परधांन ॥३॥
तिण नगरी मांहे वसे, सकडाल पुतर नांमें कूंभार।
ते श्रावक छे गोसाला तणों, तिण रें भरीया रिध भंडार ॥४॥
तिण गोसाला रा सिधंतनां, अर्थ लाधा वशेष सुणेह।
ते धार राख्या छें हीया मझे, पूछ पूछे निरणे कीयो तेंह ॥५॥
सूतर प्रश्न तणा अर्थ, धारया छे सनमुख होय।
हाड मिजा पेमाणुराग रक्त छें, गोसाला रा मत माहे सोय ॥६॥
अर्थ परम अर्थ जाणे एह्ने, सेप जांणे सर्व अनर्थ मूल।
विचरें छे आतमा ने भावतो, और धर्म जांणें जिम धूल ॥७॥

ढाल : १

[पुन्न नीपजें शुभ जोग सूं रे लाल]

एक कोड़ सोनइया रोकड़ तेह्ने रे लाल, गडीया रहे छे धरती मा ही हो। भविकजन।
एक कोड़ सोंनइया व्याजे वधें रे लाल, घरवाषरो एक कोड़नों छे ताहि हो ॥भ०॥
ते श्रावक छे गोसाला तणों रे लाल ॥ १ ॥
तिणरें एक गोकुल गायां तणों रे लाल, ते तो गिणतीमें दस हजार हो ॥भ०॥
तिणरें अगिमिता नांमें भार्या रे लाल, ते रूप में छे श्रीकार हो ॥ २ ॥
पोलासपुर नगर रें बाहिरें रे लाल, पांचसों कुंभकार नां हाट हो ॥भ०॥
तिणरें मुख आगल वोहत मजूरीया रे लाल, अनेक मिनखांरों छें थाट हो ॥ ३ ॥

वासण उतारे विविध प्रकार रे लाल, त्यारां जूआ २ छे नाम हो ।।भ०।।
राज मारग ने विषे विचरता रे लाल, वासण वेचता थका ठाम २ हो ।। ४ ।।
एक दिवस पाछिला पोहर नो रे लाल, आसोग बाडी मांहे आय हो ।।भ०।।
धर्म प्रतिज्ञा लीधी गोसाला कने रे लाल, ते प्रतिज्ञा ले विचरे छे ताय हो ।। ५ ।।
तिण अवसर सकडालपुतर कने रे लाल, एक देव प्रगट हुवो आय हो ।।भ०।।
ते देवता रागी जिण धर्म नो रे लाल, ते ऊभों आकास रे माय हो ।। ६ ।।
पग ने विषे घुघरी घमकावतों रे लाल, काना कुडल झिगमिगे त्यारी जोत हो ।।भ०।।
सर्व आभूषण तिण रे पेहरणे रे लाल, दसु दिस करतो उद्योत हो ।। ७ ।।
ते देवता कहे सकडाल पुतर ने रे लाल, इहां आवसी काले परभात हो ।।भ०।।
महा माहण पुरष पधारसी रे लाल, ते छे तीनूइ लोकरा नाथ हो ।। ८ ।।
मत हणों मत हणो केहने रे लाल, एहवो छें त्यारो उपदेस हो ।।भ०।।
उपने ग्यान दरसण तेहमे रे लाल. त्यांरो ग्यान जाणो हद वेस हो ।। ९ ।।
तीन काल री जांणे देखें वारता रे लाल, अरिहंत जिण केवली विख्यात हो ।।भ०।।
जांणे दरब खेतर काल भावने रे लाल, त्यासूं छानी नही कोइ वात हो ।।१०।।
अरिचवा जोग तीनूइ लोक ने रे लाल, वले तीनू लोकना पूजणीक हो ।।भ०।।
देव मिनखादिक सर्व ने रे लाल, अरचनीक वदनीक हो ।।११।।
पूजा सतकार करवा जोग छे रे लाल, वले सनमान देवा जोग हो ।।भ०।।
किलाण मंगलीक कारी देव छे रे लाल, ते जाणे छे लोग अलोग हो ।।१२।।
ग्यानवत आणंदकारी सकल ने रे लाल, सेवा भगत करवा जोग तेह हो ।।भ०।।
तप सपदा करे सहीत छें रे लाल, एहवा मोटा छे भगवान एह हो ।।१३।।
एहवा भगवान काले पधारसी रे लाल, त्याने वादे कीजे नमसकार हो ।।भ०।।
त्यांरी सेवा भगत कीजें भाव सू रे लाल, सक म राखे लिगार हो ।।१४।।
दीजे पडीहारा पीढ पाटीया रे लाल, वले दीजे सेज्जा सथार हो ।।भ०।।
दोय तीन बार कहे देवता रे लाल, पाछो गयो ठिकाणे तिणवार हो ।।१५।।

●

दुहा

ए वचन सुणे देवता तणे, सकडाल पुतर तिणवार ।
अधवसाय मनोगत उपनो, तिण सू करवा लागो विचार ।।१।।
धर्म आचार्य माहरा, गोसालो मखलीपूत ।
हिवडां आजूणा काल मे, तेहीज काकडाभूत ।।२।।
या विनां ओर कुण पुरष छे, एहवी करणी करे अदभूत ।
म्हारा धर्म आचार्य तेहनी, करड़ी घणी करतूत ।।३।।

तेहीज महा माहण अछे, त्यांने उपनो छे केवल ग्यांन ।
वले केवल दरसण उपनों, तेहीज अरिहंत भगवांन ।।४।।
जे देवता गुण कह्या तिके, सगला गुण छें त्यां मांय ।
ते पुरख काले पधारसी, त्याने वंदनाकरसूं तिहांजाय ।।५।।
त्यांरी सेवा भगत करसूं घणी, म्हांने देवता कह्यो तिण रीत ।
पाट बाजोट सेज्जा ने साथरो, भाव सहीत देसू धर पीत ।।६।।
देवता रे कहे समझ्यों नहीं, मनसूं करे ओघट घाट ।
देवता कह्यो भगवांन आसरी, ओ जोवे गोसाला री बाट ।।७।।

ढाल : २

[भवियण जिन आगन्या]

हिवें काले परभाते सूर्य उगां, समोसरचा छे श्री भगवांन ।
त्यांरी वांण सुणवाने परिषदा आवी, तेतो वांदे दे दे सनमांन रे ।
सकडाल हुई समझण री तयारी, तिणसूं होसी बारे व्रत धारी रे ।
सकडाल मोह करम नहीं छे भारी ।। १ ।।
सकडाल पुत्तर पिण काने सुणीयों, समोसरचा छें श्री विरधमांन ।
तो हूं जाय वादू सेवा भगत करू सारी, ऐ पिण मोटा छे श्री भगवान रे ।। २ ।।
सकडाल पुत्तर गोसाला रो श्रावक, तिण रा मत माहे रह्यो छे अलुजी ।
पिण मोह करम इणरे पतलो पडीयो, तिणसूं तिण नें सवली सूझी रे ।। ३ ।।
गोसाला रा मत माहे प्रवीण गाढों, पिण नहीं छे वादी विरोधी ।
तिण ने गोसालो विपवादी करे न सक्यो, तिण सूं रह्यो सुलभबोधी रे ।। ४ ।।
तिण सूं तिण ने भगवत वांदण री, उपनी छे मन मांह्यो ।
एहवो विचार करें चित चोखे, पछे सिनान करे सुध न्हायो रे ।। ५ ।।
सुध निरमल वसत्र पेहरचा निरदोप, रूड़ा आभरण ना अलंकार ।
मोल माहे मूहघा नें तोल माहे हलका, एहवा वसत्र गेहणा श्रीकार ।। ६ ।।
अनेक मिनखांरा ब्रंद करेने, नीकल्या छें घर थी बार ।
पोलासपुर नगर ने मध्य थइ ने, आयो सहसंब बाग मझार रे ।। ७ ।।
भगवंत बेठा छे तिण ठामे, आए वंदणा कीधी सीस नाम ।
वले सेवा भगत करे सनमुख वैठो, वले मुख सू करे गुण ग्राम रे ।। ८ ।।
सकडाल पुतर आदि देइ सकल नें, धर्म कथा कही मोटें मंडाण ।
जीवादिक नो सरूप बतावे छे भिनर, भव जीवां ने समझता जाण रे ।। ९ ।।
धर्मकथा पूरी करें भगवंत बोल्या, सकडाल पुतर नें कहे आम ।
तूं काले पाछला पोहर मांहें बेठो थो, आसोग वाड़ी मे तिण ठाम रे ।।१०।।

थे गोसाला आगे प्रतिज्ञा लीधी छें, ते प्रतिज्ञा ले बेठो थो ताम।
एक देव प्रगट हुवो थारी समीपे, आकासे उभों रही बोल्यो आम रे ॥११॥
देवता सकडाल पुतर ने कही ते, सारी माड कही भगवान।
ए सगली वात साची के नही, तू साच कहीजे वुधवान रे ॥१२॥
जब सकडाल पुतर कहे भगवांन ने, आप कही ते साची छे सारी।
इतरी इतरी वाता देव कही सर्व मोने, तिण मे झूठ नही छे लिगारी रे ॥१३॥
तेतों मों आसरी देवता कह्यो तोने, बांदे पूजे कीजे नमसकार।
सेवा भगत करव रों कह्यो तोने, दीजे कह्यो छे सेज्जा संथार रे ॥१४॥
देवता तोने सगलाइ बोल कह्यां ते, मो आश्री कह्यो छे वारूबार।
थे जाण्यो गोसाला आश्री कह्यों छे, ते गोसाला आश्री न कह्यो लिगार रे ॥१५॥

●

दुहा

सकडाल पुतर तिण अवसरे, सुणे भगवंत ना वेंण।
अधवसाय मन माहें उपनों, ऊघडचा अंतर नेण ॥१॥
ए प्रतख समण भगवत छे, महा माहण महावीर देव।
केवल ग्यांन दरसण त्याने उपनों, ते समोसरचा सयमेव ॥२॥
देवता यांरा गुण कीया मों कनें, त्यां गुणा करने सहीत।
तीन लोक तणा पूजणीक छे, रागधेष लीया सर्व जीत ॥३॥
तो श्रेय किलाण छें मोंभणी, वांदे पूजे करूं नमसकार।
पडीहारा म्हांरा थकां, याने देउं सेज्जा संथार ॥४॥
एहवी करे विचारणां, उभों हुवो तिण ठांम।
समण भगवत महावीर ने, बंदणा कीधीं सीस नाम ॥५॥
दोनूं हाथ जोड़ी ने इम कहे, पोलासपुर नगर रे बार।
म्हांरे पाच सो हाट कुंभार नां, तिहां सेज्जा ने वले छे सथार ॥६॥
तिण ठामे आप समोसरो, म्हारा लेवों सेज्जा ने संथार।
ए वचन सकडाल पुतर तणो, श्री वीर कीयो अंगीकार ॥७॥
सहसंब बाग थी नीकल्या, आया पाचसो हाठा रें माय।
पीढ पाटीया सेज्जा संथारो लीयों, रह्यां छे आतम ध्यान ध्याय ॥८॥

ढाल : ३

[आ अनुकम्पा जिण आगन्या में]

सकडाल पुतर छें गोसाला रो श्रावक, पाच सों हाट आपरा छे तिहां आवें।
तिणरा माटी ना ठांम सुकावण काजें, मांहिली साल थी बारे आण सूकावे।
भगवंत समझावें सकडाल पुतर नें॥ १॥
जब वीर पूछ्यों सकडाल पुतर ने, थांरा ठांमडा वासण नीपनां केम।
जब सकडाल पुतर कहे भगवंत नें, म्हांरा ठांमड़ा वासण नीपना एम॥ २॥
पेंहला तो भगवांन माटी हूंती, तिणने खान्हा सू आंण पांणी में भीजोय।
पछे राख ने कारस तिहा माहे घाल्या, पछे मुसले एकठा कीधां सोय॥ ३॥
पछे पीडा करे चाक उपर चढाया, जूजूआ वासण उतारचा छे तांम।
इण बिध नीपजाया छे ठांमड़ा वासण, त्यारा जूआ २ दीया छे नाम॥ ४॥
जब वीर कहें सकडाल पुतर नें, श्रे कीधा हुआ के अणकीधा हुआ सताव।
थारी सरधा हुवे ते गाढी विचारे, इण प्रश्न नां पाछा दे तू जवाब॥ ५॥
जब सकडाल पुतर कहे भगवत ने, कीधा तो न हुवे छे वासण एक।
श्रें वासण सर्व सभावे नीपनां, होणहार हुवे जिम हुवे छे अनेक॥ ६॥
जब वीर कहें सकडाल पुतर नें, कोइ पुरख थांरा वासण लेजावे चोर।
कोइ वासण थारा छेदें भेदें विखेरे, कोइ वासण लेजायने न्हांखे फोड़॥ ७॥
कोइ पुरख थांरी अगिमित्ता अस्त्रीसू, विसतीरण कांम भोग मनोज्ञ सेवे।
तिण पुरख ने तू थारी निजरा देखे तो, तिण पुरख ने डड तू किण विध देवे॥ ८॥
जब सकडाल पुतर कहे भगवत ने, तिण पुरख ने घणो आक्रोसे ताडू।
नाड़ी बंधनादि के करी गाढो वाधूं, वले डडादिक सू वारूबार मारू॥ ९॥
वले पकड़ लेउ तिण दुष्ट पुरख ने, वले देउं चपेटा ने मारू लात।
धनादिक सर्व उला लेने निरभंइ छू, वले अकाले कर देउ तेहनी घात॥१०॥
जब वीर कहें सकडाल पुतर ने, थारा वासण फोड़े विगाड़े नही।
अगिमित्ता सू भोग न भोगवे, तिणनें तो तू डंड न देवें काइ॥११॥
जो तू कहें छे कीधो तो काइ न होवे, होणहार हुवे जिम हुवे सारो।
नितिया सर्व भाव सभाव कहे तू, थारी सरधा रो तोने पिण नही विचारो॥१२॥
थारा ठामडा वासण फोड़ विगाडे, थारी अस्त्रीसू भोगवे कामनेभोग।
तिण पुरख नें तू कहे छेदू ने भेदू, उणरी जीव काया रो पाडू विजोग॥१३॥
वले तू कहे कीधो तो काइ न होवे, होणहार जिम हुवे छे सारो।
आ प्रतख खोटी सरधा छे थारी, तिण माहे साच नही छे लिगारो॥१४॥
तू तो कहे छें होणहार हुवे जिम हुवे, तो थारी अस्त्री सेवे तिणनें कांय मारे।
थांरी सरधारें लेखे होणहार हुवें छें, थांरी सरधा ने तूहीज कांय विगाड़े॥१५॥

थांरा ठामडा वासण भांगे विगाड़े, तिण पुरष ने तूं मारे किण लेखे।
एक होणहार श्रो पिण हुवो छे, थारी सरधा साह्मो क्यू नही देखे ॥१६॥
थारा वासण भागे थांरी अस्त्री सेवे, तिणने मारे तो थारे भोलप मोटी।
नित सासता हुवे तो वासणा नही भागे, इण न्याय थारी सरधा खोटी रे खोटी ॥१७॥
ए वीर वचन सुणे सकडाल पुतर, अभिंतर माहें कीयो विचारी।
जब जांण लीयो आपरों मत खोटो, समकित पामण री हुइ छे तयारी ॥१८॥

●

दुहा

सकडाल पुतर तिण अवसरे, प्रतिबोध पांम्या तिणवार।
तिण खोटो जांण्यो गोसाला भणी, तिणमे कण नहीं जाण्यो लिगार ॥१॥
हिवे सकडाल पुतर भगवान ने, करे वंदना ने नमसकार।
कहे धर्म सुणावों सांमी मो भणी, तिण सू पामू भवजल पार ॥२॥
जब भगवान वांणी वागरी, सकडाल पुतर समझतो जाण।
धर्मकथा भिन २ कही, करने मोटों मंडाण ॥३॥
जब भगवत मोटे मंडांण सू, धर्मकथा कही तिण वार।
सकडाल पुतर सुण हरखीयो, जिण धर्म जाण्यों तंतसार ॥४॥
हाथ जोड़ी ने इम कहे, सरध्या तुमनां वैण।
थे तारक छो भव जीवना, मोने मिलीया साचा सेण ॥५॥
सेठ सेन्यापती राजवी, धिन जे हुवे अणगार।
इतली पोहच म्हांरी नही, मोने दो श्रावक व्रत सार ॥६॥
जब वीर कहे सकडाल पुतर ने, ज्यू तोने सुख थाय।
सकडाल पुतर व्रत उचरे, ते सुणजों चित ल्याय ॥७॥

ढाल : ४

[धर्म दलाली चित करे]

हिवे जीव न मारूं तस काय ना, विण अपराधी ने जाणे जी।
हणवारी वुध सेउपयोग सू, एहवी हिंसा तणा पचखाणो जी।
मोंने व्रत करावो श्रावक तणा ॥१॥
किन्याली गोवाली ने भोमाली, थांपण मोंसो कूडी साख जाणो जी।
इत्यादिक मोटा झूठ तेहना, वोलण वोलावण रा पचखाणोजी ॥२॥

खात्र खणी गांठ छोडने, ताला तोडी पाड़े बाट जाणो जी।
मोटी वसत्त पराइ उठाय ले, एहवी मोटी चोरी ना पचखाणोंजी ॥ ३ ॥
म्हांरे अगिमित्ता नामे भार्या, तिण रो तो म्हारे आगारो जी।
और अस्त्री सर्व संसार नी, त्यांरो म्हारे सर्व परिहारो जी ॥ ४ ॥
एक कोड़ सोंनइया धरती मझे, एक कोड़ वधे म्हारे व्याजो जी।
एक कोड तणो घर बाधरो, म्हांरे ओर सू नही कोइ काजो जी ॥ ५ ॥
म्हांरे एक गोकुल गायां तणो, तिण री हुइ छे दस हजारो जी।
इण उपरंत सर्व गाया तणो, म्हांरे जावजीव परीहारो जी ॥ ६ ॥
मरजाद करूं छहूं दिस तणी, तिण बाहिर ला आश्रव नहीं सेवू जी।
दोय करण तीन जोग थी, हूंतो छठो व्रत इम लेवू जी ॥ ७ ॥
उलणीयादिक छावीस बोल जी, वले पनरे करमादान जांणो जी।
त्यांरी करू मरजाद आज थी, उपरंत सेवणरा पचखाणो जी ॥ ८ ॥
अनर्थे पाप करवा तणा, सांमी मोने करावो पचखांणो जी।
हिंसादिक अठारे सेवू नही, हू सेउपयोगे जाणो जी ॥ ९ ॥
नवमें व्रत हूं सामायक करूं, आणे मन माहे वेरागो जी।
दोय करण तीन जोग थी, म्हारे सावज्ज सेवण रा त्यागों जी ॥१०॥
सचितादिक रो त्यागन करूँ, वले पाच आश्रव नही सेवू जी।
मरजादा वाधू त्या लगे, हूतो दसमों व्रत इम लेवूं जी ॥११॥
मरजादा परमाणे पोसा करूं, ते वेराग मन माहें आणो जी।
दोय करण तीन जोग थी, म्हारे पाप करण पचखाणो जी ॥१२॥
समण निग्रंथ अणगार ने, चवदे परकार नो देवूं दानों जी।
फासू निरदोप दरव नी, भावना भाव सू भगवानो जी ॥१३॥
अनुक्रमे बारे व्रत आदरया, आणंद तणी परे जाणो जी।
गुणव्रत सिख्या व्रत तेहनो, जूओ २ कीयों परिमाणो जी ॥१४॥

●

दुहा

बारें व्रत विवरा सुध आदरे, वले अभिग्रह लीयों वीर पास।
पछे भाव सहीत भगवान ने, बंदण कीधी आण हुलास ॥ १ ॥
सकडाल पुतर श्रावक हुवो, जीवादिक नो जाण।
तिण गोसाला नें छोडीयो, तिण री मूल न राखी कांण ॥ २ ॥
बंदणा करने तिहा थी नीकल्यो, पोलासपुर नगर मे होय।
आयो पोतारे निज घरे, जिहां बेठी अगिमित्ता सोय ॥ ३ ॥

अगिमित्ता भार्या ने कहे, आया भगवंत श्री महावीर।
संहसब बाग मे समोसरया, ते गुण कर गेहर गंभीर ॥४॥

ढाल : ५

[रे जीव मोह अणुकम्पा न आणीये]

श्री वीर जिणंद चोवीसमां, त्यांने विधसू वाद्या म्हे आज हो।
म्हारो धिन दीहाड़ो धिन घड़ी, म्हारा सरीया वंछत काज हो।
म्हे वीर तणी वाणी सुणी ॥१॥

हो में वीर तणी वांणी सुणी, मोने लागी छे अमीय समाण हो।
जे जे वीर जिणेसर भाखीया, ते म्हे कर लीधां परमाण हो ॥२॥
हूं तो गुर जाणतों गोसाला भणी, तिणरी सरधा जाणी म्हे कूड हो।
वले आचार तिणरो पाड़ूओं, तिण ने जांण्यो म्हे फेन फितूर हो ॥३॥
ते तो बाजे तीथंकर लोक मे, तिण चोड़े चलायो कूड हो।
ते म्हे आज ओलखीयो तेहने, तिणसू कर दीयों जाबक दूर ॥४॥
म्हे वीर जिणेसर आगले, म्हे तो विध सू लीया व्रत बार हो।
देव गुर कीया म्हे भगवान ने, जाणपणो हीया मे धार हो ॥५॥
तिण सूं थे पिण जाओ वीर वांदवा, वांणी सुण नें लीजो व्रत बार हो।
भाव भगत कीजो भगवान री, वले विनो कीजो वारूंवार हो ॥६॥
अगिमित्ता भार्या इम जाणीयों, म्हारो भरतार चुतर सुजाण हो।
धर्म खोटो खाएे जिसों नही, पूरी कीधी हुसी छाण हो ॥७॥
तिणसू अगिमित्ता नामे भार्या, विने सहित बोली छे वाण हो।
हूं पिण जासूं वीर वांदवा, आप कह्यो ते म्हारे परमाण हो ॥८॥
सकडालपुतर इम सांभले, जावण री करे भारी सझाय हो।
अगिमित्ता भार्या रे कारणें, धर्मरथ सिणगारैं ताय हो ॥९॥
चाकर पुरष तेड़ी नें इम कहे, म्हारो वचन हीया मे धार रे।
खिपामेव देवाणुप्रीया, रथ वेगों ल्यावो सिणगार रे।
म्हे तो वीर वादण ने जावसां ॥१०॥

जातवंत विरखभ नें जोत रे, वले तरुण बाल जुवान रे।
सरिखा पुछ तिण रा पाधरा, समीखुरीया ने रूप समांण रे ॥११॥
वर्ण धवला नें माता घणा, छोटी सीगडीयां जाण रे।
ए तो दोनूं बराबर- दीसता, तू तो एहवा विरखभ आंण रे ॥१२॥
रूपा में घंटा घणी सोभती, तिणरों उठे सब्द रसाल रे।
सोनां री - घाले सांकली, गले बांधे गुघर माल रे ॥१३॥

जंबूनंद सुवर्ण में सांकली, तिण रें मोत्यां रा झूंवका अनेक रे।
ते वेहलां तणें गले वाधजे, घणी जुगत करे ने वशेख रे॥ १४॥
गलें कंचनकेरा नीपनां, आभरण पेहराये अपार रे।
वलदां रे झूलज सोभती, उतकष्टो घणीं सिरदार रे॥ १५॥
बांधे सूतर केरी रासडी, कंचन जडी नाथ अनूप रे।
नीला कमलां कर सोभतो, कीजें मस्तक तिणरे रूप रे॥ १६॥
मस्तक घाले किलंगी तेहने, तिणरें फूंदा बाधे श्रीकार रे।
ते दीसें घणां रलीयांमणा, एहवो कीजें त्यारे अलंकार रे॥ १७॥
चाल उतावली माठा नही, रूडो आकार सठांण रे।
दीठाइ आणंद उपजें, जोतरजे रथ रे आण रे॥ १८॥
नाना परकार ना मणी रतन मे, जडी घंटा न दीसें सांध रे।
तिण रो लागे सब्द सुहामणो, एहवी घंटा रथ रे बाघ रे॥ १९॥
चुतर कारीगरां घडी, रथ नी चक्रधारा जांण रे।
पइडां करनें अति सोभतां, झूसरादिक सर्व वखांण रे॥ २०॥
रूडा लखणां सहीत छे, एहवा रथ ने सिणगार रे।
हिवें जा तू वेग उतावलों, कीजे मत जेज लिगार रे॥ २१॥
जालीयां रचणा करें सोभतो, लोक दीठां करें वखांण रे।
उवठांण साला वारली, रथ उभो राखे आंण रे॥ २२॥
चाकर पुरप सुणे राजी हुवो, वचन कर लीधो परमाण रे।
सिणगारया रथ नें वेलीया, आग्या सूंपी पाछी आण रे॥ २३॥

●

दुहा

रथ आण उभों राख्यो सांभल्यो, अगिमित्ता नामे नार।
हिवे वीर वांदण नें जावा तणी, करे सताब सूं तयार॥ १॥

ढाल : ६

[श्री नेम जिणंद समोसरया]

हिवें अगिमित्ता तिण अवसरें रे, कीधों मरदन सर्व सिनांना कुंभकारी रे।
आभूषण पेंहरया नव नवा रे लाल, रतनां जड्या कुंडल कांन।
कुण वीर वांदण ने नीकले रे लाल* ॥ १॥
हार मोती माला मूंदडी रे, पगां नेउर काकण हाथ। कु०।
कडीयां कणदोरो बांधीयो रे लाल, चंदण सूं चरच्यों गात॥ २॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सर्व रितू नां फूलां करी रे, वींट्या माथा रा केस। कु०।
मोले मूंहघा ने हलका घणा रे लाल, एहवा पेहर्‍या तिण वेस॥ ३॥
गेंहणां नें कपडा तणों रे, एक एक थी चढतो रंग।
चंदण तिलकें करी सोभती रे लाल, किस्नागर धूप्यो अंग॥ ४॥
सगलोइ अंग सिणगारीयो रे, गेहणा पेहर्‍या अति चूप।
सरीर रतनां करी झिगमगें रे लाल, तिण रों रूप घणो छे अनूप॥ ५॥
दास दास्यां रा व्रन्द सूं रे, दोली वींट रही चकवाल।
वले ओर मिनख साथे घणा रे लाल, आय उभी छे बारली साल॥ ६॥
रथ उपर बेठी आय नें रे, साथे लीयो घणो परिवार।
इण विध घर सूं नीकली रे लाल, चलीया जाय मध्य बाजार॥ ७॥
अतिसय दीठां भगवंत रा रे, रथ उभो राख्यो ठाय।
रथ थकी हेठी उतरी रे लाल, वंदणा कीधी भगवत ने आय॥ ८॥

●

दुहा

भगवंत नें वंदणा करें, बेठीं सनमुख आय।
भगवंत दीधी देसनां, सगला नें हित ल्याय॥ १॥
श्री वीर तणी वांणी सुणें, अगिमित्ता नांमे नार।
जब इण पिण सकडालपुतर नी परे, आदरीया व्रत बार॥ २॥
पछें भगवंत नें वंदणा करें, रथ उपर बेठी आय।
जिण दिस थकी आइ हुती, तिण दिस गइ छें ताय॥ ३॥
काल कितोएक वीतां पछे, भगवत कीयो छें वीहार।
पोलासपुर नगर थी नीकल्या, चाल्या जनपद देस मझार॥ ४॥
सकडालपुतर ने अगिमित्ता, पाले श्रावक व्रत रसाल।
समण निग्रंथ अणगार नें, दान देता थका दगचाल॥ ५॥
ए बात गोसाले सांभली, म्हांरो श्रावक लीयो विरधमान।
तिण सूं चिंता फिकर हुइ घणी, करवा लागो छें आरत ध्यांन॥ ६॥

ढाल : ७

[सुण ए सुवटी मतकर छतनी०]

हिवें गोसालो मन चिंतवे, हिवे करवो कवण उपाय।
श्रावक म्हांरो फिर गयो रे, तिणनें किण विध आंणु ठाय।
सुणो भाइ साधां, हिवें करवों कवण विचार॥ १॥

गोसालो निज शिष्यां भणी रे, कहिवा लागो रे आंम।
सकडालपुतर फिर गयो, तिण खोटो कीयों छे कांम ॥ २ ॥
ओ श्रावक हूंतो मोटको रे, तिणनें फिरता न लागी रे वार।
आपे सेठों जाणता एहने, तिण दीधी बात विगाड ॥ ३ ॥
ओ एक फिरयो आछो नही रे, तिण सूं लागे घणी विपरीत।
ओर नवा लोक किम समझसी, त्यांने किम आवसी परतीत ॥ ४ ॥
एक फिरयां सूं दोय फिरे रे, दोय फिरया फिरे च्यार।
इम फिरता फिरता फिरे घणां, पछें चिहुं दिस पडे बधार ॥ ५ ॥
ओ अंतेवासी म्हांरो रे, वले म्हां सूं अतंत सनेह।
तिण कांण न राखी म्हांरी, म्हाने तुरत दीयो तिण छेह ॥ ६ ॥
म्हे सहल जाण्यों कासप भणी रे, तिण सू न कीयो उदास।
जो म्हे भिडकाय दीयो हुवे तेहथी, तो नहीं जातो कासप रे पास ॥ ७ ॥
म्हे नहराइ कीधी घणी रे, तिणने न कीयो घोल प्रघोल।
कासप थी मन भांग्यों नही, आतो म्हारीज रह गइ भोल ॥ ८ ॥
इण आछो काम कीयो नही रे, इण चोडें बिगाडी रे बात।
म्हारी लाज सर्म सर्व परहरी, ते किण विध आवसी हाथ ॥ ९ ॥
पिण एकरसू तो तिण कने रे, आपे चालो तेहनें रे पास।
समझे तो समझायलां, नही तो छोडां तिण री आस ॥ १० ॥
मन में आसा अति घणी रे, जाणें लेसूं तुरत समझाय।
जाण्यों सरमासरमी समझसी, जाणे पाछो आवसी ठाय ॥ ११ ॥
ए मिसलत माहोमा करी रे, पछे कीयों तिहा थी रे वीहार।
नगर पोलासपुर आवीया, साथे शिष्यां तणो परिवार ॥ १२ ॥
जिहा जायगा गोसाला तणी रे, आया छे तिण ठांम।
भड उपगरण तिहां मेलीया, वले लीयों तिहा विसराम ॥ १३ ॥
केयक शिष्य साथे लीया, मन मे उजम आण।
निज ठिकाणा थी नीकल्यों, कर मोटे मंडाण ॥ १४ ॥
सकडालपुतर श्रावक फिरयो रे, तिण सू लागो घणो उदेग।
वले ओघट घाट घट मे घणी, जाणे जाय समझाउ वेग ॥ १५ ॥
सकडालपुतर बेठों जिहां, तिहां आयो वेग सताव।
तिणने देखे ने आवतों, इण री मूल न राखी आव ॥ १६ ॥
बोलायो नही एहने रे, न दीयो आदर सनमांन।
मन मे पिण भलो न जाणीयो, मुन साझी बुधवांन ॥ १७ ॥

जब गोसालो देख तेहनें, हुवो अतत उदास।
वले देख सेठांई तेहनीं, जब जाबक छोडी आस ॥ १८ ॥

दुहा

हिवे गोसालो मन में चिंतवे, ओ तो होय गयो ओर रो ओर।
ओ मूल न दीसें म्हांरी मानतो, तो क्यां ने करूं भखभोड ॥ १ ॥
ओ मोने आवतो देख नें, बेठो रह्यो निज ठांम।
उठ उभोइ हुवो नही, इण काठा कीयां परिणांम ॥ २ ॥
वले आदर सनमान दीयो नही, वले उंचोइ न कर्‍यो हाथ।
मोसूं जावक मीट मेली नही, तो किसी समभण री बात ॥ ३ ॥
समाचार पिण मोंनें न पूछीयो, वले करतो न दीसें मों सूं बात।
म्हारी गिणत न दीसे एहने, मोने वांछे नही तिलमात ॥ ४ ॥
इणरा पीठ फलग सेजा साथरो, जाचे लेणा इण पास।
ते किण विध देसी मो भणी, म्हारो मूल नही बेसास ॥ ५ ॥
जो सेज्जां सथारो दे मो भणी, तो रहे लोका मे भर्म।
तो उपाय करें लेउं इण कने, तो रहे हमारी सर्म ॥ ६ ॥
तो इण रा गुर महावीर छें, त्यारा करूं गुणग्राम।
तो सेज्जा संथारो दें मों मणी, तो रहे हमारी माम ॥ ७ ॥
हिवें सेज्जा संथारो कारणे, कर भगवंत रा गुणग्रांम।
ते किण विध गुण कीरत करे, ते सुणजो राखे चित्तठांम ॥ ८ ॥

ढाल : ८

[डाभ मूजादिक नी डोरी०]

सकडालपुतर ने कहे आम, मुख सूं करतो थको गुणग्रांम।
माहा माहण मोटा सांम, ते आया हुता इण ठाम ॥ १ ॥
जब सकडालपुतर कहें इण नें, माहा माहण कहे छें तूं किण नें।
गोसालो कहें सुण तूं सधीर, माहा माहण श्री महावीर ॥ २ ॥
भगवत महावीर ने ताय, माहा माहण कह्या किण न्याय।
ओ प्रश्न पूछयो म्हें तोनें, इण रो पाछो उत्तर दे तू मोंनें ॥ ३ ॥
जब गोसालो कहें सुण माहरी वाय, माहा माहण कहूं इण न्याय।
मा हणों मा हणों त्यांरो उपवेस, त्यारे दया घणी हदवेस ॥ ४ ॥

जीव हणे हणावे नही, भलो पिण नही जांणे कांइ।
पर जीव आप समांण देखे, माहा माहण कह्यो इण लेखें॥ ५ ॥
मा हणो मा हणो कहे जिणराज, पर जीवा ने तारण काज।
दया रेस घालें घट मांही, ओर मुतलब नही त्यांरें कांइ॥ ६ ॥
केवलग्यांन ने दरसण सहीत, दोषण ने कलक रहीत।
अरिहंत जिण केवली विख्यात, त्यांसूं छानी नही कांइ बात॥ ७ ॥
सर्व दरव खेतर काल भाव, त्यां सगला रो जांणे छें सभाव।
उंचो नीचों तीरछो लोग, त्याने अरचवा पूजवा जोग॥ ८ ॥
एहवा मोटका छे मंगलीक, ते छे अरचनीक नें वंदनीक।
पूजा सतकार करवा जोग, त्याने सनमान दे तीन लोक॥ ९ ॥
किलांणीक मंगलीककारी, सकल जीवां ने छे हितकारी।
त्यारी तप सपदा छे भारी, त्यांने दीठांइ आणंद अपारी॥ १० ॥
सेवा भगत त्यांरी घणी कीजे, घणो आदर सनमांन त्यानें दीजे।
त्यामें गुण छे अनेक अथाय, म्हां सूं पूरा कह्या न जाय॥ ११ ॥
त्यारो लीजे नित प्रते नाम, वारूवार कीजे गुण ग्रांम।
त्यांरा नांम सूं नव निध होय, अनुक्रमे मुगत पांमें सोय॥ १२ ॥
तिरण तारण जीहाज समान, एहवा मोटा छे श्री भगवान।
माहा माहण कह्या इण न्याय, तिणमें संका म जांणों कांय॥ १३ ॥

●

दुहा

गोसाले भगवंत नां गुण कीयां, सकडालपुतर नें पास।
सकडालपुतर सुणे हरखत हुवो, पांम्यो अतत हुलास॥ १ ॥
इण गुण कीयां भगवंत रा, ते जथातथ रूडी रीत।
ते गुण सुणें ने हूं हरखीयों, पिण इण री नही परतीत॥ २ ॥
इण गुण कीयां किण कारणे, ते मोने खबर न कांय।
इण रे छल छिदर छे अति घणां, फंद मे म्हांखण रा करे छे उपाय॥३॥
पिण म्हे तो इण ने ओलख लीयो, वले ओलख्यो इण रो आचार।
वले सरधा जांणूं छूं एहनी, इण मे गुण नही जांणूं लिगार॥ ४ ॥
ओ बुगलध्यानी ज्यूं वण्यों, इण रो क्याने करूं वेसास।
ओं मीठो वोले छे मों कने, म्हांखण गला मे पास॥ ५ ॥
इण ने कपटी कदाग्रही जांणने, मून साभ रह्यों तांम।
पाछो जाब जवाब कीयो नही, जब फेर कहें छे आम॥ ६ ॥

ढाल : ६

[म्हारी सासू रो नाम छ फूली]

सकडालपुतर नें बोलावें, भगवंत नां गुण मुख सूं गावें।
मोटा गुवाल पुरष छें तांम, ते आयां हुता इण ठाम॥ १ ॥
जब सकडालपुतर कहे इण ने, मोटा गुवाल पुरष कहे किणने।
जब गोसालो कहे सुण तू सधीर, मोटां गुवाल छे श्री महावीर॥ २ ॥
जब सकडालपुतर कहे तांम, सुण रे गोसाला आम।
भगवंत महावीर नें ताय, मोटां गुवाल कहे किण न्याय॥ ३ ॥
जब गोसालो कहे सुण म्हांरी वाय, मोटा गुवाल कहूं इण न्याय।
गुवाल छें गायां रो आधार, ज्यूं अं भव जीवां ने हितकार॥ ४ ॥
गुवाल विण गाया अटवी मझार, किणरोइ न दीसें आधार।
सिंघ चित्तादिक त्याने मारें, फाडे तोडे सरीर विगाडे॥ ५ ॥
त्यांने गुवाल पाछी घेर आंणें, त्याने घाले बाडा मे ठिकाणे।
वले करे रुखवाली वारूवार, इसडो गुवाल गाया ने आधार॥ ६ ॥
जिम संसार अटवी रे माही, जीव भमण करे छे ताहि।
तिण संसार मे कुगुर मिथ्याती, सिंघ चित्तादिक ना साथी॥ ७ ॥
त्यारें घाले हीया मे मिथ्यात, तिण सूं पांमे अनती घात।
त्यांनें सवलो मूल न सूझें, उंधी सरधा माहें अलूझे॥ ८ ॥
घणां जीव करे कुकरम, ते तों ओलखे नही जिण धर्म।
न्हासता रांक जीवां ने मारे, त्याने मार खाअे वारूवारे रे॥ ६ ॥
जीवा ने छेदे भेदे कुरीत, जीवत सूं करे विपरीत।
वले खोसें लूंटें घर पाडे, विविध परकारे जीवा ने मारे॥ १० ॥
इत्यादिक करे छें कुकरम, त्यांने ओलखावे जिण धर्म।
वले समकत धर्म पमावे, त्यांरा कुकरम सर्व छोडावे॥ ११ ॥
भव जीव ते गायां समाण, त्यांरा घट माहे घाले ग्यांन।
एहवा तिरण तारण जगनाथ, धर्म रूपीयो डांडों त्यारें साथ॥ १२ ॥
धर्म डांडे करी वारूवार, जीवा ने पडवा नही दें उजाड।
बाडा रूप छे मुगत निरवांण, पोहचावे छे तेह ठिकाण॥ १३ ॥
इणविध करें वीर गुवाली, भव जीवा तणी रुखवाली।
इण कारण हो पुतर सकडाल, महावीर सांमी मोटा गुवाल॥ १४ ॥

मोटां गुवाल कह्यां इण न्याय, ते तूं संका म आंणें कांय।
तिरण तारण छे अंतरजांमी, भव जीवां तणा छें सांमी ॥ १५ ॥

दुहा

गोसाले भगवंत नां गुण कीयां, ते सकडालपुतर सुणीया कांन।
ते गुण तो जथातथ जांणीया, एहवाइज छें भगवांन ॥ १ ॥
गुण करों तो नचित करों, पिण इण री नहीं परतीत।
ओं तो मायावीयों कपटी घणों, इण री कदे न आछी रीत ॥ २ ॥
ओ वेसासघाती छें पापीयो, समकत रो विघंसणहार।
ओ थेट सूं निंदक भगवांन रो, इण मे किहांथी भलीवार ॥ ३ ॥
इणने जांण कुपातर थेट रो, न दीयों आदर सनमांन सतकार।
इण सूं जावक मीट मेली नही, मुन साझे रह्यो तिण वार ॥ ४ ॥
जब गोसाले इम जांणीयो, मुन साझ रह्यो तांम।
तो वले करूं इण आगलें, भगवंत नां गुणग्रांम ॥ ५ ॥

ढाल : १०

[इण पुर कांबल कोइ न लेसी]

जब सकडालपुतर पूछे छे आम, भगवत नां करतो गुणग्राम।
अठें आया हुंता मोटां सारथवाह, ते चाले चलावें सूधें राह ॥ १ ॥
जब सकडालपुतर इणनें पूछे आम, मोटा सारथवाह किण ने कहे छे तांम।
त्यांरों नांम तूं मोनें बताय, जब गोसालो नांम कहे छे ताय ॥ २ ॥
समण भगवंत श्री महावीर, मोटा सारथवाह छे साहस धीर।
ते चावो प्रसिध लोक मझार, तिण में झूठ नही छें लिगार ॥ ३ ॥
जब सकडालपुतर इण नें पूछे आंम, एं तों अरिहंत भगवत मोटका सांम।
त्यांनें सारथवाह कहे छें किण न्याय, तिण रो अर्थ तूं कहिने बताय ॥ ४ ॥
जब गोसालो कहे सुणें चितल्याय, मोटां सारथवाह कहूं छूं इण न्याय।
समण भगवत श्री महावीर, ते सीह जिम विचरे छें साहस धीर ॥ ५ ॥
जे सारथवाह चलावें साथ, त्यांरे साथे आवें केइ नाथ अनाथ।
त्यांनें भोजन आपे काल रा काल, त्यांनें चोरादिक नों उपद्रव दें टाल ॥ ६ ॥
त्यांरी रात दिवस खबर लेतों, त्यांनें असणादिक चावें ते देंतो।
त्यांनें विसम अटवी उजार लंघावें, सुखे समाधे नगर पोहचावें ॥ ७ ॥

ते तो संसार नां छें सारथवाह, ते तों संसार नों कटावें राह ।
पिण भगवंत तो भावे सारथवाह, भव जीवां रो भावे कटावें राह ॥ ८ ॥
संसार मांहें त्रास पांमें पमावें, त्रास पामता जीव नासें नसावें ।
वले पर जीवनें विणास पमाडे, छेदें भेदें वले जीवां मारें ॥ ९ ॥
पर जीव लूंटे वाट पाडें धारा, इत्यादिक सावज्ज जोग व्यापारा ।
एहवा कुकरम कर कर जीव, देवे छें नरकादिक नी नींव ॥ १० ॥
रोग सोगनें आपद दुख अनेक, संसार मांहे जीव पांम्या छें वशेख ।
एहवा दुख में दुख पांमे छें अतीव, वले उंधी सरधा झाले रह्या जीव ॥ ११ ॥
त्यांनें धर्म रूपीया पंथ मांहें घाले, उन्मार्ग मिथ्यात में जातां पालें ।
ग्यांनादिक गुण त्यांनें आप, सुमार्ग मांहें त्यांनें राखे थाप ॥ १२ ॥
संसार रूपणी अटवी मझार, तिण सेती उतारे पार ।
त्यांरा जनम मरण दुख सर्व मिटाय, सुखे २ मेले मोख पाटण मांय ॥ १३ ॥
एहवो सुध. बतावे छें राह, तिणसूं महावीर सांमी मोटां सारथवाह ।
म्हें समण भगवंत ने ताय, महा सारथवाह कह्यां इण न्याय ॥ १४ ॥

●

दुहा

गोसाले गुण कीयां तके सांभल्यां, सकडालपुतर तिणवार ।
ते गुण तो साचा करे जाणीयां, तिणमें झूठ न जांण्यो लिगार ॥ १ ॥
पिण गोसाला नें भगवांन रो, निज भगता न जांण्यों लिगार ।
इण ने जांण्यों कुपातर मूलगों, कूड कपट तणों भंडार ॥ २ ॥
इण गुण कीयां भगवांन रा, आप रा मुतलब कांम ।
एहवो जांणे गोसाला भणी, मुन साझे रह्यां ठांम ॥ ३ ॥
जब गोसाले इम जांणीयो, सकडालपुतर अजेस ।
मोसूं आवक मीट मेली नहीं, बोल्यों पिण नहीं लवलेस ॥ ४ ॥
तों फेर करूं भगवांन रा, इण आगे गुणग्रांम ।
जो सेज्जा संथारो दें मों भणी, तो रहे हमारों मांम ॥ ५ ॥

ढाल : ११

[चउपइ नी]

वले सकडालपुतर नें कहें छें गोसाल, सांभल हो पुतर सकडाल ।
मोंटी धर्म कथा नां कहणहार, अठें आव्या हुंता इण सहर मझार ॥ १ ॥

जब सकडालपुतर पाछो कहे आंम, गोसाला नें पूछे तिण ठांम।
धर्मकथा ना कहणहार, तूं किण ने कहें मों आगें इणवार॥ २॥
जब गोसालो कहे भगवंत महावीर, धर्मकथा कहणनें साहस धीर।
त्यांने कहूं छूं धर्मकथानां कहणहार, यां सूं इधको नही कोइ लोक मझार॥ ३॥
जब सकडाल पुतर पूछे छें ताय, गोसाला नें कहें बतलाय।
मोटी धर्म कथा नां कहणहार, तूं भगवंत नें कहे छें इणवार॥ ४॥
ते किण अर्थ तूं कहें छे तांय, तिण रो न्याय तूं मोहि बताय।
जब गोसालो कहें सुण तूं चितल्याय, धर्मकथा ना कथक कहू ते न्याय॥ ५॥
समण भगवंत श्री महावीर, धर्मकथा कहे साहस धीर।
मोटीं धर्मकथा कहे मोटे मंडाण, तेहनो पार नहीं परमांण॥ ६॥
संसार कंतार अटवी मझार, तेहनो कहितां न आवें पार।
नरकादिक गति च्यारूंइ मझार, त्यांमें भमण करें छे जीव वारंवार॥ ७॥
घणां जीव विणास पामें तिण माय, कुकरम जीव करें छें अन्याय।
छेदन भेदन करे जीवां री घात, लूंटा विलूटा करें दिन रात॥ ८॥
कुमारग पडता जीव अनेक, न्याय मारग भूला भमें रे वशेख।
मिथ्यात मत में झोला खाय, त्यांनें धर्म अधर्म री खबर न काय॥ ९॥
आठ करम रूपीया पडल अतीव, त्यां करमां सूं ढांक्या पाड्या छेंजीव।
ते पडीया मोह मिथ्यात रे मांहि, त्यां रें ववेक रूपीया नेतर नाहि॥ १०॥
त्याने हत जुगत कर विविध परकार, वागरणा करें वारूंवार।
त्यानें धर्म कथा कहे आंणें ठाय, ग्यांनादिक घालें घट मांय॥ ११॥
संसार रूप अटवी थी काढें बार, निज हाथां करी पहुचाडे पार।
त्यांरी आवागमण देवें रे मिटाय, सुखे २ पोहता करें सिवपुर मांय॥ १२॥
एहवी धर्मकथा कहे साहस धीर, समण भगवंत श्री महावीर।
तिण सूं धर्मकथा नां कहणहार, इण न्याय कह्यां त्यां नें इणवार॥ १३॥

दुहा

ए गुण भगवंत रा सांभल्या, गोसाला रे पास।
ए गुण तों साचा करे जांणीया, पिण इणरो तो न कर्‍यो वेसास॥ १॥
इणनें जांणें कुव्दी कदाग्रही, जाण्यों माठ मिथ्याती तांम।
तिण सूं मीट न मेली तेहथी, मुन साझे रह्यों तांम॥ २॥

दुहा

गोसाले गुण कीयां भगवांन रा, ते जांण्या जथातथ अदभूत।
हिवे पारखा करवा एहनीं, इण ने पूछे छें सकडाल पुतर ॥ १ ॥
थे चुतर विचक्षण एहवा, निपुण डाहा प्रवीण वसेख।
वले न्यायवादी दीसो घणां, भलो लाभो थे उपदेस ॥ २ ॥
थे जथातथ गुण कीयां भगवांन रा, तिण लेखे थांरो सुध विगनान।
तुम्हे मेघावी पिंडत दीसो घणा, डाहा चुतर घणां बुधवांन ॥ ३ ॥
धर्म आचार्य म्हांरा, धर्म उपदेसक श्री महावीर।
तूं समर्थ छे म्हांरा गुर थकी, चरचा वाद करण सधीर ॥ ४ ॥
जब गोसालो कहे सकडालपुतर ने, हूंतो समर्थ नही इणवार।
हू भगवत थी चरचा करण, म्हांरी आसंग नही छें लिगार ॥ ५ ॥
जब सकडालपुतर कहे तेहनें, किण कारण समर्थ नाय।
जब गोसालो कहे छे तेहने, ते न्याय सुणे तूं चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल : १३

[मीठो छे पुन संसार में]

धूरत गोसालो छे अति घणो, तिण रा दुष्ट घणा परिणांम।
ते कपटी थको भगवांन रा, जथातथ करें गुणग्राम ॥ ध्रू० १ ॥
सकडालपुतर ने रीझायवा, करे भगवंत नां गुणग्राम।
सेज्या संथारा रे कारणें, एकंत मुतलब कांम ॥ २ ॥
जाणे जायगा उतरूं एहनी, तो रहे लोकां माहे भर्म।
तो उघाड पडे नही लोक मे, ओ पिण रहे मोसूं नर्म ॥ ३ ॥
जो जायगां उतरू एहनी, जब ओ पिण आवसी तांम।
हेत जुगत करी तेहनें, इण ने पिण पाछो आण सूं ठाम ॥ ४ ॥
तो म्हारी तो लघूता करू, भगवत रा करू गुणग्राम।
तो कहूं हलकापणो माहरो, इण रा गुर ने इधका कहूं तांम ॥ ५ ॥
एहवी करे विचारणा, सकडालपुतर नें कहे तंत।
हू चरचा न करूं भगवांन थी, ते सांभल एक दिष्टत ॥ ६ ॥
तरुण जुवान कोइ पुरष छे, वले बलवंत नें बुधवांन।
प्राक्रम तिण रो छें अति घणो, वले चतुर नें चोखो विगनान ॥ ७ ॥
एहवो बलवत पुरप जुवांन छे, ते तो बोकडा जीवा नें तांम।
वले गाडर सुअर ने कूकडा, वले तीतर वटेरा छें आम ॥ ८ ॥

लावा पखी ने परेवडा, कविजल काग ने सिचाण।
तिणनें बलवंत पुरुष हाथे ग्रहें, जीवा रा कुण कुण ठिकांण॥ ९॥
त्यांरा पग खुरीया पाखंडा, पूंछ सीग ने पोतरवाल तेह।
ज्या ज्यां पकडें छें तिहां तिहां, निश्चें काठो करे जेह॥ १०॥
त्यांनें पगलोइ भूरवा दे नही, सरकवा पिण नही दे लिगार।
जो उ जोर करे तिहा उकसें, तिणनें गाढो करे वारूवार॥ ११॥
इण दिष्टंते करी मो भणी, भगवत श्री विरधमान।
हू ज्यू बोलूं ज्यू पकडले, मोनें पग पग कर दें हिरांन॥ १२॥
समण भगवत महावीर जी, हेत जुगत सू करे मोनें खिसट।
वले विध विध सूं वागरणे करी, मोनें मेल दे जावक भिष्ट॥ १३॥
जे जे प्रश्न पूछे छे मो भणी, ते मोनें न उपजें जाब।
मोनें नष्ट करे इण रीत सू, म्हारी जाबक पाड दे आब॥ १४॥
एहवा ग्यान गुणा सहीत छे, भगवंत श्री महावीर।
त्या पुरषा सू चरचा करवा भणी, कोइ नही छे साहस धीर॥ १५॥
हूंतो बकरादिक जीव सारिखो, उवे छे बलवत पुरुष समांण।
तिण कारण हू समर्थ नही, त्यांसू चरचा करवा सावधान॥ १६॥

●

दुहा

ए वचन सुणे गोसाला तणा, सकडालपुतर जांण्यो एम।
इण रे खोटो मत नही छोडणो, ते चरचा करसी केम॥ १॥
इण गुण कीयां मो आगले, ते मुतलब केरे कांम।
न्याय मारग रो अर्थी नही, इण रा उवेहीज छे परिणाम॥ २॥
एहवी करेय विचारणा, कहे गोसाला नें आंम।
म्हांरा धर्म आचार्य तेहनां, जथातथ कीयां गुणग्राम॥ ३॥
तिण कारण देउ छू तो भणी, पडीहार सेज्या सथार।
वले कुंभकार हाट छे मांहरा, जाय उतरो तेह मझार॥ ४॥
हूं देउं सेज्जादिक तो भणी, तिण रो धर्म तप नही छे लिगार।
आ सरधा जाणें तूं म्हांरी, तिण रो कर लीजें तूं विचार॥ ५॥

ढाल : १४

[हरे हां सुग्यांनी जो०]

ए वचन सुणे सकडालपुतर नो, गोसाले कीयो अगीकार।
तिण जायगां मांहे आय उतस्यो, मन में हरख हुवों तिणवार।
गोसालो कपटी पूरो छे, अरे हां अग्यांनी।
भितर कूडो छें॰॥ १ ॥
सकडालपुतर नी जायगां लेवण, इण कीयां अनेक उपाय।
इण गुण कीयां ते कपटी थकें, वले छल दर्गो मन मांय ॥ २ ॥
सकडालपुतर तिहां आवे जावे, घर कांम वार अनेक।
जव गोसाले इणनें देख ने, मीठा वचनां बोलावें वशेख ॥ ३ ॥
सकडालपुतर सेती गोसाले, चरचा करे विविध प्रकार।
हेत दिष्टंत कूडा कुहेत सूं, चोयणा कीधी छे वारूवार ॥ ४ ॥
जे जे गोसाले चरचा करतां, कीयां अनेक विध तांन।
सकडालपुतर सर्व सांभले, इण नें जांण्यों जहर समांण ॥ ५ ॥
आगें तो इण नें जांणतो हुंतो, कूड कपट तणो भंडार।
हिवें वले वशेखे जांनीयो, कुमारग रो चलावणहार ॥ ६ ॥
गोसालो सकडालपुतर नें चलावा, कीयां अनेक उपाय।
कूड कपट वहु केलव्या, पिण कारी न लागी कांय ॥ ७ ॥
सकडालपुतर गोसाला आगें, चलीयो नही मूल लिगार।
अडिग रह्यों जिण धर्म मे, गाढो सेंठो तिणवार ॥ ८ ॥
जव जावक थाक गयो छे गोसालो, घणीं खेद पांम्यो मन मांहि।
सकडालपुतर ने फेरवा, गोसाला री समर्थ नांहि ॥ ९ ॥
सकडालपुतर री आसा छोडे, कीयो तिहांथी वीहार।
पोलासपुर नगर थी नीकल्यों, चाल्यों जनपद देस मभार ॥ १० ॥

●

दुहा

गोसालो तिहांथी गयां पछे, सकडालपुतर रूडी रीत।
श्रावक रा व्रत पालतो, सील व्रत गुण व्रत सहीत ॥ १ ॥
विचरे छे आतमा भावतो, वेराग में भाव सरस।
चवदें वरस तिण नें नीकल्या, वरते छें पनरमो वरस ॥ २ ॥

मध्य रात समा तेहने विषे, पोषध साला माहि।
अंगीकार करें धर्म प्रज्ञा, सुखे विचरे छे ताहि॥ ३॥
मध्य रात समा तेहने विषे, सकडालपुतर ने पास।
एक देवता परगट हुवो, आयों उपसर्ग देवण ने तास॥ ४॥

ढाल : १५

[जगत गुरु त्रिसलानन्द]

तिण रा हाथ में खडग डरावणो, तिणरी तीखी धारा अतत।
ते नीला उत्तपल सारिखा छे, ते चलका चलक करत।
दुष्टी देव आयों छोडावण धर्म॥ १॥
सकडालपुतर श्रावक प्रतेंजी, देवता वोलें छें विपरीत।
हंभो रे अपथ पथीया, तूं लज्या ने लिखमी रहीत॥ दु० २॥
अकाले कोइ मरण वांछे नही, तिण मरण रों तूं वांछणहार।
काली अमावस रा जण्या. तूं पुन गयो परवार॥ ३॥
धर्म छोडणों तो निश्चे नहीं, हिवे सेठो रहणो छें तोय।
पिण जो तूं धर्म न छोडसी, तो थांरो जीतब देसूं विगोय॥ ४॥
थांरा वडा पुतर नें आंण ने, तो आगल करसूं घात।
नव सूला करसूं थांरा पुतर नां, आ भूठी म जाणे तूं वात॥ ५॥
तेल माहे तल सूं तेहने, ते तेल कडाहीया मे घात।
तिण मांस ने लोही करी, हूतो छांट सूं थारो गात॥ ६॥
जब आरतध्यांन तूं ध्यावतों, तूं करसी अकाले काल।
जाय पडसी तूं माठी गति मझे, वांधे करमां रा जाल॥ ७॥
ए वचन सुणे देवता तणो, वीहणों नही लिगार।
धर्म ध्यांन करतो थको, सुखे विचरे निरधार॥ ८॥
जव देवता इण ने देखीयों, ओ तो भय नही पाम्यो लिगार।
जब दोय तीन वार इमहीज कह्यो, तो पिण वीहनो नही तिणवार॥ ९॥
जब देवता रूठों अति घणो, तिण रा वडा पुतर ने आण।
तिण रा मुख आगे नव सूला करी, तेल माहे तलीया जांण॥ १०॥
तिण रा वल बलता मांस लोही थकीजी, देवता छांट्यो सरीर।
तिणसूं उजल वेदन हुइ आकरी जी, अत्यंत उपनीं पीर॥ ११॥
ते समें परिणांमें वेदना, धर्म जांणे अहीयासी तांम।
वले भय नहीं पांम्यो तेहथी, दिढ राख्या परिणांम॥ १२॥

अवीहतो थको इण नें देखनें, वले देवता बोल्या आंम।
अजे धर्म छोड दें, नहीं तों वचेट मारुंला तांम॥ १३॥
दोय तीन वार कह्यो देवता, थांरा वचेट पुतर नें आंण।
थांरा मूंहडा आगें मारसूं, आगली रीत लीजों जांण॥ १४॥
तो पिण सकडालपुतर व्रीहनों नहीं, धर्म ध्यांन रह्यों चित्त ध्याय।
जव देवता क्रोध करे तिहां, वचेट पुतर ल्यायो ताय॥ १५॥
तिण रा पिण नव सूला करे, तेल माहें तलीया ताय।
मांस लोही सूं छांट्यो तेहनें, वले वेदना हुइ अथाय॥ १६॥
तो पिण समे परिणांमे वेदन सही, पिण चलीयो नही लिगार।
वीहनों पिण नही तिण समें, धर्मध्यांन ध्यावें तिण वार॥ १७॥
धर्मध्यांन ध्यावतो देख ने, वले देवता कोप्यों तांम।
आगें करडो वोल्यों ज्यूं करडों वोलीयो, वले दुष्ट घणां परिणांम॥ १८॥
के तूं अजे धर्म छोड दे, मांन लें तूं म्हांरी वात।
नही तो थांरा छोटा पुतर तणी, आगें कीधी ज्यूं करसूं घात॥ १९॥
जब आरतध्यांन तूं ध्याय ने, मर नें जासी माठी गति मांहि।
तो पिण सकडालपुतर वीहनो नहीं, धर्म ध्यांन ध्याए रह्या ताहि॥ २०॥
धर्म ध्यांन ध्यावतो देखने, वले देव कोप्यो तिणवार।
छोटो पुतर आंण नव सुला कीयां, त्यांने तलीया तेल मभार॥ २१॥
लोही मांस सूं छांट्यों सरीर नें, जब वेदन हुइ अतंत।
ते पिण समे परिणांमें खमी, पिण चलीयों नही मतवंत॥ २२॥
तीनां वेटां रा नवसूला करे, लोही मास सूं छांट्यो तांम।
अणुकंपा न आंणी अंग जात री, वले सेठां राख्या परिणांम॥ २३॥
मत मारण रौ कह्यो नही, ते तो जांणें सावद्य वाय।
मोह अणुकंपा न कीधी तेहनी, सेठो रह्यो धर्म ध्यांन ध्याय॥ २४॥
इणनें सेठो देख नें देवता, क्रोध कर वोल्यो माठी वांण।
के तो अजे धर्म ने छोड दें, कें अस्त्री मारसूं आंण॥ २५॥
थांरी अस्त्री अगिमित्ता वनीत छे, धर्म नां साज नी दें्णहार।
तिणनें मारसूं रीत आगली, तिणने पिण तलूं तेल मभार॥ २६॥
तिण रा मांस लोही सूं छांट सूं, जब वेदन होसी तोनें अथाय।
जब आरतध्यांन तूं ध्याय नें, मरे जासी माठी गति मांय॥ २७॥
तो पिण सकडालपुतर चलीयो नही, इण छोड्यो नही जिण धर्म।
आ पिण जासी कमाइ आपरी, इण रा आहीज भोगवसी करम॥ २८॥

दुहा

अठा तांइ तो सेठों रह्यो, धर्म ध्यांन ध्यावें एकधार।
जब क्रोध कर नें देवता, बोल्यो दोय तीन वार ॥ १ ॥
दोय तीन वार देवता कह्यां थकां, सकडालपुतर मन मांहि।
अधवसाय मनोगत उपनों, मोह भाव परगटीया ताहि ॥ २ ॥
ओ पुरष अनार्य कहे जिसो, म्हांरी अस्त्री नी करसी घात।
एहवी अस्त्री मोने किहां थकी, तो इण ने पकडूं ज्यूं न करे घात ॥ ३ ॥
मोह अणुकंपा आंण अस्त्री तणी, इणने पकडवा उठ्यों ताहि।
जब देवता तो चलतो रह्यो, इण रें थंभो आयो हाथ मांहि ॥ ४ ॥
जब हुवों कोलाहल तिण समे, ते सुणीयो अगिमित्ता नार।
तिण आय भरतार ने पूछीयो, हा बो किण कीयो इण वार ॥ ५ ॥
कोइ पुरष अनार्य इहां आय नें, म्हांरा तीन पुतरां नी कीधी घात।
त्यांरा सूला तले मोने छाटीयों, ते मांड कही सर्व बात ॥ ६ ॥
वले कह्यो थांरी अस्त्री तणी, करसूं थांरा मुख आगल घात।
जब हू उठ्यों तिणने पकडवा, सांभल तिण री बात ॥ ७ ॥
ते अनार्य पुरष न्हासे गयो, म्हारे थंभो आयो हाथ।
तिण सूं कोलाहल म्हे कीयो, ते मांड कही सर्व बात ॥ ८ ॥

ढाल : १६

[इम धन्नो धण नें परचावे]

अगिमित्ता नारी कहे छे कंत नें, थे चिंता म करो लिगारो रे।
थांरा पुतर तीनूंइ सूता सुखे छें, तिण में संका म जांणो लिगारो रे।
सकडालपुतर ने अस्त्री समझावे* ॥ १ ॥
कोइ पुरष अनार्य छल गयों थानें, ते दुष्टी माई मिथ्यादिष्टो रे।
तिण थांनें चलावण एहवा चिरत कीयां छे, धर्म सूं करवा भिष्टो रे॥ २ ॥
बेटां री बेलां तो दिढ रह्या थे, चोखा राख्या परिणांमो रे।
मोनें बचावण उठ्या किण लेखे, ओंतो भूंडो कीयो थे कांमो रे॥ ३ ॥
जिण रीतें बेटां रो थे त्यागन कीधो, जिण रीते त्यागी थे मोयो रे।
तो थे मोने बचावण उठ्या इण बेलां, वरतां सांह्यो थे क्यूं नही जोयो रे॥ ४ ॥
थांरो भागो पोसो वरत ने नेम, मोने बचावण काजो रे।
थे तो श्रीजिण वचन सांह्यो नही जोयो, थे तो मोटों कीयों अकाजो रे॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पोसा माहे ममता किणरी न करणी, सावद्य जोग तणा छैं त्यागो रे।
थे मोंनें वचावण रो सावद्य सेव्यो, पोसो नें व्रत नेम भागो रे॥ ६ ॥
तिण रो प्राछित लो थे आलोवण करनें, राखे सुध परिणांमों रे।
सल काढे सुध हुआं तिण सूं, सीझें आतम कांमो रे॥ ७ ॥
सकडालपुतर श्रावक सुण ने, वचन कर लीधों परिमाणो रे।
ते आलोय प्राछित ले सुध हुवो, अस्त्री नों वचन सत जांणों रे॥ ८ ॥
ओ तो अस्त्री ने वचावण उठ्यो, तिण अस्त्री न जांण्यो धर्मों रे।
आ ओलखावण सावद्य निरवद री, तिण रो विरला जांणें मर्मों रे॥ ९ ॥

●

दुहा

अगिमित्ता नामें अस्त्री, आंण्यों भरतार ने ठाय।
हेत जुगत करी तेहनें, रूडी रीत दीयो समझाय॥ १ ॥

ढाल : १७

[धर्म हिए धरो०]

हिवें वारें व्रत श्रावक तणा रे, पाले निरतीचार।
वले इग्यारें पडिमा श्रावक तणी रे, रूडी रीत वूहो एक धारो रे।
धर्म में दिढ रह्यों* ॥ १ ॥

साढा पांच वरसां लगें रे, पडिमा वूहा एकधार।
वीस वरस श्रावकपणो रे, एक मास तणो संथारो रे॥ २ ॥

आउखो पूरों करी रे, गयों पेंहला देवलोक मांय।
अरणचूओ विमांण मे रे, देव पणें उपनो जायो रे॥ ३ ॥

तिण रो आउखो पल च्यार नों रे, तिण देव तणो छे रे तांम।
ते आउखो पूरों करी रे, छांड देसी ते ठांमो रे॥ ४ ॥

जाय उपजसी मिनख पणे रे, माहाविदेह खेतर मझार।
अवतरसी उतम कुल मझें रे, तिहां भरीया रिध भंडारो रे॥ ५ ॥

ते अनुक्रमे मोटों हुसी रे, बहोतर कला रो रे जांण।
तिहां श्री थिवर पधारसी रे, जब ओं सुणें तिणरी वाणो रे॥ ६ ॥

पछे मात पिता ने पूछ ने रे, लेसी संजम भार।
आठोइ करम खपाय ने रे, जासी मोख मझारो रे॥ ७ ॥

ए सकडालपुतर श्रावक तणी रे, जोड कीधी कोंलवा मझार।
समत अठारे गुणचासे समे रे, आसोज सुद तेरस सुकरवारो रे॥ ८ ॥

●

रत्न : ६

सुबाहु कुमार रो बखांण

दुहा

दांन सुपातरथी तिस्यो, कुमर सुबाहू नो जीव।
ते पाछिल भव सुमख गाथापती, दान थी दीधी मुगत री नीव॥ १ ॥
दांन सुपातर दीयो केहने, किण विध कीयो परत ससार।
कुमार सुबाहू किण विध हुवो, ते सुणजो बिसतार॥ २ ॥
तिण काले ने तिण समे, चोथा आरा नी बात।
हथीसिरष नामे नगर हूतो, ते प्रसिध लोक विख्यात॥ ३ ॥
तिण नगरी रे बाहिरे, इसाण कुण रे माय।
पुफकरड नामे उद्यान थो, छहु रित माहे सुखदाय॥ ४ ॥
कयवनमालीपीया जख तणो, देहरो हुंतो तिण माहि।
साचो परचो हूतो तिण जख तणो, तिणरी महिमा घणी थी ताहि॥ ५ ॥
तिण नगरी नो अधपती, अदीनसतू नामें मोटो राय।
तिणरें धारणी प्रमुष राणीयां, एक सहंस अतेवर ताय॥ ६ ॥
ते ससार ना सुख भोगवे, सुखे काल गमावे छे राय।
त्यारे कुमर सुबाहू आय उपजे, ते सुणजो चितल्याय॥ ७ ॥

ढाल : १

[डाभ मूजादिक नी डोरी]

एकदा धारणी राणी ताहि, पोता रा निज भवन रें मांहिं।
तिहा सेज्या अतत सुकमाल, सुखे सूती राणी तिणकाल॥ १ ॥
सिंह नो सुपनो देख्यो रांणी, जागे ने घणी हरष भरांणी।
राजा कने आइ तिणवार, राजा सुपना रो कीयो विचार॥ २ ॥
राणी ने कह्यो राजान, आपा रे होसी पुतर निधान।
आपा रा कुल मे दीवा समाण, ते जोरावर होसी जोध जुवान॥ ३ ॥
ओ थे सुपनो दीठो निरदोष, आपा ने होसी हरष सतोष।
रांणी ने घणो दे सनमान, तिहांथी सीख दीधी राजांन॥ ४ ॥
हिवे सूर्य उगा पछे राय, पूछे सुपन पाठक ने बुलाय।
रांणी सुपनो दीठो आज रात, ते माड कही सर्व वात॥ ५ ॥
तिणरो अर्थ बतावो मोय, सुपन सास्त्र सारा जोय।
सुपन पाठक सास्त्र देखो, राजा ने कह्यो विवरो वशेख॥ ६ ॥

थारे होसी पूतर निधांन, ते तो कुल माहे दीवा समांण।
होसी राजा तणो राजांन, जोरावर होसी जोध जुवांन॥ ७ ॥
साध होसी तो अणगार सूरो, ससार सूं रहसी दूरो।
इंद्रयांनों जीतणहारो, करम सत्रु ने देसी निवारो॥ ८ ॥
भवण घर सेज्यादिक सुपना रो, सुपन पाठक जन्मादिक सारो।
मेघ कुमर ज्यूं सर्व विसतार, पिण एक नांम सुबाहू कुमारो॥ ६ ॥
सूता जाग्या जाण्या नव अंग, मात पिता ने हुवों उछरग।
भोग समर्थ हुओ जाण, परणावण रा करे छे मडांण॥ १० ॥
पांचसो कराया छे आवास, ते तो ऊचा गगन आकास।
त्या रा सूतर मे कीयां वखाणों, महाबल राजा तणी परे जांणो॥ ११ ॥
पुफचुलकादिक बुधवान, पाचसो राय किन्या परधान।
एक दिवस परणाइ ताम, मन गमती घणी अभिरांम॥ १२ ॥
पांचसो राण्या रे संघात, सुख भोगवें छे दिनरात।
नाटक पडे बत्तीस प्रकार, बाजत्र बाज रह्या धकार॥ १३ ॥
पांच इंद्रयां तणा कांमभोग, मिलीया पुन तणें संजोग।
त्या भोगां मे रहे नित भीनो, त्यामे होय रह्यो तलालीनो॥ १४ ॥
पाछिल भव दीधों पातर दान, तिण सूं जिण धर्म होसी आसांन।
साधु श्रावक किण विध थाय, ते सांभलजो चितल्याय॥ १५ ॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, भगवत श्री विरधमान८
हथीसीरस नगर पधारीया, साथे साधु घणां बुधवान॥ १ ॥
आगना मागे उतरया, पुफकरंड बागरे मांय।
कोणक राय तणी परे आवीयो, अदीणसत्तू नामें राय॥ २ ॥
कुमर सुबाहू पिण आवीयो, जमाली जिम मोटे मडांण।
बदणा करे भगवान ने, सनमुख बेठो आंण॥ ३ ॥
भगवत दीधी देसना, सगलां नें हितकार।
लोकालोक नवतत्व तणो, भिन भिन कह्यो विसतार॥ ४ ॥
वाणी सुण ने परषदा, हिवडे हरषत थाय।
सक्त सारू व्रत आदरे, आया जिण दिस जाय॥ ५ ॥

ढाल : २

[जोगण नें नृप बेहूं हिलमिलीया जा०]

कुमर सुबाहू सुणी वीरनी वाणी, तिणने लागी छे अमीय समांणी ।
पुनवत छे जीव, पाछिल भव दीधी मुगत री नीव ॥ १ ॥
वीर वचन सुणी आयो अतत वेरागो, ज्यूं पासीए कपडे रग लागो ॥ २ ॥
तिण हरप सतोष पांम्यों छे पर्म, तिण जाण लीयो जिण धर्म ॥ ३ ॥
हरख सहीत उठ्यो उजम आण, विने सहीत बोलें मीठी बाण ॥ ४ ॥
म्हे तो सरध्या छे भगवांन तुम तणा वेण, मोने मिलीया थे साचा सेण ॥ ५ ॥
सेठ सेन्यापती राजादिक इणवार, धिन धिन जे हुवें अणगार ॥ ६ ॥
हूं पिण घर छोडे ने ठाउ अणगार, म्हांरी पोहच नही इणवार ॥ ७ ॥
तिणसूं मोंने द्यो श्रावक नां व्रत वार, ते हू पालसूं निरतीचार ॥ ८ ॥
जब वीर कहे तोने ज्यू सुख थाय, तिणरी जेज करो मती काय ॥ ९ ॥
वीर वचन सुणे हुवो हरख अपार, वारे व्रत कीयां अ गीकार ॥ १० ॥
पांच अणुवरत लीधां भगवंत पास, शिख्या व्रत सात लीया तास ॥ ११ ॥
ग्रहस्थ नो धर्म पडवजीयो व्रत बार, समणोवासग हुवो श्रीकार ॥ १२ ॥
सम कालें जोग मिल्यो सुधमांन, हलुकरमी ने मिल्या भगवांन ॥ १३ ॥
जेहवो बीज वावे तेहवा फल लागे, ज्यूं धर्म पामें भवो भव आगें ॥ १४ ॥
पाछिल भव दान सुपातर दीधो, परित ससार दांन थी कीधो ॥ १५ ॥
तिणसूं वीर वचन साभले एकवार, तुरत श्रावक हुवों व्रत धार ॥ १६ ॥
जीवादिक तणों हुवों जांण प्रवीण, पाड्यो मोह मिथ्यात नें खीण ॥ १७ ॥
दोनूं हाथ जोडी नीचो सीस नमाय, लुल लुल बादे जिण पाय ॥ १८ ॥
वीर वांदी रथ उपर बेठो आय, ओ तो आयो जिण दिस जाय ॥ १९ ॥
रूडा रूडा संजोग मिलीया सहू आंणो, उतपत सारी दान रो जाणो ॥ २० ॥
सुपातर दांन सूं जीव तिरया अनंत, तिणरो कहता न आवें अ त ॥ २१ ॥
दांन देतां थकां हलका पाड्या करम, तिण सूं वेगो पायो जिण धर्म ॥ २२ ॥
सुपातर दान देणो जीव ने दोहरो, जिण तिणने नही छे सोहरों ॥ २३ ॥

दुहा

तिण काले नें तिण समे, इद्रभूती अणगार ।
वीर समीपें आय नें, प्रश्न पूछे तिणवार ॥ १ ॥

ढाल : ३

[सोरठ देस मझार दुवारका नग०]

गोतम सांमी पूछे जोडी हाथ, मोनें कहो तिलोकीनाथ ॥ आज हो ॥
किरपा करनें सांमी मो उपरे जी ॥ १ ॥

ओ कुमर सुबाहू तांम, दीसे घणो अभिराम ॥ आ० ॥
सोम वदन छे अति रलीयामणो जी ॥ २ ॥

इष्ट नें इष्टकारी रूप, कांत नें कांतकारी अनूप ॥ आ० ॥
मनोज्ञ पियकारी मन गमतो घणों जी ॥ ३ ॥

सोभागी छें सोमवंत, पियकारी दरसण अतंत ॥ आ० ॥
रूप गुणा करेने अति दीपतो जी ॥ ४ ॥

ओं घणा मिनखां रे मांय, इणरो दीसे रूप अथाय।
इष्ट रूपादिक इण रा सहु भला जी ॥ ५ ॥

साधु जन ने पिण एह, इष्ट कंत लागें छें तेह।
साधा ने पिण लागे अति रलीयामणो जी ॥ ६ ॥

इण रें धर्म तणी परतीत, दीसे सर्व रूडी रीत।
वनीत घणो यो साधु जन तणो जी ॥ ७ ॥

इण री बोली मीठी जांण, लागे अमीय समांण।
गम तो लागे सगला लोकां भणी जी ॥ ८ ॥

इण रो सुंदर रूप आकार, लागे सगलां ने हितकार।
वलभ लागें छे पुनवंत प्राणीयो जी ॥ ९ ॥

ओं सब्दादिक श्रीकार, इण पांमी रिध उदार।
कुण कुण करणी कीधी भव पाछिले जी ॥ १० ॥

ओ वसतो थो किण ठांम, इण रो कांइ गोत ने नांम।
कांइ ने आचार हुतो भव पाछिलें जी ॥ ११ ॥

के इण दीयो सुपातर दांन, साधां ने दे सनमांन।
ममता न आंणी दांत देतां थकां जी ॥ १२ ॥

कें इण पाल्यों संयम भार, श्रावक नां व्रत बार।
कांइने करणी करी भव पाछिलें जी ॥ १३ ॥

कें इण पाल्यों सील अखंड, ते सर्व व्रतांनों मंड।
सील सगला वरतां रो सिरोमणी जी ॥ १४ ॥

के इण तपसा करी करूड, कें खिमा करी भरपूर।
दया नें पाली इण पाछिल भव मझे जी ॥ १५ ॥
के इण भजीया भगवंत देव, के करी साधां री सेव।
कांइ परिणांम राख्या इण पाधरा जी ॥ १६ ॥
कें इण विनों कीयो रूडी रीत, साधां तणों सुवनीत।
भाव भगत करी किण भावसूं जी ॥ १७ ॥
के ओं सरल सभावी जीव, तिण सूं दीधी मुगत री नीव।
सुलभ बोधी हुवो किण भव मझे जी ॥ १८ ॥
इण पाछिल भव मझार, कांइ करणी कीधी सार।
अें पुन उपजाया इण किण रीत सूं जी ॥ १९ ॥
कें इण समण निग्रंथ रें पास, आर्य वचन सीख्यों हुवें तास।
ते पिण खबर नही छें मोनें एहनी जी ॥ २० ॥
इण री विवरा सुध वात, मोने आप कहो जगनाथ।
मन रा मनोरथ पूरो मांहरा जी ॥ २१ ॥

दुहा

वीर कहें सुण गोयमा, इण जंबू दीप रें मांहि।
इण हीज भरत खेतर मझे, नगर हथिणापुर ताहि ॥ १ ॥
तिहां वसतो सुमख गाथापती, ते प्रभूत घणो रिधवत।
ते रागी घणों जिण धर्म नो, ते डाहो घणों मतिवत ॥ २ ॥
तिण काले नें तिण समें, धर्मघोष अणगार।
ते पांचसो साधां सूं परवस्था, आया हथिणापुर नगर मझार ॥ ३ ॥
आग्या मांगे उतस्था, सहसब वन उद्यांन।
तिरण तारण भव जीव ना, गुण रतनां री खान ॥ ४ ॥
धर्मघोष तणो सिष्य छे, सुदत्त नामे अणगार।
तिण तप कर काया सोषवी, सफल कीयों अवतार ॥ ५ ॥
ते परकत रो भद्रीक छे, ते सरल घणों सुवनीत।
मास मास खमण पारणो करें, तेजू लेस्या सहीत ॥ ६ ॥
त्यां पेहलें पोहर सझाय करी, बीजे ध्यांनज ध्याय।
तीजे पोहर उठ्या गोचरी, हथिणापुर नगर ने मांय ॥ ७ ॥

ढाल: ४

[वीर वखाणी राणी चेलणा]

गोचरी अटन करतो थको जी, हथिणापुर नगर मझार।
सुमख गाथापती ने घरे जी, परवेश कीयों तिण वार।
साधजी भलाइ पधारिया जी॰॥ १ ॥
सुमख गाथापती तिण समें जी, साधु ने आवतो देख।
मन में संतोष पांम्यों घणों जी, वले हरषित हुवों विशेख ॥ २ ॥
तिण आसण छोड्यो उतावले जी, वले उभो हुवो मान मरोड।
वले कीयों उतरासण जुगत सूं जी, अंजली कीधी कर जोड ॥ ३ ॥
सात आठ पग सांह्मो आय ने जी, लुल लुल नीचो जी थाय।
तीन परदिखणा देइ करी जी, बंदना कीधी सीस नमाय॥ ४ ॥
आज मांहरी रे जागी दसा जी, पूगी म्हारा मन तणी कोड।
आज भलो भांण उगीयो जी, आज भाग कीयो म्हांरे जोर॥ ५ ॥
आज करतारथ हूं थयों जी, मुनीवर आयां म्हांरे वार।
ज्यांरें पुरषां तणी चाव नां जी, त्यारो म्हें दीठो दीदार॥ ६ ॥
मुख सूं गुण ग्रांम कीयां घणां जी, ते पिण वारूं जी वार।
वले भाव सहीत बदणा करी जी, भाव सूं दीयो सतकार॥ ७ ॥
रसोडा घर माहे ले जाय ने जी, प्रतिलाभ्या च्यारूंइ आहार।
दांन देता ने दीयां पछे जी, पांमीयो हरष अपार॥ ८ ॥
दरब दातार दोनूं सुध था जी, तोजो पातर सुध जांण।
वले सुध तीन करण तीन जोगरो जी, इण रे इसडो मिलीयो जोग आण॥ ९ ॥
इण विध साधु प्रतिलाभीयो जी, असणादिक च्यारूंई आहार।
तिण मिनख तणो आउ बाधीयो जी, वले कीधो तिण परित संसार॥ १० ॥
तिहां सुगंध पांणी देव वरसावीयोजी, वले बूठा पांच पांच वरणा जी फूल।
वले विरखा करी सोवन तणी जी, बूठा वले वस्त्र अमूल॥ ११ ॥
देव वजावे देव दुदभी जी, अकास रे अतर ठाम।
मोटे सब्दे घोष पाडीयो जी, दान रा कीया गुणग्राम॥ १२ ॥
धिन धिन करे छे देवता जी, धिन धिन करे नर नार।
सुमुख गाथा पती नें कहे जी, इण सफल कीयो अवतार॥ १३ ॥
वले नगर हथणापुर तेहमें जी, घणा लोक करे गुणग्राम।
इण जीतब जनम सुधारीयो जी, तिण साधु प्रतिलाभीया ताम॥ १४ ॥

॰ यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पाच दरब परगट हूवा जी, ओ पिण लोकां इचर्य देख।
तिण सू ठाम ठाम वातां करे जी, विवरा सुध वशेख ॥ १५ ॥
मोह करम पतलो पड्यो जी, तिण सूं जोग वरत्या सुधमान।
जब मिथ्याती थके पिण साधु ने जी, उलट परिणामां दीयों दान ॥ १६ ॥
उतकष्टा परिणामा मिथ्याती थकेजी, उलट परिणांमां दीयों दान।
विनो भगत करे साध नी जी, वले देइ घणों सनमांन ॥ १७ ॥
तिण परत ससार कीयो दांन थी जी, वले करमा नें कर दीया सोख।
वले पुन तणा थाट बाधीया जी, सुखे २ जासी मोख ॥ १८ ॥
जो उतकष्टा परिणाम सूं समकती जी, उलट भाव सू देवे निरदोख।
ते तीथकर हुवे पुन बांधने जी, तीजे भव जाअे निश्चेइ मोख ॥ १९ ॥
दान देवो उतकष्टा परिणाम सू जी, जिण तिणनें नही छे आसांन।
वले दोहिलो उलट परिणांम सू जी, देणो सुपातर दान ॥ २० ॥
ते दान दीयो सूमुख गाथापती, कुमर सुबाहू तणें जीव।
परित संसार कीयो तिहां जी, तिण दीधी मुगत री नीव ॥ २१ ॥

दुहा

ते सूमुख नांमे गाथापती, घणा वरस आउखो पाल।
सुखे समाधे दिन पूरा करी, कीयो तिहांथी काल ॥ १ ॥
इण दान सुपातर तेहथी, कीधो परित ससार।
वले पुन बाध्या ते भोगवे, तेहनों कहूं विस्तार ॥ २ ॥
बीज सारू फल लागसी, कर देखो मन मे विचार।
ज्यू दान सुपातर बीज मोख रो, आवागमण मिटावण हार ॥ ३ ॥
उत्तम बीज वाया थका, उत्तम विरख हुवे ताय।
पान फूलादिक सर्व पेहिली हुवे, अनुक्रमे छेहले फल थाय ॥ ४ ॥
ज्यू दान सुपातर ने दीया, पुन वधे करे करम सोख।
पेहला पुन वधीया ते भोगवी, अनुक्रमे पछे जाअे मोख ॥ ५ ॥
ते सुमुख नामे गाथापती, पुन भोगवे छे ताय।
ते दान तणा परताप थी, ते साभलजे चितल्याय ॥ ६ ॥

ढाल ५

[मम करो काया माया कारमी]

इण नगर हथीसीर्ष नो धणी, अदीणसतू नामे राय जी।
ते हेमवंत ज्यूं प्रसिध छे, तिण रे रिध घणी घर मांय जी।
पुन तणा फल एहवा* ॥ १ ॥
इण राय तणी राणी धारणी, पटराणी सारां सिरे ताय जी।
तिण धारणी रांणी री कूख में, पुतरपणे उपनों आय जी ॥ २ ॥
ते रमणीक सेज्जा सूता थकां, सीह नो सुपनो देख्यो तांम जी।
अनुक्रमे रांणी तिण जनमियो, तिण रो कुमर सुबाहू दीयों नांम जी ॥ ३ ॥
सुपनादिक साराइ बोल नों, आगे कह्यो छे जिम विसतार जी।
वले महोछव कीयां घणा जनम ना, घणों धन खरच्यो तिण वार जी ॥ ४ ॥
इणरा दिन २ जतन कीयां घणा, पाच धायां करी घणी प्रतिपाल जी।
ओ वधीयो छे सुखे समाध सूं, गिरी गुफा जिम चपा नी डाल जी ॥ ५ ॥
दिढपइना तेहनी परे, जाणजो सर्व विसतार जी।
सुखे समाधे मोटो हुवों, रायपुतर सूबाहू कुमार जी ॥ ६ ॥
आठ वरस वीता पछे भण्यो, बोहोतर कला रो हुवो जांण जी।
नव अंग सूतां जाग्या एहनां, डाहो हुवो चुतर सुजाण जी ॥ ७ ॥
भोग समर्थ हुवो जाण ने जी, मात पिता तिणवार जी।
आवास कराया तिणरे पांचसो ते सोभ रह्यां छे श्रीकार जी ॥ ८ ॥
पछे रायवरकन्या ते पांच सो, परणाइ एक दिवस मझार जी।
ते रूप में अति रलीयांमणी, अपछर रे उणीयार जी ॥ ९ ॥
त्यांसूं संसार नां सुख भोगवे, रमणीक मेहलां मझार जी।
ते उतपत छे सहू दांन री, रिध पामी छे घणी श्रीकार जी ॥ १० ॥
सर्व संपदा सुबाहू कुमार नी, ते दांन सू पांमी छे तांम जी।
वले धर्म पाम्यों तिण दान थी, तिण सूं पोहचसी अविचल ठांम जी ॥ ११ ॥

दुहा

वले गोतम सांम पूछा करे, भगवत नें कर जोड।
ओ कुमर सुबाहू इण भव मझे, दिख्या लेसी घर छोड ॥ १ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जब वीर कहे सुण गोयमा, ओ तो इणहीज भव मझार।
राज रमण रिध सर्व परहरे, होसी मोटो अणगार ॥ २ ॥
वीर वचन सुणे हरखत हुआ, वीर ने वांद्या सीस नमाय।
विचरे छे आतम भावता, धर्म ध्यांन रह्यां चित ध्याय ॥ ३ ॥
एकदा हथीसीरख नगर थी, भगवंत कीयो वीहार।
पुफकरड उद्यान थी नीकल्या, विचरे जनपद देस मझार ॥ ४ ॥

ढाल ६

[वेरागे मन वालियों]

कुमर सुवाहू श्रावक थयों, नव तत रो हुवो जांण।
डिगायो डिगे नही, जो देव चलावे आंण।
वेरागे मन वालीयों* ॥ १ ॥
पोसा पडिकमण करे, सील व्रत ने नेम।
सेठी पाले आखडी, देव गुर धर्म सूं पेम ॥ २ ॥
दांन दे चवदें प्रकार नो, साधा ने निरदोख।
हाड मिंजा धर्म सूं रगी, एक सूरत तिण री मोख ॥ ३ ॥
देव गुर धर्म परख ने, सेठी समकित धार।
सका कंखा करे नही, रुचीया प्रवचन सार ॥ ४ ॥
आठम चोदस पूनम दिले, वले अमावस जांण।
छ पोसा करे एक मास में, वेरागे मन आंण ॥ ५ ॥
काल कितों एक वीतां पछे, पोषध साला मे आय।
अठम भगत तिहा पचखने, तीन पोषा दीया ठाय ॥ ६ ॥
मध्य रात तणा समाने विषे, सुखे बेंठा छे ताय।
धर्म जागरण जागता, मन उपना अधवसाय ॥ ७ ॥
धिन धिन गांम नगरादिक सहू, तिहा विचरे छे भगवान।
ते धर्म आचार्य माहरा, भगवंत श्री विरधमांन ॥ ८ ॥
सेठ सेन्यापती राजवी, धिन त्यारो अवतार।
वीर जिणेसर त्यां कने, घर छोड हुवे अणगार ॥ ९ ॥
वले वीर समीपे जे लीये, श्रावक नां व्रत वार।
ते पिण धिन धिन मानवी, त्या सफल कीयो अवतार ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

धिन धिन सेठ सेन्यापती, जे सुणे छें वीर वाण।
जे वीर वचन वागरे तके, कर लेवे परमाण॥ ११॥
वले धिन छे जे मानवी, ते असणादिक च्यारूं आहार।
ते प्रतिलाभे छे भगवांन ने, रिध पाम्या तणों सार॥ १२॥
केइ दान देवे भगवान ने, सिज्जादिक सुध जाण।
ते पिण धिन धिन मांनवी, त्या नेंडी कीधी निरवाण॥ १३॥
केइ भगवत ने बदणा करे, केइ करे दरसण धर प्रीत।
ते पिण धिन धिन मानवी, गया जमारो जीत॥ १४॥
केइ भगवंत श्री विरधमान री, राखे पूरी परतीत।
ते पिण धिन धिन छे मांनवी, ते धर्म पामे रूडी रीत॥ १५॥
धिन धिन छे जे मानवी, करे भगवत री सेव।
दरसण कीयां विनां वीर नों, अन्न नही खाए नितमेव॥ १६॥
जो गामाणुगाम विचरता, जो इहा आवे भगवान।
तो हूं दिख्या लेउं घर छोडने, देउं छ काय ने दान॥ १७॥
ए कुमर सुबाहू भावे भावना, एकाएक चित लगाय।
हिवे सफल हुवे तिण री भावनां, ते सुणजो चितल्याय॥ १८॥

दुहा

भगवत भवजीवा तणो, देखे तिरण रो डाव।
कुमर सुबाहू तेहनां, जाण्या मनोज्ञ भाव॥ १॥
जल विण सूके रूखडा, कुमलावे कूपल पल्ल।
त्यानें सीचे जल ल्याय ने, वागवान बुधवान॥ २॥
जल सीच्या रूंख पालवे, हुवे डहडायमांन।
फूल फल सर्व नीपजे, नीला रहे तिहा पान॥ ३॥
रूख जिम भव जीवडा, वागवान भगवान।
वांणी जल धारा जिम जांणजो, घाले भव जीवां रे कान॥ ४॥
संवर निरजरा फूल जिम, फल जिम मुगत निधान।
जस कीरत महिमा पान जिम, ते जाणो बुधवान॥ ५॥
कुमर सुबाहू के कारणो, गामाणुगांम करता विहार।
हत्थीसीर्षं नगर दिस चालीया, साथे साधा रो बहु परिवार॥ ६॥

जब वलता वीर' इसडी कहे, थारे लेणो संजम भार।
घडी जाअें ते पाछी आवे नही, तूं मतकर ढील लिगार॥ ३॥
ए वचन सुणी भगवान रो, पांम्या अतंत हुलास।
बंदणा कर नें नीकल्यो, आयो माता रे पास॥ ४॥
हाथ जोडी कहे मात ने, म्हे सांभल्या भगवंत वेण।
ते वीर वचन म्हें सरधीया, म्हारा उघडीया अंतर नेण॥ ५॥
तिण कारण हो मात जी, हूं लेसूं संजम भार।
मोने किरपा करे दो आगना, मत करो ढील लिगार॥ ६॥
वचन सुणी बेटा तणों, मात पडी मुरझाय।
सिंघासण सूं ढल गइ, मुख दीयों कुमलाय॥ ७॥
सावचेत हुआ पछे, बोलें वाणी एम।
मोह छकी माता कहे, ते सुणजो धर पेम॥ ८॥

ढाल : ८

[जी हो धनो सालिभद्र दो०]

बोलती वांगां पार, सब्द मोटे मोटें रोकती रे।
आंख्यां रे आसूंडां री धार, कुमर सुबाहू सांह्मो जोवती रे।
जी हो कुमर सुबाहू गुणवत, तिणरे साधपणो चित मे वस्यो जी॥ १॥
तूं मुझ जीवन प्रांण, उंबर फूल तणी परे दोहिलो रे।
वले रतन करंडीया समाण, मोने पुतर दर्शण नही सोहिलो जी॥ २॥
मणी माणक हीरा पन्ना सार, सोनो रूपो आपा रे अति घणो रे।
वले भरीया कोठार भंडार, संचो घणो छे दरपीठ्या तणो रे॥ ३॥
ते रिध भोगवें तूं मन मांन, खाए पीए लाहो ले एहीनों रे।
घर अनुसारें दे दांन, तोही पार न आवें तेहनो रे॥ ४॥
तूं रिध भोगव लें भली भांत, तोने पुन जोगे आए मिली रे।
तूं पूरव मन री खांत, मनुष तणा भवनी रली रे॥ ५॥
जब कुमर सुबाहू कहे एम, ए आथ इथर जिणवर कही रे।
तिण में राच रहूं कहो केम, इणने विणसता वार लागे नही रे॥ ६॥
तिण सूं मत करो ढील लिगार, मोनें आगना दो किरपा करी रे।
ज्यूं लेउं सजम भार, राज रमण सहु परहरी रे॥ ७॥
इम सुण ने पुतर नां वेंण, हीयों फाटे माता तणों रे।
रोवती बोले भर भर नेंण, मोह विलाप करे घणो रे॥ ८॥

तूं मोंनें मत दे छेह, उभी मेलेनें रोवती रे।
म्हांरे तोसूं छें अतंत सनेह, थांरो विरहो न खमीयो जावें मो वती रे॥ ६ ॥
अें रतन जडत थारां मेंहल, ते साल तणी परें सालसी रे।
ओ पिण दुख नही मोंनें सेहल, ते विसारें कुण घालसी रे॥ १० ॥
मोंनें कांय छोडें निरधार, एकलडी नें उभी मेलनें रे।
हिवें कुण म्हांरे आधार, तूं यूंही जावें छें मोंनें ठेलनें रे॥ ११ ॥
म्हे इसडो न जांण्यो थों तोय, छेह दे जासी माता भणी रे।
हिवे मायडी सांह्मो जोय, हू तोविण दुखणी छूं अति घणी रे॥ १२ ॥
सुबाहूकुमर करें रे विचार, किण री माता नें किण रा दीकरा रे।
ए सगपण अनंती वार, मिल मिल ने विछड गया जी॥ १३ ॥
म्हें तो जांण लीयों जिण धर्म, म्हांनें मीठी न लागें इणरी मोहणी रे।
आ तो यूंही बांधे छें करम, घर मांहे राखणनें मो भणी रे॥ १४ ॥
तूं . रोवे पुतर नें काज, ते नहीं नेठाउं पुतर तांहरो रे।
तिण सूं आगना दें मोने आज, ज्यूं सुख पांमे जीव मांहरो रे॥ १६ ॥

●

दुहा

ए वचन सुणें बेटा तणों, माता हुइ निरास।
घर विखरतों जांण ने, म्हांखे उंडा निसास॥ १ ॥
वहूआं करे विचरणा, छोड चलें छे कंत।
पांचसो मिलनें कहे, हिवें करवो कुण विरतंत॥ २ ॥
सासूजी थाका कही, हिवे आपण नी वार।
कहवो छें • वस आपणें, करवो छें पीउ सार॥ ३ ॥
जातां नें मरतां छतां, राख न सकें कोय।
पिण जो भास न काढीये, तो मन डीभो होय॥ ४ ॥

ढाल : ६

[श्री जिन धर्म जिन आगन्या मांहे]

हिवे बोलें पांच सो भांमणी, मुझ प्रीतम प्रांण आधार।
वालम मोरा हो।
तुझ बिन म्हां अवला नार नों, किम नीकलेंला जमवार।
वालम मोरा हो, वाल्हा वीछडीया विल विल करें॥ १ ॥
सूर्य आथमीयां सूं कमल ना, फूल रा मुख मिल जाय।
ज्यूं वदन तुम्हारो दीठां विना, म्हांरो वदन जाजे कुमलाय॥ २ ॥

म्हांरे गेंहणा आभूषण पहरणें, थां विण सर्व अलूणा होय।
वले खावो पीवो म्हारे थां विणा, अग न लागे कोय॥ ३ ॥
कंत विहूणी कांमणी, घर मे रहे छे अतंत उदास।
थां विण म्हांरे ससार मे, म्हांनें छे किण रो बेसास॥ ४ ॥
म्हांनें तुरणी वय माहे वालापणे, इम किम दीजें छिटकाय।
पेंहला मो सूं पीत बांधी घणी, तो हिवडां तो तोड म जाय॥ ५ ॥
पेंहला उची थे मेरू चढाय नें, पछें पटको नीची जाण।
म्हें सगली दुखणी होसां थां विना, त्यांरी दया हीया मांहें आंण॥ ६ ॥
इण विध म्हे थांनें कदेय न जांणीया, इण विरीया काढोला इसड़ा साग।
बिल बिल करती म्हांने देख नें, हिवडां म जावो घर भांग॥ ७ ॥
म्हें अरज करां छां साहिब आप री, म्हे तो अबला छां अनाथ।
त्यांनें छोडण री मुख थकी, इसडी कदेय म काढो वात॥ ८ ॥
म्हे तो पाछे आइ छां आपरें, थे म्हांरा सिर घणी नाथ।
थे इज म्हांनें छोडे नीकलो, तो म्हांरा किम नीकलेला दिन रात॥ ९ ॥
साल तणी परे सालसी, ए तुम्ह आइठांण।
अबला नारी नी जात तेहसूं, इसडी म्हांसूं करडी म तांण॥ १० ॥

दुहा

वहूआं विलाप कीया घणा, पिण चलीयो नही मूल लिगार।
मात पिता पिण थाका सहू, दिख्या महोछव करे तिण वार॥ १ ॥
तिहां कीया महोछव अति घणा, मेघ कुमर जिम विसतार।
देह भलावण वीर ने, ले गया इसाण कुण मझार॥ २ ॥
माता पलगट मांडीयों, गेंहणा ले तिणवार।
आंसूं छूटा किण विधे, जांणे मेघाधार॥ ३ ॥
ढीलें डोरें हार पोवीयों, मादल खिसीयो तिवार।
तूटे हार मोती पड़े, इम छूटी आसूंडां री धार॥ ४ ॥
सीख दीए माता वले, म्हांने छोडों आज।
जतन घणा कर पालजो, सारजो आतम काज॥ ५ ॥
पांच परमाद ने छाड ने, आलस अंग म आंण।
आराधे जिण आगना, बेगो पोंहचे निरवाण॥ ६ ॥
मात पिता आगना दीधां पछे, आय वांद्या श्री महावीर।
विने सहीत दोनूं हाथ जोडनें, बोलें साहस धीर॥ ७ ॥

जनम मरण री लाय थी, म्हाने बारे काढो जिण आप।
मोने दिख्या दो आप किरपा करी, पचखावों अठारे पाप ॥ ८ ॥
जब वीर दिख्या दीधी तेहने, जब हुवो मोटों अणगार।
जनम हुवो साधु तणो, तिणने सीखायों सर्व आचार ॥ ९ ॥

ढाल : १०

[तूगिया गिर सिखर सो०]

जोय चाले तोल बोले, एषणा सुध रीत रे।
पूंजणा पडिलेहणा तिण मे, जीव दया सू पीत रे।
एहवा मुनीराय वादो* ॥ १ ॥

सीहनी परे लीयो सजम, सूरवीर साख्यात रे।
ग्यांन आगर बुध सागर, ते प्रसिध लोक विख्यात रे ॥ २ ॥

जात, कुल, बल, रूप पुरा, विनेवंत साहसीक रे।
परिसह उपना अडिग सेठा, त्यां कीधी मुगत नजीक रे ॥ ३ ॥

सुमति सुमता गुपत गुपता, पाले पांच आचार रे।
मेरू नी परे धीर धरता, न चले मूल लिगार रे ॥ ४ ॥

आहार निरदोषण सुध लेवे, दोष वयालीस टाल रे।
गोचरी करे गउचर्या, छ काय तणा छे दयाल रे ॥ ५ ॥

सीयल व्रत नव वाड पाले, दस विध जती धर्म धीर रे।
तप तपे मुनी बार भेदे, ते साध भला वड वीर रे ॥ ६ ॥

नही माया नही ममता, नही च्यार कषाय रे।
च्यार विकथा मूल नांणे, सुमता रस घट ल्याय रे ॥ ७ ॥

तथारूप थिवर समीपे, भण्यों इग्यारे अंग रे।
विचत्र परकार नी करे तपसा, कीयो करमा सूं जग रे ॥ ८ ॥

चारित पाल्यो बहु वरसां, एक मास तणो सथार रे।
काल करे सुरलोक पोहतो, पेहले देवलोक मझार रे ॥ ९ ॥

दुहा

ते गोतम सामी जाणीयो, काल कीयो सुबाहूकुमार।
जब वीर समीपे आयने, पूछा करी तिणवार ॥ १ ॥
आउखो पूरो करी, कुमर सुबाहू ताम।
ते कुण ठिकांणे उपनो, मोने किरपा करी कहो सांम ॥ २ ॥

---

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जब वीर कहें सुण गोयमा, सुबाहू कुमर अणगार।
देवपणे जाय उपनो, पेंहलें देव लोक मझार ॥ ३ ॥
ते देव आउखो पूरो करे, चवनें जासी किण ठांम।
ते पिण ठीक मोने नही, ते किरपा करी कहो साम ॥ ४ ॥

ढाल

ढाल : ११

[वीर कहे भवियण सुणो]

वीर कहे सुण गोयमा, देव आउखो हो पूरो करी ताय।
मिनष तणों भव पांमसी, उत्तम कुल मे हो उपजसी आय।
वीर कहे सुण गोयमा* ॥ १ ॥
अनुक्रमे मोटो हुसी, थिवरां पासे हो संजम ले सुखदाय।
चारित चोखो पालनें, सुर तीजे हो देवता होसी जाय ॥ २ ॥
तिहां थी चवनें मानव हुसी, संजम लेसी हो आश्रव नाला रोक।
चारित चोखो पालनें, मरनें जासी हो पांचमे देवलोक ॥ ३ ॥
पांचमां देवलोक थी चवी, मानव होयनें हो चारित पाले निरदोष।
आउखो पूरो करी, मर नें जासी हो सातमें देवलोक ॥ ४ ॥
सातमां देवलोक तणो चव्यो, उत्तम कुलमे हो उपजसी आय।
तिहां साधपणो सुध पाल नें, देव होसी हो नवमे सुर जाय ॥ ५ ॥
ते देवता चवने मिनख हुसी, सजम लेसी हो आश्रव नाला रोक।
आउखो पूरों करी, तिहाथी जासी हो इग्यार मे देवलोक ॥ ६ ॥
इग्यारमां देवलोक रो चव्यों, उत्तम ठांमें हो पामें नर अवतार।
सुध संजम तिहा पालने, ते तो जासी हो स्वारथसिध मझार ॥ ७ ॥
स्वारथसिधमें सुख देवता तणा, त्यां सुखां रो हो घणों छे विस्तार।
सगला देवतां थी सुख अति घणां, कहितां कहिता हो त्यांरों नावे पार ॥ ८ ॥
देव आउखो पूरो करी, ए तो चवसी हो सुवाहूकुमर नों जीव।
महाविदेह खेतर मझें, जनम लेसी हो मोटे कुल अतीव ॥ ९ ॥
जनम महोछव करसी घणा, दिढपइना जिम हो सगलो विसतार।
भोग समर्थ होसी त्यां लगें, सगलो कहणो तिणरे अनुसार ॥ १० ॥
एक दिवस थिवर पधारसी, त्यांरी वांणी हो सुणनें तिणवार।
मात पिता ने पूछनें, ते तो सीह जिम हो लेसी संजम भार ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

संजम पाले रूडी रीत सूं, सुध आराधी हो श्री जिणवर धर्म।
सूर वीर थको सुध पालनें, मुगत जासी हो तोडे आठोंइ करम ॥ १२ ॥
इणरे घूर सूं छे उतपती दांन री, नीव सेंठी हो लागी देतां दांन।
ते सुखे सुखे जासी मुगत मे, पांचमी गति हो मोटी परधांन ॥ १३ ॥
इण दांन थी जीव तिरया घणां, कहितां कहितां हो तेहनों नावे पार।
दांन दे दे सुबाहू कुमर ज्यूं, मोक्षपोंहतां हो कर कर परत ससार ॥ १४ ॥
किरपण ने लोलपणो नही, वले नही हो त्यारे लोभ अतंत।
दांन दीयो सुबाहूकुमर ज्यूं, त्यां तो कीधो हो ससार नो अंत ॥ १५ ॥
जे जीव किरपण नें लोलपी घणा, बले लोभी हो परिग्रह मांहे तांम।
त्यांसूं दांन देणी आवें नही, कदा देवें तो हो नावे उवे परणांम ॥ १६ ॥
इम सांभल नर नारीया, सुपातर हो दांन दीजों निरदोष।
ज्यूं कुमर सुबाहू नी परे, सुखे सुखे पांमो अविचल मोख ॥ १७ ॥
समत अठारे गुणचासे समें, भाद्रवा विद हो सातम गुरवार।
भव जीवां ने प्रतिबोधवा, जोड कीधी हो केलवा सहर मझार ॥ १८ ॥

रत्न : ७

मृगालोढा रो बखांण

दुहा

सासण नायक समरीए, भगवत श्री विरधमान।
त्यां सयमेव मुख सूं वागर्यों, आगम सार गिनान ॥ १ ॥
त्यांरें बडा सिष्य ते सगलां सिरे, इन्द्रभूती अणगार।
त्यां पृछा कीधी भगवांन नें, प्रश्न विविध प्रकार ॥ २ ॥
मिरगापुतर नीं वारता, दुखविपाक सूतर रे मांय।
दे दुखे दुखे जासी मुगत मे, तिण री बात सुणों चित्त ल्याय ॥ ३ ॥
तिण काले नें तिण समे, चोथा आरा नी बात।
मिरगागाम नामें नगर थो, ते प्रसिध लोक विख्यात ॥ ४ ॥
चन्दणपायव नांमें उद्यांन थों, इसांण कुण रे मांय।
सर्व रितू नां फूला सहीत थो, तिण दीठां नयण ठराय ॥ ५ ॥
तिहां सुधर्म नामें जक्ष तणों, देवल हुतो श्रीकार।
तिण जक्ष तणो परचो घणो, पूर्णभद्र ज्यूं विसतार ॥ ६ ॥

ढाल : १

[श्री नेम जिण समोसर्या रे]

तिण मिरगानगर तणों धणी रे, विजय क्षतरी नामें राजांन रे। सुगणनर।
तस पटराणी मिरगावती रे लाल, रूप कला घणी बुधवांन रे॥ सुगणनर॥
सुणजो मिरगापुतरनी वारता रे लाल* ॥ १ ॥
तिण विजय राजा तणो दीकरो रे, मिरगावती रो अंग जात रे।
मिरगापुतर नामे बालक हुतो रे लाल, तिण री सुणजो विवरा सुध बात रे॥ २ ॥
ते जनम तणों आंधो हुंतो रे, वले जनम रो गूगो छें आंम रे।
कांनें बहिरो छें जनम रो रे लाल, वले जनम थी पागुलों छें ताम रे॥ ३ ॥
अंग उपग सगला तेहना रे, पाड्आ छे हुंड सठाण रे।
हाड चरमादिक नही पावरा रे लाल, मूल नही छे सुध परमांण रे॥ ४ ॥
हाथ पग नही छे तिणरे सरवथा रे, वले नही छे आंख नें नाक रे।
अंग उपंग नही छें तिणरे सवरथा रे लाल, नही दीसें आकार सिलाक रे॥ ५ ॥
मिरगावती रांणी तेहनें रे, छानों राखें भूयरा घर मांय रे।
भात पाणी देवे नित तेहने रे लाल, ते लोकां नें खबर न काय रे॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिण मिरगागाम नगर तेहमे रे, एक पुरप वसे अंध जात रे लाल।
तिणने एक पुरप लीया फिरे रे लाल, तिणरी लकडी पकडी चाले साथ रे॥ ७॥
तिण रे केस माथा ना विखस्या रे, तिण सू मस्तक दीसे विकराल रे।
वले माखीयां चटका देती थकी रे लाल, चिहुं दिस चली जाअे लार रे॥ ८॥
केइ माख्यां उडाइ उडे नही, उडे ते पाछी वेंसें छे आय रे।
ते मिरगागाम नगर मझे रे लाल, भिष्या काजे फिरे छे घर घर मांय रे॥ ९॥
दीन वृति करतो थको रे, आजीवका करे छे तांम रे।
हीण दीन दुखीयो थको रे लाल, टूकडा मांगतो ठांम ठाम रे॥ १०॥
तिण काले ने तिण समे रे, भगवत श्री महावीर रे।
ते आय उतरीया वाग मे रें, तिरण तारण साहस धीर रे॥ ११॥
विजय क्षतरी राजा सांभल्यो रे, कोणिक जिम आयो मोटें मडाण रे।
वंदणा करें भगवांन ने रे लाल, सनमुख बेठो आंण रे॥ १२॥
घणां लोकां तणा सब्द साभले रे, आंधे पुरप तिणवार रे।
तिण पूछ्यो लीयां फिरे तेहने रे लाल, आज कांइ महोछव नगरी बार रे॥ १३॥
के महोछव छे कोइ इद्र तणो रे, इत्यादिक पूछ्या महोछव अनेक रे।
जव तिण कह्यो आंधा पुरष ने रे लाल, या महोछव माहिलो नही एक रे॥ १४॥
भगवंत श्री महावीर जी रे, समोसस्या छें वाग मे आज रे।
तिणसूं लोक वारें जाअे हरष सू रे लाल, त्यारी वाणी सुणवा काज रे॥ १५॥
जव आंधो पुरष तिणने कहे रे, तूं मोने पिण तिहा ले जाय रे।
ज्यूं हूं पिण वादूं भगवांन ने रे लाल, म्हारो मन रलीयायत थाय रे॥ १६॥

दुहा

जव चक्षुपुरष आधा पुरष ने, लकडी पकड ले गयो ताय।
आंधे पुरष भगवंत वांद नें, बेठो सनमुख आय॥ १॥
विजे क्षतरी राजा आदि दे, मोटी परषदा मांय।
भगवंत दीधी देसनां, सगलां ने हित ल्याय॥ २॥
वांणी सुणने परषदा, हिवडे हरषत थाय।
संगत सारूं वरत आदरे, आयो जिण दिस जाय॥ ३॥
तिण अंध पुरष ने देखीयो, गोतम सामी दुखीयो ताय।
जव पूछ करी भगवान नें, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ४॥

ढाल : २

[स्वामी म्हारा राजा नें धर्म सुणाज्यों]

हाथ जोडी वीनती करे, नीचो सीस नमाय। हो सांमी।
ओ आवो पुरष दुखीयो घणो, वले कोइ इसडो छे ताय। हो सांमी।
अरज करूं छूं वीणती* ॥ १ ॥
बलता वीर इसडी कहे, सुण तूं चित्त लगाय हो।
इण सूं पिण कोइ मांनवी, दुखीयो घणों छे ताय हो॥ २ ॥
जब फेर गोतम सामी पूछीयो, ओ वसे छे कुण ठाम।
ओ दुख भोगवे छे किण विधे, मोने किरपा करे कहो साम॥ ३ ॥
जब वीर कहे सुण गोयमा, इणहीज नगरी रे माय हो।
ते अघपुरष दुखीयो घणो, ते सुणजे चित्त लगाय हो॥ ४ ॥
विजय राजा रो दीकरो, मिरगावती रो अग जात हो।
जो तूं देखे तेहने, ते इचर्य वाली वात हो।
ते भूयारा घर मे मोटो हुवे॥ ५ ॥
ते आधो ने मूगो छे जनम रो, बेहरो न सुणे कांन हो।
वले पागुलो पिण छे जनम रों, तिणमे मूल नही विगनान हो॥ ६ ॥
हाथ पाव नही तेहने, आंख नाक नही ताम हो।
अग उपग सगला पाडुआ, सम नही कांइ ठांम हो॥ ७ ॥
आवो जावो तिण सूं हुवे नही, लोढाभूत आकार हो।
छांनो राखे छे तेह ने, भूयरा घर मझार हो।
तू चित्त लगाय ने सांभले॥ ८ ॥
मिरगावती राणी तेहनी, करे छें सार सभाल हो।
भात पाणी नित तेहने, देवे छे कालोकाल हो॥ ९ ॥
जब गोतम सामी भगवत नें, वदणा कर कहे आंम हो।
आप तणी आग्या हुवे, तो हूं जोवा जाऊ तिण ठाम हो॥ १० ॥
जब वीर कहे सुण गोयमा, ज्यूं तोने सुख थाय हो।
वीर तणी आगना हुआं, हरप हुओ मन माय हो।
मिरगापुतर ने जोवण तणो॥ ११ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दुहा

वीर तणी लेइ आगना, नीकल्या गोतम साम।
मिरगापुतर ने जोयवा, वले ओर नही कोइ कांम॥ १॥
मिरगागाम नगर तणें, मध्योमध्य थइ ने तांम।
जिहा मिरगावती रा मेहल में, परवेस कीयो तिण ठांम॥ २॥

ढाल : ३

[वीर बखाणी राणी चेलणा]

मिरगा रांणी गोतम देख्या आवता जी, हरपत हुइ मन मांय।
आसण छोड उभी थइ जी, सात आठ पग सामी आय।
साध जी भलाइ पधारीया जी* ॥ १॥
तीन परिदिषण दे करी जी, लुल लुल नीची जी थाय।
भाव सहीत वदणा करी जी, पांचूं अंग नीचा नमाय॥ २॥
आज करतार्थ हूं थइ जी, गोतम सामी आया म्हारे बार।
ते बडा सिष्य भगवान रा जी, त्यारो म्हे तो दीठो दीदार॥ ३॥
आज म्हांरी रे जागी दसा जी, पूगी म्हारा मन तणी कोड।
गोतम सांमी आया म्हांरे आगणे जी, भाग कीयो म्हारे जोर॥ ४॥
झोली पात्र दीठा नहीं त्या कने जी, मिरगावती राणी तिणवार।
तिणसूं असणादिक आहार ना जी, वेहरण री नही कीधी मनवार॥ ५॥
आप किसे प्रजोजन पधारीया जी, मिरगावती राणी पूछ्यो आम।
आप संका मत राखो केहनी जी, ते फुरमावो मोने काम॥ ६॥
जब राणी मिरगावती तेह ने, कहे छे गोतम सांम।
हूं आयो छूं आज घर ताहरे जी, थारा पुतर जोवण ने काम॥ ७॥
एह वचन सुणे मिरगावती जी, हरखत हुइ अमाम।
म्हारा पुतर रतन जोवा भणी जी, आंया छे गोतम साम॥ ८॥
म्हारा पुतर घणा रलीयामणा जी, त्यारो रूप घणो छें अनूप।
ते रूप गोतम सामी साभल्यो जी, तिणसूं देखण री हुइ अति चूप॥ ९॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दुहा

म्हे मिरगा पुतर पछे जनमीया, च्यार पुतर रतन श्रीकार।
ते आंण देखालूं गोतम साम नें, ज्यूं अें पामे हरख अपार ॥ १ ॥
तो हिवे जेज करणी नही, आणूं वेग सताब।
त्यांने सिणगार ने करूंअति सोभता, जाणे वाडी खुली छे गुलाब ॥ २ ॥
एहवी करे विचारणा, तिण रे मन माहें अतंत हुलास।
उभा राखे गोतम साम ने, आइ पुतरा ने पास ॥ ३ ॥

ढाल : ४

[थें तो जीव दया व्रत पालो]

जिणरे केडे च्यार जाया रे, त्याने पेहराया ओढ्या।
सिणगारज कीधा नीका रे, घाल्यो काजल ने काढ्या टीका ॥ १ ॥
कान माहे कुडल श्रीकारो रे, गला माहे पेहराया छे हारो।
त्यां हारा री जात अनेको रे, परमांण विना नही एको ॥ २ ॥
कनकावली मुक्तावली हारो रे, रतनावली हार श्रीकारो।
त्या करने हिरदो छे छायो रे, त्यारी लागी झिगामग ताह्यो ॥ ३ ॥
बाजूबध बाध्या अनूपो रे, त्याने पेहराया अति चूपो।
ते मोले मूहघा ने तोल हलका रे, त्यारी जोत तणा अति चलका ॥ ४ ॥
सर्व आगुलीयां माहे रूडी रे, मुद्रका घाली छे पूरी।
त्यामे जडीया हीरा पना लालो रे, ते पिण घणो अमांमो छे मालो ॥ ५ ॥
कडीयां कणदोरो रतन जडतो रे, सगला रे वाध्या कर खतो।
तोल हलका ने मोल रा भारी रे, एहवा कडा छे हाथ मझारी ॥ ६ ॥
माथे मुकट सोभे श्रीकारो रे, ते सगला सिरे अलकारो।
पग मोजडी रतन जडंतो रे, ते पिण सोभे छे घणी अतंतो ॥ ७ ॥
तिलक कीया निलाड मझारो रे, ते पिण सोभे घणो सिणगारो।
तिण सू मुख दीसे घणो सनूरो रे, पुनम चंदरमा जिम पूरो ॥ ८ ॥
जे पुरष रे गेहणा हुवे तामो रे, त्याने पेहराया सर्व ठामो।
ततकाल रो चदण तातो रे, तिण सूं लीप्यो छे सर्व गातो ॥ ९ ॥
तोल हलका नें मोल मे भारी रे, एहवा वस्त्र घणां श्रीकारी।
ते पिण पेहराया छे ठांम ठामो रे, सिणगार करायो अमांमो ॥ १० ॥
वस्त्र गेहणा सू कर अलंकारो रे, च्यारां ने घणो सिणगारो।
जाणे उभा छे देव कुमारो रे, कलप विरख जिम श्रीकारो ॥ ११ ॥

भेला करे च्यारूंइ भाया रे, आण गोतम रे पगां लगाया।
वलती रांणी बोले वगेखो रे, सांमी अे म्हांरा पुतर देखों॥ १२॥

दुहा

यां च्यारूं पुतरां ने देखने, चिंतवे गोतम सांम।
आ भूल गइ छे भर्म मे, इणने खवर पडी नही ताम॥ १॥

ढाल : ५

[स्वामी म्हारा राजा नें धर्म सुणाज्यो]

जब वलता गोतम इम कहे, अे च्यारूंइ छोटा वाल ए वाइ।
त्यांने जोवण नही आवीयो, थारो भोमीपूत दिखाल ए वाइ।
ते भूयरा घर में मोटो हुवे॥ १॥
ते आंधो मूंगो छे जनम रो, वेहरो न सुणे कांन ए बाइ।
वले पांगलो छे जनम रो, तिण मे मूल नही विगनाना ए बाइ।
तिण ने जोवण ने हूं आवीयो॥ २॥
हाथ पाव नही तेहने, आंख नाक नही तांम ए वाइ।
अंग उपंग सगला पाडूआ, सम नही कांइ ठाम ए वाइ॥ ३॥
आवो जावों तिण सू हुवे नही, लोढाभूत आकार ए बाइ।
छांनों राखे छे तेहने, भूयरा घर मझार ए बाइ॥ ४॥
दिन दिन प्रते तूं तेह ने, देवे पाणी ने भात ए बाइ।
जे जे विध राणी करे, ते माड कही सर्व बात हे वाइ॥ ५॥

दुहा

मिरगारांणी इम सांभले, चिंतवे मन मे एम।
म्हे छांनो राख्यों छे एहने, याने खवर पडी छे केम॥ १॥
कें तो यांने किण ही कह्यो, के याने उपनो छें ग्यांन।
ते पूछा करूं विनों करी, देइ घणो सनमांन॥ २॥

ढाल : ६

[मम करो काया माया कारमी]

कुण ते ग्यानी हो थारें एहवा, त्यां कही म्हांरी छानजी बात जी।
त्यां परगट कर दीधी लोक मे, प्रसिध नगरे विख्यात जी ॥ १ ॥
एक राजा दासी ने हूं जाणती जी, और न जाणतो एक जी।
ते बात लोका मे विगतरी, जाणे छे लोक अनेक जी ॥ २ ॥
जब गोतम सामी कहे तेह नें, म्हे सुणीयो छे भगवंत पास जी।
ते धर्म आचार्य म्हारा, त्यां परगदा मे कही छे परकास जी।
त्यांरी समीपे म्हे सांभल्यो ॥ ३ ॥
जे वस्तु छे लोक अलोक मे, सर्व जांणे देखें छे ताम जी।
त्यांसू बात काइ छानी नही, त्यांमे केवल ग्यान अमांम जी ॥ ४ ॥
हूं जाणूं छू त्यांरा कह्यां थकी, तिणमे संका नही छें लिगार जी।
इम बात करता मिरगापुतर ने, भात पाणी री हुइ वेला वार जी ॥ ५ ॥
भात पाणी री वेला हुइ जाण ने, मिरगा रांणी कहे गोतम ने आंम जी।
हूं पुतर दिखाउ सामी म्हारो, आप उभा रहो इण ठांम जी।
पुतर दिखावे गोतम सांम ने ॥ ६ ॥
इम कहे गोतम साम ने, आप छे म्होरा घर मांहि जी।
तिहां वस्त्र राणी पल्टावीया, उत्ती दुरगंध सूं ताहि जी ॥ ७ ॥
काठरी गाडली हाथे ग्रही, मांहे पांणीया च्यारूं आहार जी।
पछे आय कहे गोतम साम ने, आवो सामी म्हारी लार जी ॥ ८ ॥
ते गाडली ताणती ताणती, आइ छे भूयरा घर वार जी।
तिहां वस्त्र च्यार पुडे करी, मुख बांधियां छे तिण वार जी ॥ ९ ॥
बले मिरगा राणी कह्यो गोतम साम नें आप पिण मुख बांधों इण ठाम जी।
ए वचन सुण मिरगा राणी तणो, मुख बांधो छे गोतम सांम जी ॥ १० ॥

●

दुहा

जिहे मिरगा राणी तिण अवसरे, [illegible] [illegible] नें [illegible]।
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible]।
[illegible] ॥ २ ॥

कूह्या कलेवर साप तणा मडा, कुह्या कलेवर कुता नां सवच।
वले कुह्या कलेवर गायां तणा, त्यारी उतकृष्टी दुरगंध ॥ ३ ॥
तिण दुरगंध इधकी घणीं, दुरगंध अतंत अपार।
जब दुवार खोल्या भूयरा तणा, एहवी दुरगंध नीकली वार ॥ ४ ॥

ढाल : ७

[कर्म भुगत्यांइज छूटिए]

तिण मिरगापुतर ने च्यारूंआहार नी, गंध आइ तिण वार लाल रे।
तिण गंध करी प्राभव्यो थको, मुरछित हुवो अपार लाल रे।
करम भुगत्यां इज छूटीए ॥ १ ॥
अतंत मुरछित गिरधी थके, इच इच कर ते कीयों आहार लाल रे।
ते विधंस हूओं छे ततकाल मे, राध लोही हुवो तिण वार लाल रे ॥ २ ॥
लोही राध पणें आहार परगम्यो, ते निकलवा लागो तिणवार लाल रे।
तिण राध ने लोही तणो, पाछो करवा लागों आहार लाल रे ॥ ३ ॥
ते विरतंत गोतम सांमी देख नें, उपनों मन माहे अधवसाय लाल रे।
इण कांई करम कीयां बालके, पाछिला भव रे मांहि लाल रे ॥ ४ ॥
हिंसादिक किरतब पाडूआ, सेवे हरपत हुवो मन मांहि लाल रे।
के इण सूंस लेइ नें भागीया, ते प्राछित पिण लीयो दीसे नाहि लाल रे ॥ ५ ॥
कें इण असंजती इविरती भणी, दीयों कुपातर दांन लाल रे।
ते करम उदे हूआ एहने, उघरी दीसें पाप री खान लाल रे ॥ ६ ॥
कांई दुष्ट .आचर्खो भव पाछिले, मद मांसादिक नो आहार लाल रे।
किरतब अनेक छे पाडूआ, त्यांरो कहतां न आवे पार लाल रे ॥ ७ ॥
इण खोटा किरतब कीयां तेहनी, मोंने खबर न कांय लाल रे।
इण उसभ बांधा ते भोगवे, ओ पाप तणा फल ताय लाल रे ॥ ८ ॥
नहीं दीठा नरक रा नेरीया, त्यांनें सुणीया छे म्हे कांन लाल रे।
ज्यूं ओ दुख वेदना भोगवें घणीं, ते दुख प्रतष नरक समांन लाल रे ॥ ९ ॥
एहवी करे विचारणां, मिरगा रांणी ने पूछे ताम लाल रे।
गोतम सांमी तिहांथी पाछा फिर्या, आया वीर कने तिण ठांम लाल रे ॥ १० ॥

दुहा

भगवंत ने बंदणा करे, जोडें दोनूंइ हाथ।
मिरगारांणी भाव भगत करी, ते मांड कही सर्व वात ॥ १ ॥
पछें कह्यों मिरगापुतर तणो, निजरां देख्यों जिसों विरतत।
मांड कही सर्व वारता, दुखी देख्यों म्हे तिणनें अतत ॥ २ ॥
ते दुख असाता भोगवें, ते दुख नरक समांन।
जे इण पाछिल भव किरतब कीयां, ते सर्व जांणों छों भगवान ॥ ३ ॥
कुण हूंतो ए पाछिल भवें, वसतो कुण सें ठांम।
इणरो नाम गोत किसूं हुतों, किसूं कीयां इण कांम ॥ ४ ॥
इण कांइ कुपातर पोखीया, त्यांने दे दे हरष सूं दांन।
किहां करम उपाया इण पाडूआ, तिण सूं उघडी पाप री खांन ॥ ५ ॥
कुण कुण अकार्य इण कीयां, प्राण हिंसादिक वारूवार।
के इण सूंस भागे आलोया नही, त्यांरो प्राछित न लीयो लिगार ॥ ६ ॥
इण कांइ कुविसनादिक आचरूया, कुकरम विविध परकार।
मद मांसादिक रो भक्षण कीयों, ते हूं जांणूं नही लिगार ॥ ७ ॥
इण मिरगापुत्र नी वारता, किरपा करी कहो आप।
जब वीर कहे सर्व साधनें, साभलजों चुपचाप ॥ ८ ॥

ढाल : ८

[कपूर हुवे अति उजलो]

तिण कालें ने तिण समें जी, इण जंबूदीप मझार।
इण हिज भरत खेतर मझे जी, नगर हुंतो सयदुवार हो।
गोतम सुण पूर्व भव एह *॥ १ ॥
तिहां रिध भवणादिक अति घणां जी, लोक घणा धनवान।
तिण नगरी रो अधिपती जी, धनपती नांमे राजांन हो ॥ २ ॥
तिण सयदुवार नगर तेह थी जी, अगन कुण मझार।
तिहा विजय विरधन खेडो हुतो जी, तिण रे पांच सो गाम था लार हो ॥ ३ ॥
ते पांच सों गांम नों अधिपती जी, एकाइरठकूड थो नांम।
ते अधर्मी अधर्म रूचें जी, रीझतो माठें कांम हो।
गोतम एकाइरठकूड ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले अधर्म मीठो तेहनें जी, अधर्म री मुख बात।
तिणरो अधर्म सील आचार थों जी, धर्म किरतब नही तिलमात हो॥ ५॥
धजा ज्यूं चावो घणों जी, अधर्मी अवनीत।
पापें धन भेलों कीयों जी, दुष्टी खोटी नीत हो॥ ६॥
आकरा डंड लेतो घणा जी, करतों जीवां री घात।
पर सुखीयें दुखीयों हुंतो जी, माठों ध्यान रहतो दिन रात हो॥ ७॥
हण छिंद भिंद वाणी वदें जी, थोडें गुनें घणी मार।
काण न राखें केहनों जी, रुद्र, खुद्र, भयंकार हो॥ ८॥
हाथ पांव छेदन करें जी, कांन आंख जीभ नाक।
मारें दुख दें बहू विधें जी, पडे पांच सो गावां मे धाक हो॥ ९॥
थड हड कंपे नेडां थकां जी, अलगां पावें चेन।
वले लाच ग्राही हुंतों घणों जी, वले करतों अणहुंता फेन हो॥ १०॥
विनां लहणांइ लेंणो मांगतो जी, खोटो खत बणाय।
एक जणो पडतो कोइ खून में जी, डंड लेतो सगला नें डराय हो॥ ११॥
चोरी करवानें चोर पोखतो जी, भूठ बोलतो डरतो नांहि।
धाडा पाडतो नें पडावतों जी, ते पिण दया नही मन मांहि हो॥ १२॥
अणसुणी नें कहतो म्हें कांनें सुणी जी, सुणी ने कहतो न सुणी म्हे आंम।
अणदीठी ने कहतो दीठी सही जी, दीठी अणदीठी कहितो ताम हो॥ १३॥
धन लेनें कहतो म्हे लीधो नही जी, बोले ने बदलतो ताय।
जांणें तो ही कहतों हूं जांणूं नहीं जी, एहवा करतो अनेक अन्याय हो॥ १४॥
छल छिदर पेंला तणा जी, जोवतो थको दिन रात।
ध्यांन परिणांम तिण रा पाडूआ जी, पर उपर खेलतों घात हो॥ १५॥
इण निरधन कीधा लोक नें जी, दे दे कूडा आल।
वले पांच सो गामां तणी जी, भांग दीधी मरजादा पाल हो॥ १६॥
वेसास घाती हुंतों घणों जी, कूड कपट नें दगा सहीत।
घणां रांक गरीब लोकां भणी जी, कीधा कण धण धन रहीत हो॥ १७॥
इम करतां एकाइरठकूड नें जी, कायक पाप उदे हूआ आय।
जब समकाले आय उपनां जी, सोलें रोग सरीर रे माय हो॥ १८॥
सास खास जरा रोग उपनों जी, दाघभर कुख सूल अतूल।
भंगदर नें हरष रोग उपनो रे, अजीरण रोग नें दिष्ट सूल हो॥ १९॥
मस्तक सूल ने अपचों आहार नों जी, आंख नें कांन वेदना जांण।
खाज नें जलोदर कोढ उपनों जी, सोलें रोगां सूं पीड्यों आंण हो॥ २०॥

दुहा

सोलां रोगा कर प्राभव्यो थकों, कहे क्रोडवी पुरप बोलाय।
विजे विरघमांन खेडा मझे, करो उदघोषणा जाय ॥ १ ॥
कहिजे एकाइरठकूड ने, सोलें रोग उपनां आय।
एक रोग गमावे तिण वेद नें, देसी घणों धन ताय ॥ २ ॥
इम सांभल सेवग नीकल्या, गया विजे विरघमांन खेंडा मांय।
घणां पंथ मारग भेला हुवे, तिहां कीधी उदघोषणा जाय ॥ ३ ॥
ए सब्द सुणे वेद नीकल्या, त्यां अनेक ओषघ लीयां साथ।
आया एकाइरठकूड ने घेर, पूछी रोग उतपत री बात ॥ ४ ॥
पछें ढूका वेद वलोवली, रोग री उतपत सुण ताय।
तिणरे कुण कुण ओषघ वेदां कीया, ते सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल : ६

[चतुरनर जोवो कर्म विपाक]

जीहो एकाइरठकूड नें, तेल सूं कीयां मरदन अनेक।
जीहो उगटणो अनेक ओषघा तणो, करायो छे तिणने वशेष।
चुतर नर जोवो करम विपाक* ॥ १ ॥
जीहो वले तेल घृतादिक पायनें जी, वमण करायों ताम।
जीहो वरेच कराइ वले तेहने जी, करला करला ओषघ आम ॥ २ ॥
जीहो सिनान करायो पाणी थकी, वले सेक्यो अगन सूं ताय।
जीहो डाम दीयां तिण रे घणां, त्या उपर दीया ओषघ लगाय ॥ ३ ॥
जीहो ओषध अनेक मिलायनें, तिण पाणी सू करायो सिनान।
जीहो तेल तणो चोपरण कीयो, तिण मे ओषघ घणां असमांन ॥ ४ ॥
जीहो गद देइ ओषघ माहे घालीया, वले सेर म्हेली सरीर ने माहि।
जीहो पाछणा देइ ने लोही काढीयो, मस्तक चर्म बांधे वीटचो ताहि ॥ ५ ॥
जीहो अनेक जातरा पांनां करी, सरीर ने सेक्यो तांम।
जीहो अनेक जात री छाल विरख री, सरीर रे वाधी ठाम ठाम ॥ ६ ॥
जीहो मूल विरख तणो करी, कदादिक तणे करी ताय।
जीहो पांन फूल फले करी, तिण ने सेक्यो तपाय तपाय ॥ ७ ॥
जीहो बीजादिक जात अनेक सूं, उना करे कीधो सेक।
जीहो किरायतादिक डीलें मसलीयो, ओपघ भेषघ कीया अनेक ॥ ८ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जीहो वड वडा वेद आता हुंता, त्यां ओषध कीयां अनेक।
जीहो सोले आंतक रोग माहिलो, तिणरो गयो नही रोग एक॥ ९ ॥
जीहो वेद थाका ओषध करी, त्यासू छोड दीधी तिणरी आस।
जीहो वेद आया ते विलखा थया, ते जावक हुवा निरास॥ १० ॥

दुहा

खप कीधी वेदां घणी, पिण कारी न लागी काय।
जब हाथ झटक नें उठीया, अे तों आया जिण दिस जाय॥ १ ॥
वेद पाछा गया जांण-नें, एकाइरठकूड।
क्रोध चढ्यो त्या उपरें, बिगाड दीयों मुख नूंर॥ २ ॥
सोलें रोग आतंक व्याप्यो थको, तोही राज रो ग्रीधी अतत।
निज देश तणी ममता घणी, जांणे राज करें पूरू खंत॥ ३ ॥
बल बाहण कोठार भडार नी, त्यांरी पिण ममता अथाग।
वले पुर अंतेवर उपरे, मूर्छ रह्यों मन लाग॥ ४ ॥
त्यारी करतों अभिलाषा घणीं, वले आसा घणी मन माहि।
आरत रुद्रध्यान रे वस पड्यो, पिण जोर न चाल ताहि॥ ५ ॥
इसडा परिणांम रह्या एहनां, अंतकाल लगे पिण जांण।
हाय तिराय करते थकें, छोड्या एकाइ प्राण॥ ६ ॥

ढाल : १०

[रे भवियण जिन आगन्या छख कारी]

अढाइसो बरसां रो आउखो पाल ने, कीयो तिहा थी काल।
पेहली नरक मे जाय उपनो, वाधे करमां रा जाल हो गोतम।
एकाइठकूड, तिण वांधे पाप नां पूर हो गोतम।
ओ दुष्टी घणो थो करूर*॥ १ ॥
तिहां परमाधामी छे परम अधर्मी, त्यां मे दया नही छें लिगार।
त्यांरे वस जाय पडीयो एकाइ, त्यां दीधी अनती मार हो॥ २ ॥
इण मोटा मोटा झूठ बोलीया हुता, ते तो इण ने याद आंण।
तिहा संडासा सूं परमाधाम्यां तिणरी, जीभ काढी जड ताण हो॥ ३ ॥
हाथ पाव कांन नासिका इणरी, छेद्या भेद्या काट्या बहु वार।
पूर्व करम चीतारे इणरा, तिहां दीधी अनंती मार हो॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

अगन मांहे परजाल्यो इण नें, तातो तांबो पायों उकाल।
वले परमाधाम्यां पकड नरक मे, उचो दीयो घणो उछाल ॥ ५ ॥
ते उचा थी हेठो पडतों हुतो जब, दीयो खडग मांहे पोय।
वले अगन वरणी भोभर मांहे घाल्यो, तिहां छोडावण वालों नहीं कोय ॥ ६ ॥
वेतरणी नदी माहे तिण ने डबोल्यो, तिण रो पांणी छें उनो अतंत।
तिण सूं भर भर कडाहा मुख मांहे पायो, तिण सूं वेदन पामी अनंत हो ॥ ७ ॥
कूडसांमली विरष हेठें वेसाख्यो, तिणरा तीखा पान घणा असराल।
खडग ने पाछणा री धारा सूं तीखा, ते पिण उपर पडीया ततकाल हो ॥ ८ ॥
वले छोटी मोटी करवती त्यां सूं, तिण ने वेहर्‌यो तिण नरक मभार।
वले खाल उतारी नरक मे इणरी, माहे सचार्‌यों इण रे खार हो ॥ ९ ॥
परमाधाम्या तिणने मार दीधी, ते कहितां नही आवें पार।
वले इण खेतर वेदना भोगवी नरक मे, तिणरो वोहत घणों विसतार ॥ १० ॥
तिहा भूख अनती ने तिरखा अनती, सी ताप अनतो जांण।
तिहा दस परकार नी छें खेतर वेदना, तिणरो कोइ नही परमाण हो ॥ ११ ॥
जे जे दुख छे सगला मिनख लोक मे, त्यां रो ग्यांनी जाणें विसतार।
त्यां दुखां सूं तो दुख अनंत गुणां छें, ते इण भोगवी नरक मभार हो ॥ १२ ॥
एक सागर लग मार खाधी अनंती, पेंहली नरक मभार।
तिहां वीसामा रहीत इण जीवडे, दुख भोगवीया एक धार हो ॥ १३ ॥
आउपो पूरो करे नरक नो, ओ आयो मिरगा रांणी री कूख।
ओ गर्भ आयो जिण दिन थी माता ने, कुण कुण हुवो छे राणी ने दुख हो ॥ १४ ॥

दुहा

मिरगा रांणी रा सरीर मे, वेदन परगट हुइ आय।
ते गर्भ तणा परताप सू, घणी हुइ असाता ताय ॥ १ ॥
ते वेदन घणी अति आकरी, गाढी करकस कटुक छे ताय।
रुद्र तिव्र जाजलमान वेदनां, एहवी वेदन परगट हुइ आय ॥ २ ॥
वले विजेक्षतरी राजा तणो, मिरगारांणी सू गयो मन भग।
ते लागे घणी अलखावणी, तिणरो मूल करे नही संग ॥ ३ ॥
नांम गोत मिरगा राणी तणों, कानां सुण्याइ न सुहाय।
निजरां दीठा गमती लागे नही, वले गिणत न राखे कांय ॥ ४ ॥

एकदा मिरगा रांणी तेहनें, अधवसाय उपनो मध्यरात।
हूंतो हुइ राजा ने अलखावणी, म्हारी गिणत नही तिलमात ॥ ५ ॥

ढाल : ११

[इणपुर कांबल कोइ न लेसी]

मिरगा रांणी करवा लागी विचार, सारां सिरें म्हारो इधकार।
हूं पटरांणी मुदे थी ताय, हिवें म्हांरी गिणत न दीसे काय ॥ १ ॥
म्हारे उदे हूआं दीसे पाप, ते सगलो छे गर्भ तणो परताप।
जिण दिन म्हारे गर्भ उपनो आय, तिण दिन सू हुइ म्हारे वेदन अथाय ॥ २ ॥
ते वेदन भोगवूं दिन रात, ते दुख म्हां सूं खमीयो नही जांत।
वले राजा पिण मोनें परहरी आप, ते पिण गर्भ तणो परताप ॥ ३ ॥
म्हा सूं राजा न भोगवे कामने भोग, वले राय न वाछें म्हारो सजोग।
म्हांरो सारा सिरे हूंतो सनमान, हिवे लागू छूं जहर समान ॥ ४ ॥
कोइ दुष्ट जीव उपनो म्हारी कूख, तिण सू हुवो मोने दुख में दुख।
तो श्रेय किलाण छे मोंने एह, इण दुष्ट सूं मूल न करणो नेह ॥ ५ ॥
ओ दुष्ट दीसें अति ही हतियारो, इण मे नही कदेइ भलीवारो।
इण गर्भ ने साडू गालू ने पाडू, के इण गर्भ ने जीवां मारूं ॥ ६ ॥
एहवो विचार कीयो मध्यरात, इम करता राणी ने हुवो परभात।
जब खारी कडवी तोरी वस्तु अनेक परकार, ते गर्भ तणी विणासण हार ॥ ७ ॥
त्यानें रांणी खाधी वारूंवार, गर्भ विधंसण नें तिण वार।
त्यांसूं तो गर्भ गल्यो नही काई, सडीयो मूओ पिण नाहि ॥ ८ ॥
मिरगा रांणी कीयां अनेक उपाय, पिण गर्भ रह्यो जीव सें कूख माय।
वले कोइ उपाय रह्यो नही बाकी, जब मिरगाराणी जावक गइ थाकी ॥ ९ ॥
गर्भ तणी आसा वछा नही तिलमात, मिरगाराणी रे वस न रही वात।
दुखे दुखे काढें दिन रात, वले वछ रही छें तिण री घात ॥ १० ॥
पापी जीव जो गर्भ मे आवें, मा ने इट लीयाला भावे।
घर मे आवें खांचा ताण, पापी जीव रा ए अहलांण ॥ ११ ॥
पापी जीव गर्भ में थकां ताहि, जब माता रे सूल चाले पेट माहि।
वले दिन दिन वेदन इधकी, माता दिन दिन गलती जावे ॥ १२ ॥
केइ गर्भ माहे चव जावें, वले केइ गर्भ में आडा आवे।
त्यांनें कापे कापेने काढें बारे, जब पिण दुख हुवें अति ही माता रे ॥ १३ ॥

कदा माता पिण पांमें अकाले घात, ते पिण गर्भ तणों परताप।
केइ कष्टी पडी रहे गर्भ रें जोग, केकणरे सरीर मे उपजें रोग १४ ॥
एहवा अनेक दुख माता पावें, पापी जीव जो गर्भ में आवें।
जिण माता रें पाप पूरों छें ताहि, जब एहवो पुतर उपजे कूख मांहि ॥ १५ ॥
लोक माहें पिण कहें छे ओखाणों, पूत रा पग पालणा मे पिछांणों।
ते पालणो तो ज्याही रह्यों ताहि, पूत रा पग जोवो पेट रे मांहि ॥ १६ ॥
ज्यूं ज्यूं गर्भ हुवे कूख मे मोटो, ज्यूं ज्यू पडें घर मांहे तोटो।
जठी तठी सूं पडें पिता रे देवालो, के पिता अकाले कर जाअें कालो ॥ १७ ॥
केइ पापी जीव इसडा विकराल, गर्भ माहे थकां हुवें कुल रों खेगाल।
वले कुल मांहें हुवें वेर विरोध, एक एक नें दीठां जागें विरोध ॥ १८ ॥
उत्तम जीव जो गर्भ मे आवे, मा नें आछी चीजा भावें।
धर्म दया .मे घणों सुहावें, जिण कीधां सिव रमणी सुख पावे ॥ १९ ॥
उत्तम जीव जो गर्भ मे आवें, माइतां नें धर्म सुहावें।
दिन दिन संपत इधकी आवें, सुख आणंद खुसाली थावे ॥ २० ॥
जाणे सतगुर रो उपदेस सुणीजें, सुण सुण नें जाणें करणी कीजें।
दया सील संतोष धारीजें, मिनष जनम रो लाहो लीजे ॥ २१ ॥
समायक पडिकमणो कीजें, दांन सुपातर निरदोषण दीजें।
चोखां परिणामा भावना भावें, साध आयां भाव सहित वेहरावें ॥ २२ ॥
सुण सुण वखांण करे पचखाण, सूधी पालें जिनवर आंण।
धर्म री विरध करे मा बाप, उत्तम गर्भ तणों परताप ॥ २३ ॥
उत्तम जीव हुवे गर्भ मांहि, जब कुटंब में काट पडें नही ताही।
मा बाप रे सर्व सूं रहे मिलाप, ते पिण गर्भ तणो परताप ॥ २४ ॥
दिन दिन गर्भ वधें कूख माय, ज्यूं दिन दिन दोलत वधती थाय।
जठी तठी सूं मिलें धन आय, काण कुरब वधे लोक माय ॥ २५ ॥
मात-पिता रे हुवे सुख समाध, नेंडा नावें रोग सोग नें व्याध।
मिट जाअें घर रो वाद विवाद, सारो गर्भ तणों परसाद ॥ २६ ॥
हलूकरमीं मात पिता हुवें ताहि, तिणरें उत्तम जीव उपजें गर्भ मांहि।
सरीर माहें रहे सुख समाध, दुख दलदर दूर टलें असमाध ॥ २७ ॥
मिरगा रांणी रे पाप उदें हुवा पूर, तिण सूं गर्भ आयों एकाइरठकूड।
ज्यां लग रहसी रांणी ने कूरब, त्यां लग रहसी राणी नें दुख ॥ २८ ॥

दुहा

तिण मिरगा पुतर नें गर्भ मे थका, नाडी बहे सरीर में आठ।
आठ नाडी सरीर बारे बहे, त्यामे राध लोही रा थाट॥ १ ॥
आठ नाड्या मांहे राधोडा वहे, आठ नाड्यां लोही बहे ताम।
बे बे नाड्या वहे लोही राध नी, त्यांरा जूआ जूआ आठ ठाम॥ २ ॥
बे बे नाड्यां वहे लोही राध री, कांन नां छिद्र आंतरें जांण।
आंख नांक छिदर रे आंत रे, इण विध दोय दोय पिछाण॥ ३ ॥
बे बे कोठा हाड रे आंत रे, राध लोही तणी वहे नाडि।
ए सोले नाड्यां बहे रही सदा, लोही राध वहे वारूवारि॥ ४ ॥
तिण बालक नें गर्भ मे थकां, उपनो भसम गामें व्याध।
ते आहार करत पांण विधंस हुवें, तिणरो हुवे लोही नें राध॥ ५ ॥
ते राध लोही बारे नीकले, ते हिज आहार करें जरूड।
एहवा करम उपाय पाडूवा, एकाइरठकूड ॥ ६ ॥
नव मास पूरा हूआं पछे, मिरगा राणी जन्म्यो बाल।
जात अंध कुरूप अतिही बुरों, तिणरो लोढाभूत आकार॥ ७ ॥

ढाल : १२

[श्री राणी ने भरत वेहूं हिलमिलिया जाणे पय में॰]

मिरगा रांणी तिण बालक ने देख, तिण सूं बीहनी रांणी वशेष।
दुष्टी हुंतो करूड, पाछिल भव एकाइरठकूड।
तिण भव मे वांधा पाप नां पूरछ॥ १ ॥
तिण बीहती थकी धाय मा ने वोलाइ, जब धाय सताव सू आइ॥ २ ॥
इण नरक में मार खाधी अदभूत, तिहां थी आय हूओ लोढाभूत॥ ३ ॥
धाय ने राणी कहे तूं मत राख सांक, इण नें जाय उकरडी न्हाख॥ ४ ॥
धाय सुणे मिरगा रांणी नी वांण, विनें सहीत कीधी परमांण॥ ५ ॥
तिहां थी धाय चलाय आइ राय पास, हाथ जोडी करे अरदास॥ ६ ॥
मिरगा रांणी गर्भ जन्म्यो छे रात, तिण दीठा इचर्य वाली बात॥ ७ ॥
मिरगा पुतर तणों सारों कह्यों विसतार, लोढाभूत छे तिणरो आकार॥ ८ ॥
मोने रांणी कह्यो इण ने रोडी मे न्हांख, किण री मन मे म राखे साक॥ ९ ॥
पिण हुं तो पुछण आइ छूं आप पास, आप फुरमावो ते करूं तास॥ १० ॥
धाय री बात राजा सुणत समेत, मिरगा रांणी सूं जाग्यो छें हेत॥ ११ ॥

° [illegible]

राजा उठ आयो मिरगा रांणी पास, मीठां वचनां बोलावे छे तास ॥ १२ ॥
राय कहे रांणी सुण तूं आंम, थारो प्रथम गर्भ छें ओ तांम ॥ १३ ॥
जो तिणनें न्हांखें तू उकरडी मझार, तो बीजो पुतर होसी किम लार ॥ १४ ॥
जो तूं राखे वले पुतर रतन री आस, तो इणरा जतन घणां कर तास ॥ १५ ॥
इण नें छांनो भूयरा घर मांहि, मोटो कर भात पांणी दें ताहि ॥ १६ ॥
तो थिर होसी पाछिला पुतर रतन, इणरा कीयां घणां जतन ॥ १७ ॥
ए राजा रो वचन राणी तिण वार, विने सहीत कीयों अंगीकार ॥ १८ ॥
तिण बालक नें छांनो भूयरा घर माय, भात पांणी दे छे नित जाय ॥ १९ ॥
तें दीठो छे गोयमा दुखीयों अतीव, ते एकाइरठकूड नो जीव ॥ २० ॥
इण बिध इण पाछिला भव मांहि, एहवा करम कीयां था ताहि ॥ २१ ॥
• इण पाछिल भव संचीयो थो पाप, ते तो भोगवें आपरो आप ॥ २२ ॥

●

दुहा

इणरो पाछिल भव गोतम सांम नें, बतायों श्री भगवांन ॥
ते सुणनें हलूकरमी जीवडा, तुरत हूआं सावधांन ॥ १ ॥
वले गोतम सांमी पूछा करें, विनो करें सीस नांम ।
ओ काल करेने इहां थकी, जाय उपजसी किण ठांम ॥ २ ॥
जब वीर कहे सुण गोयमा, छावीस वरस आउ पाल ।
इण विध दुख भोगवतो थको, करसी इहां थी काल ॥ ३ ॥
इण हिज जवू द्वीप में, इण भरत खेतर नें मांय ।
वेताढ्य परवत मूले तेहनें, सीह पणें उपजसी जाय ॥ ४ ॥
ते सीह होसी अति पापीयों, जीवां रो मारणहार ।
घात करसी वहु जीव री, रूद्र खुद्र होसी भयंकार ॥ ५ ॥
तिहां पाप उपजाए अति घणा, करे तिहांथी काल ।
जाय उपजसी पेहली नरक मे, तिहां वेदन घणी असराल ॥ ६ ॥

ढाल : १३

[रे जीव मोह अनुकम्पा न आणिये]

एक सागर लगें पेंहली नरक में, मार खासी विविध प्रकार रे ।
छेदन भेदन वेदन अति घणी, तिणरो आगें छें तिम विसतार रे ।
जीव एकाइरठकूड नों* ॥ १ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पेंहली नरक थी नीकली, होसी भुजपर सर्प विख्यात रे।
तिहां पिण हिंसक होसी अति पापीयों, करसी बोहत जीवां री घात रे ॥ २ ॥
तिहांथी मरे जासी दुजी नरक में, तिहां पिण खासी अनंती मार रे।
उतकष्टी तीन सागर लगे, तिहां पिण वीसामो नही लिगार रे ॥ ३ ॥
तिहांथी नीकल होसी पंखीयो, करें बोहत जीवां री घात रे।
ते मरनें जासी तीजी नरक मे, तिणरो आउखो सागर सात रे ॥ ४ ॥
सींह होसी तीजी थी नीकली, जीवां री घात करसी अतंत रे।
तिहां थी मरनें जासी चोथी नरक में, दस सागर खासी मार अनत रे ॥ ५ ॥
चोथी नरक थी नीकली, होसी उरपर दुष्टी साप रे।
बोहत जीवां नें विराध ने, वांधसी पूर्ण पाप रे ॥ ६ ॥
तिण पाप सूं जासी नरक पांचमी, सतरे सागर रो बंध पाड रे।
तिहां पिण दुख अनंती वेदना, तिणरो कहितां न आवे पार रे ॥ ७ ॥
पांचमीं नरक थी नीकली, होसी धूतारी नार रे।
तिणरें कुकरम रो चालो घणो, कूड कपट तणों भंडार रे ॥ ८ ॥
एकीका पुरषा सू नेह वांधसी, एकीका नें देसी मराय रे।
पाप वांधे जासी छठी नरक मे, वावीस सागर आउखों पाय रे ॥ ९ ॥
छठी नरक थी नीकली, मिनख होसी अधर्मी अजोग रे।
पर द्रोही पापी कुसीलीयो, करसी कुकरम तणा संजोग रे ॥ १० ॥
एकाइरठकूड पापी थकी, इधको पापी होसी अथाय रे।
पछें मरनें जासी नरक सातमी, तेतीस सागर आउखों उपाय रे ॥ ११ ॥
उतकष्टी वेदन सारा सिरें, तिणरो कहितां न आवें पार रे।
तिहां जक नही पामे एको घडी, असाता माहे असाता अपार रे ॥ १२ ॥
लाल कंथुआ मुख त्यांरा वजर में, त्यांरा वेक्रे रूप बणाय रे।
त्यांसूं शरीर भिडे एक एक रो, इसडो धेष त्यारे मांहो मांय रे ॥ १३ ॥
ते लगावे चटाचट आकरी, दांतां सूं चामडी भीड भीड रे।
त्यांरे उठें चटका अति घणां, तिण सूं हुवे अनंती पीड रे ॥ १४ ॥
तिहां सदा अंधारो अति घणों, अंधकार मांहे अंधकार रे।
तिण ठांमें एकाइरठकूडीयो, दुख भोगवसी एक धार रे ॥ १५ ॥

दुहा

सातमी नरक थी नीकली, एकाइरठकूड नों जीव।
जासी जलचर पचिंद्री जोन में, तिहां पांमसी दुख अतीव॥ १ ॥
मच्छ कच्छादिक जलचर तणी, जात जोनि कुल कोड छे ताय।
साढा बारें लाख कुल कोड छें, त्यांमे दुख भोगवसी अथाय॥ २ ॥
एकीकी कुल कोड में, भव करसी लाखां गमे ताहि।
मर मर ने तिण जोन में, वली वली उपजसी तिण मांहि॥ ३ ॥
जलचर में दुख भोगवे घणा, थलचर मे उपजसी आय।
तिणरी दस लाख कुल कोड मे, तिहा पिण दुख भोगवसी अथाय॥ ४ ॥
भव करसी एकीकी कुल कोड में, अनेक लाखा गमे ताम।
मरी मरी ने तिण हिज जोन में, उपजसी बारूंवार तिण ठाम॥ ५ ॥

ढाल : १४

[डाभ मूंजादिक नीं डोरी.]

थलचर मां सूं नीलकनें ताहि, जासी उरपर री जात मांहि।
तिणरी दस लाख छे कुल कोड, तिहा पिण दुख पासी अघोर॥ १ ॥
भव एकीकी कुल कोड रे माहि, करसी अनेक लाखां गमे ताहि।
मर मर तिण जोन रे माय, वली वली उपजसी आय॥ २ ॥
उरपर सू भुजपर में जासी, तिहा पिण विवध पणे दुख पासी।
भुजां सूं चालें विख्यात, त्यारी नव लाख कुल कोड री जात॥ ३ ॥
एकीकी कुल कोड छें त्यांमे, भव करसी लाखां गमे यामे।
तिण हिज कुल कोड मझार, मर मर उपजसी वारूंवार॥ ४ ॥
भुजपर मासू नीकल ने ताहि, आसी खेहचर पंखी रे माहि।
त्यांरी बारें लाख कुल कोड, त्या पिण दुख पासी अघोर॥ ५ ॥
एकीकी कुल कोड रे माहि, भव करसी लाखा गमे त्यांही।
मर मर उपजसी तिण ठाम, तिण हिज कुल कोड मे ताम॥ ६ ॥
तिहा थी आसी चोइंद्री माहि, नव लाख कुल कोड रे माहि।
एकीकी कुल कोड रे माहि, भव करसी लाखा गमे ताहि॥ ७ ॥
तिहा थी आसी तेइंद्री मे ताम, आठ लाख कुल कोड छे आम।
एकीकी कुल कोड में आण, लाखा गमे भव करसी ताण॥ ८ ॥
तेइंद्रीनें बेइंद्री थाय, सात लाख कुल कोड छें ताय।
एकीकी कुल कोड रे माहि, लाखां गमे भव करसी ताहि॥ ९ ॥

तीनूंइ विकलंद्री में तांम, दुख भोगवसी ठांम ठांम।
त्यांरी मार तणों विसतार, आगें कह्यो तिण अनुसार ॥ १० ॥

दुहा

अनुक्रमें हारता हारतां, हार्‌यों इन्द्री च्यार।
रूलतो रूलतो आवीयो, वनसपतीकाय मझार ॥ १ ॥

ढाल : १५

[आ अनुकंपा जिण आगन्या में]

कडुआ कडुआ विरख अतंत अजोग, त्यां विरखा माहि उपजसी आय।
नीम थोहर वले आक धतूरो, वले बावल ने सीगमोहरा मांय।
इण विध रूलसी एकाइरठकूड ॥ १ ॥
रोहिणी वछ नाग गिलोयनें आफू, इत्यादिक कडवी कडवी जात रे मांय।
वनसपती माठी माठी अनेक, त्यां मे अनेक वार उपजसी आय ॥ २ ॥
कडुओ कडुओ दूध वनसपती रो, आक थोहरादिक दूध विविध परकार।
अनेक वार त्यां मांहे उपजसी, मरण पिण पांमसी त्यांमे बारूं वार ॥ ३ ॥
वनसपती तणी कुल कोड त्यांरी, अनेक लाखां कुल कोड छे ताम।
एकीकी कुल कोड माहे रठकूड, लाखां गमे भव करसी तिण ठांम ॥ ४ ॥
विवध पणे दुख वनसपती मे, ते भोगवनें होसी वाउकाय।
पछे वाउ थी तेउने तेउ थी अप, अप थी आवसी प्रथवीकाय माय ॥ ५ ॥
अनेक लाखां कुल कोड सांरा री, अनुक्रमें जूइ जूइ कुल कोड रे माहि।
एकीकी कुल कोड मांहे रठकूड, लाखां गमे भव करसी ताहि ॥ ६ ॥
त्यांमें भोगवसी जुदी जुदी असाता, त्यां थी निकलने जासी तिर्यंच माय।
सुप्रतिष्ठपुर नगर ने मांहि, सांड पणे उपजसी आय ॥ ७ ॥
ते वलद सांड बाल भाव मूंकांणों, जब प्रथम पाउस आयो वरसालो।
गंगानदी तणो ढाहो छें तिण ठामें, सांड आय उभो रहसी तिण कालो ॥ ८ ॥
जब ओ ढाहा सूं खाज खणसी तिण कालो, जब ढाहों पडसी तिण उपर आय।
तिण हेठें चंपाणो थको दुख पासी, आउखो पूरो करसी ताय ॥ ९ ॥

दुहा

इण विविध पणें दुख भोगव्या, करम काटण रों नहीं कोड।
नदी नां पाखण नीं परें, धाठा करम कठोर॥ १ ॥
तिण सूं सांड मरी मांनव होसी, सुप्रतिष्ट नगर रे मांय।
सेठ तणा कुल नें विषे, पुतर पणे उपजसी जाय॥ २ ॥
बालभाव मूक्या पछे, जोवन प्राप्त होसी आंण।
तिण नगर थिवर पधारसी, गुण रतना री खांण॥ ३ ॥
थिवर पधास्या जांण ने, ओ पिण जासी सुणवा वांण।
वंदणा करें थिवरां भणी, बेंठसी सनमुख आंण॥ ४ ॥
थिवर देसी धर्म देसनां, तिण रो करे घणो विसतार।
ओ बांणी सुण ने सरधसी, जांण लेसी धर्म सार॥ ५ ॥

ढाल : १६

[श्रावक श्री वर्धमान रो रे लाल]

हाथ जोडी कहसी थिवरां भणी रे लाल, म्हे जांण्यों अथिर संसार हो। भविक जण।
हूं मात पिता नें पूछने रे लाल, लेसूं संजम भार हो। भविक जण।
ओ जीव एकाइरठकूड नों रे लाल* ॥ १ ॥
जब थिवर कहसी तिण जीव ने रे लाल, थे जांण्या मुगत सुख सार हो।
जो थांरों मन उठीयो रे लाल, तो मत कर ढील लिगार हो॥ २ ॥
ए थिवर वचन सुणे हरखसी रे लाल, वंदणा करें सीस नमाय हो।
जिण दिस आयों तिण दिस जावसी रे लाल, मात पिता समीपे आय हो॥ ३ ॥
मात पिता ने पूछने रे लाल, त्यारी आगना लेइ तिण वार हो।
थिवर समीपे वेंराग सूं रे लाल, लेसी संजमभार हो॥ ४ ॥
आचार गोचर सुध पालसी रे लाल, सुमति गुपति सुध रीत हो।
चारित पालसी बहु वरसां लगे रे लाल, सत गुर तणो होसी सुवनीत हो॥ ५ ॥
संथारो करे एक मास नो रे लाल, आलोए पडिकमे सुध थाय हो।
तिहां आउखों पूरों करी रे लाल, उपजसी पेंहले देवलोक मांय हो॥ ६ ॥
तिहा देव तणां सुख भोगवी रे लाल, चवसी आउ पूरो करी ताहि हो।
उत्तम कुल मे आय अवतरी रे लाल, महाविदेह खेतर माहि हो॥ ७ ॥
दढपइना जिम जांणजो रे लाल, विवरा सुध विसतार हो।
थिवरा समीपे घर छोडनें रे लाल, जासी मुगत मझार हो॥ ८ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

विपाक सूतर पेंहला अधेन में रे लाल, मिरगा पुतर तणों इचकार हो।
इण विध रूलसी संसार में रे लाल, इण विध खासी मार हो॥ ६ ॥
ओ दुखे दुखे जासी मुगत में रे लाल, दुखे दुखे भोगवसी करम हो।
पछें साध मिलीयां हुसी भलो रे लाल, त्यां आगें पांमसी जिण धर्म हो॥ १० ॥
मुगत जासी ओ जीवडो रे लाल, ते साधां तणों उपगार हो।
जो इणनें साध मिलतां नहीं रे लाल, तो रूलवो करत संसार हो॥ ११ ॥
इण एकाइरण कूड ज्यूं रे लाल, करम कीधा वार अनंत हो।
पिण साध वचन सरध्या नहीं रे लाल, तिण सूं नायो संसार नों अंत हो॥ १२ ॥
इम सांमल नें नर नारीयां रे लाल, मत करजों सावद्य कुकरम हो।
सुध साधां तणी सेवा करो रे लाल, सुध पालों जिणवर धर्म हो॥ १३ ॥
समत अठारें गुणचासें समें रे लाल, भादरवा सुद बारस बुधवार हो।
जोड कीधी मिरगापुतर तेहनी रे लाल, केलवा सहर मभार हो॥ १४ ॥

●

रत्न : ८

उंबरदत्त रो बखांण

दुहा

विपाक सूतर रे अधेन सातमे, उंबरदत रो इधकार।
ते जीव धनंतर वेद रो, ते सुणजो विसतार ॥ १ ॥
पाटलीपुर नांमें नगर, तिहां वनखंड नामें उद्यांन।
तिण बाग माहे एक देह रो, उंबरदत जपनों जांण ॥ २ ॥
तिंण नगरी रो अधिपती, सिधारथ राजांन।
तिहां सागरदत सारथवाह वसे, धन करने रिधवांन ॥ ३ ॥
तिण सागरदत सारथवाह तणें, गंगदता नांमें नार।
तिण रो अंगजात उपनो, उंबरदत नांम कुमार ॥ ४ ॥
तिहां श्री वीर समोसर्या, भव जीवां रे भाग।
आग्या मांगे उतर्या, वनखंड नांमें बाग ॥ ५ ॥
लोक आया वांणी सुणे, हिवडे हरखत थाय।
सगत सारू वरत आदरे, आया जिण दिस जाय ॥ ६ ॥
गोतम सांमी वेला रें पारणें, उठ्या नगर मझार।
पूर्व रें दरवाजें पेंसतां, एक पुरष देख्यों तिण वार ॥ ७ ॥
ते पुरष घणों छें रोगलो, दुख भोगवें अतंत।
तिण रो जथातथ वर्णन करूं, ते सुणजो विरतंत ॥ ८ ॥

ढाल : १

[माधव इम बोले ..]

खाज छें तिणरें अति घणी रे, वले कोड जलोदर जाण।
भगंदर हरष नें सास छें, सोफ वाय अतंत पिछाण रे।
करमा गति जोयजो* ॥ १ ॥
मुख सुनों छें तेहनों अति घणो रे, वले सूना छे हाथ ने पाय।
सडी हाथ पगां री आंगली, सडीया कांन ने नाक ताय रे ॥ २ ॥
रसी नें राध तिण रें अति घणी, तिण रो थिव थिव सब्द करंत।
ठांम ठांम गूंबडा फूटने, तिणमां सू कीडा पडंत रे ॥ ३ ॥
लोही नें राध झरे तेहनें, वले पडें छें मुख थी लाल।
कांन नाक गले खिरें रोग थी, ते तो दीसें घणों विकराल रे ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

लोही राध ने करमीयां तणा, वारूंवार कुरला न्हाखंत।
बोलें कलेस नें वचन दयामणा, वले विरुआ सब्द करंत रे॥ ५ ॥
माख्यां चटका दे घणीं, तिण केडे लागी जाय।
केइ उडाई पिण उडें नही, केइ उड पाछी वेंसे आय रे॥ ६ ॥
केस माथा रा वीखरया, फाटा वस्त्र सूं वींट्यो गात।
भागी लकडी बोखो घडों सिरावलो, ए तो तीनूंइ तिण रें हाथ रे॥ ७ ॥
फिरें घर घर भिक्षा मांगतो, कोइ आवा न दे घर मांय।
पूर्व संचीया पाप थी, इणरा दुख मांहें दिन जाय रे॥ ८ ॥
इण रीते देख्यो उण पुरष नें, आघा चाल्या नगरी मांहि।
आहार आंण देखाडयो वीर रे, पारणो करे बेलो कीयो ताहि रे॥ ९ ॥
उठ्या बीजा बेला रे पारणे, वीर नीं आग्या ले सुवनीत।
दिषण रें दरवाजें पेंसतां, उण नें देख लीयो उण रीत रे॥ १० ॥
वले तीजा बेला रें पारणे, उठ्या गोचरी तांम।
पछिम दरवाजे पेंसतां, इण नें देख्यो गोतम सांम रे॥ ११ ॥
वले चोथा बेंला रें पारणें रे, उठ्या इद्रभूती अणगार।
उत्तर रे दरवाजें पेंसतां, इण ने देख्यो चोथी वार रे॥ १२॥

●

दुहा

चोथी वार दीठा पछे, चिंतवे गोतम सांम।
इण पूर्व पाप कीयां घणां, ते भुगतें छें इण ठांम॥ १ ॥
मैं नरक रा दुख दीठा नहीं, पिण ए दुख नरक समांन।
इण पाछिल भव किरतब कीयां, ते जांणे श्री भगवांन॥ २ ॥
इम चिंतव आहार वेंहरयां पछें, आया वीर जिनंद रें पास।
आहार पाणी दिखाया भगवंत ने, हिवे पूछें आंण हुलास॥ ३ ॥
एक मानव दुखीयों अति घणों, ते भोगवे दुख अपार।
हूं च्यारूं दरवाजां उठ्यो गोचरी, तिण नें दीठों मे च्यारूं वार॥ ४ ॥
कुण हूंतो ए परभवें, वसतो कुणसे ठांम।
कुण कुण अकारज इण कीयां, मोंनें किरपा करें कहो सांम॥ ५ ॥
वलता कहें विरधमांन जिण, सुण गोतम कर खंत।
कहेंनें देखाडूं एह नों, पूर्व भव विरतंत॥ ६ ॥

ढाल : २

[कपूर हुवे अति उजलो]

तिण काले ने तिण समे जी, इण जंबू भरत मझार।
विजयपुर नांमें नगर हूंतो जी, तिहां भरीया रिध भंडार हो।
तिहां हूंतो धनंतर वेद ॥ १ ॥
तिण नगरी रो थो धणी जी, कनकरथ नांमें राजांन।
तिण रें धनंतर नांमे वेद थो जी, तिण रो राय वधारयो मान हो ॥ २ ॥
आठ सास्त्र वेदक तणा जी, तिण रो हूंतो ओ जांण।
बालक नां रोग टालण तणो जी, ते सास्त्र लीयो पिछाण हो।
ओ हूंतो धनंतर वेद* ॥ ३ ॥
कान नाकादिक ने विषे जी, रोग काढे सिलाई घाल।
वले मिनखादिक नां सरीर थी जी, काढे तीरादिक साल हो ॥ ४ ॥
जे काया मांहे रोग उपजे जी, ते देवें ओषध सूं टाल।
विछू सरपादिक नां जेहर ने जी, उत्तारे ततकाल हो ॥ ५ ॥
भूत जखादिक लागा हुवें जी, तो काढे सताव सूं जाय।
रोग गमावे रसायण करी जी, वीरज वधारण रो जाणे उपाय हो ॥ ६ ॥
ए आठ सास्त्र नो जाण थो जी, वले हाथ निरोगो सुख ताय।
ते रोगी रें हाथ फेर्यां थका जी, तुरत साता हुइ जाय हो ॥ ७ ॥
तिण राजा ने अंतेवर तणो जी, वले ओर सहर ना लोग।
वले दुरबल गिलाण व्याधीयां तणो जी, तूरत गमावतो रोग ॥ ८ ॥
नाथ अनाथ इत्यादिक वहु जी, जो आवे धनंतर पास।
तो सगला रो रोग गमावतो जी, साता करतो तास ॥ ९ ॥
त्यामे कितला एक रोगीया भणी जी, मच्छ जीवां नो मांस खवाय।
एक एक नें काछवा तणो जी, वले गाहानो मास वताय ॥ १० ॥
एक एक नें मगरमच्छ तणो जी, एक एक ने पखी सुसमार।
वले वोकडा गाडर रोझ नो जी, इम सूयर मिरग विचार ॥ ११ ॥
सूसला गाय भेंस तीतर तणो जी, वटेरा लावा पंखी नो ताय।
कबूतर कूकडा मोर नो, यारो देतो मांस, वताय ॥ १२ ॥
जलचर थलचर खेचरा जी, इत्यादिक जीवां नी जात।
त्यांरो मास वतातो खावा भणी जी, यारी दया न हूती तिलमात ॥ १३ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

पोतें पिण यां जीवां तणों जी, ग्रिवी थको मांस मंगाय।
सूला करे तल भूंज ने जी, ओ खातो सराय सराय ॥ १४ ॥
वले सुरा पांन पीतो घणो जी, मन माँहें हरप पाम।
इत्यादिक अकारज करे जी, भारी हुवो तिण ठांम ॥ १५ ॥
वतीसो वरसां तणों जी, उतकृष्टों आउखो पाल।
अनंतर वेद तिण अवसरे जी, कीधो तिहांथी काल ॥ १६ ॥
ते मरने छठी नरके गयो जी, तिहां घोर रुद्र अंधकार।
वावीस सागर लगे जी, खावी अनंती मार हो ॥ गोयमा १७ ॥

दुहा

तिण काले ने तिण समे, इण पाटलीपुर नगर मझार।
सागरदत नांमें सारथवाह हूंतो, तिण रे गंगदत्ता नांमे नार ॥ १ ॥
ते गंगदत्ता हुंती मृत वांझणी, तिण रे जीवें नहीं कोइ वाल।
ते कुटम्ब जागरणा जागती, चिंता करे तिण काल ॥ २ ॥
में सागरदत्त सारथवाह सूं, भोग भोगव्या वरस अनेक।
में मूंआ वालक जनम्यां घणां, पिण हाथे न लागो एक ॥ ३ ॥
जे धिन माता संसार में, भलो लाधो मांनव भव ताय।
ते अग जात रा उपनां, त्यांने वोलावे मीठी वाय ॥ ४ ॥
वले कडीयां कांधे लीयां फिरें, वले हाथ में ले अग जात।
वले दूध धवरावे पुतर भणी, धिन धिन छे ते मात ॥ ५ ॥
पिण हूंतो अधन अपुनणी, हू अकय पुनी नार।
एक वालक में पाम्यो नहीं, तो धिग म्हांरो जमवार ॥ ६ ॥

ढाल : ३

[धर्म आराधिए ए]

तो श्रेय किलाण छे मो भणी ए, काले हुवां थका परभात।
भरतार ने पूछसूं ए जोडे दोनूं हाथ।
पुतर ने कारणे ए* ॥ १ ॥
वले फूल घणां वस्त्र मही ए, गंध कसवोइ नी जात।
गेहणा घणी भांतरा ए, वले फूलां री माला ले हाथ ॥ २ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पछे मित्र न्यातीलां सजन तणी ए, वले ओर असतरूयां सहीत।
नगरी विचें थई ए, वारे नीकलूं रूडी रीत ॥ ३ ॥
तिहां उंवरदत नो देहरो ए, तिहां मोटे मडाणें जाय।
पूजा करू जख तणी ए, गेहणा फूल चढाय ॥ ४ ॥
अरचा पूजा कर जख तणी ए, दोनूं गोडा धरती लगाय।
दोनूं हाथ जोडनें ए, बोलूं एहवी वाय ॥ ५ ॥
जो हूं पुतर पुतरी जनमू जीवता ए, तो हूं जातरा करूं थांरी आय।
भंडार वधार सूं ए, वले देवल देसूं समराय ॥ ६ ॥
इण विध जख नें विनवी ए, मांगूं पूतर पुतरी अंग जात।
एहवो मन चितवे ए, गंगदत्ता मध्य रात ॥ ७ ॥
एहवो चिंतवी रातनो ए, उठियो उगते सूर।
आइ सताव सूं ए, सारथवाह नी हजूर ॥ ८ ॥
हिवे सागरदत्त ने विनवे ए, जोडे दोनूं हाथ।
राते चितवी तिका ए, मांड कही सर्व वात ॥ ९ ॥
वलतो सागरदत्त इम कहे ए, म्हारे पिण आहिज मन मांय।
पुतर पुतरी तणों ए, थे वेगो करो उपाय ॥ १० ॥
सागरदत्त आग्या दीयां ए, हरखी गंगदत्ता नार।
फूलादिक लेइ करी ए, घणी असतरूयां रे परिवार ॥ ११ ॥
पोता नां घर थी नीकली ए, गई पोखरणी वाव मझार।
सिनांन कीयों तिहां ए, जल कीडा करे तिण वार ॥ १२ ॥
सिनांन करी वारें नीकली ए, मन मान्यां मगलीक कीध।
भीनां वस्त्र पेहरने ए, फूलादिक हाथ में लीध ॥ १३ ॥
जिहां उवरदत्त नो देहरो ए, आ आय उभी तिण ठांम।
उंवर जख देखने ए, हाथ जोडी कीयो प्रणांम ॥ १४ ॥

●

दुहा

मोर पूंजणी सूं पूजने, पछे पांणी सूं नवराय।
सुखमाल वस्त्र सूं लुहिनें, पछे सपेत वस्त्र पेहराय ॥ १ ॥
फूल वस्त्र गंध चूरण मला, ए च्यारूं जख ने चढाय।
पूजा अरचा करे घणी, धूप उखेव्यो ताय ॥ २ ॥

पछे गोडा धरती रे लगायने, बोली जोडी हाथ।
जो हू पुतर पुतरी जनमू जीवता, तो करूं तुमारी जात॥ ३ ॥
आगे चितव्यो तिम बोलवा करी, आइ जिण दिस जाय।
हिवे कुण जीव कूखे आय उपजे, ते सुणजो चितलाय॥ ४ ॥

ढाल : ४

[नमिराय धिन धिन तू अणगार]

जीहो छठी नरक दुख भोगव्या, तिहा कर कर बोहली रीव।
जीहो गंगदत्ता उर आय उपनों, ते धनंतर वेद नो जीव।
चुतर नर जोवो करम विपाक* ॥ १ ॥
जीहो तीन मास पूरा थयां, जव डोहलो उपनो. मात।
जीहो तिण डोहला ने पूरो कीयो, करे उवरदत्त नीं जात॥ २ ॥
जीहो नव महीना पूरा थया, तिण बालक जनम्यों ताहि।
जीहो कीयां महोछव जनम रा, घणों हरख धरे मन माहि॥ ३ ॥
जीहो मित्र न्यात जीमाय ने हिवें मात पिता कहे आम।
जीहो ओ उबरदत्त जखनो दीयो, तिणसूं उबदरत्त इणरो नांम॥ ४ ॥
जीहो पांच धायां कर परवस्यो, मोटो थयो उंवरदत्त बाल।
जीहो सागरदत्त समुदर में गयो, ज्याज डूबी कीयो तिहां काल॥ ५ ॥
जीहो गुमासता हुता घणां, ते धन ले न्हाठा सताव।
जीहो सागरदत्त ने मूंओ जांण नें, केका राख्यो छांनो धन दाव॥ ६ ॥
गंगदत्ता दुखणी थई, भरतार तणे विजोग।
जीहो आपण मूंइ दुखणी थकी, करती भरतार रो सोग॥ ७ ॥
जीहो गगदत्ता ने मूंइ जाण ने, कोटवाल आयो तिणवार।
उंवरदत्त ने जाण्यो कुलखणो, तिणने काढ्यों घर सूं वार॥ ८ ॥
जीहो ते घर सूंप्यो ओर ने, ते सागरदत्त रे ठांम।
उंवरदत्त आपछंदो थको, सीख्यो कुवीसन तांम॥ ९ ॥
जीहो कुवीसन सेवतो लाजे नही, किणरी हटक न माने कांय।
उवरदत्त ने एकदा, सोलें रोग उपनां आय॥ १० ॥
जीहो सोले रोगा कर प्राभव्यो, ओ तो भोगवे दुख अतीव।
जीहो गोयम ते दीठो हूतो, ते धनंतर वेद नो जीव॥ ११ ॥

●

* — आगली प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दुहा

उंबरदत्त नों पाछल भव सुणी, वले पूछें गोतम सांम।
ओ आउखो पूरो करें, जासी कुणसे ठांम ॥ १ ॥

ढाल : ५

[वीर कहे भवीयण०]

वीर कहें सुण गोयमा, उंबरदत्त हो भोगवे दुख अपार।
बोहीतर वरस आउखों भोगवे, ओ तो जासी हों पेंहली नरक मझार।
वीर कहें सुण गोयमा ॥ १ ॥
ओं तो जासी नरक सातमी लगें, विचे भवकर हो एकीकी वार।
उतकष्टी थित सातूं नरक मे, तिहां खासी हो अनंती मार ॥ २ ॥
जलचर थलचर उरपर, भूजपर खहचर हो तिरजंच नी जात।
चोइंद्री तेइंद्री बेइंद्री, वनसपती हो वाऊ जीव विख्यात ॥ ३ ॥
वले अग्नि पांणी पृथवी तणी, ए सगलां री हो लाखां गमे कुल कोड।
तिहां भव करसी लाखां गमें, पांमसी हो घणां दुख अघोर ॥ ४ ॥
तिहां छेदन भेदन अति घणी, पर वस पडीया हो खासी वोहली मार।
ते मिरगापुतर नी परे, उंबरदत्त नो हो जांणजो विसतार ॥ ५ ॥
पछे हथणापुर नगरी मझे, उपजसी हो कूकडापणे जाय।
जनम हुवां पछे तेहने, गोठीला हो पुरप मारसी ताय ॥ ६ ॥
तिहां मरने तिणही नगरी मझे, सेठ ने कुल हो उपजसी ताय।
तिहां दिख्या ले सुध पालने, उपजसी हो पेहलें देवलोक जाय ॥ ७ ॥
देव आउखो पूरो करी, उचे कुल हो पांमेंनर अवतार।
महाविदेह खेतर मझे, करम तोडी हो जासी मुगत मझार ॥ ८ ॥
समत अठारें पेतीसे समे, सावण विद हो वारस मंगलवार।
सहर आंमेट मेवाड में, तिहां जोड्यो हो उवरदत्त नो इधकार।
भव जीवां ने प्रतिवोधवा ॥ ९ ॥

रत्न : ६

धना अणगार रो बखांण

दुहा

तिण काले नें तिण समें, नगरी काकंदी नांम।
तहां सुखिया लोक वसे घणां, रिध भवनादिक ठांम ठांम ॥ १ ॥
तिहां सहसांव नांमां वाग थो, इसांण कूण रे मांय।
तिण नगरी रो अधिपती, जितसत्रू नांमे राय ॥ २ ॥
तिहां भद्रा सारथवाही वसे, तिण रे धन घणो घर मांहि।
तेहनों पुतर धनो हुंतो, ते रूप कला गुण ताहि ॥ ३ ॥
भोग समर्थ हुवो जांणनें, परणाइ वत्तीस नार।
वत्तीस दात आण्या डायचे, तिणरो घणो विसतार ॥ ४ ॥
सुख भोगवे संसार नां, घर चिंता नही कांय।
हिवे किण विध समझे धर्म में, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥
वीर जिणंद समोसर्‍या, काकंदी नगरी मझार।
धने आय वांणी सुणी, जाण्यो अथिर संसार ॥ ६ ॥
हाथ जोडीनें इम कहे, लेसूं संजम भार।
वलता वीर इसडी कहे, मतकर ढील लिगार ॥ ७ ॥
आय माता नें इम कहे, लेसूं संजम भार।
किरपा कर दो आगना, म करो ढील लिगार ॥ ८ ॥
वचन सुणे वेटा तणो, मात पडी मुरछाय।
सिंघासण सूं ढल गई, मुख दीयो कुमलाय ॥ ९ ॥
सावचेत हुवां पछे, बोले वाणी एम।
मोह छकी माता कहें, ते सुणजो धर प्रेम ॥ १० ॥

ढाल : १

श्रीजिन वांणी रे धना, अमीय समाणी। मोरा नंदन।
मनडे तो मानी नन्दन रे तांहरे ॥ १ ॥
तूं इष्ट कंत प्यारो रे धना, मुझ प्राण अधारो। मोरा नंदन।
तू रतन करंडिया समांणो मांहरे ॥ २ ॥
ओर पुतर नही कोय रे धना, तूं मुझ सांह्यो जोय। मोरा नंदन।
थारो विरहो तो खमणो रे मोंनें दोहिलो ॥ ३ ॥

दसूं दिस दीसे रे धना, तो विण सूनी। मोरा नंदन।
अनुमति देतां रे जीभ वहे नही॥ ४॥
तूं वंस बधाय रे धना, भुगत भोगी, थाय। मोरा नदन।
दिख्या तूं लीजे रे मों काल गया पछें॥ ५॥
आ काची काया ए अमा, ते खिण में खेरूं थाय। मोरी अम्मा।
आ सडण विधंसण देहरी॥ ६॥
तिण सूं अनुमति दीजे ए अम्मा, ढील न कीजे। मोरी अम्मा।
जे खिण जाए ते आवें नही॥ ७॥
तोनें पुन परमांणो रे धना, मिलीयो धन आंणो। मोरा नदन।
वले दात बत्तीस रे आया थारे डायचें॥ ८॥
ते धन मानो रे धना, आ जोवन वय जांणो। मोरा नदन।
चारित लीजे रे वृद्ध थयां पछें॥ ९॥
ओ धन तो असार ए अम्मा, ते जाता नहीं वार। मोरी अम्मा।
ते पिण धन मांहे सीर घणां तणो॥ १०॥
बतीस तुज नारी रे धना, अपच्छर उणीयारी। मोरा नंदन।
वांणी तो बोले मधुर सुहावणी॥ ११॥
बालीतो कामणी रे धना, वय पिण तरुणी। मोरा नंदन।
गजगति चाले चाल सुहामणी॥ १२॥
बत्तीस तो नारी ए माता, दुरगति नी दाता। मोरी अम्मा।
नरक नी देवी नारी ने जिण कही॥ १३॥
संजम दोहिलो रे धना, नही छें सोहिलो। मोरा नदन।
बावीस परिखा रे खमणा साध ने॥ १४॥
घर घर की तो भिख्या रे धना, गुर नी पिण सिख्या। मोरा नंदन।
कहणी तो रहणी रे नंदन एकसी॥ १५॥
सी तावडो सहणो रे धना, आप छांदे न रहिणो। मोरा नंदन।
कोमल केसां रे लोच करावणो॥ १६॥
साचो तो भाख्यो ए अम्मा, कूड न दाख्यो। मोरी अम्मा।
कायर नें मारग पालणो दोहिलो॥ १७॥
अनुमति दीजें ए अम्मा, ढील न कीजें। मोरी अम्मा।
जे खिण जावे ते आवे नही॥ १८॥

दुहा

माता उपाय कीयां घणां, पिण कारी न लागी काय।
भद्रा वेदल थई कहे, ज्यूं तोने सुख थाय ॥ १ ॥
भद्रा लेइ मोटो भेटणो, वले कुटंब कबीलो ले साथ।
ते भेटणो मेल राजा कने, बोले जोडी हाथ ॥ २ ॥
म्हारो कुंवर धनो दिख्या लीये, तिणरा महोछव करवा काज।
जो किरपा करे मुझ लेखवो, छतर चामर दो महाराज ॥ ३ ॥
राजा कहे चिंता करे मती, हूं करूं महोछव आय।
ते थावरचापुतर तणी परे, कीयां महोछव राय ॥ ४ ॥
हिवे भद्रापुतर धना भणी, सूंप्यो भगवत ने आय।
धने दिख्या लीयां पछे, आई जिण दिस जाय ॥ ५ ॥
हिवें घनो वीर जिणंद पे, सीख्यो समिती गुप्ती आचार।
वले अभिग्रहो लेवे तिण दिने, ते सुणजो विसतार ॥ ६ ॥

ढाल : २

[नणदल री]

हाथ जोडी विनती करे, नीचो सीस नमाय हो। सांमी।
बेले बेले पारणो, मोने दीजे कराय हो। सामी।
हूं अरज करू छूं वीणती* ॥ १ ॥
पेहले पोहर सभाय करूं, बीजे ध्यानज धाय हो। सांमी।
तीजे पोहर उठूं गोचरी, करूं पारणो ल्याय हो। सांमी ॥ २ ॥
वले आंबिल करणो पारणों, लेऊं नाखीतो आहार हो। सामी।
ते वणीमग रांक वाछे नही, एहवो बहरू निसार हो। सांमी ॥ ३ ॥
वले आहार वेहरावे तेहनां, खरड्या हुवे जो हाथ हो। सामी।
जो जोग मिले तो इण रीत सूं, लेऊं पांणी नेभात हो। सामी ॥ ४ ॥
इण विध अभिग्रह करवा तणा, उठ्या मुझ परिणांम हो। सामी।
जो किरपा कर दो आगना, तो पूरू मनोरथ तांम हो। सामी ॥ ५ ॥
बलता वीर इसडी कहें, सुण तूं चित्त लगाय हो। मुनिवर।
जो थारो मन उठियो, तो ज्यूं तोने सुख थाय हो। मुनिवर।
करम काट्या सुख उपजें ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

श्री वीर जिणंद आग्या दीयां, पांम्यो हरप आणंद हो। मुनिवर।
अभिग्रहो लीयो जावजीव रो, काटण करमा रा वृंद हो। मुनिवर।
वेरागे मन वालियो ॥ ७ ॥

दुहा

पेंहला वेला रे पारणे, उठ्यो धनो अणगार।
श्री वीर तणी लेइ आगन्या, काकदी नगर मझार ॥ १ ॥

ढाल : ३

[जंबूद्वीप मझार]

उंच मझिम नें नीच रे, ए कुल तीनां तणी।
करें समुदाणी गोचरी ए ॥ १ ॥
भिक्षा ले रूडी रीत रे, दिढवर्मी थको।
सूरपणो सेंठो ग्रह्यो ए ॥ २ ॥
करें एषणा सुध रे, आहार गवेषतां।
दोष बयालीस टालनें ए ॥ ३ ॥
जो मिले सूझतो भात रे, तो पांणी नही मिले।
पिण विलखो वेदल हुवे नहीं ए ॥ ४ ॥
कदे मिले पांणी निरदोष रे, तो आहार मिले नही।
तोही दीनपणो आणें नही ए ॥ ५ ॥
नहीं मिलीयां पांणी भात रे, विषवाद करे नही।
समभावे पाछा फिरें ए ॥ ६ ॥
कदे मिले अल्पसो आहार रे, अल्प पांणी मिले।
तोही समभावे सेंठो रहे ए ॥ ७ ॥
आए भगवत रे पास रे, आग्या लेवे आहार नी।
मूरछा रहीत भोजन करे ए ॥ ८ ॥
ज्यूं पेसे बिल मे साप रे, तिण हिज रीत सूं।
आहार लेवे उदर मझे ए ॥ ९ ॥
हिवे कीयो तिहांथी विहार रे, जनपद देस में।
श्री वीर जिणंद पासे रहे ए ॥ १० ॥

भण्या इग्यारे अग रे, तप करडा करें।
देही नें पाडे नित पातली ए ॥ ११ ॥
जे सूर करे पचखांण रे, ते एक धारा रहे।
त्यां जीतव जनम सुधारियो ए ॥ १२ ॥
जे कायर करे पचखांण रे, तो विकलाइ करें।
त्यां जीतव जनम बिगाडियो ए ॥ १३ ॥
जे कीजें त्याग वेंराग रे, करम काटण भणी।
तो धना नी परे पालजो ए ॥ १४ ॥

●

दुहा

धनो अणगार तपसा करें, सरीर गाल्यो रूडी रीत।
तिणरो जथातथ वर्णन करूं, ते सांभलजो धर प्रीत ॥ १ ॥

ढाल : ४

[धर्म आराधिए ए]

सूकी छाल वृष तणी ए, वले काठ पावडी पिछांण।
जूनों वले खासडो ए, इसडा सूका पग जांण।
धना अणगार नां ए* ॥ १ ॥
ते हाड रह्या चाम वीटिया ए, पिण लोही ने मांस रहीत।
नसा जाल जू जूआ ए, ते कीधा वेराग सहीत ॥ २ ॥
फली कुलथ उडद मूंगरी ए, ते छेदी तावडे सूकाय।
एहवी पगरी आंगुली ए, लोही मांस विना गई कुलमाय ॥ ३ ॥
पींड्यां काग पखी तणी ए, वले पीड्यां मोर नी जांण।
वले ढेलडी तणी ए, एहवी पीड्यां वखांण ॥ ४ ॥
गोडा मोर पंखी तणां ए, ढेणीयाल पखी नां जांण।
सूकी गांठ वनसपती ए, एहवा गोडां रा संठाण ॥ ५ ॥
वृक्ष प्रीयंगु बोर सामली ए, त्यारी कूंपल छेदी हुइ ताय।
तें सूकी तावडा थकी ए, तिम साथल गइ कुमलाय ॥ ६ ॥
ऊंट नो पग दीसे हेठा थकी ए, वले गरढा बलद नो पग जांण।
कड नो पाटो एहवो ए, वले भेसा रा पग रे संठाण ॥ ७ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केलडी ने कडाई कठोतरी ए, वले दीवडी सूखी जाण।
सल पड़ने उडो गयो ए, एहवा पेट तणां एहनाण॥ ८॥
आरीसा ऊपर आरीसो धरे ए, पांणी नां ऊपरा ऊपर ठांम।
तिम पांसली करडिया ए, वेहू कानी रा तांम॥ ९॥
जांणें श्रेण मेली गोली लाख री ए, उंधा कडाहा नी श्रेण मड।
एहवो मोरां विचें ए, दीसे पीठ करंड॥ १०॥
गाय चरावा नो सूडलो ए, तिणरो हेठलो तलो पिछाण।
वले बीजणा जिसो ए, एहवो छाती हीया रो सठाण॥ ११॥
फली वृक्ष खेजडा तणी ए, तोडे न्हांखी तावडा मांहि।
ते सूक खोखा हुवें ए, एहवी हुई दोनूं बांहि॥ १२॥
वड पलास वृक्ष तणां ए, त्यांरा सूका पान विख्यात।
सूका छाणा जिसा ए, सूका हथेली नें हाथ॥ १३॥
फली कुलथ उडद मूंग नी ए, त्यांनें छेदी तावडे सूकाय।
एहवी हाथ नीं आंगुली ए, लोही मांस विनां गइ कुलमाय॥ १४॥
गलो घडा करवा तणो ए, वले कमंडलू चंवू विचार।
त्यांरा गला सारिखो ए, गाबड नो आकार॥ १५॥
काचो तूंबडो तोडनें ए, तिणनें तावडे देवे मूंक।
वले गुठली अंबनी ए, एहवी हडवची गइ छे सूक॥ १६॥
जलोक पांणी माहिली ए, ते सूकी तावडा री भोठ।
वले गोली लाख री ए, एहवा सूका दोनूं होठ॥ १७॥
वड पलास उंबर सांगनां ए, ए च्यारूं विरखां नां पान सूकाय।
ते सूके पातला पड्या ए, तेहवी जीभ सूकी मुख मांय॥ १८॥
आंबा नें विजोरा फल नी कातली ए, तावडा सूं हुई सूक (पाक।
इण दिष्टते जांणजो ए, जाबक सूको नाक॥ १९॥
प्रभात्या तारा ज्यूं तिग तिग करे ए, तिणनें जोवे कोड निजर न्हांख।
वाजंत्र वीणा छिद्र ज्यूं ए, तिम उंडी गई दोनूं आंख॥ २०॥
कांदा काचर करेला तणी ए, यांरी सूकी छाल समांन।
इण दिष्टते जांणजो ए, सूका दोनूं कांन॥ २१॥
काचो तूंबडो सूको थको ए, वले काचो कंद सूकाण।
सूका कोला सरिखो ए, तिम मस्तक सूको जांण॥ २२॥
लोही मांस सगले नही ए, तोही तप करवा सूं गाढ।
नसा जाल जूजूवा ए, सतरे ठांम दीसे हाड॥ २३॥

पेट कांन जीभ होठ मे ए, ए हाड नही च्यार ठांम।
चामडी नसा जालसूं ए, बींट रह्या छें तांम ॥ २४ ॥

दुहा

सरीर सूकाय दुरबल कीयो, तपसा करें विसाल।
पग पिंडी साथल बीहामणा, ते दीसे घणा विकराल ॥ १ ॥
वले वशेषे सरीर नो, आकार कह्यो भगवत ॥
किण किणरी दीधी ओपमा, ते सुणजो विरतंत ॥ २ ॥

ढाल : ५

[बे बे रे मुनिवर वहरण पांगु]

पेट उडो गयो छे तेहनो रे, पासली ना नीकलिया करंड विसाल रे।
त्याणें जूआ जूआ गिणतां छे सोहिला रे, गिणे रुद्राक्ष तणी जिम माल रे।
दुक्कर तपसा रिष धने करी रे ॥ १ ॥
गंगा नां तरंग नीं ल्हरां सरिखा रे, हीयानां करड नो देस विभाग रे।
ते मांस लोही विण दीसें जू जूवा रे, चामडी बीट रह्यो छें लाग रे ॥ २ ॥
साप सूखा सरिखी दोय बाहियां रे, ते प्रसिध जांणें लोक विख्यात रे।
घोडा रा पिलाण रे लोह ना पागडा रे, तिम लटके धना रा दोनू हाथ रे ॥ ३ ॥
मस्तक धूजे कंपण वाय ज्यूं रे, बदन कमल दीसें विकराल रे।
वले खीण पड्या छे होठ सूक नें रे, घडा ना मुख सरिखो मुख नों ढाल रे ॥ ४ ॥
मांहें पेठा छे डोला दोनूं आंख नां रे, ते जीवे छे आउखा रे आधार रे।
वले हाले चाले पगां उभा रहे रे, इत्यादिक बोल अनेक विचार रे ॥ ५ ॥
भाषा बोलण री मन मे उपजे रे, जब पिण पामे खेद अतत रे।
बोले तिण बेलांने बोल्यां पछें रे, जब पिण गिलाणपणो पामंत रे ॥ ६ ॥
गाडी भरी तिल साल सूंगणी रे, वले कोयलां री गाडी भरे चलाय रे।
एहवा उठे छे सब्द सरीर नां रे, जब आघी पाछी चाल्या सूं काय रे ॥ ७ ॥
राख ढांकी अग्नि ज्यूं दीपती रे, तप रूपणी लिखमी अति सोभंत रे।
तपसा करने तिण लाहो लीयो रे, पूरी मुनीसर मन री खंत रे ॥ ८ ॥

दुहा

तिण काले नें तिण समें, भगवंत श्री वर्धमान।
राजग्रही नगर समोसर्‍या, गुणसील नाम उद्यान ॥ १ ॥
वीर जिनंद साथे घणा, मोटा संत अणगार।
धनो तपसी मोटको, ओ पिण आयो लार ॥ २ ॥
वीर पधार्‍या जाण ने, आयो श्रेणिक राय।
भाव सहित वदणा करे, बेठो सनमुख आय ॥ ३ ॥
भगवंत दीवी देसनां, मोटी परखदा मांय।
लोकालोक नवतत्व तणा, भिन भिन दिया भेद बताय ॥ ४ ॥
वाणी सुण ने परखदा, हिवडे हरखित थाय।
हिवे श्रेणिक राय पूछा करे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल : ६

[वेग पधारो महल थी]

चवदे सहंस अणगार छे, ते सर्व रत्ना री खान।
उतकष्टो कुण एहमें, तप करने परधान।
ए राय श्रेणिक पूछा करे ॥ १ ॥
वीर कहे राजा सुणे, साधु चवदे हजार।
धनो सगला साधां थकी, उतकष्टो अणगार।
वीर कहे राजा सूणे ॥ २ ॥
राय कहे किण कारण कह्यो, धनो उतकष्टो सत।
किरपा करे कहो मुझ भणी, धना तणो विरतंत।
कर जोडी राजा कहे ॥ ३ ॥
तिण काले ने तिण समें, काकंदी नगर मझार।
तिहां भद्रा सुत धनो हूंतो, परण्यो बतीसे नार ॥ ४ ॥
दात बतीस आया डायचे, सुख भोगवे संसार।
वाणी सुण मो आगले, लीधो संजम भार ॥ ५ ॥
बेले बेले आंवल पारणे, लेणो न्हांखीतो आहार।
तिण देही सूकाय खखर करी, मांड कह्यो विस्तार ॥ ६ ॥
इण कारण उतकष्टो कह्यो, सगला साधां मांय।
इम सुणनें राय ऊठियो, उभो धना कनें आय।
वंदणा कर धिन धिन कहे ॥ ७ ॥

मिनख तणा जीतब तणो, लाहो लीधो विसेख।
थें आतम काज सुधारियो, परभव साहमों देख।
राय श्रेणिक धिन धिन कहे॥ ८॥
थांनें वीर जिणंद वखाणिया, सगला साधां रे मांय।
ते सुण ने आयो हूं बांदवा, थे कुमी न राखी कांय॥ ६॥
जस कीरत राजा करे, मन में हरषित थाय।
भाव सहित वंदणा करे, आयो जिण दिस जाय।
भाव सहित वंदणा करे॥ १०॥

●

दुहा

हिवे तिण काले ने तिण समे, रिषि धनो अणगार।
करे चितवणा किण विधे, ते सुणजो विस्तार॥ १॥

ढाल : ७

[चेतन चेतो रे मुनिवर दे उपदेश]

रिषि धनो रे, चितवे मध्य रात।
धर्म जागरणा करे मन रली, रिषि धनो रे।
जाण्यो दुर्बल गात, देही पडी जाणी पातली।
रिषि धनो रे॥ १॥
करे कुण विरतंत, मन वेराग में आणनें।
रिषि धनो रे।
हाल्या चाल्या अत्यंत, वेदन उपजती जाणनें।
रिषि धनो रे॥ २॥
करे विचार मतिवत, मांहरो दिन दिन प्राक्रम हीणो पडे।
रिषि धनो रे।
बेठा जाण भगवंत, त्यां बेठा संथारो मोने सिरे।
रिषि धनो रे॥ ३॥
एहवी चितवे रात, जाण्यो करू संथारो आणंद सूं।
रिषि धनो रे।
हुवो जोण प्रभात, आय नम्यों वीर जिणंद नें।
रिषि धनो रे॥ ४॥

●

दुहा

धनें राते चिंतव्यो, ते आगूंच भाख्यो वीर।
संथारा री लेवा आगन्या, तूं आयो साहस धीर॥ १॥
धनो कहे इमहिज छे, बोले जोडे हाथ।
हूं करूं संथारो भाव सूं, आगन्या दो जगनाथ॥ २॥
जब वीर जिनेश्वर इम कहे, ज्यूं तोनें सुख थाय।
ते धनो सुण हरषित हुवो, श्री जिन आज्ञा पाय॥ ३॥
सर्व साधु साधव्यां भणी, रूडी रीत खमाय।
हिवे विपुल पर्वत ऊपरे, थविरां साथे जाय॥ ४॥
निश्चल थयो आलोय नें, सर्व जीव रास खमाय।
संथारो पादोपगमन कियो, तिण में हलावे नहीं काय॥ ५॥
दिख्या पाली नव मासां लगे, एक मास तणो संथार।
आऊखो पूरो करे, गयो स्वारथ सिद्ध मझार॥ ६॥

ढाल : ८

[हे सखी महलां जी मोर २ लाल झरोखें जी]

थिवरां जाण्यो हो धनें छोडी काय, तिहां स्थविर साधु एकठा मिल्या।
तिण ठांमें हो थविरां काउसग ठाय, पछे उपगरण ले पाछा वल्या॥ १॥
थविर ऊभा हो वीर समीपे आंण, वले सीस नमाय विनो करे।
ऋषि धने हो सांमी छोड्या प्रांण, इम कही उपगरण आगल धरे॥ २॥
इम सांभल हो पूछे गोतम सांम, विनो करे हरष धरी।
ऋषि धनो हो गयो कुण ठांम, ते मुझ नें कहो किरपा करी॥ ३॥
वीर भाख्यो हो धनो ऋषि सुविनीत, संथारो मास तणो कर्यो।
चित्त चोखे हो आराध्यो रूडी रीत, स्वारथ सिध जाय अवतर्यो॥ ४॥
आउ कितरो हो धनां रो जगदीस, स्वारथ सिध विमाण में।
वीर भाख्यो हो आऊ सागर तेतीस, तिहां झिले सुखा री खाण में॥ ५॥

●

दुहा

तिहां स्वारथ सिध विमाण रो, वीर कह्यो विसतार।
तिण अनुसारे हूं कहूं, सांभलजो नर नार॥ १॥

इग्यारे सो जोजन तणी, महलायत ऊंची जाण।
इकवीसो जोजन तणा, जाडा तला वखाण ॥ २ ॥
कोट ऊंचो जोजन तीन सो, मूल पोहलो सो जोजन जांण।
पच्चास जोजन चोडो विचे, उपर पच्चीस वखांण ॥ ३ ॥
तिण महलायत नें मझे, सेज्या अति सुखदाय।
तिण उपर एक चंद्रवो, दीठां इचरज थाय ॥ ४ ॥
तिण मणी चंद्रवा ने मझे, वजर अंकूरो एक।
तिहां मोत्यां तणो वर्णन करूं, ते सुणजो आंण विवेक ॥ ५ ॥

ढाल : ६

[धर्म आराधिए ए]

एक मोती चोसठमण तणो ए, तिणरे पाखती मोती च्यार।
ते चिहूं दिस लहकता ए, बतीस मन त्यां- में भार।
स्वारथ सिध मझे ए* ॥ १ ॥
आठ मोती सोले सोले मण तणा ए, ते सोभ रह्या छे अनूप।
पानडियां सोवन तणी ए, त्यांरो गमतो लागे रूप ॥ २ ॥
सोले मोती आठ आठ मण तणा ए, वले मोती कह्या बतीस।
ते च्यार च्यार मण तणा ए, ते भाख गया जगदीस ॥ ३ ॥
चोसठ मोती दोय दोय मण तणा ए, वले एकसो नें अठावीस।
मोती मण मण तणा ए, ते दीपे छे वीसवावीस ॥ ४ ॥
दोय सो नें तेपन मोत्यां तणी ए, लागी झिगामग जोत।
सेज्या रे उपरे ए, होय रह्यो छे उद्योत ॥ ५ ॥
ते मोती वायु चलावियां ए, उठे सब्द तणा झिणकार।
कानें सुणिया थकां ए, पांमें हरष अपार ॥ ६ ॥
छ राग छतीस रागण्यां ए, एहवा सब्द उठे मोत्यां मांय।
तिण ठामे देवता ए, सुण सुण मगन होय जाय ॥ ७ ॥
सहंस सूरज थी अधिको घणो ए, महलां तणो परकास।
तिण ठांमे देवता ए, देख देख पामे हुलास ॥ ८ ॥
तिण ठामे जाय उपनों ए, नव महिनां रो चारित्र पाल।
पुन उपाय नें ए, भोगवे सुख रसाल ॥ ९ ॥

---

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

त्यारे ग्यानावरणी पतलो पड्यो ए, तिण सूं उपनो अवधि विसेख।
त्यांही वेठा थका ए, सर्व लोक रह्या छे देख ॥ १० ॥
त्यारे संका पडे कोइ ग्यान मे ए, मन सूं पूछे जाव।
जिणेसर देव नें ए, पाछा मन सूं समझे सताव ॥ ११ ॥
त्यांरो ध्यांन चारित थो निरमलो ए, घट में अधिको संतोख।
जो सात लव आउखो हूंतो ए, तो जाता पाधरा मोख।
आठूं कर्म खय करी ए ॥ १२ ॥
कर्म कटे वेलो कीयां ए, जितरा रह्या कर्म लार।
तिण सूं मोख नही गया ए, रह्या स्वारथसिध मझार।
कर्म बाकी रह्या ए ॥ १३ ॥
आहार तणी इच्छा हुवे ए, नीकल्यां वरस तेतीस हजार।
कवल आहार ले नही ए, खांचले पुदगल सार ॥ १४ ॥
तेतीस पख नीकल्यां थकां ए, लेवे सास उसास।
सदा सुख में झिले ए, ते कदे न हुवे उदास ॥ १५ ॥
कर्म पाड्या त्यां पातला ए, कर कर करणी सार।
तिण ठामें उपनां ए, सगला एकां अवतार ॥ १६ ॥
हेठला देव देवी थकी ए, अधिका सुख अथाग।
उद्योत त्यांरो अति घणो ए, रह्या मुगत सुखां सूं चित्त लाग ॥ १७ ॥
वले गोतम सांमी तिण अवसरे ए, पूछा कीधी आम।
स्वारथसिध थकी, धनो चव ने जासी किण ठांम।
आउखो पूरो करी ए ॥ १८ ॥
वीर कहे सुण गोयमा हो, ए चवसी धनां रो जीव।
महाविदेह खेत्र मे ए, उत्तम कुल अतीव।
तिण ठामे जनमसी ए ॥ १९ ॥
भोग जोग समर्थ हुवां पछे ए, मिलसी मोटा अणगार।
वेरागे घर छोडने ए, जासी मुगत मझार।
आठूं कर्म खय करी ए ॥ २० ॥
विसतार कह्यो धनां तणो ए, अणुत्तरोवाइ रे अधिकार।
सांभल ने नर नारिया ए, करजो आत्म तणो उद्धार।
समता रस आण ने ए ॥ २१ ॥
समत अठारे चोतीसे समें ए, असाढ विद छठ मंगलवार।
सिरीयारी सहर में ए, कह्यो धनां रो अधिकार।
भव जीवां ने समझायवा ए ॥ २२ ॥

रत्न १०

मल्लीनाथ री चौपई

दुहा

नंमू वीर सासण धणी, ते सूत्र देव अरिहंत ।
त्यां भाख्या ते गणधरां गूंथिया, ते आगम सार सिधांत ॥ १ ॥
मल्लीनाथजी नी वारता, सूतर गिनाता मांय ।
आठमा अध्ययन तणे मभे, भाख गया जिन राय ॥ २ ॥
मल्लीनाथ तीर्थंकर उगणीस मां, ते प्रसिध लोक विख्यात ।
ते हुवा तीर्थंकर अस्तरी, आ इचर्य वाली बात ॥ ३ ॥
आ हूडा नांमे अवसर्पणी, हुइ काल अनंते आय ।
तिण मांहें दस अछेरा हुआ, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥
केवलग्यांन उपनां पछें, वीर ने उपसर्ग उपनों आय ।
वले गर्भ हस्यो भगवांन रो, स्त्री हुइ तीर्थंकर ताय ॥ ५ ॥
वीर वाणी निरफल गइ, कृष्ण अमरकंका गया तेह ।
संखे सख मिलीया तिहां, पांचमो अछेरो एह ॥ ६ ॥
चद सूर्य आया रूप मूलगे, वीरनां समोसरण मझार ।
नरक गयो हरिवंस जुगलीयो, चमर सुधर्म गयो तिणवार ॥ ७ ॥
एकसो आठ एक समें सिघ, उतकष्टी अवगाहना जेह ।
असंजती पूजा हूइ अति घणी, दसमो अछेरो एह ॥ ८ ॥
त्यांमें तीजो अछेरो ओ हुओ, स्त्री हुवा मल्ली जिणद ।
हिवें धुर सू उतपति त्यांरी कहूं, सुणजो मन आंण आणंद ॥ ९ ॥

ढाल : १

[मम करो काया माया कारमी ए]

तिण कालेनें तिण समा रे विषें, ओहीज जंबू द्वीप जांण जी ।
तिहां महाविदेह क्षेत्र मोट को, तिणरे मध्य मेरु पर्वत बखांण जी ।
पाछिल भव सुणो मल्लीनाथ नो* ॥ १ ॥
मेरु पर्वत थी पश्चिम दिशे, निसढ सूं उत्तर दिशि जांण जी ।
सीतोदा नदी थी दक्षिण दिशे, पश्चिम समुद्र सू पूर्व पिछांण जी ॥ २ ॥
वखारा सुहावइ सूं पश्चिम दिशे, विजय सलिलावती जांण जी ।
तिण विजय सलिलावती ने विषे, वीतसोका राजधानी वखाण जी ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते लांबी छे जोजन बारे तणी, पोहली नव जोजन जांण जी।
तिण दीठां तो नयण ठरे घणा, प्रत्यक्ष देवलोक समांन जी॥ ४॥
तिण वीतसोका राजधानी बाहिरे, ईसाण कूण रे मांय जी।
इंद्रकुंभ नांमे उद्यांन थो, ते छहु ऋतु मे सुखदाय जी॥ ५॥
तिण वीतसोका नगरी रो अधिपति, बल नामें मोटो राजा जांण जी।
धारणी प्रमुख तेहने, अंतेवर सहंस वखांण जी॥ ६॥
एकदा प्रस्तावे रांणी धारणी, सुखे सूती महलां रे मांहि जी।
तिण सिह दीठो सुपना मझे, ते जाग हरषित हुइ ताहि जी॥ ७॥
सवानव मासे पुत्र जनमियो, जद जनम महोच्छव किया तांम जी।
असुच काढ्यो दिन ग्यारमें, महाबल कुमर दीयो नांम जी॥ ८॥
आठ वरस बीतां पछें, भण्यो छें बहोत्तर कला जांण जी।
बालभाव मूंक्यो जोवन पामियों, भोग समर्थ हुओ पिछांण जी॥ ९॥
कमल श्री आदि पांच सों, राय वर कन्या श्रीकार जी।
परणाइ एक दिन तेहनें, ते अपछर रे उणियार जी॥ १०॥
त्यांरे दायचो आयो दात पांचसो, त्यांरो तो घणो विसतार जी।
त्यारे पांच सो प्रासाद करावीया, विचें कुमर नो महल श्रीकार जी॥ ११॥
तिहां सुख भोगवे छे संसार नां, पूर्व पुन पसाय जी।
ते किण विध समझे धर्म मे, सांभलजो चित ल्याय जी॥ १२॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, थविर पधास्या ताहि।
आग्या लेने उतस्या, इंद्रकुंभ उद्यानरे मांहि॥ १॥
परखदा वांदण ने गइ, बले आयो बलराय।
मुनिवर दीधी देशना, सगला ने हित ल्याय॥ २॥
वाणी सुणें राय हरखियो, जाण्यो अथिर संसार।
राज थापे महाबल कुमर नें, लीधो संजम भार॥ ३॥
अंग इग्यारे मुख भण्यो, चारित पालें निरदोख।
संथारो एक मास रो, पोहतो अविचल मोख॥ ४॥

ढाल : २

[साधु जी नगरी आया सद्दा०]

महाबल कुमर हुवो राजा मोटको रे, हेमवंत जिम विख्यात।
कमल श्री पटरांणी तेहने रे, सुख भोगवे तिण संघात।
महाबल राय होसी मल्लीनाथ जी रे* ॥ १ ॥
बलभद्र कुमर हुवो तिण राय नें रे, कमल श्री राणी रो अंगजात।
जुगराज पदवी दीधी तेहने रे, ते पिण प्रसिध लोक विख्यात ॥ २ ॥
महाबल राय ने छव मित्री - हुंता रे, मांहोमां दीठां पामे आणद।
अचल धरण पूरण चोथो बसु रे, वेसमण अभिचंद ॥ ६ ॥
साथे जनम्यां नें साथे वध्या रे, वाल क्रिडा कीधी त्या साथ।
वले परठ कीधी माहोमां एहवी रे, सगला री थापी एक बात ॥ ४ ॥
तिण अवसर मोटा थविर पधारिया रे, गुण रत्ना री खाण।
आग्या लेई उतरिया बागमे रे, लोक आया सुणवा बाण ॥ ५ ॥
महाबल राजा आय वाणी सुणी रे, वेराग उपनो मन माय।
दिक्षा लेवण री मन उपनी रे, हाथ जोडी बोल्यो इम राय ॥ ६ ॥
वाल मित्री छहुं ने पूछने रे, निज पुत्र ने राज थाप।
चारित्र लेसूं ऋद्ध छोड ने रे, पचखू अठारे पाप ॥ ७ ॥
वलता मुनिवर कहे राय साभले रे, जो थारे सजम सू हेज।
जो थारो मन उछ्यो छे घर छोडवा रे, तो मूल न करणी जेज ॥ ८ ॥
राजा आय पूछ्यो मित्र्यां भणी रे, हू तो लेसू संजम भार।
राज थापे बलभद्र कुंवर ने रे, थे काइ करोला लाल ॥ ९ ॥
जब वलता मित्री इम बोलिया रे, पाछे म्हाने कुण आधार।
म्हे पिण था साथे छहूं जणा रे, लेसा सजम भार ॥ १० ॥

●

दुहा

जब राजा कहे मो साथे लगा, थे लेसो संजम आज।
तो आप आप तणे घर जायने, थापे पुत्र नें राज ॥ १ ॥
सहस पूरुष उपाडे जेहवी, वेसी सिविका मांय।
मोटे मंडाणे करी आवो इहां, ढील म करज्यो कांय ॥ २ ॥
ए वचन राजा रो सांभले, आप आप तणे घर आय।
राज थापे बेटा भणी, वेठा सिविका माय ॥ ३ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वहु मोटे मडाणे करी, आय ऊभा राजा पास।
छहूं मित्री आया राजा देख नें, पाम्यो अत्यंत हुलास ॥ ४ ॥
कोडंबी पुरूष वोलाय नें, वलभद्र नें राज वेसाण।
पछे छहूं मित्र्यां साथे लगी, दिक्षा लीधी मोटे मडाण ॥ ५ ॥

ढाल : ३

[वेग पधारो महल]

आचार सीखे परिपक्व हुवा, पाले रूडी रीत।
इग्यारे अंग सगलां भण्या, त्यांरी मूल नही अप्रतीत।
वेरागे मन वालियो* ॥ १ ॥

चउत्थ छठादिक आकरी, तपसा कीधी अत्यत।
कर्मा नें पाडे छे पातला, सूर वीर मतिवत ॥ २ ॥

काल कितोएक वीता पछे, सातोई अणगार।
भेला होय मिसलत करी, तप करसा एकधार ॥ ३ ॥

सगला तप सरिखो करां, न करा फेर लिगार।
ए वचन मांहोमांरो साभले, सगलां कियो अंगीकार ॥ ४ ॥

तपसा करे अति आकरी, निरजरा हेत निरधार।
महावल साधु तिण अवसरे, करे कवण विचार ॥ ५ ॥

जो सगलाई तप वरोबर करां, तो सगला वरोबर हुवां सोय।
तो कांयक अधिको तप करू, तो यासूं अधिको हू होय ॥ ६ ॥

एहवो भूठ कपट लोभ सेवियो, कीधी विश्वासघात।
मान वडाई कारणें, पडिवजियो मिथ्यात ॥ ७ ॥

मित्र द्रोह अकार्य कियो, महावल नामें अणगार।
तिणसूं स्त्री नाम गोत वांधियो, दीधी वस्तु विगाड ॥ ८ ॥

चोथ भक्त छव साघु करे, जद महावल नामे अणगार।
छठ भक्त वेलो करे, कपट सहित तिणवार ॥ ९ ॥

छव साघु वेलो करे, जव महावल तेलो दे ठाय।
यां तेलो कियां चोलो करे, यारे चोले पांच ठहराय ॥ १० ॥

इह विद कपट सूं तप करे, याने तप सूं चुकाय।
ते भेद न दीधो केहने, राखी मन री मन मांय ॥ ११ ॥

इणविध छांने तप कियो, कर्म जोगे उघी धार।
जाण्यों सगलां सूं होऊं मोटको, मन मे आण अहकार।
कर्म तणी गति वांकडी ॥ १२ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दुहा

वले वीसां थानकां करी, वंधे तीर्थंकर नाम कर्म।
ते वारंवार सेवियां, तिण सूं हुवे निरजरा धर्म॥ १ ॥
गुणग्राम करे अरिहंत नां, वले सिधां रा करे गुणग्राम।
आठ प्रवचन माता रा गुण करे, गुरू रा गुण करे ले ले नाम॥ २ ॥
थविर बहुश्रुति ने तपसी तणा, त्यांरा पिण करे गुणग्राम।
वारवार उपयोग दे ग्यान ऊपरे, समकित ऊपर सुध परिणाम॥ ३ ॥
विनो करे सात प्रकार नों, आवसग करे कालो काल।
सील व्रत पाले निरमलो, थोडो बोले वचन रसाल॥ ४ ॥
अधिक तपस्या करे बोल चवदमें, पनर में साधु नें दे दान।
दस विध वेयावच करे सोल मे, तिणरो न्याय जाणें बुधवान॥ ५ ॥
गुरुनो कार्य करे हर्ष सूं, गुरू ने उपजावें सन्तोष।
अठारमे भणें अपूर्व ग्यांन नें, सूत्र भक्ति करे निरदोष॥ ६ ॥
प्रवचन री करे प्रभावनां, सूधो मार्ग देखाले ताम॥
समकित थापे मिथ्यात उत्थापने, ए वीसोई बोलां रा नाम॥ ७ ॥
ए वीसोंई बोल सेविया, महाबल नामें अणगार।
तीर्थंकर नाम कर्म बांधियो, ते होसी तीजा भव मझार॥ ८ ॥

ढाल : ४

[जोयजो रे समकित नों रस]

पहिलां तो अस्त्रीगोत उपारज्यो रे, पछे बांध्यो तीर्थंकर गोत रे।
ते तीजे भव होसी तीर्थंकर अस्त्री रे, बंध गई पाप कर्म री छोत रे।
ते होसी तीर्थंकर तीजा भव मझे रे* ॥ १ ॥
पछें महाबल आदि देई सातूं जणा रे, भिक्षु री पडिमा वूहा वार रे।
वले खुडाग सिंघ तपनें महा सिंघ तप बहु रे, कीधो छे सातूंई अणगार रे॥ २ ॥
त्यां तपसा आराधी रूडी रीत सूं रे, पछें आया सातोई थविरां पास रे।
वंदणा कीधी थविरां नें हरख सूं रे, वले तपसा कीधी छे बोहत हुलास रे॥ ३ ॥
हिवे महाबल आदि देई सातोई जणां रे, तपसा कीधी छे घोर प्रधान रे।
जब काया सूखी भूखी लूखी थई रे, तोही न चूका रूडो ध्यान रे॥ ४ ॥
शरीर गाल्यो छे खंधक नी परें रे, बल प्राक्रम हीणो पड्यो छें ताय रे।
जब थविरां ने पूछे संथारो कीयो रे, च्यारूं पर्वत रे ऊपर जाय रे॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दोय मास तणी कीधी सलेखणा रे, चारित पाल्यो वरस चउरासी लाख रे।
सर्व आउखो चोरासी लाख पूर्व तणो रे, ज्ञाता में श्री वीर गया छे भाख रे ॥ ६ ॥
ते आउषो पूरो करे सातूं जणां रे, गया छें जयंत विमाण रे मांय रे।
देवपणे सातूंई उपनां रे, तिहां सुख भोगवे पुन पसाय रे ॥ ७ ॥
आउखो महाबल देवता तणो रे, बत्तीस सागर पूर्ण वखांण रे।
शेष आउखो छव देवता तणो रे, बत्तीस सागर ऊणो जांण रे ॥ ८ ॥
हिवें महाबल वरजी ने छव देवता रे, आउखो पूरो कीयो छे तेथ रे।
आय उपनां इण जंबू द्वीप में रे, तिहां दक्षिण दिस मे छेओ भरत खेत रे ॥ ९ ॥
त्यांरा मात पिता रो कुल छें निरमलो रे, त्यांरा मोटा कुल राजवियां रा जांण रे।
जूआ जूआ राजा रा कुल मझे रे, कुमरपणें ऊपनां छे आंण रे ॥ १० ॥
प्रतिबुधि इखाग कुल नो राजवी रे, ते अजोध्या नगरी नो हुवो राय रे।
चंद्रच्छाय राजा हुवो छें दूसरो रे, चंपा नगरी नों राजा ताय रे ॥ ११ ॥
तीजो संख राजा कासी देशनो रे, वाणारसी नगरी नांमें जांण रे।
चोथो रूपी राय कुणाला देश नो रे, तिणरे सावथी नांमें नगरी वखांण रे ॥ १२ ॥
पांचमों अदीनसत्रु राजा हुवो रे, कुरु देश हस्तीनागपुर नो राय रे।
छठो जितसत्रु राजा हुवो रे, पंचाल देश ने कंपिलपुर नगरी मांय रे ॥ १३ ॥
ए छ मित्री राजा हुवा छे जूजूआ रे, जयंत विमाण थकी छहू आय रे।
हिवे महाबल देव आउखो क्षय करी रे, किण विध उपजे मानव भव मांय रे ॥ १४ ॥

●

दुहा

तीन ग्यान साथे लीयां, चवियो महाबल देव।
जब उंचा ग्रह भली रास छे, वले सोम दिशा सुखमेव ॥ १ ॥
उत्पात वरजित सोम दिगि अछे, अधकार रहीत छे रात।
निरमल रज रहीत छे, माठा शब्द नही अंसमात ॥ २ ॥
प्रदक्षिणा देतो थको, बाजे अनुकूल वाय।
प्रमोद हर्षवंत लोक छे, जनपद देश रे मांय ॥ ३ ॥
अर्द्ध रात्रि समो तिण काल में, अश्विनी नक्षत्र तिण रात।
वले चंद्रमां संजोग आया थकां, तिथ फागुण सुदि चोथ विख्यात ॥ ४ ॥
तिण काले जयंत विमाण थी, चव आया मनुष्य लोक मांहि।
जद काल वेलां सगली भली, वले शुभ नक्षत्र थो ताहि ॥ ५ ॥
इण जंबू द्वीप रा भरत में, मिथला राजधानी ताय।
तिहां कुंभराजा राणी प्रभावती, उपनां तिणरी कूख आय ॥ ६ ॥

ते देश में लोक सुखिया हुंता, वले हरख प्रमोद सहीत।
जद जन्म्यां तीर्थंकर उगणीस मां, ते जावक रोग रहीत॥ ३॥
तिण काले देवी देवता भणी, खबर हुई ठांम ठाम।
ते जन्म महोच्छव किण विध करे, वले किण विध करे गुण ग्राम॥ ४॥
छपन दिशा कुमारी तिण अवसरे, आय उभी ततकाल।
जन्म कार्य किण विध करे, ते सुणज्यो सूरत संभाल॥ ५॥

ढाल : ६

[धीज करे सीता सती रे लाल]

आठ दिशा कुमारी देवांगणा रे, हेठा लोक री वसण हार रे सुगणनर।
त्यां वायु विकुर्वी काढयो असुच नें रे लाल, गावण लागी गीत धुंकार रे।
करे जन्म महोच्छव मलीनाथ नो रे लाल॥* १॥
आठ दिशा कुमारी ऊंचा लोक री रे, नंदनवन री वसणहार रे।
त्यां गंधोदक पाणी री विरखा करी रे लाल, ए पिण गावे गीत गुंजार रे॥ २॥
आठ देवी आई पूर्व दिशा थकी रे, रूचक दीप री वसण वदीत।
ते ऊभी आरीसो लेई हाथ में रे लाल, पूर्व साहमी ऊभी गावें गीत रे॥ ३॥
आठ देवांगणा दक्षिण दिशा थकी रे, रूचक द्वीप सूं आई चाल रे।
ते पिण गीत गावे हरख सूं रे लाल, ऊभी भिंगार कलश हाथ झाल रे॥ ४॥
आठ आइ पश्चिम नां रूचक थी रे, ते बीजणे ढोले वाय रे।
वले गीत गावें छें जन्म नां रे लाल, ते काना ने अति सुखदाय रे॥ ५॥
आठ आई उत्तर नां रूचक थी रे, ते चमर बीजे लेई हाथ रे।
ए पिण गावें गीत जन्म ना रे लाल, मन मांहें हरख न मात रे॥ ६॥
च्यारूं विदिशा कुमारी च्यारूं विदिश नी रे, रूचक कूंट तणी वसवान रे।
ते दिवलो ले ऊभी च्यारूं विदिश में रे लाल, गीत गावती देवे सन्मान रे॥ ७॥
च्यार देवी मज्झ रूचक नी रे, ते वसे ऊंच लोक मांय रे।
त्यां च्यार आंगुल वर्जी नाभ थी रे लाल, नालो कापियो आय रे॥ ८॥
वले चोसठ इंद्र आविया रे, जन्म महोच्छव करवा काज रे।
मेरू ऊपर लेजाय नवराविया रे लाल, अनेक वाजंत्र रह्या वाज रे॥ ९॥
अस्त्री तीर्थंकर देखनें रे, संका पडि इंद्रा रे मन मांय रे।
संकल्प विकल्प ऊपनो रे लाल, अस्त्री तीर्थंकर किम थाय रे॥ १०॥
पछे इंद्र मांहोंमां इम भणे रे, कोई संका म करो अंसमात रे।
ए हुवा तीर्थंकर अस्तरी रे लाल, ते अछेरा भूत छे वात॥ ११॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इंद्र महोच्छव करे घणा रे, पाछा आणै माता पास रे।
वले अठाई महोच्छव इंद्र किया रे लाल, मन माहिं आण हुलास रे॥ १२॥
वले मा बाप महोच्छव किया घणा रे, जन्म रा जिण दिन जाण रे।
इग्यारमें दिन अशुच काढयो न्हायनें रे लाल, न्यात जीमाई मोटें मंडान रे॥ १३॥
न्यातीला ऊभां थकां कहे रे, पुत्री गर्भ मांहे थकां ताम रे।
मालती रो डोहलो ऊपनो रे लाल, तिणसूं मल्ली कुमारी देसां नाम रे॥ १४॥

●

दुहा

न्यातीलां सुणता थकां, मल्ली कुमरी दियो छै नाम।
ते सुखे समाधे मोटी हुई, महावल नी परे ताम॥ १॥
मल्ली भगवई देवलोक थी, चवनें ऊपनी छे इहां आय।
त्यांरो रूप अनोपम शरीर नो, ते कह्यो कठा लग जाय॥ २॥
त्यांरा नयन वदन छेअति भला, धवली दांत नीं पंक्ति रसाल।
वर प्रधान कमल तणी परे, कोमल शरीर अति सुखमाल॥ ३॥
गंध उत्पल कमल नां फूल नो, तेहो सुगंध सास उसास।
त्यांरो वर्ण शरीर रो केतो कहूं, दीठां नयन ठरे छे तास॥ ४॥
रूप जोवन लावण करी, सोभे उतकष्टो शरीर आकार।
ते मल्ली राय वर कन्या मोटी हुई, उणा सोवरस हुई तिणवार॥ ५॥
पूर्व भव ना छे मित्री तेहनें, जूआ जूआ ऊपना जाण।
ते आसी मोनें परणीजवा, जुध करसी पिता सू आण॥ ६॥
ते विघन पितारो इण विध मिटै, त्यानें पगां लगाउ समझाय।
ते उपाय करे छे किण विधे, ते सुणज्यो चित ल्याय॥ ७॥

ढाल : ७

[जंबू द्वीप मझार रे]

हिवे मल्ली कुमरी तिण काल रे, कोडंबी पुरुष नें।
बोलायो वेग सताव सू ए॥ १॥
कहे असोग वाडी रे मांय रे, मध्य भागे तेहनें।
एक मोटो मोहन घर करो ए॥ २॥
अनेक सइकडा थंभ रे, लगाय जो तेहनें।
वेसण नें जायगां सुहावणी ए॥ ३॥

तिण मोहन घर ने माहि रे, मध्य भाग तेहने।
छ गर्भ घर करायजो ए ॥ ४ ॥
छ गर्भ घर रे मांय रे, मध्य भाग तेहने।
एक जाली घर कराय जो ए ॥ ५ ॥
तिण जाली घर रे मांहि रे, मध्य भाग तेहने।
एक कीजे मणी रो चोंतरो ए ॥ ६ ॥
इतला करे सताव रे, मांहरी आगन्यां।
वेगी पाछी सूंपजो ए ॥ ७ ॥
ए वचन करे प्रमाण रे, कह्यो तिम हिज कियो।
पाछी आग्या सूंपी आयनें ए ॥ ८ ॥
ए वचन सुणी तिणवार रे, मल्ली कुँवरी ये।
कीधी मणी पीठका उपरे ए ॥ ९ ॥
आप तणे उणिहार रे, प्रमाणे शरीर रे।
कनक मे थोथी पूतली ए ॥ १० ॥
सर्व लावन जोवन समेत रे, कीधी पूतली।
तिणरे मस्तक छिद्र राखियो ए ॥ ११ ॥
वले कियो कनक में एक रे, नीलोत्पल कमल मे।
मस्त रो छिद्र ढांकवा ए ॥ १२ ॥
मल्ली करे मनोग्य आहार रे, नित्य नित्य जीमतां।
मल्ली कुमरी तिण अवसरे ए ॥ १३ ॥
दिन प्रते कवलियो एक रे, मल्ली लेई हाथ में।
पूतली में प्रक्षेपती ए ॥ १४ ॥
तिण कवल तणें प्रताप रे, दुगंध प्रगटी।
ते दुगंध कही छे एहवी ए ॥ १५ ॥
साप मडा जिम जाण रे, गायमडा दिक तेहथी।
अनिष्ट दुगंध हुई तेहमे ए ॥ १६ ॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समें, कोसल नामें देश में जाण।
तिहां साकेतपुर नामे नगर छे, जिहां ऋधि प्रभूत वखाण ॥ १ ॥
तिण नगर बारे ईसाण कूण मे, देहरो नाग देवता रो जाण।
साचो परचो छे जेहनों, पूर्ण भद्र जेम पिछाण ॥ २ ॥

तिण नगरी रो अधिपति, प्रतिबुद्धि नामें राय।
ते इक्षाकु वस नों ऊपनो, तिणरे राणी प्रभावती ताय॥ ३ ॥
सु बुद्धि नामें प्रधान छें, ते साम दंड भेद नो जाण।
तिणरो राजा मान वधारियो, ते डाहो चतुर सुजान॥ ४ ॥
ते प्रतिबुद्धि राजा मल्लीनाथ नों, पाछिल भव नें मित्री जाण।
ते किण विध आवे त्यांने परणवा, सुणज्यो मन आण ठिकाण॥ ५ ॥

ढाल : ८

[आणद समकित उचरे रे लाल]

तिण राणी पदमावती तेहने रे लाल, नागमहोच्छव आयो दिन जान। सुविचारी रे
जब हाथ जोडी राजा ने कहे रे लाल, आप आयजो मोटे मडाण। सुविचारी रे
पहिला मित्री नी सुणज्यो वारता रे लाल*॥ १ ॥
जब राजा कहे म्हे आवस्यां रे, थे वेगो करो महोच्छव त्यार।
राय वचन सुण राणी हर्षित हुई रे लाल, चाकर पुरुष बोलायो तिणवार॥ २ ॥
तिण चाकर पुरुष ने राणी कहे रे लाल, म्हारे नाग री पूजा छे प्रभात।
तिण सूं कहे तूं मालागार तेडायनें रे लाल, नाग महोच्छव छे नीकल्यां रात॥ ३ ॥
तिण सूं वेग सताव सूं रे लाल, पांच वर्णा जल थल नां फूल आण।
नाग तणा देहरा मभे रे लाल, गंज करज्यो मोटे मंडाण॥ ४ ॥
त्या फूलां सू नाना विध रचना करो रे लाल, हंस मोर सारस ना रूप।
वले चकवादिक कोयल पछीया तणां रे लाल, तूं चित्रजे रूप अनूप॥ ५ ॥
एहवो मोटो मडप रचो रे लाल, मोटां जोग अभिराम।
त्यां रूपां रो मध्य भाग तेहमे रे लाल, कीजो फूला री माला रो गंज लाय॥ ६ ॥
वले कीजो फूला रो चद्रवो रे लाल, गध कसवोई कीजो तिण ठाम।
राणी पदमावती बेसें तिहां रे, घणी कीला करे अभिराम॥ ७ ॥
ए वचन राणी रो सांभली रे लाल, सेवक हर्षित थाय।
राणी कह्या तिम सारो कियो रे लाल, पाछी आग्या सूंपी आय॥ ८ ॥
हिवे प्रभाते राणी पदमावती कहे रे लाल, चाकर पुरुष बोलाय।
साकेत नगर माहें वारने रे लाल, कचरो काढे सिणगारो ताय॥ ९ ॥
सेवग सुण तिमहिज कियो रे लाल, पाछी आग्या सूंपी आय।
वीजी वार चाकर ने राणी इम कहे रे लाल, रथ सिणगार वेगो ल्यावो ताय॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

रथ सिणगार आणें थाप्यो सेवगां रे, जब राणी किया सोले सिणगार।
आय बेठी रथ ऊपरे रे लाल, साथे लिधो बोहत परिवार ॥ ११ ॥
साकेतपुर बिचे थई रे, जिहां पोखरणी बाव तिहां आय।
जल मंजन कियो तिहां बाव मे रे लाल, परम पवित्र हुई तिहां न्हाय ॥ १२ ॥
पूजा जोग वस्त्र राणी पहरीया रे, कमल नां फूल लीधा हाथ।
आवे छे नाग रे देहरे, घणा दास दासी तिण रे साथ ॥ १३ ॥
त्यारे हाथे फूलां री दीधी छावडी रे, वले धूप कुडछा दिया हाथ।
ते दास दासी राणी पाछे चलता रे लाल, सर्व ऋघ सूं चाली करवा जात ॥ १४ ॥
हिवे राणी देवल माहे आयनें रे लाल, फूलादिक पूजा कीधी गहघाट।
वले प्रतिबुद्धि राजा तणी रे लाल, राणी जोय रही छे वाट ॥ १५ ॥
हिवे राजा आयो हस्ती ऊपर चढी रे, मस्तक छत्र धरावतो विख्यात।
दोनूं पासे चमर बीजावतो रे लाल, चउरंगणी सेना लेई साथ ॥ १६ ॥
राजा आयो छे जक्ष ने देहरे रे लाल, जक्ष नें करें प्रणाम।
पछेंआयो फूलां नो मंडप तिहां रे लाल, फूल रो दडो देख्यो तिण ठांम ॥ १७ ॥
घणो काल जोय रह्यो तेहनें रे लाल, घणो इचर्य पाम्यो मन माहि।
जब राजा पूछ्यो सुबुद्धि प्रधानने रेलाल, तूं गयो घणा गामां नगरां ताहि ॥ १८ ॥
एहवा श्री दाम दडा सारीखो रे लाल, थें दीठो छे किणही ठाम।
जब सुबुद्धि कहे छे राय ने रे लाल, म्हे दीठो इण सू इधिको तांम ॥ १९ ॥
हू गयो थो आपरो मेलियो रे लाल, मिथला राजधानी तिण ठाम।
तिहां कुंभ राजा राणी प्रभावती रे, त्यारी पुतरी मल्ली कुमारी नांम ॥ २० ॥
तिण मल्ली नी वरसी गांठी तिण दिने रे लाल, श्री दामदडो देख्यो ताय।
तिण पदमावती रो श्री दाम दडो रे, तिणरे लाख मे भाग न आय ॥ २१ ॥
जब राजा पूछें सुबुद्धि प्रधान ने रे लाल, मल्लीकुमरी नो किसोक छे रूप।
इसडो वरसगांठ महोच्छव कर्‍यो रे, श्री दाम दडो कीयो छे अनूप ॥ २२ ॥
जब सुबुद्धि कहे छें राजा प्रते रे लाल, तिणरो रूप घणो श्रीकार।
एहवी स्त्री न दीठी मिनख लोक मे रे, नयन वदन शरीर नो आकार ॥ २३ ॥
ए वचन सुणे राय हरखियो रे लाल, मोह्यो तिणरा रूप सू जाण।
इच्छा उपनी परणवा तणी रे, दूत मेल्यो मोटे मडाण ॥ २४ ॥
कहिजे कुंभराजा ने जायने रे लाल, थारी पुत्री मल्लीकुमारी नाम।
ते परणावो प्रतिबुद्धि राय ने रे, ओ श्रेय घणो छे काम ॥ २५ ॥
इम सांभल ने दूत नीकल्यो रे लाल, बेठो चाउ घंटा रथ रे माहि।
साथे लीधी सेना चउरगणी रे लाल, मिथला नगरी नें चाल्यो ताहि ॥ २६ ॥

पहिले मित्री दूत मेल्यो इण विधे रे लाल, मल्ली ने परणवारी मन मांय।
दूजो मित्री दूत मेले किण विधे रे लाल, ते सांभल जो चित्त ल्याय ॥ २७ ॥

●

दुहा

तिण काले नें तिण समे, अंग देश प्रसिद्ध।
तिहां चंपा नामें नगरी हुंती, रिध करने समृद्ध ॥ १ ॥
तिण चंपा नगरी नों अधिपति, चद्रछाय नामें राय।
तिहां अरणक आदि दे वाणिया, वसे घणा तिण मांय ॥ २ ॥
त्यारे जिहांज्यां रो व्यपार छे, रिध घणी घर माहि।
त्यामे अरणक तो श्रावक हुतो, जीव अजीव जाणें लिया ताहि ॥ ३ ॥
अरणक आदि दे वाणिया, एकठा मिले सहु कोय।
मतो करे गाडी गाडला भरया, च्यार जात रा क्रियाणे करी ॥ ४ ॥
आछी तिथि नक्षत्र जोयने, मित्री न्याती जीमाय।
गाडा गाडी भरया जे जोतरया, चपानगरी थी नीकल्या ताय ॥ ५ ॥
जिहा गंभीर पाणी तिहां जिहाज छें, तिहा आया लेई सर्व साज।
घोस शब्दे वाजंत्र वाजें रया, जाणे अबर रह्यो छें गाज ॥ ६ ॥
मित्र न्यातीला सूं मिलता थका, आछी तिथि नक्षत्र रे मांय।
अनेक विरदावली बोलावता, बेठा जिहाज मे आय ॥ ७ ॥

ढाल : ६

[पुन्य नीपजे शुभ जोग सू रे लाल]

एतो चंपानगरी रा वाणिया रे लाल, जिहाज भरनें समुद्र मे जाय हो भ०।
त्याने अनेक जोजन गया पछे रे लाल, उत्पात सइकडा हुई ताय हो भ०।
अरणक ने देव आयो चलायवा रे लाल* ॥ १ ॥
तिहां अकाले बीजली मेह गाजियो रे लाल, थणित शब्द हुवो तिण काल हो।
बार बार आकाश नें विषे देवता रे लाल, नाचे रूप विकराल हो ॥ २ ॥
एक मोटो रूप पिशाच नो रे लाल, ताड वृक्ष सम जंघा जांण हो।
लांबी भुजा विहुं आकाशे गई रे लाल, कालो शरीर भूंडो पिछांण हो ॥ ३ ॥
लांबा होठ बेहुं तिणरा वुरा रे लाल, दांत नीकलिया मुख बार हो।
वले लपलपाट करती थकी रे लाल, दोनूं जीभ लगावे निलाड हो ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

पाणी काढवानों सूको दीवडो रे लाल, तिण सरीखा छें दोनूं गाल हो।
न्हांनी बेठी ने चीपडी नासिका रे लाल, भूंडी दीसे छे विकराल हो॥ ५॥
बांका भागा भांपणा दीसता बुरा रे लाल, टीलोडी रे आकार पिछण हो।
राती पीली छे तिणरी आखियां रे लाल, खीजूर नां फल सम जाण हो॥ ६॥
वीस्तीरण चोडी छाती तेहनी रे लाल, पेट लांबा तलाव समांण हो।
ते हड्हडाट हसतो थको रे लाल, चालता नेत्र डोला जांण हो॥ ७॥
सिथल ढीलो गात्र छे जेहनों रे लाल, शरीर दीसे घणो विकराल हो।
नाचतो र वले कूदतो रे लाल, आस्फोट करतो कूटे ताल हो॥ ८॥
ते साह्मो आवें जाणे विलगतो रे लाल, करे घणो घणो रुद्र हास हो।
हड्हडाट मुख थी मूकतो रे लाल, आवे छे उपजावण त्रास हो॥ ९॥
तिणरा केश माथा नां विखर्‍या रे लाल, मस्तक मोटा घडा रे घाट हो।
अग्नि ज्वाला मुख मां सू मूंकतो रे लाल, रोसे भर्‍यो करे धम धमाट हो॥ १०॥
सूपडा सरीखा दोनू कानडा रे लाल, लाबी कान तणी रोम राय हो।
तिण सूं कानां रा विवर ढाके रह्यो रे लाल, कान वलिया छे संख जिम ताय हो॥ ११॥
मिनका सियाल खांधे बेसाणिया रे लाल, गले पहरी छें रूंडमाल हो।
लोही राध सू लीप्यो सरीर नें रे लाल, हाथे खडग दीसे विकराल हो॥ १२॥
काकीडा उदरा टीलोडीया रे लाल, त्यांरा हार घाल्या गला मांह हो।
वले काला गोरा सरपा करी रे लाल, कडियां दोली वंधी सनाह हो॥ १३॥
फूंकारा करता थका रे लाल, काकीडा विछू उदर साप हो।
रच्यो उत्तरासंग डरावणो रे लाल, खांधां रे विषे राख्यो थाप हो॥ १४॥
धिगधिगायमान काला सांप ने रे लाल, घाल्या छे लावा कान रे माहि हो।
मस्तक ऊपर घूघू वेसारियो रे लाल, तिणरो शब्द भयंकर ताहि हो॥ १५॥
खालडी वाघ नें चीता तणी रे लाल, लोही भरी पहरी छे तास हो।
उघाडी तरवार हाथे लियां रे लाल, सांह्मो आवतो देख्यो तास हो॥ १६॥

दुहा

अरणक विन बीजा वाणिया, सगलाइ पाम्या भय त्रास।
पेसवा लागा एक एक में, सगला हुवा अतंत उदास॥ १॥
भय भ्रांत हुआ सर्व वाणिया, ओर देव रह्या सहु ध्याय।
पूजा कीधी अनेक देवा तणी, कीधा अनेक सडकडा उपाय॥ २॥
तो पिण उपसर्ग मिटियो नही, जब करे मांहोमा वात।
घरे जावारो घाट दीसे नही, हुती दीसे समुद्र मे घात॥ ३॥

जब धसको पडियो सगलां तणे, करवा लागा कोलाहल ताम।
ते कोलाहल अरणक साभल्यो, तिण राख्या सुमता परिणाम ॥ ४ ॥
लोक विलविलाट करे घणा, रोवे घणा वांगां पाड।
मोटे शब्दे आक्रद करे, म्हांने कोइ नहिं आधार ॥ ५ ॥
हाय तोबा सगला करे घणा, रोवता करै आंसूपात।
मै डूब मरां इण समुद्र मे, विध विध करै विलापात ॥ ६ ॥

ढाल : १०

[तुम्हें जोयजो रे स्वार्थ नां सगा]

अरणक सगलाने मरता जाणिया, जिहाज डबोवतो देव जाण रे।
तोही मोह अनुकंपा आणी नही, याद किया वरत पचखाण रे।
जीव मोह अनुकंपा नाणीये* ॥ १ ॥
जिहाज डबोय देसी समुद्र में, होती दीसे सगलां री घात रे।
कुशले कोई जातो दीसे नही, जाबक बिगडी दीसे छे बात रे ॥ २ ॥
जो हूं बांछूं यांरो जीवणो, तो म्हांरे बंधे कर्मां री रास रे।
कमाई जासी आपो आपरी, हू क्याने होऊ उदास रे ॥ ३ ॥
अरणक श्रावक डरियो नही, वले त्रास न पाम्यो ताम रे।
हलफल्यो नही देख पिशाच ने, भय भ्रात न थयो तिण ठाम रे ॥ ४ ॥
आकुल व्याकुल मूल हुयो नही, उद्वेग पाम्यों नही मन मांहिं रे।
मुख नों रग मूल फिर्यो नही, आख्या पिण नहिं बिगडी ताहि रे ॥ ५ ॥
मांठो मन न कियो तिण ऊपरे, जब एकंत जायगां जाय रे।
वस्त्रे करी जाहगां पूंजनें, पूर्व साह्मों बैठो छे आय रे ॥ ६ ॥
नमोत्थूणं अरिहंत सिद्धां ने कियो, विना सहित जोड्या बेहू हाथ रे।
तिण सागारी अणसण कियो, त्याग्या उपसर्ग में पाणी भात रे ॥ ७ ॥
अरणक नें आय कहे देवता, अपत्थपत्थिया मूढ गिवार रे।
कोई अकाले मरण वंछे नही, तिणरो तूं वंछणहार रे ॥ ८ ॥
तोंनें निश्चे न कल्पे भाजवा, सील गुण वरत पचखाण रे।
वले चलवो न कल्पे तो भणी, अडिग सेंठो रहिजे तूं जाण रे ॥ ९ ॥
जो तूं धर्म न छोडसी, तो करसूं सगलां री घात रे।
काली बोली अमावस रा जण्या, मान रे अरणक तूं बात रे ॥ १० ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दुहा

अरणक ने जिन धर्म थी, चलावी न सक्यो तिण ठाम।
जब देव थाको छे सर्वथा, हिवे आया सुमता परिणाम ॥ १ ॥
हिवे हलवे हलवे तिण जिहाज ने, जल ऊपर मेली तिण ठाम।
पिसाच तणो रूप मूंक ने, देव रूप कियो अभिराम ॥ २ ॥
ते आकासे ऊभो थको, घूघरी घम घम करे ताय।
वस्त्र आभूषण पहिरणे, तिण दीठां नमन ठराय ॥ ३ ॥
ते आकासे ऊभो थको, अरणक रा करे गुणग्राम।
धिन धिन छे तूं देवानुप्रिया, लाधो जीतब नो फल ताम ॥ ४ ॥
तूं प्रियधर्मी छे अति भलो, दृढधर्मी छे तू विशेष।
तूं उपसर्ग आगे सेठो रह्यो, हूं आश्चर्य थयो तोनें देख ॥ ५ ॥

ढाल : ११

[कपूर-हुवे अति ऊजलो रे मिरचां केरे संग]

वले अरणक नें कहे देवता रे, थांरा इंद्र किया गुण ग्रांम।
ते गुण मोने गमीया नही रे, तिण सूं आयों इण ठांम रे।
अरणक धिन थांरो जिण धर्म ॥ १ ॥
सक्र इंद्र राजा देवता तणो रे, सुधर्मी सभा रे मांहि।
बेठां था तिण अवसरे रे, सभा मिली थी आय रे ॥ २ ॥
तिहां बेठा सामानीक देवता रे, चोरासी सहंस परिमांण।
तीन लाख छतीस सहंस उपरे रे, आतम रख देवता वखांण रे ॥ ३ ॥
अभितर परखदा रा देवता रे, बेठां था बारें हजार।
चवदे सहंस देव मिझम परखदा रे, ते बेठां था तिणवार रे ॥ ४ ॥
वले बाहिर ली परखदा तणा रे, देवता सोलें हजार।
वले अनेरा देवी देवता रे, घणा बेठां था तिणवार रे ॥ ५ ॥
जब इंद्र मोटें सब्दें करी रे, बोल्या एहवी वांण।
इण जंबू द्वीप रा भरत में रे, चंपा नगरी वखांण रे ॥ ६ ॥
तिहां अरणक नांमें श्रावक वसे रे, ते जीव अजीव रो जांण।
ते प्रियधर्मी दृढ धर्म मे रे, इंद्र कीधा घणा वखांण रे ॥ ७ ॥
तिणने धर्म थकी चलायवा रे, नहीं देव दाणव री जात।
घणां देव देवी रा वृंद मे रे, एहवी इंद्र काढी मुख वात रे ॥ ८ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते म्हे वचन न मान्यों इंद्र नो रे, म्हारे इसडी आई मन मांय।
जाउं इंद्र वखांण्यो तिण कनें रे, करूं पारिखा जाय रे॥ ९ ॥
प्रियधर्मी छें किवा नहीं रे, दिढधर्मी छें के नही।
वले सील वरत गुण तेह में रे, काचो कें सेंठो तिण मांहि रे॥ १० ॥
एहवी करे विचारणा रे, म्हे अवधि प्रजूंजी तिण ठांम।
जब जांण्यो म्हे तोने समद में रे, वेक्रैय रूप करी आयो तांम रे॥ ११ ॥
तोने उपसर्ग म्हें कीयां घणां रे, पिण तू चलीयो नही रे लिगार।
वले बीहनों नही मोने देखनें रे, धिन थांरो जमवार रे॥ १२ ॥
देव धिन धिन अरणक ने कहे रे, तू जीवादिक नो जांण।
थांरा सुधर्मी सभा मझे रे, इंद्र कीयां घणां वखांण रे॥ १३ ॥
थांरा इं गुणग्रांम कीयां तके रे, ते सगलाइ गुण तो मांय।
थांरा गुणा री ठीक मोंनें नही रे, जिणसूं म्हे दुख दीधां आय रे॥ १४ ॥
दोनूं हाथ जोडी पगा पड्यो रे, वारूंवार खमायो अपराध।
वले इसडो अपराध करूं नही रे, वले इसडो न करूं विपवाद रे॥ १५ ॥
विनों नरमाइ करे घणी रे, वले वारूंवार खमाय।
दोय कुडल री जोडी पगा म्हेलनें रे, देव आयो जिण दिसि जाय रे॥ १६ ॥

●

दुहा

अरणक जांण्यो उपसर्ग मिट गयो, जब काउसग पास्यो तिण ठांम।
हिवे जीहाज मांहिला वांणीया, करे अणरक रा गुणग्राम॥ १ ॥
थांरा गुणा री ठीक मोने नही, म्हे करडा वोल्या वेफांम।
ते खमज्यो अपराध म्हांरो कीयों, वले कदे न करां इसडो कांम॥ २ ॥
दिखणा अनुकूल वाय जोगे करी, जीहाज चलाई ताहि।
जिहां गंभीर प्रवहण नो ठाम छे, जीहाज उभी राखी पांणी रें मांहि॥ ३ ॥
तिहां थी गाडा गाडली सजकरे, माल घाल्यों गाडां मांहि।
आया मिथला नगरी रे बाहिरे रे, अंग उद्यान में ताहि॥ ४ ॥
तिहां छोड्या गाडां गाडली, हेठा उतरीया तिण ठांम।
वहु मोलो राजा जोग भेटणो, वले कुंडल दोय अभिराम॥ ५ ॥
एहवो भेटणो लेइ हाथ मे, आंण मेल्यों राजा रे पाय।
त्यांने कुभ राजा सनमांननें, पूछा कीधी कुडल री राय॥ ६ ॥
त्या कीधीं कुंडल री वारता, ते सुणनें रीझ्यो राय।
मल्ली कुमरी ने वोलाय नें, कुंडल घाल्या कानां रे मांय॥ ७ ॥

ढाल १२

[डाभ मूजादिक नी डोरी]

हिवे कुमरी ने सीख दीधी छे राय, कुमरी अ इ जिण दिस जाय।
हिवे कुंभ नामे मोटो राय, विचार करे मन माय॥ १॥
अरणकादिक सर्व व्यापारी, म्हारी भगत कीधी यां भारी।
तो याने असणादिक च्यारू आहार, जीमाय देउ सतकार॥ २॥
इसडो कीयो राय विचार, सगला वाणीया ने तिणवार।
वसतीरण च्यारूंई आहरि, भोजन जीमाया श्रीकार॥ ३॥
भारी वस्त्र गेहणा पेहराय, फूल माला घाली गला मांय।
घणो दीयो आदर सनमान, वले दान मूक्यो राजान॥ ४॥
राज मारग मोटो आवासो, त्याने उतरवाने दीयो वासो।
त्यारी राय प्रससा कीधी, याने राजी करे सीख दीधी॥ ५॥
अे पिण सीख मागे राजा पास, उतरीया राज मारग आवास।
वेचवा जोग वेच्यो किराणो, मोल लीधो माल विराणो॥ ६॥
गाडा गाडी भरया छे ताहि, आण घाल्यो जीहाज रे माहि।
किराणे करी भरी जीहाज, वले मेल्या सगलाइ साज॥ ७॥
माहे वेसीने जीहाज चलाई, चपापोत पाटण तिहा आई।
जीहाज ठाम राखी तिण ठाम, गाडला सज कीधा ताम॥ ८॥
माल घाल्यो गाडां रे माय, चपा नगरी रा बाग मे आय।
माहोमां करे तिहा विचार, राजा सू जाय करो जूहार॥ ९॥
मोटो भेटणो लीधो हाथ, बेहुं देव कुडल लीया साथ।
चद्रछाय राज तिहा आय, भेटणो ने कुंडल मेल्या पाय॥ १०॥
कुडल जोडी देखी रीझ्यो राय, आदर सनमान दीयो ताय।
अरणकादिक ने राजा बतलाया, अे कुडल किहा थी ल्याया॥ ११॥
अरणक आदि बोल्या जोडी हाथ, माड कही कुडल री बात।
ए बात सुणने हरषत हुवो राय, वले ओर पूछा कीधी ताय॥ १२॥
थे गया घणा नगरां ने गाम, समुद्र दीप फिरया घणी ठांम।
किहाई दीठी थे अस्त्री अनूप, देव किन्या सरीखी सरूप॥ १३॥
इण कुंडल पहिरवा जोग, इसडो कोइ मिले संजोग।
ते दीठी हुवे किहाई साख्यात, ते कहो मो आगल वात॥ १४॥

अरणक आदि बोल्या जोडी हाथ, सुणजो साहिब पृथ्वीनाथ।
म्हें गया था करण व्यापार, ते मिथला नगर मझार ॥ १५ ॥
तठे कुंभ नामें मोटों राय, तिहा पिण भेटणो मोटो ले जाय।
एहवी कुंडल जोडी तिण माय, ते म्हे मेल्यो राजा रे पाय ॥ १६ ॥
राजा मल्ली कुमरी ने बोलाय, दोनूं कुंडल दीया पहिराय।
तिणनें दीठी म्हे तिणवार, तिणरों रूप घणो श्रीकार ॥ १७ ॥
जेहवो रूप छे तिण माहि, देव किन्या पिण एहवी नांही।
ते इचर्य वाली छे बात, सारी माड कही छे विख्यात ॥ १८ ॥
राय रीझ्यो सांभल तिणवार, व्यापार्‍यां नें दीयो सतकार।
वले दीयों घणो सनमांन, वले दान मूंक्यो राजांन ॥ १९ ॥
सीख दीधी व्यापार्‍यां ने राय, अे तो आया जिण दिस जाय।
मल्ली नां रूप सूं रीझ्यो राय, परणवारी लागी मन चाय ॥ २० ॥
दूत ने कहे राजा बोलाय, कुंभ राजा ने कहिजे तू जाय।
थांरी पुतरी मल्ली कुमारी ताय, म्हांरा राजा ने दो परणाय ॥ २१ ॥
दूत सुणने सतकारी बात, चोरंगणी सेन्या ले साथ।
मिथला नगरी सांह्मो जावे, हिवे तीजो दूत किम आवे ॥ २२ ॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, कुणाला देस अभिराम।
तिहां सावथी नांमे नगरी हुती, तिणरो रूपी राजा नाम ॥ १ ॥
तिण रूपी राजा री दीकरी, धारणी राणी री अगजात।
ते सुबाहु नांमे बालिका हुंती, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
सुकुमाल सरीर छे जेहनो, ते रूप मे अतंत वखांण।
लावण जोवन करी सोभती, उतकष्टो उत्तम अग जांण ॥ ३ ॥
तिण सुबाहु बालिका तणो, चोमासी मंजण आयो ताय।
ते महोछव करवा कारणे, राजा कहे सेवग ने बोलाय ॥ ४ ॥
काले मंजण होसी चोमासी तणो, सुबाहु कुमारी नो जाण।
तिण सूं राज मार्ग नें सुध करों, महोछव करणो मोटे मडाण ॥ ५ ॥
तिण सूं पांचवरणा फूला तणों, मोटो गिज कीजो परमान।
वले घर रचजो फूलां तणो, मोरादिक रूप रचजो विख्यात ॥ ६ ॥

ढाल : १३

[शल्य कोई मत राखज्यो]

वले रूपी राजा तिण अवसरें, घणा सोनारा ने तेडाया रे।
त्याने कहे थे जावो उतावला, फूल मडप रा घर माह्यो रे।
बात सुणजो तीजा मित्री तणी[१] ॥ १ ॥
तिहा पाच वरणा चोखा करी, नगरी अलको तिण ठांमो रे।
तिण रे मध्य कीजो एक पाट ने, करने आग्या पाछी सूंपों आमो रे॥ २ ॥
हिवे रूपी राजा हस्ती बेसने, साथे चोरगणी सेन्या जाणी रे।
अतेवर सहीत परवस्यो थको, आगे निज पुतरी ने बेसाणी रे॥ ३ ॥
फूल मडप छे राज मारगे, तिण ठामे आयो छे रायो रे।
हस्ती थी हेठो उतस्यो, पेठो फूल मडप घर माह्यो रे॥ ४ ॥
राजा बेठो सिघासण उपरे, पूर्व साह्मो आयो रे।
तिवारे अतेवरी कुमरी भणी, पाट ऊपर बेसाणी ताह्यो रे॥ ५ ॥
धवला पीला कलसा करी, कुमरी ने सिनान करायो रे।
सर्व अलकार विभूषित करी, पछे म्हेली पिता रे पायो रे॥ ६ ॥
तिवारे सुबाहु बालिका, आय वांद्या पिता रा पायो रे।
जद रूपी राजा कुमरी भणी, बेसाणी खोला रे माह्यो रे॥ ७ ॥
रूप जोवन लावण कुमरी तणो, राजा देखने इचर्य पायो रे।
वर खबर मित्री ने तिण अवसरे, तेडाय कहे छे रायो रे॥ ८ ॥
तू घणा गामा नगरां फिस्यो, परवेस कीयो घणी ठामो रे।
तिहा काइ अस्त्री एहवी, रूप मे दीठी अभिरामो रे॥ ९ ॥
राजा इसर आदि धनवत नी, किन्या नो मजण सिनानो रे।
कुमरी ना मजण ओछव जिसो, कठे दीठो इसडो अभिरामो रे॥ १० ॥
जब मित्री कहे रूपी राय ने, सांभलजो माहारायो जी।
हू गयो थो आपरो मेलीयो, मिथला नामे नगरी माह्यो जी॥ ११ ॥
तिहा पुतरी कुंभ राजा तणी, प्रभावती राणी री अगजातो जी।
ते मल्ली कुमरी रा रूप री, इचर्य वाली छे वातो जी॥ १२ ॥
तेहना मजण नों महोछव मड्यो, ते दीठा इचर्य पावे रे।
तिणओछवआगेसुबाहुकुमरीतणो, लाख में भाग न आवे जी॥ १३ ॥

---

[१] यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए मित्री वचन राय साभल्यो, मल्ली नां रूप सूं रीझ्यो रायो जी।
तिणनें परणवारी मन उपनी, जब दूत ने कहे बोलायो जी॥ १४॥
जा तू मिथला नगरी वेग सू, कुंभ राजा नें कहीजे जायो जी।
थांरी मल्लीकुमरी राय किन्या, म्हारा राजा नें दो परणायो जी॥ १५॥
ए राय वचन दूत सतकार नें, चोउरंगणी सेन्या ले साथो जी।
मिथला नगरी सांह्मा मडीया, हिवे चोथा दूत तणी सुणो वातो जी॥ १६॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, कासी देस प्रसिद्ध छे नाम।
तिहां वाणारसी नगरी हुंती, तिणरो राजा सख अभिराम॥ १॥
तिण अवसर मल्ली कुमरी तणी, कुंडल नी सांघ उखली ताय।
जब कुंभराजा सोनांरा भणी, भेला कीया छे बोलाय॥ २॥
हिवे राय कहे सोनांरा भणी, देव नीमी या कुंडल अभिरांम।
ते सांधि उखली कुंडला तणी, पाछी मेलो इण ठांम॥ ३॥
ए राय वचन सोनांरा सुणी, विनें सहीत कीयो अंगीकार।
ते जुगल कुंडल लेइ ने आवीया, सोनांरां नी साल मझार॥ ४॥
सोनांर साला तिहां वेसने, कीधां अनेक उपाय।
च्यारूं वुध्यां सू कीधी विचारणा, पिण साघ मिली नही ताय॥ ५॥

ढाल : १४

[सुरियाभ बोले वेक०]

जब सोनांर भेला होय राजा कने आय, हाथ जोडी राजा नें वधाय।
आप देव कुडल म्हांनें सूंप्या था आज, त्यारी साघ सधावण काज॥ १॥
ते कुंडल ले म्हे गया तिणवार, सोनांर तणी साला रे मझार।
तिण ठामें म्हे कीधां अनेक उपाय, कुंडल साघ न मिली माहो माय॥ २॥
अें देव कुंडल देव नीमी मांय, ते तों किण सूं साधी न जाय।
जो आप हुकम मुख सूं कहो आंम, इण सरीखा ओर घड ल्यावा ताम॥ ३॥
ए वचन सुणने कुंभ राजान, सिघ्र कोप कीयों असमान।
वले राय चाढी छे त्रिमूल निलाड, थे सोनार नां पुतर नही छो सोनांर॥ ४॥
थांसू देव कुडल सांध सांधणी न आयो, हिवें कोइ मत रहिजो म्हांरा देस मांह्यों।
राजा तो काढ दीया देस रे बारे, कह्यो थांसू काम नही कोइ म्हारे॥ ५॥

जब आप आप तणें घरे आया सोनार, गाड्या पोठ्या मे घाले दीयो भार ।
त्यां छांड दीघी मिथला राजधानी, चाल्या कासी देस वांणारसी कांनी ॥ ६ ॥
वणारासी बारें अंग उद्यान छें ताहि, गाडां गाडी आण छोड्या तिण मांहि ।
बडा बडा मिलने मतो इम कीधो, मोले मुंहघो मोटा जोग भेटणो लीधों ॥ ७ ॥
सगला मिले संखराजा कने आवे, दोनूं हाथ जोडे रूडी रीत बधावे ।
कहें म्हे मिथला नगरी रा वासी सोनांर, म्हाने कुंभराजा काढ्या देस बार ॥ ८ ॥
त्राण सरण रहीत इहां आया, तिण कारण बांछा तुमनी छत्र छाया ।
म्हे सुखे समाधे बसां इण ठाम, म्हासूं किरपा करो मोटां साम ॥ ९ ॥
जब संख राजा कहे छे तिणवार, किण कारण काढ्यां थाने देस बार ।
जब सोनार कहे दोनू जोडी हाथ, म्हांरी थेट सूं उतपात सुणों पृथ्वीनाथ ॥ १० ॥
कुभ नामे छे मोटो राय, त्यांरें मल्ली नामे कुमरी छे ताय ।
तिणरे देवकुंडल था कांना रे माहि, त्यारी सांघ उबडगई ताहि ॥ ११ ॥
जब सगलां ने बोलाय कह्यो राय, कुडल री सधि मेलो माहोमाही ।
ते कुंडल री सधि मेलण नें तांम, म्हे अनेक उपाय कीयां तिणठाम ॥ १२ ॥
ते सांघ म्हांसूं न मिली लिगार, तिणसूं म्हांने काढ दीया देस बार ।
म्हें खून गूंनहो तो मूल न कीधो, म्हाने यूंही राय देसोटो दीधो ॥ १३ ॥
जब संखराज पूछे त्यांने आम, ते मल्ली रूप मे किसडी अभिराम ।
जब सोनार कहे सुणजो महाराय, रूप घणो मल्ली कुमरी मांय ॥ १४ ॥
अपछरा देव किन्या नो रूप, तिणसू ई इधिको छे रूप अनूप ।
एहवी अस्त्री तीन लोक मे नाही, बले अनेक गुण छें तिण मांही ॥ १५ ॥
ए रूप सुणीने रीझ्यो राय, सनमांन दीयो सोनारां नें ताहि ।
मल्ली ने परणवारी उपनी मन मांय, तिणसूं राजा कहे दूत बोलाय ॥ १६ ॥
तूं मिथला नगरी वेगसूं जाय, कहिजे कुभराजा ने सीस नमाय ।
थांरी मल्ली कुमरी मे रूप अथाह, ते म्हांरा राजा नें दो परणाय ॥ १७ ॥
ए दूत सुणी राजा री बात, चोरगणी सेन्या लेई साथ ।
मिथला नगरी सांह्यो जावे, हिवे पाचमो दूत किणविध आवे ॥ १८ ॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, कुरू नामें देस समरिध ।
तिहां नगर हथणापुर तेहनो, अदीनसत्रुराय प्रसिध ॥ १ ॥
तिहा मिथला नगरी नें विषें, कुभराजा नों कुमर अभिरांम ।
ते अंगजात प्रभावती रांणी तणो, मलीदिनकुमर तिणरों नांम ॥ २ ॥

ते छोटों छें मल्ली कुमरी थकी, जुगराज थाप्यो छे राय।
ते मल्लीदिन्न तिन अवसरे, सेवक ने कहे छें बोलाय॥ ३ ॥
कहे जावों तुम्हें देवाणुप्रीया, म्हांरो प्रमोद वन छे विसाल।
ते घरने पूठे छे तिण मझे, एक मोटी करावो चित्रसाल॥ ४ ॥
सेवग सुण तिमहिज कीयों, पाछी आगना सूंपी ताम।
जब मल्लीदिन्न कुमर तिहां, सर्व चिता रा बोलाया तिण ठांम॥ ५ ॥

ढाल : १५

[चंद गुप्त राजा सुणो]

कहे रूप चितराम रूडा रचों, म्हारी चितर साला रे माह्यो रे।
इचर्य विवध परकार नां, तिण दीठां नयण ठरायो रे।
वात सुणों मित्री पांचमां तणी॥ १ ॥
हावभाव विलास नारी तणा, एहवा कीजों घणां चितरामो रे।
हास विनोद अपमांन आदि दे, एहवा रूप कीजों तिण ठांमो रे॥ २ ॥
इचर्यकारी चित्र सभा करें, म्हांरी आग्या पाछी सूंपो आयों रे।
ए वचन चीतारां सतकार नें, गया पोता पोता रा घर मांह्यो रे॥ ३ ॥
बाल पीछी लीधी हाथ मे, वर्ण लेखणी लीधी समारी रे।
आप आपरा घर सूं नीकल्या, आया चितर साला मझारी रे॥ ४ ॥
जायगां वेहची तिण साल री, भूय समारे कीधी सुहाली रे।
जुवान विनोद मनखां तणी, चोरासी आसण मांड्या छे संभाली रे॥ ५ ॥
वले तीन सो चोरासी कीयां, कंदरप नां उपजावण हारो रे।
हाव भाव विलास नायिकां तणां, ते जोवतां उपजें विकारो रे॥ ६ ॥
एक चीतारां ने वर देवता तणो, लब्ध पांमी छे करवा चितरामों रे।
ते देखे अंगूठो पग तणो, तो पूरो रूप चितरे अभिरामो रे॥ ७ ॥
तिणां चीतारें परेच ने आतरे, मल्ली नों अंगूठो देख्यो रे।
ते श्रेय किलाण जांणी आपनें, मल्ली नो रूप सगलो आलेख्यो रे॥ ८ ॥
सगली साला चीतारां चितर ने, मल्लीदिन्न कुमर कनें आयां रे।
कहें सगलगी साला म्हे चितर नें, आग्या सूंपण आयां छां चलायो रे॥ ९ ॥
मल्लीदिन्न कुमर चितारा भणी, दीयों घणो सनमांनो रे।
बेठां खाअे जीवे ज्यां लगे, त्यांनें दीयो छें प्रीती दांनो रे॥ १० ॥
पछें सीख दीधीं चीतारा भणी, मल्लीदिन्न कुमर तिहां नाह्यो रे।
अंतेवर ले नीकल्यो, वले साथे छें धाय मायों रे॥ ११ ॥

तिण परवेश कीयो चितर साल में, हाव-भावादिक विवध रूप अनूपो रे।
वले देखतां देखतां आवीया, मल्ली कुमरी नों मांड्यों जिहां रूपो रे ॥ १२ ॥
मल्ली नो रूप मांड्यो देखनें, मल्ली कुमरी आई तिहां जांणो रे। -
हलवे २ तिहां थी पाछो रे फिर्यो, तिण वेला अतंत लजांणो रे ॥ १३ ॥
पाछो फिरतों तिणने धाय देखनें, तूं किण कारण लजांणो रे।
किण कारण तू पाछो फिर्यो, तोने काई संका पडी आंणो रे ॥ १४ ॥
मल्लीदिन्न कुमर कहे धाय ने, वडी वेन देखी पाछो आयो रे।
देव गुरू समांन छें मांहरे, त्यांनें देख्या चितरसाला मांह्यो रे ॥ १५ ॥
जब धाय कहे मल्लीदिन्न कुमर ने, मल्ली कुमरी नही साला मांह्यों रे।
ओ मल्ली नो रूप चितारे चीतर्यों, तूं संका मत आंणे कायो रे ॥ १६ ॥
ए धाय वचन सुण कोपीयों, कहिवा लागों आंमो रे।
ते चीतारो अपथपथीयो, अकाले मरण वंच्छचो वेकांमो रे ॥ १७ ॥
मल्ली कुमरी वडी वेन म्हारी, म्हारे देव गुर समांनो रे।
तिणरों रूप अठे कांइ चीतर्यो, अस्त्री सूं कीला करूं तिण ठांमो रे ॥ १८ ॥
तिण सूं रूठो कहे सेवगा भणी, उण चितारां ने जीवां मारो रे।
ए वचन सगला चितारा सुण्यों, भेला हुवा तिण वारों रे ॥ १९ ॥
ते मल्लीदिन्न कुमर कने आय नें, विनो कीयो सीस नमायो रे।
चितारा नें मारण तणो, हुकम कीयों छें ताह्यो रे ॥ २० ॥
ते खून गूंनो नही तेहमे, उणमे लवद करवा चितरांमो रे।
जो थोडो सो अग देखे तेहनों, तो पूरो रूप चितरे अभिरांमो रे ॥ २१ ॥
तिणने मारण रो आप हुकम कीयो, इण इसडो तो न कीयों विगाडों रे।
ओर दड दो तिणने मारण जिसो, खून विनां तो जीवा मत मारो रे ॥ २२ ॥
ए वचन सुणे चीतारां तणो, जीवतों छोड्यो तिण वारो रे।
अंगूठो छेदे जीमणा हाथ रो, तिणने काढ दीयो देस वारो रे ॥ २३ ॥
ते माया मात्रा लेई आपरी, ते नीकल गयो देस रें वारो रे।
ते गयो छें कुरू देस में, हथिणापुर तिहां नगर मझारो रे ॥ २४ ॥
भंड उपगरण तिहां मेल ने, एक चितरांम पाटियो कीयों रे।
तिणमे मल्ली नों रूप अलंक ने, ते पाटियो काख मे लीवों रे ॥ २५ ॥
एक मोटों भेटणो लीयों हाथ मे, अदीनसत्रु राजा तिहां आयो रे।
विनो कीयों सीस नमाय ने, मोटों भेटणो मेल्यो पायो रे ॥ २६ ॥
हूं चीतारों मियला नगरी तणों, मोने काढ दीयो देस वारो रे।
तिण सू छत्र छायां वांछूं आपरी, मोनें आप तणों आधारों जी ॥ २७ ॥

राजा पूछ्यो तोनें किण कारणें, काढ दीयो देस वारो रे।
जब चीतारें राजा कने, माड कह्यो सगलो विसतारो रे ॥ २८ ॥
मल्लीदीन्न कुमर नी वेन छे, मल्ली कुमरी छें नामो जी।
तिणरो रूप चितर्‍यों म्हे चितर साल में, तिणसूं अ गूठो छेद काढ्यो तांमो रे ॥ २९ ॥
जब राजा पूछ्यो रूप मल्ली तणो, किसरो एक रूप अभिरामो रे।
ते पाटियो काढ मेल्यो राय आगले, वले मुख सूं कीयां गुणग्रांमो रे ॥ ३० ॥
राजा चितरांम देख मल्ली तणो, वले सुणीयो मल्ली नो रूपो रे।
राजा मोह्यो मल्ली रा रूप सूं, परणीजण री लागी अति चूंपो रे ॥ ३१ ॥
राजा दूत बोलाय नें इम कहे, तूं मिथला नगरी जायो रे।
कुंभराजा नें कहिजे पुतरी तुम तणी, म्हारा राजा नें दो परणायो रे ॥ ३२ ॥
दूत सुण नें तिहां थी नीकल्यो, चोरंगणी सेन्या लीधी साथो रे।
मिथला नगरी ने नीकल्यो, हिवें छठा मित्री नी सुणो वातो रे ॥ ३३ ॥

दुहा

तिण काले ने तिण समे, पचाल देस समरिध।
तिहा कंपिलपुर नामे नगर छे, जितसत्रु राय प्रसिध ॥ १ ॥
जितसत्रु राजा रे राणीया, धारणी आदि एक हजार।
ते राज पाले रूडी रीत सू, सुख भोगवे संसार ॥ २ ॥
तिण मिथला नगरी नें विषें, चोखी सिन्यासण तिण ठाम।
तिणरे चेल्या पिण छे अति घणी, गांमां नगरा फिरे रही ताम ॥ ३ ॥
ते च्यार वेद री जाण छे, वले अनेक शास्त्र नी जांण।
ते धर्म कहे हिंसा कीया, हिंसा धर्म रा करे छे वखांण ॥ ४ ॥
मिथला नगरी तेहने, घणां राजा इसर तिण ठाम।
सार्थवाहादिक तेहने, दांन सिनांन धर्म कहें तांम ॥ ५ ॥
दांन देंणों कहे छें सर्व ने, तीर्थ पांणी सूं करणों सिनांन।
इसडो धर्म प्ररूपती थकी, इणरी सरधा मे घणी सावधांन ॥ ६ ॥
इण मत मांहें इण घाल्या घणां, खोटी सरधा घाली हीया माय।
मल्ली कुमरी नें सरधा घालवा, तिणरो किण विध करें छे उपाय ॥ ७ ॥

ढाल : १६

[अरे हां हां ग्यानी]

एकदा प्रस्तावे चोखी सिन्यासण, तिण मन मांहे कीयो विचार।
मल्ली कुमरी समझावूं जाय ने, तो म्हांरो मत फेल जाओ संसार।
सिन्यासण जोगण रूडी वे, हुरे हां हां अग्याण सरधा कूडी वे ॥ १ ॥
रूप रच्यो सिन्यासण वांरू, तिणरों कहिजे कितो विसतार।
जाणे जुगारी जोगणी, दीसे ग्यान गुणां री भडार ॥ २ ॥
चोखी सिन्यासण मल्ली समझावण, रूप रच्यो अदभूत।
ढलती सिर थी मूंकी जटा, वले अग लगाइ भभूत ॥ ३ ॥
केस थकी कस्यो वञ्च कछोटो, पादुका पेहरी पाय।
गले माला रुद्राक्ष री, करी अरूण नयण चित ल्याय ॥ ४ ॥
त्रिदडी तिण साथे लीधी, कुडी आकुस लीया साथ।
गेरू रग्या वस्त्र पेहरणे, वले घाली पवत्री हाथ ॥ ५ ॥
एहवों रूप रच्यो चोखी सिन्यासण, घणी चेल्यां लीधी तिण साथ।
आपणा आश्रम थी नीकली, समरणी लीधी तिण हाथ ॥ ६ ॥
मिथला राजधानी छे तिण ठामे, कुभ राजा तणो घर तांम।
जिहा किन्या अतेवर छे तिहां, मल्ली कुवरी बेठी तिण ठांम ॥ ७ ॥
चोखी सिन्यासण आई तिण ठामे, पाणी सू धरती छाटी आय।
तिहा डाभ सथारो संथरे, सुध हुई पाणी सू न्हाय ॥ ८ ॥
कंवारा अतेवर सभा मे, चोखी बेठी छे करे मंडाण।
तिण मल्ली कुमरी आगल कहे, दांन सिनान धर्म रो बखाण ॥ ९ ॥
जब मल्ली कुमरी चोखी ने पूछे, थारो किसो छे मूल धर्म।
किण धर्म कीया जी उधरे, किण विध पामे सुख परम ॥ १० ॥
जब चोखी सिन्यासण कहे छे मल्ली ने, म्हारो सोच मूल छे धर्म।
जद काई असुच हुवे म्हारे, पाणी माटी सूं हुवे सुच परम ॥ ११ ॥
असुच सरीर रे लाग जाओ जब, माटी पाणी सूं मसलो ताय।
पछे पवित्र हुवे पांणी न्हाय ने, तिण सू स्वर्ग मे उपजे जाय ॥ १२ ॥
गाय भूम सोनादिक अनेक वसत ने, सकल ने दान देवे दातार।
तिण दांन तणा परताप थी, जीव पांमे भवजल पार ॥ १३ ॥
ए वचन सुणे मली कहे चोखी ने, लोही सूं भर्यो वस्त्र ताय।
वले तिण ने लोही सूं धोवीया, चोखो थाओ के नही थाय ॥ १४ ॥

जब चोखी कहें लोही खरड्यो वस्त्र, लोही सूं उजलों नही थाय।
इण दिष्टंते चोखी धर्म ताहरो, ते सुण तूं चित्त लगाय॥ १५॥
हिंसा करें जीव मलीन हुवो छें, ते हिंसा सूं उजल किम थाय।
जेहवों छें चोखी धर्म तांहरों, जीव गाढा मेला होय जाय॥ १६॥
हिंसा, भूठ चोरी आदि सेवे अठारें, तिणसूं लागे पाप करम।
ते सेव्यां में तू कहे धर्म छे, थांरो घणो खोटो छे धर्म॥ १७॥
वले सावद दांन में धर्म कहे तूं, तिहां मारी जाअें छ काय।
तिण हिंसा सूं न हुवे जीव उजलो, तूं सोच देख मन मांय॥ १८॥
तूं धर्म कहे सोच सिनांन मे, तिहां पिण मारी जाअे छ काय।
तिण हिंसा सूं जीव न हुवें उजलो, ओ पिण सोच देख मन माय॥ १९॥
इसडों धर्म प्ररूपें लोका मे, तोनें पिण आछो कदेय न होय।
ते धर्म लोकां मे प्ररूप ने, थे दीया घणा नें डबोय॥ २०॥
सरीर बाहर मेंल धोयां थी, जीव पवित्र नही थाय।
वले दांन कुपात्र ने दीयें, ते पिण सुध गति कदेय न जाय॥ २१॥

●

दुहा

चोखी सिन्यासण तिण अवसरे, सुणी मल्ली कुमरी नी वाय।
समभावणो जिहाई रह्यों, पाछो जाव दीयो नही जाय॥ १॥
संका कंखा घणी उपनी, संदेह उपनो मन माय।
भेद पामी पोतारा मत मभे, मल्ली साह्यो बोल्यो नही जाय॥ २॥
कांइ पडउतर देई नही सकी, तिण सूं हूई घणी मान भंग।
भिष्ट हुई तिण अवसरें, विगड्यों छे मूंढा नो रंग॥ ३॥
अण बोली वेठी रही, होय गइ आस निरास।
घणी पीछताणी आयने, वले हूई अतत उदास॥ ४॥

ढाल १७

[जगत गुरु तिसला नन्दन वीर]

जब मल्लीराय कुमरी तेहनी जो, घणी दासीयां चेडियां ताम।
अभिप्राय जाणे कुमरी तणो, कडवा बोलवा लागी आम।
ए जोगण दे तू वाइ ने जाव*॥ १॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

केइ हेलवा लागी तेहने, करे जात तणो उघाड।
केइ निंदा करे घणी तेहनी, मन में माठी जाणी वारूंबार॥ २॥
केतली एक तो वले दासीयां जी, खिष्ट करें तिण ठांम।
एक एक कने दोस काढती, चोखी ने सुणावती आंम॥ ३॥
वले कितली एक दासीयां जी, हरूं हरूं करे नेडी आय।
केतली एक वले दासीयां, मूंह मचकोडे छें ताय॥ ४॥
केतली एकतों दासी तिहांजी, हसे छे मूंढो फार।
कितली एक दासी आंगुलीया करी, तरजना करें छे तिणवार॥ ५॥
वले एकी की दासीयां, तालोटा कुटे तिण ठांम।
केइ करे निरभछणा, परी जा तूं इहां थी तांम॥ ६॥
इत्यादिक अनेक बोलां करी, निपेदी बारूंबार।
कायदों नही राख्यो तेहनो, वले काणन राखी लिगार॥ ७॥
वाइजी ने आइ समझायवा जी, करती घणी मरोड।
चरचारो जाब न उपनो जी, जब मूल न चाल्यो जोर॥ ८॥
इण भरोसे थे आया इहा, जांण्यों लेसूं सारा समझाय।
थे उलटो आवरू पडावीयो, थांरा ग्यान मे कला न कांय॥ ९॥
हेली निंदी मल्ली नी दासीया जी, सगली जण्या तिणवार।
जब चोखी जोगण तिण अवसरे आसुरते क्रोध अपार॥ १०॥
क्रोध करे रीसाणी अति घणी, तडतडाट करती तिणवार।
राता लोचन कीयां तिहां जी, त्रिशुल चाढी निलाड॥ ११॥
धेष धरती मल्ली उपर घणो, चोखी सिन्यासण तिण ठांम।
रुठी थकी तिहां थी नीकली, आइ पोताने आश्रम तांम॥ १२॥
हिवे चोखी मन मे चिंतवे, ए सारा मल्ली ना कांम।
तो आ मोसूं डरती रहे ज्यूं करूं, तो म्हांरो चोखी सिन्यासण नांम॥ १३॥

दुहा

हिवें दूजें दिन परभात री, नीकली आश्रम थी ताम।
घणी सिन्यासण सूं परवरी थकी, तिणरे मन में घणी छें हांम॥ १॥
पंचाल देस छे तेहमे, कंपिलपुर नगर छे तांम।
तिणरो जितसत्रूं राजा हुंतो, राज करे तिण ठांम॥ २॥
चोखी सिन्यासण आइ तिहां, कपिलपुर नगर मझार।
घणा राजादिक छे त्यां कने, चोखी धर्म कहे छें तिणवार॥ ३॥

एकदा राय बेठों अतेवर मभे, दोलो विट रह्यो परवार।
राजा अंतेउर उपरें, मूर्छ रह्यो तिणवार ॥ ४ ॥

ढाल : १८

[पूजजी पधारो हो]

चोखी सिन्यासण आई तिण अवसरे, तिण दुष्ट मेला परिणांम हो राजेसर।
जितसत्रू राजा रा भवण मे, आय उभी छे तिण ठांम हो राजेसर।
चोखी रे धूतारी सिन्यासण जोगणी* ॥ १ ॥
जितसत्रू राय दीठी तिणनें आवती, आसण छोडी उभो थाय हो। रा०।
वंदणा कीधी सीस नमाय हाथ जोडने, वले आसण आमत्र्यो ताय हो ॥ रा० २ ॥
धरती छांट उपर डाभ पाथर्यो, सिनान करे बेठीं आय हे सिन्यासण।
राजा ने पूछी कुसल खेम वारता, मुख मीठी वांणी बोलाय हे ॥ सि० ३ ॥
राजा अंतेवर पुतर कुटंब तणी, त्यांरा पिण पूछ्यो कुसल ने खेम हे। सि०।
सुख समाच पूछी तिण अवसरें, राय सुणने हरख्यो घर पेम हे ॥ सि० ४ ॥
पछे धर्म परूपियों दांन सिनान में, राजा नां अंतेवर पास हे। सि०।
राजा रांण्यां वचन सुणे चोखी तणा, पांम्यो अतत हुलास हे ॥ सि० ५ ॥
निज अंतेवर देखने राय गरब्यो थको, पूछें छें चोखी ने आंम हो। चोखी जी।
थे फिरो छो अनेक गांम नगर राजधानीयां, थे दीठो अंतेवर ठांम ठांम हो ॥ ६ ॥
म्हांरा अंतेवर सरिखो ओर राय ने, कठे दीठो अंतेवर सरूप हो। चो०।
म्हारे सगली रांण्या रूपवती छे अति घणी, जांणें वाडी खूली अनूप हो ॥ ७ ॥
ए वचन सुणे जितसत्रु राजा तणो, चोखी दीयो मुंह मचकोड हो।
चोखी कहे तूं कूआ रा डेडक सारिखों, तूं कूडी करे छे मरोड़ हो ॥ ८ ॥
समुदर न दीठो कुआरे डेडके, ते नहीं जाणें कूआ सरिखों ओर हो।
ते समुदर रा डेडकां री बात माने नही, समुदर डेडका सूं मांडी भोर हो ॥ ९ ॥
ज्यूं थे पिण अंतेवर न दीठो केहनो, तिणसूं तूं करें अभिमान हो।
पिण एक बताउं तोंने रूपवती अस्त्री, ते सुण तूं सुरत दे कांन हो ॥ १० ॥
मिथला नामें नगरी तेहमे, कुंभ राजा नी धूया जांण हो।
प्रभावती रांणी रा अंग सूं उपनी, मल्ली कुमरी रूप में वखांण हो ॥ ११ ॥
ते लावण-जोवन रूपमे जेहवी, तेहवी देव किन्या पिण नांहि हो। रा०।
वले नाग कुमार नी किन्या रूप छें, तिणसूंइ इधको मल्ली रे मांहि हो ॥ १२ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तिण मल्ली तणा पगनों नख उतर्यो, तिणमेई रूप अथाग हो।
थांरा सगला अंतेवर नो रूप तेहनो, नही आवें लाखमे भाग हो॥ १३ ॥
इम कही ने चोखी चलती रही, आइ जिण दिसि जाय हो।
इम मल्ली नो रूप सुणे राय मूर्छिये, परणीजण री उपनी मन मांय॥ १४ ॥
इम कही ने चोखी चलती रही, आइ जिण दिसि जांय हो।
इम मल्ली नों रूप सुणे राय मुर्छियो, परणीजण री उपनी मन मांय॥ १५ ॥
हिवें राजा कहे छे दूत बोलाय नें, कहिजे कुंभ राजा ने तूं जाय हो।
थांरी मल्ली कुमरी छे तेहने, म्हांरा राजा ने दो परणाय हो॥ १६ ॥
ए राय वचन नें दूत सतकारीयो, बोल्यो बेहूं जोडी हाथ हो।
मिथला नगरी साह्यो चालीयों, चतुरंगणी सेन्या ले साथ हो॥ १७ ॥

●

दुहा

ए छही दूत राजा तणा, अनुक्रमें चाल्या ताहि।
मिथला नगरी ने चालीया, त्यांरे हरख घणो मन मांहि॥ १ ॥
मिथला नगरी रा बाग मे, छहूं दूत आया समकाल।
ते कटल उतरीया जू जूआ, ते रह्या माहो मांही न्हाल॥ २ ॥
त्यारे माहोमां सका पडी, छही जणा ठेंहराइ एक वात।
आगां पाछा कोई जाओ मती, आपे छही जासा एक साथ॥ ३ ॥
हिवे छही दूत मतो करी, नीकलीया परभात।
कुंभ राजा तिहां आयनें, छहूं जूआ जूआ जोर्या हाथ॥ ४ ॥
जूआ जूआ छहू जणा, बोल्या जय विजय वधाय।
थारी मल्ली कुमरी छे तेहने, म्हांरा राजा ने दो परणाय॥ ५ ॥

ढाल : १६

[थे तो जीव दया धर्म पालो रे]

दूतां रा वचन सुणने राजानो रे, क्रोध सूं हूवो जाजलमानो।
छहूं साथे बोल्या समकाली रे, तिणसू राय ने चढी चडी चडाली॥ १ ॥
तीन लीटी चाढी निलाडो रे, दूतां ने कहे निरधारो।
मल्ली कुमरी न देउ थांनें रे, जाय पुकारो थांरा राजानें॥ २ ॥
छही दूतां ने कुंभ राजानों रे, त्यानें मूल न दीयो सनमांनों रे।
वले न दीयों त्यांने सतकारो रे, वले काढ्या मोरी रे द्वारो रे॥ ३ ॥

घणां निरंभ छे पाडी मामो रे, दूत पिण कूडीयो खेद पांमो।
हिवें दूत तिहां थी चाल्या रे, आप आपरा देस ने हाल्या॥ ४॥
पोता पोतांरी नगरी में आयो रे, पोहता राज सभा रे मांह्यो रे।
विनों कर बोल्या जोडी हाथो रे, कही छही दूतां री वातो॥ ५॥
समकाले छही दूत साथो रे, कुंभ राजा ने कह्यो जोडी हाथो।
थांरे मल्ली कुमरी छे ताह्यो रे, म्हांरा राजा ने दो परणायो॥ ६॥
म्हे छहू बोल्या समकालो रे, तिण सूं राय रूठों ततकालो।
तीन लीटी चाढो निलाडी रे, कह्यो नही देउं मल्ली कुमारी॥ ७॥
म्हांने निरंभ छे माम पारो रे, म्हांनें काढ्यो मोरी रे वारो।
म्हांरी कीधी घणी राय भांडी रे, बीती वात कही सर्व मांडी॥ ८॥
दूतां री बात सुणने छही राजांनो रे, अे पिण हुवा छे जाजलमांनो।
छही राजा कोप्या वशेखो रे, तिणसूं करे मांहोमां एको॥ ९॥
मांहोमां दूत चलावे रे, कागद मे लिखने कहावे।
आपांरा दूतांरी आब पारो रे, काढ्यां मोरी रे बारो॥ १०॥
तो आपां नें श्रेय छें किलाणो रे, कुंभराजा सूं मोटे मंडांणो।
जुझ करने देवा हटायो रे, मांन भंग करां आपे जायो॥ ११॥
ए बात सगला मान लीधी रे, पकी परठ मांहोमां कीधी।
कुंभराजा सूं लडवा री धारी रे, जुझ करवारी करे तयारी॥ १२॥

●

दुहा

छहूं राजा सिनांन मरदन कीया, सजकरनें हुवा सावधान।
हस्ती खध वेसने नीकल्या, करता अति अभिमांन॥ १॥
सकोरंट फूल बीह्यो थको, मस्तक छत्र धरावे निरदोष।
दोनूं पासें चमर वीजावता, वाजंत्र नी बाजे रही घोष॥ २॥
घोडा हाथी रथ साथे लीया, वले पायदल जोध वखांण।
चोरंगणी सेन्या परवस्या थका, नीकल्या मोटें मंडाण॥ ३॥
अनुक्रमें छहूं एकठा मिलीया, मिथला नगरी सांह्या जाय।
कुंभराजा तिण अवसरें, त्यांरो भेद सुणें लीयों ताय॥ ४॥
कुंभराजा सेन्यापति ने कहें, सेन्या ने सभकरों जाय।
सेन्यापति सुण तिमहिज कीयों, पाछी आगना सूंपी आय॥ ५॥

ढाल : २०

[मथुरापति क०]

कुंभ नांमें राजानो रे, कीधो मरदन सिनांनो रे।
पेंहस्था वसतर भारी रे, सर्व शरीर सिणगारी रे।
कुंभ राजा रे पोरस मन मावे नही रे* ॥ १ ॥

हस्ती खंध बेठो रायो रे, सारो साथ बोलायो रे।
मस्तक छत्र धरावे रे, वले चमर बीजावे रे।
च्यार परकार नी सेन्या साथे ले नीकल्यो रे ॥ २ ॥

देस नें अंते जायो रे, कटक उतास्त्रों रायो रे।
साथ रा घणां थाटो रे, जोवे छे त्यांरी बाटो रे।
जुभ करवारी सभाइ करनें सांतरा रे॥ ३ ॥

हिवें छहूं राजानो रे, करतो अति अभिमानो रे।
जिहां छे कुंभ रायो रे, नेडा उतरीया आयो रे।
त्यारे जोम ने गाढ मन मावें नही रे ॥ ४ ॥

संगराम मंडाणो रे, बहे गोला ने बांणो रे।
हलकास्था धणीया रे, मेली अणीयां सू अणीयां रे।
सूरा नें सुभट मूछा बल घालता रे ॥ ५ ॥

गोला नाल बूहारे, घणां सुभट तिहां मूआ रे।
सस्त्र बांण वूठा रे, कुंभराय पग छूटा रे।
चल विचल कटक हुवों कुंभ राजा तणो रे ॥ ६ ॥

तलवारा भलकी रे, कायर गया सरकी रे।
पड गइ मन धाका रे, लूट्या धजा पताका रे।
दही नी परें मथीयो कुंभराजा रा कटक नें रे ॥ ७ ॥

कुंभराजा भागो रे, जोर कोइ न लागो रे।
बल वीर्य पडीयो माठो रे, मूंह लेइनें न्हाठो रे।
उभां डेरा मेलीनें न्हासी गया रे ॥ ८ ॥

फोजां धणीया विहुणी रे, उडी जाओ ज्यूं पूंणी रे।
पागड़ा कुण छाडे रे, पुगला कुण माडे रे।
धणीया नें विहुणा सूरा कुण लडे रे ॥ ९ ॥

धणी विण किण पासो रे, लडे किण आसो रे।
गिदड ज्यूं जाए भागा रे, पूठे वेरी लागा रें।
राजा विण सेन्या कुण थांमे न्हासती रे ॥ १० ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

मल्ली कुमरी कहें पिता भणी, मोने सदा आवती देख।
बोलाय खोला में बेसाणता, वले हरपत हुंता वशेष।
पिताजी म करो फिकर लिगार ॥ ३ ॥
राय कहे तो कारणे, छही दूत मेल्या राजांन।
त्यांने मोरी दुवारें में काढीया, करे घणां हेरांन।
हे पुतरी इण कारण आरत ध्यान ॥ ४ ॥
तिणसूं अे कुडीया थकां रे, आया छही राजांन।
साथे कटक ल्याया घणां, वले करता अति अभिमान ॥ ५ ॥
यां कटक भगायो म्हांरो, कीधी घणां सुभटां री घात।
वले नगरों दोहलों घेरो दीयो, किणसूं वारे न गयो जात ॥ ६ ॥
तिणसूं म्हे कीयां घणा, यानें हटावण रा उपाय।
च्यांरूं बुधा विचारीयो, पिण बंधन वेसे काय ॥ ७ ॥
मल्ली कुमरी कहे पिता भणी, जोडी दोनूंई हाथ।
संकल्प विकल्प मत करो, एक सुणो म्हारी बात।
पिताजी थे म करो फिकर लिगार ॥ ८ ॥
तुम्हें छही राजा ने जू जूआ, थे छाने म्हेलो दूत।
कहिवाडो जू जूओ सर्व ने, ज्यूं यांरो विखर जाअें सूत ॥ ९ ॥
मल्ली कुमरी थांनें परणावसू, थे आवों नगरी मांय।
थे किणनें मती जणावजों, याने इण विध ल्यों थे बुलाय ॥ १० ॥
यांने संध्या काले बोलायजो, गुदलक बेला रे माय।
जब पगफेरों नही मिनष नो, याने जूआ जूआ बोलाय ॥ ११ ॥
छ गर्भघर बाडी मझे, म्हे आगु च दीया छे कराय।
त्याने जूआ जूआ पोहचावजो, गुदलक बेला रे माय ॥ १२ ॥
पछे मिथला नगरी तेहनां, थे आडा जडजो किवाड।
पछे सझ कर ने सावधान सूं, सेठां थका रहजो तिणवार ॥ १३ ॥
इतरा वानां थे करो, ज्यूं सर्व कार्य सिध थाय।
ज्यूं छही राजा नें आंणनें, थांरे देसूं पगां लगाय ॥ १४ ॥
ए वचन सुणे मल्ली तणा, कुंभ राजा हरषत थाय।
मल्ली कह्यों तिण रीत सूं, छही राजा ने लीया बोलाय ॥ १५ ॥

दुहा

छही राजा हरपत हुआ, परणवा आया नगरी मांय।
मांहोमाही नही जांनें एक एक ने, मल्ली कुमरी री सगला री चाय ॥ १ ॥
अे छही राजा छही गर्भ घर मझे, जूआ जूआ रह्यां छे रात।
ते रात वतीत हुआं पछे, सूर्य ऊगां हुओ परभात ॥ २ ॥
जाली घर जाली माहे जोवतां, सोवन पूतली दीठी तिण ठांम।
ते उणीयारे मल्ली तणे, रूप में अतंत अमांम ॥ ३ ॥
जाण्यों मल्ली कुमरी आहीज छे, लावण जोवन सोभायमान।
गिरधी मूर्छी थया तिणरा रूप सूं, जूआ जूआ छही राजांन ॥ ४ ॥
मेषो न मेष जोए रह्या, निजर न खडी जाय।
मोहि रह्या छे तेहसूं, जूआ जूआ छहूई राय ॥ ५ ॥
हिवे मल्ली कुमरी तिण अवसरे, कीधां छे मरदन सिनांन।
सर्व अलङ्कार पेंहरीया, तिणरो रूप घणो असमान ॥ ६ ॥
घणी दासीया सहीत परवरी थकी, आई जाली घर तिण ठांम।
कनक पूतली मस्तक तणो, ढांकणो अलगो कीयो तांम ॥ ७ ॥

ढाल : २२

[धूतारो नाचणो०]

तिण कनक पूतली मांय, दुरगंध भेली हुई जी।
ते नीकलवा लागी तांय, दुरगध अतंत कूहीजी।
हिवे चेतो रे चेतो राजान, मल्ली कुमरी कहे जी ॥ १ ॥
सर्प स्वांन उदर कोल गाय, कलेवर जेहमे जी।
घणां दिनां रा पडीया हुवे ताय, दुरगंध हुवे तेहमे जी ॥ २ ॥
तिणसूं दुरगंध घणी तिण मांय, तिण वारे नीसरी जी।
ते पडी छे नाक मे आय, लागी त्यांने अति बुरी जी ॥ ३ ॥
उत्तरासण सूं छही राजांन, मुख ने नांक ढाकीया जी।
त्याने दुरगंध कीया हेरांन, मुख उपराठा कीयां जी ॥ ४ ॥
जब मल्ली कहे राजांन, पला मुख क्यूं दीया जी।
म्हांने दुरगंध कीया हेरांन, तिण सूं मुख ढाकीयां जी ॥ ५ ॥
एतो कनक री पूतली ताय, सोभे रही अति घणी जी।
एकी को कवो मेल्यो तिण माय, दुरगंध छे तेह तणी जी ॥ ६ ॥

मन गमता मांहिलो आहार, कवल एक आंणने जी।
म्हें घाल्यों पूतली मझार, नितरो नित आंणने जी॥ ७॥
तिणरी दुरगंध हुइ इण मांय, संका मत आंणजो जी।
ते दुरगंध थांसूं खमी न जाय, हीया में जाणजो जी॥ ८॥
ज्यूं आ मिनष तणी काया मांहि, असुच सारो सहीजी।
सुक्र ने लोही नों पिंड ताहि, मांही सुच कांइ नहीं जी॥ ९॥
मल मूत्र नो भंडार, लोही मास तेहमे जी।
तिणरे असुच वहे वारे दुवार, असुच झरें जेहमे जी॥ १०॥
भूंडा तिणरा सास उसास, दुरगंध बारें नीसरें जी।
पित्त नीला पीला पांणी तास, वायु तिणरें सरें जी॥ ११॥
थे रीझ्या एहवी नारी रे मांहि, तिणरा कांम भोग सूं जी।
थे लीन घणां हुवा ताहि, नारी नां संजोग सूं जी। १२॥
सडण पडण विधंसण सभाव, मिनष नी देहनो जी।
ते विणस जाये इण न्याव, थे कीयो संग तेहनो जी॥ १३।
थे कनक नी पूतली देख, मल्ली जाणी एहने जी।
तिणरा रूप सू रीझ्या वशेख, भूला भर्म केहनें जी॥ १४॥
थे गिरधी काम भोग रे माहि, मूर्छित वले तेहमें जी।
वले इधकी इधकी थांरे चाहि, खूंचे रह्या एहमे जी॥ १५॥
हिवे साभलो म्हारी थे वाय, थे चित्त लगायने जी।
इण भव थी तीजा भव मांय, भेला हुवा आयने जी॥ १६॥
पिछम माहाविदेह खेत माहि, विजेय सलीलावती जी।
वितेसोगा राज धांनी ताहि, ते घणी दीपती जी॥ १७॥
तिण ठांमे आपे मित्र सात, हुता मोटा राजवी जी।
आपां सगला रे थी एक वात, दिप्या पिण साथे ठवी जी॥ १८॥
आपे हुवा सातो अणगार, मतो साथे कर्यो जी।
आपें तपसा करी तिण वार, दगो म्हे मन धर्यो जी॥ १९॥
म्हे तो कीधी कपटाई ताम, तिहां तप करतो थको जी।
अस्त्री गोत बांध्यो तिण ठाम, मोने लागो धको जी॥ २०॥
सगलोइ कह्यो विरतंत, छही राजा भणी जी।
भात भांत कह्यों कर खंत, पाछिल भव तणी जी॥ २१॥
म्हे तो बांध्यो तीथकर गोत, बीसां बोला करी जी।
दूर कीधी करमां री छोत, मन में सुमता धरी जी॥ २२॥

तिहां थी गया जयंत विमांण, आपे सातूं जणां जी।
सुख भोगव्या तिण ठिकांण, सुर देवां तणां जी ॥ २३ ॥
आउखो उणो सागर बतीस, पूरो थे तिहां कीयो जी।
आय उपनां जुदी जुदी दिस, जनम इहां लीयो जी ॥ २४ ॥
म्हांरो आउखो सागर बतीस, ते म्हे पूरो कीयो जी।
हूं पुतरी पणें हुइ जगीस, जनम इहां लीयो जी ॥ २५ ॥
आपे मिंत्री हुंता तिहां सात, मांहोमां हेतूआ जी।
इम सुणी मल्ली नी बात, विचारे छे जू जूआ जी ॥ २६ ॥

●

दुहा

छहूं राजा विचार करतां थकां, आया सुभ परिणांम।
वले भला अधवसाय त्यांरा वरतीया, भली लेस्या वरतो तिण ठांम ॥ १ ॥
परिणांम अधवसाय लेस्या भली, विचार कीयो सुभ ध्यांन।
त्यांरा कर्मज पडीया पातला, उपनो जातिसमरण ग्यांन ॥ २ ॥
जातीसमरण ग्यांन जांणीयों, पाछिल भव आयो याद।
जथातथ ज्यूं रो ज्यूं जांणीयो, तिणसूं पांम्यां परम समाध ॥ ३ ॥
मल्ली कहे छहूं राजा भणी, हूं लेसूं संजम भार।
हूं बीहनी जामण मरण थी, थे कांइ करोला लार ॥ ४ ॥
छहो राजा कहे मल्ली भणी, थे लेसो संजम भार।
हिवें म्हांने थां विण संसार, नहीं कोइ आलंबण ने आधार ॥ ५ ॥

ढाल : २३

[आछेलाल नीं देशी]

थांनें खारो लागों छे संसार, जो थे लेस्यो संजम भार आछे लाल।
म्हे पिण चारित लेसां चूंप जी ॥ १ ॥
थे तीजा भव रे माहि, म्हां में मेढीभूत था ताहि।
सकल कार्य मे म्हांसूं मोटका जी ॥ २ ॥
म्हें सेवग थे सिरदार, म्हे वरतता तुम तणी लार।
म्हांने आधार थो आपरो जी ॥ ३ ॥
आपे दिख्या लीधी तिणवार, हुआ सातोंई अणगार।
जब पिण धर्म में मोटका जी ॥ ४ ॥

म्हां सगला रे हुंता थे नाथ, धर्म धोरी सगला साख्यात।
थे गुर म्हें चेला हुंता जी ॥ ५ ॥
इण भव मे पिण थे म्हांरा नाथ, म्हें पिण दिख्या लेसां थारे साथ।
म्हे बीहना जामण मरण थी जी ॥ ६ ॥
जब छही राजा नें कहे मल्लीनाथ, जो थे दिख्या लेसो म्हारे साथ।
जो थे ससार थी ऊत्र गया जी ॥ ७ ॥
तो एकर सूं थे पाछा जाय, पोतां पोतां री नगरी मांय।
वडा पुतर ने राजा थापने जी ॥ ८ ॥
सहंस पुरष उपाडे ताहि, बेसने एहवी सेवका मांहि।
म्हारे समीपे बेगा आवजो जी ॥ ९ ॥
ए वचन कह्यो मल्लीनाथ, छहूं राजा बोल्या जोडी हाथ।
विनय सहीत वचन मांनीयो जी ॥ १० ॥
हिवे अरिहंत श्री मल्लीनाथ, छही राजा नें लेइ साथ।
कुंभ राजा ने पगां लगावीया जी ॥ ११ ॥
कुंभराजा रे लागा पाय, कीधो अपराध खमाय।
वले नरमाइ कीधीं राय सूं जी ॥ १२ ॥
अें छहूं मोटा राजांन, त्यां छोडे निज अभिमांन।
कुंभ राजा आगे उभा रह्या जी ॥ १३ ॥
हिवे कुंभ राजा तिणवार, नीपजाअें च्यारूंई आहार।
सगलोइ साथ जीमावीयो जी ॥ १४ ॥
फूल वस्त्र आप्या वसेख, माला आभरण आप्या अनेक।
आदर सनमांन दीयो अति घणो जी ॥ १५ ॥
मोटें मंडांणें कुंभ राजान, छहूं राजा ने देइ सनमांन।
सीख देइ पाछा मेलीया जी ॥ १६ ॥
छही राजा रे हरख अपार, निज सेन्या लेइ नें लार।
पोत पोतांनी नगरी आवीया जी ॥ १७ ॥
हिवें राज करें छें ताय, जूआ जूआ छहोई राय।
पिण दिख्या लेवारी मन लग रही जी ॥ १८ ॥

दुहा

हिवें तिण काले ने तिण समें, मल्ली नामें अरिहंत।
दिष्या लेवा री मन उपनीं, एक वरस रे अत ॥ १ ॥

ढाल : २४

[सोरठ देश मझार दुवारका नगरी]

तिण काले सोधर्म इंद, बेठों सुखे आणद । आज हो।
आसण चलीयो सक्रइंद नो जी ॥ १ ॥

विचार कीयो तिण ठाम, अवधि प्रजूज्यो तांम आजहो।
अवधि कर जांण्या मल्ली जिणंद ने जी ॥ २ ॥

एहवो उपनो अधवसाय, इंद्र तणा मन मांय।
सासती थित जांणी छें आपरी जी ॥ ३ ॥

जबूं द्वीप रे मांहि, भरत क्षेत्र छे ताहि।
मिथला नगरी छेंअति रलीयामणी जी ॥ ४ ॥

तिहां कुंभ राजा मतवंत, त्यांरी पुतरी मल्ली अरिहंत।
दिष्या नें लेवारी त्यांरे उपनी जी ॥ ५ ॥

ते म्हांरो छे जीत आचार, तीनूंई काल मझार।
सोधर्म इंद्र हुवें छे तेहनों जी ॥ ६ ॥

अरिहंत नें भगवांन, करें घर छोडण रो ध्यांन।
सोनइयां करे भरे घर तेहनां जी ॥ ७ ॥

तीन सों ने अठ्यासी कोड, वले असी लाख जोड।
इतला सोंनइया देवे अरिहंत नें जी ॥ ८ ॥

सक्रइंद्र तिणवार, एहवो कीयों विचार।
वेगसूं बोलायो वेसमण देवता जी ॥ ९ ॥

इंद्र कहें वेसमण नें आंम, अरिहत दिप्या ले तांम।
जबू दीप ना भरत खेतर मे जी ॥ १० ॥

जद थित इंदर जांण, सोंनइयां सूं भरें घर आंण।
एहवी थित छे काल अनादरी जी ॥ ११ ॥

तिणसूं तूं वेगों जाय, जंबू भरत खेतर रे मांय।
मिथला नगरी छेअति रलीयांमणी जी ॥ १२ ॥

कुंभ राजा रा घर मांय, थे भरो सोनइयां जाय।
आगना सूंपों थे पाछी माहरी जी ॥ १३ ॥

इम सुणी इंद्रनी बांण, देव कर लीधी परमांण।
मन मांहें हरख पांम्यो छेअति घणों जी ॥ १४ ॥

हिवें वेसमण देवता आय, जृंभक देव बोलाय।
हुकम करें छे त्या देवता भणी जी ॥ १५ ॥

जंबू दीप मांहे भरत खेत, मिथला नगरी छे तेथ। आज हो।
कुंभ राजा रा घर रलीयामणा जी ॥ १६ ॥

कुंभ राजा रा घर ताय, ते भरो सोनइया जाय।
पछे आगना पाछी थे म्हारी सूंपजों जी ॥ १७ ॥

जृंभक देव सुणी इम बाण, ते कर लीधी परमांण।
इसांण कुण माहे तिहां आयनें जी ॥ १८ ॥

कीयों उत्तर वेक्रें ताहि, आयो मिथला नगरी मांहि।
सोनइयां सूं घर भरीया कुंभराय ना जी ॥ १९ ॥

वेसमण देव छे ताय, तिहां जृंभक देवता आय।
आप कह्यो ते म्हे सगलो कर्‍यो जी ॥ २० ॥

इम सुणने वेसमण देव, आयो इंद्र कनें सयमेव।
आप कह्यो ते म्हे सगलो कीयो जी ॥ २१ ॥

दुहा

हिवे मल्ली अरिहंत तिण अवसरे, सूर्य उगे हुवो परभात।
भोजन वेला हुवे त्या लगे, सोनइयां देवे निज हाथ ॥ १ ॥

दांन देवे नाथ अनाथ ने, पथी जाता आवता ताय।
वले जोगी सिन्यासी ने कापडी भणी, वले मागे हर कोइ आय ॥ २ ॥

एक कोड ने आठ लाख उपरे, सोनइया देवे नित-नित दान।
ते सासती थित नें साचवे, पिण न करे मन अभिमांन ॥ ३ ॥

हिवे कुंभराजा तिण अवसरे, तीन च्यार मारग रें मांय।
ठांम-ठांम असणादिक नीपजाय नें, ठांम-ठांम जीमावे ताय ॥ ४ ॥

दिन-दिन प्रते अनेक मिनषा भणी, मन गमता च्यारू आहार।
समण माहण आदि दे, हर कोइ जीमें तिणवार ॥ ५ ॥

तीन च्यार मारग भेला हुवे, घणा लोक करे गुणग्राम।
आहार ने सोनइया रा दान रा, गुण करे ठांम-ठांम ॥ ६ ॥

च्यारूंइ जातरा देवतां, वले अनेक राजान।
मल्ली हरिहंत नी दिख्या सुणी, घणो हरख धर्‍यो सुण कांन ॥ ७ ॥

ढाल : २५

[आ अणुकपा जिन आगन्यां में]

हिवे तिण काले लोकतीया देवा, पाचमे देवलोक रिष्ट विमाण।
त्यां परत्त संसार कीयो सिवगामी, ते समदिष्टी जिण धर्म रा जांण।
लोकतीया देव आवे जिण समझावा* ॥ १ ॥

ते पोतां पोतां नां विमांण रे मधे, पोतां पोता ना परसाद रे माहि।
ते पोतां पोता ना परिवार सहीत सूं, देव संबधी कीला करे ताहि ॥ २ ॥
च्यार सहंस सामानीक देवा, तीन परखदा रा देवता त्यारे।
सात आणीका ने सात आणीकारा देवा, सोलें सहस आतम रिप देवतां त्यारे ॥ ३ ॥
वले अनेक देवता सहीत परवरया, मोटे सब्दे बत्तीस विध नाटक पारे।
नाटक गीत बाजंत्र देव सबंधीया, भोग भोगाव रह्या तिण वारे ॥ ४ ॥
सारस[1] माइच[2] विन[3] नें वरण[4], गद तोय[5] तुसीया[6] अथावाह[7] अगीत्रा[8]।
रिठा[9] लोकंतीया नवमो जाणों, ते जिण उपदेस देवण वडभीत्रा ॥ ५ ॥
तिण अवसर लोकंतीया देवाना, ते जूआ जूआ आसण सगला रा चलीया।
तीर्थंकर दिख्या लेवण रो मन जाण्यो, प्रतिवोध देवण ने हुवा मन रलीया ॥ ६ ॥
सगला लोकतीया रे इसडो मन आई, मल्ली अरिहत ने प्रति वोध देणो।
सासती थित छे म्हारी अनाद काल री, तिण सूं म्हाने जाय सतात्र सू केणो ॥ ७ ॥
इसडो विचार कीयो तिण ठामे, पछे इसाण कुण सताव सू आयो।
वेक्रे समुदघात कीयो तिण ठामे, पछे उतावल सू मिथला नगरी माह्यो ॥ ८ ॥
जिहा मल्ली अरिहंत छे तिहा आया, आकाश उभा रह्या छें तिण ठाम।
घटा घूघरी घम घम घमाट करता, त्यारो सिणगार रूप घणो अभिराम ॥ ९ ॥
इष्ट वचन लोकांतीया बोले, विने सहीत बोले जोडी हाथ।
आप संसार छोड चारित ले हिवडा, च्यार तीर्थ चलु करो जगनाथ ॥ १० ॥
धर्म घणां जीवां ने हित सुखकारी, तिणसूं जनम मरण मेटी मुगत मे जावे।
इसडो अनोपम छे जिण धर्म, ते आप विना कहो कूण चलावें ॥ ११ ॥
तिणसूं आपने घरमे रहिणो नही जुगतो, दोय तीन वार कह्यो देवतां ताय।
पछे मल्ल अरिहत नें वंदणा करने, देवतां आया था जिण दिस जाय ॥ १२ ॥

दुहा

ए वचन सुणे लोकतीया तणो, घणा हरख्या छे मल्लीनाथ।
मात पिता छे तिहां आयने, बोले जोडी हाथ ॥ १ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

थे किरपा करे दो आगन्या, हू लेसू संजम भार।
म्हे संसार जाण्यो कारिमो, एक मोष तणा सुख सार ॥ २ ॥
मात पिता कह्यो मल्लि नाथ नें, ज्यू थांने सुख थाय।
जेज म करो इण वात रो, कह्यो मीठे वचन बोलाय ॥ ३ ॥
हिवे कुंभराजा तिण अवसरे, चाकर पुरुष बोलाय।
कह्यो मल्ली कुमरी दिप्या लीये, तिणरी करो सफाई जाय ॥ ४ ॥

ढाल : २६

[धीज करे सीता सती रे लाल]

जावो थे सिघर उतावला रे, कलसा करो वेगसू तयार रे। सुगणनर
एक सहस ने आठ सोवन तणा रे लाल, इतलाई रूपारा श्री कार रे। सुगणनर
करे दिष्या महोछव मल्ली नाथ नां रे लाल* ॥ १ ॥
एक सहंस ने आठ मणी रतन ना रे, इम सोना रूपा रा भेला जांण रे।
इमहीज सोना ने मणी रतन रा रे लाल, सहस ने आठ वखांण रे ॥ २ ॥
इमहीज रूपा ने मणी रतन ना रे, वले सोनां रूपा मणी ना वखाण रे।
या तीनूंइ सूं भेला नीपजवीया रे, ते पिण सहंस ने आठ जाण रे ॥ ३ ॥
वले सहस ने आठ माटी तणा रे, ए आठोइ जात रा जांण रे।
आठ सहस चोसठ उपरे रे लाल, ए कलसा री गिणत परमांण रे ॥ ४ ॥
ए सगला कलसा जल सूं भर्या रे, ते निरमल पांणी सुगंध वखांण रे।
वले मोटो अभिषेक ओछ्व तणो रे लाल, सेवगा सभ कीधा आंण रे ॥ ५ ॥
वले तिण अवसर सताव सूं रे, चोसठ इद्र उभां छें आय रे।
तिण अवसर सक्रेइद्र सोधर्म नो रे लाल, सेवग देव ने कहे छे बोलाय रे ॥ ६ ॥
सहसने आठ सोवन तणा रे, जाव सर्व पाछली रीत रे।
ते आठ सहस कलसा भणी रे, सुगध पाणी सूं भरजो वदीत रे ॥ ७ ॥
ते कलसा देव लब्दे नीपजायने रे, ते कुभराजा रा कलसा माय रे।
त्या माहे कलसां प्रवेपने रे लाल, म्हांरी आगना सूंपजो आय रे ॥ ८ ॥
हिवे सकइंद्र राजा देवतां तणो रे, वले वीजों कुंभ राय रे।
मल्ली ने सिंघासण उपरें रे लाल, वेसाणीया पूर्व साह्मा ताय रे ॥ ९ ॥
आठ सहंस ने चोसठ कलसां करी रे, करायो मल्लीनाथ ने सिनान रे।
तिण अवसर महोछव देवतां कीया रे लाल, ते सुणो सुरत दे कान रे ॥ १० ॥
कितलाइक देवतां तिहां रे, मिथला नगरी रे माय रे।
कचरो वुहारने अलगो कीयो रे लाल, केइ पाणी सूं छाटे आय रे ॥ ११ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केइ फूल तणी बिरखा करे रे, केइ सोनइया बरसावें तांन रे।
इत्यादिक अनेक दरबां तणी रे लाल, बिरखा कीधीं तांम ठांम रे॥ १२॥
मल्ली अरिहंत नें सिनांन करायनें रे, कुंभ राजा तिण वार रे।
उतकष्टा गेंहण कपड़ा पेंहरावीया रे लाल, मल्ली अरिहंत नें सिणगार रे॥ १३॥
वले कुंभराजा सेवग नें कहें रे, मनोरम सेबका नें सिणगार रे।
तिणसें रूप अनेक आलंक जो रे लाल, वेगी करो थें त्यार रे॥ १४॥
तिण अवसर सक्रइंद देवता रे, कहें सेवक देवतां नें आंम रे।
अनेक सहंस थंभ ल्याय नें रे लाल, मनोरम सेबका करो तांम रे॥ १५॥
ते सेबका घणीं सिणगार जो रे, मांहें करजो रूप अनेक रे।
सर्व करजो अलंकार तेहनें रे लाल, सोनें रतन जड़ित बमेक रे॥ १६॥
तिण सेबका ने प्रवेसजो रे, कुंभ राजा री सेबका मांय रे।
तिण देवता कह्यों तिमहीज कीयों रे लाल, पाछो आगना सूंपी आय रे॥ १७॥

दुहा

हिवें मल्ली अरिहंत तिण अवसरें, सिंघासण सूं उठ्या तांम।
मनोरम सेबका तिहां, आय ऊभा रह्या तिण ठांम॥ १॥
मनोरम सेबका भणी, प्रदिषणा देइनें ताम।
सेबका चढी नें सिंघासण उपरें, बेठा सनमुख आय॥ २॥
हिवें कुंभराजा तिण अवसरे, अठारें श्रेणी प्रश्रेणी बुलाय।
थे सिनांन करेंनें सुच थई, वसतर गेंहणा पेंहनें जाय॥ ३॥
सर्व सरीर विभूषत करी, ते दीठां नयन ठराय।
मल्ली अरिहंत नीं सेबका, समकाले उपाडो जाय॥ ४॥
श्रेणी प्रश्रेणी सुण तिमहीज कीयों, सेबका उपाडी आय।
देवता सेबका किण विध वहें, ते सुणजों चित्त ल्याय॥ ५॥

ढाल : २०

[महल माल्यां]

दीखणे पासें हो सक्रइंद ऊभो छें आय, उपरली बांह पकड़ी सेबका तणी जी।
हरख घणों छें हो सक्रइंदनें मन मांय, महोछव करणरी तिणरे अति घणी जी॥ १॥
डावे पासें हो इसांणइंद्र ऊभो छें आय, उपरली बांह पकड़ी सेबका तणी जी।
हरख घणों छें हो इसांणइंद्र नें मन मांय, महोछव करणरी इणरें तिन अति घणी जी॥ २॥

जीमणे पासे हो चमरइंद्र जूतो छे आय, हेठली बांह पकडी सेवका तणी जी।
डावें पासें हो वलइंद्र जूतो छे ताय, तिणरे पिण आणंद रति उपनी घणी जी॥ ३
शेष देवता हो उपाडे जथा जोग, आप आप तणी सगला मरजाद सूं जी।
सासती थित छे हो त्यांरी अनाद काल री ज्यूं लोग, सेवका वहे छे हरष आगाघ सूं जी॥४
पेंहला उपाडे हो सेवका नें मनषा रा व्रद, ते हरष सहीत रोम विकसत थया जी।
त्यांरा सन मांहि हो पांम्यां घणों इधक आणंद, कुंभ राजा री त्यां उपर हुइ छे मया जी॥ ५
पछे वहिवा लागा हो मनोरम सेवका ने ताहि, असुरिंद सुरिंद नागइंद्र देवता जी।
झल झलता कुंडल हो पेंहस्था त्यां कांन रे मांहि, विकुर्व्यो आभरण पेहस्था अति दीपता जी॥६
देव दाणव इंद्र हो सेवका लीयां वहे छें हुलास, मांहे जिणेसर देव विराजीया जी।
देव नेमीया हो वाजंत्र वांजे रह्या तास, जांणे आकाशे मझे अंबर गाजीया जी॥ ७
सेवका अगाल हो चाले आठ मंगलीक, दिष्या महोछव जमाली ज्यूं जांणजो जी।
विसतार तिण ठांमें हो तिहां जोय करों तहतीक, तिण अनुसारे वर्णन अठे पिछाणज्यो जी॥८

दुहा

मल्ली अरिहंत ने निखमण समें, एक एक देवता आय।
कचरों काढे मिथलानगरी तणो, जल सू छांटे छें ताय॥ १
केइ फूल तणी विरखा करे, केइ सोनइया वरसावे आय।
सिनांन वेला विरखा हुई, जिम अनेक दरव वूठा ताय॥ २॥
हिवे मल्ली अरिहंत तिण अवसरे, आया सहसब नामे उद्यांन।
जिहां असोग नांमां वृक्ष छे, तिहां सेवका सूं उतरीया भगवांन॥ ३॥
आभरण अलंकार मल्ली जिण तणा, प्रभावती राणी तिणवार।
हल्वे हल्वे उतारने, लीधा पलगट मझार॥ ४॥
मल्ली अरिहंत तिण अवसरे, लोच कीयो सयमेव।
ते केस मल्ली अरिहत नां, लीधां सक्रइंद देव॥ ५॥
त्यां केसां ने सक्रइंद देवता, मेल्या खीर समुदर मांहे जाय।
पाछो आयो वेग सताव सू, दिख्या रा महोछव माय॥ ६॥

ढाल : २८

[महिलां उतरी ए दे०]

हिवे मल्ली अरिहंत तिणवार, सिधां नें कीयो नमसकार।
सामायक चारित धास्यो, निज पोतां रो कारज सास्यो॥ १॥

जिण समा रें विपें मलीनाथ, चारित पडवजीयों जोडी हाथ।
देव मनुष्य रह्या चुप चाप, बाजा मने कीयां इंद्र आप ॥ २ ॥
देवगणा सबंधीया गीत, ते पिण वरज दीया रूडी रीत।
कोलाहल मेट कीयो निरोल, सगला मुन कीधी छे निटोल ॥ ३ ॥
जिण समें मल्ली अरिहंत, चारित लीयो मतवत।
तिण समे थो रूडो ध्यांन, उपनो मनपरज्या ग्यांन ॥ ४ ॥
मिगसर सुदी एकादसी कालों, दोय पोहर पेंहली विरीयां रसालो।
अठम भक्त कीयो च्यारू आहार, चंद्रमा सुभ आयो तिणवार ॥ ५ ॥
तीन सो अस्त्री ने साथ, दिष्या लीधी मल्लीनाथ।
वले तीन सो पुरष त्यारें संघात, त्यां पिण दिष्या लीधी त्यांरे साथ ॥ ६ ॥
वले आठ न्यातीला कुमार, त्यां पिण दीष्या लीधी त्यां लार।
नद नें नंद मित्र बीजो जांण, सुमित्र वलमित्र पिछाणों ॥ ७ ॥
भानुमित्र अमरपती जाणो अमरसेण महासेण पिछाणों।
ए आठोइ राजकुमार, त्यां पिण साथे लीयो सजम भार ॥ ८ ॥
देवतां री चारूंई जात, दिप्या महोछव करे विख्यात।
गया नदीसर दीप मझार, आठोंइ महोछव कस्या तिणवार ॥ ९ ॥
घणो हरख धरे अभिरांम, गया पोता पोता ने ठाम।
दिष्या लीधी जिण दिन जिणराय, तिण दिन पाछला पोहर माय ॥ १० ॥
असोग वृक्ष हेठे ताम, सुभ लेस्या ने सुभ परिणाम।
ध्यावतां थका सुकल ध्यान, उपनो केवल ग्यान ॥ ११ ॥
चोसठ इंद्रा रा आसण चलीया, केवल महोछव करण सारा मिलीया।
महोछव करने सुणी जिण वाणी, त्याने लागी अमीय समाणी ॥ १२ ॥
हरषे वादे जिणराय, पछे नदीसर दीप में जाय।
आठोइ महोछव कीयां तिण ठाम, पछें गया निज ठिकांणे ताम ॥ १३ ॥

दुहा

दूजे दिन परभात रा, कुंभराजा वादण आयो ताहि।
वले आई रांणी प्रभावती, वादे वेठी समोसरण माहि ॥ १ ॥
जितसत्रु आदि राजा सहू, वडा पुतर ने राज थाप।
सहंस पुरप उपाडे तिण सेवका मझे, वेस वेस नीकलीया आप ॥ २ ॥
सर्व रिध करे परवस्था थका, आया मल्ली अरिहत ने पास।
वंदणा करें वेठां मुख आगले, मन माहे अतत हुलास ॥ ३ ॥

कुंभ राजादिक छही राजा भणी, जिण धर्म कह्यो जिणराय।
वांणी सुण नें परखदा, आइ जिण दिस जाय ॥ ४ ॥
कुंभराजा रांणी प्रभावती, वांणी सुण हरषत थाय।
श्रावक ना व्रत आदरे, आया जिण दिस जाय ॥ ५ ॥

ढाल : २६

[धन्य धन्य जंबू स्वाम]

जितसत्रु आदि छही राजवी, धर्म सुणें बोल्या जोडी हाथ हो। जिणंद।
जनम मरण री लाय थी, म्हांने वारें काढों जगनाथ हो। जिणंद।
धिन धिन मल्लीनाथ नें ॥ १ ॥

छही राजा नें तिण अवसरें, दिष्या दीधी तिण ठांम हो।
चवदे पूर्व ग्यांन मुख भण्या, त्यारा चोखा घणां परिणाम हो ॥ २ ॥
त्यां चारित चोखो पालीयो, आंणी मन संतोख हो।
छेहले अवसर केवल उपाय ने, छही पोहतां अविचल मोख हो ॥ ३ ॥
सहसब वनथी नीकल्या, मल्ली अरिहंत तिणवार हो।
वीहार कीयो जनपद देस मे, त्या कीयों घणो उपगार हो ॥ ४ ॥
गामा नगरा जिण विचरीया, त्या उपदेस दीयो ले ले नाम हो।
पाछिल भव किरतब आपरो, ते पिण परगट कीयो ठाम ठाम हो ॥ ५ ॥
तीथकर हुवा छे असतरी, आ बात घणी छे अजोग हो।
हूं हुवो तीथकर असतरी, माठा करम तणो सजोग हो ॥ ६ ॥
म्हे पाछिल भव कपटाई करी, छ मित्रा सूं दगो कीयो जांण हो।
म्हे वेसास घात त्यासू करी, तिणरा अे फल लागा आंण हो ॥ ७ ॥
पेंहला कवल कीधा था एहवा, आपे तपसा बरोबर करसा ताम हो।
पछें म्हे जांण्यो तप बरोबर कीयां, बरोबर उपजाला एक ठांम हो ॥ ८ ॥
तो या छांने तप इधकों करूं, तो या सगलां रो होस्यूं सिरदार हो। मुनिंद।
यूं जाणे म्हे तप इधकों कीयो, याने नही जणायो म्हे लिगार हो। मुनिंद ॥ ९ ॥
यासूं इधको हुवेणो म्हे चितव्यो, इसडी कीधी म्हे वेसासघात हो।
तिणसूं अस्त्री नाम गोत उपजावीयों, म्हे पडवजीयों मिथ्यात हो ॥ १० ॥
पछे बीस बोलाकर बाधीयों, तीथकर नांम करम हो।
तिणसूं हुवो तीथंकर अस्त्री, ते करम किणरी न राखे सर्म हो ॥ ११ ॥
करमां गति छे बांकडी, ते लोपी किणसूं न जाय हो।
हूं हुइ तीथंकर असतरी, ते पूर्व करम विथाय हो ॥ १२ ॥

तीथकर हुवे असतरी, ते अछेरो हुवे अनंते काल हो।
ते वात नही छे सोभती, ते पिण कोइ न सके टाल हो॥ १३॥
इम सांभल नर नारीया, एहवो म करजो कोइ कांम हो।
थे अरू वरू मोनें देखलो, राखजो सुमता परिणाम हो॥ १४॥
साध साधवी श्रावक श्रावका, त्यारो वोहत वधीयो पिरवार हो।
हिवें गिणती कहूं छूं तेहनी, ते सुणजो विसतार हो॥ १५॥
अभिचंद्र प्रमुख आदि दे, हूआ गणधर अठावीस हो।
त्या अठावीस गण चलावीया, साधु हुआ सहस चालीस हो॥ १६॥
वंधूमती प्रमुख आदि दे, आर्या हुइ पचावन हजार हो।
एक लाख चोरासी सहंस उपरे, श्रावक हुवा व्रत धार हो॥ १७॥
तीन लाख पेसठ सहंस उपरे, श्रावका हुइ चतुर सुजांण हो।
छसों पूर्व धारी हुवा, दोय सहंस हुवा ओही नाण हो॥ १८॥
वत्तीसो हुवा त्यांरे केवली, पेंतीसो वेक्रें लवद जांण हो।
मन परज्यां ग्यांनी हुवा आठसो, चरचावादी चवदेसो वखांण हो॥ १९॥
दोय सहंस मुनीसर तेहनां, गया छे अनुत्तर विमांण हो।
मल्लीनाथ जी मुगत गयां पछे, बीस पाट पोहता निरवाण हो॥ २०॥
मल्लीनाथ केवली हुआ पछे, दोय वरसा पछे चलूं हुइ मोख हो।
जद एक साधु मुगते गयों, करे करमां री सोख हो॥ २१॥
पचीस धनुप उंचो काया हुई, ते नीले वरण वखांण हो।
वज्र रिषभनाराच संघेण छे, समचोरस त्यारो संठाण हो॥ २२॥
वीहार करतां जिण आवीया, समेत शिषर तिण ठांम हो।
पांच सो साध पांच सों साधवी, कीयों संथारो तांम हो॥ २३॥
त्यानें संथारो आयों एक मास नों, समस्त करमां री कीधी घात हो।
मुगत गया उभां थका, चेत सुदि चोथ री अर्द्ध रात हो॥ २४॥
आउ पचावन हजार वरस नों, तिणमे सो वरस रह्या घर मांय हो।
सेष आउखो तेहमे, पाली चारित परजाय हो॥ २५॥
ए चारित कीयों मल्लीनाथ नो, भव जीवां समझावण कांम हो।
गिन्याताग आठमा अधेन सूं, कीयां मल्लीनाथ ना गुण ग्राम हो॥ २६॥
समत अठारे सेतालें समे, प्रसिध देस मेवाड हो।
भादवा सुदि दसम शनीसरे, जोड कीधी पुर सहर मझार हो। जिणंद॥ २७॥
धन्य धन्य मल्लीनाथ ने।

रत्न : ११

थावचा पुतर रो बखांण

दुहा

गिनाता रा पांचमां अधेन मे, थावचा पुतर नो इधकार।
तिण अनुसारे हूं कहू, ते सुणजो विसतार ॥ १ ॥
तिण काले ने तिण समे, चोथा आरा नी वात।
दुवारका नांमे नगरी हुती, प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
ते लाबी जोजन बारे तणी, पूर्व ने पिछम दिस जाण।
नव जोजन पेहुली कही, उत्तर दिखण दिस में पिछांण ॥ ३ ॥
ते नीपजाइ छे धनपती, ते देवता वेसमण जाण।
सोवन कोट रतनां रा कांगरा, श्री किस्न रे पुन परिमांण ॥ ४ ॥
विचत्र परकारे मणि रतना तणा, कागरा तिण कोट रे जाण।
तिण दीठा हरष उपजे घणो, प्रतष देवलोक समाण ॥ ५ ॥

●

ढाल: १

[राग सोरठ जतनी]

दुवारका नगरी बारे ताहि, इसाण कुणरें मांहि।
रेवत नामे परवत तास, ते तो उचो गगन आकास ॥ १ ॥
नाना परकार नां गुछा ताह्यो, घणी वेलडीयें कर छायो।
तिहां घणा हंस सारस नें मोरो, घणा चकवा चकव्या रो जोडो ॥ २ ॥
कावर मेणशालादि विशेषो, ते पिण बोले छे वाणी अनेको।
घणी कोयला पाडे टहूका, त्यांरा वचन मीठा नही लूखा ॥ ३ ॥
इत्यादिक पंखीया छे अनेक, तिणसू सोभ रह्यो छे वशेष।
तिणरे तट घणा छे ताम, रमणीक जायगा ठाम ठांम ॥ ४ ॥
वले घणा विवरा रे मांहि, नीझरणा झरे रह्या ताहि।
वले गुफा घणी तिण माहि, परवत ना देस नभ रह्या ताहि ॥ ५ ॥
अपछरा रा समूह तिहा आवे, ते पिण घणी रलीयायत थावे।
घणा देवता आवे छे ताम, ते पिण हरख पामे तिण ठाम ॥ ६ ॥
केइ लबदधारी छे साध, ते पिण तिहां आय पामें समाध।
विद्याधर ना जोडला तांम, ते पिण कीला करें तिण ठांम ॥ ७ ॥
नित ओछव छे तिण ठांम, घणा सुख भोगवे अभिराम।
वडा वडा वीर पुरष छे तेह, त्यांरो पिण तिणसूं अतत सनेह ॥ ८ ॥

सोम दरसण तिणरो तांम, जस सोभाग छे ठाम ठांम।
पिय दरसण तिणरो अनूप, घणो गमतो तिणरो रूप॥ ६॥
घणो देखवा जोग छे ताय, तिण दीठां हरखत थाय।
इसडो छे रेवत परवत रूडो, ते दीसे घणो सनूरो॥ १०॥

●

दुहा

तिण रेवत परवत तेहने, नदणवन छे पास।
सर्व रित नां फूलांकर सहीत छे, नंदणवन सरीखो परकास॥ १॥
ते पिण देखवा जोग छे, सोभायमान अतंत।
रित पांमें तिण मे गया, आणंद हरख पामंत॥ २॥
ते नंदणवन रलीयामणो, तिण वन तणे मध्य भाग।
सुरपिया नामे जख नो देहरो, तिणरो घणो जस सोभाग॥ ३॥
तिण नगरी रो अधिपती, किस्न वासुदेव राय।
ते राज करें तीन खंड रों, ते चावो तीन लोक रे मांय॥ ४॥
तिण किस्न वासुदेव तेहनें, वोहत घणो पिरवार।
तेह तणो वर्णन करू, ते सुणजो विसतार॥ ५॥

●

ढाल : २

[इणपुर कम्बल कोय न लेसी]

समुदविजे आदि दस दसार सधीर, बलदेवादिक पांच मोटका वीर।
उग्रसेनादिक सोले सहस राजांन, सहु सेवा करे छोडे अभिमांन॥ १॥
प्रजनकुमर आदि नमे कर जोड, कुमर कह्या साढी तीन करोड।
ते रूप मे सोभे अति ही सरूप, जाणे वाडी खूली छे अनूप॥ २॥
सबकुमार आदि साठ हजार, दुरदत कह्या छे मोटका जोधार।
महासेन प्रमुख छपन हजार, ते बलवंत पाछा न भागे लिगार॥ ३॥
वीरसेन आदि इकवीस हजार, वेस्यां ना मोरचा विदारण हार।
इसडा वीर त्यांरा मुख आगे, वेरी दुसमण त्यांसू दूर भागे॥ ४॥
रूखमणी आदि वत्तीस सहस परमाण, ते किस्न तणो अंतेवर जांण।
अनगसेनादिक सहंस अनेक, वेस्या नगरी माहे वसें छे वसेष॥ ५॥
घणा इसर तलवर माडवी ताहि, ते घणा वसें छे दुवारका मांहि।
त्यारी रिध तणो घणो विसतार, ते कहितां किण विध पांमे पार॥ ६॥

त्या सगलां रो अधिपती किस्न महाराय, सुखे राज करे छे ताहि।
अर्ध भरत खेतर रो नाथ, ते सकल नमे सहु जोडी हाथ ॥ ७ ॥
तिण दुवारका नामे नगरी रे माहि, थावचा नामे गाथापतणी वसे छेंताहि।
ते रिध करने प्रति पूर्ण हुई, तिणसू गंज सके नही कोइ ॥ ८ ॥
तिणरे थावचा नामे पुतर अनूप, हाथ पग सुकमाल नें सुंदर सरूप।
तिणनें आठ वरस जाफेरो जांण, कला आचार्य ने सूंप्यो आंण ॥ ९ ॥
ते बोहीतर कला नो हुवो छे जांण, वले डाहो घणो छे चतुर सुजांण।
भोग समर्थ तिणनें जाण्यो माय, बत्तीस महल कराया ताय ॥ १० ॥
ईभ कुल री उपनी नव जोवन बाल, हाथ ने पग त्यांरा अति सुकमाल।
त्यांरो सुंदर रूप अपछरा उणीयार, त्याने दीठांइ पामे हरख अपार ॥ ११ ॥
•ते बत्तीस किन्या एक दिन परणाई, ते बत्तीस दान डायचें ल्याइ।
तिणरो तो छे घणो विसतार, बुधवत लीजों अकले विचार ॥ १२ ॥
एहवी अस्त्री तणो मिलियो सजोग, त्या सघाते भोगवे काम भोग।
विषे सुखां मे लीन होय रह्यो ताय, जाता काल री खबर न काय ॥ १३ ॥
मादल मस्तक फूटे रह्या ताय, घर री चिंता मूल न काय।
बत्तीस विध ना नाटक पडे ताम, सुखे काल गमावे छे आम ॥ १४ ॥

दुहा

कठे कथा माहे तो इम कह्यो, पाडोसी रे जनम्यो पूत।
त्यारे गीत गावे रलीयामणा, ते कांना ने लागे अदभूत ॥ १ ॥
ते गीत थावचे पुतर साभल्या, तिणने गमता लागा मन माहि।
रोम राय विकसत हुइ, जाणे सुणबोई कीजे ताहि ॥ २ ॥

ढाल : ३

[हिवें मल्ली अरिहंत]

हिवे मेहलां सूं उतरीयों जी, ओ तो आयो जिहां बैठी छे माजी।
आज गीतज किणरे गावे, म्हारा कांना नें सबद सुहावे ॥ १ ॥
इम सांभल बोली माता सताब, पाछो दीयो पुतर ने जाब।
पडोसी रे बेटो आज जायो, जिणरें हरष वधावो आयो ॥ २ ॥
बाया थाल भरी गुल बेहचे, इणरे पुतर हुवो छे निश्चें।
बायां मिल मिल ने गीत गाया, थारा कांनां ने सबद सुहाया ॥ ३ ॥

यारे जायो नाहनडीयो पूत, अवे वध्या छे घर तणा सूत।
यांरे खेतू वत्थु घणो छे धन, तिणसू राजी घणो छे मन॥ ४॥
सार बस्तु ससार मे होय, पुतर समो नही और कोय।
यारे आगे पुतर कोइ नही, तिणसू वशेष राजी मन माहि॥ ५॥
तिणसूं गीत वशेषे गावे, वले मगलीक बाजा वजावे।
धन खरचण रो दीयो वले हूवो, जाणे जनम सफल आज हूवो॥ ६॥
इम सुणने माता री वात, वले पूछे माता ने जोडी हाथ।
मोने पिण माजी थे जायो, जद थे पिण हरख्या मन माह्यो॥ ७॥
थे पिण इसडा गीत गाया, थे पिण इसडा बाजा वजाया।
थे पिण धन खरचण रो दीयो दूवों, थे पिण जाण्यो जनम सफल हूवो॥ ८॥
थांरे इण विघ हूवो के नाहि, जनम महोछव कीयो थो काइ।
जद माता कहे सुण पूत, थारा महोछव कीया अदभूत॥ ९॥
इणसू आपारें घणो छे धन, वले उचो घणो म्हारो मन।
थारा महोछव रो काइ कहिणो, थोडे कहे घणो कर जाणो॥ १०॥
इम सुणने पुतर हुवो राजी, तहत सत कह्यो हो मात जी।
जीमे असणादिक च्यारूं आहार, पाछो गयो मेहलां मभार॥ ११॥
तो पिण पाडोसी रा घर माहि, गीत गाय रह्या छे ताहि।
पिण मिनष मरता नही ताल, ओ तो वालक कर गयो काल॥ १२॥
गावण वाली ते रोवण ढूकी, कोलाहल करती सर्व कूकी।
छाती माथा कुटे अरडावे, ते सुणता मोह करुणा आवे॥ १३॥
ते थावचा पुतर ने ताय, ए काना ने वचन न सुहाय।
सुखे समाधे बेठो ठिकाण, खोटा वचन काने परीया आण॥ १४॥
जब मेहला सूं उतरीया विराजी, ओ तो आयो जिहा बेठी माजी।
सांभल ए मोरी माता, पाडोसी रे छे आज असाता॥ १५॥
ते रोवे पीटे विललावे, म्हारा काना ने सवद न सुहावे।
इणरे आज भूंडो हूवो कांइ, ते मोने खवर छे नाही॥ १६॥
माता कहे जनम्यो ते वाल, ते वालक कर गयो काल।
इणरे वालां रो पडीयो विजोग, वेटा मूआ रो करे छे सोग॥ १७॥
जब कुंवर बोल्यो नांखी निसास, इण सासरो किसो वेसास।
जेहवो चेहर वाजी रो तमासों, तेहवो छे मानव नो वासों॥ १८॥
उ वालक कर गयो काल, तो मोने पिण मरतां नही ताल।
तो इसडो करूं हिवे कांम, हू अविचल रहू इण ठांम॥ १९॥

जो उ कर गयो माजो काल, तिणनें मरता न लागी ताल।
तो हू पिण माता जी मर जासूं, के हू अखी अजरामर थासूं॥ २०॥
माता कहे सुण रे पूत मोरा, आउखा सूं नही किणरा जोरा।
बडा बडा पुरुष कर गया काल, त्यानें मरतां न लागी ताल॥ २१॥
तो पुतर थारी किणसी चलाई, मरण सू कारी न लागे कांइ।
मा नो वचन तहत कर लीनो, ते तो मरण सूं गाढों बीनो॥ २२॥

●

दुहा

जनम मरण सू बीहनो हो मात जी, हू हुवो घणो भय भ्रात।
जिण सुख माहे दुःख वसे, जिणसू किम रीझू कर खंत॥ १॥
जनम मरण मिटे दुःख म्हांरा, वले दुःख न व्यापे कोय।
अजर अमर होउ सासतों, माजी इसडी बतावो मोय॥ २॥
इण संसार माहे हो मात जी, लागी जनम मरण री झोर।
जनम मरण मूल आवे नही, मोने असी बतावो कोइ ठोर॥ ३॥
तू सुख भोगव ससार नां, हिवडा राख पुतर आणंद।
जामण मरण नीवारवा, श्री जादव नेम जिणंद॥ ४॥
नेम जिणंद हो मात जी, ते वसे छे किण ठांम।
त्यांरें समीपे हू जाय ने, सारू आतम काम॥ ५॥
नेम जिणद इहां आवसी, जब हू कहिसू तोने आय।
हिवे जा तूं मेहलां नचिंत सू, फिकर म राखे काय॥ ६॥
दूहा सहीत ढाल पाछे कही, वले अ दुहा कह्या विचार।
ते बात कथा मे साभली, म्हे कही छे तिण अनुसार॥ ७॥

ढाल : ४

[धीज करें सीता सती रे लाल]

तिण काले ने तिण समे रे, बावीसमां जिण राज रे। भविक जण
गामा नगरा विचरता रे लाल, तारण तिरण जीहाज रे। भविक जण
श्री नेम जिणद समोसर्यो रे लाल* ॥ १॥
दस धनुष उची त्यांरी देह छे रे, समचोरस त्यांरो संठाण रे। भ०।
वज्ररिषभनाराच सघेण छे रे लाल, सहस ने आठ लखण वखांण रे॥ भ० २॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

हूं कहि कहि नें कितरो कहूं रे, यांरा गुणां रो छेह न पार रे।
ग्यांन दरसण चारित त्यांरो निरमलो रे लाल, घणां सावां रा सिरदार रे॥ ३ ॥
वर्ण नीला उतपल कमल नो रे, अलसी नां फूल सरिखा प्रकास रे।
एहवो वर्ण त्यांरी देहनो रे लाल, त्यांने दीठांई पांमें हुलास रे॥ ४ ॥
गामांणुगांम विचरता रे, जिहा दुवारका नगरी छें ताम रे।
जिहां रेवत नामा परवत अछें रे लाल, जिहां नंदण वन तिण ठाम रे॥ ५ ॥
जिहां सुरप्पिया जष नो देहरो रे, जिहां असोग वृक्ष वखांण रे।
तिण हेठें पुढवी सिलापट जिहा रे लाल, तिहां आग्या ले उतरीया छें जाण रे॥ ६ ॥
सहंस अठारें मुनिवरु रे, अजीया चालीस हजार रे।
ज्यांने आंण मनावता रे लाल, उतारे भवपार रे॥ ७ ॥
एक एक मुनिवर एहवा रे, ग्यांन तणा भंडार रे।
त्यांने भाव सूं बांदीया रे लाल, जांणजों खेवो पार रे॥ ८ ॥
एक एक मुनिवर एहवा रे, तप कर सोखी काय रे।
सोलां रोगां उपर तेहनों रे लाल, खेले लागा खय जाय रे॥ ९ ॥
एहवी रिध तणा धणी रे, नेम जिणंद रा साव रे।
एक वंछा ज्यारें मुगत री रे लाल, वरते सदा समाव रे॥ १० ॥
संजम ने तपसा करी रे, आतमा ने भावे रूडी रीत रे।
ते किस्न वासुदेव सांभल्यो रे लाल, तिहाईज विनो कीयों सुवनीत रे॥ ११ ॥
कहें चाकर पुरुष बोलाय ने रे, सोधरम सभा वेग सूं जाय रे।
गंभीर सब्द छे गाज सारिखो रे लाल, कोमदी नामे भेरी वजाय रे॥ १२ ॥
चाकर सुण हरषित हुवो रे, गयो सुधर्मी सभा मांहि रे।
तिहां भेरी बजाइ लेई हाथ में रे, मीठो गंभीर सब्द छे ताहि रे॥ १३ ॥
बारें जोजन लांबी दुवारका रे, पेहली नव जोजन जाण रे।
तिण मांहे बारे सब्द सांभल्यो रे लाल, एहवो भेरीनो सब्द वखाण रे॥ १४ ॥
समुदविजय आदि मोटां राजवी रे, जाव किस्न जी तणो परिवार रे।
त्यां भेरी तणो सब्द सांभली रे लाल, हुआ सताव सू त्यार रे॥ १५ ॥
केयक हाथी ने पालखी रे, केइ घोडे चढीया जाण रे।
केयक पालाइज नीकल्या रे लाल, ऊभा किस्नजी समीपे आंण रे॥ १६ ॥
साथ सगलोइ आयो देखने रे, किस्नजी हरषत थाय रे।
कहे कोटंबी पुरष बोलाय ने रे लाल, चोरंगणी सेन्या सिणगारो रे॥ १७ ॥
चाकर सुण तिम हीज कीयों रे, चोरगणी सेन्या सज करो जांण रे।
विजयगंध हस्ती सिणगारीयो रे लाल, आग्या सूंपी किस्न जी ने आंण रे॥ १८ ॥

हस्ती खंध वेठा किस्नजी रे, चोरंगणी सेन्या लीधी साथ रे।
मोटे मंडांणे कर नीकल्या रे लाल, वांदण श्री जगनाथ रे॥ १९ ॥
वले नरनारी नगरी तणा रे, ते नीकल्या व्रंदो व्रंद रे।
ते पिण नेम वांदण नें नीकल्या रे लाल, त्यांरे मन माहे अधिक आणद रे॥ २० ॥
केयक हाथी ने पालखी रे, केयक पाला जांण रे।
होडा होडी नीकल्या रे लाल, सुणवा प्रभूजी नी वांण रे॥ २१ ॥
एक एक नें बोलावता रे, मन मे हरषत थाय रे।
आप आपणा समुदाय थी रे लाल, टोला टोला जाय रे॥ २२ ॥
केयक प्रश्न पूछिवा रे, केई वांदण श्री जिणराज रे।
केयक अर्थ नें धारिवा रे लाल, केयक दरसण काज रे॥ २३ ॥
केई कतूहल जोयवा रे, केई जांणे कुल आचार रे।
केयक सांसों काढिवा रे लाल, केई राखवा लोक ववहार रे॥ २४ ॥
जिण दिन पिण हूंता घणां रे, भारीकरमां मूंढ रे।
अवगुण अणहुंता काढिवा रे लाल, झाली मिथ्यात री रूढ रे॥ २५ ॥
अतर भक्त नों पारिखो रे, केयक विरलां जांण रे।
ओर नही त्यारे आसता रे लाल, ए पाले जिणवर आण रे॥ २६ ॥
घणां लोकां नें जाता देख ने रे, थावचा पुतर नीकल्यो ताय रे।
भव स्थित पाकी तेहनी रे लाल, श्री नेम वादण ने जाय रे॥ २७ ॥

दुहा

थावचा पुतर तिण अवसरे, तिण देख्या नेम जिणद।
रोम राय सर्व विकसी, पाम्यो परम आणद॥ १ ॥
तिण वंदणा कीधी हरख सूं, नीचो सीस नमाय।
श्री नेम जिणेसर आगलें, वेठो सनमुख आय॥ २ ॥
श्री नेम जिणेसर जांणीयो, ओ जीव असल गतराग।
ओ मोक्षगामी छे इण भवे, हिवें चढसी अतत वेराग॥ ३ ॥
थावचा पुतर ने कारणे, वांणी वागरी नेम जिणद।
किस्न जी आदि देइ परखदा, सुणे नर नार्यां रा व्रद॥ ४ ॥

ढाल : ५

[महिला अचल रहेनी रे सतगुरु]

लोकालोक नवोई पदार्थ, त्याने रूडी रीत पिछाणो।
यां जाण्या विण समकत नांही, तिणमे सका मत आंणो।
भवीयण बूझ करोनी रे, श्री जिण सीख वहोनी रे॥ १॥
समकत सहीत सूंस करेने, करम आवता रोको।
तपकर पूर्व करम खपावों, ज्यूं पांम्यों अविचल मोखो।
भवीयण बूझ करोनी रे, सतगुर सीख वहोनी रे॥ २॥
नव तत रीं निरणो नही कीधो, ते समदिष्टी नांही।
समकत विना वरत नही छे, ओ निरणों करों घट माही॥ ३॥
समकत विना कोइ करणी करें तो, करम निरजरा थावे।
शुभ जोग वरत्यां सूं पुन बंधे पिण, पाप करम नही रुकावे॥ ४॥
समकत सहीत वरत करें तो, पाप करम रुक जावे।
तप करे पूर्व करम खपावे, ते वेगा मुगत सिधावे॥ ५॥
कूडकपट करें दरब कमावें, ते मिल न्यातीला खावें।
तिण पाप करें जीव नरका जावे, तिहां दुख अनंतो पावें॥ ६॥
मात पितादिक सर्व न्यातीलां, ते सर्व स्वारथ नी सगाइ।
दोरी वेलां आय पडें जब, कोइ दुख नहीं वाटें आइ॥ ७॥
ज्यारे कारण करम बावे छे, ते पिण वेंरी होय जावें।
परमाधांमी मारें नरक में, जब आडा कोइ न आवें॥ ८॥
छ काय जीवां रा जीव विराधे, न्यातीलां रे काजें।
पाप करम बांधण ने सूरा, वलें सीह तणी परे गाजे॥ ९॥
तन धन जोवन सगला कारिमां, कारिमो सगलों परिवार।
तिण मांहे जे मुरझ रह्या छें, त्यां जीतव दीयो विगार॥ १०॥
कुगुर तणी संगत नहीं कीजें, ते मिथ्यात घट मे घालें।
ते हिंसा माहे धर्म घरावे, तिण सूं भव भव दुख सालें॥ ११॥
कुगुर कुपातर हिंसाधर्मी, काला नाग विचेंइ भूंडा।
त्यांने गुर धारेने वेठा, संसार समुद्र में वूडा॥ १२॥
कालो नाग छे अतिही भूंडों, ते एकण हीज भव मारें।
कुगुर उंधी सरधा सूं, अनंता जांमण मरण वधारें॥ १३॥
भिष्ट आचारी भागल लूटल, त्यारी सरधा आचार छे भूंडो।
त्यांनें गुर धारेनें भवीयण, ओ अवसर पाय म वूडो॥ १४॥

काल अनंतो रूलीयो रे प्रांणी, ते कुगुर तणे परतापो।
हिवे कुगुर छोड ने सतगुर सेवों, छोडो अठारे पापो ॥ १५ ॥
पांच इंद्रीना काम भोग छें, त्यारी विषें कही तेवीसों।
त्यामें गिरधी होय रह्या छे, ते बूडा वीसवावीसो ॥ १६ ॥
तूं ससार तणा सुख सार जांणे छे, पिण निश्चें नही छे नीका।
ते नरक निगोद तणा दुख दायक, वले चिहु गति मे खासी भीका ॥ १७ ॥
मात पितादिक कुटंब कबीलों, ते जाण लीया सर्व म्हारा।
पिण अंत काल तोने काल लपेटे, जब नही कोइ राखण हारा ॥ १८ ॥
रोग सरीरे आय उपनो, जब वेदन हूई अपारा।
आपणो मूतलब मिटीयो जाणी, कोइ हुय गया न्यारा ॥ १९ ॥
विषय कषाय ने विष सम जाणों, सुमता रस घट आंणो।
भोग रोग ने दूर तजो थे, ज्यूं पामो पद निरवाणो ॥ २० ॥
सर्व धर्म साधु रो पूरो, देस धर्म श्रावक रों जाणो।
ए मुगत मारग छे दोनूं निरवद, त्यांनें रूडी रीत पिछाणो ॥ २१ ॥
श्री नेम जिणेसर भिन भिन भाख्या, जीवादिक नव भेदो।
सावद्य निरवद्य किरतब भाख्या, ते सरधो आण उमेदो ॥ २२ ॥

●

दुहा

वाणी सुणने परषदा, हिवडे हरषत थाय।
सकत सारू वरत आदरे, आया जिण दिस जाय ॥ १ ॥
थावचा पुतर तिण अवसरे, धर्म कथा सुणी जिण पास।
हरष सतोष प्राम्यो अति घणों, ससार थी थयो उदास ॥ २ ॥
हाथ जोडी कहे श्री नेम ने, म्हे सरध्या तुमना वेण।
थे तारक भवि जीव ना, मोने मिलीया साचा सेण ॥ ३ ॥
म्हे ससार जाण्यो कारमों, जाण्या मोख तणा सुख सार।
तो हिवे पूछ माता भणी, लेस सजम भार ॥ ४ ॥
वलता नेम इसडी कहे, थारे दिल्या आइ दाय।
जका घडी जाअे तका, फिर पाछी नही आय ॥ ५ ॥
समय मातर जेज करणी नही, सास रो नही मूल वेसास।
वले परिणाम फिर जाअें करम उदे, तो होय जाअे आस निरास ॥ ६ ॥
इम सांभल ने हरषत हुवो, वांद्या श्री नेम जिणद।
आग्या लेवा आयो माता कनें, मन माहे इधक आणद ॥ ७ ॥

ढाल : ६

[भाला क्या लागो]

घरे आय कहें माता भणी रे, म्हें देख्या नेम जिणंद रे।
चारित चित वस्यो, त्यांनें वांद्या म्हें भाव सूं रे।
पांम्यो परम आणंद रे, चारित चित्त वस्यो ॥ १ ॥
जब माता कहें पुतर भणी रे, थें देख्या श्री भगवंत रे।
थे वले वाद्यां भगवांन नें, तिण माहे लाभ अनंत रे॥ २ ॥
वले पुतर कहे मात नें, म्हें सुणीयो जिण धर्म रे।
ते वलभ लागो धर्म मो भणी, वले लागो वलभ परम रे॥ ३ ॥
हाड मिंजा रंगी जिण धर्म सूं, इण समों सार न कोय रे।
इण सूं सिव सुख पांमीयें, अजरामर पद होय रे॥ ४ ॥
वले माता कहे पुतर भणी, तूं धिन धिन म्हांरा पूत रे।
तूं पुनवंत पुतर छे घणों, तूं करता अर्थ अदभूत रे॥ ५ ॥
तूं लपणवंत सुत मांह रो, तूं मुझ घणों सुवनीत रे।
तूं नेम समीपे जाय नें, धर्म सुणीयों रुडी रीत रे॥ ६ ॥
थे धर्म सुणेने सरदह्यो, रुचीयो तोय वशेख रे।
हाड मिंजा रंगांणी ताह री, ते तो विरला देख रे॥ ७ ॥
सुणवा जीव जाजे घणा, पिण सरधे ते विरला जाण रे।
थें श्री जिण वचन सरधीया, तूं डाहो चुतर सुजांण रे॥ ८ ॥
नरक तिरजंच गति तेहमे, तूं नही जाजे तिण मांय रे।
जिण वचन साचा सरधीया, तूं निश्चे सूध गति जाय रे॥ ९ ॥
जब थावचा पुतर माता कनें, बोल्यो दोय तीन वर रे।
इम निश्चे कर मो भणी, खारो लागों ससार रे॥ १० ॥
तिण कारण हो मात जी, आग्या मांगूं तुम पास रे।
तुम तणी आग्या हुवा, संजम लेउं नेमजी ने पास रे॥ ११ ॥
मोंने किरपा कर दो आगना, तो मन रलियायत थाय रे।
हूं घर में रति पांमूं नहीं, आ अरज सुणो मोरी मांय रे॥ १२ ॥

दुहा

ए वचन बेटा रा सांभले, थावचा गाथापतणी जांण।
अनिष्ट अकंत अप्रीय कारीया, वचन लागा जहर समान॥ १ ॥

ए वचन अणगमता लागा घणा, मन ने सुहाया नही रे लिगार।
एहवा वचन आगे नही सांभल्या, घणा लागा छे कठोर अपार॥ २॥
ए वचन बेटा रा हीए धारने, मोटो दुख उपनो ततकाल।
तिण पुतर नां दुख व्याप्या थकी, उठी अभितर झाल॥ ३॥
परसेवो हुवो तिणरे अति घणो, तिणसू भीनी घणी रोमराय।
सोगें करी लागी कंपवा, दीन दयामणी हुइ ताय॥ ४॥
नीचे मुख जोए रही, दोनूं हाथ मसल रही मांय।
फूल माला कुमलाइ तेहनी परे, मुख दीयो कुमलाय॥ ५॥
सरीर सर्व दुरवल थयो, लावण सर्व सुन्य थाय।
वदन विछाय सरीर थयो, ढीला आभरण थया छे ताहि॥ ६॥
केस माथा रा विखर्या, मूर्छा वस चेतना गई विललाय।
फरसी काटी चप लता धरती पडे, तिम धरणी ढली छे माय॥ ७॥
इद्र थभ आकासे वांधीयो, वधण ढीलो कीयां पडे ताय।
तिम माता सिंघासण सूं ढल गइ, झट दे धरती पडी छे आय॥ ८॥
सीतल जल धारा अे छांटी घणी, वीजणे कर घाल्यों वाय।
हिवें नींठ चेतना तिहां लही, हिवे किण विध वोले छे माय॥ ९॥

ढाल : ७

[प्रभवो मन में चितवे]

सावचेत हुआ पछे, संभारे पुतर वेण।
मोह उलटीयो अति घणो, आंसूडा भरीया नेण॥ १॥
ढीले डोरे हार मोत्यां तणो, मादल खिसीयो तिवार।
तूटे हार मोती पडे, तिम छूटी आसूं धार॥ २॥
ते आसू मोती सारिखा, ते टपक टपक पडे छे।
ते टपका पयोधर सींचता, धरती आय रडे छे॥ ३॥
करुणावंत दुरमन तेहनो, दीनवंत थकी रोवे।
आक्रंद सव्द करें घणा, निज पुतर साह्मो जोवे॥ ४॥
सोग करती विल विल करती थकी, पुतर ने कहे ताह्यों।
एक पुतर तू मांहरे, पुन जोगे म्हे पायो॥ ५॥
तूं इष्ट कंत गमतो मो भणी, तू मुझ जीतव्य प्रांण।
म्हाने धैर्य वेसास छे तुम तणो, रतन करड समांण॥ ६॥
तूं मुझ आणंद कारी हीया ने विषे, दीठा नयण ठराय।
वचन गमता लागे ताहरा, कानां ने सुख दाय॥ ७॥

उंबरफूल तणी परे दोहिलों, जिम छें मुझ ने दोहरों।
कांने -सांभलवो पुतर तणो, ते मुझ नही छे सोहरो॥ ८॥
तो दरसण पुतर रो किहां थकी, इण भवरें मझार।
तूं एक पुतर छे म्हारे, ओर आसा नही लिगार॥ ९॥
तिण कारण पुतर मोनें तांहरो, खिण विरहो न खमाय।
ओ विरहो पडें जावजीव रो, ते म्हारे केम समाय॥ १०॥
हूं जाणती थी सुख मोनें घणां, ते सर्व धूड समांण।
एक पुतर विण म्हांरे, जीतव्य अपरमांण॥ ११॥

●

दुहा

तिण कारण तूं घर में थकां, भोग भोगव तूं पूत।
हूं जीवू ज्यां लग ताहरो, भांग मति घर सूत॥ १॥
कांम भोग छे मिनख सबंधीया, त्यांरो हिवडा तो मतकर त्याग।
मो काल गयां पछे रूडी रीत सूं, इण विध कीजे वेंराग॥ २॥
तूं वस वधारे आपणो, पुतर ने थापे घर मझार।
बूढो हुआं नेम जिणंद कने, घर छोडे होयजे अणगार॥ ३॥
ए वचन सुणी माता तणो, पुतर वोल्यो जोडी हाथ।
थे कह्यो ते तिमहीज छे, एक सुणो हमारी वात॥ ४॥

ढाल : ८

ए मिनष तणा भवनो मोने माजी, सास रो जावक नही वेसासो।
तिण विणसंता वार न लागे माता जी, जिम पांणी माहे पतासों।
माता मोरी लेसां ए संजम भार*॥ १॥
अध्रुव अनित असासतो जीतव, ते विणसता नही लागे वार।
उपद्रव अनेक व्यापे रह्या तिणनें, थिर नही मूल लिगार॥ २॥
वीजली नां चमतकार सरीखो, वले संध्या रग समांण।
वले पांणी तणा परपोटा जेहवो, एहवो मानव भव जाण॥ ३॥
डाभ अणी उपर जल बिंदू अथिर छे, ते पडतां न लागे वार।
वले सुपन दरसण सरीखो मांनव भव, विणसंता नहीं वार लिगार॥ ४॥
वले सडजाअे पडजाअे विधंस होय जाअे, मानव नों सरीर अनित।
ते अवस करे मोनें छोडणो माजी, तिण उपर नही पांमूं रित॥ ५॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते कुण जाणे माजी थे पेहिला मरजासो, थां पेंहली मोनें मरणो थाय।
ते पिण खबर नही माजी मोनें, हू किण विध रहू घर माय॥ ६॥
ए संसार सर्व खारो लागो मोनें, हूं भय पाम्यो छू अनत।
इण अथिर जीतव्य मांहे विघन घणा छे, तिणसू कुण रीझे कर खंत॥ ७॥
तिण कारण हो माजी तुम तणी आग्या, हूं मांगू छूं बेकर जोड।
पछें नेम समीपे दिख्या लेने, तोडूं म्हांरा करम कठोर॥ ८॥
ए पुतर वचन सुणेने बोली माता, साभल जाया मोरी बाय।
बतीस किन्या परणाइ रे जाया, त्यांरा गुण तूं सुणे चित ल्याय।
पुतर मारा जीवनों प्राण आधार॥ ९॥
तो सारिखो सुखमाल सरीर छें त्यारो, सरीखी वय त्यांरी छे ताम।
वले लावण जोवन रूप गुणे सरीखी, त्यांरो वर्ण घणो सुख दाय॥ १०॥
ते सरीखा कुल री उपनी रे जाया, त्यांरो तोसू रे प्रेम अतत।
एहवी अस्त्री तोनें आय मिली छे, ते चतुर घणी मतवंत॥ ११॥
त्यां अस्त्रीयां संघाते तू सुख भोगवलें, आंण मिली छे तेह।
काम भोग विस्तीर्ण मिनख तणा छें, भोग भोगव तूं ऐह॥ १२॥
भुगतभोगी थई ने पछें जाया, श्री नेम जिणद रे पास।
साघ थइ सर्व करम काटेने, कीजें मुगत मे वास॥ १३॥
नेंण नीर पावस जिम वरसें, हिरदे कमल तन भीजे।
वहु दुख कर कर पाल्यो पुतर में, हिवे विछोवो किम कीजे॥ १४॥

दुहा

इत्यादिक अनेक वचन कह्या, घर मे राखण नें मांय।
जब पुतर कहें हो मात जी, थे कह्यों तिमहीज ताय॥ १॥
कांम भोग भोगवूं अस्त्रीया थकी, इतला वांना अस्त्रीयां में ताहि।
असुच अपवित्र नों कोथलो, वाय पित घणो त्यां मांही॥ २॥
सलेष वीर्य नो ठामडो, वले राध लोही नो ठांम।
सास उसास भूडा नीकले, त्यांसूं मूल नही म्हारे कांम॥ ३॥
वले मल मूतर नों ठांम छे, नाक नों मल छे त्यां मांय।
वले वमण नीकले छे मुख थकी, त्यांमे सार वस्त नही काय॥ ४॥
त्यांरो सरीर प्रतिपूर्ण भर्स्यो, माठी वस्त सूं तांम।
वले माठी माठी वस्त तेहनो, उतपत नो छें ठांम॥ ५॥

ते पिण अध्रुव अनित असासतो, सडण पडण विघसण तांम।
ते पिण अवस कर छांडवो, तिहां पिण थेट नही विसराम ॥ ६ ॥
कुण जाणे पेहलां पछे जायवो, ते मोने खबर न काय।
तिण कारण आगना दो मो भणी, हूं दिख्या लेउ सुखदाय ॥ ७ ॥

ढाल : ६

[चतुर नर चोपड इण विध खेल]

हिवें पुतर भणी माता कहे पुतर मोरा, सुण तू चित्त लगाय हो।
दादा परदादा रो धन संचीयो पुतर मोरा, ते धन घणो २ घर माय रे।
रे मुज पुतर नांहनडीया पुतर मोरा, कह्यो माता रो मान रे॥ १ ॥
सोना रूपा रा ढिग घर मे घणा, कासीयादिक वहु धात रे।
मणि माणक मोती रा गंज छे, ते पिण गिणीयो न जात रे॥ २ ॥
संख ककर भखर परवालीयां, ते पिण घर में अथाग रे।
रतनांदिक अलेखे धन पामीयो, मस्तक मोटो भाग रे॥ ३ ॥
अति ही दांन दे सात पीढ्या लगे, अति ही भोगवे धन ताय रे।
अ ति ही वेहची २ आपता, तिण धन रो छेह न आय रे॥ ४ ॥
एहवो धन वस्तीरण ताहरे, रिध भवणादिक अथाय रे।
आ रिध संपत सुख भोगवो, सुखे बेठा रहो घर माय रे॥ ५ ॥
एहवी किलाणकारी रिध भोगवे, विरध अवस्था होय रे।
पछे नेम जिणंद रे आगले, चारित लीजे सोय रे॥ ६ ॥
जब पुतर कहे माता भणी। मोरी माता, थे कह्यो ते तिम हीज जाण रे।
सोंनादिक बतायो धन मो भणी। मो०, ते थिर न रहे एक ठिकाण हो।
मोरी मातजी। माता मोरी नही राचूं ससार हे ॥ ७ ॥
ते धन वल जाअें अग्नि मे। मो०, ते धन चोर ले जाये" ताय हो।
तेहीज धन राजा दडी लीये। मो०, धन पाणी मे वहि जाय हो॥ ८ ॥
वले धन नें न्यातीला वेहिच ले। मो०, कर २ झगडा राड हो।
सडण पडण विघसण सभाव छे। मो०, ते जातां लागे वार हो॥ ९ ॥
आ रिध संपत पेहिलां के पछे। मो०, ते अवस छोडी जासी मोय हो।
परभव जातां जीवने। मो०, राखण हारो न कोय हो॥ १० ॥
वले कुण जांणे छे मोरी मात जी। मो०, पेंहलां पछे मरण होसी मोय हो।
ते खबर नही छे मो भणी। मो०, हिरदे विमासी जोय हो॥ ११ ॥
तिण कारण हो म्हारी मात जी। मो०, खारो लागें छै ससार हो।
हू रति नही पांमूं घर मे रह्या। मो० जनम मरण लागा लार हो॥ १२ ॥

हिवे किरपा करे दों आगना। मा०, तो दिख्या दे नेम जिणंद हो।
हूं सीह थइनें संचरूं। मा०, जद हूं पांमूं आणंद हो ॥ १३ ॥

●

दुहा

माता ललचायो अति घणों, काम भोग विषे रस मांय।
वले विवध परकारें विषे कही, पिण नाइ पुतर ने दाय ॥ १ ॥
सर्प डंक नीव पांनडा, खावों कडवा न थाय।
ज्यूं मोह करम वस प्रांणीयां, मगन विषें रस मांय ॥ २ ॥
जहर उतरीयों जेहनो, कडवा लागें पांन।
विषें सूं विरकत हूवा, एक मूगत मूं तांन ॥ ३ ॥
माता उपाय कीयां घणा, पिण कारी न लागी कांय।
माता थाकी अति घणी, पिण राखे न सकी घर मांय ॥ ४ ॥
हिवे चारित सूं भिडकायवा, करें चारित्रा रा गुण ग्रांम।
घणो करडों बतावे पुतर ने, घर में राखण परिणाम ॥ ५ ॥

ढाल : १०

[मम्मार मे सगपण स्वारथ ना]

निग्रंथ प्रवचन सूतर सिवंत नां, माता करें गुण ग्रामो रे।
तू चित लगाय ने सुणजे रे जाया, मन ने राखे एक ठांमो रे।
साच मारग सिव गांमी रे जाया* ॥ १ ॥
ओ निग्रंथ प्रवचन परवान साचो, ते केवलीयां भाख्यों छे रूडो रे।
ते न्याय मारग छे मोख जावारों, नूचो मारग छे पूरो रे ॥ २ ॥
अभितर सल्य कापवानो मारग छें, सिद्ध गति नो मारग चोखो रे।
वले मोष रो मारग ओहीज प्रवचन, वले निर्वाण मारग निरदोखो रे ॥ ३ ॥
वले निरजरा रो मारग ओहीज प्रवचन, तिणसूं मूख अनोपम पाया रे।
ओ समस्त दुख खय करवानो मारग छें, ते तोसूं निभें नहीं जाया रे।
साच मारग सोहरों नही जाया ॥ ४ ॥
थारो सुकुमाल सरीर छै मांखण सरीखो, ते तोसूं पले नहीं पूतो रे।
एकठण काया तिन पालणी नावें, ओं कठण मारग अदभूतो रे ॥ ५ ॥
सर्प नी परें चालवो एकण दिष्टे, ज्यूं दिष्ट राखणी मोष स्हांमी रे।
पाछणा नी परे एक धारा वहिवों, ज्यूं करम काटण रो कांमी रे ॥ ६ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

लोह चिणा चावणा मेण नें दांतां, तेहवो साधपणो रे।
वेलू कवल नी परे रस रहीत छे, एहवो चारित पिछाणो रे॥ ७॥
गंगा नदी सनमुख जावों दोहरो, भूजा कर समुदर तिरणो दोहरो रे।
भाला री तीखी अणी उपर चालवो, तिम साधपणों नहिं छे सोहरो रे॥ ८॥
अलूंणी सिला चाटतां स्वाद नही छे, तिम साधपणों नही स्वादो रे।
खडग धारा उपर चालवों जिम दोहरों, तिणमें कदे न करणो विषवादो रे॥ ९॥
वले न कल्पे साधु ने जाया, आधाकरमी उदेसो अहारो रे।
मोल लीधी ने थापीती वस्तु, ते कल्पें नही साधु ने लिगारो रे॥ १०॥
राजपिंड भारी अहार न करणो, भिख्यारयां निमते दुरभिष माही रे।
वरसात मे कीधो वणीमग निमते, ते साधु ने कल्पे नांही रे॥ ११॥
देवा निमते कीधो अटवी माहे, वले कीधो गिलाण रे काजो रे।
इत्यादिक कीधो छें विवध परकारे, ते लेवे नही मुनीराजो रे॥ १२॥
कंद मूल फल साध न भोगवे, नही भोगवे बीज हरी कायो रे।
वले काचो पांणी पीवो नहीं कल्पे, जो गाढों कारण पडे आयो रे॥ १३॥
समें परिणामे सुख दुख सहिणों साधु ने, तोसूं दुख खमीयो नही जायो रे।
सीत उस्न तोसूं खमणी नांवे, भूख त्रिखा खमणी नावे ताह्यों रे॥ १४॥
वाय पित्त सनीवाय ऊपजे, विवध रोग आतंक ऊपजें आयो रे।
एहवा रोग तोसूं खमणी नावे, तूं सोच देखेनी मन मांह्यो रे॥ १५॥
उंचा नीचा वचन करडा ने काठा, ते तोसूं केम खमायो रे।
सदा समभावे रहिणो साधु ने, एहवी सकत न दीसें तो माह्यो रे॥ १६॥
बावीस परीसह खमणो रे जाया, वले पांच महाव्रत धरणा रे।
जो हुवे लाख परकार अनेक, तोही राती भोजन नही करणा रे॥ १७॥
उपसर्ग अनेक आय ऊपना, मेरू जिम अडग रहिणो, सेठों रे।
साधपणो इसडो करडो छे तिण सूं, वरजे राखूं छू घर मांहे बेठों रे॥ १८॥
साधपणा सूं मुगत गया छे अनंता, ओ निश्चे मारग आछो रे।
पिण तोसूं साधपणो पालणी नावे, हिवडा तो सरीर थारो काचो रे॥ १९॥
जो तोसूं साधपणो पलतो जांणू तों, हू क्याने देवूं अंतरायो रे।
कांम भोग भोगव तू मिनख सबंधीया, बेठो थको घर मांह्यो रे॥ २०॥
भुगतभोगी थइने पछे जाया, आपणों वंस वधारी रे।
पछे नेम जिणंद रे पासे, संजम लीजे हितकारी रे॥ २१॥

दुहा

ए वचन सुणे माता तणा, पुतर बोल्यो साहसीक।
थे सावपणो दोहरों कह्यो, ते सर्व कही छे ठीक॥ १ ॥
कलीव रांक गरीव ने, वले कायर पुरप कंगाल।
त्यां पुरषां ने दोहिली, सत पुरषां री चाल॥ २ ॥
वले इह लोक तणा अर्थी घणा, परभव नीं चित न कांय।
त्यांनें दोहरो हो मात जी, थे सोच देखो मन मांय॥ ३ ॥
सूर वीर पुरषां भणी, वले धीरा धीरजवांन।
त्यांने किंचित मात दोहरो नही. त्यांने सेहल घणो आसांन॥ ४ ॥
हूं जायों छूं तुम तणो, म्हांरी सक म राखो काय।
हूं सींह तणी परें पालने, देसूं आवागमण मिटाय॥ ५ ॥
हिवें किरपा करे दो आगना, मूल न करणी जेज।
हूं परदेसी होय रह्यो, हिवे म करो मोसूं हेज॥ ६ ॥
ए वचन सुणे वेटा तणों, उपनो विरह वशेख।
आसू पात करें घणा, रोवती पुतर ताह्यो देख॥ ७ ॥

ढाल : ११

[जीहो धनां नें सालिभद्र दोय]

जीहो इम किम दीजे रे छेह, उभी मेले मोनें रोवती रे।
म्हांरे तोसूं छे अतंत सनेह, ते विरहो न खमाजे छे मोवती रे।
जीहो माता कहे सुण पूत, उभी म मेलें जाया रोवती रे॥ १ ॥
तूं एका एक पुतर रतन, ओर लारे पुतर म्हारे को नहीं रे।
म्हें मोटो कीयों घणा रे जतन, ते विय म्हे तोने नां कही रे॥ २ ॥
जो तूं सुणें सीयाला री रात, जो माड कहू सारी तो भणी रे।
तो तूं इसडी न काढे वात, जीवू ज्यां लग माता ने छोडण तणी रे॥ ३ ॥
म्हांरे हुंती थी मोटी आस, मोटा मंडाण हुता मन म्हारे रे।
तूं मोनें जावक करे छें निरास, इसडी कांइ आड दिल ताहरे रे॥ ४ ॥
मोनें छोडे छें निराधार, एकलडी ने उभी मेलनें रे।
हिवें कुण म्हांरे आधार, तू यूंही जाजें छे मोने ठेलने रे॥ ५ ॥
तूं मत होय कठण कठोर, तूं वाल्यो वले नही म्हांरो रे।
थांसं काइ न लागे म्हारो जोर, थे पांच लीयो मन ताहरो रे॥ ६ ॥

म्हे इसडो न जाण्यो छो तोय, छेह दे जासी माता भणी रे।
हिवे मायडी साह्मो जोय, हू तोविण दुखणी छूं अति घणी रे॥ ७॥
थावचा पुतर करे रे विचार, किणरी माता ने किणरा दीकरा रे।
ओ सगपण अनती वार, मिल मिल ने वीछड्या परा रे॥ ८॥
हूं बेटो ने आ हुई माय, पार न पावूं एहनों रे।
आ बेटो हुई ने हू माय, तो पिण छेहडो नही तेहनो रे॥ ९॥
समुदरां सूं बोहला होय, आसूं ते माता तणा रे।
त्यारो पार न आवे कोय, सगपण इणसूं म्हे कीया घणा रे॥ १०॥
ए सगपण कर कर जीव, हू रडबडीयो संसार मे रे।
करम बांध्या मोह सू अतीव, पडीयो ससार अटवी उजाड मे रे॥ ११॥
आ करे छे मोह विलाप, इणरे उतपत हुवे छे पाप करम री रे।
तिणसू होसी बोहत संताप, इणने ठीक नही जिण धर्म री रे॥ १२॥
म्हे तो जाण लीयो जिण धर्म, म्हांने मीठी न लागे इणरी मोहणी रे।
आ तो यूही बाधे छे करम, घर माहे राखण ने मो भणी रे।
जीहो थावचा पुतर तिणवार, इण विध समझावे माता भणी रे॥ १३।
हिवे कहें थावरचा पूत, मोह न कीजे माता माहरो रे।
म्हे जाण्या छे सुख अद्भूत, हू किण विध मानू कह्यों ताहरो रे॥ १४॥
तू रोवे पुतर ने काज, ते नही नेठाउ पुतर ताहरो रे।
तिणसूं आगना दे मोनें आज, ज्यू सुख पामे जीव माहरो रे॥ १५॥
हू पुतर हुवो ने तूं माय, ते कहितां पार आवे नही रे।
हू काल कर छोडे गयो ताय, तूं आसा अलूधी झिलती रही रे॥ १६॥
जे सगपण संसार रे माय, ते सगला सगपण तोसू म्हे कीया रे।
ते पूरा केम कहवाय, पिण श्री जिण वचने जाणे लीया रे॥ १७॥
ए मेलो मिलीयो छे आय, ते बीछडता विरीयां नही रे।
तो कुण रीझे तिण माय, म्हे जिण धर्म जाण लीयो सही रे॥ १८॥
तिणसूं आगना दो मोरी माय, ते चारित ले काटूं करम ने रे।
आवा गमण देउं मिटाय, चोखो आराधू जिण धर्म रे॥ १९॥
जीहो थावचा पुतर कुमार, तिणरे सायपणो चित मे वस्यो रे।
तिणरो थिर मन छ एक धार, ते विपे सुखा मे नही फस्यो रे॥ २०॥

दुहा

ए वचन सुणे बेटा तणा, माता हुइ निरास।
घर विखरतों जाण ने, न्हाखे ऊंडा निसास ॥ १ ॥
वहूआ करे विचारणा, छोड चले छे कंत।
माहोमा मिलने कहे, हिवे करवो कुण विरतत ॥ २ ॥
सासूजी थाका कही, हिवे आपण नी वार।
कहिवों छे आपणे वसे, करवो छे पीउ सार ॥ ३ ॥
जातां ने मरता छतां, राख न सके कोय।
पिण जो भास न काढीये, तो मन डीभो होय ॥ ४ ॥
नेह विलूधी कामणी, ते बोली अनेक विधवाय।
तिण अनुसारे हू कहू, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल : १२

[श्री जिण धर्म जिण आगन्या में]

हिवे वोले बतीसोई भांमणी, मुझ पीतम प्राण आधार। बालम मोरा हो
तूझ विण मो अबला नारनो, किम नीकले ला जमवार। बालम मोरा हो
वाल्हा वीछडता विल विल करे॰ ॥ १ ॥
सूर्य आथमीयां सू कमल ना, फूल रा मुख मिल जाय। बा॰
ज्यू बदन तुम्हारो दीठां विणा, म्हारो वदन जाजे कुमलाय ॥ बा॰ २ ॥
म्हारे आसा हुती मन मे अति घणी, वले इधको हुंतो म्हारे कोड।
वले मन रा मनोरथ म्हांरे घणा, त्याने इम किम दीजे छोड ॥ ३ ॥
थे ससार तणा सुख भोगवो, म्हा अबला नाख्या नी पूरो आस।
म्हे सगली उभी विल विल करा, म्हारे हीये न मावे छे सास ॥ ४ ॥
म्हारे गेहणा आभूषण पेहरणे, था विण सर्व अलूणा होय।
वले खावो पीवो म्हारे था विणा, अग न लागे कोय ॥ ५ ॥
कत विहुणी कांमणी, घरमे रहे छे अतत उदास।
था विण म्हारे ससार मे, म्हाने छे किणरो वेसास ॥ ६ ॥
म्हाने तुरणी बय माहे बालापणे, इम किम दीजे छिटकाय।
पेहला मोस् पीत बाधी घणी, तो हिवडा तो तोड म जाय ॥ ७ ॥
पेहला उंची थे मेरू चढाय ने, पछे पटको नीची जांण।
म्हे संगली दुखणी होस्या था विणा, त्यारी दया हीया माहे आंण ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

इण विध म्हे थांने कदेय न जांणीया, इण विरीयां काढें ला इसडा साग।
विल विल करती म्हांने देखनें, हिवडां म जाओ घर भांग॥ ९॥
म्हे अरज करां छां साहिब आप री, म्हे तो अवलां छां अनाथ।
त्यांनें छोडण री मुख थकी, इसडी कदेय म काढो वात॥ १०॥
म्हें तो पाछे आइ छां आप रे, थे म्हांरा सिर धणी नाथ।
थे इज म्हांने छोडने नीकलो, तो म्हांरा किम नीकलेला दिन रात॥ ११॥
साल तणी परे सालसी, जीवें ज्या लगे जांण।
अवला छे नारी जात तेहसूं, इसडी म्हांसूं करडी म ताण॥ १२॥
थे चतुर विचक्षण छो अति घणा, तो मत जावो म्हांने धसकाय।
म्हां दुखणी स्हांमों आज जोयने, सुखे बैठा रहो घर माय॥ १३॥
वले माता कहे निज पुतर ने, अे सर्व सुकुलीणी नार। पुतर मोरा रे।
ते थांरा वोलण री छे सावली, तूं पाछोड न वोले लिगार॥ १४॥
वय तरुणी वत्तीसोई अस्त्री, ते अपछर उणीयार। पुतर मोरा रे।
तूं कह्यो थांरोइज मान ने, सुख भोगव संसार॥ १५॥

दुहा

अस्त्री वचन कह्यां घणा, वले ऊपर सू मात।
मोहकारी विषे रा वचन री, मूल न मानी वात॥ १॥
कुमर कहे सुण कांमणी, थारे म्हांसूं अतंत सनेह।
तो थे पिण मों साथे लगी, घर छोडो तो जांणु थांरो नेह॥ २॥
अे काचा सुख संसार नां, तिणमें राच रही छों ऐह।
जो थे दिख्या लो मो साथे लगी, तो जाणु साचेलो सनेह॥ ३॥
उतरे कहे पाछो वोली नहीं, मुन साझी रही सर्व नार।
जब थावचा पुतर इम जांणीयो, स्वारथ विण कुण आवे लार॥ ४॥
अस्त्री ने माता भणी, उतर पडउतर दिया ताय।
हूं सुखी तो संजम लीयां हुसूं, तिण सूं आग्या देवो मोरी माय॥ ५॥
जब माता मन में जांणीयो, इणरे किण सू न दीसें हेज।
ओ राख्यो रहे नहीं केहनो, तो हूं क्यांने करू हिवे जेज॥ ६॥
माता कहे सुण वछ म्हांरा, हिवे तूं दुख मूल म पाय।
म्हे आग्या दीवी छे तो भणी, ज्यूं तोने सुख थाय॥ ७॥

ढाल : १३

[जबू द्वीप मझार]

हिवें माता करे विचार रे, कोडंबी पुरष ने।
बोलायो बेग सताब सूं ए॥ १॥

तिणने कहें छे आंम रे, लिछमी ना घर थकी।
तीन लाख रूपइया काढ ने ए॥ २॥

दोय लाख रूपइया आप रे, कुतीयावण हाट थी।
ल्यावो रजोहरण पातरो ए॥ ३॥

एक लाख नाइ नें आप रे, तेडी ल्यावो इहां।
ते केस वडा करे पूतनां ए॥ ४॥

सेवग सुण हरषत थाय रे, लिछमी नां घर थकी।
तीन लाख रूपइया काढीया ए॥ ५॥

दोय लाख रूपइया आप रे, कुतीयावण हाट थी।
ल्यायो रजोहरण पातरो ए॥ ६॥

एक लाख रूपइया तेहरे, नाइनें आपीया।
जब नाइ हरष पांम्यों घणों ए॥ ७॥

ते न्हाय धोय सुध थाय रे, आभूषण पहरीया।
मोल मूंहघा नें हलका घणा ए॥ ८॥

नाइ आयो थावचा गेह रे, थावचा बेठी जिहां।
बोलें बेकर जोडनें ए॥ ९॥

जे फुरमावों मुझ कांम रे, आप किरपा करे।
जब कहे थावचा तेहनें ए॥ १०॥

तूं हाथ पांव पखाल रे, सुगंध पांणी करी।
दुरगंध टाले सर्व ताहरी ए॥ ११॥

वसतर धवलो सपेत रे, तिणसूं मुख बांधनें।
च्यार कीजे पुड तेहनां ए॥ १२॥

च्यार आंगुल वर्जी केस रे, थावचा पुतर नां।
केस कापे तूं जुगत सूं ए॥ १३॥

इम सुणने नाइ तिणवार रे, घणोइज हरषीयो।
हाथ पांव पषाल्या तिण विध ए॥ १४॥

निरमल वसतर सेत रे, च्यार पुडां करी।
तिण कर ने मुख बांधीयो ए॥ १५॥

च्यार आंगुल वर्जी केस रे, ते दिल्या जोग छें।
केस काप्या सर्व आगला ए ॥ १६ ॥
जब थावचा पुतर नी माय रे, रूडी रीत सूं।
केस लिया पुतर तणा ए ॥ १७ ॥
हंस लखणो वसतर सेत रे, बहु मोलो घणो।
एकपनों रलीयांमणो ए ॥ १८ ॥
लीया तिण कपडां मांहि रे, केस मस्तक तणा।
करती मोह विटंबणा ए ॥ १६ ॥
सुरभी गंधोदक आंण रे, पखाल्या केस नें।
नवा चंदण कर अरच्या घणा ए ॥ २० ॥
बहु मोलो वसतर सेत रे, तिणमें बांधीया।
रतन डाबडे घालीया ए ॥ २१ ॥
लेइ रतन डाबडो हाथ रे, मेल्यो मजुस में।
मोटें सब्दें रोवती ए ॥ २२ ॥
जांणें तूटों मोत्यां रो हार रे, तिण मांसूं मोती पडें।
इण विध आंसूंडा पडे ॥ २३ ॥
रोवती करें आक्रंद रे, विलापात करें घणा।
ते वचन कहे मोह कारीया ए ॥ २४ ॥
महोछव नां दिन अनेक रे, तिण दिन पुतर तणा।
हूं केसां तणो दरसण करूं ए ॥ २५ ॥
इसडी मन मांहें धार रे, इसडो मोह मात रों।
ते केस उसीसे मेंहलीया ए ॥ २६ ॥

●

दुहा

हिवें माता उत्तर दिस नें विषे, रच्यों सिंघासण एक।
तिण उपर पुतर नें वेसांण नें, सेत पीतादिक कलस अनेक ॥ १ ॥

ढाल : १४

[सल्य कोइ मत राखजो ए]

ते कलसा गंधोदक सूं भरया, तिणसूं सिनांन करायो रे।
सुगंध कपडा सूं गात्र लूहने, चंदण लेप लगायो रे।
हिवे माता करें महोछव पूत नां* ॥ १ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

मोल मूंहघा ने तोल हलका घणा, नाक निसास थी उडें छे ताह्यो रे।
हंस लषणादिक सहीत छे, एहवा वसतर पहराया मायो रे॥ २ ॥
हार अर्ध हार पेहरावीया, एकावली मुक्तावली वशेखो रे।
कनकावली ने रतनावली, हार री जात अनेको रे॥ ३ ॥
लांबा पगां लगे ढलकता, एहवा आभरण पहराया जाणी रे।
वले कडा ने बाहिना बहिरखा, वले केउरो वशेष वखाणी रे॥ ४ ॥
सर्व आगुलीया पहराइ मुद्रिका, कडियां कदोरो कुडल कानो रे।
रतन जडत मुगट छे मस्तके, वले मस्तक मोड सोभे असमांनो रे॥ ५ ॥
माला पहराई फूलां तणी, सुगध द्रव्य लेप लगायो रे।
सरीर सुगंध कीयों अति घणो, घणो महिक रह्यो छें ताह्यो रे॥ ६ ॥
माला पहराइ गूंथ्या फूलां तणी, वले फूल रा दडां अनेकों रे।
वले फूल रच्या चिहूं विध करी, तिणसूं सोभ रह्यो छें वशेखो रे॥ ७ ॥
सगलोइ सरीर सिणगारीयो, ते दीसे छे घणो अनूपो रे।
कल्प विरख तणी परे सोभतो, ते रूप मे अतंत सरूपो रे॥ ८ ॥
वले माता मन माहे चिंतवे, हू किस्नजी समीपे जायो रे।
त्यारो विनो करे रूडी रीत सू, मागे लाउ सफाइ ताह्यो रे॥ ९ ॥
किस्नजी विणा ओर मिनप रे, एहवा सज नही ओर ठामो रे।
आंण करूं महोछव पूत ना, हिवे जेज तणो नही कामो रे॥ १० ॥
एहवी करे विचारणा, उठी आसण थी ताह्यो रे।
किस्नजी जोग मोटो भेटणो, लेवा आइ घर माह्यो रे॥ ११ ॥

दुहा

मोल मूंहघो मोल भेटणो, मोटो राजा जोग जाण।
ते लीयों पोता रा हाथ मे, मन माहे उघम आंण॥ १ ॥
मित्र न्यातीला बोलाय नें, वडा वडा सजन परिवार।
त्यां सघाते परवरी थकी, नीकली घर सूं बार॥ २ ॥
भवण किस्न वासुदेव नो, आइ तिण पोल दुवार।
आदेश मागी पोलीया कने, आइ सभा मझार॥ ३ ॥
जिहां बेठां छे श्री किस्न जी, त्यां पासे उभी छे आय।
किस्नजी ने बधाया हाथ जोड ने, नीचो सीस नमाय॥ ४ ॥
एक भारी मोटा जोग भेटणो, ते मेल्यो किस्नजी रे पास।
विनो करे श्री किस्न सूं, उभी करे अरदास॥ ५ ॥

ढाल : १५

[सांमी म्हांरा राजा ने]

हाथ जोडी वीणती करे, नीचो सीस नमाय हो। साहिब धर्म सुणाज्यो।
एका एक म्हारे नांहनडो, पुतर थावचा ताय हो। साहिब धर्म सुणाज्यो।
अरज करूं छूं वीणती*॥ १ ॥

म्हें बालपणे परणावीयो, एकण दिवस बतीस हो। सा०
ते इभ कुल तणी उपनीं, रूप में सगली सरीस हो॥ सा० २ ॥

ते सुख भोगवतो संसार मे, घर चिंता नही काय हो।
ते इष्ट कंत घणो मो भणी, तिणरो विरहो न खमाय हो॥ ३ ॥

तिण नेम जिणंद री वांणी सुणें, खारो लागों संसार हो।
बीहनों जांमण मरण थी, ते न रहे घर मझार हो॥ ४ ॥

ते संसार भय थी ऊभगयों, राख्यों न रहे घर माहि हो।
ते नेम जिणेसर आगले, दिख्या लेवें छे ताहि हो॥ ५ ॥

तिण कारण हूं आइ छूं इहां, दिख्या महोछव काज हो।
छतर चामर मागूं आपरो, वले मांगूं गयंद गजराज हो॥ ६ ॥

वले मुगट मांगूं छूं मस्तक तणो, वाजत्र विवध परकार हो।
वले चतुरंगणी सेन्या सज करी, रूडी रीत सिणगार हो॥ ७ ॥

सहंस पुरष वहें सेवका, सिणगारें भली भांत हो।
जो छोरू कर लेखवो, तो पूरो म्हांरा मन री खंत हो॥ ८ ॥

वलता कहे श्री किस्नजी, तूं नचिंत थकी घरे जाय हे। बाई।
महोछव थारा पुतर तणा, हूं सयमेव करसूं आय हे। बाई।
तू सोच फिकर राखे मती॥ ९ ॥

●

दुहा

इम कहे दीधी सीख तेहनें, साचे मन कर हेज।
चतुरंगणी सेना सझ करी, त्यां मूल न कीधी जेज॥ १ ॥

सज कीधो विजें हस्ती रतन ने, उपर चढ्या किस्न वासुदेव।
थावचा गाथापतणी ने घरे, किस्न जी आया सयमेव॥ २ ॥

बोलायो थावचा पुतर ने, कहे किस्न जी आंम।
तूं सुख भोगव संसार नां, निरभय थको इण ठांम॥ ३ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

मन इछा हुवें जिम ताहरी, थांरे मन माने ज्यूं चाल।
म्हे खून गुना सर्व बगसीया, थने कोय न सके पाल ॥ ४ ॥
जो दुख हुवे कांइ तो भणी, तो हू कर देसूं दूर।
निरभय थको रहि घर मझे, तिण मे मूल म जाणो कूड ॥ ५ ॥

ढाल १६

[सोरठ देस मझार द्वा०]

इम सुणे श्री किस्न री वात, हिवे बोल्यो जोडी हाथ। आज हो।
विनय करे ने कहे श्री किस्न ने जी ॥ १ ॥
आप तीन खड रा नाथ, सूरवीर साख्यात। आज हो।
पिण अरज सुणो एक साहिब म्हारी जी ॥ २ ॥
थारी इण नगरी माय, तीन धाड पडे छे आय। आ०
किण विध रहू घर मे निरभय थको जी ॥ ३ ॥
जब बोल्या किस्न मुरार, म्हारी नगरी माहे धाड। आ०
नाम बताय ज्यू तेह मने करा जी ॥ ४ ॥
म्हारा जीतब नो अत होय, मरण आवे जद मोय।
मरण मेटो तो हू घर मे रहू जी ॥ ५ ॥
वले सरीर रूप विणसाय, मोने जरा व्यापे जब आय।
तिण जरा ने मेटो तो हू घर मे रहू जी ॥ ६ ॥
वले रोग व्यापे जब आय, ते दुख सह्यो न जाय।
रोग मेटो तो हू घर मे रहू जी ॥ ७ ॥
जरा मरण ने रोग, यारो करों विजोग।
अे तीनूइ मेटो तो हूं घर मे रहू जी ॥ ८ ॥
जब बोल्या किस्न जी तोल, अे तीनूइ बोल।
याने मेटू ते सक्त म्हारी नही जी ॥ ९ ॥
देव दाणव रा व्रद, वले सुरा ना इद्र।
तीना ने निवारण समर्थ को नही जी ॥ १० ॥
जरा मरण ने रोग, अे करम तणे संजोग।
अे तीनूइ न मिटे किणरा मेटीया जी ॥ ११ ॥
एतो आपणा कीधा छे करम, ते मिटे कीयां जिण धर्म।
ओर उपाय नही छे एहनो जी ॥ १२ ॥
जो आप कहो छो एम, हू घर मे रहूं केम।
करम काट्यां विण जक नही जीवने जी ॥ १३ ॥

अग्यांन मिथ्यात सूं ताय, वले अविरत ने कषाय।
करम बाध्या यां करने जीवडे जी ॥ १४ ॥
ते करम काटण रे काज, मोने आग्या द्यो महाराय।
किरपा करेनें साहिब म्हांरी जी ॥ १५ ॥
इम सुणने किस्न महाराय, अडिग जांणी लीयो ताय। आ०
किस्न जी कहे छे सेवग बोलायने जी ॥ १६ ॥
इण दूवारका नगरी मांहि, वले राज पथ छे ताहि। आ०
सगलेइ मारग ठिकाने जी ॥ १७ ॥
मोटे २ सब्दे तांम, उदघोषणा ठांम ठाम।
कीजे रे हाथी उपर बेठो थको जी ॥ १८ ॥
कहिजे पुतर थावचा नाम, संसार थकी भय पाम। आ०
नेम जिणंद रे पास दिख्या लीये जी ॥ १९ ॥
कोइ दिख्या लेवें तिण साथ, छोडे रिध सपत आथ। आ०
तिणनें आग्या छे किस्न नरिंद नी जी ॥ २० ॥
ज्यारा न्यातीला रे धन री चाहि, त्यांने धन दे किस्न माहाराय।
किस्न जी करसी वले प्रतिपालणा जी ॥ २१ ॥
इम घोष पाडे ठांम ठांम, वले लीजे म्हांरो नाम। आ०
वेग सूं जाय करे उदघोषणा जी ॥ २२ ॥
चाकर सुण हरषत थाय, आयो नगरी माहि।
ठाम २ कीधी उदघोषणा जी ॥ २३ ॥
ए सब्द सुणे ने ताहि, जब सहंस पुरष रे माहि। आ०
वेराग उपनो घर छोडण तणो जी ॥ २४ ॥
त्या कीधों मरदन सिनान, अलकार पहरया असमांन। आ०
सरीर त्या सगलोइ सिणगारीयों जी॥ २५ ॥
जे पुरष उपाडे सहेस, तिण सेवका उपर वेस। आ०
न्यातीला संघाते परवरया थका जी ॥ २६ ॥
बाजा वाजंता तिणवार, जूआ जूआ पुरष हजार।
थावचा पुतर रे पासे आवीया जी ॥ २७ ॥

दुहा

सहस पुरष आया जाण किस्न जी, सेवग ने कहे मीठी वाण।
या सगलां री दिख्या तणा, महोछव करो मोटे मडाण ॥ १ ॥

चाकर पुरष तिहां आय नें, सगला नें सिनांन कराय।
गेंहणा नें कपडा करी, सिणगार करायो ताय ॥ २ ॥

ढाल : १७

[धर्म आराधिए०]

वले सेवग बोलाय कहे किस्न जी ए, सेवका मक्त करों तयार।
थें जेज करो मति ए, तिणनें रूडी रीत सिणगार।
सक्त करों सेवका ए* ॥ १ ॥
सइकडां थंभ लगायजो ए, तिणरे पुतलियां करजों अनेक।
वृषभ नें घोडा तणा ए, चित्रजो रूप वशेख ॥ २ ॥
घोडा ने मिनख मगरमछ नां ए, वले पक्षी देवतां रा रूप।
मिरग नें अष्टापद तणा ए, त्यांरा चित्रजो रूप अनूप ॥ ३ ॥
चमरी गाय नें हस्ती तणा ए, त्यांरा पिण कीजे रूप अनेक।
वेलडियां वनलता कीजो भीत नें ए, पदमलता पिण करजे वशेख ॥ ४ ॥
घंटावली समूह टोकरां तणा ए, त्यांरा मीठा सुर अति जांण।
मनोहर कंत कारिया ए, देखवा जोग रूडा वखांण ॥ ५ ॥
निपुण डाहां कारीगरां करी ए, ते अतंत देदीप्य मांण।
गुघरी मणि रतन नीं ए, त्यांरी जाली चोफेर वखांण।
कीजों रूडी सेवका ए ॥ ६ ॥
उंची वेदका कीजों सेवका तणी ए, ते मणि रतन में जांण।
चोफेर सेवका तणा ए, लोक दीठां करें वखांण ॥ ७ ॥
वले विद्याधर नां जोडला ए, त्यां कीजे घणा रे सोभंत।
सूर्य किरण सहंस नो ए, रूप नीं क्रांत सहंस सोहंत ॥ ८ ॥
देदीप्य कांत तेहनी ए, ते सीतलीभूत सुहाय।
जोंवा जोग आंख नें ए, तिण दीठांइ नेण ठराय ॥ ९ ॥
सश्रीक रूप सुहांमणो ए, तिणरी सिघर उतावली चाल।
चपल ते अति घणी ए, ते वेइ रूप रसाल ॥ १० ॥
सहंस पुरष उपाडें ते सेवका ए, जांणे देव विमांण।
करो भली भांत सूं ए, दीठां करे लोक वखांण ॥ ११ ॥
एहवी सेवका सज करो ए, म्हांरी आग्या पाछी सूंपो आंण।
सेवग सुण हरखिया ए, वचन कर लीवो परमांण ॥ १२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जिण विध कह्या श्री किस्न जी ए, तिण विध सेवका कीधी जाण।
सोभायमांन अति घणी ए, आग्या सूंपी किस्न जी ने आंण।
करे रूडी सेवका ए॥ १३॥

●

दुहा

थावचा पुतर ने तिण अवसरे, सिनांन करायो तिणवार।
च्यार परकार नां अलंकार, रूडी रीत सिणगार॥ १॥
केस अलंकार अति सोभतां, रूडी रीत वसतर अलंकार।
अलंकास्थो फूलांरी माला करी, अलंक्यो आभरण सिणगार॥ २॥
ते रूप में अति रलीयांमणो, तिण दीठां पामें आणंद।
जांणे बादल मांसूं नीकल्यो, रज रहित पुनम रो चंद॥ ३॥
आय चढ्यों सेवका उपरे, बेठों सिघासण आय।
पूर्व साह्मो मुख करी, सुखे बेठो छे ताय॥ ४॥

ढाल १८

[वीर वखाणी राणी चेलना]

थावचा पुतर नी मा तिण अवसरे जी, सिनांन करे तिणवार।
मोल मूंहघा ने हलका घणा जी, वसतर ने गेहणा पहरीया सार।
दिख्या रा महोछव करे हरख सूं जी, तथा दिख्या रा महोछव करे किस्न जी॥ १॥
सेवका चढ बैठी भद्रासणे जी, पुतर ने जीमणे पास।
जोय रही निज पुतर नें जी, न्हाखे छे उडा निसास॥ २॥
धाय माता थावचा पुतर नी जी, रजोहरण पातरो लेई ताय।
डावे पासें थावचा पुतर ने जी, बैठी भद्रासण आय॥ ३॥
एक अनेरी वलें अस्त्री जी, तरुणी वय रूप निघांन।
सिणगार कीयों अति रालीयांमणों जी, चतुर घणी बुधवांन॥ ४॥
तिणरा हाथ में छत्र श्री किस्न रो जी, ते फूलां री माला सहीत।
ते पूठ पाछे उभी थकी जी, आताप टालें रूडी रीत॥ ५॥
दोय अस्त्री वले एहवी जी, ते पिण करती लील विलास।
किस्नजी रा चमर त्यांरा हाथमें जी, ते चमर वीजे दोनू पास॥ ६॥
एक अस्त्री वले एहवी जी, उभी पूर्व दिस रे मांय।
वीजणो लीयो तिण हाथ मे जी, मन गमतो ढोले छे वाय॥ ७॥

एक अस्त्री वले एहवी जी, इसांण कूण रे मांहि।
सेत ऊजलो कलस जल भर्यो जी, हाथ में लेइ उभी छे ताहि ॥ ८ ॥
वले किस्न जी कहे सेवग बोलाय नें जी, सहंस पुरष करो तयार।
ते उचपणे सर्व सारिखा जी, सरिखो वर्ण एक धार ॥ ९ ॥
वय पिण सगला री सारिखो जी, सरीखा आभरण पहीराय।
उतकष्टो सिणगार कराय ने जी, त्यां दीठांइ नयण ठराय ॥ १० ॥
ए वचन सुणें श्री किस्न रो जी, ते हरख पाम्यों तिणवार।
तिण सहंस पुरष तेडाविया जी, जद हरख्या छें पुरष हजार ॥ ११ ॥
त्यां सिनांन कीयों सगला जणा जी, कह्यो तिम कीयो सिणगार।
ते उभां किस्न जी पासे आय ने जी, सीस नमावें वारूंवार ॥ १२ ॥
हिवे किस्नजी नें कहे हाथ जोड नें जी, मोनें कारज फुरमावों महाराय।
जब किस्न कहे थावचा पुतर नी जी, सेवका उपाडो थे जाय ॥ १३ ॥
ए वचन सुणे श्री किस्न रो जी, हरख्या छे पुरष हजार।
ते वेग सूं आया सेवका कने जी, उपाड लीधी तिणवार ॥ १४ ॥
थावचा पुतर सेवका चढ्यां थकां जी, आगल चाले आठ मगलीक।
साथीयो ने श्रीवछ साथीयो जी, नदावर्त साथीयो रमणीक ॥ १५ ॥
विरधमांन नें भद्रासण जी, कलस मछ अरीसो वखांण।
ए अनुक्रमे आठ आगे चलें जी, ते दीसे छें दीपता जांण ॥ १६ ॥
सेवका थावचा पुतर तणी जी, सारां आगे करी तिणवार।
तिण लारे सहंस पुरषां तणी जी, सेवका एक हजार ॥ १७ ॥
सहंस पुरप सगलां तणी जी, सेवका सिणगारी रूडी रीत।
थावचा पुतर तेहनी परे जी, दोषण कलंक रहीत ॥ १८ ॥

दुहा

महिंद्रधजा चाले आगले, ते उंची गगन आकाश।
ओर धजा पताका अति घणी, त्यां दीठा पांमें हुलास ॥ १ ॥
वले सेवका रें आगले, अनेक सोभा चालें रूडी रीत।
ते पिण दीसें रलीयामणां, दोषण कलंक रहीत ॥ २ ॥
तिणरो विसतार छे अति घणों, जिम सुतर उवाइ मांय।
इणरा महोछव करें श्री किस्न जी, ते पूरा केम कहवाय ॥ ३ ॥
थावचा पुतर रा घर थकी, चाल्या अनुक्रमें सर्व जांण।
एक हजार नें एक सेवका, जांणे चाल्या देव विमांण ॥ ४ ॥

ढाल : १६

[वे त्वे रे मुनिवर वहिरण पांगुर्‌या रे]

दुवारका नगर विचें होय नीकले रे, सेवका एक सहंस नें एक रे।
बीट्या चाले मिनखां रा वृंद सूं रे, त्यांनें जोवें छे नर नारया अनेक रे।
दिख्या रा महोछव करेश्री किस्न जी रे* ॥ १ ॥
जें जें सब्द घणा प्रजूंजता रे, आगें पाछे पाडें छे घोष रे।
ते कांनां नें लागे अति रलीयामणां रे, मगलीक सब्द बोलें निरदोष रे॥ २ ॥
किस्नजी पटहस्ती ऊपर चढ्या रे, विभूषित कीयों छे सर्व सरीर रे।
मस्तक उपर छत्र धरावता रे, चमर वीजावतां वडवीर रे॥ ३ ॥
घोडा हाथी नें रथ पायक तणी रे, चतुरंगणी सेन्या छे त्यारे साथ रे।
चारण भाट चिहूं दिस आवीया रे, विरदावली बोलें जोडी हाथ रे॥ ४ ॥
आगेंल चालें घोडा सिणगारीया रे, वले आगेंल चालें हस्ती परधांन रे।
पाछे चालें छें रथ रलीयामणां रे, त्यांनेइ सिणगार लीया बुधवान रे॥ ५ ॥
भिंगार नां कलस घणा रे मस्तके रे, वले वीजणा दीया घणा रे हाथ रे।
सेत छत्रवाला साथे घणा रे, वले चमर वीजता त्यारे साथ रे॥ ६ ॥
लाठी भालां वाला साथे घणा रे, पुस्तक वीणा वाला अनेक रे।
पोतां पोतां री पंगत चालता रे, सोभ रह्या छे घणा वशेख रे॥ ७ ॥
हाथी घोडा नें रथ रलीयांमणां रे, एक एक सों सों उपर आठ रे।
कोतल रूप त्यांनें सिणगारीया रे, त्यांरी चलगत चोखी रूडे घाट रे॥ ८ ॥
राजेसर तलवर सार्थवाह बहु रे, इत्यादिक मोटा मोटा रिधवांन रे।
ते आगें चाले छे रूडी रीत सूं रे, ते चतुर विचक्षण छे बुधवान रे॥ ९ ॥
सगली रिध करेंनें परवर्‌यों थको रे, बाजंत्र बाज रह्या छे पूर रे।
वेंरागी पुरषां नों तिण अवसरे रे, सोभ रह्यो छे मुख नों नूर रे॥ १० ॥
जाचक बोलें घणी विरदावली रे, जे जे सब्द करे अति घोष रे।
करम आठोंई वेरी जीत ने रे, वेगी थे लेज्यों अविचल मोख रे॥ ११ ॥
त्यागी वेंरागी घर सूं नीकल्यो रे, ज्यूं रण मांहे सूर वीर नें धीर रे।
बाजंत्र बाजे घोष वीहामणा रे, कायर किण विध हुवें दिलगीर रे॥ १२ ॥
एक २ बायां मुख सूं इम कहे रे, उवारी हूं जाउ इणरें रूप रे।
ओछी दांइ मे घर तज नीकल्यो रे, तिरखाने मोटों भव जल कूंप रे॥ १३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एक २ बाया मुख सूं इम कहे रे, ए दीसे कुमर नांहनडीयो बाल रे।
कुटंब कबीलो किण विध छोडीयो रे, किण विध तोड्यो माया जाल रे॥ १४॥
परदायत बायां मिंदर मालीये रे, जोवे जाल्यां में मूंढो घाल रे।
मूंढो कूमलावे केल री कांब ज्यूं रे, जाणे कुहाडा सूं बाढी विरखनी डाल रे॥ १५॥
धर्म रा धेसी धेटा इम कहे रे, बोलें मूढा सू खोटी वांण रे।
रिध ने सपत पामी थी घणी रे, पिण ए परमेसर न दे खांण रे॥ १६॥
काचा हीया रा रोवे मांनवी रे, भोला नही जाणे जिण धर्म रीत रे।
ज्यूं वाइ काइ परणे जाअे सासरे रे, ते रोवें सुण मिभ्रुत्या रो मोह गीत रे॥ १७॥
केयक भूखी नाखी इम कहे रे, बोले आवे ज्यू मन री दाय रे।
ग्यांनी तो जांणें गेंहला सारिखा रे, अे खूता माखी ज्यू सेडा मांय रे॥ १८॥
एक २ बाया मुख सूं इम कहे रे, धिन २ कुमर तणो अवतार रे।
छोडी इण काया माया कारमी रे, आप तिरसी अवरां नें तार रे॥ १९॥
नाख्यां सेडा ज्यू अलगी परहरी रे, त्यागा भाइ सजन मा बाप रे।
नरक दुखा सूं छोड्या वीहते रे, ज्यूं काचली छोडे कालो साप रे॥ २०॥
सहसा गमे माला नयणा तणी रे, जोवे छे नर नाख्यां रा व्रद रे।
ते रूप निरखे थावचा पुतर नो रे, ते पामे छे मन मांहे आणद रे॥ २१॥

दुहा

जे जे नदा कहे घणा, जें जें भद्रा कहे ठाम ठाम।
मुख मगलीक बोले घणा, मुख सू करे गुण ग्राम॥ १॥
इद्री पाचूंइ जीतजो, राग धेष रूप मल खोय।
दस विध जती धर्म पालजो, धीरज वत दिढ होय॥ २॥
उत्तम सुकल ध्यांन ध्याय ने, जावक अप्रमादी थाय।
केवल ग्यान उपजाय ने, जायजो मुगत गढ मांय॥ ३॥
उतकष्टो परम पद सासतो, अविचल ठाम छे मोष।
तिहा सुख अनोपम अति घणो, थे लीजों कर सतोष॥ ४॥
विघन म होयजों थारा धर्म मे, रहिजों सदा निरदोष।
तिण सू परम पद पायजो, ते सासतो अविचल मोष॥ ५॥
वारूंवार मंगलीक बोलता थका, करती अति ही आणद।
नंदण वन मांहे आवीया, जिहा बेठां नेम जिणंद॥ ६॥

ढाल २०

[वेरागे मन वाल्यियो]

थावचा री मा तिण समें. लेइ पुनर ने नाथ।
तीन परिदिखणा देई करी, वांद्या श्री जगनाथ।
त्यांरे साथे आया श्री किस्नजी, त्यां ऊभी थावचा री माय।
मलावण देवें पुतर भणी, विनों करें ने बोलें वाय ॥ २ ॥
हाथ जोडी वीणती करें, बोलें करें गुण ग्रांम।
एक पुतर छे मांहरे, पुतर थावचा नांम ॥ ३ ॥
तिण आप तणी वांणी सुणी, जांण्यो अथिर संसार।
ते रित नहीं पांमें घर में रह्यां, लेवी संजम भार ॥ ४ ॥
ते इष्टकंत घणों मांहरे, रतन करंड समांण।
तिणरो दरसण मोनें दोहिलो, उंबर फूल ज्यूं जांण ॥ ५ ॥
ते संसार भय थी ऊभग्यों, ते रहे नही घर मांय।
बीहनों जामण मरण थी, ओर न आवे दाय ॥ ६ ॥
कमल कादें कर उपनों, वधीयो पांणी मूं ताय।
ते न लिपें पांणी कादा मझे, रहें जल उपर आय ॥ ७ ॥
ज्यूं कांम कादें कर उपनों, भोग पांणी वधीयो तांम।
पिण ते न लिपें कांम भोग में, जिण्या लेसी मोटा सांम ॥ ८ ॥
ओ आप कनें व्रत आदरें, घर छोड हुवें अणगार।
तिण कारण भिख्या सिप्य तणी, आपूं छूं इणवार ॥ ९ ॥
इत्यादिक श्री नेम नें, दीधी भलावण माय।
पुनर महीत निण अवसरें, इसांण कुण में जाय ॥ १० ॥

●

दुहा

माता पल्लट माडीयो, गेंहणा लें तिणवार।
आंसूं छूटा किण विधे, जांणे मेघा धार ॥ १ ॥
ढीलें डोरें हार पोवीयो, मादल खिसीयो तिवार।
तूटें हार मोती पडे, इम छूटी आंसूंडा री धार ॥ २ ॥
हीयो फाटे माता तणों, साह्मों जोवें तिवार।
पिण माइतां रो जीव छे. वीछड्तां री वार ॥ ३ ॥

सीख दीये माता वले, म्हाने छोडों आज।
जतन घणा कर पालजो, सारजे आतम काज॥ ४ ॥
पाच परमाद ने छांडनें, आलस अग म आण।
आराधे जिण आगना, वेगो पोहचे निरवाण॥ ५ ॥
तू सहंस अठारे साधां मझे, सोभा लीजे विनों कर ताय।
इम देइ भलावण पुतर ने, आइ जिण दिस जाय॥ ६ ॥

ढाल : २१

[कपूर हुवे अति उजलो]

थावचा पुतर तिण अवसरे जी, सहस पुरष ने साथ।
पांच मुष्टी लोच सगला कीयो जी, निज पोता पोतां रे हाथ।
सोभागी मुनीवर, धिन धिन ते अगार॥ १
श्री नेम जिणद तिहा आवीया जी, सहस पुरष लेइ साथ।
वदणा कीधी सगला भाव सू जी, विनो कर वोले जोडी हाथ॥ २ ॥
लाय लागी जनम मरण री जी, इण ससार मझार।
तिण सू आप किरपा करी जी, म्हाने काढो इण लाय रे बार॥ ३ ॥
म्हाने दिख्या द्यो सगला भणी जी, सयमेव जिणेसर आप।
जब नेम जिणद तिण अवसरे जी, पचखाया अठारें पाप॥ ४ ॥
आचार गोचार सीखाय ने जी, पडपक कीया रे वशेख।
सुमत गुपत सुध पालता जी, परभव साह्मो पेख॥ ५ ॥
थावचा पुतर मुनी सोर मोटको जी, महा मोटी. वुध रो निधान।
ते थिवरा रे समीपे भण्यो जी, चवदे पूर्व रो ग्यान॥ ६ ॥
चउथ छठादिक तप करे आकरो जी, आचारे पाले रूडी रीत।
ओर आसा वछा नही सरवथा जी, गुर भगता घणो सुवनीत॥ ७ ॥
नेम जिणंद तिण अवसरे जी, जाण घणो उपगार।
थावचा पुतर अणगार ने जी, सिप्य सूंप्या एक हजार॥ ८ ॥
वदणा करे पूछे श्री नेम ने जी, मोने आगना दो तो जगनाथ।
हू विहार करूं जनपद देस मे जी, सहस साधा ने लेइ साथ॥ ९ ॥
नेम जिणंद कह्यो थावचा भणी जी, मुनी ज्यू तोने सुख थाय।
ए आगना हुइ श्री नेम री जी, जब हरख्यो घणो मन मांय॥ १० ॥
वदणा करे नेम जिणद ने जी, साथे लेइ सहस अणगार।
श्री नेम सू वीहार न्यारो कीयो जी, जनपद देस मझार॥ ११ ॥

तिण काले नें तिण समे जी, सेलगपुर नगर, थो ताहि।
तिहां सुभम नामे वाग थो जी, इसाणकुण रे मांहि ॥ १२ ॥
तिण नगरी रो अधिपति जी, सेलग नांमें राजांन।
रांणी तस पदमावती जी, रूप कला री निधांन ॥ १३ ॥
तिण राजा रो दीकरों जी, मंडूक नामें कुमार।
तिणने जुगराज पदवी दीधी पिताजी, रूप गुणे, सुविचार ॥ १४ ॥
पंथग आदि देइ पांचसो जी, हुता राजा रे परधान
ते काम चलावे छे राज रो जी, च्यारेंइ वुध रा निधान ॥ १५ ॥

दुहा

तिण काले ने तिण समे, थावचा पुतर नामे अणगार।
सेलगपुर नगर पधारीया, सहंस साधां रे परिवार ॥ १ ॥
आगना मांगी वाग मे उतरया, निरवद जायगा जांण।
सेलगराय सुण आयो तिहां, कर मोटे मंडाण ॥ २ ॥
मुनीवर दीधी देसना, सगला नें हित ल्याय।
राय सुणे हरख्यो घणो, ते किण विध बोल्यो वाय ॥ ३ ॥
हाथ जोडी नें इम कहे, सरध्या तुमनां वेंण।
थे तारक भव जीवनां, मोने मिलीया साचा सेण ॥ ४ ॥
सेठ सेनापती राजवी, धिन जे हुवे अणगार।
इतरी पोहच म्हारी नही, द्यो श्रावक ना व्रत बार ॥ ५ ॥
श्रावक ना व्रत आदरया, जीवकादिक निरणो कीध।
वले पथग आदिदे पांचसो, यां पिण श्रावक रा व्रत लीध ॥ ६ ॥
सेलग राय ने समझाय नें, कीयो तिहाथी वीहार।
सहंस साधां सूं परवरया, जनपद देस मझार ॥ ७ ॥
तिण कालें नें तिण समे, नगरी सोगधीया नाम।
नीलासोग नामे उधान छे, इसाणकुण ने ठाम ॥ ८ ॥
सेठ सुदंसण तिहां वसे, तिणरे रिध घणी घर माय।
ते मिथ्याती छे सहजरो, जिण धर्म री खबर न काय ॥ ९ ॥

ढाल: २२

[पुन नीपजे सुभ जोग सू रे लाल]

तिण काले ने तिण समे रे लाल, सुख देव सिन्यासी तिणवार हो। भविक जन
ते च्यारूंइ वेद रो जाण छे रे लाल, तिणरे सिष्य छे एक हजार हो। भविक जन
सरधा सुणो सुखदेव री रे लाल* ॥ १ ॥
साठ तंत जाणे तिणरा मत तणा रे लाल, वले सखसा सास्त्र नो जांण हो।
पाच जाम ने पाच नियम री रे लाल, त्यांरी करे परूपणा ताण हो ॥ २ ॥
हिसा झूठ चोरी मइथुन रो रे लाल, पांचमो परिग्रहारो परीहार हो।
ए पाचूइ जांम कहे इण विधे रे लाल, ए सिन्यासी रो धर्म आचार हो ॥ ३ ।
करणो सोच संतोष ने रे लाल, देवता रो ध्यान ने सभाय हो।
तीरथ जात्रा ने दान सिनान रो रे लाल, ए नियम सिन्यासी करे ताय हो ॥ ४ ॥
दान देवो कहे सकल ने रे लाल, तिण दान मे कहे छे धर्म हो।
वले धर्म कहे छे सिनान मे रे लाल, तिणसू कटे भव भव ना कर्म हो ॥ ५ ।
वले तीरथ री माटी तणो रे लाल, लेप सरीर रे लगाय हो।
वले तीरथ रा पाणी थकी रे लाल, सिनान कीयां सुध थाय हो ॥ ६ ॥
एहवो धर्म कहे छे ग्रहस्थ ने रे लाल, गामा नगरा ठाम ठाम हो।
गेरू रग्या वसत्र पेहरणे रे लाल, त्रिणंड ने कमडलू तांम हो ॥ ७ ॥
तिणरे छत्र छे मोर पिछ नो रे लाल, वले आकुस तिणरे साथ हो।
ते फल फूल पलव लेवा भणी रे लाल, ताबा री पवित्री छे हाथ हो ॥ ८ ॥
पूंजवा काजे खड कपडा तणा रे लाल, ते पिण राखे छे हाथ मझार हो।
पगा मे पेहरण पावडी रे लाल, एहवो कहे सिन्यासी रो आचार हो ॥ ९ ॥
पिडत वाजें यारा मत मझे रे लाल, चवदें विद्या रो निधांन हो।
जस फेल्यो छे तिणरा मत मझे रे लाल, वले वधीयो छे तिणरो मान हो ॥ १० ॥
शिख्या[1] कल्प[2] ने व्याकरण[3] छंदरी[4] रे लाल, जोतख[5] ने निर्युक्त[6] वखांण हो।
च्यारे[7-10] वेद मीमासा[11] इग्यारमी रे लाल, तरक[12] धर्मसासत्र[13] पुरांण[14] हो ॥ ११ ॥
ए चवदे विद्या तिण मुख भणी रे लाल, सहस सिखां रे परिवार हो।
ते आयो सोगधीया नगरी तिहा रे लाल, सिन्यासीया री जायगां मझार हो ॥ १२ ॥
भड उपगरण म्हेली उतर्यो तिहा रे लाल, सख सासत्र रो करे उचार हो।
विचरें आपणी आतमा ने भावतो रे लाल, संख मत रे मझार हो ॥ १३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सोगंधीया नगरी तणा रे लाल, घणा लोक आया तिण पास हो।
सेठ सुदंसण पिण आयो तिहां रे लाल, नमसकार करे छे बेठो तास हो ॥ १४ ॥
सुदंसण आदिदेइ सर्व ने रे लाल, सोच मूल कह्यों छे धर्म हो।
तिण धर्म कीयां जाअे मुगत मे रे लाल, कटें अठोइ कर्म हो ॥ १५ ॥
सरीर अपवित्र हुवें जिण दिने रे लाल, कूआ री माटी सरीरे लगाय हो।
पछे निरमल पांणी सूं पखालीयां रे लाल, द्रव्य पवित्र इण विध थाय हो ॥ १६ ॥
भाव सोच ते डाभ ने मंत्र करी रे लाल, करणा होमादिक जाण हो।
जद भावें पवित्र हुवें जीवडो रे लाल, तिणसूं पामे स्वर्ग निरवांण हो ॥ १७ ॥
दांन देणो सकल जीव नें रे लाल, तिणसूं पातक दूर पलाय हो।
जीव पवित्र हुवें तेहथी रे लाल, तिणसू स्वर्ग मुगत मे जाय हो ॥ १८ ॥
सोच पवित्र हुवे दोनूं धर्म थी रे लाल, दान दीधां ने कीघा सिनान हो।
ओ सोच मूल धर्म उत्तम छे रे लाल, तिणसूं पामे मुगत निर्वांन ॥ १९ ॥
अें दोनूंइ धर्म परूपीया रे लाल, सिनांन करवो देवों दांन हो।
ते सुणनें सुदंसण सेठ हरखीयो रे लाल, आदरीयो धर्मदांन सिनांन हो ॥ २० ॥
सुखदेव सिन्यासी नें गुर कीयो रे लाल, प्रतिलाभतों विचरे च्यारू आहार हो।
हिवे काल कितोएक वीतां पछें रे लाल, सुख देवतो कीयों वीहार हो ॥ २१ ॥

●

दुहा

हिवे तिण काले ने तिण समें, थावचा पुतर नांमे अणगार।
सोगंधीया नगरी समोसर्या, नीलासोग वाग मझार ॥ १ ॥
सेठ सुदंसण तिहां आवीयो, वले आया घणा नरनार।
सेठ वांदे वेठो मुख आगले, वांणी सुणी तिणवार ॥ २ ॥
सेठ सुदंसण वंदणा करे, प्रश्न पूछे जोडी हाथ।
किसो मूल धर्म कहो छो तुम्हे, इणरो उत्तर द्यो सामी नाथ ॥ ३ ॥
साधु कहे सुदंसण सेठ नें, विने मूल परूपां म्हे धर्म।
तिण विनें मूल धर्म तणा, दोय भेद सुणे होय नर्म ॥ ४ ॥

ढाल : २३

[रे जीव मोह अनुकंपा न आणिये]

ग्रहस्थ नो विने मूल धर्म छे, साधु नों पिण विनें मूल धर्म रे।
अ दोनूंइ विने मूल धर्म छे, त्यांसूं पांमे सुख परम रे।
विने मूल धर्म जिण भाखीयो* ॥ १ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जिण आगना सहीत करणी करे, तिणनें विने मूल धर्म जांण रे।
तिण धर्म कीयां सूं जीवडा, वेगों जाअे निरवांण रे॥ २ ॥
विने मूल धर्म ग्रहस्थ तणो, अणुवरत पांच वखांण रे।
वले सात सिख्या व्रत आदरे, इग्यारें पडिमां श्रावक री जांण रे॥ ३ ॥
विने मूल धर्म साधु तणो, धुर सूं पाच महाव्रत जांण रे।
राती भोजन नही भोगवे, अठारें पाप तणा पचखांण रे॥ ४ ॥
पचखांण करे छे दस विघे, बारे भीख री पडिमां जांण रे।
इत्यादिक यांरा भेद अति घणा, ते विने मूल धर्म पिछांण रे॥ ५ ॥
जिण जिण करणी में जिण आगना, ते करणी कीयां करे कर्म रे।
ग्रहस्थ ने साधु दोयां तणो, ओहीज विने मूल छे धर्म रे॥ ६ ॥
इण विने मूल धर्म थी, आठ करम प्रकत खय जाय रे।
ते जाय विराजे मोख मे, सासता सुखां रे मांय रे॥ ७ ॥
ओं तो विने मूल धर्म म्हे कह्यों, थारो कुण मूल छे धर्म रे।
तो विवरा सुघ कहि तूं मो कने, कहितां मूल म आणे सर्म रे॥ ८ ॥
जब सेठ सुदंसण मांड नें, सुचि मूल कह्यो तिण धर्म रे।
स्वर्ग जाअे तिण धर्म थी, दांन सिनांन सूं करें कर्म रे॥ ९ ॥
सुदंसण नें थावचा पुतर कहे, लोही भर्‌यो कपडो हुवें ताय रे।
तिण कपडा ने लोही सूं धोवीया, उजलों थाय के न थाय रे॥ १० ॥
सुदसण कहे कपडों लोही भर्‌यो, लोही सूं धोयां उजल न थाय रे।
इण न्यायें सुदसण धर्म ताहरो, तिणसूं जीव भारी हुवें ताय रे॥ ११ ॥
हिंसादिक सूं जीव मेलो हुवे, हिंसादिक सूं उजल किम थाय रे।
हिंसादिक सूं जीव मेंलो हुवों, ते दयादिक सूं उजल हुवे ताय रे॥ १२ ॥
लोही भर्‌यो कपडो हुवें तेहनें, साजी खार लगावें ताय रे।
पछे धोवें निरमल पांणी थकी, तो कपडो उजल होय जाय रे॥ १३ ॥
अठारें पाप सेवे मेलो हुवो, ते त्यागे पाप अठार रे।
तपसा करें पाप न्यारो करे, ते जीव उजल हुवें श्रीकार रे॥ १४ ॥
थारों हिंसा धर्म छे पाडूओ, सावद्य दांन नें दूजो सिनांन रे।
यांसू दिन दिन जीव मेलो हुवे, वधे दुःख नें दुखां री खांन रे॥ १५ ॥
अे वचन सुणे प्रतिबुझीयों, सेठ सुदंसण तिणवार रे।
हाथ जोडे वंदणा करे, श्रावक रा व्रत लीधा वार रे॥ १६ ॥
जांण हुवों जीवाजिक तेहनों, प्रतिलाभतों विचरें दांन रे।
विनें मूल ग्रही धर्म आदर्‌यो, ते साभल लीयो सुकदेव कांन रे॥ १७ ॥

दुहा

सुकदेव सिन्यासी चिंतवें, हूं नगरी सोगंघीया जाय।
सेठ विनें मूल धर्म आदर्‍यों, ते छोडाय देउं समझाय ॥ १ ॥
सोच मूल धर्म तिण छोडीयों, ते पाछो देउं आदराय।
सहंस सिखां सूं परवर्‍यो, आयो नगरी सोगंघीया मांय ॥ २ ॥
सिन्यासी री जायगां तिहां, उपगरण मेल्या आय।
घणा सिखां सूं परवर्‍यों थकों, आयों सुदंसण रा घर मांय ॥ ३ ॥
सुदंसण देखनें उठ्यों नही, नही दीयो आदर सनमांन।
अण बोल्यों बेठों रह्यो, तिण सूं मूल न मेल्यो तांन ॥ ४ ॥
जब सुकदेव कहे सुदंसण भणी, म्हारी करतों तूं भगत परम।
आज भगत मूल कीधी नही, थे लीयों विने मूल धर्म ॥ ५ ॥
इम सुण नें सुदंसण उठीयो, हाथ जोडी नें बोल्यों हुलास।
म्हे विनें मूल धर्म आदर्‍यो, थावचा अणगार नें पास ॥ ६ ॥
जब सुकदेव कहे सुदसण भणी, चाल थारा गुरां ने पास।
जाब देसी म्हांरा पूछ्या तणो, तो वंदणा करसूं आंण हुलास ॥ ७ ॥
जो म्हांरा पूछ्यां रो जाब देसी नही, तो निपष्ट करसूं तिण ठांम।
अर्थहेत बागरणा पुछ नें, खिप्ट करसू तो ऊभां तांम ॥ ८ ॥
इम कहें तिहांथी नीकल्या, गया नीलासोग उवांन।
थावचा अणगार तिहां आय ने, प्रश्न पूछ छे बुधवांन ॥ ९ ॥
जात्रा छे हे भगवांन तुम तणो, जपनीय छे तुम्हारे भगवांन।
बाधा रहीत भगवांन छो तुम्हे, फासू बीहार छे थारे बुधवांन ॥ १० ॥

ढाल : २४

[भवियण जिण आज्ञा सुखकारी]

ए च्यार प्रश्न सुकदेव पूछ्या छे, थावचा अणगार नें पास।
त्यांरा उत्तर किण विध देवें मुनीसर, ते सुण तूं आंण हुलास रे।
सुकदेव जोय तूं हिरदे विचारी, छोड दे साढ हीया री रे ॥ सुकदेव ॥
जिण मारग सुख कारी* ॥ १ ॥
जात्रा म्हांरे छे सुकदेव, जपणी छे म्हारे इण बार।
निराबाध पिण छे म्हांरे बले, छे म्हारे फासू बीहार हो ॥ २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जात्रा किसी भगवांन तुम्हारें, जब कहें थावचा अणगार।
ग्यांन दरसण चारित तप संजमादिक, वले जयणा करणी वारूंवार हो॥ ३ ॥
आ जात्रा म्हांरे निरदोष रूडी, तिणसूं पाप करम रूक जावें।
वले करम कटें इण जात्रा सेती, सासता सुख इणसूं पावें हो॥ ४ ॥
जपणी तुम्हारें भगवांन किसी छें, जपणी म्हांरे दोय परकार।
इंद्री नोइंद्री जपणी छे म्हांरे, त्यांरा भेद रो सुणो विसतार हो॥ ५ ॥
इंद्री जपणी ते वस करणी इंद्रयां, ते पांचूं इंद्री वस म्हांरे।
त्यांरी विषे रें वस हूं नहीं वरतूं, ते म्हांरो कांई नहीं विगारें रे॥ ६ ॥
नो इंद्रीय जपणी इण विध म्हांरे, क्रोध मान माया लोभ टाल्या।
त्यांमें केयक तो म्हें उपसम घाल्या, केयक जडां मूल सूं बाल्या रे॥ ७ ॥
इंद्री नोइंद्री जीती ते जीवडा, ते सीतलभूत निश्चेंइ थावें।
सेष करम खपाय नें जीवडो, पाधरो मुगत जावें हो॥ ८ ॥
निराबाघ कीसी छे थांरे, ते पिण कहें थावचा अणगार।
वाय पीत सनीपात रोग छे अनेक, ते उदें नहीं म्हांरे लिगार रे॥ ६ ॥
निराबाघ रोग रहीत थको हूं, करणी करें काटूं करम।
सकल करम खय हुआं म्हांरा, जब हूं पांमसूं मुगत पद परम हो॥ १० ॥
फासू वीहार कीसों छे तुम्हारें, तिणरो सुण तूं वशेष।
आराम उद्यान नें देवकुल, सभा पवादिक जायगां अनेक हो॥ ११ ॥
अस्त्री पसु निपुंसग वरजे नें, रहिणों इसडी जायगां मझार।
सेझ्या संथारो पिण निरदोष लेणों, ओं म्हांरे फासू वीहार हो॥ १२ ॥
एहवो फासू वीहार विचरतो साधु, तिणरे पाप न लागें लिगार।
आगला करम काटे नें साधु, जाअें मोख मझार हो॥ १३ ॥

दुहा

च्यार प्रश्नां रा उत्तर दीया, थावचा पुतर अणगार।
जब सुकदेव मांहे जांणीयो, अंठे तो नही छलांणा लिगार॥ १ ॥
तो ओर उपाय करूं वले, लेऊं पकड में तांम।
न्याय करें अटकाऊं एहनें, म्हांरो बोल उपर करूं आंम॥ २ ॥
अन्याय तो मूल करणों नही, साचो हुवें ते लेणों छे धार।
इसडी करें विचारणा, पूछा करे तिणवार॥ ३ ॥
सरसव भख छें तुम भणी, के सरसव अभख छे ताय।
थावचा कहें भख अभख वेहूं, साधु नें कह्यां जिणराय॥ ४ ॥

भख अभख सरसव साधु नें कह्या, ते किण कारण हे सांम।
तिणरो जाब सुणे सुकदेव तूं, चित राखे एक ठांम ॥ ५ ॥

ढाल : २५

[जगत गुरु त्रिशला नन्दन वीर]

सरसव नां दोय भेद छे, मित्र[1] ने धांन[2] सरसव जांण।
मित्र सरसव नां तीन भेद छें, त्यांने रूडी रीत पिछांण हो।
सुखदेव सांभलजे चित ल्याय* ॥ १ ॥

साथे जनम्यां[1] नें साथे[2] वध्या, साथे कीडा[3] करी हुवें आंम।
अे सरसव तीनूं अभख छें जी, श्रमण निग्रंथ नें तांम हो ॥ २ ॥

धांन सरसव नां दोय भेद छें, सस्त्रपरणित[1] अपरणित[2] जाण।
सस्त्र अपरणित तो अभख छें, तिणनें साधु न ले पिछांण हो ॥ ३ ॥

सस्त्र परणित रा दोय भेद छे, जीव चवीया[1] अचवीय[2] ताहि।
जीव अचवीया ते अभख छें, त्यांने घालें नही मुख मांहि हो ॥ ४ ॥

जीव चवीया रा दोय भेद छें, जाचीयो अजाचीयो जांण।
ते अणजाचीयो अभख छें, जाच्या रा दोय भेद पिछांण हो ॥ ५ ॥

एक एषणा करनें असूझतो,[1] एक एषणा कर सुध[2] होय।
असूझतों अभख छे साधुनें, सूझता रा पिण भेद छे दोय हो ॥ ६ ॥

लाधा नें[1] अणलाधा[2] सरसवा, तिणमे अणलाधा अभख अजोग।
सूझतां लाधा छें सरसवा जी, लेवा कल्पें साधु नें जोग हो ॥ ७ ॥

इण अर्थे सुकदेव सरसवा जी, भख अभख कह्यां जिणराय।
आ साची सरधा म्हारी, तिणमें संका म राखे काय हो ॥ ८ ॥

सुकदेव सिन्यासी सांभले, पाछो उत्तर दीयो न जाय।
वले कुलथा री पूछा करें, थावचा पुतर नें ताय हो ॥ ९ ॥

कुलथा भख कें अभख छें, तिणरो उत्तर द्यो भगवान।
कुलथा रा दोय भेद छे, ते सुण तूं सुरत दे कांन हो ॥ १० ॥

अस्त्री कुलत्थ नें धांन कुलत्थ छे, अस्त्री कुलत्थ रा भेद तीन।
कुल नी वहू नें माता कुल तणी जी, मोटां कुल नी पुतरी लेंह लीन हो ॥ ११ ॥

ए तीनूंइ भेद अभख छें, श्रमण निग्रंथ नें जांण।
धांन कुलत्थ भख अभख छे, धांन सरसव जेम पिछांण हो ॥ १२ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सुकदेव सिन्यासी सांभले जी, पाछो उत्तर दीयों न जाय।
वले मासा री पूछा करें, थावचा पुतर ने ताय हो॥ १३॥
मासा भख छे के अभख छें, तिणरो उत्तर द्यो भगवांन।
मासारा तो तीन भेद छे, ते सुण तूं सुरत दे कांन हो॥ १४॥
काल मासा[1] तो बारें महीना कह्या, अर्थ मासा[2] सोनो रूपो जांण।
एतो साधु ने अभख छे, धांन मासा[3] सरसव जेम पिछांण हो॥ १५॥
ए सुकदेव सिन्यासी सांभले, पाछो उत्तर दीयों न जाय।
वले परन पूछे छे तिण समें जी, थावचा पुतर नें ताय हो॥ १६॥
तुम्हे एक छो कें तुम्हे दोय छो, के तुम्हे अखय छो भगवांन।
वय पलटें नही अवय तुम्हे, के तुम्हे अवस्थित नित नवांन हो॥ १७॥
के अनेक भूत हुवा तुम्हे, के अनेक भाव होसो थे भाव।
ए प्रश्न सुकदेव पूछीया, तिणरा घट मांहि छें डाव घाव हो॥ १८॥
थावचा पुतर कहे सुकदेव नें, हूं एक पिण छूं सुकदेव।
वले दोय पिण हूंइज छूं जी, हू छूं अखय पिण नितमेव हो॥ १९॥
वय पलटे नही हूं अवय छूं, हूं अवस्थित नित छूं तांम।
वले अनेक भूत हूंइज हुवो, अनेक भाव होसूं वले आंम हो॥ २०॥
थे कह्यों एक हूंइज छू, दोय पिण हूंइज होय।
इत्यादिक सगला इज कह्या, यारो न्याय बतावो मोय हो॥ २१॥
द्रव्य आश्री हू एकहीज छू, एक रा दोय कदे न होय।
ग्यांन दरसण आश्री हू दोय छू जी, ते जांणे नें देखें सोय हो॥ २२॥
परदेसां आश्री हू अखय छूं जी, परदेस कदे न घटाय।
वय पलटें नही तिणसूं अवय छूं जी, जीव मरनें अजीव न थाय हो॥ २३॥
अवस्थित नित इण कारणें हूं, विणास कदे नही थाय।
तीन काल मांहें हूं सासतो, ते तो दरवे जीव रे न्याय हो॥ २४॥
उपजोग अर्थे हू अनेक छूं जी, ते जीव तणी परजाय।
हूं भावे जीव असासतो, तिणरा भेद सुणे चित ल्याय हो॥ २५॥
नरक मे हुवो नेरीयो जी, तिरजच हुवो वार अनंत।
अनंत वार मिनख देवता हुवो, त्यांरो कहितां न आवे अंत हो॥ २६॥
अनंतवार तस थावर हुवो, प्रथवी आदि देइ तस काय।
एकंद्रीयादिक तो हूइज हुवो, ते पूरा कह्या न जाय हो॥ २७॥
हूइज मिथ्याती हुवो जी, हूंइज हुवो अग्यांनी तांम।
बाप बेटादिक हूंइज हुवो जी, एहवा सगपण रा बहु नांम हो॥ २८॥

कांमी नें भोगी हूंइज थो जी, सुखी दुखी हूंइज थो तांम।
अनेक परजाय ते हूंइज म्हांरी जी, परजाय ते हूंइज ठांमो ठांम हो ॥ २९ ॥
करमां रो करता हूंइज छूं जी, तीनूंइ काल रे माहि।
करमां नें रोक्या ते हूंइज छूं जी, करम तोडूं ते हूंइज ताहि हो ॥ ३० ॥
साधु भिखु हूंइज छूं जी, हूंइज चारितीयो छूं तांम।
वरतमांन में हूं अनेक छूं जी, त्यांरा किसा किसा कहूं नांम हो ॥ ३१ ॥
अनेक परजाय हुसी वले मांहरी जी, ते मोनेंइज हुवो जांण।
हूंइज सिध होसूं मुगत में जी, हूंइज होसूं निरवांण हो ॥ ३२ ॥
हूइ हुवें नें होसी वले जी, भावजीव ते परजाय जांण।
ते हूंइज परजाय जीव भाव छूं जी, तिणमें संका मूल म आंण हो ॥ ३३ ॥
इम सांभल नें प्रतिबूझीयो, सुकदेव सिन्यासी ताय।
जब हाथ जोडी नें इम कहे, मोनें जिण भाख्यों धर्म सुणाय हो।
सांमी आ मोरी अरदास ॥ ३४ ॥
थावचा पुतर तिण समें जी, धर्मकथा कही ताय।
जीवादिक नव ततवना जी, भिन भिन दीया भेद बताय हो ॥ ३५ ॥

●

दुहा

वांणी सुणने सुकदेव इम कहे, म्हे सरध्या थांरा वेंण।
थे तारक भव जीव नां, मोनें मिलिया साचा सेंण ॥ १ ॥
सहंस सिन्यासी सहीत सूं, बोल्या जोडी हाथ।
दिख्या द्यो हिवें मों भणी, म्हांसूं किरपा करे सांमी नाथ ॥ २ ॥
थावचा पुतर कहें तिण अवसरे, थांरे लेणो संजम भार।
जो थांरो मन उठीयो, तो मत करो ढील लिगार ॥ ३ ॥
इम सांभल सहू हरषीया, इसांण कुण मे जाय।
त्यांरा उपगरण अलगा मेल नें, जटा उपाडी ताय ॥ ४ ॥
थावचा पुतर साधु कनें, सहंस सिन्यास्यां रे परिवार।
तिनें सहीत हाथ जोड नें, लीधो संजम भार ॥ ५ ॥

ढाल : २६

[धन्य धन्य जम्बू स्वाम नें]

सुकदेव सिन्यासी तेहनो, तिणरो खोटों मत अतंत हो। मुंणिद।
ते हिंसा में धर्म परूपता, ते छोडाय दीयो मतवंत हो। मुंणिद।
चित चिन थावचा अणगार नें * ॥ १ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ते घणा नें मिथ्यात में नाखतो, तिणरा घट मांहे घोर अंधार हो।
तिणनें सहंस सिन्यास्यां सहीत सूं, कीया मोटां अणगार हो ॥ २ ॥
आचार सीखाय पडपक कीया, सिख्या रूडी रीत विगनांन हो।
सुकदेव साधु मुदें तेहने, भणायो चवदें पूर्व ग्यांन हो ॥ ३ ॥
सुकदेव साधु तिण अवसरें, आचार पालें रूडी रीत हो।
सहंस सिश्य सूंप्या तेहने, इणने जाणे घणों सुवनीत हो ॥ ४ ॥
सोगंधीया नगरी थकी, थावचा पुतर कीयों वीहार हो।
जनपद देस मे चालीया, साथे सिष्य एक हजार हो ॥ ५ ॥
काल कितो एक वीतां पछे, सहंस साधां रे संघात हो।
सेत्रूंजा परवत उपर चढ्या, हलवे हलवें विसांमो खात हो ॥ ६ ॥
तिहा पुढवीसिला रलीयांमणी, ते काले वर्ण वखांण हो।
पादुगमण संथारो तिण उपरे, कीयो समता रस आंण हो ॥ ७ ॥
सहंस जणां सूं संथारो कीयो, साहसीकपणो मन धार हो।
घणा वरसां लगे चारित पालीयो, एक मास रो आयो संथार हो ॥ ८ ॥
आलोए पडिकमे सुध हुवा, ध्याया धर्म ने सुकल ध्यान हो।
छेहला अवसर ने विषे, पांम्या केवल ग्यान हो ॥ ९ ॥
करम आठोइ खपाय ने, सहस पुरषां सहीत हो।
जाय विराज्या मुगत में, हुवा जामण मरण रहीत हो ॥ १० ॥
थावचा अणगार ने समझावीयों, तो हूवों घणो उपगार हो।
हूइ वधोतर जिण धर्म नी, जणपद देस मझार हो ॥ ११ ॥
सहंस जणां तो संजम लीयो, सहस सहीत प्रतिबोध्या सुकदेव हो।
ते पिण सारा मुगति सिधावसी, ते पिण उपगार कीयो सयमेव हो ॥ १२ ॥
सेलगराय आदि देइ पांच सो, समझाया थावचें अणगार हो।
ते पिण दिख्या लेने मोख जावसी, ओ पिण थावचा रो उपगार हो ॥ १३ ॥
ए अढाइ सहंस जणाज मे, वले ओर घणा नरनार हो।
त्यांने साध श्रावकपणो दे करी, उतास्या भवपार हो ॥ १४ ॥

दुहा

काल कितो एक वीतां पछे, सुकदेव नांमें अणगार।
सोगधीया नगरी थकी, कीयों सहंस साधां थी वीहार ॥ १ ॥
सुखे सुखे वीहार करतां थका, आया सेगलपुर नगर मझार।
आग्या लेई ने उतस्या, सुभूम बाग मझार ॥ २ ॥

सेलग राजा तिहां आवीयो, कर मोटे मंडाण।
भाव सहीत वंदणा करे, सममुख बेठो आंण ॥ ३ ॥
मुनीवर दीधी देसनां, सगलां नें हित ल्याय।
सेलगराय वांणी सुणे, वेंराग उपनो ताय ॥ ४ ॥
हाथ जोडी ने इम कहें, म्हे सरध्यां तुमनां वेंण।
थे तारक भव जीवनां, मोंनें मिलीया साचा सेंण ॥ ५ ॥
पंथग आदि देइ मंत्री पांच सों, त्यांनें पूछी नें आज।
राज थापे मंडूककुमर भणी, हूं दिख्या ले सारूं आतम काज ॥ ६ ॥
वलता सुकदेव जी इम कहें, थांरे लेणों संजम भार।
एक घडी में विघन छें अति घणा, तिणसूं मत करो ढील 'लिगार ॥ ७ ॥

ढाल : २७

[पांडव पांचू वांदता...]

सेलगराय उठ वंदणा करें, पाछो आयो नगरी मांय रे।
वारली उवठाणसाला तिहां, बेठों छें सिघासण आय रे।
ओ तो बेठो सिघासण आय, सेलग राय दीपतों। घर छोडे रे॥ १ ॥
पंथग आदि परधांन पांचसों, तेडाय कहे त्यांने राय रे।
आज सुकदेव मुनीसर आगलें, धर्म कथा सुणी चित लगाय रे॥ २ ॥
वांणी सुणने वेंराग उपनों, म्हें तो जाण्यो अथिर संसार रे।
हूं बीनों जांमण मरण थी, हूं तो लेसूं संजम भार रे॥ ३ ॥
हूं तो दिख्या लेसूं घर छोडने, तुम्हे कांई करोलां लार रे।
कांई परिणांम वर्ते छें तुम तणा, ते पाछो उत्तर दो थे विचार रे॥ ४ ॥
पंथग आदि दे परधांन पांच सो, सेलग राजा नें कहें छें विचार रे।
थे घर छोडनें नीकलो, तो म्हांने लारें कुण आधार रे॥ ५ ॥
तिणसूं आप साथे लगा, म्हे पिण लेसां संजम भार रे।
आप विना म्हें घरमें किम रहां, म्हें तो आपतणी छां लार रे॥ ६ ॥
घर मांहें थकां थे म्हां भणी, म्हांनें चखुभूत छो आधार रे।
हिवें साधपणा मांहे म्हां भणी, होसो अनेक गुणारा दातार रे॥ ७ ॥
जब सेगल राय कहे मित्रां भणी, थांरें घर छोडणरी चाय रे।
आप आप तणा कुटंब मभे, थापो वडा पुतर नें जाय रे॥ ८ ॥
सहंस पुरप उपाडें तेहवी सेवका, तिण मांहें बेसी तास रे।
मोटें मंडाणें करें सगला जणा, वेगा आवो हमारें पास रे॥ ९ ॥

इम सांभल नें सगला जणा, हुआ मन माहे अतंत हुलास रे।
राजा कह्यों तिम सगलो कीयो, आय उभा राजा रे पास रे॥ १० ॥
थांने आया देखे राय हरषीयों, सेवग ने कहें इम वांण रे।
मंडुक कुमर ने वेग सूं, राज बेसांणो मोटें मंडाण रे॥ ११ ॥
सेवग सुण तिमहीज कीयो, राज बेसांणो मोटें मंडाण रे।
तिणरो विस्तार छे अति घणो, मेघकुमर नी परें जाण रे॥ १२ ॥
दिख्या महोछव सेलग रायनां, कीधा छे मंडुक कुमार रे।
थावचा पुतर नां कीधां किस्न जी, तेहनी परे छें विसतार रे॥ १३ ॥
सहंस पुरष वहे तेहवी सेवका, सेलगराय बेठो तिण मांय रे।
पांच सो परधांन री सेवका, सेलगराय रे लारे जाय रे॥ १४ ॥
मस्तक नां केस राजा तणा, लीया पदमावती रांणी ताहि रे।
शेष विसतार जिम मेघकुमार नो, तिम जांण लीजों मन मांहि रे॥ १५ ॥
सुकदेव जी नें बंदणा करे, विनो कीयो जोडी हाथ रे।
सेलगराय संजम लीयों, पांचसों परधांन रे साथ रे॥ १६ ॥

●

दुहा

आचार सीखे पडिपक हुवा, ग्यारें अंग भण्या गुर पास।
सेलग नें सूंप्या सिष्य पांच सों, विनीत जांणीनें तास॥ १ ॥
चौथ छठादिक तप कीयों घणो, कीयो सेलगपुर थी वीहार।
पांच सों सिष्या करे परवस्त्या, विचरें जनपद देस मझार॥ २ ॥
एकदा प्रस्तावे सुकदेव जी, सहंस साधां सूं कीयों वीहार।
ग्रामांनुग्राम विचरता, आया पुंडरीक परवत मझार॥ ३ ॥
तिण सेत्रूंजा परवत उपरे, सगलाई कीयो छे संथार।
थावचा पुतर तणी परे, सगला गया मोष मझार॥ ४ ॥
सेलगराय रिषी तिण अवसरें, सजम पालें छे रूडी रीत।
पिण करम तणी गति बांकडी, ते सुणजों धर पीत॥ ५ ॥

ढाल : २८

[नणदल बिंद०]

सेलगराय रिषी तिणवार, अंतपंत कीयों तिण आहार हो। मुनिवर वेंरागी॥
वले तुछनें लूखो आहार लीधो, अरस विरस आहार पिण कीधो हो। मुनिवर वेंरागी*॥१॥

---

*आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ठंडो नें अति ऊनो आहार, ते पिण कीधों वारूंवार हो। मु०।
आहार कीधो कालातिकंत, वले खाधों मांन उपरंत हो॥ २॥
तिणसं वेदना परगट हुइ आय, सगलाइ सरीर रे मांय हो।
ते वेदना छे जाजलमांन, तिणरो चाल्यो नही उनमान हो॥ ३॥
वेदना अहियासतां दोहरी, कायर नें नही छे सोहरी हो।
खाज नें दाह उपनों आंणों, पितंजर सूं सरीर भरांणो हो॥ ४॥
तिण रोग सूं सरीर सूको, वले जावक पड गये लूखो हो।
आतंक रोग छे ठांम ठांम, मुनी खमें छे समें परिणांम हो॥ ५॥
एकदा सेलग अणगार, पांचसो साधां रे पिरवार हो।
सेलगपुर नगर तिहां आय, ओतो उतरीयो वाग मांय हो॥ ६॥
मंडुक राजा तिहां आय, वंदणा कीधी सीस नमाय हो।
सरीर लूखों सूकों तिण देख, वले जांण्यो रोग वशेष हो॥ ७॥
तिणसूं वीणती करें छे राजान, आपरें रोग छें असमांन हो।
तिणसूं अरज मांनों म्हांरी एक, म्हांरे वेद निपुण छे अनेक हो॥ ८॥
ओषध भेषद नें भात पांणी, रोगीया जोग निरवद आंणी हो।
तिणसूं रोग आपरों जावें, तो सरीर में साता थावें हो॥ ९॥
सरीर निरोगों होय जावें हो, तो उपदेस सुखे देणी आवें हो।
तो थे करसों घणों उपगार, घणा जीवा नें उत्तारसो पार हो॥ १०॥
म्हांरी रथसाला रे माय, उतरो तिण ठांमे आय हो।
वारूंवार कहेनें राय, ओतो आयो जिण दिस जाय हो॥ ११॥
वीणती निरदोषण कीधी, ते सेलगराय रिषी मांन लीधी हो।
बीजें दिन हुवो परभात, पांच सों साधां रे साथ हो॥ १२॥
रथसाला मे उतरीया आय, सेज्या संथारो जाचे ल्याय ताय हो।
जे जे ओषध वेदां वताया, ते निरदोष जाचे नें ल्याय हो॥ १३॥
वले वेंदां पिण ओषध दीधी, निरदोष जांणी नें लीधी हो।
मद पांणी वेंदां वताया, ते पिण निरदोषण ल्याया हो॥ १४॥
ओसघ मद पांणी रे जोग, तिणसूं उपसम्यों आंतक रोग हो।
घष्ट पुष्ट सरीर थयो ताह्यों, वले तेज पराकम आयो हो॥ १५॥

●

दुहा

अठा पेंहली संजम में दिढ रह्यो, सूरवीर पणें साहसीक।
रोग आगें मूल चलीयो नहीं, पिण जिभ्या लगाइ लीक॥ १॥

इण जिभ्या मे अवगुण घणां, खाय बोल विगारें ताय।
सेलगराय रिषी जिभ्या वस पड्यो, ते सुणजों चित ल्याय ॥ २ ॥

ढाल : २६

[आ अणुकंपा जिण आगन्यां में]

हिवे सेलगराय थयो परमादी, तिण जिभ्या रे वस वात विगोइ।
रस लोलपणों चोडें करवा लागो, तिणसूं पाचसो चेला मे परतीत खोई।
सेलगराय थयो परमादी* ॥ १ ॥

असांण पाण खादिम ने स्वादम, या च्यारूई आहार मांहे मुरछाणो।
असांणादिक रो हुवो गिरधी अतंत, वले मद पांणी पीअे कारण विण आणो ॥ से० २॥

अतंत हुवो छे इसरो लंपटी, मन चावें ते वसतु मांगी नें ल्यावें।
तिणसूं निज वसती न्यातीला छांडीने, ग्रांमाणुगाम वीहार कीयो नही जावें ॥ ३ ॥

उसनो ने उसनविहारी, वले पासथो ने पासथविहारी।
कुसीलीयो नें कुसीलविहारी, संसत्तादिक हुवो हीण आचारी ॥ ४ ॥

उसनो ते साधुपणा थी थाको, आलसू थयों पडिलेहणादिक मांहि।
पासथो ते चारित पाछें मेहलीया, पाछो थिर होवा री मन मे नही कांई ॥ ५ ॥

कुसीलियो तिण चारित विराध्यो, संसतो ते विनांदिकरी हांण।
पांच परमाद सवे ते संसतों, विराधक हुवों जिण धर्म पिछांण ॥ ६ ॥

सेखाकाल संबंधीया पीढ फलगादिक, परमाद रे वस पाछा दीया न जावें।
मडूक राजा ने जायगा सूंपने, जनपद देसमे वीहार करणी न आवें ॥ ७ ॥

●

दुहा

हिवे पंथग वर्जी नें पांच सो, एकठा मिलीया सहु कोय।
मांहोमांहीं मिसलत करें, पर भव साह्मो जोय ॥ १ ॥

ढाल : ३०

[सुणों भाइ थवरो मक०]

साधु मांहोमांही चितवे रे, हिवे करवो कवण विचार।
सेलग राय रिषी सिथल थयो, तिण दीधी वात विगार ॥
सुणो भाइ संता करवो कवण विचार* ॥ १ ॥

इण राज रमण रिध परहरी, छोड दीयो सर्व राज।
ओ साधु थइ ने संचर्यो, हिवें छोड दीधी सर्व लाज ॥ सुण० २ ॥

* यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

असणादिक च्यारूं आहार नो, गिरधी थयों छें अपार।
वले मद पांणी पीयें घणो, किणरी संका न आंणें लिगार॥ ३॥
ओ थयों उसनों पासथो, कुसीलियो हीण आचार।
वले परमांदी हुवों घणो, तिणसूं करणी न आवें वीहार॥ ४॥
आपां सगलां रा अधिपती, गुण रतनां री था खांण।
हिवडां एं सिथल थया, यांने करम लपेट्या आंण॥ ५॥
श्रमण निग्रंथ साधु भणी, करवो नही छे परमाद।
तो जों विचरां परमाद में, तो संजम मे हुवें असमाद॥ ६॥
तो श्रेय किलाण आपां भणी, परभात हुवें तिणवार।
सेलगराय रिषी ने पूछनें, करणो तुरत वीहार॥ ७॥
सेलगराय रिषीसर तेहनें, पंथग नें वीयावच थाप।
विचरां जनपद देस में, ज्यूं कटें आपां रा पाप॥ ८॥
ए राते करें विचरणा, पूछे सेगल नें परभात।
पंथग ने वीयावच थापीयों, वले करें पंथग सूं वात॥ ९॥
पंथग नें वीयावच थापीयो, जद संभोग थो ताय।
हिवे संभोग तोडी नीकल्या, त्यांरी कांण न राखी काय॥ १०॥
वीहार कीयों त्यांनें पूछनें, पिण वंदणा न करी ताय।
त्यांने ढीला भागल जांण नें, छोड चल्या मुनीराय॥ ११॥

●

दुहा

पंथग वर्जी पांच सो, वीहार कीयो तिणवार।
संजम पालें छें रूडी रीत सूं, ते विन मोटां अणगार॥ १॥
लारें पंथग विनो वीयावच करें, भाव भगत करें हित ल्याय।
ओषद भेषद भात पांणी तेहनें, आंणे आपें छें ताय॥ २॥
हिवें सेलगराय रिषी एकदा, विस्तीर्ण कीयां च्यारूंइ आहार।
मद पांणी पीयों वले तिण समे, सुखे सूतों छें तिणवार॥ ३॥
पडिकमणों काती चोमासी तणो, पंथग कीयों छें ताय।
खामणा करें छे सेलग भणी, मस्तक पग रे लगाय॥ ४॥

ढाल ३१

[चद गुप्त राजा सुणो]

मस्तक सू पग सघटयो, जब जाग्यो सेलग रिषी रायो रे।
कोप्यो सिघर उतावलो, बेठो हुवो छे ताह्यो रे।
सेलगराय रिषी कोप्यों, ॥ १ ॥
धिग धिगाय मान करतो थको, बोलें वचन विकरालो रे।
सेलगराय रिषी तेहनें, उठी अभितर भालो रे ॥ से०२॥
अपत्यपथीयो तू खरो, काली बोली अमावस जायो रे।
लज्या लिछमी बाहिरो, अकल नही तो मांह्यो रे ॥ ३ ॥
अकाले मरण वछे नही, तिणरो तू वछणहारो रे।
सुध बुध विगरी ताहरी, तूं पुन गयो परवारो रे ॥ ४ ॥
हू सूखे समावे सूतो हू तो, साता व्यापी सरीर मे आयो रे।
इण वेलां पग रों सघट्यों करी, मोनें किण पापी जगायो रे ॥ ५ ॥
ए वचन पथग सूणे तिहा, बीहनों घणो तिण ठामो रे।
घणी त्रास पाम्यो भय भ्रात हुवो, हाथ जोडी कहे छे आंमो रे ॥ ६ ॥
हू पथग सिष्य छू आपरो, चोमासी पडिकमणो करे ताह्यो रे।
हूं वादे खमाया आपनें, मस्तक पगरे लगायो रे ॥ ७ ॥
आज पछे वले आपरो, इसडो न करू अपराधो रे।
वारूवार खमाउ छू आपनें, हिवें मत करो आप विषवादो रे ॥ ८ ॥
म्हे निद्रा न जाणी आपने, तिणसूं म्हे संघट्यो कीधो रे।
ते हुइ असाता आपने, जब आप ओलभो मोनें दीधो रे ॥ ९ ॥

●

दुहा

इण दिष्टन्ते सर्व साध ने, बोलाय कह्यो भगवांन।
ए न्याय मेहलू था उपरे, ते सुणो सुरत दे कांन ॥ १ ॥
जे कोइ म्हारा साध साधवी, घर छोड हुवें अणगार।
सिथल हुवे सेलग नी परे, धिग तिणरो जमवार ॥ २ ॥
वले इह लोक विगडे तेहनो, फिट २ करे सहु लोग।
घणा साध साधवी श्रावक श्राविका, त्यामे हीलवा निदवा जोग ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले परलोग विगड्यो तेहनों, छेदन भेदन पामे अतत।
रुले संसार में अति घणो, उतकष्टो काल अनंत ॥ ४ ॥
तिणने हेलवा निंदवा जिणकह्यो, च्यार तीरथ रे माय।
तिणनें भाव सहीत वंदणा कीया, धरम किहांथी थाय ॥ ५ ॥
विनो वीयावच पंथक कीयों, वले असणांदिक दीया आण।
वले भाव भगत कीधी घणी, ते मोह करम वस जाण ॥ ६ ॥
उसनादिक पांचूं भणी, भाव भगत कीयां हुवे भड।
असणादिक दीयां ने विनो कीयां, नसीत मांहे चोमासी डंड ॥ ७ ॥
सेलग रो विनों पंथग कीयों, तिणमें कहे छे पाखडी धरम।
त्यांनें ठीक नही जिण धरम नी, भूला अग्यांनी भरम ॥ ८ ॥
वचन सुणे पंथग तणो, सेलगराय रिपीसर तांम।
अधवसाय उपनां मन तणा, वले चोखा वरत्या परिणांम ॥ ९ ॥

ढाल : ३२

[वीर कहे सुण गोयमा]

म्हे तो राजरमण रिध परहरी, दिख्या लीधी रे म्हे तो मोटे मडाण।
म्हे सीह जिम संजम पालीयो, रोग आया रे हेठो रह्यो जाण।
धिन धिन सेगलराय रिपीसर* ॥ १ ॥

हिवडा उसनादिक हूं थयों, रस लपटी रे हूंतो थयो छूं अतत।
यां परिणांमां में हूं मरूं, हूं उतकष्टों रे रुलूं काल अनंत ॥धि०२॥

हूं तो परमाद में पड गयो, तिणसूं मोनें रे छोड्यो साधा मतवंत।
ज्यां वेरागे घर छोडीयो, ते भागल ने रे कुण सेवे कर खत ॥ ३ ॥

नहीं कल्पें साधु ने सिथिल पणो, उसनादिक रे सगला बोल विचार।
तो श्रेय किलांण हिवे मों भणी, राजा ने रे पूछे करणो वीहार ॥ ४ ॥

पीढ फलग सेज्यादिक साथ रो, ग्रहस्थ ने रे पाछा सूपी ताहि।
साथे लेई पथग भणी, वीहार करु रे जनपद देस रे माहि ॥ ५ ॥

एहवी कीधी राते विचरणा, मडुक ने रे पूछी कीयो वीहार।
पथग सहीत दोनूं जणा, विचरे छे रे जनपद देस मझार ॥ ६ ॥

संजम पाले छे रुडी रीत सू, सूर वीर रे धीर साहसीक जाण।
मेरु परवत नीं परे अटल छें, करम कटे रे सुमता रस आण ॥ ७ ॥

हिवे पंथग वर्जी पांच सों, लोका आगल रे सुणे लीधी वात।
वीहार कीयो सेलगपुर नगर थी, पंथग ने रे लीवो छें साथ ॥ ८ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

संजम पाले छे सीह तणी परे, इम सुणीयो रे सगला जणा ताम।
मांहोमा मिलीया सहु एकठा, सगला जणा रे मुख सूं कहे आंम ॥ ६ ॥
सेलगराय रिषीसर सीह ज्यूं, विचरे छें रे जनपद देस मझार।
ते श्रेय किलाण आपां भणी, सेलग ने रे करणो अगीकार ॥ १० ॥
एहवी कीधी विचारणा, पंथग वर्जी रे पांच सो अणगार।
वींहार करे भेला हुवा, सेलग जी नें रे वांद्या वारुंवार ॥ ११ ॥
अे तो आलोए पडिकमे सुध हुवा, पालता थारे सुध निरमल जोग।
जद गुर सिष्य सारा भेला हुआ, सगलां सूं रे भेलो हुवो संभोग ॥ १२ ॥
साधां रे सगाइ आचार री, ओर सगपण रे त्यारे नही छेलिगार।
तुरत तोडें संभोग भागल थकी, धिन धिन छे रे ते मोटां अणगार ॥ १३ ॥
चारित्त पाल्यों घणा वरसां लगे, सेलग प्रमुख रे पांच सो अणगार।
सेत्रूजो परवत तिण उपरें, सगलां कीधो रे पादुगमण संथार ॥ १४ ॥
एक मास तणी सलेखणा, चित चोखे रे ध्याया निरमल ध्यांन।
च्यार करम खपाय ने, सगला ने रे उपनो केवल ग्यांन ॥ १५ ॥
शेष करम हुता ते खपाय ने, अंत समें रे गया मुगति रे माय।
तिहा अजरामर सुख सासता, ते सुख पाम्या रे आवागमण मिटाय ॥ १६ ॥
ए दिष्टंत दीयो सर्व साध ने, साधां ने रे तेड कह्यो भगवांन।
ए न्याय मेहलू थां उपरें, थे सुणजो रे सुरत देइ कांन ॥ १७ ॥
जे कोइ म्हांरा साध साधवी, घर छोडे रे हुवे छे अणगार।
ते सेलग जिम सुध पालसी, धिन धिन छे रे तिणरो अवतार ॥ १८ ॥
इह लोग तिणरो सुधरसी, धिन धिन रे करसी सहु लोग।
घणा साधु साधवी श्रावक श्रावका, त्यामे होसी रे घणो वांदवा जोग ॥ १६ ॥
वले परलोग सुधरयो तेहनो, दुख नही पामे रे इण ससार मझार।
सुखे सुखे करम काटने, उतावल सू रे जासी मोख मझार ॥ २० ॥
तिणने अरचवा वांदवा जोग जिण कह्यो, च्यारुइ रे तीरथ मांय।
तिणने भाव सहीत वदणा कीयां, भव भव रा रे पातिक दूर पलाय ॥ २१ ॥
एक इधकार थावचा पुतर तणो, त्यां पाछे रे सुकदेव जी जाण।
त्यां पाछे इधकार सेलग तणों, ए सगलाइ रे पोहतां छे निरवांण ॥ २२ ॥
यारा भाव ग्याता सूतर मझे, कह्या छे रे पांचमा अधेन मांहि।
तिण अनुसारे जोडी छे जुगत सूं, भव जीवांने रे समझावण ताहि ॥ २३ ॥
समत अठारें सताले समे, कातीक सुद रे आठम ने रिववार।
प्रसिध देस मेवाड में, जोड कीधी रे पुर सहर मझार ॥ २४ ॥

रत्न : १२

द्रौपदी रो बखांण

दुहा

अरिहंत सिध ने आयरिया, उवझाया सगला साध।
मुगत नगर नां दायका, ए पांचूं पद आराध ॥ १ ॥
गिनाता रा सोलमां अधेन मे, द्रोपदी नों अधिकार।
ते हुंती नागश्री ब्राह्मणी, ते सुणज्यो विस्तार ॥ २ ॥
चंपापुरी नगरी हुती, ते दीठां हरषित थाय।
तिहां सुभूमी भाग उद्यान थो, ईशाण कूण रे मांय ॥ ३ ॥
तिहां तीन ब्राह्मण सहोदर वसें, सोम ने सोमदत्त जांण।
सोमभूत भाई तीसरो, चाले कुल रीत प्रमाण ॥ ४ ॥
ते च्यारूंई बेद रा जाण छे, डाहा चतुर सुजांण।
वले अनेक शास्त्र ब्राह्मण तणा, त्यारा अरथां री कीधी पिछांण ॥ ५ ॥
नागश्री घरे सोम रे, सोमदत्त रे भूतश्री जांण।
सोमभूत तणे घर जखसिरी, ए रूप मे अतत वखांण ॥ ६ ॥

ढाल: १

[मम करो काया माया कारमी]

त्यांसू सुख भोगव छे ससार नां, वले रिध घणी घर माय रे।
कोई धनकर गंज सके नही, ते सांभलजो चित्त ल्याय रे।
भाव सुणो नागश्री तणा* ॥ १ ॥
खाता पीता वले खरचतां, वले दान दे घर अणुसार जी।
तोही नीठे नही सात पीढ्यां लगे, ते करे छे कवण विचार जी ॥भाव० २॥
हिवे तीनोंई भाया मिसलत करी, बांधी छे एकठ बात जी।
वारे वारे घरे आपणे, आपे जीमां एकण तणे हाथ जी ॥ ३ ॥
ए वचन माहोमांहि रो माननें, परठ बाधी तिण काल जी।
हिवें बारी बारी तीनू जीमता, भोजन अनेक रसाल जी ॥ ४ ॥
हिवें बारो आयो नागश्री तणो, तिण निपजाया च्यारूंई आहार जी।
रीत भात घणी जुगत सू, भोजन करे विवध प्रकार जी ॥ ५ ॥
वले सरदकाल रो नीपनों, आणियो तूंबडो एक जी।
जुगत घणी कर राधियो, मांहे घालिया द्रव्य अनेक जी ॥ ६ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले चींगट घाल बघारियो, हरख घणो मन आण जी।
पछे हाथ में ले तिण चाखियो, जब लागो छे विप समांण जी॥ ७॥
धिग धिग कहे हू दोभागणी, हूं अधन्न अपुन्नणी नार जी।
करे निंदा घणी आपरी, रखे हुवे म्हारो उघाड जी॥ ८॥
जो जाणेला देवर देवराणियां, ओ तूंबडो विष समाण जी।
तो ए करसी हेला निंदा मांहरी, तो छानो मेलूं एकंत जाण जी॥ ९॥
तिण छानों मेल्यो डरती थकी, ओर तूंबो रांध्यो आंण जी।
पछें सगलां ने तेड जीमाविया, गया आप आपरे ठिकांण जी॥ १०॥

●

दुहा

तिण काले नें तिण समे, धर्म घोष अणगार।
चंपानगरी पधारिया, साथे साधां रो बहु परिवार॥ १॥
आगल्यां मागे उतस्या, सुभूमी भाग उद्यान।
तिरण तारण भव्य जीव रा, गुण रत्नां री खान॥ २॥
धर्मघोष तणो शिष्य, धर्म रुची अणगार।
तिण तपकर काया सोखवी, सफल कियो अवतार॥ ३॥
ते प्रकृति रो भद्रिक छे, वले सरल घणो सुवनीत।
मास मास खमण पारणो करे, तेजू लेस्या सहीत॥ ४॥
त्यां पहिले पोहर सज्झाय करी, वीजे ध्यानज ध्याय।
तीजो पोहर ऊठ्या गोचरी, चंपानगरी माय॥ ५॥

ढाल : २

[आ अणुकंपा जिण आग्या में]

ऊंच नीच मझम कुल गोचरी करता, प्रवेश कियो नागश्री घर माह्यो।
साधु नें आयो देख तूंबो देवा काजें, नागश्री मन हरषित थायो।
धिग धिग छे नागश्री ब्राह्मणी नें*॥ १॥

उकरडी समान साधां नें जांण ने, वोलाय लेगी रसोडा घर मांह्यो।
तूंबडो कडवो ते विष सारिखो, साधां नें सगलो दियो वहिरायो॥ धि० २॥
तिरण तणो इणरे हुंतो ठिकाणो, जो भाव सूं देती निरदोप आहारो।
तठे कडवा तूंबा रो दान दे दुष्ण, पाप उपजाय डूवी काली धारो॥ ३॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

आहार पूरो आयो जाण मुनीश्वर, आलोवण आय कीधी गुर पास।
पछे पडगो उघाडे ने आहार दिखाल्यो, उण तूबा री आई करडी वास॥ ४ ॥
गुर ने आई करडी वास तूंबा री, तिणसू चाखवा ने घालियो मुख माहि।
विष भूत जाण कह्यो धर्मरुची ने, ए चाखवा जोग नही छे ताहि॥ ५ ॥
ए विष समान तूंबा नें खाधां, अकाले हुसी जुदा जीव काय।
तूं ओर आहार पाणी पारणो कीजे, ओ तूंबडो परठ दे एकंत जाय॥ ६ ॥
ए गुर नो वचन सुणे परठण चाल्यो, थड लेजाय परठ्यो एक बिंदू मात।
तिहा कीड्या आई चीगट परसंगे, त्यां हजारा गमे हुई कीड्या री घात॥ ७ ॥
एक बिंदू परठ्यां इतली कीड्या मूई, ते सगलो परठ्यां हुवे अतत संघार।
तो मोने श्रेय निरजरा धर्म हेते, सगलाई तूंबा रो करणो आहार॥ ८ ॥
आप सूं मरता जीव जाणे नें, कडवा तूंबा रो कीधो आहार।
कीडीया री अणुकपा आणी, धन-धन धर्मरुची अणगार॥ ९ ॥
आहार कीया एक मुहुरत पाछे, वेदना परगट हुई अतत।
बल प्राक्रम हीणो पड्यो जाणी, जब भड उपगरण ने मेल्या एकत॥ १० ॥
डाभ संथारो कीयो तिण काले, पूर्व साहमो बेसी मुनिराय।
नमोत्थुणं कीयो अरिहंत सिद्धा ने, हाथ जोडी नीचो सीस नमाय॥ ११ ॥
बीजो नमोत्थुण धर्मघोष थविर ने, धर्म उपदेशक आचार्य म्हारा।
म्हे सावद्य रा त्याग कीया त्या पासे, हिवडां म्हारे तेहिज त्याग छे सारा॥ १२ ॥
च्यारूआहार पचख तिण कीयो संथारो, आलोय पडिकम पाम्यां समाध।
धर्म सुक्ल ध्यान ध्याय चोखे चित्त, काल गया जिण धर्म आराध॥ १३ ॥

●

दुहा

तूंबो परठण ने गयो, धर्मरुची अणगार।
अजेस क्यू आयो नही, गुरा जाण्यो तिणवार॥ १ ॥
साध्रा ने तेड सताव सू, गुर बोल्या छे आम।
धर्मरुची अणगार ने, थे जाय जोवो सर्व ठाम॥ २ ॥
हिवे साधु तिहां थी नीकल्या, जोवता रूडी रीत।
आया कलेवर ऊपरे, दीठो चेतन रहीत॥ ३ ॥
कहे एह अकारज मोटो हुओ, त्या काउसग कीधो ताय।
पछे भड उपगरण ले आविया, गुर ने सूप्या आय॥ ४ ॥
हाथ जोडी गुर ने कहे, हुवो धर्मरुची रो विजोग।
गुर साभल तिण अवसरे, दीयो पूर्व ग्यान उपयोग॥ ५ ॥

ढाल : ३

[दान कह्यो जिणवर वडो]

पूर्व ग्यान सू जाणियो, तूंवां तणो विरतत।
ते नागश्री वहिराय ने, मार्‍यो मोटो सत।
धिग-धिग नागश्री ब्राह्मणी* ॥ १ ॥
हिवे साध साधवियां भणी, गुर तेडी कहे एम।
धर्मरुची रा मरण री, बात सुणो धर प्रेम ॥ धि० २ ॥
अतेवासी माहरो, धर्मरुची अणगार।
मास खमण नें पारणे, ऊठ्यो नगर मझार ॥ ३ ॥
सरदकाल नों तूंवडो, कडवो विष समाण।
नागश्री दीयो जाण नें, तिणसूं छोड्या प्राण ॥ ४ ॥
मोटो रिषेश्वर तेहनी, कीधी अकाले घात।
नागश्री नें तूंवा तणी, मांडे कही सर्व बात ॥ ५ ॥
अतेवासी माहरो, स्वार्थ सिद्ध गयो तेह।
महाविदेह खेतर मझे, चव लेसी भव छेह ॥ ६ ॥
ए गुर नो वचन साधा सुणी, आया नगरी माय।
घणा पंथ मिले तिहां, बोले एहवी वाय ॥ ७ ॥
नागश्री साधु मारियो, कडवो तूंवो वहिराय।
अधन अपून्न आ पापणी, इसडो कीधो अन्याय ॥ ८ ॥
हेला निंदा करे घणी, चंपा नगरी माय।
ए वात सुणाय लोकां भणी, आया जिण दिशि जाय ॥ ९ ॥
ए वात लोकां मे विस्तरी, प्रसिद्ध हुई ठाम ठाम।
नागश्री साधु मारियो, इण कीधो भूंडो काम ॥ १० ॥
तीनूंई ब्राह्मण सुणी, नागश्री नी वात।
कडवो तूंवो दे साधु ने, कीधी अकाले घात ॥ ११ ॥
ए वात सुणी तीनू लाजीया, कोप चड्यो मन मांय।
इण कुल नें कलंक लगावियो, हिवे करवो कवण उपाय ॥ १२ ॥
आपणा घर में आछी नही, एहवी दुष्टण नार।
गेहणा कपडा ले एहना, काढो घर सू वार ॥ १३ ॥
नागश्री ब्राह्मणी तिहां, घणी निभ्रंछी आय।
कहे अपत्थ पत्थणी तूं पापणी, भूंडा लखण तो माय ॥ १४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

मास खमण रे पारणे, कडवो तूंबो वहिराय।
ते मोटो रिषेश्वर मारियो, ते तूं कारण वताय ॥ १५ ॥
मारे कूटे अतिघणी, बोले अनेक विध गाल।
जात कुजात री उपनी, तू मूढो मतिय दिखाल ॥ १६ ॥
ताडे तरजे एहने, कर कर मन मे रोस।
घर बारे काढी कूट नें, गेंहणा कपडा खोस ॥ १७ ॥

●

दुहा

हिवे नागश्री ब्राह्मणी तणे, प्रगट हुवा छे पाप।
सेण सगा उत्तर दीयो, वधियो सोग सताप ॥ १ ॥
घर बारे काढी थकी, वेदल विलखो नूर।
चपा नगरी में तेहनो, कर रह्या फेन फितूर ॥ २ ॥
तीन च्यार मारग मिले, घणा पथ मिले तिण ठाम।
तिहा फिट २ लोक करे घणी, ले ले तिणरो नाम ॥ ३ ॥
जिहा जाए तिहा हेलीजती, चपानगरी मांय।
सुख साता किहाई नही, दुख माहे दिन जाय ॥ ४ ॥

ढाल : ४

[माधव इम बोले रे०]

केई जायगा न दे रहिवा भणी रे, केई आवा न दे घर माय।
वले कुण कुण पामी अवस्था रे, ते सुणजो चित्त लगाय रे।
कर्मा गति जोयजो* ॥ १ ॥
वले पेहरण वस्त्र अजोग छे रे, ते वटका साध्या आण।
जूना मलीन दीसे बुरा रे, एतो अशुभ उदेरा अहनाण रे ॥ क० २ ॥
फिरे घर घर भिख्या मागती रे, भागो सिरावलो हाथ।
वले पाणी पीवा ने ठामडो, बोखो घडो छे तिणरे साथ रे ॥ ३ ॥
केश माथा रा वीखर्‌या रे, वले दीसे घणी विपरीत।
बोले वचन दयामणा रे, लोक करे घणी कूपीत रे ॥ ४ ॥
वले माख्या चटका दे घणी रे, तिण केडे लागी जाय।
केई उडाई पिण उडे नही, केई उड पाछी बेसे आय रे ॥ ५ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जिहां जाए तिहां हुड हुड करे रे, वले गाल्यां वोले अनेक।
सहुलोक हुवा वेरी जिसा, पिण मित्र न दीसे एक रे॥ ६ ॥
आजीवका करती फिरे रे, इण चंपानगरी मांय।
वले इणहिज भव में ऊपनां, सोले रोग शरीर मे आय रे॥ ७ ॥
सास[1] खास[2] जरा[3] दाह[4] ऊपना रे, कुखशूल[5] भगंदर[6] जांण।
वले हरस[7] अजीर्ण[8] परगट्या, दिष्ट[9] ने सीससूल[10] पिछांण रे॥ ८ ॥
आहारअपचो[11] ने आंखवेदना[12] रे, कान वेदना[13] उपनी आण।
खाज[14] व्यापी सर्व देह मे, उदरसोजो[15] नेकोढ[16] पिछाण रे॥ ६ ॥
सोले रोगां कर प्राभवी थकी रे, आर्त्त रुद्र ध्यान ध्याय।
आउखो पूरो करी, पडी छठी नरक मे जाय रे॥ १० ॥

●

दुहा

एक नीबोली वायां थकां, लागे नीबोली अनेक।
बीज सारू फल नीपजे, ते समझो आण ववेक॥ १ ॥
ज्यूं करडो तूंबो दे साधु नें, बांध्या कर्म अथाय।
तिण वस वधास्यो कर्म नो, ते चिहुंगति गोता खाय॥ २ ॥
छठी नरक गई तिहां, खेतर वेदना अनत।
वले तिहां थी निकल दुख भोगवे, ते सुणजो विरतत॥ ३ ॥

ढाल : ५

[कर्म भुगतियांई छूटियें]

छठी नरक सूं मर हुई माछलो, तिहां पामी शस्त्र सू घात रे।
ते मर ने गई नरक सातमी, तठे सुख नहीं तिलमात रे।
कर्म भुगतियाई छूटिये[1]॥ १ ॥

त्यां थी मर ने हुई वले माछलो, त्यां पिण कीधो तिमहिज काल रे।
दूजीवार गई नरक सातमी, बांधे कर्म रा जाल रे॥ क० २ ॥
दूख भोगवे सातमी नरक नां, वले मच्छ हुई तीजीवार रे।
तिहां कर्म बांधे मूंई तिण विधे, गई छठी नरक मझार रे॥ ३ ॥
छठी नरक सूं नीकली, अस्त्री हुई कपट भडार रे।
तिहां पिण कर्म उपाय ने, छठी नरक गई तीजीवार रे॥ ४ ॥

---

[1] यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले छठी नरक सूं निकली, अस्त्री हुई दूजीवार रे।
ते मर नें गई नरक पाचमी, उठे खाधी अनती मार रे॥ ५ ॥
पांचमी नरक नां दुख भोगवे, ते मर ने हुई छे साप रे।
वले फेर गई नरक पांचमी, संचे बहुला पाप रे॥ ६ ॥
वले पांचमी नरकथी नीकली, सर्प हुई दूजीवार रे।
तिहां पिण कर्म उपाय ने, गई चोथी नरक मझार रे॥ ७ ॥
आ चोथी नरक सूं नीकली, सिंह हुवो दुष्टी जीव रे।
वले चोथी नरक मांहें गई, तिहा पामी दुख अतीव रे॥ ८ ॥
चोथी नरक सूं निकली, सिंह हुवो दूजीवार रे।
तिहां पिण कर्म उपाय ने, गई तीजी नरक मझार रे॥ ९ ॥
तीजी नरक मांसूं नीकली, पखी हुवो दुष्टी जीव रे।
वले फेर गयो नरक तीसरी, तिहां पाडी बहुली रीव रे॥ १० ॥
वले तीजी नरक सूं नीकली, पंखी हुवो दूजीवार रे।
तिहां अशुभ कर्म उपाय नें, गई दूजी नरक मझार रे॥ ११ ॥
दूजी सूं नीकल भुजपर हुवो, तिहां बांध्या कर्म अतत रे।
फेर गई नरक दूसरी, तिहा खाधी मार अनंत रे॥ १२ ॥
वले दूजी नरक सूं नीकली, आ भुजपर हुवो दूजीवार रे।
ते मरने पेहली नरके गई, तिहा खाधी अनती मार रे॥ १३ ॥
तिहा थी नीकल सन्नी तिर्यंच हुवो, सन्नी मर हुवो असन्नी तिर्यंच रे।
ते असन्नी मर पेहली नरके गयो, करे अशुभ कर्म रो सच रे॥ १४ ॥
छेहलो आउखो पेहली नरक रो, पल रे असंख्यात मे भाग जाण रे।
ओर आउखो सर्व नरक रो, उतकष्टो सगले पिछाण रे॥ १५ ॥
सस्त्र सूं सगले मूंई, सगलेई दाघ ज्वर जाण रे।
इण रीते गई सर्व नरक मे, पामी दुखा री खाण रे॥ १६ ॥

●

दुहा

नरक तणा दुख भोगवे, हिवे आई तिर्यंच माय।
तिहां दुख भोगविया किण विधे, ते सुणज्यो चित्त ल्याय॥ १ ॥
खहचर भुजपर तेहने, वले उरपर थलचर जाण।
जलचर तिर्यंच पांचमों, त्यांरा भेद अनेक पिछाण॥ २ ॥
यां पांचूंई तिर्यंच नीं, लाखां गमें कुल कोड।
त्यांमे भव कीया छे लाखां गमे, पाम्यां दुख अघोर॥ ३ ॥

पछे चोरिंद्री मे भव कीया, वले तेइंद्री वेइंद्री मांय।
त्यांरी लाखां गमे कुल कोडी छे, तठे लाखा कीया भव आय॥ ४ ॥
वले वनस्पति ने वाउकाय मे, तेउ अप ने पृथ्वीकाय।
यारी पिण कुल कोडी लाखां गमे, इमहिज भव कीया ताय॥ ५ ॥
अनुक्रमे कीया भव इण विधे, तिहां पाम्यां दुख अथाह।
सगलेई मूंई शस्त्र थकी, सगलेई पामी दाह॥ ६ ॥
कडवो तूंबो वहिरायो साधु ने, तिणसूं ए दुख पाम्यां अनंत।
तो साधां री निंदा करे सदा, त्यारो होसी कुण विरतंत॥ ७ ॥
नदीरा पाखाण नी परे, घसिया कर्म कठोर।
आय उपनी मानव भव मझे, पिण न मिट्यो कर्मा रो जोर॥ ८ ॥

ढाल : ६

[नमीराय धिन धिन तू अणगार]

जीहो इण जंबूदीप भरत खेत मे, चंपापुर नगरी मझार।
जीहो तिहां सागरदत्त सारथवाह वसे, तिणरे भद्रा नामें नार।
चतुरनर जोवो कर्म विपाक* ॥ १ ॥
जीहो नरकादिक दुख भोगवी, तिहां परवस कर कर रीव।
जीहो भद्रा उदर आय अवतरी, ते नागश्री नो जीव॥ च० २ ॥
जीहो अनुक्रमें जनम मोटी हुइ, तिणरो रूप घणो अभिराम।
जीहो सुंहाली गजतालवा समी, तिणसूं सुकुमालका दीयो नाम॥ ३ ॥
जीहो जिनदत्त सेठ तिहां वसे, तिणरे भद्रा नामे नार।
जीहो सागर पुतर छे तेहने, घरे रिध रो घणो विस्तार॥ ४ ॥
जीहो एक दिवस सुकुमालका, रमे कनक दडो ले हाथ।
जीहो घर रा डागला उपरे, अनेक दास्यां रे साथ॥ ५ ॥
जीहो जिनदत्त सेठ तिण अवसरे, मोह्यो सुकुमालका रूप देख।
जीहो पुतर ने परणावण तणी, उपनी मन माहें वसेख॥ ६ ॥
जीहो जिनदत्त आयो घरे आपणे, साथे मित्र न्यातीले ताम।
जीहो आयो सागरदत्त ने घरे, मिले वेठा वेहुं एक ठाम॥ ७ ॥
जीहो जिनदत्त सागरदत्त नें कहे, थारी पुतरी सुकुमालका नाम।
जीहो द्यो म्हारा सागर पुतर भणी, जुगतो छे ए काम॥ ८ ॥
जीहो सागरदत्त कहे इण पुतरी तणो, मोसूं विरहो खम्यो नहीं जाय।
जीहो राखो जमाई घरे मांहरे, तो हूं पुतरी देऊं परणाय॥ ९ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जीहो ए वचन सुणे सेठ ऊठियो, घरे पुछ्यो पुतर नें आय।
जीहो पुतर सुणे बोल्यो नही, जब सेठ जाण्यो अभिप्राय ॥ १० ॥
जीहो मंगलीक तिथिवार जाण नें, मित्र न्यातीला बोलाय।
जीहो सागर ने बेसाण्यो सेवका मझे, सहंस पुरखां उपाडी ताय ॥ ११ ॥
जीहो सागरदत्त सारथवाह ने घरे, आई मोटे मंडाणे जान।
जीहो त्यांरी भाव भगत कीधी घणी, वले दीयो आदर सनमान ॥ १२ ॥
जीहो ज्यारूंई आहार जीमाविया, मिलिया जानी माडी रा थाट।
जीहो सुकुमालका नें सागर भणी, वेसाण्यां बेहुं नें पाट ॥ १३ ॥
जीहो स्नान दोया ने कराय नें, भारी वस्त्र आभूषण पहिराय।
जीहो अगन्यादिक होम करे घणा, हथलेवो मेलायो ताय ॥ १४ ॥
जीहो सुकुमालका रा हाथ रो, फरस करलो लागो तिणवार।
जीहो खडगधारा करवत सारिखो, वले पाछणा केरी धार ॥ १५ ॥
जीहो भाला री अणी सूयां री अणी, विछू डक सम वेदना जाण।
जीहो वले उन्हो लागो हाथ एहवो, भोमर खेरअंगार समाण ॥ १६ ॥
जीहो हथलेवो राख्यो मन विना, दुख वेद्यो मुहुरत मात।
नीठ सागर नें सुख हुवो, छूटो हथलेवा सूं हाथ ॥ १७ ॥
जीहो सागर सुकुमालका परण्यां पछे, असणादिक आहार निपजाय।
जीहो सीधी जान जीमाय नें, ते तो आया जिण दिगि जाय ॥ १८ ॥

दुहा

हिवे सागर ने सुकुमालका, आया घर आवास।
बेहुं बेठा एकण सेज्या ऊपरे, मन मे अतत हुलास ॥ १ ॥
सुकुमालका रा शरीर रो, करलो लागो फरस विपरीत।
सागर दुख वेद्यो घणो, ते तो आगला वाली रीत ॥ २ ॥
निद्रा आवी सुकुमालका, जब सागर उठ्यो ताम।
आपणी सेज्या ऊपरे, आय सुखे सूतो तिण ठाम ॥ ३ ॥
सुकुमालका जागी तिण अवसरे, नही दीठो भरतार।
ऊठे आय सूती सागर कने, एकण सेझ मझार ॥ ४ ॥
वले सागर दुख पाम्यों घणो, अग्नि ज्यूं वल ऊठ्यो अंग।
जब सुकुमालका सूं सागर तणो, जावक हुवो मन भंग ॥ ५

ढाल : ७

[बिछियानी—ए देशी]

निद्रा आई जागी सुकुमालका, जब सागर चिंतव्यो एम रे।
आ तो अग्नि सारिखी अस्तरी, तिणसूं दिन काढूंला केम रे।
जोवो कर्म तणी विटंबणा* ॥ १ ॥

एहवी करी विचारणा, हिवे सागर सेज्या सूं ऊठ रे।
द्वार खोली नें बारे नीकल्यो, देई सुकुमालका ने पूठ रे ॥जो २॥

पंखी छूटो कसाई रा हाथ सूं, जब डरतो जाए दूर न्हास रे।
ज्यूं सागर तजी सुकुमालका, तिणरी जावक छोडी आस रे॥ ३ ॥

हिवे सूती जागी सुकुमालका, सागर ने न दीठो पास रे।
जब आरत ध्यान करती थकी, आंसूडा न्हांखे बेठी उदास रे॥ ४ ॥

परभाते झारी ले दासी तिहां, आई सुकुमालका रे पास रे।
आरत ध्यान ध्यावती देख नें, निरणो कीयो पूछे तास रे॥ ५ ॥

हिवे दासी तिहां थी नीकले, आए सेठ नें कह्यो विरतंत रे।
दासी वचन सुणे तिण अवसरे, सेठ नें कोप चढ्यो अतंत रे॥ ६ ॥

सागरदत्त आयो जिनदत्त रे घरे, धरतो मन मांहें द्वेष रे।
आए दीया ओलंभा अतिघणा, करडा कह्या वचन वशेष रे॥ ७ ॥

एहवा वचन सुणे जिनदत्त तिहां, आयो पुतर कन्हे तिण ठाम रे।
आय दीया ओलंभा अतिघणा, कहे भूंडो कीयो थें काम रे।
हिवे जा तूं सागरदत्त नें घरे॥ ८ ॥

पुतर कहे परवत सूं पड मरूं, कहो तो खाड में पड मरुं जायजी।
कहो तो वृक्ष चढि नें पड मरूं, कहो तो पडूं पाणी में जायजी।
पिण नहीं जाऊं सागर नें घरे॥ ९ ॥

कहो तो अग्नि मे बेसी बल मरूं, विष शस्त्र पासी खायजी।
गृधपंखी आगे खवराय मरूं, कहो तो दीक्षा ले मुंड थाय जी॥ १० ॥

कहो तो उठ जाऊं परदेश में, कहो तो मरूं करे अपघातजी।
बले ओर उपाव करूं घणा, पिण आ नही मानूं बात जी॥ ११ ॥

सागरदत्त ऊभो थो भीत आंतरे, ए वचन सांभल लाज्यो मन मांय रे।
भुख बारे जाव काढ्यो नहीं, ओ तो आयो जिण दिशि जायजी॥ १२ ॥

सागरदत्त आयो घरे आपरे, तिण सुकुमालका नें बोलाय रे।
खोला में बेसाणी तेहनें, हिवे किण विध बोले वाय रे॥ १३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दुहा

सेठ कहे बेटी भणी, तूं मत कर फिकर लिगार।
तू प्राण वल्लभ लागे तेहनें, एहवो आणू भरतार ॥ १ ॥
इत्यादिक मीठे वचने करी, तिणने सीख दीधी संतोख।
हिवे एक दिवस आवास में, सेठ ऊंचो बेठो छे गोख ॥ २ ॥
राज मारग में जाता थकां, दीठो भिख्यारी एक।
तिणरा शरीर री दुरगंध सूं, माख्यां भिणके अनेक ॥ ३ ॥
फाटा मेला वस्त्र पहिरणे, वले भागी लकडी हाथ।
फूटो सिरावलो आहार ने, वोखो घडो पाणी रो साथ ॥ ४ ॥
ते घर २ भिक्षा मागतो, दीठो अतत मलीन।
तिणने जमाई थापवा, सागरदत्त मन कीन ॥ ५ ॥

ढाल : ८

[केदारो०]

हिवे सागरदत्त तिण अवसरे रे हा, चाकर पुरुष वोलाय।
कर्म बिटंबणा।
कहे इण भिख्यारी ने ल्यावो इहा रे हा, खावा पीवा रो लोभ बताय।
कर्म बिटंबणा ॥ १ ॥
इणरा सिरावलादिक मेलाय ने रे हा, इणने मरदन स्नान कराय। क०।
वस्त्र गहणा पहिराय ने रे हा, च्यारूंई आहार जीमाय ॥ २ ॥
इण विध कर ल्यावो एहने रे हा, मोने सूंपो आण।
सेवग सूण लेवा गया रे हा, वचन करे परिमाण ॥ ३ ॥
लाभ दिखायो तेहने रे हा, आण्यो घर मझार।
वस्त्रादिक अलगा मेलावता रे हा, ओ रोयो बागां पाड ॥ ४ ॥
जब सेठ कहे चाकर भणी रे हा, ओ क्यू रोवे बागां पाड।
जब चाकर हाथ जोडी कहे रे हा, विवरा सुध विचार ॥ ५ ॥
जब सेठ कहे चाकर भणी रे हा, इणने उपजावो विश्वास।
इणरी माया मात्रा भेली करी रे हां, मूको इणरे पास ॥ ६ ॥
चाकर सुण तिमहिज कियो रे हां, मरदन स्नान कराय।
गेहणा वस्त्र पहिराय ने रे हां, वले च्यारू आहार जीमाय ॥ ७ ॥
पछे सेठ ने सूंप्यो आण ने रे हा, हिवे सुकुमालका ने सिणगार।
सेठ कहे पुत्री सूंपूं तुज भणी रे हा, सुख भोगव संसार ॥ ८ ॥

हिवे भिख्यारी महलां गयो रे हा, सुकुमालका रे लार।
सूता बेहुं आवास मे रे हां, एकण सेझ मझार ॥ ९ ॥
सुकुमालका रा शरीर नो रे हां, फर्श लागो जाणे अंगार।
जब इण पिण दुख वेद्यो घणो रे हा, सागर जिम विस्तार ॥ १० ॥
जब ओ पिण सूती मेल उठियो रे हां, गेहणा वस्त्र उतार।
माया मात्रा लेई मूलगी रे हा, न्हाठो घर सू वार ॥ ११ ॥
हिवे सुकुमालका जागी तिहा रे हां, इणनेंई न दीठो पास।
जब आरत ध्यान करती थकी रे हा, बेठी मन मे उदास ॥ १२ ॥
दासी झारी ले आई तिहा रे हा, विलखी बेठी जाण।
पूछे ने निरणो कियो रे हां, कह्यो सेठ ने आण ॥ १३ ॥
सेठ सांभल आयो तिहा रे हा, खोला माहे बेसाण।
कहे थे पूर्व कर्म संच्या घणा रे हा, ते उदय थया छे आण ॥ १४ ॥
ते कर्म भोगव तूं तांहरा रे हां, मत कर आरत ध्यान।
असणादिक निपजाय नें रे हां, तूं बेठी देवो कर दान ॥ १५ ॥
इण घणी संतोषे तेहनें रे हां, सेठ लागो घर काम।
आ दान देवा लागी तिण अवसरे रे हां, पिण न मिटचा विषे सूं परिणाम ॥ १६ ॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, चंपापुर नगर मझार।
आई गोवालिया आरज्यां, साथे बहु परिवार ॥ १ ॥
एक सिघाडो दोय साधव्यां तणो, आयो सागरदत्त घर माय।
सुकुमालका ऊठ वंदणा करी, नीचो सीस नमाय ॥ २ ॥
असणादिक वहिराय ने, आ बोले जोडी हाथ।
मोनें भरतार परणे परहरी, मोमे दोष नही तिलमात ॥ ३ ॥
थे पडित चतुर दीसो घणा, थें करो मोसू उपगार।
सिखावो मंत्रादिक मो भणी, ज्यूं वस हुवे भरतार ॥ ४ ॥
जब साध्वी बोली तिण अवसरे, देई कानां आडा हाथ।
एहवो करवो तो जिहांई रह्यो, मोने सुणवी न कल्पे वात ॥ ५ ॥
तूं कहे तो धर्म केवली तणो, म्हे संभलावां ताम।
जब धर्म सुणे हुई श्राविका, व्रत लीया तिण ठाम ॥ ६ ॥

ढाल : ६

[सल्य कोई मत राखजो ए०]

अनुक्रमे चारित लियो, हुई सुमति गुप्ति ब्रह्मचारी रे।
उपवास बेलादिक तप करे, हिवे किण विध करे खुवारी रे।
जोयजो रे कर्म विटंबणा* ॥ १ ॥

आय गुरुणी नें इम कहे, मोनें आगन्यां देवो आपोजी।
तो हू बेले २ पारणो करे, लेऊ सूरज साहमी आतापोजी ॥ जो० २ ॥

जब गुरुणी कहे कल्पे नही, साधवियां नें नगरी बारो रे।
जो थारे लेणी आतापना, तो ले तू थानक मझारो रे ॥ ३ ॥

जब वचन न मान्यों गुरुणी तणो, आपरे छादे बेलो ठायो रे।
सुभूमी भाग उद्यान रे, कन्हे लीधी आतापना जायो रे ॥ ४ ॥

पांच पुरुष गोठिला तिहां वसे, चपानगरी मझारो रे।
त्यांने खून गुनो राय बगसियो, त्यारे रिध कर भरिया भंडारो रे ॥ ५ ॥

ते तो हटक न मानें मा बाप री, वले लाज शर्म नहीं कायो रे।
भोगी भरम ज्यू फिरता थका, आया वेश्या रा घर माह्यो रे ॥ ६ ॥

देवदत्ता गणिका ने साथे करी, गया सुभूमी भाग उद्यानो रे।
करे विटंबणा तेहसूं, ते सुणो सुरत दे कानो रे ॥ ७ ॥

एकण बेसाणी खोला मझे, एकण छत्र राख्यो तिण माथे रे।
एक माला पहिरावे फूल री, एक चमर बीजे लेई हाथे रे ॥ ८ ॥

एक अलतादिक सूं पग रगे, इम पांचोई कर रह्या कीला रे।
सुकुमालका तिण अवसरे, एहवी करती दीठी लीला रे ॥ ९ ॥

हिवे सुकुमालका मन चिंतवे, इण पूरव पूण्य उपाया रे।
ते भोगवती विंचरे इहां, एतो भाग वले सुख पाया रे ॥ १० ॥

जो तप नेम रा फल नीपजे, लागे करणी रा फल सारो रे।
तो हू पायजो आगला भव मझे, एहवा पच भरतारो रे ॥ ११ ॥

एहवो निहाणो करे तिहां, पाछी आई ठिकाणे रे।
करे विभूषा शरीर नी, हाथ पग धोवती सक न आणे रे ॥ १२ ॥

वार वार धोवे मस्तक मूढो, थणने कांख आंतरा धोवे रे।
गुज्झ प्रदेश धोवे घणा, आ परभव साहमो न जोवे रे ॥ १३ ॥

सूए बेसे उभी रहे तिहां, पाणी सू छाटे ठामो रे।
जब गुरुणी कहे सुकुमालका भणी, तोनें कल्पे नही ए कामो रे ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

हिवे प्रायश्चित ले तूं एहनों, काढ अभितर सल्लो रे।
पिण सुकुमालका मान्यों नही, इणने कर्मां दीधो टल्लो रे॥ १५॥
पछे गोवालियादिक आर्या, हेलवा निदवा लागी रे।
जब ऊवी करे विचारणा, थानक छोडी दूर भागी रे॥ १६॥
हिवे जायगां जाच जूई रही, आपरे छादे थायो रे।
हाथ पगादिक धोवे घणा, किणरी हटक न माने कोय रे॥ १७॥
उसन्नादिक बोल आदरया, चारित विराध्यो तामो रे।
इण ज्ञानादिक गुण परहरया, भूंडा रहे परिणामो रे॥ १८॥
घणा वर्षां लगे सुकुमालका, एहवी दिख्या पालो रे।
आयो संथारो दिन पनरे तणो, पछे कियो तिहांथी कालो रे॥ १९॥
मरने गई सुर दूसरे, काढ्यो नही तिण सल्लो रे।
गणिका पणे जाय ऊपनी, पाम्यो आउखो नव पल्लो रे॥ २०॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, कंपिलपुर नगर मझार।
द्रूपदराय वसे तिहां, चूलणी तस घर नार॥ १॥
देवगणिका तणा सुख भोगवे, देव आउखो मूंक।
पुत्री पणे आय ऊपनी, चूलणी राणी री कूंख॥ २॥
नव महीनां पूरा हुवा, पुत्री जनमी ताम।
बारमे दिन न्यात जीमाय ने, गुण निपन्न दियो नाम॥ ३॥
द्रुपद राजा री डीकरी, चूलणी री अंग जात।
तिणसू दियो नाम द्रोपदी, प्रसिद्ध लोक विख्यात॥ ४॥
पांच धाया कर मोटी हुई, उतकष्टो रूप वखाण।
लावन जोवन करे सोभती, डाही चतुर सुजाण॥ ५॥
तिण अवसर मा द्रोपदी तणी, स्नान शृंगार कराय।
द्रुपद राजा कन्हें मोकली, वांदण पिता रा पाय॥ ६॥
द्रोपदी आय पिता कन्हे, हर्षे वाद्या पाय।
जब राय बेसाणी खोला मझे, रूप देखी ने इचरज थाय॥ ७॥

ढाल : १०

[डाभ मुजादिक नीं डोरी०]

हिवे द्रुपद राजा बोले वाय, निज पुत्री ने वचन सुणाय।
राजा जुव राजादिक जोय, आछो जाण परणावूं तोय॥ १॥

कदा सुखणी दुखणी तूं थाय, पिण म्हारा मन री खटक न जाय।
तिणसू स्वयंवरा मंडप मंडाऊ, राजा जुव राजादिक बोलाऊ ॥ २ ॥
थारे मन मान्यों करे भरतार, इम कहे सीख दीधी तिवार।
हिवे द्रुपद राजा दूत बोलाया, कहे तू द्वारका नगरी जाय ॥ ३ ॥
जठे वसे छे कृष्ण मुरार, समुद्र विजय आदि दश दसार।
वले देवादिक पांच जाण, महा मोटा वीर बखाण ॥ ४ ॥
साढा तीन कोड कुमार, दुरदंत छे साठ हजार।
छप्पन सहंस बलवंत सधीरा, इकवीस हजार छे वीरा ॥ ५ ॥
सोले सहंस तिहां राजान, सेठ सारथवाह रिधवान।
इत्यादिक त्यां पासे जाय, दोनूं हाथ जोडीनें बधाय ॥ ६ ॥
कहीजे द्रौपदी केरो जाणो, स्वयंवरा मंडप मंडाणो।
मुज वीनतडी अवधारो, किरपाकर आप पधारो ॥ ७ ॥
द्रुपद राजारी सांभलवाण, दूतकर लीधी परमाण।
निज पोतारे घर आयो, घणो साथ समान बोलायो ॥ ८॥
च्यार घटा रथ ऊपर वेस, द्वारिका में कियो परवेश।
आयो कृष्ण री उवठाण साल, हेठो उतरियो तिणकाल ॥ ९ ॥
आय ऊभो कृष्णजी रे पास, जय विजय कर वधावे तास।
द्रुपदराय कही ते बात, कृष्णजी आगे कही जोडे हाथ ॥ १० ॥
कृष्णजी सुणे हरषित थाय, स्वयवरा मडप देखण री चाय।
दूत नें सनमान सतकार, पाछी सीख दीधी तिणवार ॥ ११ ॥
हिवे कृष्णजी चाकर बुलाय, कहे तूं सुधर्मी सभा मांहे जाय।
समुदाणी भेरी वजाय, ज्यूं सर्व साथ भेलो हुवे आय ॥ १२ ॥

दुहा

वचन सुणे श्रीकृष्ण रो, चाकर हरषित थाय।
सुधर्मी सभा मझे, भेरी वजाई आय ॥ १ ॥
हुंता लोक परमाद मे, विषे राग रंग तान।
शब्द सुणे भेरी तणो, सहुको हुवा सावधान ॥ २ ॥
केई हाथी घोडा चढ नीकल्या, केई पाला केई रथ जाण।
समुद्र विजय राजा आदि दे, ऊभा कृष्ण समीपे आण ॥ ३ ॥
कृष्णजी कहे चाकर भणी, हस्तीरत्न सिणगार।
वले चउरंगणी सेना सझो, मत करो ढील लिगार ॥ ४ ॥

चाकर सुण तिमहिज कियो, पाछी आज्ञा सूंपी आण।
जंब पटहस्ती चढ कृष्णजी, नीकल्या मोटे मंडाण ॥ ५ ॥
द्वारिका नगरी विचे थई, कंपिलपुर साहमां जाय।
द्रोपदी ने परणवा तणी, सगलां रे लग रहि चाय ॥ ६ ॥

ढाल ११

[इंद्र कहे नमीराय नें]

दूजा दूत नें तेडी इम कहे, तूं हथणापुर जायो रे।
पांच पुत्र पंडूराय नें, जय विजय करने वधायो रे।
कहीजे स्वयंवरा मंडप पधारजो÷ ॥ १ ॥
वले हथणापुर नगरी मझे, दुर्योधन आदि सो भाई रे।
कोरव राजा रा डीकरा, त्याने रूडी रीत वधाई रे ॥ क० २ ॥
तीजा दूत नें तेडी इम कहे, जा तूं चंपा नगर मझारो रे।
सलनंदीराय ने वीनवे, सीस नमे वारूवारो रे ॥ ३ ॥
सुकतिमती नगरी मझे, मेल्यो चोथो दूतो रे।
सिसुपालादिक भाई पांच सो, दमघोष राजा रा पूतो रे ॥ ४ ॥
पांचमा दूत नें मेलियो, हस्तीसीर्ष नगर मझारो रे।
दवदंत राजा ने वीनवे, हाथ जोडी वारूवारो रे ॥ ५ ॥
छठा दूत नें तेडी इम कहे, तूं मथुरापुर नगर मे जायो रे।
वीर राजा ने वीनवे, कीजे घणी नरमायो रे ॥ ६ ॥
राजग्रही नगरी मझे, मेल्यो सातमा दूत ने तामो रे।
जरासिध रा सुत नें वीनवे, सहदेवराय तिणरो नामो रे ॥ ७ ॥
कंचनपुर नगरी मझे, मेल्यो आठमो दूतो रे।
रूपीराय ने वीनवे, ओ भीषण राजा रो पूतो रे ॥ ८ ॥
राजा नगर विराट रो, कीचक सो भायां सहीतो रे।
नवमां दूत ने इम कहे, त्याने वधायजे रूडी रीतो रे ॥ ९ ॥
दशमां दूत नें इम कहे, सेप गामां नगरां तू जायो रे।
ईसर तलवर राजादिक, त्याने रूडी रीत वधायो रे ॥ १० ॥
पहिला दूत ज्यूं रीत सगलां तणी, तिमहिज जाय वधाया रे।
त्यां राजा दूतां नें सतकार ने, सीख देई नें पाछा चलाया रे।
ते दूत आया घर आपणे ॥ ११ ॥

÷ ... ... है।

कृष्ण वासुदेव ज्यूं नीकल्या, सगलाई मोटा रायो रे।
द्रोपदी नें परणवा तणी, सगलां रे लग रही चायो रे।
कपिलपुर साह्मा चालिया ॥ १२ ॥

दुहा

अनेक सहंस राजा भणी, आवता जाण्या द्रुपदराय।
चाकर पुरुष नें तेडने, बोले एहवी वाय ॥ १ ॥
गंगा नदी री पाखती, कीजे स्वयवरा मडप ताय।
अति रमणीक सुहामणो, दीठां नयन ठराय ॥ २ ॥
सङकडा थभ लगाय ने, कीजो पूतलीयां चूंप।
जाल्या गोखादिक करे घणा, एहवी आग्या पाछी सूंप ॥ ३ ॥
चाकर सुण तिमहिज करे, आगन्या सूंपी आय।
द्रुपद राजा साभले, मन मे हरषित थाय ॥ ४ ॥
वले चाकर पुरुष ने तेडनें, कहे द्रुपद राजा एम।
सर्व राजा ने रहिवा भणी, करो आवास घर पेम ॥ ५ ॥
चाकर सुण तिमहिज कियो, आग्या सूंपी आण।
हिंवे द्रुपदराय राजा प्रते, नेडा आया जाण ॥ ६ ॥
कृष्णजी आदि राजा भणी, वधावे द्रुपदराय।
त्यारी भाव भगत करे किण विधे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल : १२

[साधूजी नगरी आया सदा भला रे]

पटहस्ती सिणगार ऊपर चढ्यो रे, द्रुपद नामे राय।
कृष्णजी आदि राजा ने वधायवा रे, मोटे मडाणे जाय।
सुखे ने वधावो रे कृष्ण नरिंद नें रे* ॥ १ ॥
हीरा माणक रतन पन्ना करी रे, वले भर भर मोतीडां री थाल।
वधावो श्रीकृष्ण नरिंद ने रे, वले वडा वडा भूपाल ॥ सु० २ ॥
कृष्णजी आदि अनेक राजा भणी रे, आय नम्यों द्रुपदराय।
भारी भेटणो निजर करी तिहां रे, सतकार सनमान्यां ताय ॥ ३ ॥
द्रुपद राजा साथे आय ने रे, वताया राजा नें आवास।
सीख मागे आयो नगरी मझे रे, मन में अतंत हुलास ॥ ४ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

आप आप तण आवास में ऊतस्या रे, बडा वडा भूपाल।
नाटक गीत बाजंत्र बजावता रे, सुखे गमावे काल ॥ ५ ॥
हिवे द्रुपद राजा चाकर नें कहे रे, च्यारूंई आहार नीपाय।
दारु मास वस्त्र फूलादिक करे रे, सूंपो राजविया ने जाय ॥ ६ ॥
चाकर वचन सुणे तिमहिज कीयो रे, पाछी आग्या सूपी आण।
वले द्रुपद राजा चाकर तेडनें रे, बोले एहवी वाण ॥ ७ ॥
जा तूं हस्ती ऊपर बेसनें रे, राजा रा आवास मझार।
मोटे मोटे शब्दे उदघोषणा रे, तिहां कीजे वारूवार ॥ ८ ॥
काले महोच्छव छे द्रोपदी तणो रे, स्वयंवरा मडप जाण।
द्रुपदराय ऊपर किरपा करी रे, आयजो मोटे मंडाण ॥ ९ ॥
सगलाई राय हस्ती ऊपर चढी रे, आयजो स्वयंवरा मडप माहि।
नामाकित आसण बेसी करी रे, वाट जोयजो द्रोपदी री ताहि ॥ १० ॥
चाकर पुरुष सुणे तिमहिज कीयो रे, पाछी आगन्यां सूंपी आय।
वले द्रुपद राजा चाकर नें कहे रे, जा तूं स्वयवरा मंडप ताय ॥ ११ ॥
स्वयंवरा मंडप पाणी सूं छाट ने रे, फूलमाला रचे ठाम ठाम।
कृष्णागर खेवी सुगधी करो रे, मांचा ऊपर माचा माडो ताम ॥ १२ ॥
चाकर वचन सुणे तिमहिज कीयो रे, पाछी आगन्या सूंपी आय।
वले कृष्णजी आदी देई बहु राजवी रे, बीजे दिन मरदन करे न्हाय ॥ १३ ॥
हस्ती खंधे बेस चमर बीजावता रे, छत्र धरावे राजंद।
चउरगणी सेना ले नीकल्या रे, धरता अधिक आणद ॥ १४ ॥
बाजित्र जात अनेकरा वाजता रे, साथे रिध सपद रा थाट।
नामांकित आसण आय बेस ने रे, जोवे द्रोपदी री वाट ॥ १५ ॥
हिवे द्रुपद राजा स्नान मरदन करी रे, कीयो विभूपित अग।
हस्ती खंधे बेस नें नीकल्यो रे, साथे लेई सेना चउरंग ॥ १६ ॥
स्वयवरा मंडप माहे आय ने रे, सगलाई राजां नें वधाय।
चामर कृष्णजी रो लेई हाथ मे रे, वीजे द्रुपदराय ॥ १७ ॥

●

दुहा

हिवे रायवर कन्या द्रोपदी, मंजण घर मे जाय।
सुगंध पाणी सूं न्हाय ने, सुद्ध हुई छे ताय ॥ १ ॥

ढाल : १३

[धीज करे सीता सती रे लाल]

सुद्ध मंगलीक वस्त्र पहिरने रे, आई अंतेवर मझार। राय कुमरी रे[1]।
आभूषण पहिस्या अतिघणा रे लाल, काने कुंडल श्रीकार। राय कुमरी रे।
आ निहाणो कीयोडी द्रोपदी रे लाल[2] ॥ १ ॥
हार मोती माला मूंदडी रे, पगां नेवर कांकण हाथ।
कडियां कणदोरो बाधियो रे लाल, चंदण सू चरच्यो गात ॥ २ ॥
सर्व ऋतु रा फूला करी रे, वीद्या माथा रा केस।
मोले मूहघा ने हलका घणा रे लाल, एहवा पहिस्या तिण वेस ॥ ३ ॥
गेहणा ने कपडा तणो रे, एक २ थी चढतो रंग।
चदण तिलक करे सोभती रे लाल, कृष्णागर धूप्यो अंग ॥ ४ ॥
सगलोई अग सिणगारीयो रे, गेहणा पहस्या अति चूंप।
शरीर रत्नांकर झिगमिगे रे लाल, श्रीदेवी सारीखो रूप ॥ ५ ॥
धाय सहित चढी द्रोपदी रे, आय वेठी रथ मझार।
धृष्टद्युम्न थयो सारथी रे लाल, चली जाय मध्य बाजार ॥ ६ ॥
स्वयवरा मंडप समीपे आय ने रे, रथ ऊभो राख्यो ठाय।
धाय सहीत हेठी ऊतरी रे लाल, पेठी स्वयवरा मंडप माय ॥ ७ ॥
अनेक सहंस राजां भणी रे, प्रणाम कीधो आय।
फूलां री माला लीधी हाथ मे रे लाल, ते दीठां नयन ठराय ॥ ८ ॥
क्रीडा धाय तणा डावा हाथ मे रे, आरिसो देदीप्यमान।
ते जीमणा हाथ सूं दिखालती रे लाल, मोटा राजां रा रूप परधान ॥ ९ ॥
क्रीडा धाय रूपवती घणी रे, उतकष्टो कीयो सिणगार।
गभीर स्वर मीठी वाणी करी रे लाल, वोले वचन विचार ॥ १० ॥
सगलाई राजविया तणा रे, मात पिता रा वस री जाण।
रूप कुल प्रभाव, जाणे लीया रे, घणी डाही चतुर सुजाण ॥ ११ ॥

दुहा

स्वयवरा मडप मांडने, सगलो टाल्यो सोस।
राजा राणी इण विधे, सहुको हुवा निरदोष ॥ १ ॥
रुचे जिको राजेश्वरु, निज नयणे निहाल।
पाणी माहे धण दिया, उरण हुवो गवाल ॥ २ ॥
स्वयंवर माला हाथ ले, ऊभी वाला रंभ।
नयण वयण आकार सूं, सहुको पड्या अचभ ॥ ३ ॥

१—हरेक गाथा के द्वितीय और चौथे चरण के अन्त मे यह शब्द समझे।
२—यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

किं नारी किं देवांगणा, किं अपछर उणियार।
जाणे पुहवी कोरी पुतली, रीझया राय अपार॥ ४॥
हिवे क्रीडा धाय तिण अवसरे, राजा रा रूप दिखाय।
जस नाम कर कहे किण विधे, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५॥

ढाल : १४

[सहेल्यां ए वांदो रूडा साध ने]

आई कृष्ण नरिंद बेठा तिहां, धाय बोली हे निज नयण निहाल।
जे मन माने वर तांहरे, तिणरे गले हे घाल फूलां री माल।
थारो भाग वडो ए द्रोपदी॥ १॥
ओ तो द्वारावति रो साहिवो, जादवा रो हे सिरे ठाकुर जाण।
श्रीकृष्ण वासुदेव दीपतो, तिणरी वरते ए तीन खड में आण।
तूं तो घाल वरमाला एहने॥ २॥
सोले सहंस राजान सेवा करे, जादवां मे हे चद सूर्य समाण।
तूंतो ओ अवसर मत चूकजे, श्रीपति ने हे वर चतुर सुजाण॥ तूं० ३॥
इणसू अधिको नर को नही, पदवीधर हे मोटो कृष्ण मुरार।
सोले सहस राण्यां तिणरे घरे, तिणने ए वर अकनकुमार॥ तू० ४॥
जब बलती राय कुमरी कहे, एतो मोटो ए राजसिह समान।
त्यारे घरे घरणी कही अति घणी, तिहा म्हारो ए नही रहे अभिमान।
हू तो नही परणीजूं एहने॥ ५॥
चंप कली चतुरंग तूं, भमर भलो ए हरि जादव भूप।
तूतो श्रीपति ने वर सुदरी, सगळा सिरे ए तिणरो रूप स्वरूप॥ तू० ६॥

यतनी

चपा सूं भमरो मिल जाय, यानें वरूं तो दोप न थाय।
यारे रूप घणो राण्या माय, म्हारी गिणत रहे नही काय॥ ७॥

ढाल

आणी बल भद्रजी बेठा तिहां, नीला वस्त्र हे हाथे हल हथियार।
ए पिण पदवी धर मोटका, माधव नें ए जीव प्राण आधार॥ तूं० ८॥
तिहां थी पिण चाल आघी गई, तिहा बेठा ए भाई दसोई दसार।
त्यांमें समुद्र विजय राजा वडो, तेहनो सुत ए श्री नेमकुंवार॥ तूं० ९॥
छोटो भाई वसुदेव दीपतो, तिणरा पुत्र ए कृष्ण बलभद्र जाण।
विद्याधर छे जेहना सगा, अतेउर हे बोहतर सहस बखांण॥ तू० १०॥
ऊंट कोड कुमर जादवां तणा, उग्र सेनादिक हे राजा सोले हजार।
त्यांरी धाय बिडदावली बोली घणी, किणही नें ए न वस्यो राय कुमार।
तूं तो चाल इहांथी सताव सूं॥ ११॥

यतनी

केयकां सूं जोडी जुगत न जाणी, केकां री वय पडती पिछाणी।
केकां रे नार्‌यां जाणी अनेक, तिणसूं मन नही भायो एक॥ १२॥

ढाल

चंपापुर नगर तणो धणी, वेस्यां नें एक लागे राहु समान।
तुज परणवा कारण आवियो, मोटी रिध सूं ए सलनंदी राजान॥ तूं० १३॥
चंपापुर वाडी चिहु दिशा, महक रही छे ए बारोई मास।
चपानृप वर तूं चंद्र मुखी, राहु सारिखो ए तिणरो परकाश॥ तूं० १४॥

यतनी

राहु रूडी वस्तु विगाडे, चद सूर्य री जोत घटाडे।
एहवा गुण सुण गयो मन भागी, हिवे चाल इहां थी आघी॥ १५॥

ढाल

पाचसो भाया सू परवर्यो, तूज कारण ए आयो राजा सिसुपाल।
दमघोष राजा रो डीकरो, सुकतिमती ए नगरी रो भूपाल॥ तूं० १६॥

यतनी

सिसुपाल मोटो राजान, ओतो थोथो करे अभिमान।
ते तो खोय बेठो निज नार, एहवो किम वरसू भरतार॥ १७॥

ढाल

हस्तीशीर्ष नगर तणो धणी, ओ तो आयो ए दूर थकी दल मेल।
दवदत सूरवीर मोटो राजवी, दुसमण नें ए दीधा तिण ठेल॥ तूं० १८॥

यतनी

जो दवदत राजा छे सूरो, तो ओ लड मर पड जाए पूरो।
लारे दुखे काढू किम काल, तो न घालू इणरे वरमाल॥ १९॥

ढाल

मथुरापुर नगर तणो धणी, वीर राजा ए ओ तो वड भूपाल।
ते तो राग वेराग रसिक घणो, तिणनें वर ए रायकुमरी सुकुमाल॥ तूं० २०॥

यतनी

वेरागी तो लेवे केइ दिख्या, घर घर मागे निरदोषण भिख्या।
मोनें घाले मोटी अतराय, तो हू ओर वरू आघी जाय॥ २१॥

ढाल

आ तो राजग्रही नगरी भली, तस नायक ए सहदेवराय सरूप।
जरासिंघ राजा तणो पाटवी, तिण पूठे हे चढता बड बडा भूप॥ तूं० २२॥

यतनी

ठाकर रो चाकर होय पाय लागो, तिणरो घट गयो जश सोभागो।
तिणने किम वरू वरमाला घाल, धाय नें कहे तू आघी चाल॥ २३॥

ढाल

कचनपुर नगर तणो धणी, रूपीराजा ए रूपकला बुधवान।
भीषम राजा रो डीकरो, तुझ कारण ए आयो धरतो अभिमान॥ तूं० २४॥

यतनी

रूपीराजा रे रूकमणी वाई, सीसुपाल सूं कीधी सगाई।
डरते कृष्णजी ने परणाई, इणरी लागी घणी हलकाई॥ तूं० २५॥

इणसूं पिण रति नही पामी, कांयक इण मांहे काडे खामी।
धाय नें सानी कीधी तास, चाल ओर राजा ने पास ॥ २६ ॥

ढाल

आयो नगर विराट तणो धणी, कीचक राजा ए सो भाया सहीत।
ते तो भोग विषय मे लीनो घणो, ओ तो करसी ए तोसूं अतरग प्रीत ॥ तूं० २७ ॥

यतनी

जो कीचक रे विषय रो चालो, ते तो कुलने लगावे कालो।
तिणरी परतीत नावे मोय, आघी चाल वरूं ओर जोय ॥ २८ ॥

ढाल

आयो नृप उज्जैण तणो धणी, तिणरो सीतल ए सभाव मन मेल।
तठे सिप्रा नदी शीतल वहे घणी, तूं करण मते ए तिण राजा सूं केल ॥ तूं० २६ ॥

यतनी

घणो शीतल पुरुप नही आछो, तिणरो वल प्राक्रम हुवे काचो।
तिणनें नही घालूं वरमाल, ओर वरसूं नयणे निहाल ॥ ३० ॥

ढाल

ओ तो सो भायां सूं आवियो, कोरव सुत ए वांको अतंत करूर।
ओ दुर्योधन वर द्रोपदी, सोभे तिणरो ए सोमवदन सनूर ॥ तू० ३१ ॥

यतनी

पांचू पाडव मिलिया सूर, जब वांकपणो कीयो दूर।
सोई पांचां आगे गया भागी, जद लोकां मे पिण आछी न लागी ॥ ३२ ॥
वले वांको हुवे क्रोधी कपाई, घर मां सूं न जाय लडाई।
एहवो दिल नही वेठो मेरी, हिवे चाल इहा थी आघेरी ॥ ३३ ॥
फिरे आमी साहमी खाए झोलो, मन कर रह्यो डाला डोला।
किणरे वरमाला घालणी नावे, पाच पाडव वेठा तिहां आवें ॥ ३४ ॥
पांच पांडव देखी ने रीझी, मोह राग सूं मीजी भीजी।
आघो पग भर खिसियो न जावे, धाय विडदावली वोलावे ॥ ३५ ॥

ढाल

हथणापुर नगर तणा धणी, पांचूं पांडव ए वेठा मोतीडा री खाण।
ते तो राय पांडू तणा डीकरा, वलवता ए डाहा चतुर सुजान ॥ तू० ३६ ॥
जुद्धथिर बुद्धिथिर वोलथिर रहे, कंचन वरणी ए काय रूप रसाल।
पांचूं पांडव वर द्रोपदी, तू परवाली ए जिम सोभे सुकुमाल। तू० ३७।

यतनी

सोभे मोती मे परवाली, ए सर पडियो श्लोक संभाली।
ऊंची कीधी फूलां री माल, किणने घालूं किणने देऊं टाल ॥ ३८ ॥
टालणी नावे तिणसूं एक, पाचां स प्रीत लागी वशेप।
पांचाई ने परणीजण री मन धारी, नीहाणकडी एम विचारी ॥ ३६ ॥

ढाल

या तो माधव सरीखा मोहती, थे सगलां ने ए लगाई लीक।
धीरा रहो धाय राजां ने कहे, अजूं जाणो हो पाणी माहे ज्यूं मभीक ॥ ४० ॥
हूं फिरती थाकी ए द्रौपदी, उतावल सू ए बीतो जाए छे काल।
तूं तो घण देखी घणचे पडी, वेगो वर ए रायवर कन्या सुकुमाल।
तूतो घाल वरमाल गले एहने ॥ ४१ ॥

यतनी

प्रश्न उत्तर सुत्र मे न चाल्या, ते तो अर्थ कथा सूं घाल्या।
केई अनुसारे चोज लगाय, ग्यानी वदे ते सत्य वाय ॥ ४२ ॥

दुहा

हिवे मधुर वचन मुख उच्चरे, कहे कोई म करजो खाच।
मन इच्छा हुई मांहरे, तिणसू म्हे वरिया पाडव पाच ॥ १ ॥
पांचा गल माला ठवी, करे उलालो हाथ।
कृष्ण कहे रूडो कीयो, एतो इचरज वाली वात ॥ २ ॥
इण विन इतरा कुण वरे, पूरे पिता रो लाड।
वले ठेक मसकरी करे घणा, केई हासे भाजे हाड ॥ ३ ॥
किहा कथा अर्थ मे इम कह्यो, देव वाणी हुई एम।
मतको हसजो एहने, इणरो भेद सुणो धर पेम ॥ ४ ॥
आ सुकुमालका साधवी हुती, इण कीयो नीहाणो लार।
तिण कर्मां कर द्रोपदी, पांच वरया भरतार ॥ ५ ॥
एक नारी काई दोय वरे, तो जगत मे चेहरो थाय।
पांच वरया इण द्रोपदी, ते पूर्व कर्म विथाय ॥ ६ ॥

ढाल : १५

[जवूद्वीप मभार]

राजाना सहस अनेक रे, कीधी उदघोषणा।
शब्द मोटे मोटे करी ए ॥ १ ॥
कहे कृष्णजी आदि राजान रे, रूडो कियो द्रोपदी।
पाचू पाडव ने वरी ए ॥ २ ॥
इम कहे निकलिया राजान रे, स्वयवरा मडप थकी।
निज आवासे आविया ए ॥ ३ ॥
हिवे धृष्टद्युम्नकुमार रे, पाचूं पाडव भणी।
वले राय वर कन्या द्रोपदी ए ॥ ४ ॥
त्याने चउघंट रथ वेसार रे, निज थयो सारथी।
याने कपिलपुर मे ल्याविया ए ॥ ५ ॥

निज भुवन कियो परवेश रे, रथ थी ऊतस्या।
करे परणावण री त्यारीयां ए॥ ६॥
तिहां द्रुपद राजा आय रे, पाट वेसाणिया।
पांच पांडव नें द्रोपदी ए॥ ७॥
सोना रूपा रा कलस रे, ते निर्मल जल भस्था।
तिण करनें न्हवराविया ए॥ ८॥
पछे अग्न तणा करे होम रे, पाणीग्रहण कियो।
पांच पांडव सूं द्रोपदी ए॥ ६॥
तिण काले द्रुपदराय रे, दीधो डायचो।
ते रिधी तणो वरणन करूं ए॥ १०॥
सोनइया कोड आठ रे, गिणनें आपिया।
वले आठ कोड रुपिया दीया ए॥ ११॥
एकसो वाणू वोल रे, आठ आठां तणो।
राजा दीधो डायचो ए॥ १२॥
वले विस्तीरण धन्न रे, सोनो रूपो घणो।
निज पुत्री नें आपियो ए॥ १३॥
सर्व राजा ने दीधी सीख रे, द्रुपद राजवी।
वले असणादिक जीमायने ए॥ १४॥
हिवे पंडू राजा तिणवार रे, सगला राजा प्रते।
हाथ जोडी करे वीनती ए॥ १५॥
चालो सगला राजान रे, हथणापुर मझे।
मुज ऊपर किरपा करी ए॥ १६॥
ज्यूं कल्याण रूडो थाय रे, पांचूं पांडव भणी।
वले मंगलीक थाए द्रोपदी ए॥ १७॥
कृष्णजी आदि राजान रे, मानी वीनती।
हथणापुर नें चालिया ए॥ १८॥
पंडू राजा तिणवार रे, चाकर ने कहे।
तूं हथणापुर जा वेग सूं ए॥ १६॥
पांचूं पांडवां रा आवास रे, कीजे सोभता।
सप्त भोमादिक मोटका ए॥ २०॥
हिवे चाल्यो पंडूराय रे, सेना सहित सूं।
वले पांच पांडव नें द्रोपदी ए॥ २१॥

आया हथणापुर माहि रे, द्रोपदी वरे।
पांचे पांडव हरख सू ए ॥ २२ ॥
राजा सहंस अनेक रे, जाण्या आवता।
जव चाकर ने तेडी कहे ए ॥ २३ ॥
घणा राजां रे आवास रे, करजे जूजूआ।
द्रुपद राजा नीपरे ए ॥ २४ ॥
कृष्णजी आदि राजान रे, आया जाणिया।
पडूराय हरख्यो घणो ए ॥ २५ ॥
कीधी भाव भगत अनेक रे, साहमो आय नें।
द्रुपद राजा नीपरे ए ॥ २६ ॥
जथा जोग आवास रे, उतारी जूजूआ।
हथणापुर मे आवियो ए ॥ २७ ॥
असणादिक निपजाय रे, सहु राजां भणी।
जीमाए तृप्ती कीया ए ॥ २८ ॥
द्रोपदी ने पाडव पांच रे, याने पाट वेसाण नें।
स्नान करायो तिण विधे ए ॥ २९ ॥
करे मन मान्या मंगलीक रे, आहार निपजाय ने।
वले राजान जीमाविया ए ॥ ३० ॥
सतकारे सनमान रे, सहु राजान नें।
सीख दीधी सगला भणी ए ॥ ३१ ॥

दुहा

पडू राजा सीख दीधा थका, चाल्या सहु राजान।
हिवे पाडवा ने द्रोपदी तणी, बात सुणो सुरत दे कान ॥ १ ॥
पाच पाडव तिण अवसरे, द्रोपदी नामे नार।
वारे वारे आपणे, सुख भोगवे ससार ॥ २ ॥
एक दिवस अतेवर सभे, वेठो पंडू राय।
कुती राणी ने वलि द्रोपदी, पाच पांडव पिण वेठा आय ॥ ३ ॥
पडू राजा वेठो सिंघासणे, दोलो वीट रह्यो परिवार।
कच्छुल नारद आयो तिण समे, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल : १६

[पुन्य प्रमाणे पामीयो रुडो०]

कच्छुल नारद तिहां आवियो, लांबा छे दाढी रा केश रे।
गले माला रुद्राक्ष री, वले पहिरण भगवां वेश रे। वले०।
नारद चिरतालो रे, नारदियो कलहगारो रे० ॥ १ ॥
काला मिरग नां चर्म नो, उत्तरासण तिणरे साथ रे।
माथे मुगट जटा तणो, डंड ने कमंडलू तिणरे हाथ रे। डंड। ना० २ ॥
कडियां बांधी डोरी मूंजरी, विद्याधर नी विद्या तिण पास रे।
थंभणी आदी विद्या घणी, ऊंचो उडनें चाले छे आकास रे। ऊंचो० । ३ ॥
राम केसव ने वाहलो घणो, वले प्रजन संब कुमार रे।
अनिरुद्ध निषढ सारण भणी, सगलां ने लागे हितकार रे। सग०। ४॥
कलहो ने जुद्ध कोलाहल, तिणने गमता लागे अतंत रे।
कतोहल रामत में राजी घणो, कलह लगावण ने मतिवत रे।कल०। ५॥
आकास गामादिक उलंघतो, आयो हथणापुर ताम रे।
गुफा कूप नदी समुद्र मझे, निरभय छे सगले ठाम रे॥ निर० । ६ ॥
पंडू राजा रा भवन में, चटकेसो ऊभो आय रे।
राजादिक ऊभा थया रे, सात आठ पग साहमां जाय रे। सात०।७॥
तीन प्रदक्षिणा देई करी, लुल लुलने वदे पाय रे।
आदर सनमान दीयो घणो, हिवे बेठो आसण ठाय रे। हिवे०। ८ ॥
द्रोपदी ऊठ ऊभी हुई नहीं, नही दीयो आदर सनमान रे।
ओ तो असंजती अविरती, नही पाप तणा पचखाण रे। नहीं०।६॥
इण देवगुरु नहीं ओलख्या, ओ तो जाणे नही जिनधर्म रे।
इणने उठ वंदणा करे, म्हारे कुण लगावे कर्म रे।म्हारे०।१०॥
जब नारद मन में जाणियो, मदछकी वहे या नार रे।
किणने खातर में घाले नही, इणरे पांच पांडव भरतार रे। इणरे०।११॥
मो आयांई या उठी नही, या तो बेठी रही निज ठाम रे।
जो फोडा पाडूं इणमे घणा, तो नारदियो म्हारो नाम रे।तो०।१२॥
पंडू राजा कन्हें सीख मांगने, ऊंचो चाल्यो गगन आकास रे।
दीप समुद्र उलंघतो, पूर्व साहमो चाल्यो हुल्लास रे।पूर्व०।१३॥

दुहा

तिण काले ने तिण समे, धातकी दीप रा खंड मांय।
अमरकका राजधानी तिहा, तिणरो पदमनाभ नामे छे राय ॥ १ ॥
सात सो राण्यां तेहने, मोटो राज विसाल।
एक दिवस अतेवर मझे, वेठो सिंघासण ढाल ॥ २ ॥

ढाल : १७

[पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

कच्छुल नारद आयो तिण अवसरे, तिणरा दुष्ट मेला परिणाम हो। राजेसर॥
पदमनाभ राजा रा भवन मे, आय ऊभो तिण ठाम हो। राजेसर॥
नारदियो धूतारो डसिलो अति घणो[1] ॥ १ ॥

पदमनाभ राजा दीठो तिणने आवतो, आसण छोडी ऊभो थाय हो। रा०।
वदणा कीधी सीस नमाय हाथ जोडने, वले आसण आमंत्र्यो ताय हो। ना० २ ॥
धरती छांटे ऊपर डाभ पायस्यो, स्नान करे वेठो आय हो। रा०।
राज्ञा नें पूछी कुसल खेम री वारता, जव हरख्यो पदमोत्तर राय हो। रा० ३ ॥

निज अतेवर देखने राय गरव्यो थको, पूछे नारद ने आम हो। नारदजी।
थे फिरो अनेक गाम नगर राजधानियां, थे दीठा अतेवर ठाम ठाम हो। नारदजी ४ ॥
म्हारा अतेवर सारिखो ओर राय ने, कठे दीठो अतेवर सरूप हो। ना०।
म्हारे सात सो राण्या रूपवती अति घणी, जाणे वाडी खिली अनूप हो। ना०। ५ ॥

ए वचन सुणे पदमनाभ राजा तणो, हसियो मुह मचकोड हो।
नारद कहे तूं कूवारा डेडक सारिखो, तूं कूडी करे मरोड हो। रा०। ६ ॥
जवू दीप रा भरत खेतर मझे, हथणापुर नगर विख्यात हो।
द्रुपद राजा री वेटी द्रोपदी, चूलणी राणी री अगजात हो। रा०। ७ ॥

पडू राजा री छे कुल वहू, पाचूंई पांडवा तणी नार हो।
ते द्रोपदी लावंण जोवन करे सोभती, उतकृष्टो रूप सिरदार हो। रा०। ८ ॥
तिण द्रोपदी तणा पग रो नख ऊतस्यो, तिणमेंई रूप अथाग हो।
थारा सगला अतेवर नो रूप तेहने, नही आवे सोमेंई भाग हो। रा०। ९ ॥

इम कहे पदमोत्तर राजा ने पूछने, चाल्यो उडने आकास हो।
द्रोपदी रो रूप सुणने राय मुरछियो, जाणे भोगवू भोग विलास हो। रा०। १० ॥
इम चिंतव आयो पोषध साल मे, तेलो कर तीन पोसा ठाय हो।
पूरव भव मत्री देव आराधियो, जव देवता ऊभो आय हो।
किण कारण आराध्यो हो राजा मो भणी॥११॥

१—यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दुहा

जंबू दीप रा भरत खेतर मझे, हथणापुर नगर मझार।
पांच पांडव घरे द्रोपदी, तिणरो रूप घणो सिरदार॥ १॥
तिण द्रोपदी ने आणवा भणी, म्हे आराध्यो ताम।
जब पदमनाभ राजा प्रते, देव कहे छे आम॥ २॥
पांच पांडव ने परहरी, भोग भोगवे ओर संघात।
तू इसडी म जाणे द्रोपदी तणी, तीनूंई काल मे वात॥ ३॥
पिण थारी प्रीत रो घालियो, द्रोपदी आण सूंपूं ताहि।
इम कहे देव उतावलो, आयो हथणापुर माहि॥ ४॥
युधिष्ठिर राजा ने द्रोपदी, सूता महल मझार।
निद्रा देई द्रोपदी भणी, ले चाल्यो तिणवार॥ ५॥
हिवे आयो देव उतावलो, अमरकका नगर मझार।
पदमोत्तर नी असोगवाडी मझे, आय मेली तिणवार॥ ६॥
पदमनाभ राजा ने जणाय ने, देव आयो जिण दिशि जाय।
एक महुरत पछे जागी द्रोपदी, हिवे करे विमासण ताय॥ ७॥

ढाल १८

[वीर वखाणी राणी चेलणा रे]

ए नही भवन घर माहरो जी, असोगवाडी पिण म्हारी नाहि।
निज घरवाडी अणदेखती जी, करे विचार मन माहि।
सती रे द्रोपदी मे विखो पड्यो जी.॥ १॥
ए भवन असोगवाडी ओरनी जी, ते नही मोने सुद्ध पिछाण।
किणहि देवदानवादिक मो भणी जी, अपहर मेली छे आण॥ सती० २॥
सकल्प विकल्प कर रही जी, वले फिकर घणी मन माय।
आरतध्यान करतां थका जी, हिवे किण विध आवे छे राय॥ स० ३॥
स्नान कियो तिण अवसरे जी, आभूषण पहर्या आण हुलास।
सगलो अंतेवर साथे करी जी, आयो छे द्रोपदी रे पास॥ ४॥
आरतध्यान ध्यावती थकी जी, दीठी पदमोत्तर राय।
कहे चिंता करे किण कारणे जी, एक साभल म्हारी तूं वाय॥ ५॥
तुझ कारण मे देव आराधियो जी, तिण देवता मेली छे आण।
हिवे भोग भोगव मोसूं मनरली जी, चिंता छोडे चतुर सुजाण॥ ६॥

---

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जब द्रोपदी कहे राय सांभलो जी, म्हारे छे पांच भरतार।
त्यांरे भाई कृष्ण वासुदेव छे जी, ते तीन खंड तणो सिरदार॥ ७॥
म्हारी खबर छ महीना में नही करेजी, कृष्णजी नें पांडव आंण।
तो तुम्हे कहिसो राजिंदमो भणी जी, ते वचन कर लेसूं प्रमाण॥ ८॥
भरतार मूवां करे नातरो जी, ते जावक हुवे छे निरास।
ते पिण राखे छे काण मूंवां तणी जी, परखे छे वरस छ मास॥ ९॥
तो पांच भरतार छे मांहरे जी, त्यांरी जावक न मीटी छे आस।
वले लोकीक राखवा भणी जी तिणसूं तो पास मांगूं छ मास॥ १०॥
ए वचन सुणे राय मानियो जी, पिण लग रही अंतरंग चाहि।
हिवे राय राखी द्रोपदी भणी जी, कुंवारा अंतेवर मांहि॥ ११॥
हिवे द्रोपदी करे वेले वेले पारणो जी, वले पारणे आंबिल जाण।
देही नें पाडे नित पातली जी, रूप तणी करे हाण॥ १२॥
सुभ परिणामा तप करती थकी जी, इण विध काल गमात।
वले मरण आसने बेठी द्रोपदी जी, पिण सील भांगण री नही वात॥ १३॥

दुहा

लारे एक महुरत आतरे, जाग्यो युधिष्ठिर राय।
सेज्या ऊपर न दीठी द्रोपदी, जब जोई चिहुं दिसि जाय॥ १॥
पिण किहांई न दीठी द्रोपदी, पडू राजा ने आए कही वात।
द्रोपदी नें कोई ले गयो, देवदानव री जात॥ २॥
पंडू राजा कराई उदघोषणा, नगर हथणापुर मांय।
पिण खबर न पामी द्रोपदी तणी, हिवे कहे कुंती नें बोलाय॥ ३॥
थें जावो नगरी द्वारिका, कहिजो कृष्णजी नें वात।
द्रोपदी ने कोई लेगयो, तिणरी खबर नहीं तिलमात॥ ४॥
उवे सुणनें आघो काढे नहीं, करसी खबर सताब।
कृष्णजी विन ओर मानवी, कुण मंगावे जाब॥ ५॥
राय वचन कुंता राणी हरष सूं, कर लीयो परमाण।
स्नान शृंगार कर चूंप सूं, हस्ती खंध बेठी आण॥ ६॥
हथणापुर थी नीकली, कर मोटे मंडाण।
आई द्वारिका नगरी रा बाग में, कुंता राणी डेरा दीया आण॥ ७॥
चाकर पुरुष तेडी कुंता कहे, तूं द्वारिका नगरी में जाय।
कृष्ण वासुदेव तेहने, कहीजे सीस नमाय॥ ८॥

थांरी कुता भुआ मोनें मेलियो, ते बेठा वाग में आय।
हथणापुर थी आया इहां, थारा दर्शण री अति चाय ॥ ६ ॥

ढाल : १९

[स्वामी म्हारा राजा ने०]

चाकर सुणने नीकल्यो, तिण कह्यो कृष्णजी ने आय हो। जादवराय।
थारी कुता भुआ रे अति घणी, थारा दर्शण करवा री चाय हो। जादवराय।
अरज करू छूं वीनती* ॥ १ ॥

कृष्णजी सुण हर्षित हुवा, चाल्या वांदण पाय हो। जा०।
पटहस्ती ऊपर बेसने, आया छे वाग माय हो। भुवाजी।
थे भलाने पधारया नगरी द्वारिका ॥ २ ॥

हस्ती थी हेठा उतरी, वांद्या कुतां रा पाय हो। भु०।
तन मन मिलिया हर्षित हूवा, वले घणा रलियायत थाय हो ॥ भु० ३ ॥
वले भुवा सहित हस्ती बेसने, आया निज घर माय हो।
स्नान करायो कुंतां भणी, असणादिक जीमाय हो ॥ भु० ४ ॥
असणादिक जीमायां पछे, वेठा सिंघासण आय हो।
हिवे विनय भक्ति करे कृष्णजी, पूछे कुंतां ने जाय हो। भु०।
थें किण कारण आया द्वारिका ॥ ५ ॥

वलती कुंतां इम कहे, सुण तूं चित्त लगाय हो। काना।
पांच पांडव घरे द्रोपदी, तिणरी खवर न काय हो। काना।
हूं इण कारण आई द्वारिका ॥ ६ ॥

युधिष्ठिर ने राणी द्रोपदी, सूता महलां रे माहि हो। काना।
तिण अवसर कोई द्रोपदी, अपहर लेग्यो ताहि हो। काना ॥ ७ ॥
पडू राजा ने पाडवा, नगर हथणापुर मांय हो। काना।
खवर कीधी त्यां अति घणी, पिण पामी खवर न काय हो। काना ८ ॥
वलता कृष्ण इसडी कहे, म करो फिकर तिलमात हो। भु०।
जो तीन लोक में जाणू द्रोपदी, तो आणू हाथो हाथ हो। भु०।
थे सोच फिकर राखो मती ॥ ९ ॥

घणी संतोष कुतां भणी, देई सतकार नें सनमान हो। जा०।
सीख देई पाछा मेलिया, विनो करे बुधिवान हो। जा०।
खवर करे द्रोपदी तणी ॥ १० ॥

●

---
*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दुहा

कृष्णजी पडहो फेराविये, द्वारिका नगरी मांय।
उदघोषणा कीधी घणी, पिण खबर न पामी कांय ॥ १ ॥
एक दिवस श्री कृष्णजी, बेठा अतेउर माहि।
कन्छल नारद आयो तिण अवसरे, आय ऊभो छे ताहि ॥ २ ॥
तिणरो विनो कियो श्री कृष्णजी, हिवे बेठा आसण ढाल।
कुसल खेम कृष्णजी तणो, नारद पूछयो तिण काल ॥ ३ ॥
हिवे कृष्णजी कहे नारद भणी, थे फिरो छो देश विदेश।
गाम नगर राजधानिया, त्यां करो घणो प्रवेश ॥ ४ ॥
पांच पांडवां री अस्त्री, द्रोपदी नामें नार।
थें फिरतां कठे दीठो हुवे, तिणरो शब्द रूप आकार ॥ ५ ॥

ढाल : २०

[जीव दया धर्म पालो रे]

हिवे नारद कहे छे एमो रे, साभलजो धर पेमो।
हूं गयो एकदा किणवारो रे, धातकी खड द्वीप मभारो ॥ १ ॥
पूर्व भरत रा दक्षिण कानी रे, तिहा अमरकका राजधानी।
ते प्रसिद्ध छे अमरकका रे, तिणरा गढ कोट किल्ला बंका ॥ २ ॥
तिणरो पदमनाभ राजानो रे, तिणरा महल ऊचा असमानो।
म्हे दीठी तिण महल मभारो रे, द्रोपदी सारिखी एक नारो ॥ ३ ॥
एहवी नारद बात बणाई रे, जाणतेई कीधी कपटाई।
ते तो कृष्णजी कीधी पिछाणो रे, इणरा जाण लिया अहलाणो ॥ ४ ॥
हिवे कृष्णजी बोल्या आमो रे, नारद एतो थांराइज कामो।
करडी कीधी नारद चिरताला रे, थां विन एहवा करे कुण चाला ॥ ५ ॥
इम सुण नारद चिरताले रे, ओतो उडवा री विद्या संभाले।
जिणदिशि आयो तिणदिशिहाल्योरे, आकासे उड्यो जाए चाल्यो ॥ ६ ॥
हिवे कृष्णजी दूत तेडायो रे, हथणापुर नगर चलायो।
कहिजे पंडू राजा नें तू जाई रे, द्रोपदी तणी खबरज पाई ॥ ७ ।
धातकी खंड दक्षिण कानी रे, तठे अमरकंका राजधानी।
तिहा पदमोत्तर घरे जाणी रे, तिण ठामे छे द्रोपदी राणी ॥ ८ ॥
कहिजे पांच पाडवनेई बातो रे, थे पिण भेलो कीजो साथो।
चोरंगणी सेना सहीतो रे, बारे डेरा दीजो रूडी रीतो ॥ ९ ॥

पूर्व दिशि पाणी री वैल आवे रे, समुद्र माहें गंगा मिल जावे।
उठे लेजाय फोजां रा थाटो रे, तठे जोयजो म्हारी वाटो॥ १०॥

दुहा

इम कहे दूत नें मोकल्यो, तिण कह्यो हथणापुर जाय।
पांच पांडव सेना ले नीकल्या, जाय उतरिया ताय॥ १॥
वले चाकर पुरुप ने तेडनें, कहे छे कृष्ण महाराय।
सहु सेना सम्भ थाये सताब सूं, एहवी भेरी वजाय॥ २॥
हुंता सहु परमाद में, विपय राग रंग तान।
शब्द सुणे भेरी तणो, सहु को हुवा सावधान॥ ३॥
दगदसार आदि राजवी, जाव छप्पन सहस्र वलवान।
वगतर टोपादिक पहरनें, आयुद्ध वांध्या राजान॥ ४॥
केई हाथी घोडा ऊपर चढ्या, केई रथ में वैठा आण।
केई पालाईज नीकल्या, कर मोटे मंडाण॥ ५॥
आया सुधर्मी सभा जिहां, तिहां वैठा कृष्ण वासुदेव।
हाथ जोडी वधाया श्रीकृष्ण ने, करवा लागा सेव॥ ६॥

ढाल : २१

[वे वे मुनिवर वेहिरण]

हिवे कृष्णजी पटहस्ती ऊपर चढ्या रे, छत्र धरावे मस्तक ताम रे।
सकोरंट फूलां री माला पहरने रे, चमर वीजावे दोनूं पास रे।
कृष्णजी लेवण ने चाल्या द्रोपदी रे* ॥ १॥
चउरंगणी सेना लेने परवरया जी, मोटा सुभटां ने लिया साथ रे।
द्वारिका नगरी विचे होय नीकल्या रे, जादूपति तीन खंड रा नाथ रे॥ कृष्ण जी० २॥
समुद्र नी वेल पूर्व में छे तिहां रे, मजले मजले आया तिण ठाम रे।
पांचूं पांडव सूं मिलिया हरष सूं रे, कटक उतार लियो विश्राम रे॥ ३॥
तिहां पोषध साला में तेलो कियो रे, करे लवण सुठिया देव रो ध्यान रे।
जब तेलो पूरो हुआं आयो देवता रे, वोलावे श्रीपति नें दे सनमान रे॥ ४॥
थें मोने आराध्यो छे किण कारणे रे, जव कृष्णजी कहे देवता पास रे।
पांच पांडव री राणी द्रोपदी रे, सूती थी निद्रा में सुखे आवास रे॥ ५॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिणनें पदमोत्तर राजा ले गयो रे, ते तो अमरकंका नगर मभार रे।
तिणने ल्यावा ने जाणो मांहरे रे, लवण समुद्र ने पेले पार रे॥ ६ ॥
रथ पांचूं पांडव रा छठो माहरो रे, त्यांने जावा ने मारग मोहि बताय रे।
तो हू समुद्र उलघे ल्याउं द्रोपदी रे, अमरकंका नगरी मांहि जाय रे॥ ७ ॥
जब वलतो कृष्णजी नें कहे देवता रे, नही लेग्यो पदमोत्तर राजा आय रे।
पूर्व सगाती मंत्री देवता रे, तिण पासे मंगाय लीधी छे ताय रे॥ ८ ॥
जो कहो तो द्रोपदी ने आणु इण विधे रे, कहो तो सेना ले सगली ताण रे।
वले नगरी सहित पदमोत्तर राय ने रे, लवण समुद्र मे न्हांखू आण रे॥ ९ ॥
जब देवता प्रते बोल्या कृष्णजी रे, एहवो तूं क्यांने करे अकाज रे।
हू स्वयमेव जाए ल्यावूं द्रोपदी रे, छव रथ जावा ने दे तूं साज रे॥ १० ॥
जब वलतो कृष्णजी नें कहे देवता रे, हू छहूं रथ ने देखालूं माग रे।
हूं लवण समुद्र उतारूं थां भणी रे, मेलूं थांने अमरकंका ने बाग रे॥ ११ ॥
ए देव वचन सुणे श्रीकृष्णजी, चोरंगणी सेना थापी तिण ठाम रे।
हिवे समुद्र उतारया त्याने देवता रे, तठे काचा पुरुषां रो नही कोई काम रे॥ १२ ॥
अमरकंका रा अंग उद्यान मे रे, आए उतरिया छे तिण ठाम रे।
पाचूं पाडव ने छठा कृष्णजी रे, खेद टाली लियो विश्राम रे॥ १३ ॥

दुहा

हिवे दारुक सारथी ने तेडनें, कहे छे कृष्ण महाराय।
तूं अमरकंका नगरी मझे, कहिजे पदमोत्तर ने जाय॥ १ ॥
पदमोत्तर दरीखानो जोडने, वेसे सिंघासण आय।
तूं वचन* कहीजे एहवा, ते साभलजे चित ल्याय॥ २ ॥

ढाल : २२

[इंद्र कहे नमीराय नें]

डावा पग री दीजे सिंघासणे, हूं कहू ते सगला कहीजे रे।
कागद पदमोत्तर रा हाथ मे, भाला री अणियां दीजे रे।
रुठो जादवराय कृष्णजी॰॥ १ ॥
कोपे सिघ्र उतावलो, तीन लीटी निलाड चाढीजे रे।
काण म राखे तेहनी, करडा वचन काढीजे रे॥ रू० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अपत्थ पत्थियो तूं खरो, काली अमावस जायो रे।
लज्जा लिखमी वाहिरो, भूंडा लखण तो माह्यो रे॥ ३ ॥
अकाले मरण वछे नही, तिणरो तूं वछणहारो रे।
सुध वुध विगडी तांहरी, पुन्न गया परवारो रे॥ ४ ॥
कृष्ण वासुदेव तेहनी, आ वहिन द्रोपदी राणी रे।
ते तूं जाणतो के न जाणतो, ते किण कारण इहा आणी रे॥ ५ ॥
एहवो अकारज करतो सक्यो नही, आ मति किण दीधी माठी रे।
हिवे अत आयो दीसे तांहरो, थारी अकल कठीनें न्हाठी रे॥ ६ ॥
अजे द्रोपदी नें पाछी सूंप दे, कृष्णजी रे पाय आणो रे।
नहीं सूंपें तो जुझ करवा भणी, वारे आव तूं मोटे मंडाणो रे॥ ७ ॥
पांच पांडव सहित श्रीकृष्णजी, आया द्रोपदी लेवण काजो रे।
थारा अंग उद्यान मे उतस्या, ते आघो न काढसी आजो रे॥ ८ ॥
इम दीधी सिखावण दूत ने, ते कर लीधी परमाणो रे।
अमरकंका राजधानी मझे, आयो सताव सूं जाणो रे॥ ६ ॥
दरवार जुड्यो पदमनाभ रो, हाथ जोडी ऊभो तिहां आयो रे।
पदमनाभ राजा ने वधाय ने, विनो कियो सीस नमायो रे॥ १० ॥
ए विनो भगत सर्व माहरो, हिवे सुणो म्हारा राजा री रे।
करडा वचन सनमुख कह्या, जोवो कागद मे विस्तारी रे॥ ११ ॥
पदमनाभ राजा सुण कोपियो, करडो वोल्यो चढ अहकारो रे।
हूं तो पाछी न आपूं द्रोपदी, म्हे तो थारा राखी निज नारो रे॥ १२ ॥
जो पांच पांडव ने कृष्णजी, करसी मोसू सग्रामो रे।
हूं सज कर ने सावधान छू, म्हारे ढील तणो नही कामो रे॥ १३ ॥
वले दारुक सारथी ने कहे, पदमनाभ राजानो रे।
साथ किती एक एहने, ते मोसूं करे अभिमानो रे॥ १४ ॥
दूत ने नही सतकारियो, काढचो मोरी रे द्वारो रे।
दूत तिहां थी नीकल्यो, आय कह्यो श्रीपति ने विचारो रे॥ १५ ॥

दुहा

हिवे पदमनाभ राजा तिहा, कहे सेनापति नें वोलाय।
पटहस्ती सेना सझ करो, वेगो सताव सूं जाय॥ १ ॥
सेनापति तिमहिज करे, आगन्या सूंपी ताय।
जव पदमोत्तर पिण सझ थई, हस्ती ऊपर वेठो आय॥ २ ॥

सेना लेनें नीकल्यो, कृष्णजी साहमों जाय।
इणनें आवतो देखनें कृष्णजी, पाडवा ने कहे बतलाय ॥ ३ ॥
जो जुद्ध करण सूं मन थांहरो, पदमोत्तर सूं जाय।
कहो तो हूं जुद्ध कर ल्यावूं द्रोपदी, थारे किसी आवे दिल मांय ॥ ४ ॥
जब कृष्णजी ने पाडव कहे, म्हे करस्यां संग्राम।
जो भागा आवां लडतां थकां, पछे थारोईज छे काम ॥ ५ ॥
वचन सुणे पांडवा तणो, कृष्णजी बोल्या एम।
थे वचन छलाणा हो पांडवां, जुद्ध कर जीपसो केम ॥ ६ ॥
आगन्यां लेई कृष्णजी तणी, आयुद्ध लेई सभ्फ थाय।
जुदा जुदा रथ बेस नीकल्या, मंडिया पदमोत्तर सूं जाय ॥ ७ ॥

ढाल : २३

[चीतोडी रो राजा रे]

पाचूं पांडव आयो रे, पदमोत्तर नें बोलायो रे।
जो म्हारी पड जाए हारो रे, तो रूडो दिन थारो रे।
इम कहे ने करवा लागा संग्राम नें रे ॥ १ ॥
जब पदमोत्तर रायो रे, ओ पिण साहमों आयो रे।
हणिया मेली प्रहारो रे, गाल्यो गर्व अहंकारो रे।
वले ध्वजा ने पताका लूंट्या पाडवां तणा रे ॥ २ ॥
डेरा लूंटाणा रे, पांडव सीदाणा रे।
दिसो दिस गया भागो रे, जोर कोई न लागो रे।
कृष्णजी कन्हे आया पांडव न्हासनें रे ॥ ३ ॥
कृष्णजी कहे एमो रे, भागा आया केमो रे।
काई कहे लडवा लागा रे, किण विध आया भागा रे।
जब पाडव बात कही सर्व मांडनें रे ॥ ४ ॥
हरि कहे थे न हारत रे, लडता बोल विचारत रे।
म्हे जीतसां पदमरायो रे, तोने देस्यां भगायो रे।
तो थे जीत फते कर आवता मो कन्हे रे ॥ ५ ॥
पाडव राय पूतो रे, देखजो मुज सूतो रे।
हिवे हूं वेगो जाऊं रे, पदमोत्तर नें हटाऊं रे।
इम कहेने रथ बेस कृष्णजी नीकल्या रे ॥ ६ ॥
पदमनाभ नें देखो रे, जाग्यो धेष विशेषो रे।
पूर्‍यो संख पंचाणो रे, फोज पडियो भगाणो रे।
तीजाने वाटा री सेना न्हासे गई रे ॥ ७ ॥

दुसमण दिया पेली रे, संख हेठो मेली रे।
सारंग धनुष्य ने लीघो रे, टकारव कीधो रे।
वले दूजाने वांटा री सेना न्हासे गई रे॥ ८ ॥

पचायण संख मारी रे, सारंग धनुष्य टकारी रे।
तिणरा शब्द सूंत्राठी रे, सेना जाए न्हाठी रे।
गोली रे भडाके उडिया कागला रे॥ ९ ॥

खेद पामी नें कुडिया रे, पूणी ज्यूं जाय उडिया रे।
जोर कोई न लागो रे, दिसो दिस गया भागो रे।
जाणे तात रे मूढे रूई ज्यूं विखर गया रे॥ १० ॥

तीजो भाग रह्यो बाकी रे, लडवा सूं गयो थाकी रे।
पदमनाभ राजा री रे, गाल्यो गर्व अहंकारो रे।
जब अमरकका नगरी में आयो न्हासने रे॥ ११ ॥

पोलां आडी दीधी रे, जडे सेठी कीधी रे।
गढ मे करवा लडाई रे, भेली कीधी सभाई रे।
जाणे कृष्ण ने नगरी मे आवा देऊ नही रे॥ १२ ॥

अमरकंका रे बारो रे, आया कृष्ण मुरारो रे।
रथ एकात थापो रे, हेठा उतरिया आपो रे।
नरसिंघ नों रूप कियो तिण अवसरे रे॥ १३ ॥

हूर हाका पाडे रे, भूम पग सूं मारे रे।
नरसिघ रूप गूंजे रे, धरती जब धूजे रे।
गढ कोट किला हेठा ढहीनें पड्या रे॥ १४ ॥

पोल किवाड भागा रे, महल पडवा लागा रे।
भुरजा हुई चकचूरो रे, तोरण पड गया दूरो रे।
नगरी सर्व धूजे थाली में मूग ज्यूं रे॥ १५ ॥

●

दुहा

हाहाकार हुवो घणो, अमरकंका नगरी मांय।
राजधानी पडी भागी विखरी, देखी नें डरप्यो राय॥ १ ॥
हिवे पदमनाभ राजा मन चिंतवे, हूं जीवां वचूं किण ठाम।
जो शरणे जावूं द्रोपदी तणे, तो कृष्ण न ले म्हारो नाम॥ २ ॥
इम विचारने नीकल्यो, ओर न कोई साथ।
शरणे आयो द्रोपदी तणे, ओ बोल्यो जोडी हाथ॥ ३ ॥

तुझ शरणे हू आवियो, इम बोल्यो राजान।
जब द्रोपदी राजा नें कहे, ते सुणो सुरत दे कान ॥ ४ ॥

ढाल : २४

[धूतारो नाचणो]

हिवे द्रोपदी कहे सुण राय, आय वणी ताहरे जी।
थे मोटो करे अन्याय, शरणे आयो मांहरे जी।
हिवे समझ पदमनाभ राय, कहे तोनें द्रोपदी जी* ॥ १ ॥
कृष्णजी तीन खंड रा नाथ, त्याने तें खिजाविया जी।
थारी अकाले करवा घात, सताब सू आविया जी ॥ हिवे० ॥
ओ तो शूर वीर बलवंत, प्राक्रम त्यांरो अति घणो जी।
त्यां कीधो वेस्यां नो अंत, साहमां मंड्या तिण तणो जी ॥ ३ ॥
त्यानें पाछा भागण रो नेम, विरुद लियां वहे जी।
जो उवे आघो काढे एम, तो मरजाद में कुण रहे जी ॥ ४ ॥
जो तूं जीवणो वाछे राजान, केई दिन ताहरो जी।
तो तूं छोड दे निज अभिमान, कह्यो कर माहरो जी ॥ ५ ॥
तो तूं अस्त्री वेश बणाय, पहर नारी वेस नें जी।
वले दाढी मूंछ मुडाय, दूरा कर केश ने जी ॥ ६ ॥
स्नान करे सुध न्हाय, दूरा मेल टाल ने जी।
वले पहरण भीनी साडी ल्याय, नीचा छेहडा राल नें जी ॥ ७ ॥
काजल घाल आंख्यां माय, टीकी दे निलाड नें जी।
वले नाक में नथ लटकाय, गले पहर हार ने जी ॥ ८ ॥
दोनूं बांहां मे चुडलो घाल, कचु पहर आण ने जी।
वले अस्त्री नी पर चाल, घूंघट नीचो ताण ने जी ॥ ९ ॥
भेटणो वहु मोलो वखाण, तिणसू भर थाल ने जी।
वले मोनें ले आगेवाण, गर्व थारो गाल नें जी ॥ १० ॥
वले घणा अतेवर मांहि, परवार सूं जाय नें जी।
इम वादे कृष्णजी रा पाय, अपराध खमाय नें जी ॥ ११ ॥
वले कहिजे तूं जोडी हाथ, भूंडो काम म्हे कियो जी।
हिवे जीवां वचूं किरपानाथ, शरणो तुझ में लियो जी ॥ १२ ॥
जो इसडी कहे करे नरमाय, तो जीवा वचे सही जी।
ते पिण अस्त्री वेस वणाय, तो कृष्ण मारे नही जी ॥ १३ ॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

त्रिय वेस वडा टबा मांहि, प्रतख ही पेखियो जी।
तेहनें अनुसारे ताहि, वर्णन त्रिया नों कियो जी॥ १४॥

●

दुहा

ए वचन सुणे द्रोपदी तणो, पदमनाभ राजान।
पछेद्रोपदी कह्यो तिमहिज कस्यो, मेले निज अभिमान॥ १॥
अस्त्री रूप वणाय ने, अतेवर ले साथ।
शरणे आयो श्रीकृष्ण रे, बोलियो जोडी हाथ॥ २॥
हू बल प्राक्रम देख तुम तणो, रिधि देख पाम्यो अगाध।
हिवे वारूंवार खमजो तुमे, म्हारो कियो अपराध॥ ३॥
पगां लागो श्रीकृष्ण रे, सूंपी द्रोपदी ने आण।
जब कृष्णजी पदमोत्तर भणी, करडी बोल्या वाण॥ ४॥
रे अपत्थ पत्थिया पापीया, आ द्रोपदी मांहरी बेन।
इणने थें आणी जाण नें, तो किण विध पामसी चेन॥ ५॥
हिवे जीवतो जा तूं इहां थकी, भय मत पाम लिगार।
इम कही पदमोत्तर भणी, सीख दीधी तिणवार॥ ६॥

ढाल : २५

[कपूर हुवे अति उजलो रे लाल]

हिवे पाछा वल्या श्रीकृष्णजी रे, द्रोपदी ने लेई साथ।
पांचूं पांडवा ने आणी द्रोपदी रे, सूंपी हाथो हाथ।
राजेश्वर हुवा वचन रा शूर॥ १॥
पाडवां देखी द्रोपदी भणी जी, मन माहे हर्ष अपार।
हिवे पाच पाडव छठा कृष्णजी रे, बेठा रथ मभार॥ रा० २॥
जबू द्वीप रा भरत ने जी, नीकल्या जीते राड।
लवण समुद्र विचे थई जी, चाल्या कृष्ण मुरार॥ रा० ३॥
तिण काले ने तिण समे जी, धातकी खड द्वीप रे माहि।
पूर्व अर्द्ध भरत मझे जी, चंपा नगरी ताहि।
राजेस्वर तिहां कपिल वासुदेव राय॥४॥
पूर्णभद्र नामे वाग थो जी, छहुं रितु में सुखदाय।
तिहा तीन खंड केरो अधिपति जी, राय लखण गुण तिण माय॥ रा० ५॥

तिण काले नें तिण समें जी, मुनि सुव्रत अरिहत।
ते तीर्थंकर वावीसमां जी, तिहां आया विहार करत।
जिनेश्वर तारण तिरण जिहाज ॥ ६ ॥
चंपानगरी रा वाग मे जी, समोसर्या भगवान।
घर्म कथा तिहां सांभले जी, तीन खड रो राजान ॥ जि० ७ ॥
घर्म कथा सुणतां थकां जी, संख शब्द सुणियो ताम।
जाणे दूजो वासुदेव ऊपनो जी, भय पाम्यो तिण ठाम ॥ जि० ८ ॥
जब मुनि सुव्रत स्वामी कहे जी, सुण कपिल वासुदेव राय।
थें जाण्यो इहां कोई ऊपनों जी, दूजो वासुदेव आय।
राजेश्वर ए सका मूल म आण ॥ ९ ॥
तीर्थंकर चक्रवर्ती मोटका जी, वासुदेव वलदेव जाण।
एक खेतर मे एक एक ऊपजे जी, दोय दोय न ऊपजे आण।
राजेश्वर ए संका मूल म आण ॥ १० ॥
जवूं द्वीप रा भरत मे जी, हथणापुर नगर मझार।
तिहा पांच पांडव नी भारज्या जी, द्रोपदी नामे नार ॥ रा० ११ ॥
अमरकंका नगरी तणो जी, पदमोत्तर नामें राय।
तिण द्रोपदी ने आणी इहाजी, मंत्री देव बोलाय ॥ रा० १२ ॥
तिणसूं पाच पांडव ने कृष्णजी रे, आया तिणरी वाहार।
संग्राम कियो तिण अवसरे जी, सख पूर्यो तिणवार।
राजेश्वर जादव कृष्ण मुरार ॥ १३ ॥
मुनिसुव्रत स्वामी ने वादने जी, प्रश्न पूछे तिणवार।
तो हू जाय मिलूं हिवे तेहसूं जी, निजरां देखूं कृष्ण मुरार।
जिनेश्वर मोने मिलवा तणो छे कोड ॥ १४ ॥
तीर्थंकर तीर्थंकर मिले नही जी, चक्रवर्ती सूं चक्रवर्ती नांहि।
वासुदेव न मिले वासुदेव सूं जी, नही मिले वलदेव माहोमांहि।
राजेश्वर ए संका मूल न आण ॥ १५ ॥
घवली पीली ध्वजा रथ तेहनीजी, मांहे वेठा कृष्ण मुरार।
ते ध्वजा देखसी उण रथ तणी जी, लवण समुद्र मझार।
राजेश्वर ए वचन साचा कर जाण ॥ १६ ॥

दुहा

वंदना कर हस्ती चढ्यो, सुण अरिहंत री वाण।
लवण समुद्र नी वेल छे, तिहां ऊभो सताव सूं आण ॥ १ ॥

कृष्ण वासुदेव तेहनीं, ध्वजा रथ री देख।
लवण समुद्र मांहे जावतां, तिणसूं हरषित हुवो वशेख॥ २॥
ए उत्तम पुरुष मो सारिखो, कृष्ण वासुदेव राय।
लवण समुद्र मांहे थई, जंबू द्वीपे उतावलो जाय॥ ३॥
जब संख पचायण पूरियो, ते सांभल्यो कृष्ण महाराय।
त्यां पिण पाछो संख पूरियो, कीधी घणी नरमाय॥ ४॥
सखे संख मिलिया तिहां, दोनूं वासुदेव राय।
हेत जुगत मनवारां करी, ते संख शब्द रे मांय॥ ५॥

ढाल : २६

[चोपईनीं ए]

हिवे कपिल वासुदेव राजान, कृष्णजी ने देई सनमान।
अमरकंका राजधानी जठे, सबलो साथ ले आयो तठे॥ १॥
अमरकंका विखरी तिणवार, भागा तोरण पोल किंवाड।
राजधानी विदरूप वशेख, गढ कोट किल्ला घर पडिया देख॥ २॥
कपिल वासुदेव पूछे एम, आ राजधानी विखरी कहो केम।
भागा तोरण पोल किंवाड, गढ कोट किल्ला रे पडिया वधार॥ ३॥
जब पदमनाभ राय बोल्यो आम, सांभलो तीन खड केरा स्वाम।
जंबू भरत रो कृष्ण वासुदेव, ते जुद्ध करण आयो स्वयमेव॥ ४॥
उण थांरी काण न राखी कांय, तिणरे राज लेवण री थी मन माय।
म्हे जुद्ध करने दियो भगाय, ताप पडि तिणसूं पाछा जाय॥ ५॥
म्हें तिणसूं जुद्ध कियो तिण काल, आमां साह्मां वूहा गोला नाल।
गढ कोट किल्ला पडिया तिणवार, भागा तोरण पोल किंवाड॥ ६॥
इम झूठ बोल्यो पदमोत्तर राय, ते कपिल वासुदेव सुणियो ताय।
तिण ऊपर कोप चढ्या तिणवार, करडा वचन कह्या निराधार॥ ७॥
रे अपत्थ पत्थिया मूढ गिंवार, अकाले मरण रा वाछणहार।
मुझ सारिखा पुरुष कृष्ण राजान, त्यांसूं जुद्ध कियो धरमान॥ ८॥
त्यां तोने दियो तुरत हठाय, तूं भाग ने आयो नगरी माय।
थारी ध्वजा पताका लीधी लूट, तूं मो आगे काय बोले झूठ॥ ९॥
घणो निभ्रंछी पाडी माम, वले देसोटो दियो तिण ठाम।
जिहां जिहां वरते म्हारी आण, त्यां तूं कठेई म रहिजे जाण॥ १०॥
हिवे पदमनाभ रो पुत्र बोलाय, तिणनें राज वेसाण्यो ताय।
ते कपिल वासुदेव स्वयमेव आप, अमरकंका रो राजा थाप॥ ११॥

तिहांथी चाल आया निज ठाम, सुखे राज करे अभिराम।
हिवे जादवराय श्री कृष्ण मुरार, ए पिण समुद्र उतरिया पार॥ १२॥

दुहा

हिवे पांचूंई पांडवा भणी, कहे कृष्णजी आम।
थें जावो गंगा नदी ऊतरो, सुखे करो विश्राम॥ १॥
हूं लवण सुठिया देवता कन्हे, सीख मागे ने तिण पास।
बात करनें आऊ वेगसूं, थे मत होयजो उदास॥ २॥
पांडव तिहांथी नीकल्या, आया गगा नदी रे मझार।
एक नावा मिली तिणमें वेसने, पाडव उतरिया पार॥ ३॥
गंगा नदी उतर पांडवां, तिहां विचार कियो मन मान।
नावा मत मेलो श्री कृष्ण नें, ए किसडाएक बलवान॥ ४॥
गंगा नदी भुजा करे ऊतरे, एहवा बलवंत छे के नाहिं।
आ पारखा करण श्रीकृष्ण री, एहवी धार बेठा मन माहिं॥ ५॥

ढाल : २७

[सल्हा माल्ना गीत]

देवता सूं हो मिलने श्री कृष्ण महाराज, सीख मागेनें तिहाथी चालियाजी।
गंगा नदी हो वहे घणी ओगाज, तिणरा कांठा ताई आया रथ चालियाजी॥ १॥
नदी माहे हो नही कोई रथ रो काम, जब नावा ने जोवण लागा जादवपतिजी।
चिहूं दिशि जोया हो नावा नही दीठी ताम, वले नावा न देखी नदी माहे आवतिजी॥ २॥
जब जादवपति हो रथ नें घोडा सारथी सहीत, एक भुजा सूं त्यांने झालियाजी।
एक भुजा सूं हो तिरीया जाए डर भय रहीत, गंगा नदी माहे आघा चालियाजी॥ ३॥
मध्य भागे हो आया गगा नदी रे माय, तिहां थाका अतत परसेवे भीना घणाजी।
जब चिंतवे हो मन में श्रीकृष्ण महाराय, ए अति बलवंता पांडव पांचूं जणाजी॥ ४॥
ते भुजा कर हो उतरिया गंगा नदी रे पूर, हूं थाको पाणी मे बल चाले नही जी।
इम चितवतां हो गंगा देवी आई हजूर, तिण पाणी रो थाग देवी दियो सहीजी॥ ५॥
तिहां मुहुर्त्त मात्र हो जादुपति ले विश्राम, पछे गंगा उतर कुसले खेमे आवियाजी।
पांच पांडव हो सुखे बेठा छे तिण ठाम, तिहां कृष्णजी आय तिणनें सरावियाजी॥ ६॥
श्रीपति बोल्या हो पांडवां थें तो अति बलवान, थें भुजा करे नदी उतर ने आवियाजी।
भगाया हो थानें तिहां पदमनाभ राजान, जब तो थें वचन मांहें छलावियाजी॥ ७॥

जब पांडव हो कहे सांभल कृष्ण महाराय, म्हे नावा सूं नदी उतर आया इहांजी।
ते नावा नें हो साहमी नही मेली ताय, म्हे पांचूई मिलनें विचार कियो तिहांजी॥ ८॥
गंदा नदी हो साढा बासठ जोजन मांहि, आ चोडी ओगाज करती वहे सहीजी।
ते कृष्णजी हो भुजा कर उतरे के नांहि, एहवो वल प्राक्रम छे के यांमे नही जी॥ ९॥
ए वचन सुणनें हो तीन लीटी चाढी निलाड, कृष्णजी कोप चढे रोस आणियोजी।
थे पांचूंई पांडव पूरा मूढ गिंवार, अजेस म्हारो वल प्राक्रम न जाणियोजी॥ १०॥
लवण समुद्र हो उतावल सूं वेग उलांग, पदमोत्तर नें हठाय मान भग करीजी।
अमरकंका हो म्हे तो मार विखेरी भांग, म्हे द्रोपदी आणनें थां आगल धरीजी॥ ११॥
थे तो भागा हो छोडेआया द्रोपदी री आस, जव विलखो वेदल मुख जाण्यों म्हे थाहरो जी।
ते म्हे आणी हो सूंपी द्रोपदी तुम पास, जव थें न जाण्यों वल प्राक्रम माहरोजी॥ १२॥

दुहा

वले करडा वचन कहे कृष्णजी, कोप चढ्या अति पूर।
लोह डंडो लेई हाथ में, पांचूं रथ किया चकचूर॥ १॥
वले देसोटो दियो कृष्णजी, पांचूं पांडवा नें ताम।
जिहां आण वरते छे मांहरी, थें मत रहिज्यो तिण ठाम॥ २॥
पांचूं रथ भांग्या पांडवां तणा, नगर वसायो तिण ठाम।
तिहां लोकां जावाने थापियो, भागीरथ तीरथ नाम॥ ३॥
हिवे तिहांथी निकल श्रीकृष्णजी, आया कटक उतरियो तिण ठाम।
पछे सेना सहित परवस्या थका, आया द्वारिका नगरी ताम॥ ४॥
पांडव हथणापुर आविया, ले पोता रो साथ।
पडू राजा कन्हे आयनें, ए वोल्या जोडी हाथ॥ ५॥
म्हानें देसोटो दियो कृष्णजी, वले कीधा आग्या वार।
म्हांसूं करडी कीधी कृष्णजी, देसोटो दे इणवार॥ ६॥

ढाल : २८

[जिन भाखे सुण कृष्ण फेर तिणमें नहीं]

हिवे पूछे पंडूराय, देसोटो थाने क्यूं दियो जी।
इसडो कवण अन्याय, मोटो खून थें कियो जी॥ १॥
जब पांडव बोल्या तिणवार, म्हे द्रोपदी ल्याविया जी।
समुद्र उतरिया पार, कुसले खेमे आविया जी॥ २॥

जब कह्यो कृष्णजी मोय, गंगा उतरो तिहां जी।
थें चालो आण हुलास, हूंतो रहिसूं इहां जी॥ ३॥
हूं सीख ले देवता पास, वेगो आऊं तिहां जी।
थें चालो आण हुलास, हूं रहिसूं इहां जी॥ ४॥
जब म्हे आया गंगा समभाव, नावा सूं उतर जिहां जी।
म्हें साहमी न मेली नाव, विचार कियो तिहां जी॥ ५॥
कृष्ण बलवंत छे के नांहि, नावा विन ऊतरे जी।
इण गंगा नदी रे मांहि, भुजा करनें तिरे जी॥ ६॥
पछे कृष्ण भुजा रे जोर, गंगा तिर आविया जी।
म्हे बेठा छा तिण ठोड, म्हांनें त्यां सराविया जी॥ ७॥
म्हांनें कृष्णजी कह्यो आय, वलवंत पांचूं जणा जी।
भुजा सूं नदी तिर वेठा आय, म्हे तो थाका घणा जी॥ ८॥
जब म्हे कह्यो नावा सूं ताम, तिरनें इहां आविया जी।
थारो वल जोवा रे काम, नावा नही ल्याविया जी॥ ९॥
जब कोप्या कृष्ण मुरार, निलाड सल चाढने जी।
वले म्हांने दीधी धिक्कार, करडा वयण काढनें जी॥ १०॥
पूर्व वीती वात साख्यात, मांडे तात ने कही जी।
जाव देसोटा लग वात, सुणाय दीधी सहीजी॥ ११॥
जब पंडू राजा कहे आम, अकारज थे कियो जी।
अविनो करे तिण ठाम, देसोटो थें लियो जी॥ १२॥
थांसूं किया गुण अनेक, भाई हित जाणनें जी।
त्यांरो करे हासो ठेक, त्यांसूं तोडी ताणनें जी॥ १३॥
ओलंभा दिया पडूराय, पांचूं पांडवा भणीजी।
हिवे रहो किसी ठोड जाय, कृष्ण तीन खड धणी जी॥ १४॥
जव बोल्या पांडव पांचूं माय, होणहार टले नही जी।
हिवे करवो कवण उपाय, विचार करो सही जी॥ १५॥

दुहा

हिवे पंडू राजा तिण अवसरे, कहे कुंता राणी नें बोलाय।
थे कृष्णजी सूं विनती करो, द्वारिका नगरी जाय॥ १॥
थें कहिजो कृष्णजी ने इण विधे, थें अर्द्ध भरत रा राय।
पांच पांडवां नें देसोटो दियो, ते रहे किसी ठोड जाय॥ २॥

कोई जायगां बतावो ऐहनें, तिहां जाये रहिवा काज।
इम कहे कुंता राणी भणी, मोकली पंडू महाराज ॥ ३ ॥
ए वचन कुंता राणी सांभले, हस्ती खंध चढे तिणवार।
आया नगरी द्वारिका, उतर्या बाग मझार ॥ ४ ॥
कृष्णजी सुण आया तिहां, हाथ जोडी बोले आम।
थें किण कारण पधारया, ते फुरमावो मुझ काम ॥ ५ ॥

ढाल : २६

[हो राजंद सुणजो वचन]

थें पांच पांडवां ने देसोटो दीधो, आगन्यां बारे कीधा ताय।
तूं अद्ध भरत तीन खंड रो राजा, ए रहे किसी ठोड जाय रे।
कानां हूं इण काम आई चलाय ॥ १ ॥

हिवे कहे कृष्णजी कुंता भुवा नें, जे उत्तम पुरुष री बाय।
तीर्थंकर चक्रवर्ती वासुदेव बलदेव, यारा वचन खाली नही जाय।
भुवाजी थे सुणजो मोरी अरदास ॥ २ ॥

थें जाय भुवाजी कहिजों पांडवां ने, दक्षिण बेल तट तिहा जाय।
थे अदीठ थका रहिजो सेवग म्हारा, पांडूं मथुरा वसाय।
भुवाजी कहिजो पांडवां ने जाय ॥ ३ ॥

इम कहे सीख दीधी कुंता भुवा ने, देई सतकार ने सनमान।
हिवे कुंता राणी हथणापुर आया, जिहा बेठा पंडू राजान।
कुंता राणी कह्या कृष्णजी रा समाचार ॥ ४ ॥

कृष्णजी कह्यो छे पांचूं पांडवां ने, दक्षिण वेल तट तिहां जाय।
अदीठ थका रहिजो सेवग म्हारा, पांडू मथुरा वसाय।
कुंता राणी कह्यो पंडूराजा नेजाय ॥ ५ ॥

जब पंडू राजा पांडवां ने तेडी कहे, थांने कह्यो कृष्णजी आम।
अदीठ थका रहिज्यो सेवग म्हारा, पांडू मथुरा वसाय तिण ठाम।
न चित सूं० सुखे कीजो तुम्हें राज ॥ ६ ॥

●

दुहा

पंडू राजा रो वचन सुण, कर लीधो परमाण।
बल वाहण ले नीकल्या, कर मोटे मंडाण ॥ १ ॥

दक्षिण वेल समुद्र तट, तिहां पांचूं पांडव आय।
पांडू मथुरा वसाय नें, रहे तिण नगरी मांय ॥ २ ॥
नगर हथणापुर तेहनो, पडियो सवलो विजोग।
ते याद आवे पाडवा भणी, जव मन माहे व्यापे सोग ॥ ३ ॥
ते गई वस्तु नही बावडे, कारी न लागे काय।
हिवे पश्चात्ताप करे घणो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : ३०

[इणपुर कंवल कोई न लेसी]

साले हथणापुर नो राज, ते पिण कहितां आवे लाज।
याद आवे जब साले आई ठाण, ते किण आगल काढे वाण ॥ १ ॥
साले मात पिता रो विजोग, वले साले सेंण सगा ने लोग।
किहां कुटब किहा न्यात नो मेलो, किहा मंत्री सूं रहिवो भेलो ॥ २ ॥
किहां द्वारिका नगरी सुखदाई, किहां कृष्ण किहां बलभद्र भाई।
सहु परिवार हुतो मन मेल, त्यामे करता अति घणी केल ॥ ३ ॥
इतला दिन म्हे हुंता जोरे, इसडो कुण ते म्हासूं तोडे।
हिवे आदर मान घट्यो पुन्न ऊणे, तिणसूं आय पड्या म्हे खूणे ॥ ४ ॥
कृष्णजी कारज पूछीनें करता, अनेक राजा रहिता म्हांसूं डरता।
जिण दिन तो पुन्न हुता पूरा, तिण सुखसूं तो पडिया दूरा ॥ ५ ॥
जो कृष्णजी आए नें आप मनावे, तो गजपुर रहिणो मन भावे।
विना मनायां वसां तिहां जाई, तो हंसे सहु लोक लुगाई ॥ ६ ॥
म्हें हाथे आप कमाया काम, तिण ऐ दुख पडिया आम।
ए क्याने सोच करो वेकाम, तो हिवे राखा सुध परिणाम ॥ ७ ॥

दुहा

हिवे काल कितो एक गयां पछे, घाल्यो दुख विसार।
पंच इंद्री ना सुख भोगवे, मथुरा नगर मझार ॥ १ ॥
तिहा रहिता राणी द्रोपदी, हुई गरभवती ताम।
ते सवा नवमासे पुतर जनमियो, तिणरो रूप घणो अभिराम ॥ २ ॥
पांचूं पाडवा रो डीकरो, द्रोपदी रो अगजात।
पडूसेन नाम दियो तेहनो, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ ३ ॥

आठ वर्ष वीतां पछे, भण्यो कला बोहत्तर जाण।
तिणनें जुगराज पदवी थापियो, ते डाहो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

ढाल : ३१

[पुन्य प्रमाणें पामियो रूडो]

मथुरा नगरी छे अति भली, तिहां पांच पांडव करे राज रे।
तस घरणी द्रोपदी सती, तिणमे रूप लखण गुण लाज रे।
तिणमें पांडव पांचे दीपता, गुण लखण कर अति सोभे रे ॥ १ ॥
एक दिन स्थविर पधारिया, पांचूं पांडव वांदण जाय रे।
मुनिवर दीधी देशनां, ते सांभले चित्त लगाय रे ॥ ते सा० पा० २ ॥
जिनवर चक्रवर्ती जे हुवा, थिर न रह्या कोई देव भूप रे।
तन धन सहु सुपनां जिसो, संसार नो विषम सरूप रे ॥ संसार नों ३ ॥
ए संसार पलेवडो, लागो ते केम बुझाय रे।
श्री जिन वचनें सरवियां, दुख दालिद्र दूर पुलाय रे ॥ दुख० ४ ॥
आगार नें अणगार नों, स्थविरां भाख्या दोय धर्म रे।
ए मुक्ति रा मारग पाधरा, करणी कर तोडो कर्म रे ॥ करणी० ५ ॥
पांच पांडव तिण अवसरे, सांभली स्थविरां री वाण रे।
संसार सूं विरक्त हुवा, भोग लागा जहर समाण रे ॥ भोग० ६ ॥
हिवे पांच पांडव तिण अवसरे, मांहोमांहि करे विचार रे।
ए संसार तो असार छे, आपे लेस्यां संजम भार रे।
आपे पांडव पांचूं दीपता, ए तो राज रिधि घर छोडे रे ॥ ७ ॥
हिवे आवी गुरां नें इम कहे, स्वामी सरध्या तुमना वेण रे।
थें तारक भवि जीव रा, मोनें मिलिया साचा सेण रे ॥ मोनें० ८ ॥
द्रोपदी राणी नें पूछनें, पंडूसेन नें थापी राज रे।
पछे आप कन्हे लेई दिख्या, सारां आतम केरा काज रे ॥ सारां० ९ ॥
वलता गुरु इसडी कहे, थांरे लेणो संजम भार रे।
जो थांरो मन ऊठियो, तो म करो ढील लिगार रे ॥ तो म० १० ॥
हिवे पांचूं पांडव घरे आय नें, द्रोपदी नें कहे छे बुलाय रे।
म्हें तो दिख्या लेस्यां स्थविरा कन्हें, तुम्हे स्यूं करस्यो घर मांय रे ॥ तुम्हें० ११ ॥
जब वलती द्रोपदी इम कहे, हूं लारे रहूं किण आधारे।
कंत विहूणी कामणी, मोनें भलो नहीं गृहवास रे ॥ मोनें० १२ ॥
पांचूं पांडव हरषित हुवा, सांभली द्रोपदी केरी वाण रे।
पंडूसेन कुंवर नें सताब सूं, राज देसाण्यो मोटे मंडाण रे ॥ राज० १३ ॥

पंडूसेन कुंवर नें पूछ नें, काढी दिख्या लेवारी बाण रे।
पंडूसेन कुमर तिण अवसरे, करे महोच्छव मोटे मडांण रे॥ करे० १४॥
सहंस पुरुष वहे तेहवी सेविका, तिण ऊपर बेसाण्या आण रे।
दिख्या रा महोच्छव अति घणा, तिणरी सूत्र सूं कर जो पिछाण रे॥ तिणरी० १५॥
बाजंत्र अनेक विध बाजता, एतो आया नगरी बार रे।
चारण भाट बोले बिडदावली, साथे अनेक आया नर नार रे॥ साथे० १६॥

●

दुहा

पांचूं पांडव उतर सेविका, आया स्थविरां पास।
हाथ जोडी करे वीनती, मन मांहि अतंत हुल्लास॥ १॥
जनम मरण री लाय थी, म्हांनें बारे काढो आप।
जब स्थविरां पांचूं पांडवा भणी, पचखाया अठारे पाप॥ २॥
आचार सीखे पडिपक्क हुवा, ध्यावे निरमल ध्यान।
स्थविर समीपे पाडव भण्या, चवदे पूरव ग्यान॥ ३॥
घण वर्षां लगे तपसा करी, छठ अठम दशम दुवाल।
विचरे आतमा नें भावता, तोडे कर्मां रा जाल॥ ४॥

ढाल : ३२

[वीर सुणो मोरी वीनती]

पांडू मथुरा नगरी थी एकदा, स्थविरां कीधो हो तिहांथी उग्र विहार।
विचरत आया जनपद देश मे, पांचूं पांडव हो ते पिण त्यारी लार।
धन्न धन्न पांचूं पांडवां भणी*॥ १॥
श्री नेमजिनंद तिण अवसरे, विचरत आया हो सोरठ देश मभार।
त्यांनें सुणियां लोकां आगे पांडवां, जब हुवो हो मन मे हर्ष अपार॥ २॥
हिवे पांचू पाडव मिलनें कहे, अरिष्ठनेमी हो सोरठ देश मभार।
तिहां विचरता २ आविया, त्यांरे साथे हो मोटा संत अणगार॥ ३॥
तो श्रेय कल्याण आपा भणी, स्थविरां ने हो पूछी सीस नमाय।
विहार करां सोरठ देश में, जाय बांदां हो नेमीसरजी नां पाय॥ ४॥
एहवी माहोमांहि करे विचारणा, पांचूं पांडव हो कहे स्थविरा पास।
जो आग्या हुवे स्वामी तुम तणी, तो म्हे बांदां हो नेम जिनंद हुल्लास॥ ५॥
जब बलता स्थविर इसडी कहे, जिम सुख थांनें हो तिम थे करो मुनिराय।
ए आग्या ले स्थविरां तणी, पांडव चाल्या हो बांदे गुरु नां पाय॥ ६॥

* यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

मास मास खमण नें पारणो, मुनि धार्यो हो मन सुमता आण।
म्हे ज्यां लग नेम वांदां नही, त्यां लग म्हांरे हो एहवो अभिग्रह जाण ॥७॥
मास मास खमण करता थका, मुनि आया हो हस्तकल्प मझार।
सहस्रांव उद्यान में उतर्या, मोटा तपसी हो गुण रत्नां रा भंडार ॥ ८ ॥
पहले पोहर सज्झाय करी, बीजे पोहरे हो मुनि ध्यानज ध्याय।
तीजे पोहर उठ्या गोचरी, आहार लेवा हो आया नगरी मांय ॥ ९ ॥
हिवे नगर करंतां गोचरी, लोका आगे हो सुणी एहवी वाण।
श्रीनेम जिनंद बावीसमां, कर्म तोडी हो पहुंता मोक्ष निरवाण।
पांचसो छतीस अणगार सूं ॥ १० ॥
मुनि आहार वहिरी आया बाग में, युधिष्ठिर ने हो देखाल्यो पाणी भात।
पछे कह्यो मुक्ति गया नेमजी, माडे कही हो विवरासुध वात ॥ ११ ॥
नेम जिनंद मुगते गया, तो परठ देणो हो आण्यो सर्व आहार।
सत्रुंजा पर्वत ऊपरे, आपां नें हो करणो श्रेय छे सथार ॥ १२ ॥
मांहो मांहि कीधी एहवी विचारणा, भात पाणी हो परठ्यो एकांत जाय।
पछे सत्रुंजागिरि ऊपर चढ्या, पूढवी सिला हो तिण ऊपर आय ॥ १३ ॥
मुनि च्यारूंई आहार नें पचखनें, पांडव पोढ्या हो जाणे विरख री डाल।
पादोपगमण संथारो कियो तिहां, नही वांछे हो मुनि मरवा नों काल ॥ १४ ॥
दोय मास तणी संलेसणा, चित्त चोखे हो ध्याया निर्मल ध्यान।
चारित पाल्यो घणा वर्षां लगे, मुनि भणिया हो चवदे पूरव ग्यान ॥ १५ ॥
केवल ग्यान उपायनें, मुक्ति पहुंता हो मुनि कर्म खपाय।
तिहां जनम जरा मरण नही, सासत सुख हो पाम्यां शिवपुर मांय ॥ १६ ॥

●

दुहा

पांच पांडव ज्यूं द्रोपदी तणा, किया महोच्छव जाण।
मोटे मंडाण सूं तेहनें, सूंपी स्थविरां नें आण ॥ १ ॥
हिवे हाथ जोडी कहे द्रोपदी, लागी जनम मरण री लाय।
तिण मांसूं काढो मो भणी, कृपा करी मुनिराय ॥ २ ॥
जब स्थविर द्रोपदी नें तिण समे, दिक्षा दीधी तिण ठाम।
सुव्रता आर्यां तेहने, सिखणी सूंपी ताम ॥ ३ ॥
पछे इग्यारे अंग भणी द्रोपदी, सुव्रता रे पास।
गुरुणी तणी लेई आगन्यां, तपसा करे आण हुलास ॥ ४ ॥

ढाल : ३३

[रे जीव मोह अनुकंपा न आणिये]

वेला तेला चोला पाचां लगे, इत्यादिक तप करे अतंत जी।
पाडे कर्मां नें दिन दिन पातला, रूडो ध्यान ध्यावे मतिवंत जी।
धन धन द्रोपदी मोटी सती* ॥ १ ॥

ग्यांन दर्शन चारित निरमला, सती आराध्या रूडी रीत जी।
दिक्षा पाली घणा वर्षां लगे, हुई गुरणी तणी सुविनीत जी ॥ धन २ ॥
घणा वर्षां लगे तपस्या करे, देही कीधी खंखर भूत जी।
एक मास तणी सलेखणा, करडी कीधी घणी करतूत जी ॥ ३ ॥
निसल्ल थई आलोए पडिक्कमि, पछे काल कियो तिण ठाम जी।
जाए ऊपनी देवलोक पांचमे, दश सागर आउखो पाम जी ॥ ४ ॥
देव तणा सुख भोगवे, आउखो पूरो करे तेथ जी।
भरिया भडारा ऊपरे, उपजसी महाविदेह खेत जी ॥ ५ ॥
आठ वर्ष तणो हुवां पछे, हुसी वोहतर कला नों जाण जी।
वले समभसी लोक आचार मे, डाहो घणो चतुर सुजाण जी ॥ ६ ॥
तिण अवसर स्थविर पधारसी, त्यांरी वाणी सुणे तिणकाल जी।
जाए मात पिता ने पूछने, चारित चोखो पाल जी ॥ ७ ॥
धर्म शुक्ल ध्यान ध्यायनें, उपजाए केवल ग्यांन जी।
करणी करे कर्म खपाय नें, जासी पांचमी गति परधान जी ॥ ८ ॥
एहवी सिद्धगति मे गयां थकां, तिहा दुख नही लवलेश जी।
तठे अजर अमर सुख सासता, ते तो कदे न पावे कलेस जी ॥ ९ ॥
कडवो तूवो वहिरायो साधु ने, सहजां बाध्या कर्मा रा जाल रे।
तिणसू नागश्री दुख भोगव्या, मार खाधी असखेज्ज काल रे।
जोवो कर्म तणी गति वांकडी* ॥ १० ॥
तिण भोलपणे कर्म वंधिया, तिणसूं पिण दुख पडिया अतंत रे।
तो कूडा कूडा आल दे साधु ने, त्यांरो होसी कुण विरतत रे ॥ जो० ११ ॥
रात दिन साधां री निंदा करे, वले राखे अभितंर धेष रे।
साचा ने भूठो घालण भणी, पापी कर रह्या खप वशेष रे ॥ १२ ॥
इण विध कर्म बांधे भारी हुवे, ते भोगवता छे घणो जंजाल रे।
दुख मे दुख पामे अति घणो, उतकष्टो अनतो काल रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

मुध साधां तणी निंदा कियां, केई इण भव दुखिया थाय रे।
विजोग पडे वाहलां तणो, दुख दारिद्र वसे घर मांय रे॥ १४॥
सुध साधां रे आल दे तेहनें, जो उदे आवे इण भव में पाप रे।
त्यांरे अण चितव्यो धसको पडे, ववतो जाए सोग संताप रे॥ १५॥
सुध साधां नें अनाचू कहे तेहनें, पाप बंधे उदे हुवे ताप रे।
रोग री उत्पत हुवे घणी, वले दिन दिन गलतो जाय रे॥ १६॥
कदा उदे न हुवे इण भवे, तो परभव में संका मत आण रे।
साधां रे आल दे निंदा करे, ते तो निश्चेई डूबा जाण रे॥ १७॥
नागश्री रुलती रुलती थकी, इण तो पामियो भव रो अंत रे।
पिण खुद्र द्रोही सुध साध सूं, दुख में दुख पामें अनंत रे॥ १८॥
नागश्री ब्राह्मणी ज्यूं मत करो, सांभल नें उत्तम नरनार रे।
हेलो निंदा मति सुध साधु ने, जो उतरवा चावो भव जल पार रे॥ १९॥
नागश्री रुलती रुलती थकी, हुई सुखमालका तिहां आय रे।
तिण चारित ले निहाणो कियो, भोग अभिलाषा रो मन मांय रे॥ २०॥
आलोयां विन मर नें हुई, गणिका दूजा देवलोक मांहि जी।
तिहां थी चवनें हुई आ द्रोपदी, तिण पांच पांडव वरया ताहि जी॥ २१॥
एहवो निहाणो कियां थकां, उतकष्टो अनंतो काल जी।
पिण कर्म थोडा द्रोपदी तणे, तिणसूं सुध गति गई वरत पाल जी॥ २२॥
धन धन द्रोपदी मोटी सती।

ए चारित कह्यो द्रोपदी तणो, ते तो सूतर अनुसार जी।
गिनाता अंग सोलमा अध्ययनमें, तठे कह्यो घणो विस्तार जी॥ धन० २३॥
अधिको ओछो आगे पाछे कह्यो, कदा भूल लागो हुवे मोय जी।
ते मिछामी दुकडं मांहरे, आलोवणा खाने होय जी॥ २४॥
संवत अठारे चोतीसे वर्षे, भादवा सुदी चोदस नें रविवार जी।
द्रोपदी तणो चारित पूरो कियो, मरुधर देस में सहर पीपाड जी॥ २५॥

रत्न : १३

तेतली प्रधान रो बखांण

दुहा

गिलाता रा चवदमा अध्ययन मे, तेतली प्रधान रो अधिकार।
तिणरे पोटला नामे हुंती अस्त्री, ते जात तणी छे सोनार॥ १ ॥
तिण काले नें तिण समे, तेतलीपुर नगर थो ताहि।
प्रमोद वन नामें उद्यान छे, इशाण कुण रे माहि॥ २ ॥
तिण नगरी रो अधिपति, कनकरथ नामे राजान।
राणी तस पदमावती, गुण रत्नां री खान॥ ३ ॥
तिण कनकरथ राजा तणे, तेतलीपुत्र नामे प्रधान।
च्यारूं बुधा करी सहित छे, वले रेत रिष्या सावधान॥ ४ ॥
तिण कनकपुर नगरी मझे, वसे कलाद नामे सोनार।
तिणनें धनकर कोई नही गंज सके, तिणरे भद्रा नामे छे नार॥ ५ ॥
पुत्री तिण कलाद सोनार नी, भद्रा तणी अगजात।
पोटला नामे वालिका, ते प्रसिध लोक विख्यात॥ ६ ॥
ते लावन जोवन रूपे करी, उतकष्टो शरीर वखाण।
कला चतुराइ तिणमे घणी, डाही चतुर सुजाण॥ ७ ॥

ढाल : १

[सोरठ जतनी]

पोटला वालिका छे कुमारी, स्निान मरदन कीयो तिणवारी।
वस्त्र गेहणादिक अलंकार, तिण पेहर कीयो सिणगार॥ १ ॥
दासी सहेलियां लेई साथ, सोना नो चिटियो लियो हाथ।
निज घर उपर गगन आकास, कीला करे हरष हुलास॥ २ ॥
हिवे तेतलीपुत्र प्रधान, घोडे चढ्यो छे करे स्निान।
मोटा भट सुभट तिणरें साथ, राज मारग चलियो जात॥ ३ ॥
कलाद सोनार ने घर ताह्यो, तेतली पुत्र तिहा आयो।
पोटला घणी सहेल्यां रे साथ, कनक डंडो छे तिणरे हाथ॥ ४ ॥
उची कीला करे तिण ठाम, तेतलीपुत्र देखी छे ताम।
लावन जोवन रूप आकार, तिणरो देख लियो तिणवार॥ ५ ॥
इण सू रीझ्यो घणों मन माय, इणने परण्या मोनें सुख थाय।
कहे सेवग ने बोलाय, इणरो कुण बाप ने कुण माय॥ ६ ॥

सेवक उत्तर दियो तिणवार, इणरो बाप कलाद सोनार।
भद्रा री अंगजात छे ताम, पोटला छे इणरो नाम॥ ७॥
ए वचन हिया में धारी, तिहां थी आघी चाली असवारी।
पोटला री लगे रही चाय, अभितर पुरुष कहे छे बोलाय॥ ८॥
कलाद सोनार रे घरे जाय, तिणने रूडी रीत बतलाय।
कहिजे पुत्री छे थारे ताम, पोटला बालिका तिणरो नाम॥ ९॥
तिणनें मोटे मंडाण सूं ल्यावो, तेतलीपुत्र ने परणावो।
सेवक वचन सुणे हरख्यो ताह्यो. कलाद सोनार रे घरे आयो॥ १०॥
कलाद सोनार आवतो देख, हरख्यो मन मांहें वशेष।
सात आठ पग साहमों जाय, आणें बेसाण्यो आसण विछाय॥ ११॥
विश्राम लीयां पछे कहे आम, पूछे विनो करे सीस नाम।
आप पधार्‍या छो किण काज, ते फुरमावो मोने थे आज॥ १२॥
जब सेवग बोले छे आम, थांरी पुत्री छे पोटला नाम।
ते तेतलीपुत्र ने आपो, भार्यापणे आणी थापो॥ १३॥
एतों जुगत कारज थें जाणो, सारिखो जोग मिलीयो छे आणों।
जे द्रव्य मांगतो ते देसी थाने, इण कारण मेल्यो छे म्हानें॥ १४॥
इम सुणनें कलाद सोनार, मन में हुवो हरष अपार।
अभितर पुरष नें कहे छे आम, म्हारा सरिया छे वंछित काम॥ १५॥
म्हारी पुत्री परणें प्रधान, तो म्हारो वधे लोकां में मान।
कांई द्रव्य मांगूं त्यां तीर, त्यांरा घर सूं हुवो म्हारे सीर॥ १६॥

●

दुहा

इम कहे अभितर पुरुष नें, जीमाया च्यारूं आहार।
फूल वस्त्र गेंहणा पेहराय नें, दियो सनमान नें सतकार॥ १॥
घणों करे रजावंध तेहनें, पाछो सीख दीधी सोनार।
ते आयो तेतलीपुत्र छे तिहां, विवरा सुध कह्या समाचार॥ २॥

ढाल : २

[रे जीव मोह अनुकपा न आणिये]

ए कन्या परणावसी आप नें. हूं आयो छूं करनें लगाय रे।
तेतलीपुत्र इम सांभली. मन मांहें हरषित थाय रे।
तेतलीपुत्र रीझ्यो पोटला धणी* ॥ १॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

हिवे काल कितो एक वीतां पछें, कलाद नामें सोनार रे।
सोभन तिथ मोहरत जाण ने, पोटला ने नवराई तिणवार रे॥ ते० २ ॥
सर्व अलंकार पेहराय ने, उतकष्टो कीयो सिणगार रे।
वेसाणी तिणने सेवका मभे, भेलो कीयो बोहत परिवार रे॥ ३ ॥
मित्र न्यातीला परवस्यो थको, घर थी नीकलियो वाजा वजाय रे।
तेतलीपुर नगर ने मझ थई, आयो तेतली रा घर मांय रे॥ ४ ॥
पुत्री ने आण सूपी भार्यापणे, सयमेव कलाद सोनार रे।
हिवे तेतलीपुत्र पोटला भणी, करे परणीजण री तयार रे॥ ५ ॥
हिवे तेतलीपुत्र तिण अवसरे, पाट वैठो पोटला सहीत रे।
सेत पीत अनेक कलसें करी, दोनूं सिनान कीयो रूडी रीत रे॥ ६ ॥
पछे अगन होम कीया घणा, हथलेवो मेल्यो हाथो हाथ रे।
पोटला परण्यो मोटे मडांण सं, ऊभा जानी मांडी तिहां साथ रे॥ ७ ॥
मित्र न्यात जीमाय ने, फूल वस्त्रादिक सूं अलंकार रे।
आदर सनमान देई घणो, त्याने सीख दीधी तिणवार रे॥ ८ ॥
तेतलीपुत्र तिण अवसरे, पोटला सूं रक्त अतंत रे।
कामभोग भोगवे तेहसूं, कीला करे रह्यो मन खंत रे॥ ९ ॥

●

दुहा

कनकरथ राजा तिण अवसरे, राजा रो ग्रिधी हुवो अथाहि।
ग्रिधी बल बाहण अंतेवर तणो, वले कोठार नें भंडार रे मांहि॥ १ ॥

ढाल : ३

[भविकजन लोभ बुरो संसार]

मूर्छा पाम्यो त्यामे अति घणी रे, तिणसू जक नही पामे तिल मात।
रखे मोने जीवां मारनें रे, म्हारो राज ले म्हारो अगजात।
भविकजन लोभ बुरो संसार* ॥ १ ॥
तो म्हारा पुत्र अगजात ने रे, खोड करूं सगला रे ताम।
ज्यूं राज न आवे खोडीला भणी रे, ज्यूं ए कदे न ले म्हारो नाम॥ २ ॥
तिणसू एकीका पुत्र तणी रे, हाथनी आंगुली दीधी तोड।
केकां रो अंगूठो तोड्यो हाथ नो रे, इमहिज पगां रे कीधी खोड॥ ३ ॥

---

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केकां नी चूटी काटी कान री रे, नाक पुडा केकां रा फोडाय।
अंग उपंग छेद्या केका तणा रे, सर्व पुत्र खोडीला कीया राय॥ ४ ॥
कनकरथ राजा अति पापीयो रे, तिण मोटो कीयो रे अकाज।
निज पुत्र सारा खोडीला कीया रे, जाण्यों निरभय थकों करूं राज॥ ५ ॥
निज पुत्रां ने खोड करता थकां रे, किणरी न आणी सक।
कर्मवस रुंवली सूझी नही रे, नही जाण्यो पोता रो वंक॥ ६ ॥
घणा पुत्रां नें खोडीला किया रे, कनकरथ नामें राजान।
वले पुत्र होसी तिण उपरे रे, ओहिज लग रह्यो ध्यान॥ ७ ॥
इण परिग्रहा नें कारणे रे, करे वाहां री घात।
दगो मांहोमां करे घणो रे, वले मुख सूं कर कर मीठी वात॥ ८ ॥
मांहोमां मोटा राजवी रे, ते पिण कर रह्या विश्वासघात।
ओरां री कुणसी चली रे, इण परिग्रहा सूं वूडा जात॥ ९ ॥
इण परिग्रहा रे वस जे पड्या रे, त्यानें छे नरक नजीक।
दुख भोगवसी अनंता तिहां रे, वले परमाधाम्यां री झीक॥ १० ॥

●

दुहा

हिवे राणी पदमावती, चिंता करे छे मध्य रात।
ओ राजा पुत्र खोडीला करे, ते आछी नही छे वात॥ १ ॥
ओ पाल्यो न लागे केहनो, वले न रहे करतो अकाज।
खोड वाला ने राज आवे नहीं, घर सूं जातो दीसे छे राज॥ २ ॥
राजा काल गया पछे, म्हाने कुण आधार।
राज वेसारसी ओरने, ते म्हाने नही गिणसी ल्गिार॥ ३ ॥
तों हिवे जनमूं कोई डावडो, तो छानों राखू अनेरे ठाम।
कनकरथ राजा जाणे नही, इसडो करूं कोई काम॥ ४ ॥
एहवी करे विचारणा, वोलायो तेतली प्रधान।
कहे वात कहूं एक था कन्हे, ते सुणज्यो सुरत दे कान॥ ५ ॥

ढाल : ४

[पाखड वधसी आरे पांचवें]

प्रधान नें कहे राणी पदमावती रे, कनकरथ राजा रो माठो ध्यान रे।
निज पुत्रां ने खोडीला किया रे, राज रो लोभी थको राजान रे।
प्रधान नें कहे राणी पदमावती रे* ॥ १ ॥

*— ... के अन्त में है।

सर्व राज ने देश कोठार भंडार सूं रे, अतंत ग्रिधी थयो राजान रे।
तिणसूं निज पुत्रां ने खोडीला किया रे, वले लग रह्यो ओहिज इणरो ध्यान रे॥ प्र० २ ॥
ओ राज जातो दीसें घर पारके रे, पछे आपां ने कोई नही आधार रे।
ओर राजा होसी इण राज रो रे, ते आपा ने न गिणे मूल लिगार रे॥ ३ ॥
जो अबके पुत्र हुवे एक मांहरे रे, ते छाने सूंपूं थानें बोलाय रे।
थे छाने आए छानें लेजावजो रे, कोई नही जाणे ज्यूं करे उपाय रे॥ ४ ॥
राजा छाने तिणने मोटो करो रे, ज्यूं राजा पिण जाणें नही लिगार रे।
ते मोटो हुआ धणी छें राज नो रे, ते थाने म्हांने होसी आधार रे॥ ५ ॥
ए वचन पदमावती राणी तणो रे, प्रधान कर लीधो परमाण रे।
सीख मागे नें पाछो नीकल्यो रे, पाछो आयो छे निज ठिकाण रे॥ ६ ॥
गर्भ आया विण उत्तम जीव री जी, आगुंच बाघ राखी छे बात ।
ते राजा हुसी निज पुन परसाद थी रे, श्रावक पिण होसी छोड मिथ्यात रे॥ ७ ॥
पदमावती राणी ने वले पोटला रे, गर्भ धर्‍यो छे दोनूं साथ रे।
पदमावती जनम्यो पुत्र रत्न नें रे, पोटला मूई पुत्री जणी तिण रात रे॥ ८ ॥
पदमावती पुत्र देख हर्षित हुई जी, निज धाय ने तेडी कहे छे तास रे।
जा तूं तेतलीपुत्र ने घरे रे, छाने तेडी आणो मो पास रे॥ ९ ॥
इम सांभल ने धाय तिहांथी नीकली रे, अतेपुर ने पाछले बारणें होय रे।
आई तेतलीपुत्र छे तिहा रे, हाथ जोडी नें बोल सोय रे॥ १० ॥
आपने बोलाया राणी सताब सू रे, थें छाने आवो राणी रे पास रे।
ए धाय नो वचन तेतली सांभले रे, मन माहे पाम्यों अतंत हुलास रे॥ ११ ॥
ते धाय संघाते घर सू नीकल्यो रे, अतेपुर नें पाछले बारणे जाण रे।
छानें प्रवेस करे आयो तिहां रे, पदमावती पासे ऊभों आण रे॥ १२ ॥
हाथ जोडी नें कहे तेतली रे, आप फुरमावो मोने काम रे।
जब राणी पदमावती तिण अवसरे रे, तेतलीपुत्र नें कहे आम रे॥ १३ ॥
कनकरथ राजा छे लोभी राज रो रे, तिण कीधी सगला पुत्रां रे खोड रे।
राज लायक नही राख्यो एक ने रे, जब किणरोई मूल न चाल्यो जोर रे॥ १४ ॥
हिवडां तो एक बालक म्हे जनमियो रे, तिण बालक ने ल्यो थे हाथ मझार रे।
राजा छाने पाले मोटो करो रे, ते थानें म्हानें होसी आधार रे॥ १५ ॥
इम कहे ने दीधों छे तिणरा हाथ मे रे, प्रधान लीधो छे हाथ मझार रे।
कपडा सूं ढांके ने छानों चालियो रे, नीकलियो पाछिले दुवार विचार रे॥ १६ ॥

दुहा

बालक ले आयो घर आपरें, जिहां पोटला नामें नार।
तेतलीपुत्र कहे पोटला भणी, विवरा सुध विसतार ॥ १ ॥
कनकरथ राजा लोभी राज रो, तिणसूं करे पुत्रां नें खोड।
राज लायक एक राखे नहीं, तिणसूं किणरो न चाले जोर ॥ २ ॥
तिणसूं एक वालक हूं ल्यावियो, पदमावती राणी रो अंगजात।
ओ पुत्र छे कनकरथ राय नों, तिणमे संका नहीं छे तिलमात ॥ ३ ॥
इणने राजा छाने मोटो करो, किणनें मती जणावो लिगार।
थांनें म्हांनें पदमावती राणी भणी, ओ सगलां ने होसी आधार ॥ ४ ॥
इम कहे सूंप्यों पोटला भणी, घणी देई भलावण तिणवार।
पोटला जाई मूड डावडी, ते लीधी हाथ मझार ॥ ५ ॥
तिणने कपडा सेती ढांक नें, अंतेवर ने पाछिल दुवारे आय।
ते पदमावती राणी ने सूंप ने, पछे आयो जिण दिस जाय ॥ ६ ॥

ढाल ५

[इणपुर कंवल कोय न लेसी]

हिवें पदमावती राणी रे पास, अंत प्रतिचारका दासी आई तास।
तिण जनमी देखी मूड बालका तास, ते देखी ने आइ राजा रे पास ॥ १ ॥
हाथ जोडी कहे राजा नें आई, पदमावती राणी मूड डावडी जाई।
कनकरथ राजा सुणे दासी री वाण, निहरण कियो तिणरो मोटे मंडांण ॥ २ ॥
सोग रहीत हुओ छे राजांन, पिण आगलो ओहिज लग रह्यो ध्यान।
हिवे बीजे दिन तेतलीपुत्र परधान, राय पुत्र जाण्यो राय समान ॥ ३ ॥
तिणरा जनम महोछव री मन धारी, ते सगलाइ सज करे छे भारी।
चाकर पुरप ने कहे छे बोलाय, वंदीवान सगलाई छोड्यो जाय ॥ ४ ॥
जाए नगर सिणगारो थें मोटे मंडांण, जनम रा महोछव करजो जाण।
ते सेवग वचन कीयो परमाण, कारज करे आग्या पाछी सूंपी आण ॥ ५ ॥
इग्यारमें दिन असुच काढ्यो छे न्हाय, वारमों दिन आयां न्यात जीमाय।
कनकरथ राजा रों पुत्र छे ताम, तिणसूं कनकधज दीयो नाम ॥ ६ ॥
गिरी गुफा पास वधे चंपा डाल, ज्यूं वधे राय पुतर सुकुमाल।
ते बोहीतर कला तणों हुओ छे जांण, घणो विचषण चतुर सुजान ॥ ७ ॥
अनुक्रमें हुओ छे महा बलवान, आइ कला चतुराइ विगनान।
वले भोग समर्थ हुओ छे ताय, हिवे पोटला रे पाप उदे हुवा आय ॥ ८ ॥

दुहा

तेतलापुत्र प्रधान ने, पोठ्ला नामे नार।
तिणसूं मन भागो प्रधान रो, तिणने गमती न लागे लिगार॥ १ ॥

ढाल : ६

[चतुर नर पोखो पात्र वशेष]

जीहो तेतलीपुत्र प्रधान ने, पोटला लागे जहर समान।
जीहो नाम न सुहावे तेहनो, तिणरो गोत पिण न सुणे कान।
चतुर नर जोवो कर्म विपाक* ॥ १ ॥
जीहो अनिष्ट थइ मन थी ऊतरी, मन नें गमती न लागे लिगार।
जीहो वछा नही वले तेहनी, जावक दीधी मन सूं उतार॥ च० २ ॥
जीहो नाम ने गोत पोटला तणो, काना पिण न सुणे ताय।
जीहो तो मुख साहमों जोवो किहां थकी, तिणने दीठांई न सुहाय॥ ३ ॥
जीहो भोग न भोगवे तेहथी, तिणने कर दीधी अंग थी दूर।
जीहो सेहजाई निजर पडे पोटला तो, बिगडे छे मुख नो नूर॥ ४ ॥
जीहो छती अस्त्री छे पोटला, तिणने कर दीधी अछती ज्यूं ताम।
जीहो विण अवगुण तिणने परहरी, तिणसूं दुष्ट रहे परिणाम॥ ५ ॥
जीहो एकदा पोटला भणी, संकल्प ऊपनो मध्य रात।
जीहो चिंता सोग आरत ध्यान सूं, करवा लागी छे विलापात॥ ६ ॥
जीहो आरत ध्यान ध्यावती थकी, पूर्वली बात करे छे याद।
जीहो विषे री वाही थकी, करवा लागी मन मे विषवाद॥ ७ ॥
जीहो हू तेतली पुतर प्रधान नें, इष्ट कत बाहली हूंती ताम।
जीहो हिवे हू लागू अलखावणी, म्हारों मूल न वांछे नाम॥ ८ ॥
जीहो नाम गोत गमे नही माह रे, वले दीठाई न सुहाय।
जीहो भोग न भोगवे मो थकी, म्हारी गिणत राखे नही काय॥ ९ ॥
जीहो एहवी चिंता सोग उपनो, तिणसूं ध्यावे छे आरतध्यान।
जीहो सकल्प विकल्प कर रही, तिहा आयो तेतली प्रधान॥ १० ॥
जीहो आरत ध्यान ध्यावती पोटला, तिणने दीठी तेतली प्रधान।
जीहो पोटला ने कहे छे तेतली, तूं मत कर आरतध्यान॥ ११ ॥

---

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

दुहा

तूं वीती वात नें जाण दे, हिवे मत कर फिकर लिगार।
म्हारा घर मे थारा हाथ सू, मन माने ज्यूं दे सतूकार ॥ १ ॥
घणा समण माहण आदि दे, रांक गरीब अनाथ।
त्यांने च्यारूंइ आहार नीपजाय ने, दान द्यो थांहरे हाथ ॥ २ ॥
इम तेतलीपुत्र कह्यां थका, पोटला सुण हर्षित थाय।
विने सहित वचन आरे कीयो, बोली करे घणी नरमाय ॥ ३ ॥
हिवे दूजे दिन परभात री, आइ सतूकार साल।
च्यारूंई आहार नीपजाय ने, दान देवे छे दगचाल ॥ ४ ॥
इण विध काल गमावती, पिण न मिट्यो विषे सू ध्यान।
हिवे कारज सुध रे छे किण विधे, ते सुणो सुरत दे कान ॥ ५ ॥

ढाल : ७

[सल्य कोई मत राखज्यो]

तिण काले ने तिण समें, तेतलीपुर नगर मझारो जी।
तिहां आइ सुव्रता आरज्या, तिणरे साथे वहु परिवारो जी।
बात सुणो पोटला तणी* ॥ १ ॥
निरदोष जायगां जाचे उतरी, ध्यावे ध्यान ने करे सझायो जी।
काल जाणें गोचरी तणो, आग्या ले ऊठी गोचरी ताह्यो जी ॥ २ ॥
एक सिंघाडो दोय साधव्या तणो, आयो तेतली रा घर माह्यो जी।
पोटला देखी त्यांनें आवती, घणी हर्षित हुई छे ताह्यो जी ॥ ३ ॥
आसण छोड उभी हुई, वंदणा कीधी सीस नमायो जी।
भाव भगत करे घणी, लेगी रसोडा घर माह्यो जी ॥ ४ ॥
असणादिक वेहराय ने, आ बोले छे जोडी हाथो जी।
मोनें भरतार परणे ने परहरी, मोमें दोष नही तिल मातो जी ॥ ५ ॥
हूं इष्ट कंत वाहली थी अति घणी, हिवे दीठांइ न सुहायो जी।
भोग न भोगवे मो थकी, म्हारा दुख माहे दिन जायो जी ॥ ६ ॥
थें गामां नगरां सगले फिरो, प्रवेश करो घणी ठोडो जी।
राजादिकनां घर मझे, तिणसूं अरज करूं हाथ जोडो जी ॥ ७ ॥
थें पिंडत चतुर दीसो घणा, थे करो मोसूं उपगारो जी।
साखावो मंत्रादिक मो भणी, ज्यूं म्हारे वम हुवे भरतारो जी ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

म्हारो भरतार म्हारें वस हुवे, तो हूं घणी फल फूलूं जी।
जब गमती लागूं भरतार नें, ओ तो उपगार कदे न भूलूं जी ॥ ९ ॥
जब साधवी बोले तिण अवसरे, बेहूं काना आडा देई हाथो जी।
एहवो करवो तो जिहाइ रह्यो, मोने सुणवी न कल्पे वातो जी ॥ १० ॥
म्हे तो श्रमणी निग्रंथी साधवी, जाव गुप्त ब्रह्मचारी जी।
इसडी बाता म्हाने सुणवी नही, म्हे तो शील पालां नववाडी जी ॥ ११ ॥
तूं कहे तो म्हे कहा तो कन्हे, केवली भाषित धर्मो जी।
तिण कीधा जनम मरण मिटे, पामे उतकष्टा सुख पर्मो जी ॥ १२ ॥
जब पोटला कहे थें मो कने कहो, केवली भाषित धर्मो जी।
हूं सुणसूं चित्त लगाय ने, थे कहिता मत राखजो सर्मो जी ॥ १३ ॥
जब धर्म कथा कही साधव्या, विचित्र प्रकारे वागरी वाणी जी।
ते पोटला सुणने सरधिया, तिणरी हाड मींजां रगांणी जी ॥ १४ ॥
हाथ जोडी ने इम कहे, म्हें सरध्या थारा वेणों जी।
थे तारक भवि जीव रा, म्हाने मिलिया थें साचा सेणो जी ॥ १५ ॥
साधुपणो लेणी न आवे मो थकी, म्हारे छे भारी कर्मो जी।
तिणसूं किरपा करे मो भणी, दयो श्रावक नो धर्मो जी ॥ १६ ॥

●

दुहा

जब साधवी बोली तिण अवसरे, करो ज्यूं तोने सुख थाय।
तब बारें व्रत श्रावक तणा, आदरिया छे ताय ॥ १ ॥
भाव सहित आरज्या भणी, कीधी वदणा ने नमसकार।
वले करे गुण ग्राम आरज्यां तणा, सीख दीधी तिणवार ॥ २ ॥
हिवे पोटला हुई सुध श्राविका, हुई जीवादिक री जाण।
ते विचरे बारें व्रत पालती, जिणधर्म लियो छे पिछाण ॥ ३ ॥
श्रमण निग्रंथ अणगार ने, दान दे निरदोषण जाण।
हाड मीजा रगी जिणधर्म सू, ते डाही चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

ढाल : ८

[धीज करे सीता सती रे लाल]

एकदा प्रस्तावे पोटला रे, चितवण करे छे मध्य रात रे। सुगणनर।
उपनां मनोगत भाव तेहना रे लाल, घर मे घडी निफल जात रे। सुगणनर।
भाव सुणो पोटला तणा रे लाल* ॥ १ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

हूं तेतलीपुत्र प्रधान नें रे, इष्ट कंत वाहली थी अतंत रे। सु०।
सुख भोगवती संसार ना रे लाल, याद कियो सगलो विरतत रे। सु०। २ ॥
हिवडां तो लागूं अलखावणी रे, गमती नही लागूं लिगार रे।
नाम गोत न सुहावे मांहरो रे लाल, मोने मनसूं दीधी उतार रे॥ ३ ॥
म्हारो बोल्यो गमे नही तेहनें रे, निजरा दीठी पिण न सुहाय रे।
वले भोग न भोगवे मो थकी रे लाल, म्हारो यूंही जमारो जाय रे॥ ४ ॥
पहिला हाल हुकम थो माहरो रे, हिवे गिणत न दीसे लिगार रे।
हूं इहांईज सुखणी री दुखणी हुई रे लाल, एहवो छे अथिर संसार रे॥ ५ ॥
आ तो संसार नी विटंवणा रे, तिणमे कला न दीसे काय रे।
गाढा वाहला ना वेरी हुवे रे लाल, वेंरी पिण वाहला होय जाय रे॥ ६ ॥
एहवो सरूप छे ससार नो रे, तिणमें सुख नही छे किण ही ठोर रे।
जनम मरण री इण जगत मे रे लाल, सगले लागी छे झोर रे॥ ७ ॥
तो श्रेय किल्यांण छे मो भणी रे, मोनें लेणो संजम भार रे।
सुव्रता आरज्यां कन्हे रे लाल, कर देऊं खेवो पार रे॥ ८ ॥
एहवी कीधी राते विचारणा रे, सूर्य उगां हुओ छे परभात रे।
हिवे आई छे तेतलीपुत्र तिहा रे लाल, विनो करे वोले जोडी हाथ रे॥ ९ ॥
म्हे सुव्रता आरज्यां कन्हे रे, वाणी सुण जाण्यो अथिर संसार रे।
आप किरपा करे द्यो मोनें आगना रे लाल, म्हारे लेणो ' छे सजम भार रे॥ १० ॥
तेतलीपुत्र कहें पोटला प्रते रे, चारित लेई नें चोखों पाले ताय रे।
इहां थी आउखों पूरो करी रे लाल, जो थे मोटो देवता हुवो जाय रे॥ ११ ॥
जो देवलोक थी इहा आय ने रे, मोनें समझावो थे आय रे।
तो देउं थानें आगन्या रे लाल, नही तो वैठा रहो घर माय रे॥ १२ ॥
ए वचन सुणे नें पोटला रे, तेतली सूं कीधों कैंरार रे।
हू देव थई आए समझाव सू रे लाल, थे सका मत राखजो लिगार रे॥ १३ ॥
ए वचन सुणे पोटला तणो रे, तेतलीपुत्र हर्षित थाय रे।
च्यारूं आहार निपजाय नें रे लाल, मित्र न्यात जीमाई ताय रे॥ १४ ॥
सिनांन करायो पोटला भणी रे, भारी वस्त्र गेहणा पहिराय रे।
सहस पुरष उपाडे एहवी सेवका रे लाल, ते पिण घणी सिणगारी छे ताय रे॥ १५ ॥
तिण माहे बेसाणी पोटला भणी रे, मित्र न्यातीला लीया साथ रे।
अनेक वाजंत्र वाजतां थकां रे लाल, रूडी रीत सूं चलिया जात रे॥ १६ ॥
तेतलीपुर नगर ने मझें थई रे, सुव्रता आरज्या तिहां आय रे।
पोटला पालखी थी हेठी उतरी रे लाल, तिणरे उछरंग घणो मन मांय रे॥ १७ ॥

दुहा

मित्र न्यातीला साथे करी, आगे कीधी पोटला नार।
सुव्रता आरज्या तिहां आय ने, करें वंदणा ने नमसकार॥ १॥
तेतली कहे आरज्यां प्रते, म्हारे पोटला नामे नार।
ते इष्ट कत मोनें अति घणी, तिण अथिर जाण्यो संसार॥ २॥
ते बीहनी जामण मरण थी, दीक्षा लेवा री छे मन मांहि।
तिणसूं भिष्या आपूं सिखणी तणी, आप दीप्या दीजे ताहि॥ ३॥
जब साधवी बोली तिण अवसरे, ज्यूं तोने सुख थाय।
ए वचन सुणे नें पोटला, घणी हर्षित हुई मन मांय॥ ४॥
ईशाण कूण मे जाय ने, आभरण उताऱ्या तास।
पाच मुष्टी लोच हाथे कियो, आय उभी आरज्या रे पास॥ ५॥

ढाल : ६

[वेरागे मन वालियो]

हाथ जोडी ने पोटला, नीचो सीस नमाय।
जन्म मरण री ससार मे, चिहुगति मे लागी लाय।
धिन धिन पोटला मोटी सती*॥ १॥
इण जन्म मरण री लाय थी, मोनें काढो थे बार।
किरपा करो मो उपरे, द्यों मोनें संजम भार॥ २॥
जब सुव्रता नामे साधवी, गुण रत्ना री भडार।
तिण अवसर पोटला भणी, दीधो संजम भार॥ ३॥
जिम देवानंदा ब्राह्मणी, तिम पोटला पिण जाण।
आचार सीखे पडपक्क हुइ, डाही चतुर सुजाण॥ ४॥
गुरणी तणी लेई आगन्यां, तप कर सोखी काय।
चले अग इग्यारें मुख भणी, सुमता घणी मन माय॥ ५॥
चारित पाल्यो निरमलो, वहु वरसां लगे ताम।
एक मास सथारो आयो तेहनें, दिढ राख्या परिणाम॥ ६॥
आलोए पडिकमी सुध हुई, पामी परम समाध।
आउखो पूरो कीयो, श्री जिण धर्म अराध॥ ७॥
इहां थी मरने पोटला हुवो, मोटो विमाणीक देव।
मोट की रिध तणो घणी, तिहां सुख भोगवे नितमेव॥ ८॥
ते पोटला नामे देवता, तेतलीपुत्र ने ताय।
किण विध समझावे तेहनें, ते सुणजो चित लाय॥ ९॥

दुहा

हिवे काल कितोएक बीतां पछे, कनकरथ राजा कीयो काल।
जब मोटे मडाणे करी तेहनें, नगरी बाहिर कीयो छे निकाल ॥ १ ॥
लोकिक कारज कीया मरण ना, घणों धन खरच्यो छे ताहि।
हिवे राजादिक सहु भेला थई, विचार करे माहोमाहि ॥ २ ॥
कहे कनकरथ राजा अति लोभियो, तिण मोटो कीयो छे अकाज।
निज पुत्र सारा खोडीला कीया, हिवे किणनें बेंसाणां राज ॥ ३ ॥
कहे आपे सगला हुंता, राजा जीवता सगलाई सनाथ।
राजा काल गया थका, हिवे सगलाई आपे छां अनाथ ॥ ४ ॥
तो हिवे सगला भेला थई, चालो तेतलीपुत्र ने पास।
ते मुदें प्रधान छे राजा तणो, आपां ने उणरो पूरो छे विश्वास ॥ ५ ॥
मुदे मुदे उमराव हुता तके, वले राजा ईसर तलवर जांण।
तेतलीपुत्र ने घरे चालिया, एतो कर मोटे मंडाण ॥ ६ ॥

ढाल : १०

[चतुर नर चोपड इण विध खेलें रे]

आया तेतलीपुत्र तणें घरे मत्री मोरा, जिहां बैठो तेतली प्रधान रे।
यांनें आवता देख उभो थयो मत्री मोरा, दीधो आदर सनमान रे।
रे मुझ बुधिवंत मंत्रवी, मंत्री मोरा राजपुत्र कोई आप रे॥ १ ॥
उमराव कहे तेतली प्रते मत्री मोरा, काल गयो कनकरथ राय रे।
राज लायक पुत्र नही राय रे मं०, करवो कवण उपाय रे॥ २ ॥
कनकरथ राजा राज रो लोभीयो मं०, तिण दीया पुत्र विगाड रे।
त्यां खोडीला ने राज आवे नही मं०, हिवे मोने कुण आधार रे॥ ३ ॥
म्हे षत्री पुत्र राजा रे वस हुता मं०, हुता राजा रा आधीन रे।
तुम्हे तो राय मत्री प्रधान छो म०, चतुर घणा प्रवीण रे॥ ४ ॥
थें राजा रा काम छे तेहमे मं०, थे सगलेइ हुता प्रवीण रे।
कनकरथ राजा था भणी म०, सगले ठामे आग्या दीन रे॥ ५ ॥
राजा री छानी वात थें जाणता मं०, राज तणा अधिकार रे।
सर्व चिंता हुती थाने राज री म०, था छानी नही लिगार रे॥ ६ ॥
तिण कारण म्हे सगला भेला थई म०, आया तुम्हारे पास रे।
राजा काल गया थकां म०, म्हे हुआ अतत उदास रे॥ ७ ॥
म्हे राज बेसाणां केहने मं०, राय पुत्र सगला मे खोड रे।
तिणसू म्हे आया छां थां कनें मं०, म्हांरो तो ओहिज जोर रे॥ ८ ॥

थांनें चिंता हूती सर्व राज री, राज तणा थे थंभ रे।
थें राज री धुरा धुरंद छो, बुधि पिण थांरी अचंभ रे॥ ९ ॥
कोई रायपुत्र थांरा भेद मे, राज लषण ते जाण रे।
राज लायक हुवे तेहने, सूप दो म्हाने आण रे॥ १० ॥
तो म्हें राज बेसांणां तेहनें, रहे ज्यूं राजा रो राज रे।
कोई राजपुत्र छानो हुवे, ओ अवसर छे आज रे॥ ११ ॥

दुहा

हिवे तेतलीपुत्र कहे तेहने, थे राखो मन मे आणंद।
एक कुंवर छानो मोटो म्हें कीयो, ते जाणें पूनम रो चंद॥ १ ॥
इम कहे आणी सूंप्यो तेहनें, ओ कनकरथ राजा रो पूत।
राणी पदमावती रो अंग जात छे, कनकधज कुंवर अदभूत॥ २ ॥
ओ राज बेसाणवा जोग छे, राज लषण पूरा छे इण मांहि।
कनकरथ राजा जीवता थकां, म्हें छाने वधार्‍यो छे ताहि॥ ३ ॥
इणनें राज बेसाणो निसंक सूं, ओ होसी मोटो राजान।
वले धुर सूं उतपत इण कुंवर नी, माड कही प्रधान॥ ४ ॥
ए वचन सुणे तेतली तणो, राय पुत्र निसंक सूं जाण।
राज बेसाण्यो कनकधज कुंवर ने, कर मोटे मडाण॥ ५ ॥

ढाल : ११

[कपूर हुवे अति उजलो ए]

हिवे कनकधज राजा हुवो जी, हेमवंत ज्यूं मोटों प्रसिद्ध।
जस कीरत हुई लोक मे जी, काम भोग ने रिध समरिद्ध।
राजेश्वर पुन्य तणा फल जोय* ॥ १ ॥
बडा भाई सारा झिलता रह्या जी, त्याने तो नही आयो राज।
ओ धणी हुवो छे राज रो जी, पुन सूं आय मिलिया साझ॥ रा० २ ॥
पदमावती राणी तिण अवसरे जी, कनकधज कुमर नें बोलाय।
तूं प्रधान रे घरे मोटों हुवो जी, सारी उतपत दीधी सुणाय॥ ३ ॥
राज लिषमी मिली सर्व ताहरे जी, थारो मिट गयो सोग सताप।
तूं राज हुवो छे मोटको रे, ते सारो प्रधान रो प्रताप॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तिणसूं तेतली प्रधान ने रे, घणो दीजें आदर सनमान।
तिण आयां उठ उभो थई रे, बाप जिम गिणजे प्रधान॥ ५ ॥
घणी सेवा भगत कीजें तेहनी रे, अर्द्ध आसण आप जे तांम।
घरे जातो विनो कीजे तेहनों रे, भाव भगत कीजे ठांम ठांम॥ ६ ॥
वले घणो वधारजे तेहनें रे, वले राखजे उणरी लाज।
काण म लोपे तेहनीं रे, थारें उणरो दीयो छे राज॥ ७ ॥
कनकधज राजा तिहां रे, माता नों वचन कीयो प्रमाण।
हाल हुकम राखे छे प्रधान रो रे, मूलगों उपगारी जाण॥ ८ ॥
कनकधज राजा प्रधान नो रे, घणो वधास्यो छे मान।
ते सुख भोगवे संसार नां रे, तेतली पुत्र प्रधान॥ ९ ॥

●

दुहा

हिवे पोटला नामे देवता, अवधि प्रजूज्यो ताम।
ते आयो तेतलीपुत्र कने, तिणने प्रतिबोधण रे काम॥ १ ॥
वार वार कहे छे देवता, केवली भाषित धर्म।
समझायो मूल समझें नही, मूल न पडियो नर्म॥ २ ॥
जब पोटल देवता तेहनां, उपनां मन नां परिणाम।
कनकधज राजा एहनो, वधास्यो छे घणों तमाम॥ ३ ॥
तिणसूं वारूंवार प्रतिबोधतां, प्रतिबोध न पाम्यो ताम।
तो कनकधज राजा तणा, इणसूं फेर देउं परिणाम॥ ४ ॥
एहवी कीधी देव विचारणा, तेतली प्रधान सूं ताम।
कनकधज राजा तणा, फेर दीया परिणाम॥ ५ ॥

ढाल : १२

[थे तो चतुर सीखो छव चरचा]

हिवे तेतलीपुत्र प्रधानो रे, परभाते कीयो छे स्नानो।
असुभ टाल्यो तिणवारो रे, द्रोबादिक घाल्या सिर मझारो॥ १ ॥
राजसभा जावा हुवो त्यारो रे, तिणसूं घोडे असवारो।
घणा पुरष छे तिणरे लारो रे, निकलियो छे घर सूं बारो॥ २ ॥
कनकधज राजा रे दुवारो रे, चाल्यो तिण मारग मझारो।
तिणरें हरष घणो मन मांह्यो रे, किणही वात री फिकर न कायो॥ ३ ॥

आगें कनकधज राजा तामो रे, देवता फेर्‌या छे परिणामो।
तिणरी खबर नही छे प्रधानो रे, राजा रो जाणे ओहिज सनमानो॥ ४॥
मारग माहे विचें जातां तामो रे, लोक विनो करें ठाम ठामो।
घणा राजा इसरादिक वशेषो रे, हरषे सहू आवता देखो॥ ५॥
घणो देवें आदर सनमानो रे, राजा रो जाणें प्रधानो।
उभा थइने हाथ जोडी रे, विनो करे मान मरोडी॥ ६॥
इष्ट कतकारी बोले बाणी रे, कानां नें लागे अमीय समाणी।
करे अलाप सलाप विशेषो रे, आगे पाछे लोक अनेको॥ ७॥
वले दोनूं पसवाडे तामो रे, गुण कीरत करें ठाम ठामो।
घणी विरदावली बोलावे रे, इण रीतें राजा कनें आवे॥ ८॥
जिहा बेठो कनकधज राजानो रे, तिहां आयो तेतली प्रधानों।
तेतलीपुत्र ने देखी रायो रे, साहमोइ न जोवे ताह्यो॥ ९॥
मुख सूं पिण नही बोलायो रे, उठ उभो नही हुवो रायो।
वले न दीयो आदर सनमानो रे, मूह फेरी बेठो राजानों॥ १०॥
तेतलीपुत्र प्रधान ताह्यो रे, राजा रे पासे उभो आयो।
अजली करे सीस नमायो रे, विनो भगत घणी करी ताह्यो॥ ११॥
जब मुख नही बोल्यो राजानो रे, नही दीयो आदर सनमानो।
मून साझ रह्यो छे तामो रे, जाबक फिर गया परिणामो॥ १२॥
वले उमराव सारा तिणवारो रे, कोई उभो न हुवो लिगारो।
किणही न दीयो आदर सनमानो रे, तिणसूं डरप्यो घणों प्रधानों॥ १३॥
जब तेतलीपुत्र तिण ठामो रे, राजा रा जाण्या दुष्ट परिणामो।
घणो भय पाम्यो प्रधानो रे, मोसूं रूठो अतंत राजानों॥ १४॥

दूहा

आज भलो नही मांहरे, इम चितवे प्रधान।
मो उपर राजा तणों, दुष्ट दीसे छे ध्यान॥ १॥
तो कनकधज राजा मो भणी, मोने कुण कुमीचां मार।
इम जाणे प्रधान बीहनो घणो, घणी त्रास पाम्यों तिणवार॥ २॥
तिहाथी हलवें हलवे पाछो वल्यो, घोडे हुवो असवार।
राजसभा थी नीकल्यो, एकलडो निरधार॥ ३॥
तेतलीपुर नगर नें मझ थई, आवे निज घर मांय।
विचे कुण कुण विरतत हुवे, ते सुणजो चित ल्याय॥ ४॥

ढाल : १३

[कर्म भूगत्यांई छूटिए]

हिवे तेतलीपुत्र प्रधान ने, साहमां मिले मारग मझार लाल रे।
आदर सनमान नही दे तेहने, कोई न करे तिणसूं जुहार लाल रे।
कर्म भुगत्याईज छूटीए* ॥ १ ॥

बाजार माहे तिणने देख ने, कोई उभो न हुवे ताम लाल रे।
ऊंचोइ हाथ करे नही, बैठा रहे निज ठाम लाल रे॥ २ ॥

राजा ईसर तलवर आदि दे, ते पिण न दे आदर सनमान लाल रे।
वले उंचोइ हाथ करे नही, निजरा देखी तेतली प्रधान लाल रे॥ ३ ॥

आगे पाछे मिनष एको नही, बेहू पसवाडा पिण नही कोय लाल रे।
इष्ट वचन न बोले कोई तेहने, केई साहमो रह्या छे जोय लाल रे॥ ४ ॥

हिवे तेतलीपुत्र आयो घरे, बाहिरली परखदा ताम लाल रे।
किणही आदर सनमान दीयो नही, सारा बैठा रह्या निज ठाम लाल रे॥ ५ ॥

तिहां थी आयो अभितर परखदा मझे, मात पिता अस्त्रियादिक ताम लाल रे।
त्यां पिण आदर सनमान दीयो नही, सारा बैठा रह्या निज ठाम लाल रे॥ ६ ॥

तिहां थी आयो निज आवास मे, निज सेज्या उपर बैठो आय लाल रे।
तिहा करे चितवणा तेतली, म्हारा पुन गया दीसे विललाय ॥ ७ ॥

हू घर सूं नीकलियो थो इण विधे, पाछो घरे आयो इण रीत लाल रे।
मोने राजा दीसे छे मारतो, करे घणी कुपीत लाल रे॥ ८ ॥

तो श्रेय किल्याण छे मो भणी, मरूं तालकूट विष खाय लाल रे।
इम जाणी घाल्यो विष मुख मझे, पिण विष नही लागो ताय लाल रे॥ ९ ॥

जद खडग लियो तिण हाथ मे, तिणरी तीखी घणी छे धार लाल रे।
ते आण टेकी ग्रीवा मझे, ते धार गले न बेसे लिगार लाल रे॥ १० ॥

तिहा थी आयो असोगवाडी मझे, गले पासी लीधी छे ताम लाल रे।
ते पासी गला थी तूटे गई, ते मूओ नही तिण ठाम लाल रे॥ ११ ॥

जद मोटी सिला पाषांणनी, तिण बाधी गला मे आण लाल रे।
पछे ऊंडा पाणी माहे पड्यो, ते जल हुवो थल समाण लाल रे॥ १२ ॥

जब सूका तिणारो ढिगलो कीयो, पछे अग्नि मेली तिण माहि लाल रे।
पछे पोतें पेठो तिण अगन में, जद अग्नि बुझे गई ताहि लाल रे॥ १३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दुहा

ए सगला वांना देवता कीया, ते पिण खबर न काय।
हिवे विचार करे छे किण विधे, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ १ ॥

ढाल : १४

[प्रभवो चोर चोरां ने समभावे]

हिवे तेतलीपुत्र मन एम विमासे, समण निग्रंथ भाखे इम वाणी रे।
इण जीव रें सखाइ कोई नही दीसे, पुन ने पाप भोगवे छे प्राणी रे।
तेतलीपुत्र मन एम विमासे* ॥ १ ॥
एकलडो जीव परलोके जावे, इणरो कोई न दीसे बेली रे।
आ निश्चे साची बात म्हे नही सरधी, म्हे अग्यानी थके यूंही ठेली रे॥ २ ॥
ते आज बीती मोमे प्रतष निश्चे, ते अरू वरू छे नहीं छानें रे।
हू पुत्र सहित पुत्र रहित थयो छूं, आ बात म्हारी कुण माने रे॥ ३ ॥
म्हारे मित्री हुंता ते हूआ अमित्री, आ पिण म्हारी कुण मानें रे।
इण विध बधव अस्त्री आदि दे सजन, ए सगलाई उत्तर दीयो म्हाने रे॥ ४ ॥
हू तेतलीपुत्र प्रधान राजा रो, हाल हुकुम सगलेई थो म्हारो रे।
तिण राजा तो मोसूं दुष्ट चिंतवियो, तेतली कीयो सगलोई विचारो रे॥ ५ ॥
जब तो म्हे तालकूट विष खाधो, तिणसू पिण मूओ नांही रे।
पछे खडग सूं गलो म्हें काटणो माड्यो, तिणसू चीरो पिण नायो काई रे॥ ६ ॥
म्हे पासी लीधी ते डोरी तूटी, पिण घात हुई नही म्हारी रे।
मोटी सिला बाधे उंडा पाणीमें पडियो, ते थल थयो पाणी मभारी रे॥ ७ ॥
म्हे सूका तिणां रो ढिग करे ने, माहे बेसे ने अगन लगाई रे।
ते पिण अगन बुझे गई सारी, मोनें असाता न हुई काई रे॥ ८ ॥
ए सगली बात वीती आज मोमे, ते मोसूं तो नही छे छाने रे।
जो आ प्रतष बात कहूं लोका ने, तो म्हारी मूल न माने रे॥ ९ ॥
इम संकल्प विकल्प मन माहे करतां, जाण्यों अथिर संसारो रे।
तेतलीपुत्र सगला सूं विरक्त हुओ, पोटल देव आयो तिणवारो रे॥ १० ॥

दुहा

पोटल नामें देवता, कर पोटला नो रूप।
आय उभो तेतलीपुत्र कने, वले बोले वचन अनूप॥ १ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ढाल : १५

[धूतारो नाचणो]

हिवे कहे छें पोटल देव आय, तेतली प्रधान ने जी।
हिवे सुण तूं चित्त लगाय, म्हारो कह्यो मानजे जी।
हिवे समझ तेतली प्रधान, कहे तोने पोटला जी॥ १॥
आगे तो उंडी रवाड़ छे ताहि, पूठे हस्ती जिहां जी।
बिहु पासे अंधारो अथाय, बिचे बांण पडे तिहां जी॥ २॥
बले छे बेहूं रन ने गाम, कहे तूं जाइस किहा जी।
किण ठामे लेसी विश्राम, उत्तर दें मोने इहां जी॥ ३॥
बीहकण नें कुण सरणों आधार, कहे तूं तेतली जी।
बीहकण ने सरणो परवत पहाड, इसडी ठाम जेतली जी॥ ४॥
मन ओपरिया ने आधार, पोता रा देश नो जी।
खुद्या लागां अतंत अपार, आधार अनेस रो जी॥ ५॥
तिरषावंत ने पाणी रो विश्राम, रोगी ने ओषध तणो जी।
कपटी ने आधार गुप्त ठाम, तिहा सुख पामें घणो जी॥ ६॥
अविसवासी ने आधार जाण, प्रतीतकारी तणो जी।
मारग थाका नें वाहण पिछाण, उपर बैठासूं हर्षपणो जी॥ ७॥
पाणी तिरवानो कामी थाय, आधार छे जिहाज रो जी।
कोई बेरी पराभवे आय, सखाई ना साझरो जी॥ ८॥
षंत दंत जितेंद्र ने नाहि, इतरा बोला माहिलो जी।
यांरो भय न उपजे मन माहि, कदे न हुवे कायलो जी॥ ९॥
पोटला पूछ्या प्रश्न आय, दीया जाव तेतली जी।
सुण ने पोटला हर्षी ताम, ते कही ते सारी भली जी॥ १०॥
संसार थकी भय पाम, दिष्या ले मन रली जी।
इम सुण पोटला हरख्यो तांम, तिणने कहे छे वली जी॥ ११॥
थे तों आछा किया छे अर्थ, गिनांन सूं जाणने जी।
तूं चारित लेण होयजा समर्थ, समता भाव आणने जी॥ १२॥
हूंतो पोटला नामे नार, पाछिल भव तुम तणी जी।
थें तो कीयो मोसूं करार, समझावण भणी जी॥ १३॥
तिणसूं थांनें समझावण काज, खप म्हे कीधी घणी जी।
चाला चिरत कीया म्हे आज, थारे कारण भणी जी॥ १४॥

राजादिक री मुनरी फेर, कीया थांनें पाधरा जी।
थांनें आण्या ठिकाणें वेर, धारो विड्द साध रा जी ॥ १५ ॥
थें चारित ले, हुवो शूर, टाले सर्व दोष नें जी।
थें कर्म करे चकचूर, बेगी वरो मोष नें जी ॥ १६ ॥
दोय तीन वार कही ताय, तेतली प्रधान नें जी।
देव आयो जिण दिस जाय, तिणनें गाढो जाणनें जी ॥ १७ ॥

●

दुहा

हिवें तेतलीपुत्र प्रधान ना, आया सुभ परिणाम।
जाती समरण उपनों, याद आयो पाछिल भव तांम ॥ १ ॥
तेतलीपुत्र तिण अवसरें, चित्त में पाम्यों परम समाध।
हिवें करे छे सुध विचारणा, छोडे सगलों विषवाद ॥ २ ॥

ढाल : १६

[प्रभवो मन मांहे...]

जंबूदीप महाविदेह खेतर में, तिणरे पूर्व कांनी।
पुखलावती नांमे विजय तिहां, पुंडरीकण राजधानी ॥ १ ॥
तिण राजधानी रो हूं अधिपती, महापदम नामे राय।
रिध सपत तिहां म्हारें अति घणी, राज करतो थों ताय ॥ २ ॥
तिण नगरी थिवर पधारिया, गुण रत्नां रा भंडार।
त्यांरी वाणी सुण हूं वेंरागियो, लीधो संजम भार ॥ ३ ॥
त्यां थिवरां समीपे हू भण्यों, चवदे पूरव ग्यान।
तिहां घणा वर्षा लग पालियो, चोखो चारित निधान ॥ ४ ॥
सलेखणा कर एक मास नीं, तिहा थी कीधो काल।
महा शुक्र छे देवलोक सातमो, तिह्रां हुओ देव विशाल ॥ ५ ॥
तिहां म्हे देव तणा सुख भोगव्या, पूरव पुन पसाय।
आउखो सागरां तणो भोगव्यो, तिण देवलोक मांय ॥ ६ ॥
तिहां देव आउखो पूरो करे, देव भव खय कीधों।
थित खय कीधी म्हे देव री, इहां आय जनम लीधो ॥ ७ ॥
इण तेतलीपुर नगरी मझे, तेतली प्रधान।
तिणरें भद्रा नांमें अस्त्री, गुण रत्नां री खान ॥ ८ ॥

तिणरी कूखे उपज हूं जनमियो, मोटो हुवो ताह्यो।
हू प्रधान हुओ राजा तणो, घणो हुकम चलायो॥ ६ ॥
हिवे राजा तो म्हांसू फिर गयो, जब हूं पाम्यों असमाध।
इण भव नें पाछिल भव तणी, सगली कीधी याद॥ १० ॥
तिहा संसार जाण्यो कारिमो, जनम मरण सूं बीन्हो।
काम भोग लागा विष सारिखा, वेराग मे भीनो॥ ११ ॥
म्हे पाछिल भव चारित पालीयो, मर हुवो मोटो देव।
तो श्रेय किल्याण छे मो भणी, संजम लेऊं स्वमेव॥ १२ ॥
एहवी करे तिहा विचारणा, महाव्रत लीया प्रधान।
साधु थई तिहांथी सचरया, गया पदम वन उद्यान॥ १३ ॥
असोग वृष तिण बाग मे, पुढवी सिला तिण हेठो।
तिण पुढवी सिला पट उपरें, तिण ठामे आय बैठो॥ १४ ॥
तिण सिला उपर बैठां थकां, ध्यायो निरमल ध्यान।
याद आयो भण्यो भव पाछिलो, चवदे पूरव ग्यान॥ १५ ॥
स्वमेव चवदे पूरव भण्यो, तेतली अणगारो।
परिणाम ध्यांन लेश्या भली, चढता छे तिणवारो॥ १६ ॥
चढता चढता परिणाम चढ गया, चढियो शुक्ल ध्यांन।
च्यार घणघातिया कर्म पे कीया, उपनो केवल ग्यांन॥ १७ ॥

दुहा

तेतलीपुर नगर सूं ढूकडा, वाण मत्र देव देवी ताय।
त्यां मोटे-मोटे शब्दे करी, देवदुदुभी बजाई आय॥ १ ॥
पाच वर्णा फूलां री विरखा करी, वले गावा लागा गीत।
गंधर्व नाद कीया घणा, ज्यूं देव तणी छे रीत॥ २ ॥
गधोदक पाणी री विरखा करी, नाटक पाड्या तिण ठाय।
महोच्छव कीया केवल ग्यान रा, त्यां कीया घणा हंगाम॥ ३ ॥
बाजंत्र अनेक वजाविया, घणी महिमा कीधी त्यां आय।
पछे वाणमंत्र देवी देवता, आया जिण दिसि जाय॥ ४ ॥
तेतलीपुत्र दीष्या लीधी तेहनी, बात सुणी कनकधज राय।
ते पिछताप किण विध करे, ते सुणज्यो चित्त ल्याय॥ ५ ॥

ढाल : १७

[कोणक करे घणो पिछाण]

तेतलीपुत्र चारित लियो जी, ते सुण नें कनकधज राय।
चिंता हुई मन में घणी जी, निज आगुण जाण्या ताय।
कनकधज करे घणो पिछताप* ॥ १ ॥
म्हे दुष्ट चिंतवियो तेहसूं जी, नही दीयो आदर सनमान।
म्हारा डर रे घालिये जी, चारित लियो प्रधान ॥ २ ॥
अकल भिष्ट हुई माहरी जी, म्हे कीधी घणी जबून।
म्हे पूठ फेरी प्रधान सूं जी, म्हारो विना कीयाई खून ॥ ३ ॥
ओ थभ हुतो म्हारा राज रो जी, वले राज धुरा धुरंद।
हूं उण करनें न चिंतव्यो जी, मोनें रहितों परम आणद ॥ ४ ॥
आ सगली चिंता राज री जी, म्हारे पडी गला मे जी आय।
म्हे हाथां कमाया कामडा जी, ते कहूं किण कनें जाय ॥ ५ ॥
हूं राज लिखमी सर्व भोगवूं जी, ते सगलो उणरो उपगार।
इसडा गुण कीधा मो थकी जी, ते म्हे घाल दीया विसार ॥ ६ ॥
म्हानें पाल पोस मोटों कियो जी, राजा छानें एकंत।
ते न जणायों केहने जी, ओ इसडो थो मतवत ॥ ७ ॥
ते पिता जाणे जो माहरो जी, तो करतो म्हारे पिण खोड।
ते खोड न हुई म्हारे तिण थकी जी, म्हे तिणसूंई न्हांखी तोड ॥ ८ ॥
म्हानें दीधी भलावण एहनी जी, म्हारी मा मोने एकत बोलाय।
तू पिता सम जाणे प्रधान नें जी, ते म्हे वचन लोपे दीयो ताय ॥ ६ ॥
म्हारा बडा भाई भिलता रह्या जी, मोने आयो छे राज।
ते उपगार प्रधान रो जी, त्यारी मूल न राखी म्हे लाज ॥ १० ॥
यारो विनो भगत सर्व छोड नें जी, तिण आया दीधी म्हे पूठ।
इण मूल न विगाड्यो माहरो जी, तिणसूं बैठो अफूठो रूठ ॥ ११ ॥
ओ दिख्या लेनें निकल्यो जी, बैठो बाग मे जाय।
ते सगली उतपत माहरी जी, ते कही कठा लग जाय ॥ १२ ॥
तो हिवे जाय खमाउ तेहनें जी, म्हारो कियो अपराध।
त्यानें वादूं सीस नमाय नें जी, ते होय बैठा छे साध ॥ १३ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वारुंवार खमावूं जाय नें जी, विनो करे वारुंवार।
त्यारे पगे पडे कहू तेहने जी, थें मोटा छो अणगार ॥ १४ ॥
एहवी करे विचारणा जी, चउरंगणी सेना ले साथ।
आयो पदम वन उद्यान मे जी, नम्यो साधु ने जोडी हाथ ॥ १५ ॥
तेतली अणगार ने वांद ने जी, कहे थे मोटा छो साध।
म्हे अविनो थारो कीयो घणो जी, थे खमज्यो म्हारो अपराध ॥ १६ ॥
वारुंवार खमाय ने जी, बैठो सनमुख आय।
सेवा भगत करे भाव सूं जी, वाणी सुणवा री मन चाय ॥ १७ ॥

दुहा

कनकधज राजा बैठो तिहा, वले बैठी परखदा अनेक।
त्यांने मुनिवर दीधी देसनां, ते सुणजो आण विवेक ॥ १ ॥

ढाल : १८

[वीर सुणो मोरी वीनती]

जीवादिक नव तत्व तणा, भिन-भिन भाख्या रे श्रीजिणवर आप।
उपदेश देवे छे सकल नें, अण बोल्या रे सुणजो चुपचाप।
साधु कहे राजा सुणे* ॥ १ ॥
रिध सपत सगली संसार मे, जीव पामी रे अनंत अनतीवार।
ते मिल मिल ने विललायगी, ते कहिता रे कदेय न पामे पार ॥ २ ॥
देव पदवी इण जीवडे रे, ते पिण पामी रे अनतीवार।
अनंतवार नरके गयो, ते पिण कहितां रे कदेय न पामें पार ॥ ३ ॥
ओ जीवकाल अनाद रो, चिहूंगति मे रे भटक्यो वार अनंत।
धर्म विना ओ जीवडो, नहीं पाम्यो रे संसारनो अत ॥ ४ ॥
सगला सूं थोडा भव कीया मिनख रा, तिण सेती रे असंख्यात गुणा जाण।
इतरा भव कीया जीव नरक रा, तिण माहे रे सका मूल म आण ॥ ५ ॥
जितरा भव कीधा छे नरक ना, तिण सेती रे असख्यात गुणा जाण।
इतरा भव कीया जीव देव रा, तिण मे पिण रे संका मूल म आण ॥ ६ ॥
देव थकी तो भव तिर्यंच रा, जीव कीधा रे अनत गुणा जाण।
इण विध रुलीयो संसार मे, कर्मां वस रे लागी ताणा ताण ॥ ७ ॥

---

* यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

थोडो काल रह्यो जीव मिनख में, नरक माहे रे असंख्यात गुणो जाण।
तिणसूं अख्यात गुणो काल देव मे, तिर्यंच गति मे रे अनत गुण पिछाण ॥ ८ ॥
समकित विना जीव ससार में, चिहुगति में रे रुलियो काल अनंत।
ते कुगुरां तणा परताप सूं, नही मिलियो रे कोई उत्तम संत ॥ ९ ॥
भागल तूटल जीव नें गुर मिल्या, त्यारी सेवा रे कीधी दिन रात।
त्यां ऊंधी सरधा धराय ने, गाढो कीधो रे तिणरे मिथ्यात ॥ १० ॥
निगुणा देवगुर जीव धारिया, हिसा कीधा रे जीव सरध्यो धर्म।
तिण करनें मूढ जीवडो, भारी हुवो रे बांधे जाडा कर्म ॥ ११ ॥
देवगुर धर्म तीनूं रत्न भला, त्याने परखो रे चित्त राखे ठिकाण।
जिण आगना सहित करणी करो, ज्यूं थे पामो रे अविचल निरवाण ॥ १२ ॥
आगार ने अणगार नो, जिण भाख्या रे दोनूं निरवद धर्म।
ए मोष रा मारग पाधरा, तिण पाल्या रे तूटे आठोंइ कर्म ॥ १३ ॥
मसार खारो लागा विना, त्यासूं न पले रे जिण भाषित धर्म।
काम भोग विषे रस लोभिया, त्यांरे लागे रे जाडा पाप कर्म ॥ १४ ॥

●

दुहा

वाणी सुण ने परखदा, आई जिण दिसि जाय।
हिवे कनकध्वज राजा तिहां, किण विध बोले वाय ॥ १ ॥

ढाल : १९

[राधा प्यारी हे ले ·]

हाथ जोडी राजा इम कहे, म्हे तो सरध्या छे तुमना वेण। जिणंद मोरा हो[1]।
थे तारक भवि जीव रा, मोनें मिलिया थे साचेला सेण। जि० ॥
थें तिरया तारो भवि जीव नें[2] ॥ १ ॥
सेठ सेनापती राजवी, धिन धिन हुवे जे अणगार।
इतरी तो पोहच म्हारी नही, मोने दो थे श्रावक व्रत वार ॥ २ ॥
तस जीव न मारू स्वामी जाणने, मोटा झूठ तणो परिहार।
वले चोरी न करू स्वामी पारकी, वले नही सेवू परनार। ॥ ३ ॥
मरजादा करावो परिग्रहा तणी, वले दिसि री करावो मरजाद।
वले उपभोग परिभोग री, त्यांरो पिण छोडावों मोने स्वाद ॥ ४ ॥

१—प्रत्येक गाथा के दूसरे और चौथे चरण के अन्त मे इसकी पुनरावृत्ति समझें।
२—यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

हूं अनर्थ पाप करूं नही, नवमो व्रत सामायक नाम।
दसमों व्रत देसावगासी तणों, इग्यारमो पोसो वरत छे नाम ॥ ५ ॥
बारमो व्रत श्रमण निर्ग्रंथ नें, देवे चवदें प्रकार नो दान।
ए बारेइ व्रत श्रावक तणा, ते मोने अदरावो गुण खान ॥ ६ ॥
पांच अणुव्रत सिख्या व्रत सात छे, ए बारे व्रत श्रावक रो छे धर्म।
ते व्रत करावो स्वामी मो भणी, ज्यूं कटे म्हारा पाप कर्म ॥ ७ ॥
इम कनकधज राजा कह्यां थकां, दीया श्रावकनां व्रत बार।
जाण हूओ जीवादिक तेहनो, श्रावक हुवो तिणवार ॥ ८ ॥
कनकधज राजा तिण अवसरे, लुल-लुल बादे जिण पाय।
भाव सहीत वदणा करे, ओतो आयो जिण दिसि जाय ॥ ९ ॥
तेतली अणगार मोटो मुनी, ते तो गुण रत्ना री खान।
त्या केवल पर्याय पाली निरमली, ते तो घणा वर्षा लग जाण ॥ १० ॥
शेष च्यार कर्म था अघातिया, त्यारी भवोपग्राही स्थिति जाण
ते पिण सर्व थकी षय करे, पोहता अविचलगति निरवाण ॥ ११ ॥
तिहा जनम मरण रो दावो नही, जरा रोग नही तिण ठाम।
सास्वता सुखां माहे झिल रह्या, हूं बलिहारी त्यारे नाम ॥ १२ ॥
तेतलीपुत्र प्रधान रो, पोटला नामे सोनारी नाय।
त्यांरा भाव गिनाता सूत्र मझे, चवदमां अधेयन रे मांय ॥ १३ ॥
तिण अनुसारे तेहनी, जोड कीधी पुर शहर मझार।
समत अठारे सैंताला वर्ष मे, आसोज विद आठम शुक्रवार ॥ १४ ॥

रत्न : १४

जिनरिख जिनपाल रो बखांण

दुहा

अनत अरिहंत आगें हुवा, वले अनंता जांण।
प्राक्रम ज्यारा अति घणा, मीठी ज्यारी वाण ॥ १ ॥
पाप अठारे अति वुरा, परिग्रहो महाविकराल।
प्रीत मित्राइ नां गिणें, सब गुण देवें बाल ॥ २ ॥
घर मे धन छे सांवठो, तोही न बुझे हांम।
पच रह्यो छें प्रांणियो, किम पामे अविचल ठाम ॥ ३ ॥
दुखनो दाता परिग्रहो, मोटो माया जाल।
दोनूं भाया दुख सह्या, जिण रिखने जिण पाल ॥ ४ ॥
किण नगरी वसता हूता, किम दुख सह्या अपार।
सावधान थइ सांभलो, तेहनो कहू विसतार ॥ ५ ॥

ढाल : १

[चंदगुप्त राजा सुणो]

चपां नगरी सुहामणी, दीठां हर्षित ठायो रे।
लोक व्यापारी अति घणा, वले सेठ घणा तिण माह्यो रे।
धनरा लोभी प्राणिया* ॥ १ ॥
वले सेठ माकदी ना दीकरा, दोनू बडा व्यापारी रे।
ज्याज करे समुद्र मझे, उतस्या वार इग्यारी रे ॥ २ ॥
लाभ कमाइ लावीया, माल अमांमा भारी रे।
लोभ मिट्यो नहिं माहिलो, वले बारमी बार हुआ त्यारी रे ॥ ३ ॥
आय मात●पिता ने इम कहे, मेतो जास्या समुद्र व्यापारो रे।
मात पिता इसरी कहे, भली नही बारमी वारो रे ॥ ४ ॥
घर मे धन छे सांवठो, ओ कद लागेलो लेखे रे।
सात पीढ्या लग मिटे नहीं, अणहूता दुख कुण देखे रे ॥ ५ ॥
मा बापा कह्यो घणो, रह्या नही ए पाल्या रे।
सोदो ले तिथ जोयने, समद माहे चाल्या रे ॥ ६ ॥
अनेक जोजन गया पछे, हुइ उलका पातो रे।
देखी नें मन चमकीयो, आतो विगड़ी दीसे वातो रे ॥ ७ ॥
अकाले वीज गाजीयो, नावा कंपण लागी रे।
वाय चलावी हेठी पडे रें, केयक लकड्या भागी रे ॥ ८ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

विद्याधर नीं दीकरी, विद्या विसरियां पिछतावे रे।
गुरुड देखी सर्प छिपे, दरबारे बीहेतो नावें रे॥ ९ ॥
भरतार रूठो नार सू, लोका आगिल पुकारे रे।
नावा समद में डूबती, जाणे रोवती हेला पाडे रे॥ १० ॥
नावा रो विसतार छे, सूत्र ज्ञाता माह्यो रे।
हीण पुन्नीया जीवडा, डूब रह्या जल माह्यो रे॥ ११ ॥
हाहाकार हुवों छे अति घणो, कारी न लागी कायो रे।
जिणरिख ने जिणपाल नें, यारे पाट्यो हाथे आयो रे॥ १२ ॥
रत्न द्वीप मे आवीया, मन मान्या फल खायो रे।
नारेल फोड डोल चोपडे, बैठा सीतल छायो रे॥ १३ ॥

●

दुहा

रेंणा देवी तिण अवसरे, वसे दीप मभार।
पाप करी हरषत हुवे, रुद्र खुद्र भयंकार॥ १ ॥
तेहनें भवन सुख भोगवें, रही विषे रस लाग।
महिलायत रलीयावणी, च्यारूं कानी बाग॥ २ ॥
बेहू भाइ चिंता करे, पूर्व बात चीतार।
आरत ध्यांन करतां थकां, देवी आई तिणवार॥ ३ ॥
खडग छे तेहना हांथ मे, कीधो कोप करूड।
आंख्यां राती जलहले, भूंडो दीसे नूर॥ ४ ॥
रे माकदी नां दीकरां, वचन कहे निराधार।
थे मांसूं सुख भोगवो, कै जीव काया करूं न्यार॥ ५ ॥
माडां वचन मनायने, ले चाली आवास।
असुभ पुदगल काढनें, भोगवे सुख विलास॥ ६ ॥
नित्य इमृत फल भोगवे, नित नित नवला वेस।
काल कितोएक नीकल्यो, आंयो इंद्र आदेश॥ ७ ॥

ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

हाथ जोड़ी ने इम कहे रे लाल, सांमल मोरी वाय। दोनूं भायां रे।
इंद्र हुकम फरमावीयो रे लाल, हू समद बुहारण जाय। दो०।
मुझ वीणती अवधारजो रे लाल* ॥ १ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जो थांनें नही आवरै रे, तो जायजों पूर्व नें वाग।
दोय रितना फल खायजो रे लाल, करजो मन माने ज्यूं राग ॥ २ ॥
ते फल तो खाधां पाछे रे, वघसी विषय विकार।
कांम दीपावण एह छे रे लाल, मनसा ना पूर्णहार ॥ ३ ॥
वाव घणी तिण वाग मे रे, सरवर घणा वखाण।
डेडका मोर ने कोयली रे लाल, मीठी ज्यारी वाण ॥ ४ ॥
कदाच जो आवरें नही रे, तो बाग उत्तर रें जाय।
सरद हेमवत सुख भोगवो रे लाल, चकवा ना सब्द सूहाय ॥ ५ ॥
वले पिछम रो वाग छे रे, वसत ग्रीष्म फलदाय।
कीला करजो मनरली रे, पिण दिपण बाग म जाय ॥ ६ ॥
तिण मे सर्प छे मोटको रे, चंड रुद्र काला नैण।
रखे पीडा थायला था भणी रे, मानजो म्हारा वेण ॥ ७ ॥
धमीया लोहडा सारखी रे, जीभ तणा अहलाण।
तिण कारण पाल्या अछे रे, रखे हणेला थांरा प्रांण ॥ ८ ॥
अे तीनोइ बाग मे रे, सदा काल गहघाट।
सुख साता घणी पायजो रे, जोयजो म्हारी वाट ॥ ९ ॥
इम सीखावण दे चली रे, कहिने वारू वार।
लारे हुवे ते सामलो रे लाल, एक मना निरधार ॥ १० ॥

दुहा

देवी तीहांथी नीकली, हुइ कितीएक वार।
माहे रित पाम्या नहीं, तरे आया म्हेला वार ॥ १ ॥
मांहोमांहि मिसलत करी, चाल्या दोनू भाय।
तीन वाग आय देखीया, चोथो देखणरी चाय ॥ २ ॥
दोनूं भाई मतो कीयो, सोचें उडो अथाग।
किणहीक कारण वरजीया, आपे चालो दिपण रे वाग ॥ ३ ॥
तिण मे दुरगंध छें घणी, हाड पड्या तिण मांय।
सूली पुरुषज देखने, कपण लागी काय ॥ ४ ॥
किण नगरी नों वासीयो, किम वस पडीयो आय।
कुण अन्याय ते कीयो, तोने सूली दियो रे चढाय ॥ ५ ॥
हू काकंदी नो वाणीयों, वस्तु विणजण जाय।
ज्याज डूबी हूं नीसर्यो, देवी ने वस थाय ॥ ६ ॥

ससार ना सुख भोगव्या, काल कितोएक जाय।
थोडो सो पडीयो चूक मे, मोनें सूली दीयो रे चढाय ॥ ७ ॥
दुख सूली रा देखनें, डरप्या दोनू भाय।
इसी कला बताय दो, चंपा पोहचां जाय ॥ ८ ॥
जो वंछो चंपा भणी, तो पूर्व बाग मे जाय।
शेलक जक्ष पग झालजो, देसी थेट पोहचाय ॥ ९ ॥

ढाल : ३

[वीछीयानी]

दोनूं डरप्या अति घणा, आतो भली न दीसे नार रे लाल।
आपांरी कब जाणो मती, रखे किणही कुमीचा मार रे लाल।
नार नो नेह निवारीए ॥ १ ॥

सूली पुरुष समीपे सांभली, त्याथी नीकल्या दोनूं भाय रे।
आया पूरव नां बाग मे, पेंठा पोखरणी बाव माय रे ॥ २ ॥
सिनांन करे फूल तोडीया, दोनूं आया जक्ष आवास रे।
परतमा पूंजी फूल चाढनें, सेवा करें मन हुलास रे ॥ ३ ॥
भाव भक्ति करता थका, जक्ष आयो छे तिणवार रे।
किणने तारू इहां थकी, किणने उतारू पार रे ॥ ४ ॥
ऐं तो हाथ जोडीनें इम कहे, मे तो दुखीया दोनूं अपार रे लाल।
किरपा करो सामी माहरी, अबलां नें पार उतार रे लाल ॥ ५ ॥
देवी नो मोह म आंणजो, म्हारे काधे बेसो आय रे।
जों मन डोल्यो जांणीयो, तो हेठा डूलो ढाय रे लाल ॥ ६ ॥
जक्ष बोल बंध सेंठो लीयो, काधे बैठा दोनू भाय रे लाल।
धीरपदे ने ले चल्यौ, चापा नगरी स्हामा जाय रे लाल ॥ ७ ॥
देवी समद बुहार पाछी वली, देख्या नही मेहला माय रे लाल।
तीनूंइ बाग जोवीया, पिण पांमी खबर न कांय रे लाल ॥ ८ ॥
जक्ष ले जातो देखनें, देवी लारे आइ तिणवार रे लाल।
हाथ मे खड्ग डरांवणो, आतो मुख बोलें मार मार रे लाल ॥ ९ ॥
करडा वचन कह्या घणा, पिण डरप्या नही लिगार रे लाल।
तब सिणगार सोलै सझ्या, गुघट काढ्यो तिणवार रे लाल ॥ १० ॥
करुणा वचन कह्या घणा, मोनें कांय मूंको निरधार रे कंता।
इण अटवी उजाड में, मुजनें कुण छें आधार रे कंता।
अबला स्हामो जोइ ए ॥ ११ ॥

सुख भोगव ससार ना, मोने इम किम ·दीजे छेहरे कंता।
प्रीत चीतारो पाछुली, म्हारी दुखणी देखो देहरे कता ॥ अ० १२ ॥
मे उपगार किया घणा, थोडा मे विसर मत जाय रे कता।
जावो तो चूक वतायने, इण वातां लाज न आय रे कता। १३ ॥
का मोसू लूखा थया, मे इसरो न कीधो अन्याय रे।
दर्शन नही देखू त्था लेगे, म्हारो हीयो फाटी जाय रे कता ॥ १४ ॥
ओ समद भर्‍यो मच्छ काछवां, हु एकली अनाथ रे कंता।
प्राण तजू तो ऊपरे, के मान हमारी बात रे कता ॥ १५ ॥
हू तो दिन दिन सुख कर मानती, जांणूं दोय पुरुषां री नार रे कता।
उभी मेलो रोवती, अमे दिन काटूंला किम लार रे कता ॥ १६ ॥
किण धूते भरमावीया, उतर गयो मोसू राग रे कंता।
हेत घणो थो माहीलो, थोरा में गयो मन भाग रे कता ॥ १७ ॥
फूल तणी विरखा करे, वले गध चूर्ण नो मेह रे लाल।
रतन घंटा वजाय ने, आ बोले वचन सनेह रे लाल ॥ १८ ॥
अतर धेष रुदन करे, आक्रद करे अपार रे लाल।
वाडी निजरां जोवती, देखू थारो उणीयार रे लाल ॥ १९ ॥
अवध करेने जाणीयो, जिन रिखीयो डोल्यो जांण रे।
भाया भेद घलावणी, आकिण विध बोले वाण रे लाल ॥ २० ॥
ओ जिनपालीयो कठोर छे, इण रे दया नही दिल मांहि रे लाल।
जिन रिष किरपा करे माहरी, तू राख दया घट माहि रे लाल ॥ २१ ॥
गण गणाट करे घणा, एकरसु स्हामो नाल रे लाल।
वचनां करने मोहीयो, जिन रिषीए दीधो भाल रे लाल ॥ २२ ॥
वचन विपेरा साभले, कीधो रेंणा देवी सूं पेम रे लाल।
दुख पडे ते साभलो, तुमे एकमना हुई जेम रे लाल ॥ २३ ॥

दुहा

मन डोल्यो जक्ष जाण ने, उतारीयो तिण वार।
देवी आय उतावली, वचन कहे निरधार ॥ १ ॥
क्रोध करे मार्‍यो घणो, खड खड कीया तिणवार।
दस दिसा टूक उछालने, हरषित थाई अपार ॥ २ ॥
जिन रखियो दुखीया हुवो घणो, जोया नां फल जाण।
चापा नगर पाहतो नही, विच मे छोड्या प्राण ॥ ३ ॥

वेंरागें घर छोडनें, विचे सांमा नहाल ।
शिव नगरी पोहचें नही, विचमे सहसी हवाल ॥ ४ ॥
रेणा देवी इविरत कही, विरत सेलक जिम साध ।
विषीया रस डूलें नही, तो उतरें समद अगाध ॥ ५ ॥

ढाल : ४

[डाभ मूंजादिक नीं डोरी]

जिन पालज मनमे धारी, आतो कपटण दीसे नारी ।
पूर्वलो मोह न आण्यो, इणरो काचो सगपण जांण्यो ॥ १ ॥
जक्ष ऊपर नेहचो धास्यो, चपाने बाग उतास्यो ।
जिनपालनो कारज सास्यो, समद थी काढ उधास्यो ॥ २ ॥
निज पोता ने घरे आयो, सगलो विरतत सुणायो ।
जिन रिख नो कारज कीयो, याद आवे ज्यू फाटे हीयो ॥ ३ ॥
लोकीक हुंतो ते कीनो, ससार दुखा सू बीनो ।
इतले वीर चपा आया, भल भवीयण रे मन भाया ॥ ४ ॥
जिनपाल आयो सुणवा वागो, घर कारज थी मन भागो ।
मन सिव रमणी सूं लागो, सजम लीयो वेरागो ॥ ५ ॥
अग इग्यारें भणीयो, सुधर्म देवलोक अवतरीयो ।
करणी कर काया कीधी सोख, महाविदेह में जासी मोख ॥ ६ ॥

रत्न १५

नंद मणिहार रो वखांण

दुहा

ज्ञातारा तेरमा अधेन में, नद मणियारा नो इधिकार ।
तिण अनुसारे हू कहू, ते सुणजो विसतार ॥ १ ॥
तिण काले ने तिण समे, चोथा आरा नी बात ।
राजग्रीही रलीयामणी, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
गुणसिल नामा बाग थो, ईसाण कूण रे माहि ।
राय श्रेणक राणी चेलणा, राज करे छे ताहि ॥ ३ ॥
तिहां नदमणियारो वसे, पदवी धर सेठ महत ।
ते चावो प्रसिद्ध लोक में, धनकरने रिघवत ॥ ४ ॥
तिण काले ने तिण समे, भगवत श्री विरधमान ।
राजग्रही नगर समोसस्था, गुणसिल नामे उद्यान ॥ ५ ॥
खबर हुई नगरी मझे, लोक वांदण नें जाय ।
नंदमणियारो तिण अवसरे, आय वांदया जिनपाय ॥ ६ ॥
श्री वीर तणी वांणी सुणे, नदो हरखत थाय ।
श्रावक रा व्रत आदरे, आयो जिण दिस जाय ॥ ७ ॥
काल कितोएक गयां पछे, भगवत कीयो वीहार ।
लारें नदा री खुराबी वणी, ते सुणजो विसतार ॥ ८ ॥

ढाल : १

[धीज करे सीता सती रे लाल]

सुध साधा रो विरहो पड्यो रे, राजग्रही नगर मझार रे । सुगणनर ।
जब असाधा री सगत करीरे लाल, नंदमणियारे तिणवार रे । सुगणनर ।
पाखडीयारी सगत बुरी रे लाल[१] ॥ १ ॥
समकतरा पजवा हीणा पड्या रे, नदा रा तिणवार रे । सुगणनर ।
बधीया पजवा मिथ्यातरा रे लाल, खोई समकत सार रे ॥ सुगणनर २ ॥
केई धर्म कहे हिंस्या कीया रे, ते सुण सुण पामे उछरंग रे ।
दया धर्म जिणराज रो रे लाल, तिणसूं गयो मन भाग रे ॥ ३ ॥
जिणरो दिन छे वाकडो रे, ते करसी पाखंडीया सूं पीत रे ।
ते समकत बोध गमायनें रे लाल, होसी च्यिहु गति माहे फजीत रे ॥ ४ ॥

१—यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

केई सूत्र सुणे पांखंड्यां कनें रे, साची समकित पाय रे।
तिणआगन्या लोपी जिणराजरी रे लाल, कीधो बूडणरो उपाय रे॥ ५॥
केई सुणी वखाण हरषत हुवे रे, त्यांरो वचन करे प्रमाण रे।
वले भावभगत करे तेहनी रे लाल, ए समकत खोववारा अहलाण रे॥ ६॥
केई भेषधारी भागल तणी रे, आगना लेई करे समाय रे।
तहत वचन करे तेहनों रे लाल, तिण समकत दीधी उडाय रे॥ ७॥
केई भेषधारी भागल तणी रे, वीणती कर राखे चोमास रे।
ते आप डूबे ओरानें डबोवता रे लाल, तिण घाली गला मे पास रे॥ ८॥
ज्यूं नंदमणियारों मूरख थके रे, कीधी पाखंडीयां सूं प्रीत रे।
ते जिण आगन्या लोप उंधो पड्यो रे, वले छोडी जिण धर्म रीत रे॥ ९॥
इम संक विसंक करता थका रे, आयो ग्रीषम काल रे।
जब तेलो करे तीन पोषा कीया रे, आए बेठो पोषध साल रे॥ १०॥
छेहली रात वरतां थकां रे, भूख तिरखा लागी अतंत रे।
जब नंदमणियारों मन चितवे रे, ते सुणजो विरतंत रे॥ ११॥
जे खणावे कूवादिक बावड़ी रे, नगरी राजग्रही बार रे।
धिन धिन छे जे मानवी रे, तिण सफल कीयो अवतार रे॥ १२॥
नर नारी पाणी पीये रे, केई भर भर ठांम ले जाय रे।
केइ करे सीनांन पूरे रली रे लाल, घणा जीव साता पामे आय रे॥ १३॥
जिण कूवा तलाव खणावीया रे, तिण सफल जमारो कीध रे।
तो म्हे रिध संपत पामी घणी रे लाल, पिण इसरो तो लाहो न लीध रे॥ १४॥
जिण परना कोठा ठारीया रे, तिण मोटो कीधो धर्म रे।
इसडी विचार उंधो पड्यो रे लाल, भूलो अग्यानी भरम रे॥ १५॥
तो श्रेय कल्यांण छे मो भणी रे, पूछी राजा ने परभात रे।
नगरी राजग्रही बाहिरे रे लाल, इसांण कूण विख्यात रे॥ १६॥
विभार गिरी परवत तिहां रे, तिण पासें रूडी जायगा जोय रे।
तिहां नंदा पोखरणी खणावसूं रे, ज्यूं म्हारो जन्म सुख्यारत होय रे॥ १७॥

दुहा

एहवी करे विचारणा, परभाते पोषो पार।
सिनांन मरदन कियां पछे, जीम्या च्यारूं आहार॥ १॥
बहु मोलो ले भेटणो, साथे बहु परिवार।
राजा सूं करवा वीणती, नीकल्यो घर सूं बाहर॥ २॥

ते बहु मोलो भेटणो, मेल्यो राजा पास ।
हिवे राज सभा बेंठां थकां, नंदो करे अरदास ॥ ३ ॥

ढाल : २

[नणदल हे नणदल]

हाथ जोडी विणती करे, नीचो सीस नमाय हो । साहिब ।
नदा पोखरणी खणायवा, म्हारे उपनी छेंमन माय हो । साहिब ।
अरज करूं छू वीणती ॥ १ ॥
वेभार गिरी परवत तिहां, जायगा छे तिण पास हो ।
तिहां नदा पोखरणी वावडी, म्हारे खणावणरो हुलास हो ॥ २ ॥
जो किरपा करो मो ऊपरे, तो म्हारो मन रलीयायत थाय हो ।
साथे मेलो सेवग भणी, ते जायगां दे ज्यूं बताय हो ॥ ३ ॥
वलतो श्रेणक इम कहे, ज्यू तोने सुख थाय हो । नदा ।
आछी जायगा ताहरी, मनमानें तिहां खणाय हो । नदा ।
सोच फिकर राखे मती ॥ ४ ॥
वचन सुणे राजा तणो, मन मे हरषत थाय हो । नदा ।
राजसभा थी नीकल्यो, आयो निज घर मांय हो । नंदा ।
मन में रित पाम्यो घणी ॥ ५ ॥

●

दुहा

नंदा पोखरणी खणावण तणो, नदा रे अतत उछाव ।
जव करे उपाय तिण अति घणा, खणाइ चोखुणी वाव ॥ १ ॥
तिणरो सीतल पाणी निरमलो, पीधां स्वाद अतंत ।
अनेक प्रकारना कमलां करी, वाव घणी सोभत ॥ २ ॥
थंभा अनेक लगावीया, जाल्यां गोख बणाय ।
तोरणदिक कर सोभती, दीठां नयण ठराय ॥ ३ ॥
घणा मछा कछा तिण वाव मे, वले पखी जीव वशेष ।
ते पंखी तणा सब्द सांभले, हरखे लोक अनेक ॥ ४ ॥

ढाल : ३

[आ अणुकंपा जिण आगन्या में]

पोखरणी बाव खणाइ नदे, तिणरे चिहुं दिस च्यारू बाग लगाया।
च्यार बाग माहे सभा साल कराइ, ते सांभलजो भवीयाण चित्त ल्याया।
समकत वमीयो नंदमणियारो* ॥ १ ॥

नंदो भूलो जिणमारग थी, डूबो मिथ्याती जस रो भूखो।
छ कायरा जीव ओलखनें अग्यांनी, यांनें धर्म रे हेतें मरावण ढूको ॥ २ ॥

पूर्व रा बाग में नंदे मणियारे, एक मोटी चित्रांम सभा कराइ।
रूप अनेक चित्र्या तिण माहे, ते नेंणानें लागें अति सुखदाइ ॥ ३ ॥

नाटक अनेक पडे तिण ठांमें, तिहां अनेक नरनारी जोवणनें आवें।
देख तमासो नंदा नें सरावें, जब नंदो सुण सुण हरषत थावें ॥ ४ ॥

दिषण रा बाग में दान साला कराई, तिण ठामें दांन देवें दगचालो।
किरपण वणीमग अनाथ ने दुरबल, तिहां आय जीमें बहु भोजन रसालो ॥ ५ ॥

ऊंच नीच जात हरकोई आवे, तिण ठांमे आयांनें पाछो नहिं ठेले।
कोरो अन चून मांगे तिम देवें, तिहा आयानें पाछा निभूल न मेले ॥ ६ ॥

पिछमरा बागमें तिगछसाल कराइ, तिण ठांमें अनेक बेदां ने बसावें।
ते चतुर विचक्षण बेद घणा छें, ते सगलाइ खरची नदा री खावे ॥ ७ ॥

व्याधीया रोगीया गिलांण नें दुरबल, तिण ठांमे अनेक दुखरा दाधा आवें।
ते सगला नें ओषद दे रोग गमावें, वले पुष्ट करवा च्यारूं आहार जीमावें ॥ ८ ॥

उत्तर रा बाग में कीधी अलंकार सभा, तिण ठांमें नाइ प्रमुख ने बसावे।
व्याधीया रोगीया गिलांण नें दुरबल, ते सगलानें बेंठा सिनांन करावें ॥ ९ ॥

करें दाढी कातरीया नख पिण छेदें, इत्यादिक सगलांरे करें अलंकारो।
ते नाइ प्रमुख पुरुष अनेक, तिहां बेठा खाए नंदा रो रोजगारो ॥ १० ॥

नाथ अनाथ पंथी पांवणादिक, नंदा पोखरणी वावडी तिहां आवे।
केइ सिनांन करें केइ पाणी पीवे, केइ ठांमड़ा भर भर लेइ जावें ॥ ११ ॥

केइ सूए बेंसे केइ निंद्रा लेवें, केइ असणादिक जीमें तिणठांम।
केइ फूल गूंथी गूंथी माला पहरें, इत्यादिक सुख भोगवें छे अभिराम ॥ १२ ॥

वले राजग्रहीना लोक अनेक, ते पिण आय सुख भोगवे इण भांत।
वले पंख्यां रा सबद सुणे रित पामें, कील करें पूरे मनरी खांत ॥ १३ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

घणा लोक माहोमांहि मिली इम बोले, कहे धिन धिन छे नंदो मणियारो।
तिण पुन उपाय आतम काज सार्‍यों, सफल कीयो मांनव अवतारो॥ १४॥
जिण आ नदापोखरणी बाव खणाइ, वले चिहुं दिश च्यारूं बाग लगाय।
तिहां सुख भोगवें लोक अनेक प्रकारे, गुण बोलें सगलो संबंध सुणाय॥ १५॥
वले राजग्रही माहे लोक मिथ्याती, माहोमा मिल नंदा रा गुण गावें।
कहे इण मानव भव पाय लाहो लीधो, इणारे तुले ओर कहो कुण आवें॥ १६॥
धिन धिन लोक करे नगरी मे, ते सबद पड़े नंदा रे कांनो।
जब नंदो सुण सुणहं रखधरी फलफूले, वले मनमे करें इधको अभिमांनो॥ १७॥
मूढ मिथ्याती लोक सरावें, जब नंदो सुण सुण हरषत होवें।
मोह मिथ्यात मे भूलो अग्यानी, पिण जिण धर्म सांहमो मूल न जोवे॥ १८॥
इम साता सुख में काल गमावे, जिण धर्म छोडी हुवो मोह मतवालो।
एकदा प्रसताव नंदा री काया मे, सोलेइ रोग ऊपनां समकालो॥ १९॥

●

दुहा

सोले रोगा कर प्राभव्यो, जब चाकर पुरुष बुलाय।
कहे राजग्रही नगरी मझे, करो उदघोषण जाय॥ १॥
कहीजे नदा मणियारा तणे, सोले रोग उपना आय।
एक रोग गमावें तिण वेद ने, देसी घणो धन ताय॥ २॥
इम साभल सेवग नीकल्या, ते गया राजग्रही मांय।
घणा पथ मारग भेला हुवे, तिहा कीधी उदघोसणा जाय॥ ३॥
ए सब्द सुणे वेद नीकल्या, ओषध लीधा साथ।
ते आया नंदा रा घर मझे, पूछे रोग उपनारी बात॥ ४॥
त्या ओषद अनेक कीया घणा, पिण कारी न लागी काय।
जब हाथ झाटकने नीकल्या, आया जिण दिस जाय॥ ५॥

ढाल : ४

[मगल नी]

वेदा ने पाछा गया देख ए, नदो पाम्यो खेद वसेष ए।
सोलां रोगां कर वेदन घणी ए, तोही मुरछा घणी बावडी तणी ए॥ १॥
आरतध्यान ध्यायो मोह अव ए, पाड्यो तिरजंच गतिनो बंध ए।
बांधे असुभ कर्म रा जाल ए, हिवे कीधो तिहांथी काल ए॥ २॥

आपणी बाव मभार ए, डेडको हुवो तिणवार ए।
बाल भाव मूकाणो ताहि ए, कीला करे बावडी माहि ए॥ ३ ॥
घणा लोक आवे तिण ठांम ए, ते बोले माहोमाही आंम ए।
कहे धिन धिन नंद मणियार ए, तिण सफल कीयो अवतार ए॥ ४ ॥
तिण पोखरणी बाव खणाय ए, वले चिहूं दिस बाग लगाय ए।
सगलो संबध कह्यो तिण ठाम ए, करे नदा रा गुण ग्राम ए॥ ५ ॥
जब डेडको बाव मभार ए, सुणे लोका कने वारूवार ए।
इम साभल करे विचार ए, ओ कुण छे नद मणियार ए॥ ६ ॥
इत्यादिक ध्यायो निरमल ध्यान ए, ऊपनो जातीसमरण ग्यान ए।
जब जांण लीयो तिण ठाम ए, ओ नदो म्हारोइज नाम ए॥ ७ ॥
में वीर जिणंद रे पास ए, बारें व्रत लीया था उलास ए।
पछे मानी पाखड्या री बात ए, तो म्हे पडवजीयो मिथ्यात ए॥ ८ ॥
आयो ग्रीषम रित ऊन्हाल ए, तीन पोसा कीया तिण काल ए।
जब भूख त्रिखा लागी आण ए, तब हू पर गयो उलटी ताण ए॥ ९ ॥
हू गयो मिथ्यात मे खूच ए, परभाते श्रेणक ने पूछ ए।
मे पोखरणी बाव खणाय ए, वले चिहू दिस बाग लगाय ए॥ १० ॥
सगलोइ संबंध विचार ए, आत्मा ने देवे धिकार ए।
में कीधो मोटो खूंन ए, तो हूं डेडको हुवो जबूंन ए॥ ११ ॥
हूं अधिन अपुन अभाग ए, रह्यो पाखंड मत मे लाग ए।
हूं भिष्ट हुवो वरत भाग ए, तिणसूं निकल्या म्हारा साग ए॥ १२ ॥
तो श्रेय किल्याण छे मोभणी ए, खप करणी बारे वरता तणी ए।
इसडो करे विचार ए, तिण आदरीया वरत बार ए॥ १३ ॥
वले अभिग्रह लीयो तिण वार ए, बेले बेले पारणो धार[१] ए।
वले पारण रे दिन जाण ए, मोने सचित्त खावारा पचखाण ए॥ १४ ॥
एहवा जावजीव रा त्याग ए, तिण कीधा आण वेराग ए।
इम पालतो वरत रसाल ए, ओतो सुखे गमावे काल ए॥ १५ ॥
तिण काले श्री भगवत ए, तिहां आया बीहार करत ए।
आय उतरीया गुणसिल बाग ए, ओ तो भव जीवां रे भाग ए॥ १६ ॥
खबर हुई नगरी माय ए, लोक वीर बांदण ने जाय ए।
जब पोखरणी बाव रें पास ए, लोक बात करे छे तास ए॥ १७ ॥
कहे समोसर्‍या भगवान ए, तिहां डेडके सुणीयो कान ए।
तिण पांम्यो हूलास अतंत ए, हू जाय बादूं भगवत ए॥ १८ ॥

इसडो करे विचार ए, ओ तो नीकल्यो बावडी बार ए।
जाता मारग रे मझार ए, असवारी आइ लार ए॥ १९ ॥
श्रेणिक रे चपल तुरंग ए, चीथ्यो डेडक रो अंग ए।
आघा जावारी सगत न कांय ए, तिणसूं एकंत जायगा जाय ए॥ २० ॥
नमोथूणं गुण्यो तिण ठांम ए, अरिहंत सिद्धां नें सीस नांम ए।
बीजो नमोत्थूणं भगवांन नें ए, कीयो धर्म आचार्य जांणने ए॥ २१ ॥
आलोए निसल थाय ए, वले देही दीधी वोसराय ए।
त्रिविध छोड्या पाप अठार ए, वले पचख्या च्यारूं आहार ए॥ २२ ॥
डेडके छोड्या निज प्रांण ए, जाय ऊपनों ददुर विमांण ए।
तिणरा सुख घणा बखाण ए, ते तो सुरीयाभ नी परे जाण ए॥ २३ ॥
ददुर आयो भगवंत पास ए, तिण नाटक पाड्यो हुलास ए।
तिणरो छे घणो विस्तार ए, सुरीयाभ नी परे विचार ए॥ २४ ॥
गोतम सांमी पुछे जोडी हाथ ए, इणरो आउ कितरो सांमीनाथ ए।
जब वीर कहें पल च्यार ए, आउखो देव भव मझार ए॥ २५ ॥
ओं चवने जासी केत ए, वीर कहे महाविदेह खेत ए।
उठें करे करमा रो सोख ए, ओतो जासी पाधरो मोख ए॥ २६ ॥
ज्ञाता रे अनुसार ए, जोड्यो नंदा रो इधकार ए।
इम सांभल नें नरनार ए, कीजो आत्मा नों उधार ए॥ २७ ॥
वरस चोतीसे संवत अठार ए, असाढ विद आठम गुरुवार ए।
शहर सीरीयारी मझार ए, जोड्यो नंदा रो अधिकार ए॥ २८ ॥

रत्न : १६

पुंडरीक कुंडरीक रो बखांण

दुहा

पूर्व विजें पुखलावती, महाविदेह नी जाण।
राजधानी रलीयावणी, पूंडरीगणी नाम वखाण॥ १॥
बारे जोजन लाबी कही, पहली कोस छत्तीस।
नलीण नाम उद्यान छे, जाणे देवलोक सरीस॥ २॥
तिए नगरीनो छे धणी, महापदम राजान।
राणी तस पदमावती, रूप कला गुण खाण॥ ३॥
तिण रांणी रा जनमीया, पूंडरीक कूंडरीक दोय।
जुगराज कुडरीक थापीयो, राज लायक ए होय॥ ४॥

ढाल : १

[धीज करे सीता सती]

एक दिन , थिवर पधारीया रे, राजा वादण ने जाय रे। चतुर नर।
वांणी सुण वेंरागीयो रे लाल, राज दीयो छिटकाय रे। चतुर नर।
तारण तिरण समोसर्या रे लाल[1] ॥ १॥
राज थापी पूडरीक नें रे, लीधो सजम भार रे। चतुर नर[2]।
इर्या भापा ने एसणा रे लाल, पाले सुध आचार रे। चतुर नर॥ २॥
निरमल बुध सूं पामीयो रे, चवदे पूरव ग्यान रे।
कर्म खपोय मुगते गया रे लाल, ध्याए निरमल ध्यांन रे॥ ३॥
थिवर वले तिहा आवीया रे, दोनू भाई वादणने जाय रे।
मुनीवर दीधी देसना रे लाल, भवीयण ने मन भाय रे॥ ४॥
पूंडरीक श्रावक व्रत आदर्या रे, जाण्या नव तत भेद रे।
कूंडरीक सुण वयरागीयो रे लाल, चारित लेवा उमेद रे॥ ५॥
वेंरागे मन वालीयो रे, जाण्यो अथिर ससार रे।
वडा भाई ने पूछने रे लाल, लीधो सजम भार रे॥ ६॥
विहार कीयो तिण अवसरे रे, जनपद देश मझार रे।
सूधो सजम पालता रे लाल, नीकल्या वरस हजार रे॥ ७॥
थिवर समीपे वसता थकां रे, भणीया इग्यारे अंग रे।
इर्या भाषाने एसणा रे लाल, पालें व्रत अभंग रे॥ ८॥

१—यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।
२—'चतुर नर' यह शब्द हरेक गाथा के तीसरे और चौथे चरण के वाद में पढना चाहिए।

अत पत अरस विरस ने रे, तुच्छ लुखो कालाईकात रे।
टडा उना नित आहार नें रे लाल, खायो मान उपरात रे॥ ६ ॥
एहवा आहार थी उपनो रे, कडू दाह पितंजर रोग रे।
सरीर वेदनां कर पीडीयो रे लाल, पालता निरमल जोग रे॥ १० ॥

●

दुहा

तिण कालेने तिण समे, आया तिण हीज गाम।
आग्या लेइ उतर्‌या, खवर हुइ ठाम ठाम॥ १ ॥
पूंडरीक सुणी वधावणी, हिवडे हरषत थाय।
सजकरेने नीकले, साधु वादणने जाय॥ २ ॥
वदणा कीधी हरख सूं, वेठो सनमुख आय।
मुनीवर दीधी देसनां, सगलां ने हित ल्याय॥ ३ ॥
लोक आया था अति घणा, सुण वाणी घरे जाय।
पुडरीक उठ वंदणा करी, भाइ वदण ने जाय॥ ४ ॥

ढाल : २

[डाभ मूजादिक नीं डोरी]

बंदणा कीधी सीस नमाइ, दोनू माथे हाथ चढाइ।
देख्यो सरीर अति लूखो, रोग पीडा करने सूको॥ १ ॥
थिवरा कने अरज करे आयो, कुडरीक ने रोग दवायो।
कलपे सो ओषध कीजे, म्हारी नगरी मासूं जाचीजे॥ २ ॥
रथ साला मे लो विसराम, सामी जेज तणो नही काम।
वात सुण थिवरां चित्त भाइ, रथ साला वासो कीर्यो आइ॥ ३ ॥
ओषध निरदोषण कीयो, कुडरीक नो रोग उपसमीयो।
बल तेज पराकम आयो, साता थइ असाता न कायो॥ ४ ॥
थिवरां विहार कीयो पूछीने, कुडरीक रह्यो मुरछी ने।
असणादिक च्यारूं आहार, लपटी भोगवे वारूंवार॥ ५ ॥
खोयो सजम हुइ रह्यो सेठो, रथ साला माहे रह्यो वेठो।
रसइंद्री पोपण लागो, विहार करवासू मन भागो॥ ६ ॥

●

दुहा

विकल थया कुडरीक ने, छोड चल्या मुनीराय ।
रथसाला थी नीकली, बेठो बाग में आय ॥ १ ॥
कुडरीक विहार कीयो नही, साभल्यो पुडरीक राय ।
चट दे आय उतावले, वदणा कीधी आय ॥ २ ॥
धिन धिन मुख सूं उचरे, बोले विडद अनेक ।
ते राज रमण सहु परहरी, परभव साहमो देख ॥ ३ ॥
हु लपटाणो भोग मे, दिख्या लीधी न जाय ।
गुण करे मुख आगले, पिण गमे नही मन माय ॥ ४ ॥
वे तिण वार कह्या थका, लोप्यो वचन न जाय ।
लाजे काजे मन विना, आय वाद्या गुर पाय ॥ ५ ॥
कर्म गति छे वाकडी, लोपी किण सू न जाय ।
किण विध अनरथ नीपजे, ते सुणजो चित्त लाय ॥ ६ ॥

ढाल : ३

[नणदलनी तर्ज]

विहार कीयो तिण अवसरे, गाम अनेरे जात हो । मुनीवर ।
परिया परिणाम जेहना, कुण राखे हटकाय हो । मुनीवर ।
करम तणी गति वाकड़ी ॥ १ ॥
पाछो आयो तिण अवसरे, परभव चिंतन काय हो ।
असोगवाडी आय उतरयो, रह्यो आरतध्यान ध्याय हो ॥ २ ॥
सकल्प विकल्प ते करे, अकल गई दपटाय हो ।
धाय जतायो पुडरीक ने, कुडरीक वेठो आय हो ॥ ३ ॥
धाय वचन तीहा साभली, पुडरीक सोच अपार हो ।
मन मे डरप्यो अति घणो, रखे भेष दे उतार हो ॥ ४ ॥
ले अतेवर नीकल्यो, वदणा करे बेठो आय हो ।
भागा किण विध वावडे, तेज नही तिण माय हो ॥ ५ ॥
हाथ जोडी वीनती करे, नीचो सीस नमाय हो ।
थे रिध तजने नीकल्या, हूं खूतो कादा माय हो ॥ ६ ॥
रिध अतेवर देखने, मुरझायो मन माय हो ।
ज्यारा चित्त ठिकाणे नही, किण विध पाल्यो जाय हो ॥ ७ ॥

हाव भाव गुण कीरत करें, करें लाल ने पाल हो। बंधव।
पिण कुडरीक बोले नही, रह्यो नीचो माथो घाल हो। बंधव ८॥
जो थारो मन भोग सूं, राज बेसण रो कोड हो। बधव।
अे सुख सगला कारमा, जिण मारग मत छोड हो। बधव ९॥
आ थांने जुगती नही।
जो थारे मन उपनी, तो मन ने पाछो घेर हो।
पछेइ तूं पिछतावसी, तिणमे नही कोइ फेर हो॥ १०॥
कुल मोटो छे आपणो, मा बाप री परतीत हो।
वेरागे घर छोडने, अबे काय हुवो फजीत हो॥ ११॥
लज्या म छोडो लोक नी, मत छोडो जिण धर्म हो।
परभव सामो जोयलो, रहे ज्यूं थारी सर्म हो॥ १२॥
थे लोका मे चावा घणा, थे अवसर ना जाण हो।
कह्यो मारोइ मानलो, म करो खाचा तांण हो॥ १३॥
वचन कह्या ते साभल्या, उत्तर दीयो न जाय हो।
जिण गति जांणो जीव ने, तिकाइज आवे दाय हो॥ १४॥
जब पुंडरीक इम जांणियो, चित्त दीसे नही ठाय हो।
परीया परिणाम एहना, लाज नही तिण माय हो॥ १५॥
तूं निजर सूं निजर मेले नही, सुख विलसण मन होय हो।
भर हाकारो मो आगले, राज वेसाणू तोय हो॥ १६॥
भोग जोग दोनूं वतावीया, विण कह्या खबर न काय हो।
भर्‍यो हाकारो भोगने, दीधो तुरत जताय हो॥ १७॥
तब पुडरीक इम बोलीयो, थे तो छोडी लाज हो।
हिव हूं घरे आवू नही, मे अवसर लाधो आज हो॥ १८॥

●

दुहा

इण विध सेठी धार ने, दे भाई ने धिकार।
वमीया री बांछा करै, धिग थारो जमवार॥ १॥
अंतर कीधी विचारणा, ए ससार असार।
राज सूंपी बधव भणी, कर देउ खेवो पार॥ २॥
कोडंबी पुरुष ने इम कहे, कर मोटे मंडाण।
राज बेंसारो कुंडरीक नें, पालजो इण री आंण॥ ३॥

काण म लोपो एहनी, मत करजो विषवाद।
लेखवजो मो सारिखो, राखजो घणी मरजाद ॥ ४ ॥
भेप लीयो भाइ तणो, राखी कुल री लाज।
कुडरीक विषे रो पीडीयो, आए बेठो राज ॥ ५ ॥

ढाल : ४

[विछियानी]

कुडरीक विषे रे कारणे, इण छेडी सर्म ने लाज रे लाल।
अति वेटापणो आदर्यो, घरे आयो सयमथी भाज रे लाल।
धिग धिग विषे विकारने* ॥ १ ॥
वले विषे रे कारणे, इण भारी कीधा आहार रे लाल।
रोग आणे ने घेरीयो, अबे झूरे बारूवार रे लाल ॥ धिग० २ ॥
देही तो हुती जोजरी, मद मास खाधा मन भाय रे।
पीडा उठी अति आकरी, अब कारी न लागे काय रे ॥ ३ ॥
वले वेद बोलाया मोटका, ओषध कीया अनेक रे।
देही कबथी तिण अवसरे, पिण गर्ज सरी नही एक रे ॥ ४ ॥
खप कीधी वेदां घणी, पिण कारी न लागे काय रे।
हाथ झाटकने उठीया, अे तो आया जिण दिस जाय रे ॥ ५ ॥
तब कुडरीक विलखो थयो, मूढो दीधो कुमलाय रे।
जिण गति जाणो जीव ने, तेसोइज करे उपाय रे ॥ ६ ॥
क्रोध कषाय ने वस पड्यो, आरत रुद्र ध्यान ध्याय रे।
आउखो पूरो करे, पड्यो नर्क सातमी जाय रे ॥ ७ ॥
थोडा दिन र आतरे, दुखा नो छेह न पार रे।
सजम ना सुख छोडने, ओ तो गयो जमारो हार रे ॥ ८ ॥
काम भोग तणी आसा कीया, फल लागे विष समाण रे।
च्यार गत्या रो पावणो, पछे लग रहे ताणा ताण रे ॥ ९ ॥
वेरागे घर छोडने, वले वाछेला कोइ भोग रे।
परसी नर्क निगोद मे, पामे घणो रोग सोग रे ॥ १० ॥
पुंडरीक अभिग्रह आदर्यो, दीख्या रा दिन सूं जाण रे।
गुर ने वादू नही ज्यां लगे, मारे आहार तणा पचखांण रे।
सजम थी सुख पामीए ॥ ११ ।

---

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वेरागें मन वालीयो, सुमता रस आण्यो पूर रे।
काम पड्या सेठा रहे, तके जाणो साचेला सूर रे॥ १२॥
मरण सू साहमा माडीया, डरप्या नही मन माय रे।
विहार करे भेला हुवा, हर्षे वान्द्या गुर पाय रे॥ १३॥
फेर महाव्रत आदर्‍या, सीख ली सर्व साध रीत रे।
आग्या ले उठ्या गोचरी, तीजी पोरसी सुवनीत रे॥ १४॥
अरस विरस आहार करता थकां, रोग उपनो पितजर दाघ रे।
वेदना उपनी अति आकरी, खमी छ मन आण वेराग रे॥ १५॥
ममता नही आणी देहनी, ए मल मूत्र नो भडार रे।
बल प्राक्रम हीणो पड्यो, मुनी पचख्या च्यारू आहार रे॥ १६॥
आउपो पूरो करी, अणूत्तर विमाणे जाय रे।
देव तणा सुख भोगवी, वले मिनष जमारो पाय रे॥ १७॥
उचा कुल मे अवतरे, रिध संपत पिरवार रे।
धर्म ग्यानी रो पालने, जासी मुगत मझार रे॥ १८॥

●

रत्न १७

भरत चरित

दुहा

भरत चक्रवर्ति नी वारता, जवूद्वीप पन्नत्ति मांय।
तिण अनुसारे हूं कहू, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १ ॥
तिण काले ने तिण समे, तीजा आरा नी बात।
विनीता नगरी रलियामणी, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
ते लांबी जोजन बारे तणी, पोहली नव जोजन जाण।
अर्द्ध भरत रे मझ भाग छे, तिणरा जिनवर कीया छे वखाण ॥ ३ ॥
धनपति नामे देवता, ते सक्रेंद नो लोकपाल।
तिण निपजाई आपरी बुधिकरी, विनीता नगरी विसाल ॥ ४ ॥
तिण दोलो कोट सोवन तणो, ते सोभ रह्यो छे अनूप।
अनेक मणि रत्ना रा कागरा, पांचवरणा छे अधिक सरूप ॥ ५ ॥
गढ ऊपर त्या कागरा करी, परिमडित छे अभिराम।
ते दीपतो दहदीपमान छे, झिगझिगाहट रही छे तांम ॥ ६ ॥
ते नगरी अलकापुर सारिखी, जाणे प्रत्यक्ष देवलोक।
प्रमोद हरख कीला करे, सूखी घणा छे लोक ॥ ७ ॥
ऋधी भवनादिके संयुक्त छे, ते निर्भय छे भय रहीत।
समृद्ध लोक वसे सहु, धन धनादिक सहीत ॥ ८ ॥
विनीता नगरी दीठा थका, प्रमोद हरखवंत हुवे लोग।
तिण दीठा चित्त प्रसन्न हुवे, बारूवार छे देखवा जोग ॥ ९ ॥
देखणवाला नां जूजूआ, प्रतिबिंब दीसे तिण माय।
तिणरो विस्तार छे अति घणो, ते पूरो केम कहिवाय ॥ १० ॥
तिण नगरी रा अधिपति, रिषभ जिणेसर जाण।
त्यारो थोडो सो वर्णन करूं, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ११ ॥

ढाल : १

[मम करो काया माया कारमी]

ते रिषभ जिनंद मोटा राजवी, हेमवंत ज्यूं प्रसिद्ध विख्यात जी।
ते पुत्र छे नाभिराजा तणा, मोरादेवी राणी रा अंगजात जी।
पुन्न तणा फल एहवा* ॥ १ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

इण अवसरपणी काल में, हूआ छे प्रथम राजान जी।
ते प्रथम तीर्थंकर दीपता, गुणरत्ना री छे खान जी॥ २॥
त्यांरो मात पिता रो कुल निरमलो, ते जुगलियां तणी छे ओलाद जी।
ते चव आया स्वारथ सिद्ध थकी, त्यारे सरीर रे परम समाध जी॥ ३॥
एक सहंस नें आठ लक्षण करी, सरीर सोभे छे अनूप जी।
सोवण वरणी काया तेहनी, त्यांरो इचरज कारियो रूप जी॥ ४॥
रिषभदेव कुमरपणे रह्या, बीस लाख पूर्व लग जाण जी।
पछे जुगलिया धर्म दूरो करे, राज बेठा छे मोटे मंडाण जी॥ ५॥
ते राज करे छे रूडी रीत सूं, खोटी नही छे त्यांरी नीत जी।
ते रेत रिख्या सावधान छे, त्यांमे असल राजा तणी रीत जी॥ ६॥
कला बहोत्तर पुरुष नी, चोसठ महिला नां गुण ताय जी।
वले विज्ञान कर्म एकसो, ए तीनूं दिया लोकां नें सीखाय जी॥ ७॥
वले असी मसी नें कसी तणो, ए तीनूंई सीखाया छे काम जी।
लोकां नें करवा चालू किया, तिणसूं करवा लागा ठाम ठाम जी॥ ८॥
तिण रिषभ राजा रे दोय राणियां, सुनंदा सुमगंला जाण जी।
ते रूप में अपछरा सारिखी, डाही घणी चतुर सुजाण जी॥ ६॥
ते लावण्य जोवन करे सोभती, चोसठ कला तणी जाण जी।
अस्त्रीना सर्व गुण सहित छे, त्यांरा जिणवर किया बखाण जी॥ १०॥
छ लाख पूर्व वरसां तणा, रिषभ जिणंद हूवा ताय जी।
जद सुमंगला राणी री कूख में, भरत चक्रवर्ति उपनां आय जी॥ ११॥
सवा नवमास पूरा हूआं, भरतजी जनमीया ताहि जी।
ब्राह्मी जनमी त्यांरे जोडले, विनीता राजधानी रे माहि जी॥ १२॥
त्यांरा जनम महोच्छव किया घणा, अनुक्रमे दीयो त्यांरो नाम जी।
सुखे समाधे मोटा हुआ, चंपक वेल ज्यूं गिरी गुफा ताम जी॥ १३॥
अनुक्रमें अठाणू पुत्र जनमिया, राणी सुमंगला ताम जी।
ते सहोदर भाई भरतजी तणा, त्यांरा पिण जूजूआ नाम जी॥ १४॥
एक जोडलो सुनंदा राणी जनमियो, बाहुबल नें सुदंरी ताय जी।
पछे सुनंदा राणी तणी, कूख खुली नही काय जी॥ १५॥
एक सो पुत्र नें दोय पुत्रियां, रिषभ देवजी रे हुआ ताम जी।
ते सगलाई उत्तम जीव छे, ते रूप में छे अभिराम जी॥ १६॥
मोक्षगामी सारा इण भवे, साल रूंख रे साल परिवार जी।
आठूंई कर्म खपाय नें, सगला जासी मोख मझार जी॥ १७॥

तेसठ लाख पूर्व वरसां लगे, श्रीरिषभदेवजी कीयो राज जी।
भोगावली कर्म पूरा हूआ, काम भोग सूं गयो मन भाज जी ॥ १८ ॥
सो पुत्रां ने राज बांटे दियो, पछे लीधो छे संजम भार जी।
भरतजी राज विनीता रो करे, तिणरो सांभलजो विस्तार जी ॥ १९ ॥

दुहा

विनीता राजधानी में ऊपनो, ते करे छे विनीता मे राज।
भरत चक्रवर्ति राजा मोटको, वेरी दुश्मण गया सर्व भाज ॥ १ ॥
मोटो हेमवत परवत सारिखो, वले मेरू परवत समान।
त्यांरो जस कीरति घणी लोक मे, बहु गुण रत्नां री खान ॥ २ ॥
त्यारा लक्षण बंजण गुण भला, ते पूरा केम कहवाय।
थोडासा परगट करूं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ३ ॥

ढाल : २

[डाभ मूजांदिक नी डोरी]

भरत नामे छे मोटो राजान, तिणरा पुन्न घणा असमान।
ते तो हुओ छे चक्रवर्ति पहेलो, तिणरी जस कीरति रही फेलो ॥ १ ॥
ते तो उत्तम पुरुष साख्यात, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात।
ते सत्व करनें साहसीक, मर्यादा मांहे रहे ठीक ॥ २ ॥
बल पराक्रम छे त्यारो पूरो, यांसूं अधिको नहिं कोई सूरो।
त्यांरा बल रो घणो अधिकार, ते सामलजो विस्तार ॥ ३ ॥
तरुणो पुरुष छे पूरो जवान, ते उतकष्टो छे बलवान।
एहवा बलवत पुरुष छे बार, इतरो बल छे एक वृषभ मझार ॥ ४ ॥
बारे वृषभरा बल जितरो, एक घोडा मे बल छे इतरो।
बारे घोडा मे बल छे अत्यत, इतरो एक भेसो बलवंत ॥ ५ ॥
पाच सो भेसा रो बल ताहि, इतलो बल एक हस्ती मांहि।
पांच सो हाथ्या रो बल सारो, इतलो बल एक सीह मझारो ॥ ६ ॥
दोय सहस सीह मे बल जितरो, एक अष्टापद में बल इतरो।
दसलाख अष्टापद में ताहि, इतरो बल एक बलदेव मांहि ॥ ७ ॥
वीस लाख अष्टापद जितरो, वासुदेव माहे बल इतरो।
अष्टापद चालीस लाख में ताहि, इतरो बल एक चक्रर्वात मांहि ॥ ८ ॥
क्रोड चक्रर्वात रो बल सारो, एक सामानीक इंद्र मझारो।
क्रोड इंद्र सामानीक मांहि, जितरो बल एक इंद्र में ताहि ॥ ९ ॥

अनंता इंद्रां नो बल सारो, एक तीर्थंकर देव मझारो।
अठे सगला रो बल वखाण्यो, भरतजी नां अधिकार मे आण्यो ॥ १० ॥
सार पुदगल लागा अडाभीड, ज्यासूं नीपनो दृढ सरीर।
सरीर रो तेज उद्योत, जाणे लागी झिगामिग जोत ॥ ११ ॥
थिर संघयण छे त्यांरो गाढो, घणा चीगटा छे त्यांरा हाडो।
अंग उपंग छे त्यांरा पूरा, सठाण सर्व आकार रूडा ॥ १२ ॥
रूडो वर्ण सरीर नी क्रांत, रचे रह्यो छे भली भांत।
त्यांरो मीठो स्वर मीठी वाण, ते पाम्या छे पुन्न प्रमाण ॥ १३ ॥
प्रकृति सभाव छे त्यांरो चोखो, सील आचार छे निरदोखो।
मोटा राजादिक देवे सनमान, छोडेने निज अभिमान ॥ १४ ॥
रोग रहित छे त्यारी छाया, सरीर सोभाग सहित छे काया।
अनेक वचन बोलवा परधान, चतुराई जुगत बुधिवान ॥ १५ ॥
बल तेज पराक्रम सारा, आउखा लग रहे एक धारा।
कदे हीण पडे नही त्यारो, पूरो पुन्न सचो छे ज्यांरो ॥ १६ ॥
छिद्र रहित गाढो जिम घन, एहवो गाढो सरीर काया तन।
ते सरीर छे दोष रहित, रूडा रूडा लक्षण सहित ॥ १७ ॥
मच्छ भूसरो लोटोभिगार, एहवा सरीर लक्षण श्रीकार।
बर्धमान भद्रासण जाण, संख छत्र बीजणो बखाण ॥ १८ ॥
पताका चक्र हल मूसल ताहि, रथ साथियो सरीर माहिं।
अंकुस चद्रमा सूर्य आकार, अगनयज्ञ थानक श्रीकार ॥ १९ ॥
सागर इंद्रध्वजा पृथ्वी जाण, पदमकमल ने कुंजर बखाण।
सिघासण दंड काछवो चंग, गिरि परवत घोडो तुरग ॥ २० ॥
मुगट कुंडल नंदावर्त्त जाण, धनुष भालो नें भवन विजाण।
इत्यादिक रूडा लक्षण अनेक, त्यामे दोष न लाभे एक ॥ २१ ॥
सहंस ने आठ लक्षण मगलीक, ठामो ठाम रह्या छै ठीक।
प्रगट जूआ जूआ दीसे ताम, जाणे चित्रकारी चित्राम ॥ २२ ॥
इचरजकारी छे हाथ ने पाय, रूडा लक्षण छे त्या मांय।
ऊर्ध्वमुख अकुरा जिम जाण, रोम जाल ना समूह वखाण ॥ २३ ॥
श्रीवच्छ साथिया रे आकार, गगा आवर्त्तन ज्यूं विस्तार।
माखण जिम छे घणो सुकुमाल, चीगट सहित छे लोम जाल ॥ २४ ॥
विपुल हियो छे श्रीकार, हिए श्रीवच्छ लक्षण आकार।
हिरदा ऊपर रूडा थण जाणो, ते पिण लक्षण सहित पिछाणो ॥ २५ ॥

उपनो आरज खेत्र मे नरेस, विनीता नगर कोसल देश।
रूडा लक्षण सहित देह धारी, तिणरा पुन्न घणा छे भारी ॥ २६ ॥
ऊगा सूर्य री किरण जाण, वले कमल गर्भ समाण।
लेप रहित सरीर बखाण, सार पुदगल मिलिया छे आण ॥ २७ ॥
पदम कमल सुगंधे करे पूरो, कुदग बनस्पति फूल रूडो।
जाइ जुही चपग फूल जाण, वले नाग केसरनां फूल वखाण ॥ २८ ॥
सारग कस्तुरी गंध समान, त्यारा उतकष्टा गध पिछाण।
एतला सारा सुगध होई, एहवी सरीर नी सुगंध कसबोई ॥ २९ ॥
प्रसस्त छत्तीस गुण करे जुगता, दर पीढ्यां लगे राज भुगता।
छेदाणो नही राज अखड, मात पिता प्रसिद्ध इण मंड ॥ ३० ॥
निज पोतानो कुल छे चोखो, पूनमचद ज्यूं चावो निरदोखो।
चद्रमा नी परे सोमकारी, दीठां नयण मन में हितकारी ॥ ३१ ॥
समुद्र नी परे अक्षोभ छे राय, सर्व भय करनें रहित छे ताय।
धनपति जिम उदे हुवा भोग, आय मिलियो छे सर्वं संजोग ॥ ३२ ॥
अपराजित छे संग्राम मांही, किणही आगे भागे नाही।
परम विक्रम गुण अनूप, इद्र सरीखो छे त्यारो रूप ॥ ३३ ॥
दिख्या लेवा रा छे कामी, इणहिज भव छे सिवगामी।
चारित्र लेने कर्म खपाय, ए तो जासी मुगत गढ मांय ॥ ३४ ॥
एहवो नरपति भरत राजान, सर्व कारज में सावधान।
करे छ खड नो राज अखड, ते चावो छे ब्रह्मण्ड ॥ ३५ ॥
त्यारा बेरी गया सर्व भाज, छाडे छाडे सर्म नें लाज।
पुन्न उदे रिध सपत पाई, त्यारी वार्ता सुणो चित्तल्याई ॥ ३६ ॥

दुहा

सितंतर लाख पूर्व नीकल्या, जब वेठा भरतजी राज।
जद पिण था पुन्न अति घणा, बेरी दुस्मण सर्व गया भाज ॥ १ ॥
सुखे समावे राज करता थका, नीकल्या वरस हजार।
मडलीक मोटो राजवी, तिणरी रिद्धी रो घणो विस्तार ॥ २ ॥
एकदा प्रस्तावे राजा भरत रे, आयुध साला रे मांय।
चक्ररत्न आय ऊपनो, पूरव पुन्न पसाय ॥ ३ ॥
ते चक्ररत्न अति दीपतो, दीठा नयण ठराय।
तिणरा करे महोच्छव किण विधे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : ३

[परम सयाणी हो राणी चेलणा०]

पुन्न प्रमाणे हो चक्र रत्न ऊपनों, तिणरो नाम सुदर्शन जाण।
जोत नें क्रांत छे हो अति रलियामणी, तिणरा जिनवर किया बखाण ॥ १
भरत चक्री छे हो राजेश्वर भरत खेत्रनों, ज्यारे भाग मे हूतो थो ताय।
पुन्न उदेसूं हो इसडी चीजां नीपजे, तिण दीठांई नयण ठराय ॥ २
आयुध घर रुखवालो हो आयो छे तिण अवसरे, तिण दीठो छे चक्र रतन।
हर्ष सतोष हो पाम्यों अति घणो, वले आनंद पाम्यो तन मन ॥ ३
परम उतकष्टो हो भलो मन थयो तेहनों, प्रीत उपनी मन कोड।
हिवडो हुलसी हो हरष रे बसकरी, हेज भराणो हो जोर ॥ ४
ते हरख सूं आयो हो चक्र रत्न छे तिहां, प्रदक्षिणा दीधी तीनवार।
दोनूं हाथ जोडी हो मस्तक चढायने, चक्र रत्न ने कियो नमस्कार ॥ ५
चक्र रत्न नें हो नमण करे हरष सूं, आयो आयुध साला बार।
उवठाण साला हो भरतरे छे बारली, तिहा बेठा भरत तिणवार ॥ ६
ते आय ऊभो छे हो भरत जी बेठा तिहां, हाथ जोडी मस्तक चढाय।
विनो करेनें हो भरतेश्वर राय नें, जय विजय करेने बधाय ॥ ७
भरत नरिंद्र ने हो रूडी रीत बधायनें, बोल्यो मीठी वाण।
आयुधसाला में हो एक चीज अमोलक ऊपनी, चक्ररत्न प्रगटियो आण ॥ ८
जेहवो मे दीठो हो चक्र रत्न दीपतो, ते माड कही सर्व बात।
ते अत्यंत हितकारी हो पृथ्वीपती होसी आपनें, इणमें कूड नहिं तिलमात ॥ ९
ए वचन सुणेने हो भरतजी अति हर्षित हुआ, पाम्यो उतकष्टो आणंद।
कमल ज्यूं विकस्या हो वदन नयन तेहना, तन मन परमानन्द ॥ १०
ए चक्ररत्न उपनो हो भरत नरिंद ने, पूरब तप ना फल जाण।
वले सजम लेने हो तपसा थी कर्म खपायने, इण भव जासी निरवाण ॥ ११

●

दुहा

चक्ररत्न उपनो श्रवणे सुणी, हरषसूं हाल्या आभरण अनेक।
कडगा तुडिय ने केउरो, हाल्यो मस्तक मुगट वसेख ॥ १ ॥
कानां तणा कुंडल हालिया, वले चाल्या हियानां हार।
[illegible] तिखवार ॥ २ ॥

ऊठ्यो सिंघासण सूं उतावलो, हेटो उतरियो राय।
पग नी पाउडी मूंकनें, कियो उत्तरासंग ताय॥ ३॥
अजली जोड मस्तक चढायनें, सात आठ पग सनमुख जाय।
डावो गोडो थोडो सो ऊंचो राखनें, जीमणो गोडो धरती लगाय॥ ४॥
अजली जोड मस्तक चढायने, नमस्कार कियो प्रणाम।
आयुध साला रुखवाला पुरुषने, दिये बधाई ताम॥ ५॥
मुगट वर्जे मस्तक तणो, आभरण दिया सर्व उतार।
खाए खर्चे जीवे ज्यां लगे, प्रीतिदान दियो तिणवार॥ ६॥
सीख देई पाछो मोकल्यो, घणो देई सनमान सत्कार।
हिंवे बेठो सिंघासण ऊपरे, किण विध करे विचार॥ ७॥

ढाल : ४

[सोरठ देश मझार दुवारिका]

हिंवे चक्र रत्न रा जाण, महोच्छब रा करे मंडाण। आज हो।
कुण कुण विध करी ते सांभलो जी॥ १॥
कोटुबी पुरुष बोलाय, तिणनें कहे भरतेश्वर राय। आज हो।
कारज करो एक बेग सताबसूं जी॥ २॥
विनीता नगरी मझार, अभितर ने बार।
कचरो काढो थे सगलो बुहारने जी॥ ३॥
माचा ऊपर माचा मड, ऊंचा करो प्रचंड।
दीसत दीसे अति रलियामण जी॥ ४॥
वस्त्र रूडा श्रीकार, पंचवर्णा विविध प्रकार।
ध्वजा नें पताका करजो तेहनां जी॥ ५॥
ध्वजा ऊपर ध्वजा करो तास, ते उडती गगन आकाश।
पताका ऊपर पताका बांधजो जी॥ ६॥
ध्वजा पताका ताम, ते करजो ठाम ठाम।
गगन आकाशे सोभे लहकता जी॥ ७॥
ध्वजा चंद्रवा चूप, त्यांमें विविध भांतरा रूप।
झूंबक लटकंता त्यारे सोभता जी॥ ८॥
चंदण गोसीर्ष वखांण, वले रातो चदण आंण।
थापानें देजो पांचूं अंगुली तणा जी॥ ९॥
चंदण कलस अनेक, वले नान्हां घडा विशेख।
भर भर मंकजो रसते सेरियां जी॥ १०॥

गंध सुगंध वर आण, सेलारस अगर बखाण।
अबीर कस्तुरी आण उखेवजो जी ॥ ११ ॥
इत्यादिक गंध अभिराम, उखेवजो ठाम ठाम।
सुगंध करजो सगली नगरी मझे जी ॥ १२ ॥
तूं बेग सताब सूं जाय, ए कारज करे कराय।
आज्ञा पाछी सूंपे तूं माहरी जी ॥ १३ ॥
इम सुणे भरत नी बाण, तिण कर लीधी परमाण।
हरष संतोष पामें नें नीकल्यो जी ॥ १४ ॥
ते नगर विनीता आय, सर्व कारज करे कराय।
आज्ञा तिण पाछी सूंपी आयनें जी ॥ १५ ॥
इम सुणी सेवग री वाय, हरषित हुवा मन माय।
भरतजी आया मंजण घर तिहां जी ॥ १६ ॥
ए सावद्य काम पिछाण, ते करे करावे जाण।
सगला छोडेने जासी मुगत में जी ॥ १७ ॥

●

दुहा

ते मंजण घर अति रलियामणो, मोती जाल्यां छे ठाम ठाम।
गवाक्ष घणा ते सोभता, ते पिण घणा अभिराम ॥ १ ॥
विचित्र प्रकार नां मणिरत्न सूं, भूमितलो बांध्यो छे ताय।
ते सुंहालो अति माखण जिसो, ते पिण दीठा नयण ठराय ॥ २ ॥
वले स्नान करवा रो माडवो, ते पिण घणो अभिराम।
नाना प्रकार नां मणिरत्न सूं, रूडी रीत किया चित्राम ॥ ३ ॥
स्नान करवा पीढ बाजोट छें, तिणरो विविध प्रकारनो रूप।
स्नान करवा तिण अवसरे, बेठा भरतेस्वर भूप ॥ ४ ॥
सुखकारी पाणी ये करी, वले सुगंध पाणी असमान।
पुष्पोदक सुध उदके करी, कियो भरतजी स्नान ॥ ५ ॥
वले मंगलीक कल्याण कारणे, विघन निवारवा काज।
ए पिण स्नान तिण अवसरे, कीधो भरत महाराज ॥ ६ ॥
सुखमाल सुगध सुंदर घणो, ते रातो वस्त्र वखाण।
तिण करे लूह्यो शरीर नें, डाहे पुरुष चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

ढाल : ५

[नाटक रचणो मांडियो रे]

सरस सुरभि गध अति घणो रे, ते गोसीर्ष चदन विख्यात रे। राजेश्वर
ते आलो ततकालनो नीपनो रे लाल, तिण चदन सूं चरच्यो गात रे। राजेश्वर
करे महोच्छव चक्र रत्नां रे लाल* ॥ १ ॥

निरदोष वस्त्र रत्न ने रे, रूडी रीत सूं पहरुया जाण रे।
ते मोलकरे मूंहगा अति अति घणा रे, तोल मे हल्का वखाण रे। २ ॥
सुचि पवित्र माला फूला तणी रे, ते पांचू वर्णी श्रीकार रे।
वले वणक विलेपण रूपनां रे, रूडी रीत सू कियो अलंकार रे॥ ३ ॥
आभरण मणि सोवन तणा रे, ठाम ठाम किया अलंकार रे।
हार अर्द्ध हार नें तिसरिया रे, ते तिण पहरुया छे गला मभार रे॥ ४ ॥
कडियां कण दोरो बाधियो रे, लावो भूंबणो सोभे लहकंत रे।
ललित सुकमाल अति सोभता रे, मस्तक केश महकंत रे॥ ५ ॥
नाना प्रकारना मणि रत्न मे रे, कडा पहरुया दोनू हाथा मांहि रे।
वले बाहा मे पहरुया बाहरखा रे, त्यासूं भुजा थभी रही ताहि रे॥ ६ ॥
काने कुडल पहरिया रे, ते करवा अत्यत उद्योत रे।
मस्तक मुगट अति दीपतो रे, जाणे लागी भिगामिग जोत रे॥ ७ ॥
हारे करी ढाक्यो रूडी परे रे, हिवडो तेहनो भली भात रे।
एकपटो रूडो वस्त्र तेहथी रे, उत्तरासंग कियो कर खात रे॥ ८ ॥
मुद्रिका करने पांचूं आगुली रे, पीली दीसे छे ताम रे।
वले आभरण पहरुया छे अति घणा रे, त्यारा पूरा न कह्या छे नाम रे॥ ९ ॥
कहि कहि नें* कितरो कहू रे, कल्प वृक्ष तणी परे जाण रे।
अलंकृत विभूषित एहवो रे, अति श्रेष्ठ सिणगार वखाण रे॥ १० ॥
मस्तक छत्र धरावतो रे, सकोरट फूलमाला सहीत रे।
वले च्यार चमर वीजावतो रे, वले जय जय शब्द वदीत रे॥ ११ ॥
एहवा मगलीक शब्द वोलावतो रे, अनेक गण नायक तिणरे साथ रे।
वले दंड नायक साथे घणा रे, दूतपाल सधिपाल विख्यात रे॥ १२ ॥
मत्री महामंत्री साथे घणा रे, ईसर राजादिक साथे अनेक रे।
त्या साथे नरिंद परवरुयो थको रे, मन मे हरप वशेख रे॥ १३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सरीर कियो अति सोभतो रे, त्यांनें दीठां पामे आनद रे।
जाणे वादल मां सूं नीकल्यो रे, रज रहित पूनम रो चद रे॥ १४॥
वले सोम चंदरमां सारिखो रे, छ खंड तणो सिरदार रे।
धूपणो फूल गंध माला फूल नी रे, तिण लीधी छे हाथ मझार रे॥ १५॥
महोच्छब करे छे चक्र रत्न तणा रे, संसार नो कारण जाण रे।
ते छोडसी सर्व सावद्य जाणनें रे, इण हिज भव जासी निरवाण रे॥ १६॥

●

दुहा

इण विध मंजणसाल थी, बारे नीकलियो राय।
जिहां आयुधसाला चक्ररत्न छे, तिण दिसि चाल्यो जाय॥ १॥
जब सेवग भरत राजा तणा, ईसर युवराजादिक जाण।
ते पिण साथे चालिया, कर मोटे मंडाण॥ २॥

ढाल : ६

[जंबूद्वीप मझार रे]

केइ पदम कमल ले हाथ रे, वले केयक सेवगां।
उतपल कमल ने लिया ए॥ १॥
एकेक हस्त मझार रे, कमल सो पत्र नां।
गंध सुगंध तिणरो घणो ए॥ २॥
केका लिया हस्त मझार रे, कमल ततकाल नो।
सहंस पत्र नों नीपनो ए॥ ३॥
ते घणा नरां रा वृन्द रे, कमल ले हाथ में
भरत राजा पूठे चालिया ए॥ ४॥
वले भरतेश्वर लार रे, पूठे चालती।
अठारे देश री दासीयां ए॥ ५॥
त्यांरो रूप घणो श्रीकार रे, तरुणी वय तणी।
घणी डाही चतुर छे दासीयां ए॥ ६॥
केइ चंदण कलश ले हाथ रे, मंगलीक कारणे।
लारे लगी जाए चली ए॥ ७॥
इम लोटा आरीसा जाण रे, थाल कटोरिया।
वले केकां लिया छे वीजणा ए॥ ८॥

वले रत्न करडिया जाण रे, फूल चंगेरिया।
गूंथी माला फूलां तणी ए॥ ९ ॥
वले चूर्ण डाबडा हस्त रे, वणक विलेपण।
गध कसबोई नां डाबडा ए ॥ १० ॥
आभरण बहु मोला जाण रे, वले लोम पूंजणी।
पुष्प पाडल भरी चगेरियां ए ॥ ११ ॥
केकां लिया सिघासण हाथ रे, ते रत्नां जड्या।
छत्र चामर केकां लिया ए ॥ १२ ॥
तेल कोष्ट पुडा अनेक रे, चोवा मलयागर।
त्यांरा पुडा केकां हाथे लिया ए ॥ १३ ॥
मणीसिल हीगलू हड्ताल रे, वले सरसव तणा।
त्यारा लिया डाबडा हाथ मे ए ॥ १४ ॥
केकां ताल बीजणा नाम रे, हस्ते झालिया।
केका धूप कुडछा हाथे लिया ए ॥ १५ ॥
इत्यादिक बोल अनेक रे, ते सारा जूजूआ।
त्यानें दास्या लिया छेहाथ मे ए ॥ १६ ॥
ते भरत नरिंद्र ने पूठ रे, केडे चालती।
त्यांरी चाल घणी सुहावणी ए ॥ १७ ॥
हिवे भरत राजान रे, सगली रिघ जोतसूं।
बल समुदाय सहीतसूं ए ॥ १८ ॥
पूजे छे चक्ररत्न रे, मोह तणे वसे।
पिण मोखगामी छे इण भवे ए ॥ १९ ॥

दुहा

वले सर्व बाजत्र बाजता थका, महा मोटी रिद्धि सुरीत।
प्रधान बाजत्र बाजे घणा, समकाले जुगत सहीत ॥ १ ॥
सख पडह भेरी नें झल्लरी, मृदग मादल विशेख।
खरमुही ने देव दुंदुभी, इत्यादिक बाजंत्र अनेक ॥ २ ॥
निर्घोष बाजत्र बाजता, त्यारा ऊठे शब्द रसाल।
इण विध मोटे मडाणसूं, आया आयुध साल ॥ ३ ॥
देखत पाण चक्ररत्न नें, प्रणाम कियो तिणवार।
हिवे चक्ररत्न तिहां आयने, पजणी लीधी हस्त मझार ॥ ४ ॥

तिण पूंजणी कर चक्ररत्न ने, प्रमार्जे चक्ररतन।
हिवे पूजा करे चक्ररत्न री, ते सुणजो एक मन॥ ५॥

ढाल : ७

[धर्म आराधीए ए]

सुगंध उदक पाणी करी ए, चक्ररत्न ने करायो स्नान।
आलो चदण बावनो ए, तिणरो लेप लगायो राजान।
पूजे चक्ररत्न ने ए*॥ १॥
गूंथ्या फूलां री माला करी ए, अर्चा पूजा करी राय।
वले फूल चढाविया ए, गंध घणी त्या माय॥ २॥
ओ माला गध चढाविया ए, वर्ण चूर्ण वस्त्र चढाय।
पछे आभरण चढाविया ए, विनो करे शीस नमाय॥ ३॥
निर्मल पातला ने श्वेत उज्जला ए, रूपा मे चावल ताय।
तिणसूं चक्र आगले ए, आठ मंगलीक आलेखे राय॥ ४॥
साथियो[1] नें श्रीवच्छ साथियो[2] ए, नदावर्त्त साथियो[3] बखाण।
वर्धमान साथियो[4] ए, पाचमो भद्रासण[5] जाण॥ ५॥
मच्छ[6] कलश[7] आरीसो[8] आठमो ए, ए आठोई आलेख्या मगलीक।
वले उपचार पूजा करे ए, ते सुणजो राखे चित्त ठीक॥ ६॥
फूल पाडल ने मालती तणा ए, वले चपा ने असोग फूल जाण।
पुणाग अब मंजरी ए, नवमालती फूल बखाण॥ ७॥
धोबो भर भर फूल बिखेरिया ए, चक्ररत्न रे चोफेर।
पंचवर्णा फूलां तणा ए, जानु प्रमाणे किया ढेर॥ ८॥
चद प्रभ वैडूर्य रत्न मे ए, कुडछा तणो डड जाण।
कचनमणि रत्न री ए, तिणरे भात चित्राम बखाण॥ ९॥
कुडछो वैडूर्य रत्न मे ए, तिणमे घाल्यो कृश्नागर धूप।
सुगंध तिणरो घणो ए, वले सेलारस धूप अनूप॥ १०॥
इत्यादिक जात अनेक री ए, धूपणो उखेव्यो राजान।
त्यारी वासावली ए, हुई छे मघमघायमान॥ ११॥
सात आठ पग पाछो आयने ए, हेठो बेठो छे तिणवार।
आगे कियो तिण विधे ए, तीन बार कियो नमस्कार॥ १२॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

नमस्कार करे चक्ररत्न ने ए, नीकल्यो आयुधसाला बार।
उवठाण साला आयनें ए, बेठो सिंघासण मझार ॥ १३ ॥
अठारे श्रेणी प्रश्रेणी बोलायनें ए, बोल्या भरतजी आम।
अठाई महोच्छव करो ए, चक्ररत्न रा ठाम ठाम ॥ १४ ॥
दाण गवादिक नो कर मूंकियो ए, वले मूंक्यो करसण भाग।
मूंक्यो वले दाण ने ए, वले मूक्यो कुदंड कुभाग ॥ १५ ॥
राय सेवग म जाओ केहने घरे ए, कोई धरणो म पाडो लिगार।
लहणो नही मांगणो ए, इण विनीता नगर मझार ॥ १६ ॥
वले गणिका अनेक नगरी मझे ए, नाटक करो ठाम ठाम।
गीत गावती थकी ए, मोटे मंडाण करे हगाम ॥ १७ ॥
वले नाटकिया नाटक करो ए, ते देता तालोटा ताम।
मुखसूं पद बोलता ए, नगरी माहें ठाम ठाम ॥ १८ ॥
ठाम ठाम बाधो माला फूल री ए, वले दडा फूलां रा जाण।
कीला करो हर्षसूं ए, मन मांहे उज्जम आण ॥ १९ ॥
ध्वजा पताका ऊंचा करो ए, ध्वजा विजय वेजयती ताम।
पंचवर्णी सोभती ए, ते पिण बाधो ठाम ठाम ॥ २० ॥
वाजित्र सर्व चालू करो ए, बजावो रूडी रीत।
काना ने सुहामणा ए, ते पिण मीठा शब्दा सहीत ॥ २१ ॥
इणविध चक्ररत्न तणा ए, करो महोच्छव जाण।
आठ दिवस लगे ए, म्हारी आज्ञा सूपो पाछी आण ॥ २२ ॥
ए वचन भरतेश्वर नो सुणी ए, श्रेणी प्रश्रेणी कियो परमाण।
हर्ष सहित सुणी ए, विने सहित बोल्या वाण ॥ २३ ॥
भरतजी रा समीप थी नीकल्या ए, कह्या ते सर्व करे कराय।
पाछी सूपी आगन्या ए, भरतजी बेठा तिहां आय ॥ २४ ॥
महिमा चक्ररत्न तणी ए, कीधी कराई दिन आठ।
पिण जाणें छे माया कारमी ए, मुगत जासी कर्म काट ॥ २५ ॥

दुहा

महामहिमा महोच्छव पूरो हुवो, आठ दिवस मझार।
चक्ररत्न तिण अवसरे, निकल्यो आयुध साला बार ॥ १ ॥
आयुध साला थी नीकल्यो, रह्यो आकाश रे माहिं।
सहंस जक्ष देवता परवर्यो थको, सोभ रह्यो सूर्य जिम ताहि ॥ २ ॥

प्रधान वाजंत्र वाजतां थकां, निर्घोष शब्द छे तास।
सम्यक् प्रकारे पूरतो थको, सोभे अत्यंत आकाश ॥ ३ ॥
विनीता नगरी ने मध्यो मध्य थई, चाले छे गगन आकाश।
लोक नरनारी चालतो देखने, पामे हर्ष हुलास ॥ ४ ॥
गंगा नदी थी जीमणे कुले, मागध तीर्थ छे ताथ।
तिण तीर्थ दिस चक्र चालियो, धुरसू पूख सनमुख जाय ॥ ५ ॥
पूरव सनमुख जातो देखनें, हरख्यो भरत नरिंद।
हिवडो हुलस्यो अति घणो, पाम्यो अधिक आणंद ॥ ६ ॥
ते चक्ररत्न छे रलियामणो, तिणरो रूप घणो असमान।
ते थोडो सो प्ररगट करूं, सुणो सुरत दे कान ॥ ७ ॥

ढाल : ८

[आणद समकित उच्चरे]

चक्ररत्न चक्र सारिखो रे लाल, तिणरी वज्ररत्न मे नाभ।सुविचारीरे।
तिणरा अरा लोहीताक्ष रत्न मे रे, ते सोभ रह्यो छे आभ।सुविचारीरे।
चक्ररत्न रलियामणो रे लाल ॥ १ ॥
जांबूनद पीलो सोनो तेहमे रे लाल, चक्ररत्न री धारा वखाण।
नाना प्रकारनां मणिरत्न मे रे लाल, माहिली परिधि रूप पिछाण ॥ २ ॥
मणि चद्रकातादिक रत्न री रे लाल, तिणरी जालिया कीधी कर खात।
वले जालिया मोत्यां तणी रे लाल, तिणसूं सिणगार्‍यो छे भली भात ॥ ३ ॥
भभा भेरी मृदग आदि दे रे लाल, वारे वाजित्र बाजे निरदोष।
एक बाज्यां बारोई वाजा वाजता रे लाल, त्यांरा शब्दां री पड रही निरघोष ॥ ४ ॥
वले नान्ही नान्ही घूघरी रे लाल, तिण करने सहीत।
त्यांरा मीठा शब्द सुहामणा रे लाल, ते पिण बाज रह्या छे रूडी रीत ॥ ५ ॥
ऊगंता सूर्य जेहवो रे लाल, इसडो छे रूप तेजवान।
वले सूर्य माडला सारिखो रे लाल, गोल आकार छे ग्यान ॥ ६ ॥
नाना प्रकारनां मणि रत्न में रे लाल, घटा अनेक वखाण।
तिण करने वीट्यो अच्छे रे लाल, त्यारा मीठा शब्द पिछाण ॥ ७ ॥
सर्व रितु ना सुरभिगंध फूलडा रे लाल, त्यारी माला वांधी ठाम ठाम।
ठाम ठाम दडा वाध्या फूल नां रे लाल, लहक रह्या छे ताम ॥ ८ ॥
ते अधर रह्यो छे आकाश मे रे लाल, जाणे दूजो सूर्य आकाश।
[illegible] थको रे लाल, ते देवता अधिष्ठित छे तास ॥ ९ ॥

प्रधान वाजित्र वाजता रे लाल, मोटा शब्दा री घुन घुकार।
लघु शब्दांरी घुन नीकले घणी रे लाल, एहवो चक्ररत्न श्रीकार ॥ १० ॥
ते शब्द आकाशे पूरतो रे लाल, तिणसूं अवर रह्यो छे गाज।
तिण सुदसण चक्ररत्न नो रे लाल, अधिपति भरत महाराज ॥ ११ ॥
एहवो चक्ररत्न रलियामणो रे लाल, गुणा सूं पूर्ण निर्दोष।
तिणनें छोड देसी जाणे कारमो रे लाल, जासी अविचल मोष ॥ १२ ॥

दुहा

अठा पहली कही ते वारता, सूतर रे अनुसार।
हिवे कथा अनुसारे हूं कहूं, ते सुणजो अधिकार ॥ १ ॥
अठाणू भाया नें भरत कहिवाडियो, म्हारो वचन कीजो परमाण।
चक्ररत्न ऊपनो माह रे, तिणसूं मानजो म्हारी आण ॥ २ ॥
अठाणु भाई सुणे इम वोलिया, किण लेखे मानां म्हे आण।
म्हाने राज वाटी दियो वापजी, म्हारा पुन्न तणे परमाण ॥ ३ ॥
तिणसूं आण न मानां म्हे थाहरी, थे मतकरो कजियो कूड।
थे जोरी करस्यो म्हा ऊपरे, तो म्हे जास्यां रिषभ हजूर ॥ ४ ॥
ए वचन न मान्यो भरतजी, जव भेला होय तिणवार।
आय ऊभा रिषभ देव आगले, करवा लागा छे पुकार ॥ ५ ॥
थे राज दियो म्हाने वांटने, सगला ने जुओ तास।
ते राज खोसे म्हारो भरत जी, तिणसूं आया तुम तणे पास ॥ ६ ॥
आप समझावो भरत नें, ज्यूं खोसे नही म्हारो राज।
राज तणा दुखिया थका, आप कनें आया छा आज ॥ ७ ॥
जद रिषभ जिनेश्वर तेहनों, त्यासू राग नही लवलेस।
समझता जाण सारा भणी, देवा लागा उपदेस ॥ ८ ॥

ढाल : ६

[विणजारा]

प्रति बूझो रे, म्हे थाने दीधो राज।
तिण राजसूं काज सीझे नही, प्रति बूझो रे।
जिण राजसूं सीझे काज, ते राज न दियो थानें सही ॥ प्र० १ ॥
खोस्यो जाए राज, ते राज म जाणो आपरो।
इण थोथा राज रे काज, मूंही पचे जीव वापडो ॥ २ ॥

अविचल मुगत रो राज, ते लीधो न जाए केहनो।
तिहां भय दुख जाए सर्व भाज, अनोपम सुख छे जेहनों ॥ ३ ॥
इण थोथा राज रे काज, भाई भाई माहों मां लड परे।
वले छोडे सर्म ने लाज, आपसमे माहो मा कट मरे ॥ ४ ॥
तन धन नें परिवार, इहाका इहा रहसी सही।
परभव नावे लार, त्यासू गरज सरे नही ॥ ५ ॥
पहडे सगाने सेण, पहडे संचियो धन हाथ रो।
बंधव त्रिया नें पूत, नहिं पहडे धर्म जगनाथ रो ॥ ६ ॥
जब लग स्वारथ होय, तवलग मुख जी जी करे।
स्वारथ सरिया जोय, मुख दीठाई लड पडे ॥ ७ ॥
इद्री विषय कषाय, ए अभितर भोमिया वस करो।
मेटो तृष्णा लाय, सुमता रस चित्त मे धरो ॥ ८ ॥
हिरदे विमासी जोय, तन धन जोवन असासता।
तिणमे म राचो कोय, ज्यू सुख पामों सासता ॥ ९ ॥
एहवो अथिर संसार, थिर कोई वस्तु दीसे नही।
तिणने तीन धिक्कार, जे इणमें राच रहता सही ॥ १० ॥
श्रद्धा सेंठी धार, नवतत्व रो निरणो करो।
साधुपणो ल्यो सार, ज्यूं सिवरमणी बेगी वरो ॥ ११ ॥
रिषभ जिनंद कहे आम, चारित्र हिवडां थे आदरो।
तो पामो अविचल ठाम, ते छे थानक सदा समाध रो ॥ १२ ॥
थे आया राज रे काज, ते राज मारग छे नरक रो।
सजम लेवो थे आज, ओ मारग मुगत ने सरग रो ॥ १३ ॥

दुहा

श्रीरिषभ तणी बाणी सुणे, आयो घटमे ज्ञान।
काम ने भोग त्यांनें सर्वथा, लागा जहर समान ॥ १ ॥
हाथ जोडीनें इम कहे, म्हे सरध्या तुमनां वैण।
थे तारक भव जीवनां, मोणें मिलिया साचा सैण ॥ २ ॥
म्हें काम नें भोग थी ऊभग्या, जाण्यो अथिर संसार।
राज रमण रिध छोडनें, लेस्या संजम भार ॥ ३ ॥
रिषभ जिणेश्वर इम कहे, थांरे लेणो संजम भार।
घडी जाए ते पाछी आवे नही, तिणसूं मत करो ढील लिगार ॥ ४ ॥

जब अठाणु भाई तिण अवसरे, लीधो संजम भार।
राज रमण सर्व छोडनें, हूआ मोटा अणगार ॥ ५ ॥

ढाल : १०

[वोल करडा अभिग्रह छ मास]

वले दूजो दूत बोलायने, कहे छे भरत महाराय ॥
वाहुवल भाई माहरो, त्या पासे तूं वेगो जाय। सताब।
तू कहिजे सदेसो मांहरो ॥ १ ॥

विनो भगत करे तांहरी, वले करे घणी नरमाय।
हूं वात कहूं छूं तो भणी, ते तूं सगली दीजे सुणाय। भाई नें।
ते तूं कहिजे रूडी रीत तेहनें ॥ २ ॥

चक्ररत्न ऊपनो माह रे, चक्रवर्त्ति पदवी उदे हुई आण।
तिणसू थें भरत राजा तणी, आण कीजो परमाण। महाराजा।
इम कह्यो भरतजी आपनें ॥ ३ ॥

इम दीधी सीखावण दूत ने, तिण कर लीधी परमाण।
दूत तिहां थी नीकल्यो, ओतो कर मोटे मडाण। तिहां थी।
चाल्यो घणा साथ सामान थी ॥ ४ ॥

बाहुवलजी बेठा तिहा, कर मोटे मडाण।
तिण अवसर दूत आयने, विनो कर वोल्यो मीठी वाण। तिण ठामे।
जय विजय करने वधाविया ॥ ५ ॥

जव आदर मान दियो दूत ने, पूछ्या तिणने समाचार।
कहो दूत किणरा मेल्या आविया, जव दूत वोल्यो तिणवार। राजा सूं।
हूंतो आयो भरतजी रो मेलियो ॥ ६ ॥

कहो भरतजी री वारता, जव दूत बोल्यो तिणवार।
भरतजी कह्यो छे थां भणी, मो साथे आपने समाचार। महाराजा।
आप चित्त लगायने सांभलो ॥ ७ ॥

चक्ररत्न ऊपनो मांह रे, तिणसूं मानजो म्हारी आण।
इम कहे मोनें मोकल्यो, ए वचन करो परमाण। महाराजा।
ए बात जुगती छे आपनें ॥ ८ ॥

ए वचन सुणेनें कोपिया, वाहुवल तिणवार।
करडा वचन मुख वोलिया, तीन लीटी चाढे निलाड। ने बोल्यो।
तूं जाय भरतने इम कहे ॥ ९ ॥

थें अठाणु भायां तणो, खोस लियो छे राज।
इसडो अकारज थे कियो, तोनें अजे न आवे लाज। रे भाई।
तूं जाय भरतने इम कहे॥ १०॥

हूं डरतो आण मानूं नही, डरतो नही लेऊं सजमभार।
हूं करस्यूं संग्राम तो थकी, तूं पिण वेगो होयजे तयार। लडवानें।
तूं जाय भरतनें इम कहे॥ ११॥

दूत नें नही सतकारियो, वले दियो नही सनमान।
जब दूत रीसाणो अति घणो, धरतो मन मे अभिमान। मगज सूं।
ओतो क्रोध करेने चालियो॥ १२॥

दूत तिहां थी नीकल्यो, पाछो आयो भरतजी पास।
विनो भगत करे घणी, ओतो ऊभो करे अरदास। विनां सूं।
दोनूं हाथ मस्तक चढायने॥ १३॥

बाहुबल वचन कह्या तिके, विवरा सुध दिया सुणाय।
ते वचन सुणेनें भरत जी, डेरा बारे दिया छे ताय। भरतेश्वर।
कीधी संग्राम की त्यारियां॥ १४॥

संग्राम करवानें सज हुआ, तिणमें जाणे छे बंधता कर्म।
राज तणी जाणे छे विटंबणा, अंत छोडे आराधसी धर्म। भरतेश्वर।
मोख जासी आठूं कर्म खय करी॥ १५॥

●

दुहा

फोजां मांहोमां भेली हुई, दोनूंई भायां री ताम।
त्यांरे बडसाला री नहीं बारता, त्यारी हुवा करवा संग्राम॥ १॥
जब सक्रेंद्र मन जाणियो, ए रूडो नही छे काम।
ए रिषभ जिनंदरा डीकरा, ते करे मांहोमां संग्राम॥ २॥
अजेस तो आरो तीसरो, नेडो हुंतो जुगलिया धर्म।
चोथो आरो पिण लागो नही, तठा पहली निपजे ए कर्म॥ ३॥
तो हिवे हूं तिहां जायनें, दोयां ने देऊं समझाय।
इसडी धारेनें इंद्र नीकल्यो, दोयां विचे डेरा दिया आय॥ ४॥
दोनूं भायां नें इंद्र बोलायनें, इंद्र कहे छे आम।
थें मिनख मरावो किण कारणे, किण कारण करो संग्राम॥ ५॥
राज चाहीजे थांहरे, ओरांनें मरावो कांय।
जुझ करो मांहोमां दोनूं जणां, डरो मती मन मांय॥ ६॥

राज कीजो जीतो जिको, हूं भरसू थांरी साख।
बीजा अनेरा लोकां भणी, कांय मरावो अन्हाख ॥ ७ ॥
ए इन्द्र वचन माने लियो, लड़वा लागा दोनूंई भाय।
हिवे हार जीत किणरी हुवे, ते सुणजो चित्त ल्याय। ८ ॥

ढाल : ११

[ईडर आंबा आंमली०]

श्री रिषभ जिनंदरा डीकरा रे, भरत बाहुबल ताम।
इण राज लिखमी रे कारणे रे, करवा लागा मांहोंमां सग्राम।भविकजन।
लोभ बुरो संसार* ॥ १ ॥
पहलो सग्राम थाप्यो निजरनो रे, तिणमें गया भरतजी हार।
सूर्य सनमुख आयो तेहनें, तिणसूं आख्या दीधी टमकार ॥ २ ॥
जब फूल विरखा देवता करी रे, कहे जीता बाहूबल ताम।
जब भरतजी बदले गया रे, ओ तो नही मानूं संग्राम ॥ ३ ॥
जब बाहूबलजी इम बोलिया रे, फेर बीजो करो सग्राम।
हू पहिलो सग्राम जीतो खरो रे, तो बीजो किम हारसूं ताम॥ ४ ॥
बीजो सग्राम पुणचो छोडावणो रे, ते बाहूवल दियो छुडाय।
भरतसू पुणचो छूटो नही रे, इहां पिण हार्‌यो भरत महाराय ॥ ५ ॥
वले फूल विरखा देवतां करी रे, कहे जीता बाहूबल राय।
जब फेर भरतजी बदलिया रे, तीजो सग्राम करस्या ताय ॥ ६ ॥
जब फेर बाहुबल बोलियो रे, वले तीजो करो संग्राम।
वले जीत हुवे जो माहरी रे, तो अब के मत फिरजो ताम ॥ ७ ॥
तीजो सग्राम बाहन मावणी रे, ते पिण बाहूबल दीधी नमाय।
भरतसूं बाह* नमी नही रे, इहां पिण हार्‌या भरत महाराय ॥ ८ ॥
वले फूल विरखा देवतां करी रे, कहे जीता बाहूबल राड।
जब फेर भरतजी बदलिया रे, राड करस्यां चोथी वार ॥ ९ ॥
जब बाहूबलजी फेर बोलिया रे, जोख सूं करो चोथो संग्राम।
ज्यारे भाग में राज लिखियो हुसी रे, आगो पाछो न हुवे ताम ॥ १० ॥
चोथो सग्राम वले थापियो रे, जल उछालणो माहों मांय।
तिहा पिण भरतजी हारिया रे, जीतो बाहूबल राय ॥ ११ ॥
वले फूल विरखा देवतां करी रे, कहे जीता बाहूबल राड।
जब फेर भरतजी बदलिया रे, राड करस्यां पंचमी वार ॥ १२ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जब बाहूबलजी फेर बोलिया रे, जोख सूं करो पांचमो संग्राम।
ताला मांहें आगो पाछो नहीं रे, थें नचित पूरो मन हाम ॥ १३ ॥
पांचमी राड थापी मुष्टि तणी रे, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात।
मुष्टि उपाड दीधी भरतजी रे, करवा बाहूबलरी घात ॥ १४ ॥
मुष्टि लागी भरत रा हाथ री रे, तिणसूं वेदनां हुई अथाय।
जो इसरी लागे ओर पुरुप रे रे, तो टूक टूक होय जाय ॥ १५ ॥
बाहूबल किण विध मरे रे, ते चरम सरीरी साख्यात।
पिण क्रोध ऊपनो अति आकरो रे, जाण्यों करूं भरत नी घात ॥ १६ ॥
हिवे भरत नरिंद नें मारवा रे, बाहूबल उपाडी मुष्ट।
तिण अवसर बाहूवल तणा रे, परिणाम घणा छे दुष्ट ॥ १७ ॥
ए मोख गामी छे बेहूं जणा रे, राजकाजे करे संग्राम।
ते पिण चारित्र ले मुगत सिधवसी रे, सारसी आतम काम ॥ १८ ॥

●

दुहा

भरत नरिंद नें मारवा, खरा खरी परिणाम।
पिण मोहकर्म त्यांरे पातलो, तुरत सुलट गया तिण ठाम ॥ १ ॥
जो हूं मारूं इण भरत ने, तो होवूं जगत में भांड।
वडा भाई नें इण दुष्ट मारियो, फिट-फिट करे सहु मांड ॥ २ ॥
एक वाप तणा बेहूं डीकरा, म्हें लडां छां राज रे काज।
राज करूं भरत ने मारनें, ओतो वडो अकाज ॥ ३ ॥
निदान तो म्हारे वेगसूं, लेणो संजम भार।
जो इणनें मारे चारित्र लेऊं, तो कुल मांहें हुवे छे अंधार ॥ ४ ॥
ओ तो कुल मांहे दीपतो, सांप्रत दीवा समान।
वले कुण कुण करे छे विचारणा, सुणो सुरत दे कान ॥ ५ ॥

ढाल : १२

[प्रभवो चोर मन॰]

म्हें तो राज काजे काजिया किया, ते तो कर्मा रो वंक।
जो घात करूं इण भरत नीं, तो लागे कुल ने कलंक ॥ १ ॥
ओ तो रिषभदेवजी रो डीकरो, अनेरो नहीं ओर।
वडो भाई छे मांहरो, निज पिता री ठोर ॥ २ ॥

आज पहिलां इण कुल मझे, इसडो न हूवो अकाज।
वडा भाई ने मारने, किणही न कीधो राज॥ ३॥
म्हां सगला भाया मे ओ पाटवी, रिषभदेवजी रो पाट।
जो घात करू हिवे एहनी, तो कुल मे पड जाये काट॥ ४॥
इणरे चक्ररत्न ऊपनो कहे, दीसे छे भागवान।
म्हां सगलां विचे ओ दीपतो, कुल मे दीवा समान॥ ५॥
इणने स्वयमेव रिषभदेवजी, दियो विनीता रो राज।
इणने मारने राज करूं इहां, ओतो मोटो अकाज॥ ६॥
म्हारो धेष हुतो इण ऊपरे, जब हू करतो थो घात।
हिवे इण ऊपर माहरो, धेष नही तिलमात॥ ७॥
इसडो मानव इण जगत मे, म्हे तो नयणा न दीठो।
सोम निजर सीतल अग छे, मुझ लागे मीठो॥ ८॥
इसडा नरिंद ने मारिया, वधे कर्मा रा जाल।
इण राज काजे इसडो अनर्थ करू, जीववो कितोएक काल॥ ९॥
इण भरत नरिंद ने मारण तणो, तेतो मुझने छे नेम।
पिण म्हे मूंठ उपाडी इणने मारवा, हेठी मेलू केम॥ १०॥
भाई अठाणू माह रे, त्या छोडे दियो राग।
सजम पाले छे रूडी रीत सू, सारे निज काज॥ ११।
पिण म्हे तो इण राग रे कारणे, माड्या कजिया ने राड।
वडाभाई ने माडलो म्हे मारवो, मुझने छे धिक्कार॥ १२॥
हू सुख जाणतो इण राज मे, ते सर्व धूर समान।
अनोपम एक जिन धर्म विना, जीतव अप्रमाण॥ १३॥
इण ससार असार मे, सुख नही मूल लिगार।
तो हिवे राज रमण रिध छोडने, लेऊ सजम भार॥ १४॥

●

दुहा

एहवी करे विचारणा, छाडी फिकर ने सोच।
गहणा वस्त्र उतारनें, पाच मुटी कियो लोच॥ १॥
अरिहत सिद्ध साधां भणी, भाव सहित कियो नमस्कार।
वेरागे मन आणनें, लीधो सजम भार॥ २॥
काउसग ठाय ऊभा तिहां, रह्या धर्म ध्यान ध्याय।
मन वचन काया वस किया, एका एक चित्त लगाय॥ ३॥

सेना सारी देखती रही, इचरज हूआ तिणवार।
तिहां भरत जी इम जाणियो, इण तो लीधो संजम भार॥ ४॥
इण जीती राडने छोडने, लीधो संजम भार।
इसडा विरला मानवी, इण ससार मझार॥ ५॥
हिवे बाहूवलजी ऊपरे, भरत रो मोह जाग्यो अत्यंत।
बाहूवलजी ने घर मे राखवा, कुण कुण करे विरतंत॥ ६॥

ढाल : १३

[बोले बालक बोल डारे]

बाहूवल चारित्र लियो जी, आणें मन वेराग।
भरतेश्वर इम विनवे जी, वार वार पाए लाग।
हरषधर बंधव बोलजो जी, थाने बावाजी री आण।
थानें रिषभदेवजी री आण, थें तो पडित चतुर सुजाण।
थे तो म करो खांचा ताण*॥ ह० १॥

थें जीता हूं हारियो जी, देव भरेसी साख।
थां सरिखा जग को नहीं जी, मुझ सरीखा जग लाख॥ २॥
आपे हिलमिल दोनूं बातां करी जी, जोवो आंख उघाड।
बोलो मीठा बोलडा जी, पूरो मन रा लाड॥ ३॥
बहुअर तणा ओलभडाजी, किम साभलसूं कान।
जातां पग बहे नही जी, थांने मेली रान॥ ४॥
थेईज म्हारे आतमां जी, थेईज म्हारे बांय।
दिसि सूनी भायां विनाजी, आवो ज्यूं घर जाय॥ ५॥
अठाणू एकण समे जी, मुझने लोभी जाण।
सहु ए दूरे परहर्या जी, जिम वरसाले छाण॥ ६॥
माथे सूरज आवियो जी, गरमी भीनो गात।
वेसी भोजन कीजिये जी, खारक दाखनि वात॥ ७॥
थे चारित्र ले ऊभा इहां जी, हिवे हू किण विध करूं राज।
म्हारी आछी न लागे लोक मे जी, तिणसूं राखो थे म्हारी लाज॥ ८॥
हिवे कृपा करो मो ऊपरे जी, सुखे करो थे राज।
आ अरज मांनों थे माहरी जी, तो चारित्र मत लो आज॥ ९॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

थें ठाकुर हूं सेवग थांरो जी, रहस्यूं आप हजूर।
ए वचन सांचो कर मानज्यो जी, तिणमें मूल नहीं छे कूड ॥ १० ॥
मोह तणे वस भरत जी रे, किया विलाप अनेक।
साचे मन कह्यो घणो जी, पिण बाहूबल न मानी एक ॥ ११ ॥
बोल घणाई बोलिया जी, भरतेश्वर नर राय।
पिण हाथीरा नीकल्या जी, ते किम पाछा थाय ॥ १२ ॥
साचे मन कीधी वीनती जी, भरतेश्वर राजान।
ते पिण मोक्षगामी छे इण भवे जी, जाणो पाचमी गति प्रधान ॥ १३ ॥

●

दुहा

प्रपंच किया अति भरतजी, पिण कारी न लागी काय।
मोह विलाप करे घणा, आया जिण दिसि जाय ॥ १ ॥
भरतजी तिहां थी गयां पछे, बाहूबल विचारयो मन मांय।
हूं रिषभ जिनंद रे आगले, किण विध जाऊं चलाय ॥ २ ॥
तिहां छोटा भाई छे मांहरा, म्हां पहली लियो संजम भार।
त्यांरा पग मोनें वादणा पड़े, ते हिवे रहूं एकलो न्यार ॥ ३ ॥
उतकष्टी करणी करे, करे कर्मां नो सोख।
त्यासूं भेलो हूआ विना, जाऊं परवारो मोख ॥ ४ ॥
एहवी ऊंधी करे विचारणा, गया अटवी में चलाय।
निर्दोषण जायगां जोयनें, काउसग दियो छे ठाय ॥ ५ ॥
वले आहार च्यारूंई पचखिया, एक वर्ष हुओ छे ताय।
तिण नगरी आया रिषभदेवजी, बाग माहे उतरिया आय ॥ ६ ॥
वाणी सुणने परषदा, आई जिण दिसि जाय।
तिण काले गणधरां पृछा करी, रिषभ जिनद पै आय ॥ ७ ॥

ढाल : १४

[म्हारा राजा ने धर्म सुणावजो]

हाथ जोडी विनती करे, मस्तक नीचो नमाय हो। स्वामी।
बाहूबलजी चारित्र लियो, ते गया छे किण ठाम हो। स्वामी।
म्हे अरज करां छां वीनती* ॥ १ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जब रिषभ जिनेश्वर इम कहे, सुण तूं चित्त लगाय हो। मुनिवर।
बाहूबल इण अटवी मझे, ऊभो काउसग ठाय हो। मु०।
ओ चढियो छे अति अभिमान मे॥ २॥
उण चारित्र ले मन चिंतवे, म्हारे छोटा अठाणू भाय हो।
त्यां चारित्र म्हां पहली लियो, त्याने किम वादूं जाय हो। मु०।
इसडो चढियो अभिमान मे॥ ३॥
एक वर्षी तप हुओ तेहने, ध्यावे निर्मल ध्यान हो। मु०।
मान बडाई रा जोगसूं, अटक्यो केवलज्ञान हो। मु०॥ ४॥
ए वचन ब्राह्मी सुंदरी सुणे, आई रिषभ जिनद रे पास हो। स्वामी।
हाथ जोडे वदणा करे, बोली वचन विमास हो। स्वामी॥ ५॥
जो कृपा करे दो आगन्यां, तो म्हे दोनूं जणी जाय हो। स्वामी।
बाहुबल ने समझायनें, आणा मारग ठाय हो। स्वामी॥ ६॥

●

दुहा

श्री रिषभ जिनेश्वर इम कहे, ज्यूं थानें सुख थाय।
पिण जोयां तो तिणनें न लाभसो, शब्द सुणायजो ताय॥ १॥
ए वचन सुणेने ब्राह्मी सुंदरी, विने सहित कियो प्रमाण।
चाली बाहुबल नें समझायवा, मन माहे उज्जम आण॥ २॥
ब्राह्मी सुंदरी दोनूं जणी, आई तिण झगी मझार।
बाहुबल नें समझायवा, गान गावे तिणवार॥ ३॥
गान गीत गावे छे किण विधे, किण विध आणे छे ठाय।
किण विध केवलज्ञान उपजे, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ४॥

ढाल : १५

[चंद्रगुप्त राजा सुणो]

वीरा म्हारा गज थकी ऊतरो, ब्राह्मी सुन्दरी इम गावे रे।
बाहुबल नें समझायवा, आमी साहमी झगी माहे धावे रे॥ १॥
थें राज रमण रिध परहरी, वले पुत्र त्रिया अनेको रे।
पिण गज नहिं छूटो ताहरो, तू मन माहे आण विवेको रे॥ २॥
वीरा म्हारा गज थकी ऊतरो, गज चढियां केवल न होयो रे।
आयो खोजो आपरो, तो तूं केवल जोयो रे॥ ३॥

बाहूबल नें समभायवा, ब्राह्मी सुंदरी इम भासे रे।
मोनें रिषभ जिनेश्वर मोकली, बाहुबल तो पासे रे॥ ४ ॥
ए वचन बाहुबल सामले, करवा लागो विचारो रे।
कुण वीरो कुण बहनडी, कुण कहे छे अटवी मभारो रे॥ ५ ॥
एतो बहन दीसे छे मांहरी, ब्राह्मी ने सुदरी दोयो रे।
रिषभ जिनंद मेली कहे, त्या तो चारित्र लीधो छे सोयो रे॥ ६ ॥
त्यांरे भूठ बोलण रो त्याग छे, ते इम किम बोले भासो रे।
कहे छे वीरा म्हारा गज थकी ऊतरो, तेतो गज नहिं छे म्हारे पासो रे॥ ७ ॥
यानें रिषभ जिनेश्वर मोकली, मोने समभावण ताई रे।
ए पिण भूठ बोले जिसी नही, कांयक घोचो दीसे मो माही रे॥ ८ ॥
ओगुण सूझ्यो आप मे, करवा लागो विचारो रे।
म्हें हय गय रथ सब परहस्या, पिण आयो मोने अहंकारो रे॥ ९ ॥
छोटा भाई अठाणू मांहरा, त्याने बांदूं नही सीस नामो रे।
इसडो अहमेव पणो मांहरो, ओ मोटो गज अभिमान तामो रे॥ १० ॥
गज बेठो तो जीवडो, मोख जाए कर्म कर सोखो रे।
पिण अहंकार गज चढियो थको, कोय न पोंहतो मोखो रे॥ ११ ॥
या पहिलां चारित्र लियो, त्याने बांदणा सीस नमाई रे।
दीक्षा बडा छे ते बडा, हिवे छोटा नही म्हारा भाई रे॥ १२ ॥
इतला दिन यासूं अलगो रह्यो, आतो म्हारे भोलप मोटी रे।
छोटा भाया नें बंदणा करूं नही, आ पिण विचारी म्हे खोटी रे॥ १३ ॥
हिवे तो या अठाणू भायां भणी, जाय वांदूं सीस नामी रे।
वारूंवार खमाऊं पगां लागनें, ज्यूं मिटे म्हारी सर्व खामी रे॥ १४ ॥
वेरागे मन वालियो, मूकी निज अभिमानो रे।
पाय उपाड्यो बांदवा, जब ऊपनो केवलज्ञानो रे॥ १५ ॥

●

दुहा

बाहूबलजी केवलज्ञान पामियो, ते ब्राह्मी सुदरी नो उपगार।
ए पिण दोनूं सतिया मोटकी, गुण रत्नां री भंडार॥ १ ॥
त्यांरो रूप घणो रलियामणो, अपछर रे उणियार।
जब ब्राह्मी तणो रूप देखने, भरतजी कियो छे मन मे विचार॥ २ ॥
अस्त्री रत्न थापूं एहने, सिरे थापूं अंतेवर मभार।
ए वचन सुणे ब्राह्मी सती, तपसा करी अंगीकार॥ ३ ॥

वेले वेले पारणो करे, रूप तणी करे छे हाण।
हिवे धुर सूं उतपत तेहनी कहूं, ते सुणजो चतुर सुजाण॥ ४ ॥

ढाल : १६

[समरूं मन हर्षे तेह सती]

रिखभ राजा रे राणी दोय हुई, सुमंगला सुनंदा जूई ए जूई।
दोनूंई दोय वेटी जाई, ब्राह्मी नें सुंदरी वेहूं वाई॥ १ ॥

ज्यां पूरव भव कीनी करणी, वेहूं री काया कोमल कंचन वरणी।
वले रूप में कमी नही काई॥ २ ॥

ते स्वारथ सिद्ध थी चव आई, भरत वाहूवल रे जोडे जाई।
वेहूं वायां रे हुवा सो भाई॥ ३ ॥

भरत वाहुवल दोय मोटा, वले भाई अठाणू हुवा छोटा।
चित्त में घणी ज्यांरे चतुराई॥ ४ ॥

ब्राह्मी रे हुवा निनाणू वीरा, जामण जाया अमोलक हीरा।
भरत चक्रवर्त्ति नी पदवी पाई॥ ५ ॥

सुन्दरी रे एक जामण जणियो, वाहूवल कला वहोत्तर भणियो।
पछे सुनंदा री कूख न खुली कांई॥ ६ ॥

चतुर वायां सीखी चोसठ कला, गुण ज्यांमें पडिया सगला।
त्यांरी अकल मे कुमी नही काई॥ ७ ॥

वेहूं वायां हुई वत्तीस लखणी, अठारे लिपि एक ब्राह्म भणी।
श्री आदि जिनेश्वर सीखाई॥ ८ ॥

एक सील रो स्वाद वस रह्यो मन मे, कदे विषेरी वात न तेवडी तन मे।
छांड दीधी ममता सुमता आई॥ ९ ॥

वेहूं वेटी वीनवे वापजी आगे, मोनें सील रो स्वाद वल्लभ लागे।
म्हारी मत करजो कोई सगाई॥ १० ॥

म्हें तो नारी किणरी नहीं वाजां, म्हें तो सासरा रो नाम लेती लाजां।
म्हारे पीतम री परवाह नही कांई॥ ११ ॥

वापजी वोल्या सुणो वेटी, थें तो मोह जाल ममता मेटी।
थांरी करणी मे कसर नही काई॥ १२ ॥

भरत नहीं लेवण देवे दीक्षा, ब्राह्मी सील तणी मांडी रक्षा।
रूप देखी भरत रे वंछा आई॥ १३ ॥

सती वेले वेले पारणो कीनों, एक लूखा अनपाणी मे लीनों।
फूल ज्यूं काया पडी कुमलाई॥ १४ ॥

भरत री विषे सूं जाणी मनसा, तिणसूं ब्राह्मी झाली तपसा।
साठ हजार बरस री गिणती आई ॥ १५ ॥
भरत छोड दीनी मन री ममता, सती रो सरीर देखीनें आई समता।
पछे दीपती दीक्षा दराई ॥ १६ ॥
बेहुं बाया रे बेराग घणो, बेहुं कुमारी किन्या नें लीधो साधुपणो।
बेहुं जिनमारग नें दीपाई ॥ १७ ॥
बेहूं रिषभदेव नीं हुई चेली, प्रभु बाहूबल पासे मेली।
सती समझायनें पाछी आई ॥ १८ ॥
त्यांरो वचन बाहूबल मान लीधो, जब मान तणो मरदन कीधो।
छोटा भाई वांदण री मन आई ॥ १९ ॥
सनमुख पग दीधो छोडी अभिमान, जब तुरत ऊपनों केवलज्ञान।
दोनूं बहनां रो गुण जाण्यों भाई ॥ २० ॥
सगली साधवियां में हुई रे सिरे, त्यांरा वचन अमोलक रत्न झरे।
त्यांरी बोली सगलां नें सुखदाई ॥ २१ ॥
घणा वरसां लगे चारित्र पाली, त्यां दोषण दूर दिया टाली।
त्यां घणा जीवां नें दिया समझाई ॥ २२ ॥
बेहूं बाया री जुगती जोडी, बेहूं मुगत गई आठूं कर्म तोडी।
चोरासी लाख पूरव आउ पाई ॥ २३ ॥

●

दुहा

हिवे माता श्री रिषभदेव नीं, तिण ध्याए निर्मल ध्यान।
हस्ती ऊपर बेठा मुगते गया, ते सुणो सुरत दे कान ॥ १ ॥

ढाल : १७

[स्वार्थ सिद्ध रे चंद्रवे]

नगरी विनीता भली विराजे, झिगमिग-झिगमिग सोहे जी।
कंचन माहें कोट विराजे, सुर नरनां मन मोहे जी।
कोड पूरव लग पामी साता, मोरादेवी माता जी ॥ १ ॥
आदिनाथजी आण ऊपनां, मोरादेवी रे पेटो जी।
जामण जुगमें हूआ चावा, ज्यां जायो रिषभ जिनेश्वर बेटो जी ॥ कोड २ ॥
सेज्या ऊपर बेठा सोभे, ताजा तकिया गादी जी।
भरत बाहूबल सरिषा पोता, ज्यांरी जगमें दीपे दादीजी ॥ ३ ॥

अठाणू बले नान्हा पोता, लुल लुल पाए लागे जी।
रूप अनोपम अवल विराजे, मुलकंता मुख आगेजी॥ ४॥
ब्राह्मी सुंदरी दोनूं पोती, रही अकन कुमारी जी।
मोटी सतियां मुगत पोहती, ज्यांरी जगमें सोभा भारी जी॥ ५॥
आदिनाथजी दीक्षा लीधी, पडियो पुत्र विजोगो जी।
तिण बेटा नें अति दुखियो जाणी, धरती घट में सोगो जी॥ ६॥
नगर विनीता प्रभू पधास्या, जब दीधी भरत बधाई जी।
हरषित थईने हाथी बेठा, पुत्र वांदण ने आई जी॥ ७॥
इंद्र इंद्राणी देवी देवता, नर नास्यांनां वृंदो जी।
समोसरण में साहिब बेठा, जिम तारां में चंदो जी॥ ८॥
तिहां देवदुन्दुभी देव बजावे, मन में हर्षज माने जी।
मारग में मोरादेवी रे, ते सब्द पड्या छे कानें जी॥ ९॥
ए सब्द सुणीनें मोरादेवीजी, पूछे भरत नें आमों जी।
ए मींठा शब्द गहर गंभीरा, बाजा बाजे किण ठामों जी॥ १०॥
जब कहे भरतजी समोसरण में, देवी देवता आवे जी।
श्री रिखभदेवजी री महिमा काजे, देव दुंदुभी देव बजावे जी॥ ११॥
हिवे मोरादेवीजी मन में चिंतवे, म्हे मोह कियो सर्व कूडो जी।
म्हें जाण्यो रिखभो दुखियो होसी, पिण ओ सुखियो दिसे पूरो जी॥ १२॥
म्हे तो इणरे काजे दुख वेद्यो, इण म्हारी कांय न आणी जी।
जब मा बेटां रो काचो सगपण, जाण लियो धूरधारी जी॥ १३॥
एकांत भावनां तिहांईज भायी, आयो मन वेरागो जी।
गृहस्थ नों भेष बिना पलटियां, किया सर्व सावद्य ना त्यागो जी॥ १४॥
जग तारणनें जुगती जामण, ध्यायो निर्मल ध्यानो जी।
मोहकर्म मोरादेवीजी जीता, पाम्यां केवल ज्ञानो जी॥ १५॥
इण चोवीसी में सगलां पहली, सिवनगरी में पेठा जी।
मोरादेवीजी मुगत पोंहता, हाथी होदे बेठा जी॥ १६॥
भावनां भाए कर्म काट्या, तपस्या मूल न कीधी जी।
सुखे समाधे मोरादेवी जी, अविचल पदवी लीधी जी॥ १७॥
आदिनाथजी उदर धरेनें, मुगत पोंहती माता जी।
सासता सुखांमें जाय विराज्या, करे कर्मानीं घाता जी॥ १८॥

●

दुहा

तिण मोरादेवी माता तणा, श्री रिषभदेवजी अंगजात ।
त्यांरा पुत्र भरतजी पाटवी, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ १ ॥
चक्ररत्न भरत रे ऊपनो, ते चाल्यो गगन आकाश ।
तिणनें भरतजी देखने, पाम्या छे अत्यत हुलास ॥ २ ॥
भरत नरिंद तिण अवसरे, मन मांहे कियो विचार ।
छ खंड मांहे आण मनावणी, ढील न करणी लिगार ॥ ३ ॥
हिवे तिण अवसर विनीता मझे, कुण कुण साथ सामान ।
वले कुण कुण रिध आवे मिली, ते सुणो सुरत दे कान ॥ ४ ॥

ढाल : १८

[चतुर नर जोवो कर्म वि०]

जीहो सोले सहंस देवता तिहा, आया भरत नरिंद री हजूर ।
जीहो सनाह बंध सजिया थका, आय ऊभा छे कडा चूंड । भरतेश्वर ।
पुन्न तणा फल जाण* ॥ १ ॥
जीहो दोय सहंस तो देवता, दोनूंई पासे रहे छे ताम ।
जीहो ते रक्षा करे सेवग थंका, भरत नरिंद री ठाम ठाम ॥ २ ॥
जीहो चवदे सहंस देवता, रहे चवदे रत्नां रे पास ।
जीहो ते रक्षाकारी छे तेहनां, त्याने साताकारी छे तास ॥ ३ ॥
जीहो चवदे हजार देवता सहू, रहे चवदे रत्ना री लार ।
जीहो ते सारा सेवग भरतजी तणा, भरतजी नां छे आज्ञाकार ॥ ४ ॥
जीहो चवदे रत्नां रे अधिष्ठायका, तेतो देवता चवदे हजार ।
जीहो ते भरतजी नी आज्ञा थकी, आज्ञा विना न रहे लिगार ॥ ५ ॥
जीहो तेरे रत्न तो आए मिल्या, विनीता नगरी मझार ।
जीहो अस्त्री रत्न पिता घरे, वैताढ्य नें पेले पार ॥ ६ ॥
जीहो अस्त्री रत्न पिता घरे, त्यां लग देवता नही तिण पास ।
जीहो भरत ने आण सूंप्या पछे, देवता रक्षा करसी तास ॥ ७ ॥
जीहो वैताढ्य पर्वत मूल तेहने, अश्वरत्न ऊपनों जाण ।
जीहो तिण अश्वरत्न नें देवता, हाजर कीधो भरतजी नें आण ॥ ८ ॥
जीहो गजरत्न पिण ऊपनों, ते पिण वैताढ्य मूल पास ।
जीहो तिण गजरत्न ने देवता, आण सूंप्यो भरतजी ने तास ॥ ९ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

जीहो चर्म मणी नें कांगणी, ए तीनूंई रत्न श्रीकार।
जीहो ते ऊपनां श्री घरने विषे, ते घर नव निधान मझार ॥ १० ॥
जीहो यां तीनूंई रत्न भणी, तिहां थी देवता लेई आया छे तास।
जीहो ते आण सूंप्या भरतजी भणी, करे घणी अरदास ॥ ११ ॥
जीहो चक्ररत्न नें छत्र रत्न, दंड नें असि रत्न बखाण।
जीहो ए च्यारूं रत्न तो ऊपनां, आयुधशाला मांहे आण ॥ १२ ॥
जीहो तेरे रत्न अस्त्री बिना, आपरे वस हुआ जाण।
जीहो वस हुवा सोले सहस देवता, तेतो हाजर ऊभा छे आण ॥ १३ ॥
जीहो हस्ती घोडा रथ छे जुआ-जुआ, लख चोरासी चोरासी प्रमाण।
जीहो पायक छिनूं कोड जेहने, इतरी सेना घरा घरू जाण ॥ १४ ॥
जीहो सुखे समाधे दिन नीकले, भोग मांहे लवलीन।
जीहो भरत नरिंद राजद रे, साथे आई बधाई तीन ॥ १५ ॥
जीहो रिषभदेवजी ने केवल ऊपनों, चक्ररत्न ऊपनो आयुधसाल।
जीहो पोतो हूवो घरे आप रे, तीनूं आई बधाई समकाल ॥ १६ ॥
जीहो रिषभदेवजी ने ऊपनों, रूडो केवलज्ञान अनूप।
जीहो पहली बधाई दीधी तेहने, घणा महोच्छव किया धर चूंप ॥ १७ ॥
जीहो पोतो हुवो घरे आप रे, तिणने पछे बधाई दीध।
जीहो जन्म महोच्छव तेहना, मोटे मडाण सूं कीध ॥ १८ ॥
जीहो चक्ररत्न ऊपना तणी, सेवग दीधी बधाई आण।
जीहो पछे दीधी बधाई तेहने, महोच्छव किया छे मोटे मडाण ॥ १९ ॥
जीहो रिघ जठी तठी थी आए मिली, ते पुन्न तणे परमाण।
जीहो भरत नरिंद राजेद ने, पूरव तप तणा फल जाण ॥ २० ॥
जीहो आ रिघ संपत भरतजी तणे, मिली छे विनीता में आंण।
जीहो हिवे छ खंड साजेवा भणी, निकले छे मोटे मंडाण ॥ २१ ॥
जीहो पोतानां बल पराक्रम करी, लेसी छ खड नें जीत।
जीहो सेनादिक साथे लेजावसी, तेतो मोटा राजा री छे रीत।
भरतेस्वर पुन्न तणा फल जाण ॥ २२ ॥
जीहो पूरव तप प्रभाव थी, मिलसी सगलाई थोक।
जीहो वले संजम ले तपसा करे, इणहिज भव जासी मोख ॥ २३ ॥

●

दुहा

हिवे सेनापति ने बोलायनें, कहे छे भरत राजान।
पटहस्ती रत्न सिणगार ने, सज कीजो सावधान॥ १ ॥
वले घोडा हाथ रथ सुभट नें, सज करो सताब सूं जाय।
चउरगिणी सेना सिणगार नें, पाछी आज्ञा सूंपी आय॥ २ ॥
सेवग सुण तिमहिज कियो, पाछी आज्ञा सूंपी आय।
जब भरत नरिंद तिण अवसरे, आया मंजण घर मांय॥ ३ ॥
स्नान मर्दन दोनूं किया, सर्व आगे कह्यो तिम जाण।
मोले करे मुंहघा घणा, एहवा पेहस्या आभूषण आण॥ ४ ॥
मजण घर थी नीकल्या, लोक दीठां पामे आनद।
जाणे बादल मांसूं नीकल्यो, रज रहित पूनम रो चंद॥ ५ ॥
घणा सुभट सेनाकर परवस्यो, विरुदावलियां बोलावतो रसाल।
मोटे मंडाणे कर नीकल्यो, आयो छे उवठाण साल॥ ६ ॥

●

ढाल : १६

[वे वे रे मुनिवर वेहरण पांगर्या]

भरतजी पटहस्ती ऊपर चढ्या रे, छत्र धरावे मस्तक तास रे।
ते सकोरंट फूलां री माला सहित छे रे, चमर बींजावे दोनूं पास रे।
भरतजी चाल्या छे छ खड साधवा रे* ॥ १ ॥
त्यांरो हारां करने हिवडो सोभतो रे, कानां मे कुंडल करे उद्योत रे।
मस्तक मुगट छे त्यारे दीपतो रे, जाणे लागे रहि झिगामिग जोत रे॥ २ ॥
चउरगिणी सेना लेईने नीकल्या रे, मोटा सुभटा नें लीधा साथ रे।
विनीता नगरी विचे होय नीकल्या रे, भरत नरिंद छ खंडनो नाथ रे॥ ३ ॥
मंगलीक शब्द तिणनें बोलावता रे, अनेक नर चाले त्यांरे लार रे।
वले जय जय शब्द लोक मुख उच्चरे रे, ते घणो हर्ष छे हिया मझार रे॥ ४ ॥
त्यारे दोय सहंस अदिष्ट देवता रे, सेवग थका रहे हजूर रे।
त्यां देवता सहित भरतजी परवस्या रे, त्यारे पुन्न तणो सचो छे पूर रे॥ ५ ॥
वेसमण देव तणी परे शोभतो रे, इंद्र सरिखी रिद्धी वखाण रे।
इण लोक में यश कीर्त्ति अति विस्तरी रे, बुधिवंत डाहो छे चतुर सुजाण रे॥ ६ ॥

१—यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

गंगा नदी रे दक्षिण कूल ना रे, गामां नगरादिक सगले ठाम रे।
त्यां सगला राजां नें पगे लगायने रे, आण मनाई छे सगले ताम रे॥ ७॥
सम्यक प्रकारे सर्व राजां भणी रे, जीती जीती ने आघो जाय रे।
त्यारो श्रेष्ट रत्नां रो भारी भेटणो रे, ले लेनें आघो चाल्यो ताय रे॥ ८॥
केडे केडे चक्ररत्न तणे रे, एक एक जोजन आंतरे ताम रे।
कटकरो कूच करे इण रीतसूं रे, सुखे सुखे लेता विश्राम रे॥ ९॥
इण विध चक्र नें सेना चालती रे, मागध तीरथ साहमां जाय रे।
तिण तीरथ सूं नहिं नेरा नहिं ढूंकडा रे, चलिया आया छे ताय रे॥ १०॥
लांबपणे बारे जोजन तणो रे, पहुलो नव जोजन रे परमाण रे।
एहवो कोई नगर हुवे रलियामणो रे, तिम विजय कटक ऊतर्यो जाण रे॥ ११॥
वढईरत्न बोलावी इम कहे रे, वेगा कर म्हारे आज आवास रे।
पोपधसाल सहित करने वेगसूं रे, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपो मो पास रे॥ १२॥
वढईरत्न सुणे हरष्यो घणो रे, वचन कर लीधो तिण परमाण रे।
भरतजी कह्यो तिम सगलो करी रे, आज्ञा पाछी सूंपी आण रे॥ १३॥
जब भरतजी हस्तीरत्न थी ऊतरी रे, आया छे पोषधसाला मांय रे।
मागध तीरथ कुमार ने कारणे रे, तेलो कियो तिण ठामे आय रे॥ १४॥
तीन दिन पूरा हूआं थकां रे, निकल्या छे पोषधसाला बार रे।
उवठाण साला आयनें भरतजी रे, सेवक ने बोलाय कहे तिणवार रे॥ १५॥
चउरगिणी सेना नें तूं सभ्करी रे, चाउघट रथ ने सिणगारे जाय रे।
तिण रथ रे घोडा जोतरनें सजकरी रे, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपे आय रे॥ १६॥
जे जे हुकुम करे सेवग भणी रे, ते सेवग करे हर्षसूं काम रे।
ते पूरव तप तणा फल जाणजो रे, वले तप कर जासी अविचल ठाम रे॥ १७॥

●

दुहा

इम कहे सेवग पुरुष नें, मंजण घर में कियो प्रवेश।
स्नान मर्दन करे भरतजी, पहर्या भूषण अधिक वशेस॥ १॥
मंजण घर मांहि थी नीकल्या, मन माहे अधिक आणंद।
जाणे बादल मांहि थी नीकल्यो, रज रहित पूनम रो चंद॥ २॥
हय गय रथ परवर्यो थको, साथे वडा वडा जोध भूपाल।
चउरंगणी सेना सहित सूं, आयो उवठाण साल॥ ३॥
जिहां चाउ घंट अश्वरत्न तिहां, तिण ऊपर बेठो आय।
चउरंगणी सेना सहित सूं, आघा चाल्या भरत महाराय॥ ४॥

बडा बडा जोध वृन्द सूं, वीट्यो थको नरिंद।
चक्ररत्न देखाले मारग चालतो, मन मांहे अधिक आणद ॥ ५ ॥
अनेक राजा रा वृंद लारे चालता, सीह जिम नाद करंत।
होय रह्या कलकल शब्द हर्ष नां, समुद्र किल्लोल जेम गूंजंत ॥ ६ ॥
पूरव दिसि मागध तीरथ तिहां, लवण समुद्र में कियो प्रवेश।
रथ धुरी भीजे समुद्र मे तिहां, रथ ऊभो राख्यो नरेश ॥ ७ ॥
मागध तीर्थ कुमार देवता भणी, पाय नमावण कान्डा।
वले आण नमावण तेहने, उद्यम करे छे भरत महाराज ॥ ८ ॥

ढाल : २०

[भवि जीवां तुम जिन धर्म सांभलो]

हिवे भरतजी धनुष हाथे लियो, मन मांहे रे आणी अधिक हुलास।
ऊगतो चंद्रमा ने इंद्र धनुप नो, तिण सरिखो रे धनुष तणो प्रकाश।
हिवे भरतजी नमावे देवी देवता* ॥ १ ॥
जेहवी किरण नवी विजली तणी, तेहवी किरणा रे तिण धनुष री जाण।
तिणरे तपाया सोवन तणा बध छे, तिण माहे रे रूडा चिह्न पिछाण ॥ २ ॥
केसरी सिंघ नां केस जेहवा, वले चमरी रे गाय नां केश जाण।
एहवा लक्षण छे तिण धनुप मे, तिणरी जीवा रे दिढ अत्यत वखाण ॥ ३ ॥
मणि रत्न तणी घट जालिका, तिण करने रे धनुप वीट्यो रह्यो ताय।
तिणरो विस्तार सूत्र मे कह्यो घणो, एहवो धनुष रे हाथे लियो छे राय ॥ ४ ॥
वले बाण हाथे लियो भरतजी, तिणरा छेहडा रे बेहू वज्र मे जाण।
वज्रसार सरिखो मुख जेहनो, कचन मे रे बांध्यो बाण वखाण ॥ ५ ॥
मणि चंद्रकातादिक रत्न मे, घणो निर्मल रे वाण शोभे रह्यो ताहि।
अनेक प्रकारना मणि रत्न मे, भांता चित्री रे तिण वाण रे मांहि ॥ ६ ।
निज नाम चित्र्यो तिण वाण मे, तिणनें लीधो रे भरतजी हाथ माहि।
गोडीवाल वेसीनें वाण ताणियो, काना लग रे आण्यो ताणीनें ताहि ॥ ७ ॥
हिवे मुख सू कहे छे भरतजी, नाग असुरादिक हो म्हारी सीम रे वार।
जे कोई वाण अधिष्ठायक देवता, तेहनें प्रणमूं हो करे नमस्कार ॥ ८ ॥
वले बाण अधिष्ठायक देवता, नाग असुर हो वले सोवन कुमार।
म्हारी सीमवासी सर्व देवता, साहज करजो हो मोने थे इण वार ॥ ९ ॥

*यह आकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

धनुष छे पंचमी चंद्रमा जिसो, बिजली जिम हो तिणरी क्रांत छेताय।
एहवो धनुष छे डावे हाथ तेहनें, बाण मूंक्यो होमागध तीरथ साह्मो राय॥१०॥
बाण गयो छे शीघ्र उतावलो, बारे जोजन हो ततकाल मे जाय।
मागध तीर्थ नां अधिपति देवता, बाण पडियो हो त्यारा भवन रे माय॥ ११॥
ते बाण पड्यो देखी देवता, असुर ते हो कोप चढियो ततकाल।
तीन लीटी निलाड रे चाढने, क्रोध वस रे बोले वचन विकराल॥ १२॥
ओ तो अपत्थ पत्थियो दुष्ट कुण अछे, हीण चउदस रे अमावस जायो ताहि।
ते लज्जा नें लिखमी रहित छे, बाण म्हांख्यो रे म्हारा भवन रे माहि॥ १३॥
एतो बाण भरतेश्वर चलावियो, तेतो जाणे रे ससार नो तमास।
ते पिण छोड चारित्र चोखो पाळनें, मोख जासी रे काटे कर्मा री रास॥ १४॥

दुहा

सिंघासण सूं ऊठनें देवता, बाण पड्यो तिहां आय।
तिण बाण लियो छे हाथ में, नाम वांचे निरणो कियो ताय॥ १॥
हिवे अध्यवसाय मन ऊपनो, विचार कियो मन माय।
जंबूद्वीप नां भरतेश्वर मझे, चक्रवर्ती ऊपनो आय॥ २॥
तो जीत आचार छे माहरो, तीनूंई काल मझार।
मागध तीर्थ कुमार देवता तणो, भेटणो देवो छे इण वार॥ ३॥
तिण कारण हूं पिण जाऊं तिहां, भरत राजा रे पास।
भेटणो मुख आगल मूंकनें, विने सहित करू अरदास॥ ४॥
एहवी करे विचारणा, हार मुगट कुंडल लिया हाथ।
हाथां नें कडा बाहां ने बहरखा, वले वस्त्र आभरण लिया साथ॥ ५॥
नामांकित बाण लियो हाथ मे, मागध तीर्थ पाणी लियो तास।
उतकष्टी देव गति चालनें, आयो भरत नरिंद्र रे पास॥ ६॥
आकाशे ऊभो रह्यो, नान्ही घूघरी करनें सहीत।
रूडा वस्त्र आभूषण पहरणे, विने सहित बोले रूडी रीत॥ ७॥

ढाल : २१

[मृगा पुत्र गोखां रत्न जड़ाय हो म्हारा राज कु०]

दोनूं हाथ जोडी आवरतन करी राजदमोरा, दोनूं मस्तक चढाई ताम हो।
विने सहित शीप नमाय नें राजद मोरा, करवा लागो गुण ग्राम हो।
रे मुझ पुन्नवंत राजवी राजंद मोरा, भागवली भूपाल हो॥ १॥

वेरी जीता नही त्याने जीतजो रा०, जीतांरी कीजो प्रतिपाल हो।
जय विजय होजो स्वामी तुम तणी रा०, करजो थे राज विसाल हो ॥ २ ॥
जय विजय करेने बधायनें रा०, छ खड रा सिरदार हो।
वले विरुदावली बोले घणी रा०, वेर्‍यां ना मर्दन हार हो ॥ ३ ॥
पूरब दिसि मागध तीरथ तणो रा०, तुम देस तणो वसवान हो।
हूं मागध कुमार छूं देवता रा०, आयो हू छोडे अभिमान हो ॥ ४ ॥
हू किंकर छू आपरो रा०, सेवग छूं आज्ञाकार हो।
हूं पूर्व दिसि ना अतनो रुखवाल छूं रा०, विघ्न निवारणहार हो ॥ ५ ॥
जे केई दुष्ट छे देवी देवता रा०, दुख दे लोकां ने आय हो।
मार मिरगी रोगादिक फेलाय दे रा०, ते करवा न देसूं अन्याय हो ॥ ६ ॥
उपसर्ग देवादिक ना ऊपजे रा०, त्यांरो हू मेटणहार हो।
हू तो कोटवाल छू आपरो रा०, पूरव दिसि मझार हो ॥ ७ ॥
हू उत्तम पुरुष आया जाणने रा०, भेटणो ल्यायो तुम पास हो।
ते म्हे आप तणे कारणे रा०, तुम पाय मूंकू छूं तास हो ॥ ८ ॥
हार मुगुट कु डल कान ने रा०, कडा हाथा नां जाण हो।
वाहा ने पहरण बहरखा रा०, वस्त्र देवदुष्य वखाण हो ॥ ९ ॥
ओर आभरण वले आपिया रा०, नामाकित निज बाण हो।
ओ पाणी छे मागध तीरथ तणो रा०, राज अभिषेक पिछाण हो ॥ १० ॥
इतरा वाना सर्व आगल धरी रा०, वोल्यो छे जोडी हाथ हो।
आप करो अगीकार तेहने रा०, करो मोने आप सनाथ हो ॥ ११ ॥
भरत नरिंद्र देवता तणो रा०, भेटणो कियो अगीकार हो।
जब मागध तीर्थ कुमार देवता रा०, हुवो छे हर्ष अपार हो ॥ १२ ॥
मागध कुमार देव सेवग थयो रा०, पूरव तप फल जाण हो।
त्यांने ज्ञान सूं जाणे भरतजी रा०, ए रिध सर्व धूर समाण हो ॥ १३ ॥

दुहा

मागध कुमार देवता भणी, घणो सत्कार दे सनमान।
सीख दीधी छे तेहनें, भरतेश्वर राजान ॥ १ ॥
आण मनाय देवता भणी, रथ पाछो फेर्‍यो ताम।
लवण समुद्र पाछा ऊतर्‍या, आया विजय कटक तिण ठाम ॥ २ ॥
उवठाण साला तिहा आयने, रथ ऊभो राख्यो ताहि।
तिण रथ थी हेठा ऊतरी, गया मंजण घर माहिं ॥ ३ ॥

स्नान मर्दन कियो तहा, आगे कह्यो तिम सगलोई जाण।
पछे भोजन मंडप मे जायने, पारणो कीधो छे आण ॥ ४ ॥
भोजन कर तिहां थी नीकल्या, फेर आया उवठाण साल।
तिहा वेठा सिघासण ऊपरे, श्रेणी प्रश्रेणी तेड्या तिणकाल ॥ ५ ॥
मागध तीर्थ कुमार नामे देवता, ते नमियो छे मुझ आय।
आठ दिवस महोच्छव करे, मांहरी आज्ञा पाछी सूंपो ताय ॥ ६ ॥
ए वचन सुणेने हरखिया, श्रेणी प्रश्रेणी ताम।
तिहां थी पाछा नीकल्या, महोच्छव करे ठाम-ठाम ॥ ७ ॥
अठाई महोच्छव पूरा हूआ, चक्ररत्न तिण वार।
आयुधसाला थी बाहिर नीकल्यो, चाल्यो नेरत कूण मझार ॥ ८ ॥

ढाल : २२

[थे तो जीव दया धर्म पालो]

चक्ररत्न ने आकाशे देखो रे, भरतजी हुआ हर्ष विशेखो।
मागध तीर्थ देव ने आपो रे, तिणनें निज सेवग थापो ॥ १ ॥
वरदाम तीर्थ साजण कामो रे, सेवग ने तेडी कहे आमो।
घोडा हाथी रथ पायक ताह्यो रे, चोरगिणी सेना सज जायो ॥ २ ॥
पटहस्ती सिणगार तूं जायो रे, कहिने पेठा मजण घर मांह्यो।
स्नान करे नीकल्यो नरिंद्रो रे, जाणे निर्मल पूनम रो चंदो ॥ ३ ॥
मस्तक छत्र धरावे रे, दोनूं पासे चमर वीजावे।
पाछे कह्यो छे तिम सर्व जाणो रे, नीकलियो छे मोटे मडाणो ॥ ४ ॥
घणा सुभटां रे वृंदो रे, वीट्यो थको भरत नरिंदो।
केकांरे हस्त छे खडग भारी रे, केकांरे तरवार उघाडी ॥ ५ ॥
केकारे हस्त मे छे बाणो रे, केकारे हस्त धनुप पिछाणो।
केकारे हाथ फरसी विख्यातो रे, केकारे त्रिशूल छे हाथो ॥ ६ ॥
इत्यादिक शस्त्र अनेको रे, तेतो पूरा न कह्या छे विशेखो।
त्यारो जूओ जूओ वर्णन पिछाणो रे, जबूद्वीप पन्नति सूं जाणो ॥ ७ ॥
ध्वजा पताका अनेक विख्यातो रे, जूआ जूआ लिया हाथो।
सीहनाद ज्यूं बोले सूरा रे, ते तो हर्ष विनोद मे पूरा ॥ ८ ॥
घोडा कर रह्या छे हीसारा रे, त्यांरा शब्द लागा छे प्यारा।
हस्ती गुलगुलाट करता रे, ते अवर जेम गाजता ॥ ९ ॥
रथ करे रह्या घणा घणाटो रे, त्यारा अनेक मिलिया छे थाटो।
वाजा विविध प्रकार नां बाजे रे, जाणे आकाशे अवर गाजे ॥ १० ॥

रूडा रूडा शब्द प्रचंडो रे, ते पूरतो चाले ब्रह्मंडो।
बल वाहण समुदाय छे वृंदो रे, तिण सहित चाले नरिंदो ॥ ११ ॥
हजारा गमे देवता साथो रे, परवर्‍यो थको नरनाथो रे।
वेसमण देवता ज्यू रिधवानो रे, जिम रिधवत भरत राजानो ॥ १२ ॥
सक्रेंद्र तणी रिध भारी रे, जेहवी रिध छे भरत राजा री।
जश कीर्ति रही छे फेलो रे, ओ तो हुवो छे चक्रवर्त पहेलो ॥ १३ ॥
गामा नगरादिक साराने रे, आण मनाव तो राजा ने।
त्यारा भेटणा लेतो लेतो ताह्यो रे, इणरीत सूं चलियो जायो ॥ १४ ॥
तिणरे हर्ष घणो मन माह्यो रे, पूरव पुन्न तणो पसायो।
पिण जाणे छे अतरंग मे फोको रे, सर्व छोडनें जासी मोखो ॥ १५ ॥

दुहा

इण विधि चक्र ने सेना चालती, वरदाम तीर्थ साह्मा जाय।
तिहा थी नहि दूरा नहि ढूकडा, चलिया चलिया आयो छे ताय ॥ १ ॥
वढईरत्न ने बोलायनें, कहे छे भरत महाराय।
आवास करो सताब सू, म्हारे पोषधसाल बणाय ॥ २ ॥
ए कारज करेने माहरी, आज्ञा सूपो आय।
ते वढईरत्न छे केहवो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ३ ॥

ढाल : २३

[विनारा भाव सुण सुण गूजे]

गाम नगरादिक सन्निवेस, वसावण विधसूं विशेस।
खधावार कटक नो उतार, त्यारी विधि रो जाणणहार ॥ १ ॥
घर हाटनी श्रेणि सु रीत, त्यारा विभाग जाणे रूडी रीत।
त्यारा गुण अवगुण री पिछाण, इक्यासी पद रूप रो जाण ॥ २ ॥
पेंतालीस देव रा निवेस, त्यारी भूमिका विधि विशेस।
निवेस ते घर रूप पिछाणो, त्यांरी सगली विधि रो छे जाणो ॥ ३ ॥
महल प्रसाद ने आवास, गढ कोटादिक निवास।
रसोडादिक साला अनेक, त्यांरो सगलोई जाणे विवेक ॥ ४ ॥
काष्ठादिक नां गुण पिछाणे, त्यानें छेद्यां भेद्या गुण अवगुण जाणे।
जल मध्ये घरादिक कर जाणे, त्यारा गुण अवगुण लखण पिछाणे ॥ ५ ॥

पाणी ऊपर प्रवहण चाले, पाट पाटलादिक कर घाले।
जंत्र घरटियादिक अनेक, ते पिण करवारी बुद्धि विशेख ॥ ६ ॥
इण काले घरादिक कीजे, इण काले घरादिक न कीजे।
इण काल कीधो आछो थाय, इण काले कीधो भूंडो होय जाय ॥ ७ ॥
जिण काले जे जे करणो, ते पिण जाणे छे निरणो।
इसरो काल तणो छे जाण, शब्द शास्त्र मे चतुर सुजाण ॥ ८ ॥
विरख वेलडी ने जाणे, गुण अवगुण त्यांरा पिछाणे।
त्यांने निपजाय जाणे छे ताहि, ते पिण कला घणी तिण माहिं ॥ ९ ॥
सोले प्रसाद करवा ने ताहि, चतुराई घणी तिण मांहिं।
त्यारा लखण गुणा री विधि रूडी, ते पिण जाणे सर्व पूरी ॥ १० ॥
वले वास्तुक शास्त्र मांहिं, चोसठ विकल्प कह्या छे ताहि।
त्यारो पिण जाण पिछाण, एहवो छे चतुर सुजाण ॥ ११ ॥
नंदा वर्त्त ने वर्द्धमान जाण, स्वस्तिक तीजो वखाण।
ए तीनूंई साथिया जात एह, त्यांरा गुण अवगुण जाणे तेह ॥ १२ ॥
एक थंभो घर कर जाणे तेह, देवादिक घर कर जाणे एह।
वाहन सिविकादिक अनेक, त्याने करवाने कुशल विशेख ॥ १३ ॥
इत्यादिक गुण अथायो, वढईरत्न तिण माह्यो।
ओ तो थलपति रत्न छे रूडो, अगाढ गुण कर पूरो ॥ १४ ॥
सहंस देवता तिणरे पास, अधिष्ठायक रहे छे तास।
तिणरा कारज ने साहज कारी, सेवग जिम काम करवाने त्यारी ॥ १५ ॥
तिण पूरव पुन्न उपाया, इण भव माहे उदे आया।
ते सगलां ने लागे हितकारी, इसडो वढईरत्न छे भारी ॥ १६ ॥
तिणरो अधिपति भरत नरिंद, जाणे पूनम केरो चंद।
तिण पाल्यो तप सजम अगाधो, तिणसूं इसडो रत्न तिण लाधो ॥ १७ ॥
ते हाथ जोडी बोले आम, मोने फुरमावो काम।
इसडो छे आज्ञाकारी, कारज पलायां भरत हुवो त्यारी ॥ १८ ॥
ते वढईरत्न तिण ठाम, कटक उतास्यो छे ताम।
पोषधसाल सहित आवास, लोका ने रहिवाना घर तास ॥ १९ ॥
एक मुहूर्त्त में त्यारी कीधा, मन चिंतव्या देवा कर दीधा।
सर्व कारज करे ने ताय, पाछी आज्ञा सूंपी आय ॥ २० ॥
ते भरतजी सुणनें हरखे, पाप लागांसूं मन माहे धडके।
त्या सगलां नें छोडे होसी न्यारो, इणभव जासी मोक्ष मझारो ॥ २१ ॥

दुहा

बढईरत्न आज्ञा सूंप्यां थका, गया मजण घर माय।
मजण कर उवठाण साल आविया, पाछे कह्यो तिण रीत सूं राय॥ १॥
जिहां चाउघट अश्वरथ अछे, तिण ऊपर बेठो भरत राजान।
तिण रथ तणो वर्णन करूं, सुणो सुरत दे कान॥ २॥

ढाल : २४

[रे जीव मोह अनुकंपा न आणीये]

धरती ऊपर छे तिणरो चालवो, तिणरी चाल उतावली जाण रे।
रूडा रूडा लक्षण अनेक छे, ते विविध प्रकारे वखाण रे।
एहवो रथ छे भरत नरिंद्रनो* ॥ १॥
हेमवंत पर्वत छे तेहनो, मध्य भाग गुफा छे ताम रे।
वायु रहित तिहां वृद्धी पामियो, विरख मोटा हुआ तिण ठाम रे॥ २॥
विचित्र प्रकार नां वृक्ष त्या तणा, त्यारा काष्ठ अत्यत वखाण रे।
तिण काष्ठ मे रथ सुलक्षगो, तिणने घडियो छे चतुर सुजाण रे॥ ३॥
जांबूनद सुवर्ण मे भूखणा, रूडी परे घड्या छे ताय रे।
कनक माहे अरा अति दीपता, त्यानें दीठाई नयण ठराय रे॥ ४॥
पुलकरत्न नें वर इद्ररत्न सूं, नीलसीसक रत्न वखाण रे।
प्रवाली नें स्फटिक रत्न सूं, श्रेष्ट रत्न ने लेष्ट पिछाण रे॥ ५॥
मणिचद्र कांतादिक रत्न सू, इत्यादिक रत्न अनेक रे।
त्यां करनें अरा रत्नां तणा, विभूषित किया छे विशेख रे॥ ६॥
अडतालीस अरा रचिया तिहा, दिशि दिशि प्रते अरा वार वार रे।
तपनीक रक्त सोवन तणा, पाटिया जडिया श्रीकार रे॥ ७॥
तिणसूं दिढ कीधा छे जुगत सू, तूबडो ते नाभ वखाण रे।
त्यारा छेहडा घटारव्या अति घणा, रूडी रीत सूं थापी जाण रे॥ ८॥
नवा काष्ठ नां रूडा पाटियां तणी, त्यांरी चक्रपूठी छे ताम रे।
विशिष्ट नवो लोह तेहनो, बंधण वाध्यो छे तिण ठाम रे॥ ९॥
वासुदेव तणो चक्ररत्न छे, तिण सरीखा पईडा छे अनूप रे।
त्यानें घडिया चतुर कारीगरां, त्यां चतुराई सूं कर कर चूंप रे॥ १०॥
करकेतन नीलक सासक, ए तीनूं जातरा रत्न वखाण रे।
त्यामे बांध्यो छे रूडी रीत सूं, रच्या छे रूडे सठाण रे॥ ११॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

बांध्यो छे जालियां रा समुदाय थी, जालियां नी श्रेणी अनेक रे।
विस्तीरण पसत्थ रूडी परे, पूंघी छे धुरी तिणरी विशेख रे॥ १२॥
शोभनीक क्रांति छे तेहनी, रक्त सुवर्ण मे जोत वखाण रे।
शस्त्र थाप्या छे तिण रथ मझे, प्रहरणा करी भरिया जाण रे॥ १३॥
खडग बाण सक्ति त्रिसूलादिक, शस्त्रना भाथडा छे बतीस रे।
त्या शस्त्रा करीने मंडित छे घणु, रथ सोभे रह्यो विश्वावीस रे॥ १४॥
कनकरत्न मे चित्राम छे, त्यारी लागी झिगामिग जोत रे।
तिण रथ रे अश्व जोतस्था, उज्जला श्वेत करता उद्योत रे॥ १५॥
मालती फूलां री माला उज्जली, उज्जलो चंद्रमां नो उजास रे।
वले उज्जलो हार मोत्यां तणो, एहवो घोडा तणो प्रकाश रे॥ १६॥
जेहवो मन छे चपल देवता तणो, वाउ वेग तणी परे जाण रे।
तेहवी शीघ्र चाल घोडा तणी, ते सूत्र मे नहीं प्रमाण रे॥ १७॥
च्यार चामर करने शोभता, कनक करे विभूषित अग रे।
विविध प्रकारनां गहणा करी, सिणगारने किया सुचंग रे॥ १८॥
एहवा अश्व रथ रे जोतस्था, छत्र करने सहित रथ जाण रे।
ध्वजा घंटा पताका सहित छे, शोभे पोता पोता रे ठिकाण रे॥ १९॥
माहोमा सधि मेली रूडी परे, सग्रामीक रथ श्रीकार रे।
गभीर वाजंत्र शब्द सारिखो, तिणरो ऊठे शब्द गुँजार रे॥ २०॥
वर प्रधान तिणरी पीजणी, रूडा तिणरा पइडा वखाण रे।
वर प्रधान द्रोला वीटे रही, धारा वृत्त चक्र पणे जाण रे॥ २१॥
वर प्रधान धारा ना छेहडा, कंचनकरी विभूषित ताय रे।
वज्र रत्न सूं बांधी नाभ ने, चतुर कारीगर आय रे॥ २२॥
वर प्रधान तिणरो सारथी, रूडी परे ग्रही जातो तेह रे।
वर प्रधान पुरुष भरतजी, वर प्रधान रथ छे एह रे॥ २३॥
रूडा रत्नां माहे रथ शोभतो, सोवन माहे घूघरिया तास रे।
तिणने कोई जीत सके नहीं, विजली सरिखो प्रकाश रे॥ २४॥
सर्व रितुनां फूलां तणी, माला ने दडा ठाम ठाम रे।
गाज सरीखो शब्द तेहनो, ऊची ध्वजा कीधी छे ताम रे॥ २५॥
तिण ऊपर बेठां पृथ्वी जीतले, तिण बेठा भुजां लाभ अपार रे।
तिणसूं विजय लाभ रथ नाम छे, वेस्या नो कपावणहार रे॥ २६॥
एहवो रथ आय मिलियो भरत ने, ज्ञान सूं जाणे धूल समान रे।
तिणने छोडसी वेराग आणने, जासी पाचमी गति परधान रे॥ २७॥

दूहा

तिण रथ ने अश्व तणो, विस्तार कह्यो अल्पमात।
तिणरो अधिपति भरत नरिंद्र छे, तिणरी जस कीर्त्ति लोक विख्यात॥ १ ॥
पोषा सहित तिण रथ ऊपरे, बेठा भरतजी आय।
दक्षिण साह्मों वरदाम तीर्थ तिहां, गया लवण समुद्र नें माय॥ २ ॥
रथ नी पीजणी भीजे त्यां लगे, गया भरतजी ताम।
बाण न्हाख्यो मागध तीर्थ नीपरे, सगलो विस्तार कहिणो इण ठाम॥ ३ ॥
मागध नी परे ल्यायो भेटणो, तिण माहे इतरो फेर जाण।
ते मुगुट अने चूड़ामणी, वले हियानां भूषण बखाण॥ ४ ॥
वले भूषण ल्यायो गला तणा, कडियां ने कणदोरो जाण।
वले कडा आण्यां हाथे पहरवा, बाहा ने बहरखा बखाण॥ ५ ॥
इत्यादिक आभरण आण्यां घणा, वरदाम तीर्थ पाणी ताय।
नामांकित बाण आणियो, सारा मेल्या भरतजी रे पास॥ ६ ॥
हाथ जोडी नें इम कहे, करे घणा गुण ग्राम।
हूं सेवग छूं आपरो, दखिण दिसि नो देव वरदाम॥ ८ ॥
मागध तीर्थ कुमार देव नी परे, सगली विधि साचवी ताम।
विनो करी सीख मांगनें, देव गयो निज ठाम॥ ८ ॥

ढाल : २५

[आछे लाल]

भरत नरिंद्र तिण ठाम, साझ्यो तीर्थ वरदाम। आछेलाल०।
जीत फते कर पाछा वल्या॥ १ ॥
विजय कटक में आय, गया मजण घर मांय। आ०।
स्नान करे बारे नीकल्या॥ २ ॥
पछे भोजन मंडप जाय, भोजन कियो छे ताय। आ०।
पछे उवठाणशाला आया तिहां॥ ३ ॥
श्रेणी प्रश्रेणी कहे छे बोलाय, आठ दिवस महोच्छव करो जाय। आ०।
वरदाम देव नमियो तेहनों॥ ४ ॥
श्रेणी प्रश्रेणी सुण इम बाण, कुर लीधी परमाण। आ०।
महोच्छव किया पाछली परे॥ ५ ॥
महोच्छव पूरा किया श्रीकार, जब चक्ररत्न तिणवार। आ०।
आयुधशाला थी बारे नीकल्यो॥ ६ ॥

गयो आकाश मझार, तिहां बाजंत्र बाजे श्रीकार। आ०।
घोष शब्दे आकाश पूरतो॥ ७॥
चाल्यो वायव कूण रे मांय, जब जाण्यों भरत महाराय। आ०।
प्रभास तीरथ तिण मारगे॥ ८॥
जब भरत नरिंद्र तिणवार, सेना ले चाल्यो तिण लार। आ०।
पाछे कह्यो तिण रीत सूं॥ ९॥
कटक उतार्‍यो तिण ठाम, समुद्र अवगाह्यो ताम। आ०।
पीजणी भीजे तिहां लग गया॥ १०॥
जब भरत नरिंद्र नरनाथ, धनुष बाण लियो हाथ। आ०।
बाण न्हांख्यो तिणरा भवन में॥ ११॥
प्रभास देव बाण ने देख, जाग्यो तिणने धेष विशेख। आ०।
मागध ज्यूं सर्व जाणजो॥ १२॥
पछे कियो मन में विचार, ऊपनो इण भरत मझार। आ०।
अधिपति ऊठ्यो भरत क्षेत्र नो॥ १३॥
म्हारो तो जीत आचार, भेटणो लेजावणहार। आ०।
तो भेटणो लेने जाऊं तिहा॥ १४॥
रत्नां री मांला लीधी हाथ, वले मुगट लियो तिण साथ। आ०।
मोती नें सोवन तणी जालियां॥ १५॥
हाथां ने कडालिया जाण, बाहां ने बहरखा वखाण। आ०।
अनेक आभरण रलियामणा॥ १६॥
प्रभास तीर्थ उदक विशेख, करवा राज अभिषेक। आ०।
नामाकित बांण ते लियो॥ १७॥
ते सगला ल्यायो आण हुलास, आयो भरत नरपति ने पास[१] आ०।
आकाशे आय ऊभो रह्यो॥ १८॥
हाथ जोडी शीस नाम, नमस्कार कियो प्रणाम।
भेटणो मुख आगल धर्‍यो॥ १९॥
हूं पश्चिम दिशि नो रुखवाल, आप तणो कोटवाल। आ०।
किंकर सेवग छूं आपरो॥ २०॥
इत्यादिक करे गुण ग्राम, वारूंवार शीस नाम। आ०।
बोली अनेक विरुदावली॥ २१॥
विनो कियो मागध कुमार, तिण सगलोई कहिणो विस्तार।आ०।
इण पिण विनो इमहिज कियो॥ २२॥

भरत नरिंद्र रे पास, सीख मागे देव प्रभास। आ०।
निज ठिकाणे पाछो गयो ॥ २३ ॥
देवता मानी आण, ते जाणे विटबणा समान। आ०।
याने पिण छोडे जासी मुगत में ॥ २४ ॥

●

दुहा

प्रभास नामे देवता भणी, निज सेवग ठहराय।
विजय कटक मे आयनें, गया मंजण घर माय ॥ १ ॥
स्नान करेने नीकल्या, आया उवठाण साल।
पाछे कह्यो तिण हिज विधे, सगलोई कहिणो संभाल ॥ २ ॥
श्रेणी प्रश्रेणी तेडने, कहे भरत महाराय।
आण मनाई प्रभास देवता भणी, तिणरा करो महोच्छव जाय ॥ ३ ॥
आगली रीते महोच्छव करे, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपो आय।
ते सुणने मन हर्षित हूआ, किया महोच्छव जाय ॥ ४ ॥
आठ दिवस महोच्छव पूरो हूआ, जब चक्ररत्न तिण वार।
आयुधशाला थी बारे नीकल्यो, गयो आकाश मझार ॥ ५ ॥
सिंधु नदी नो दक्षिण कूल तिहां, सिंधु देवी रो भवन वखाण।
तिण साह्मो चक्र जातो देखनें, लारे चाल्या भरतजी जाण ॥ ६ ॥
सिंधु देवी रा भवन थी, नेडा अलगा नही ताहि।
तिहां कटक उतार चोथो तेलो कियो, पोषधशाला रे मांहि ॥ ७ ॥
ध्यान ध्यावे सिंधु देवी तणो, तिणने चिंतव रह्या मन मांय।
सिंधु देवी आवे छे किण विधे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल : २६

[वीरमती कहे चंदन०]

अठम भक्त पूरो थयो, तिण अवसर मांहि।
सिंधु देवी नो आसण चल्यो, अवधि प्रजूंजी ताहि।
सिधु देवी भरत ने वीनवे* ॥ १ ॥
अवधि करे भरतजी ने देखने, करवा लागी विचार।
भरत चक्रवर्त्ति ऊपनो, छव खड रो सिरदार ॥ सि० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ते माटे म्हारो जीत आचार छे, तीन काल मझार।
भेटणो ले जाय धन आपियो, विनो करे तिण वार ॥ ३ ॥
तो हूं पिण जाऊं इहां थकी, भरत राजा रे पास।
भेट लेजाए पगां मेलने, वले करू अरदास ॥ ४ ॥
एहवी करे विचारणा, कुभ सहस ने आठ।
नाना प्रकार ना मणि रत्न मे, त्यारो रूडो छे घाट ॥ ४ ॥
तिण कुंभ रे कनक रत्नां तणा, भात चित्राम रूप।
चित्राम नानां मणि रत्न मे, शोभे रह्या छे अनूप ॥ ४ ॥
रूडा दोय भद्रासण कनक मे, हाथां ने कडा वशेख।
वले बाहा नें पहरण बहरखा, ओर भूषण अनेक ॥ ७ ॥
इतरा आभूषणे ले नीकली, उतकष्टी गति आय।
भरत नरिंद्र बेठा तिहां, आकाशे ऊभी ताय ॥ ८ ॥
दोनूं हाथ जोडी विनो करे, मस्तक नीचो नाम।
जय विजय करे वधायने, मुख सू करे गुण ग्राम ॥ ६ ॥
थें भरत क्षेत्र जीते लियो, छव खड रा हो स्वाम।
थें बडा बडा देव नमाविया, बोले करे सिलाम ॥ १० ॥
हूं देस वसीवान छूं आपरी, किंकरी आज्ञाकारी।
हू रुखवाली कोटवाल जिम, हू सेवगणी तुम्हारी ॥ ११ ॥
तिण कारण ल्यो थें माहरो, भेटणो प्रीतिदान।
इम कहे भेटणो आण्यो तिको, पगा मेल्यो दे मान ॥ १२ ॥
आण्यो ते भेटणो पगां मेलनें, वले करे गुण ग्राम।
सीख मागे पाछी नीकली, गई छे निज ठाम ॥ १३ ॥
सिंधु देवी नमाई भरतजी, निज सेवग ठहराय।
त्यांनें पिण छोड सजम पालने, जासी मुगत रे माय ॥ १४ ॥

दुहा

सिधुदेवी गया पछे, नीकल्या पोषधसाला बार।
मंजण घर मे आयने, स्नान कियो तिणवार ॥ १ ॥
पछे भोजन मडप आयने, अठम भक्त पारणो कियो ताय।
पछे आया उवठाण साला तिहा, बेठा सिंघासण आय ॥ २ ॥
अठारे श्रेणी प्रश्रेणी बोलायने, कहे छे भरत महाराय।
सिंधुदेवी नमे सेगग हुई, तिणरा करो महोच्छव जाय ॥ ३ ॥

अठाई मोहच्छव पूरा करे, म्हारी आंज्ञा पाछी सूंपो आय।
ते सुणने मन हर्षित हुआ, पछे किया महोच्छव जाय॥ ४॥
अठाई महोच्छव पूरा हुआं, चक्ररत्न तिणवार।
आयुधसाला थी नीकल्यो, गयो ऊचो आकाश मझार॥ ५॥
ईसाण कूण ने चालियो, वेताढ पर्वत साह्मों जाय।
तिण दिशि मे जातो देखने, लारे चाल्या भरत महाराय॥ ६॥
वेताढ पर्वत ने दक्षिण दिशे, नितब पासो छे ताय।
तिहां वेताढ रे पासे दक्षिण तणे, विजय कटक उतास्यो छे राय॥ ७॥

ढाल : २७

[सल्य कोई मत राखज्यो]

हिवे भरत नरिंद्र तिण अवसरे, तेलो कर तीन पोपा ठायो रे।
वेताढ गिरी देवता तणो, ध्यान ध्याय रह्या मन माह्यो रे।
दिन दिन चढता पुन्न भरत रा* ॥ १॥
एकाग्र चित्त मे ध्यान ध्यावता, तीन दिन पूरा हुवा ताह्यो रे।
जब आसण चलियो छे तेहनों, तिण विचार कियो मन माह्यो रे॥ २॥
ऊपनो भरतखेतर मझे, चक्रवर्ति छव खड रो सिरदारो रे।
ते इण ठामे आवियो, मोने याद कियो इण वारो रे॥ ३॥
ते जीत आचार छे माहरो, तीनूंई काल मझारो रे।
भेटणो ले जायने मूकणो, सिंधु देवी ज्यू सारो विस्तारो रे॥ ४॥
एहवी करे विचारणा, प्रीति दान देवाने लियो साथो रे।
रत्नां मे मुकुट रलियामणो, कडलिया पहरणने हाथो रे॥ ५॥
बाहा ने लीधा छे बहरखा, इत्यादिक आभरण अनेको रे।
ते लेई तिहा थी नीकल्यो, उतकष्टी गति चाल्यो वशेखो रे॥ ६॥
ते आयो भरतजी बेठा तिहां, ऊभो आकाश मझारो रे।
हाथ जोडी मस्तक चाढले, हाथ जोडी कियो नमस्कारो रे॥ ७॥
जय विजय करेने वधावतो, मुख सूं करे गुणग्रामो रे।
अनेक विरुदावली बोलतो, विनो कीयो शीस नामों रे॥ ८॥
हूं वेताढगिरी कुमार देव छू, आप छव खड रा राजानो रे।
हूं किंकर छू आपरो, वले आप तणो वसवानो रे॥ ९॥
हू सेवग थको रहिसूं आपरो, इण दिशि रो कोटवालो रे।
उपद्रव करवा न दू केहने, हूं करसूं रुखवालो रे॥ १०॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

मागध कुमार देव नी परे, रूडी रीत विनो कियो ताह्यो रे।
भेटणो आण्यो ते देवता, मूंक्यो भरतजी रे पायो रे॥ ११ ॥
ओ भेटणो ल्यो थे मांहरो, किरपा करो मुझ स्वामो रे।
इम कहे देवता सीख मांगने, पाछो गयों निज ठामो रे॥ १२ ॥
एहवा पुन्न ने जाणे छे कारमां, त्याने छोडे चारित्र पाले चोखो रे।
आठूंई कर्म खपायने, इण हिज भव जासी मोखो रे॥ १३ ॥

●

दुहा

वेताढगिरि देव गयां पछे, आया मंजण घर मांहि।
स्नान करे वारे नीकल्या, मया भोजन मंडप ताहि॥ १ ॥
भोजन करे वारे नीकल्या, आया उवठाणशाला माय।
बेठा सिंघासण ऊपरे, कहे श्रेणी प्रश्रेणी बुलाय॥ २ ॥
वेताढ गिरी नो देवता, पगे लागो मानी म्हारी आण।
ते सेवग ठहर्यो मांहरो, महोच्छव करो मोटे मडाण॥ ३ ॥
आठ दिवस महोच्छव करे, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपो आण।
श्रेणी प्रश्रेणी सुण हर्षित हुवा, महोच्छव किया मोटे मंडाण॥ ४ ॥
आठ दिवस महोच्छव पूरा हुआ, चक्ररत्न तिणवार।
आयुधशाला थी वारे नीकल्यो, गयो आकाशे गगन मझार॥ ५ ॥

ढाल: २८

[कर्म भुगत्यांईज छूटिये]

चक्र चाल्यो अंवर तलो पूरतो, पछिम दिशि मझार लाल रे।
तामस गुफा साह्यो जातो देखनें, भरतजी हुआ हर्ष अपार लाल रे।
दिन दिन चढता पुन्न भरत ना* ॥ १ ॥
सेना सहित भरत नरिंद्र चालियो, चक्ररत्न लारे लारे ताम लाल रे।
तामस गुफा नेडी अलगी नही, सेना उतारी तिण ठाम लाल रे॥ २ ॥
कृतमाली देव ऊपरे, छठो तेलो कियो शाला मांय लाल रे।
ध्यान ध्यावे तिण देवता तणो, एकाग्र चित्त लगाय लाल रे॥ ३ ॥
तीन दिन पूरा हुआ, आसण चलियो ताम लाल रे।
जब अवधि प्रज्यूंज्यो देवता, भरतजी ने देख्या तिण ठाम लाल रे॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वेताढगिरी देव नी परे, सगलोई कहिणो विस्तार लाल रे।
पिण भेटणा माहे फेर छे, त्यांरो जुदो जुदो विस्तार लाल रे॥ ५॥
आभरण करंडिया रत्न में, आभरण हार अर्द्ध हार लाल रे।
इंगद कनक में मुक्तावली, केउडो नें कडा श्रीकार लाल रे॥ ६॥
बाहां नें वहरखा वले मुद्रिका, कानां कुंडल उर सत श्रीकार लाल रे।
चूडामणि अति रलियामणो, रलियामणो तिलक निलाड लाल रे॥ ७॥
इत्यादिक आभूषण हाथे लिया, ते अस्त्री रत्न रे काज लाल रे।
ले आयो शीघ्र उतावलो, जिहां बेठा भरत महाराज लाल रे॥ ८॥
आकाशे आय ऊभो रह्यो, मागध देव तणी परे जाण लाल रे।
दस दिशि उद्योत करतो थको, बोले मीठी वाण लाल रे॥ ९॥
हाथ दोनूंई जोडने, विनो कियो मस्तक चढाय लाल रे।
नमस्कार कियो वले भरत नें, मस्तक नीचो नमाय लाल रे॥ १०॥
जय विजय करे वधायनें, विरुदावली अनेक बोलाय लाल रे।
कहे हूं कृतमाली छूं देवता, आप तणो सेवग छूं ताय लाल रे॥ ११॥
हूं आप तणो वसवान छू, आप तणो कोटवाल लाल रे।
हूं किंकर छूं आपरो, आज्ञा तणो प्रतिपाल लाल रे॥ १२॥
मागध कुमार देव नी परे, करे घणा गुणग्राम लाल रे।
हूं प्रीतिदान ल्यायो भेटणो, ते कृपा करे ल्यो स्वाम लाल रे॥ १३॥
इम कहेनें भेटणों, मुख आगल मेल्यो ताम लाल रे।
पछे सीख मागेनें चालियो, पाछो गयो निज ठाम लाल रे॥ १४॥
देखो पुन्याई राजा भरत नी, देवता पिण नमिया आय लाल रे।
पगा भेटणो मेल सेवग हूआ, गिर धणी भरत नें ठहराय लाल रे॥ १५॥
कृतमाली देवता गयां पछे, आया मजण घर मांहि लाल रे।
स्नान करे बारे नीकल्या, गया भोजन मडप ताहि लाल रे॥ १६॥
भोजन कर बारे नीकल्या, गया उवठाणशाला मांय लाल रे।
तिहां बेठा सिंघासण ऊपरे, कहे श्रेणी प्रश्रेणी नें बोलाय लाल रे॥ १७॥
कृतमाली देवता मांहरे, पगां लागे मानी म्हारी आण लाल रे।
ते सेवग ठहरयो छे मांहरो, ते महोच्छव करो मोटे मंडाण लाल रे॥ १८॥
आठ दिवस महोच्छव करी, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपो आण लाल रे।
श्रेणी प्रश्रेणी सुण हर्षित हुवा, महोच्छव कीवा मोटे मंडाण लाल रे॥ १९॥
एहवा महोच्छव लागे रलियामणा, पिण जाणे छे जहर समान लाल रे।
त्यांनें त्यागनें भरतजी, इणहिज भव जासी निरवाण लाल रे॥ २०॥

दुहा

आठ दिवस महोच्छव तणा, पूरा हुआ छे ताम।
जब सेनापति नें बोलायने, कहे भरतजी आम ॥ १ ॥
जा तूं वेग उतावलो, सिंधु नदी ने पेले पार।
लवण समुद्र उरला सगला भणी, कीजे म्हारी आज्ञा मझार ॥ २ ॥
रत्नादिक भारी भारी भेटणा, लीजे तूं आण मनाय।
सेवग म्हारा ठहरायनें, पाछो आज्ञा सूपो आय ॥ ३ ॥
सुषेण सेनापति तेहनो, वर्णन् कह्यो जिनराय।
थोडो सो प्रगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : २६

[पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

सेनापति रतन छे भरत नरिंद्र नो, सुषेण छे तिणरो नाम रे। सोभागी।
जस फेल्यो छे तिणरो लोक मे, भरतखेतर मे ठाम ठाम रे। सोभागी।
सेनापति रत्न छे भरत नरिंद्रनो* ॥ १ ॥
ते प्रसिद्ध च्यावो छे भरतखेतर मझे, वले पराक्रम तिणरो अत्यंत रे।
वीर्य ओछाह मन रो छे अति घणी, मोटी आतमा तिणरी महंत रे ॥ २ ॥
तेज शरीर तणी क्रांति अति घणी, धैर्यादिक लखण सहीत रे।
जस कीर्त्ति फेली छे तिणरी चिहु दिशा, ओर दोषण करने रहीत रे ॥ ३ ॥
म्लेच्छ नी भाषा छे विविध प्रकार नी, पारसी अरबी आदि जाण रे।
त्यांरी भाषा रो जाण प्रवीण छे अति घणो, डाहो छे चतुर सुजाण रे ॥ ४ ॥
ते भाषा बोले छे विविध प्रकार नी, ते मीठी मनोहर जाण रे।
वले गमतो वचन लागें छे तेहनो, बोले छे मानोपेत प्रमाण रे ॥ ५ ॥
अर्थशास्त्र नीतिशास्त्र आदि दे, अनेक शास्त्र नों जाण रे।
कला चतुराई तिणमें अति घणी, तिणमे विविध प्रकार नी पिछाण रे ॥ ६ ॥
भरतखेतर में खाड गुफादिक, वले दुर्गम जायगां जाण रे।
दुखे जायवोने दुखे पेसवो, तिणरो पिण जाण पिछाण रे ॥ ७ ॥
परवत भंगी विषम जायगादिक, तठे कायर तणो नहीं काम रे।
तिण ठामें प्रवेश करतो संके नही, भय नही पामे तिण ठाम रे ॥ ८ ॥
सूरवीर धीर साहसीक छे अति घणो, सेनापति रत्न वखाण रे।
प्रबल पुन्न संचो छे तेहनें, ते उदे हुआ छे आण रे ॥ ९ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

देवता सहस तिणरी सेवा करे, अधिष्ठायक रहे छे हुजूर रे।
सेनापति रत्न कोपे तिण ऊपरे, तिणने भांज करे चकचूर रे॥ १०॥
देवता सहंस सेनापति रत्न रे, रात दिवस रह्या तिण पास रे।
मन चिंतवियो कारज करे तेहनो, मनमें आण हुलास रे॥ ११॥
इसडो पुन्नवंत रत्न सेनापति, तिणरो अधिपति भरत महाराय रे।
तिण भरत नरिंद्र रा पुनरो कहिवो किसूं, त्यारे सेनापति रत्न छे ताय रे॥ १२॥
विनीत घणो छे भरत नरिंद्र नो, आज्ञाकारी सेवग ताम रे।
जे जे कारज भलावे तेहनों, ते हर्ष सहित करे काम रे॥ १३॥
ऊपनों रत्न सुषेण सेनापति, नगरी विनीता मझार रे।
जात ने कुल दोनूंई तिणरा निर्मला, तिणसूं सेना चाले तिण लार रे॥ १४॥
एहवो सेनापति भरत नरिंद्र नें, आय ऊपनो छे पुन प्रमाण रे।
तिणने पिण भरतजी कारमो जाणने, त्यागे नें जासी निरवाण रे॥ १५॥

●

दुहा

तिण सुषेण सेनापति रत्न ने, कह्यो थो भरतजी आम।
सिंधु पार साराने नमाय ने, पाछो वेगो आए इम ठाम॥ १॥
ते वचन, सुणे हर्षित हूवो, विने सहित बोल्यो जोडी हाथ।
आप कह्यो सगलो कारज करूं, हूं सेवग थको स्वामीनाथ॥ २॥
इम कहे तिहां थी नीकल्यो, आयो निज आवास निज ठाम।
आज्ञाकारी पुरुष बोलायने, तिणने कहे सेनापति आम॥ ३॥
जाओ शीघ्र उतावला, हस्तीरत्न सज करो जाय।
वले चउरंगिणी सेना सज करी, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपो आय॥ ४॥
इम कहे आयो मंजण घर मझे, स्नान कियो तिण ठाम।
वली कर्म करे तिहां, मंगलीक किया छे ताम॥ ५॥

ढाल : ३०

[इण पुर कांबल कोई न लेसी]

सुषेण सेनापति तिणवार, शस्त्र लीधा हाथ मझार।
शस्त्र सारा बांध्या ठाम ठाम, वले गहणा पहर हुवो अभिराम॥ १॥
केइ सेवग बोले जोडी बेहु हाथ, वले अनेक गण नायक साथ।
ते सगला छे इणरा आज्ञाकारी, ओपिण छे सगलां रो अधिकारी॥ २॥

वले दंड नायक छे तिण साथे, राजा ईसर आदि संघाते।
सकोरंट फूलां री माला सहीत, छत्र धरावे रूडी रीत ॥ ३ ॥
जय जय शब्द करे छे अनेक, मंगलीक शब्द बोले छे वशेख।
मंजण घर थी नीकलियो बार, आयो उवठाणशाल मझार ॥ ४ ॥
पटहस्ती रत्न ऊभो छे तिण ठाम, तिण ऊपर सेनापति चढियो ताम।
हस्ती ऊपर बेठो पिण छत्र धरावे, विरुदावलियां अनेक बोलावे ॥ ५ ॥
च्यार प्रकार नी सेना सहीत, निर्भय थको उपद्रव रहीत।
बड बडा जोध सुभट नां वृंद, त्यांसूं वीट्यो चाले मन में आणंद ॥ ६ ॥
सीहनाद तणी परे गूंजे ताम, समुद्र शब्द तणी परे आम।
एहवा शब्दां रा ऊठ रह्या धुंकार, सर्व रिध जोत कटक विस्तार ॥ ७ ॥
निर्घोष शब्द बाजंत्र बाजे, आकाशे जाणे अंबर गाजे।
इण विध सेनापति चलियो जाय, सिंधु नदी रे कांठे ऊभा आय ॥ ८ ॥
अनमी भोमिया नमावण काज, इणनें विदा कियो छे भरत महाराज।
इण विन ओर कहो कुण जावे, इण विन अनमियां नें कूण नमावे ॥ ६ ॥
इण करनें सेना रहे साहसीक, ओ सगली सेना तणो पूजनीक।
ओ सगली सेना तणो रुखवाल, ओ सगली सेना तणो प्रतिपाल ॥ १० ॥
एहवी सेना नें सेनापति सर्व काचा, त्यांने अंतरंग में नहि जाणे आछा।
त्यांनें निश्चेई छोड होसी अणगार, इणभव जासी पाधरा मोख मझार ॥ ११ ॥

●

दुहा

सिंधु नदी बहे छे उतावली, तिणरो पाणी अगाध अत्यंत।
पेली तीर निजर आवे नही, लोक देख हुआ भयभ्रंत ॥ १ ॥
सिंधु नदी किण विध ऊतरां, किण विध जास्यां पेलेप्पार।
जब सेनापति चर्म रत्न नें, लीधो हाथ मझार ॥ २ ॥
ते चर्म रत्न छे रलियामणो, गुण घणा तिण माय।
तिणरो थोडो सो वर्णन करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ३ ॥

ढाल : ३१

[पहली वली प्रा०]

चर्म रत्न उपनों हो भरत री आयुधशाल मे, ते गुणरत्नां री खाण।
इसरा नें रत्न हो महा पुन्नवत जीव रे, उपजे अण चिंतविया आण ॥ १ ॥
तिण चर्म रत्न नो हो आकारे श्रीवच्छ साथियो, तिणरो रूप अनोपम ताम।
तिणरे मोती नें तारा हो वले अद्ध चंद्र सारिखा, आलेख्या रूप चित्राम ॥ २ ॥

ते अचल अकंप हो अत्यत दिढ छे अति घणो, ते भेद्यो नहिं भेदाय।
वज्ररत्न हो अभेद जिनवर भाखियो, वले गुण घणा तिण मांय ॥ ३ ॥
ओ कुण २ कारज हो आवे छे भरत नरिंद्र ने, ते सांभलजो चित्तल्याय।
नदी समुद्र ने हो उतारवानो उपाय छे, एहवो गुण छे तिण मांय ॥ ४ ॥
वले सतरे धान निपजे हो तिण ऊपर बाया जुगत सूं, जव[१] साल[२] व्रीही[३] वखाण।
कोद्रव[४] राल[५] धान हो वले तिल[६] मूंग[७] नीपजे, मास[८] चवला[९] चिणा[१०] पिछाण ॥ ५ ॥
वले तूवर[११] ने मसूर[१२] हो कुलत्थ[१३] ने गोहू[१४] नीपजे, नीपाव[१५] अलसी[१६] सण[१७] धान।
वले अनेक रसालां हो निपजे चर्म रत्न सूं, त्यांरा अनेक प्रकारे नाम ॥ ६ ॥
सूर्य ऊगे बायां हो आथमियां पहली नीपजे, तिण दिवस लूणे छे ताय।
इसरा २ गुण छे हो इण चर्म रत्न मभे, ते ऊपणों पुन्न पसाय ॥ ७ ॥
विरखा नें बरसते हो चक्रवर्त्ति फरसे हाथ सूं, जब तिरछो विस्तर जाय।
बारे नें जोजन हो जाभेरो लाबो विस्तरे, सर्व सेना हेठे ताय ॥ ८ ॥
तिण चर्मरत्न नें हो सेनापति हाथे फरसियो, नावा भूत हुवो ततकाल।
नावा सरीखो हो सिंधु नदी नें ऊपरे, कियो चर्म रत्न विशाल ॥ ९ ॥
चर्मरत्न नें हो अधिष्ठायक सहस देवता, रहे चर्म रत्न रे पास।
ते महिमा वधारे हो चर्म रत्न री देवता, इणरा गुण प्रमाणे तास ॥ १० ॥
चर्म रत्न छे हो अमोलक इण भरतखेत्र मे, इसडो वले दूजो नाहि।
भरत चक्रवर्त्ति रे हो पुन्न जोगे आय ऊपनो, आयुधशाला रे मांहि ॥ ११ ॥
जब सुषेण सेनापति हो सगली सेना सहितसू, सर्व हाथी घोडादिक जाण।
ते सगला चढिया छे हो नावा भूत चर्म रत्न पे, तिण ऊपर बेठा आण ॥ १२ ॥
सिंधु नदी उतरिया हो सगलाई चर्म रत्ने करी, तिहां ऊंची घणी जल किलोल।
सिंधु नदी नो पाणी हो निर्मल ऊडो अति घणो, वले ऊठे घणा हिलोल ॥ १३ ॥
एहवो रत्न अमोलक हो भरतजी रे ऊपनों, ते पूरब तप फल जाण।
तिणने पिण छिटकासी हो भरतजी संजम आदरे, इण भव जासी निर्वाण ॥ १४ ॥

●

दुहा

सर्व सेना उतर्यां पछे, सेनापति रत्न तिणवार।
गाम आगर नगरा रा राजा भणी, आण मनावे छे पगा पार ॥ १ ॥
खेड मंडप पट्टण आदि दे, अनेक ठाम छे ताय।
सिंघल बब्बर आदि सर्व देश मे, आण मनावता जाय ॥ २ ॥
ते राजादिक छे केहवा, धन करने रिधिवान।
मणि कनक रत्नादिक त्यांरे घणा, वले वहुत रिधि धन धान ॥ ३ ॥

त्यां राजादिक नें नमावता, भेटणो लेता ताम।
सम विषम ठाम राजां भणी, आण मनाई ठाम ठाम॥ ४॥
आभरण रत्न भूषण घणा, वले वस्त्र विविध प्रकार।
ए च्यारूं बहु मोला भेटणा, मोटां जोग घणा श्रीकार॥ ५॥
एहवा भारी भारी मोला भेटणा, ले ले आया सेनापति पास।
बहु मोला भेटणा पगा मेलनें, ऊभा करे अरदास॥ ६॥

ढाल : ३२

[सोरठ देश मझार]

हिवे बोले जोडी हाथ, थें म्हानें किया सनाथ। आज हो।
भलांने पधार्या थें किरपा करी रे॥ १॥
वले नीचो शीष नमाय, दोनूं मस्तक हाथ चढाय। आ०।
बड बडा राजा तिणने वीनवे जी॥ २॥
केई हाथी घोडादिक जाण, सूंपे सेनापति ने आण। आ०।
भेटणो लीजे हो साहिब अम तणो जी॥ ३॥
इम कहि कहि बडा भूपाल, आण मानी तिणकाल। आ०।
भरत नरिंद्र थाप्यो शिरधणी जी॥ ४॥
म्हें सेवग थें स्वाम, हिवे मतलो म्हांरो नाम। आ०।
देवता ज्यूं शरणो म्हांने तुम तणो जी॥ ५॥
थाहरा देश तणा वसिवान, म्हे सगलाई राजान। आ०।
आण म्हांरे शिर भरत नरिंद्र नां जी॥ ६॥
जय विजय करे वधाय, सेनापति ने ताय। आ०।
भेटणो पगां मेलेने वीनवे जी॥ ७॥
सगलाई राजान, वले दियो घणो सनमान। आ०।
सेनापति रत्न नें घणो सतकारियो जी॥ ८॥
त्यांरी आण करे परमाण, गया सर्व निज ठिकाण। आ०।
भरत नरिंद्र नां सेवग ठहरिया जी॥ ९॥
नमिया राय अनेक, बाकी रह्यो नहि एक। आ०।
सेवग सगला राजां ने थापियाजी॥ १०॥
सिंधु नदी नें पार, लवण समुद्र ने उवार। आ०।
आण वरताई सगले भरतनी जी॥ ११॥
भरत चक्रवर्त्ति नरनाथ, त्याने प्रसिद्ध कियो विख्यात। आ०।
सेनापति रत्न इण खंडमे आयनेजी॥ १२॥

सगले वरताई आण, हिवे पाछो आवे ठिकाण। आ०।
भेटणो आयो ते ले नीकल्यो जी ॥ १३ ॥
सगला राजा नें जीत, हुवो घणो सह जीत। आ०।
कारज सिद्ध करने पाछो चालियो जी ॥ १४॥
पाछो आयो साहस धीर, सिंधु नदी रे तीर। आ०।
सगलोई साथ सिंधु नदी ऊतस्था जी ॥ १५ ॥
सुखे समाधे तास, आयो भरत राजा रे पास। आ०।
भेटणो आण्यों ते सगलो सूंपियो जी ॥ १६ ॥
विने सहित जोडी हाथ, मांड कही सर्व बात। आ०।
आण मनाई सगले आपरी जी ॥ १७ ॥
इम सुणने भरत राजान, हर्ष हुवो मनमान। आ०।
आनंद उपनों मनमे अति घणो जी ॥ १८ ॥
सेनापति नें भरत राजान, दियो घणो सनमान। आ०।
बहुत रजाबंध कीघो तेहने जी ॥ १९ ॥
हिवे सेनापति तिणवार, आयो मजण घर मझार। आ०।
स्नान करेने बारे नीकल्यो जी ॥ २० ॥
पछे भोजन मडप आय, असणादिक जीम्यों ताय। आ०।
चलू करेनें सुचि निर्मल थयो जी ॥ २१ ॥
वस्त्र गहणा अलंकार, पहर कियो सिणगार। आ०।
लेप लगायो चंदन बावनो जी ॥ २२ ॥
बेठो रत्न जडित आवास, तिहां भोगवे सुख विलास। आ०।
मादलां रा मस्तक तिहां फूटे रह्या जी ॥ २३ ॥
नाटक बत्तीस प्रकार, पडे रह्या धुकार। आ०।
गीत बाजत्र अति रलियामणा जी ॥ २४ ॥
तरुणी अस्त्री प्रधान, ते रूपे रंभ समान। आ०।
काम नें भोग भोगवे तेहसू जी ॥ २५ ॥
एहवो सेनापति रत्न, तिणरा करे देवता जत्न। आ०।
ते सेनापति सेवग भरत नरिंद्र नो जी ॥ २६ ॥
तिणने भरत नरिंद राजान, जाणे धूर समान। आ०।
तिणनें पिण त्यागेने जासी मुगत मे जी ॥ २७ ॥

दुहा

काम नें भोग भोगवतो थको, सुखे गमावे काल।
एहवो सेनापति रत्न छे, भरत नी आज्ञा नों प्रतिपाल॥ १ ॥
पूरव भव पुन्न उपजाविया, ते उदे हुआ छे, आण।
छव खंड तणो राज भोगवे, तप संजम रा फल जाण॥ २ ॥
त्यांरी रिध विस्तार छे अति घणो, जस कीर्त्ति घणी लोकां मांहि।
हाल हुकम त्यांरो अति घणो, वले सुख घणो छे ताहि॥ ३ ॥
हिवे कुण कुण पुन्न उदे हुआ, किण विध भोगवे छे राय।
त्यांरी कहुं थोडी सी वानगी, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ४ ॥

ढाल : ३३

[समरु मन हर्षे तेह सवी]

चक्ररत्न चाले जिणरे आकाश, तिणरो सूर्य सरीखो परकाश।
लारे सेना तणा चाले वृंद, इसडो छे भरत रिषभनंद॥ १ ॥
अडतालीस कोस मे लांब पणे, छत्तीस कोस मे पहुल पणे।
कटक तणो पडाव करे नरिंद्र॥ २ ॥
जिणरे पुन्न तणो सचो पूरो, वेरी दुश्मण भाज गया दूरो।
पगां पडिया त्यांरे हूवो आनंद॥ ३ ॥
रेत तणो रक्षाकारी, सगलां ने लागे हितकारी।
रेत जिम कर दीधा सर्व राजिंद॥ ४ ॥
देव देवी त्यांने वस कर लीधा, त्यांरा भेटणा ले लेनें सेवग कीधा।
त्यांने मनाय कियो आनंद॥ ५ ॥
देव देवी भेटणा ले ले आवे, जय विजय करे त्यांने वधावे।
मुख बोले बिरुदावली तणा वृंद॥ ६ ॥
सूर्य ऊगां अंधारो दूर भागे, कमलां रा वन सूता जागे।
एहवो छे सूर्य दिनकर इंद॥ ७ ॥
तिणसूं वेरी दुश्मण तिणरा भागे, सर्व रेत भणी गमतो लागे।
इण न्याय सूर्य जिम नरइंद॥ ८ ॥
बीज अल्प कला चंद निजर आवे, पछे दिन दिन कला वधती जावे।
सोले कला हुवे पूनमचंद॥ ९ ॥
इणरे दिन दिन संपत अधिकी थावे, दिन दिन पृथ्वी मे आण मनावे।
ओ पूरो होसी छव खंड तणो इंद॥ १० ॥

चवदे रत्न ने नव निधान, चोसठ सहंस सेवग मोटा राजान।
रिद्धि करने परवरयो जाणे शक्रइंद ॥ ११ ॥
तिणनें पाछो भागणरो छे नेम, छव खंड में वरतायो कुसल खेम।
अडिग जिम छे मेरू नगइंद ॥ १२ ॥
देव देव्यां नें पाय नमण कीधा, सर्व राजा ने वस कर लीधा।
तिण करनें बाज्यो छे राजिंद ॥ १३ ॥
नाग कुमार मे धरणिंद, सुवर्ण कुमार मे वेणुदेविंद।
ग्रह गण नक्षत्र में सोभे चंद ॥ १४ ॥
देवता पिण सेवा करे दिनरात, वले नमण करे जोडी हाथ।
भरतखेत्र में ऊगो ज्यूं दिनकर इंद ॥ १५ ॥
सेना तणा लग रह्या थाट, देव देव्यां तणा छे गह घाट।
रिद्धि करनें जाणे वेसमण इंद ॥ १६ ॥
रेत नें सोसणरी नही नीत, लोपे नही राज तणी रीत।
भरतखेत्र में छे पृथ्वीपति इंद ॥ १७ ॥
करुणा दया तणा तिणरा परिणाम, ते कदेय न करे अकारज काम।
तिणरी सहजे कषाय पडी मंद ॥ १८ ॥
ओ चारित्र लेवारो छे कामी, इणहिज भव में छे शिव गामी।
घणा रिखेसरां नों होसी मुनिंद ॥ १९ ॥
उतकष्टा भोग भोगवे छे ताम, पिण लूखा छे त्यांरा परिणाम।
निश्चे छोड देसी संसार नां फंद ॥ २० ॥
दीक्षा लेसी आण वेराग पूरो, आठूं कर्म नें करसी चकचूरो।
मोक्ष जासी तिहां सदा आनंद ॥ २१ ॥

दुहा

वेताढ उरला दोय खंड साभिया, हिवे जाणो वेताढ नें पार।
तिणरो मारग छे तामस गुफा मझे, तिणरा आडा जड्या छे कमाड ॥ १ ॥
जब भरत नरिंद्र तिण अवसरे, कहे सेनापति ने बोलाय।
तामस गुफा नां दखिण द्वार ने, खोल सताबसूं जाय ॥ २ ॥
कमाड उघाडीनें म्हारी आज्ञा, पाछी बेगी सूंपजे आय।
सेनापति हर्षित हुवो, सुण भरत राजा री वाय ॥ ३ ॥
सेनापति तिहां थी नीकल्यो, आयो निज आवास रे मांय।
तेलो कर तीन पोषा किया, पोषधशाला में आय ॥ ४ ॥

तीन दिन पूरा हुआं, ध्यान ध्याय रह्यो मन मांहिं।
एकाग्र चित्त तेहसूं, करे चिंतवणा ताहि॥ ५॥
तीन दिन पूरा हूवां, गयो मंजण घर माहिं।
स्नान मर्दन दोनूं किया, पछे पहरया आभूषण ताहि॥ ६॥
धूपणो फूल गंध माला फूल री, च्यारूंई लीधा हाथ।
मंजण घर थी नीकल्यो, तिणरे कुण कुण हुआ छे साथ॥ ७॥

ढाल : ३४

[पुन्न रा फल जोयजो]

तामस गुफानां द्वार उघाड बारे, सेनापति चाल्यो तिण वार।
घणा राजा ईसर तलवर माडंबी रे, इत्यादिक बहु चाल्या लार रे।
पुन्न रा फल जोयजो*॥ १॥
केकां उत्पल कमल हाथे लिया रे, चाल्या सेनापति री लार।
चक्ररत्न पूजवा चालिया, तेहनी परे इहां विस्तार रे॥ २॥
घणा देशां री दासियां रे, त्यारो पिण तिमहिज विस्तार।
चंदन कलसादिक त्यांरा हाथ में, चाल्या सेनापति री लार रे॥ ३॥
सर्व रिद्धि जोत करनें परवरयो रे, सेनापति तिण वार।
निर्घोष बाजंत्र वाजतां थकां रे, आयो तामस गुफा रे द्वार रे॥ ४॥
नमस्कार कियो द्वार देखनें रे, लोम पूंजणी पूंजे कमाड।
उदक धारा दीधी कमाड नें, चंदन थापा दिया श्रीकार रे॥ ५॥
चक्ररत्न पूज्यो छे जिण विधे रे, तिण विधि पूज्या कमाड।
आठ मंगलीकादिक तिण विधे, सर्व जाण लेजो विस्तार रे॥ ६॥
नमस्कार कियो कमाड प्रते रे, पछे दंड रत्न लियो हाथ।
ते पांच हांस छे तिण दंड रे, वज्रसार दंड विख्यात रे॥ ७॥
वले दंडरत्न छे एहवो रे, वेरयां नो विनाशण हार।
वले सेना उतारो करे तिहां, समी जायगां करे तिण वार रे॥ ८॥
खाड गुफा विषम परवत गिरी रे, विघ्नकारी सेना नें ठाम।
वले पाषाणादिक मारग विचे, ततकाल समी करे ताम रे॥ ९॥
शुभ कल्याणकारी दंडरत्न छे, उपद्रव निवारणहार।
मन इच्छा पूर्ण राजा तणो, शांतिकारी रत्न श्रीकार रे॥ १०॥
अधिष्ठायक दंडरत्न तणा रे, देवता एक हजार।
ते महिमा वधारण तेहनी, तिणरी रक्षा रा करणहार रे॥ ११॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिण दडरत्न नें हाथे लियो रे, सात आठ पग पाछो आय ।
तीन वार मारी कमाडां तणे, मोटा मोटा शब्द करे ताय रे ॥ १२ ॥
कमाड तीन वार ताड्यां थका रे, मोटे मोटे शब्द तिण वार ।
कोन्च पक्षी ज्यू शब्द करता थका, उघडिया गुफानां कमाड रे ॥ १३ ॥
कमाड उघडिया जाणनें रे, सेनापति तिण वार ।
ते आयो भरत राजा कनें, कहे उघडिया छे कमाड रे ॥ १४ ॥
ए वचन सुणे ने भरतजी रे, हरषित हुआ मन माहिं ।
सेनापति ने भरतजी रे, घणो सनमान्यों ताहि रे ॥ १५ ॥
हिवे कोडंबी पुरुष बोलायनें रे, कहे भरतजी आम ।
पटहस्ती रत्न नें सज करो, चउरंगणी सेना सजो ताम रे ॥ १६ ॥
चउरगणी सेना सजकरी रे, पाछी आज्ञा सूपी आय ।
जब पटहस्ती ऊपरे रे, बेठा भरत महाराय रे ॥ १७ ॥
त्याने जाणे भरतजी विटंबणा रे, जेहवो ढूलडियां रो खेल ।
त्यानें छोडे संजम सुध पालसी रे, मुगत जासी कर्माने पेल रे ॥ १८ ॥

●

दुहा

भरत नरिंद्र तिण अवसरे, हाथ मे लियो मणि रतन्न ।
ते मणिरत्न छे केहवो, ते साभलजो एकमन्न ॥ १ ॥

ढाल : ३५

[जगत गुरु त्रिशलानदन वीर]

लाबो आंगुल च्यारनो, ते वस्तु घणी छे अमोल ।
मोल साटे मिले नही, तिणरो भारी अमोलक तोल ।
भरतेश्वर पुन्न तणा फल एह *॥ १ ॥
त्रिणअंस छअस कोण छे, सर्व मणिरत्न में प्रधान ।
अनोपम जोत ने क्रात तेहनी, रत्नां मे स्वामी समान ॥ २ ॥
उतकष्टो वैंडूर्य रत्न छे, सर्व जीवां ने हितकार ।
तिणरे अधिष्ठायक देवता जी, रहे छे एक हजार ॥ ३ ॥
मणिरत्न मस्तक हुवे जेहने, तो दुख हुवे नहिं अस मात ।
जो दुख आगे हुवे तेहने, ते पिण विले होय जात ॥ ४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

देवता मिनख तिर्जंचनां, उपसर्ग छे विविध प्रकार।
इण मणिरत्न कनें थकां, उपसर्ग नही उपजे लिगार॥ ५ ॥
शस्त्र बाण गोला वहे घणा जी, रण सग्राम मझार।
इण मणिरत्न कनें थकां, शस्त्र नही लागे लिगार॥ ६ ॥
थिर जोवन रहे तेहनों, केश धवला न हुवे तास।
भय नही पामे सर्वथा, मणिरत्न हुवे जो पास॥ ७ ॥
इत्यादिक मणिरत्न मे जी, गुण अनेक पिछाण।
ते मिलियो छे भरत नरिंद्र नें जी, पुन्न प्रमाणे आण॥ ८ ॥
तिण मणि रत्न ने भरत जी, त्यां लीधो हाथ मझार।
हस्ती कुंभस्थल पासे जीमणे, मणिरत्न मूंक्यो तिणवार॥ ९ ॥
हस्ती ऊपर बेठा शोभे भरतजी, जाणे पूरो पूनम रो चंद।
रिद्धि करनें परवस्यो थको, जाणे अमरपति शक्रइंद॥ १० ॥
चक्ररत्न रे पूठे चालता, लारे राजा अनेक हजार।
सीहनाद करता थका, समुद्र नी परे करता गुंजार॥ ११ ॥
आया तामस गुफा रे बारणे, तिण गुफा में घोर अधार।
जब भरतजी कागणी रत्न नें जी, लीधो हाथ मझार॥ १२ ॥
तिण कागणी नामें रत्न रे जी, छ तला कह्या छे ताम।
च्यारू दिशिनां च्यारू तला, ऊंचो ने नीचो दोनूं आम॥ १३ ॥
आठ खूणा छे तेहनें जी, अहरण रे संठाण।
आठ सोनईया भार मान छे, एहवो कागणी रत्न वखाण॥ १४ ॥
एक एक हांस छे एतली जी, च्यार आंगुल प्रमाण।
छहूं हास बरोबर सारिखी, समचउरस तिणरो सठाण॥ १५ ॥
विष छे थावर जंगम तणो, तिण विष रो निवारणहार।
अतुल्य तुल्य रहित छे, अनोपम रत्न छे श्रीकार॥ १६ ॥
मान उनमान परमाण जोग छे, एतला मान विशेष ववहार।
ते सगला कांगणी रत्न थी, प्रवर्त्ते छे लोक मझार॥ १७ ॥
कागणी नामां रत्न थी, विणसजाये अधकार।
जेहवो चंद सूर्य अगन थी, मिटे नही अधार॥ १८ ॥
बारे जोजन त्यां लगे, तिणरी लेश्या प्रभाव उद्योत।
ते लेश्या छे वृद्धि पामती, पिण घटे नही तिणरी जोत॥ १८ ॥
अंधकार तणा समूह हुवे, तिणरो छे विनाशणहार।
एहवी प्रभा क्रांति छे तेहनी, तीनूंई काल मझार॥ २० ॥

कटक पडाव करे तिहा जी, करे अत्यंत उद्योत ।
दिन समान तिणरो प्रकाश छे, राते लागे झिगामिग जोत ॥ २१ ॥
जेहना तेज प्रभाव करी जी, भरतराय नरेश ।
सगली सेना सहित सूं जी, तामस गुफा मे करे प्रवेश ॥ २२ ॥
पेला अर्द्ध भरत नें जीपवा, कांगणी रत्न नें लीधो हाथ ।
तिणरा अधिष्ठायक सहस देवता छे, ते पिण लारे लागा तिण साथ ॥ २३ ॥
इसडो रत्न छे जेहने, तिणरा जाणजो पुन्न अथाग ।
तिणरो अधिपति भरत नरिंद्र छे, तिणरो तो मोटो छे भाग ॥ २४ ॥
तामस गुफा नें बेहू पाखती, पूर्व ने पछिम दिशि भीत ।
एक जोजन जोजन रे आतरे, माडला करे रूडी रीत ॥ २५ ॥
लांबा ने पहुला माडला, ते पाच सो धनुष रो प्रमाण ।
ते उद्योत प्रकाश करे घणो जी, एक जोजन लगे जाण ॥ २६ ॥
चक्र पेडा रे सठाण छे, वले चंद्रमा रो संठाण ।
एहवा कागणी रत्न रा माडला, त्यारो प्रकाश चद्र समाण ॥ २७ ॥
एक एक जोजन रे आतरे, माडला करतो करतो जाय ।
डावी ने जीमणी भीतरे जी, तामस गुफा रे माय ॥ २८ ॥
माडला आलेख आलेखतो, ते मांडला सर्व गुणचास ।
ते माडला ततकाल आलोकता, सूर्य सरिखो प्रकास ॥ २९ ॥
दिवस सरीखो करतो थको, जाए तामस गुफा रे माहिं ।
घणे मध्यभाग गये थके, दोय नदी बहे छे ताहि ॥ ३० ॥
ते उमगजला ने निमगजला, ते ऊँडी बहे छे ताम ।
त्यारो विस्तार छे अति घणो, त्यांरो गुण प्रमाणे छे नाम ॥ ३१ ॥
गुफा लाबी जोजन पचास नी, पर्वत प्रमाणे जाण ।
ते पहुली जोजन बारे तणी, ऊँची आठ जोजन प्रमाण ॥ ३२ ॥
इकवीस जोजन गुफा मे गया, नदी उमगजला छे ताम ।
ते तीन जोजन चोडी वहे, तिणरो गुण प्रमाणे नाम ॥ ३३ ॥
तिहा थी दोय जोजन आघा गया, नदी निमगजला छे ताम ।
ते पिण तीन जोजन चोडी वहे, तिणरो गुण प्रमाणे नाम ॥ ३४ ॥
हाड कलेवरादिक तेहनें, उमगजला ऊँचा आणे सताब ।
बारे नांखे दे तेहने, निमगजला नीचा दे दाब ॥ ३५ ॥
एहवी गुफा नदी ने उलंघनें, जासी वेताढ पर्वत पार ।
बल पराक्रम पुन्न रा जोग सूं, छव खंड रो सिरदार ॥ ३६ ॥

इसडा किरतब करे जाणतो जी, भरत नरिंद्र राजान।
मोक्ष गामी छे इणभवे, तिणरे घट छे सुद्ध गिनान ॥३७॥
त्यांने ज्ञान सूं माठा जाणने, छोड़ देसी ततकाल।
शिवपुर जासी कर्म काटनें जी, चारित्र चोखो पाल ॥३८॥

दुहा

चक्ररत्न पूठे पूठे चालता, सेना सहित साहस धीर।
उतकष्टो सिंघनाद करता थका, आया उमगजला नें तीर ॥१॥
जब बढईरत्न बोलायने, कहे छे भरत महाराय।
उमगजला नदी नें विषे, पाज बांधो सताब सूं जाय ॥२॥
अनेक सईकडांग मे, थांभा लगाए ताय।
ते चले कपे नही तेहवा, वले आलबन भीत बणाय ॥३॥
ते कीजे सगलाई रत्न मे, सुखे सेना उतरे जिम ताय।
ते करे वेग सताब सूं, पाछी आज्ञा सूंपे आय ॥४॥
बढईरत्न सुण हर्षित हुवो, पाज बांधी सताब सूं जाय।
उमग निमगजला ऊपरे, करने आज्ञा पाछी सूंपे आय ॥५॥
जब भरत नरिंद्र सेना सहित सूं, सुखे नदी उतरिया ताम।
तामस गुफानो उत्तर द्वार छे, आय ऊभा तिण ठाम ॥६॥
ते कमाड आफेई ऊघड्या, मोटा मोटा करता शब्द।
सर सर करता पाछा ऊसर्या, आ पुन्न तणी छे लब्ध ॥७॥
तिण काले नें तिण समे, आपात नामे चिलात।
एकदा प्रस्तावे त्यारा देस मे, ऊठ्या घणा उतपात ॥८॥
ते कुण २ उतपात ऊठ्या तिहां, आगूच लखायो बुराकार।
उद्वेग पाम्यां छे किण विधे, ते किण विध करे छे विचार ॥९॥

ढाल : ३६

[सुण हे सुवटी मत कर छतनी]

ते वड बडा छे राजवी रे, आपात नामे चिलात।
अगाध ऋद्धि छे जेहनी, दर्पवंत विख्यात।
आपात चिलाती, ते प्रभूत घणा ऋद्धिवान *॥१॥
विस्तीरण भवन छे अति घणा रे, सयन आसन प्रसिद्ध।
वाहन रथ अश्वादिक, आकीर्ण घणी छे ऋद्ध ॥२॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

धनवान त्यांरे घणो रे, सोनो रूपो घणो प्रभूत।
विस्तीरण वल वाहन घणा रे, वले ऋद्धि घणी अद्भूत॥३॥
ते संग्राम करवाने विषे रे, लब्ध लखी छे रे ताय।
सूर वीर छे अति घणा, त्यानें जीता किण सूं न जाय॥४॥
वले प्रज्ञा सूर छे सांतरा रे, वोले वच छे रे ताहि।
पर धरती लेवा सूर छे, दातारपणो त्या मांहि॥५॥
उतपात ऊठ्या तिण देश मे रे, सईकडांग मे ताम।
ते भय भ्रांत हुवा देखने, पछै भेला हुआ एक ठाम।
सुणो भाई राजां, करवो कवण विचार॥६॥
मांहोमांहि वोलायनें रे, कहिवा लागा रे आम।
इम निश्चे देवाणुप्पिया, आपे भेला हुवा इण काम॥७॥
आपांरा इण देश मे रे, ऊठ्या घणा उतपात।
हिवडां ते परगट हुवा, तो विगडी दीसे वात॥८॥
अकाले अंवर गाजियो रे, आयां विना वरषात।
वले अकाले वीजली, खिवी खिवी झवोला खात॥९॥
वले विरख अकाले फूलिया रे, ते हुआ घणा फल फूल।
इण अहलाणे आपा तणो, काई हुवेला सूल॥१०॥
आकाशे नाचे देवता रे, ते पिण वारूं रे वार।
ते खवर नहीं आपां भणी, पिण कांयक छे वुराकार॥११॥
एहवा इत्यादिक अति घणा रे, सईकडांग मे रे जाण।
वुरा वुरा जे चहन छे, प्रगट हुआ छे आण॥१२॥
आज पहिलां इण देश मे रे, उतपात न दीठा रे ताहि।
उतपात हुआं थी होसी वुरो, गिणिया दिनां रे रे मांहि॥१३॥
जिण दिशि वुरो हुवे जेहनें रे, आगूंच पडे लखाव।
ते जोग मिल्यो छे आपणे, तिणरो करो कोयक उपाव॥१४॥
आपांरा इण देशमें रे, उपद्रव मोटो रे थाय।
कष्ट हुतो दीसे घणो रे, ते मेटणरो नहीं उपाय॥१५॥
मन हणाणो तेहनो रे, संकल्प विकल्प ताहि।
चिंता रूप सागर मझे, प्रवेश कियो तिण मांहि॥१६॥
हाथ तला मुख थापनें रे, ध्यावे आरतध्यान।
भूम दिष्टि छे जेहनें, सोच करे राजान॥१७॥
विलापात करे घणा रे, जाणे होसी कुण हवाल।
ओ विणासकाल दीसे वुरो, तिण आडी न दीसे ढाल॥१८॥

ते अत्यंत दुखी हुआ घणा रे, देखे घणा उतपात।
हिवे किण विध विगडे तेहनी, ते सुणो तिणरी बात ॥ १६ ॥
तिण अवसर सेना भरत री रे, चक्ररत्न रे लाल।
सीहनाद करती थकी, निकली गुफा रे बार ॥ २० ॥
जब आपात चिलाती राजवी रे, कटक अणीनें रे देख।
कोप्या शीघ्र उतावला, जाग्यो अंतर धेख ॥ २१ ॥
माहोमां भेला थई रे, कहे मांहोमा रे आम।
ए कुण छे अपत्थ पत्थिया, भूंडा लखणा रा ताम ॥ २२ ॥
ए लज्जा लिखमी रहित छे रे, ते आया छे इण ठाम।
आपणो देश लेवा भणी, शीघ्र आवे छे ताम ॥ २३ ॥
तिण कारण आपे सहु रे, यांनें आवा मत दो रे आम।
दिशो दिशि यांनें भगाय दां, करे भारी संग्राम ॥ २४ ॥
ओ भगायो नहिं भागसी रे, इणरे पुन्न रो संचो छे पूर।
ओ मोख मे जासी इण भवे, कर्म करे चकचूर ॥ २५ ॥

●

दुहा

एहवी कीधी मांहोमा विचारणा, सगलां वचन कियो अंगीकार।
संग्राम करवा कारणे, हुआ सताबसूं त्यार ॥ १ ॥
शस्त्र शरीरे बांधिया, ते पिण ठामो ठाम।
सूरपणो मन मांहे मानता, विरुदावलियां बोलावता ताम ॥ २ ॥
बहुमोला आभरण त्यारे पहरणे, सुरभिगंध फूलां करने सहीत।
चदन लेप लगाविया, सिणगार कियो रूडी रीत ॥ ३ ॥
मस्तक चहन धरावता, ते निर्मल वर प्रधान।
आयुध भाल्या रूडी रीतसूं, धरता मन अभिमान ॥ ४ ॥
जाणे आवा न दां इण देशमे, देस्यां तुरत भगाय।
इसडी धारे नें नीकल्या, अणी सममुख चाल्या ताय ॥ ५ ॥

ढाल : ३७

[संग्राम मंडाणो रे०]

भरत नरिंद्र राजा री रे, सेना घणी भारी रे।
आगली अणी देखो रे, जाग्यो त्यानें धेखो रे।
त्यांसूं जुझ करवाने आया छे उतावला रे*॥ १ ।

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सेना अणी सूं तामो रे, करवा लागा संग्रामो रे।
आमां साहमां परिहारो रे, मूंक्या तिणवारो रे।
घणा मिनखां रा घमसाण हूआ तिण अवसरे रे॥ २ ॥

सेना अणी हणाणी रे, दही जेम मथाणी रे।
सेना थी हुंती आघी रे, तेतो हार भागी रे।
आपातचिलात त्यांने जीती लिया रे॥ ३ ॥

वीर प्रधान जोधा रे, ते पड गया बोदा रे।
ध्वजा पताका पाड्या रे, भूंडी रीत न्हसाड्या रे।
वले डेरानें लूंटे लिया त्यारा जोर सूं रे॥ ४ ॥

हुंता घणा अहंकारी रे, त्यांनें भूंय हुई भारी रे।
जोर कोई न लागो रे, दिशो दिश गया भागो रे।
पाछोनें मंडियो नही जाए तेहथी रे॥ ५ ॥

सेना जाए न्हाठी रे, दिशो दिश जाए त्रासी रे।
सेनापति त्यानें देखो रे, जाग्यो धेष विशेखो रे।
अणी भागी देखेनें सेनापति कोपियो रे॥ ६ ॥

कमला मेल घोडो रे, तिणरे तिणसूं जोडो रे।
ते अश्वरत्न छे सेंठो रे, तिण ऊपर बेठो रे।
तिण खडग लियो भरत नरिंद्र रा हाथ थी रे॥ ७ ॥

अश्वरत्न मतगो रे, खडग रत्न छे चगो रे।
तिण अश्व असवारो रे, खडग हस्त मझारो रे।
सेनापति जोध जोरावर सूरमों रे॥ ८ ॥

ते सीहनाद ज्यूं गाजे रे, पडगो घोडा रो बाजे रे।
हाथ में खडग झलके रे, जाणे बीजली चलके रे।
तिणनें देखेनें सगलाई धड धडधूजिया रे॥ ९ ॥

आपातचिलातो रे, त्यांनें करवा निपातो रे।
आयो तिण ठामों रे, त्यासूं कियो सग्रामो रे।
खडग रत्न सूं कतल कियो तेहनो रे॥ १० ॥

आपातचिलातो रे, त्यांरी कीधी छे घातो रे।
हत पर हत हथिया रे, दहीनी परे मथिया रे।
ध्वजा नें पताका त्यारा लूटे लिया रे॥ ११ ॥

वर प्रधान वीरा रे, हुता सुभट सधीरा रे।
जोरावर जोधा रे, ते पिण पड गया बोदा रे।
ते पिण सेगापति रत्न देखेनें धूजिया रे॥ १२ ॥

जोर कोई न लागो रे, दिशो दिश गया भागो रे।
हार परगया हणाणा रे, घणा सुभट मराणा रे।
न्हासे गया सर्व डेरा छोडनें रे॥ १३ ॥

घणा सुभट मराणा रे, जव घणा सीदाणा रे।
हुआ घणा भय भ्रांतो रे, त्रास पामी अत्यंतो रे।
प्रहारां पीड्या उद्वेग पाम्यां घणा रे॥ १४॥

भय पाम्यां अथागो रे, मननो वल भागो रे।
जुझ करवासूं घाया रे, जावक होय गया काया रे।
पुरुषाकार पराक्रम त्यांरो छिप गयो रे॥ १५॥

शक्ति शरीर री न कायो रे, पाछो मडियो न जायो रे।
सेनापति रो तापो रे, निजरां दीठो आपो रे।
समर्थ नही आपे इणने जीपवा रे॥ १६॥

एहवो तेज प्रतापो रे, सेनापति रो आतापो रे।
त्यांने भरत राजानो रे, जाणे सर्व धूर समानो रे।
याने छोड संजम ले जासी मुगत मे रे॥ १७॥

दुहा

आपातचिलाती तेहने, पडियो सेनापति रो ताप।
अनेक जोजन न्हासे गया, त्यांरा मन मांहे सोग संताप॥ १॥
आगे सहु एकठा मिल्या, वले मिसलत कीधी मांहोमांय।
जिहा सिंधु नदी तिहां आयने, वालू रेत पाथरे आय॥ २॥
ते वालू सथारे वेसने, वस्त्र दूरा करे ताम।
तेलो कियो कुल देवता ऊपरे, मुख ऊंचो राखे तिण ठाम॥ ३॥
त्यांरा कुलरो मरे हुवो देवता, तिणरो मेघमाली छे नाम।
ते नाग कुमार छे देवता, तिणरो ध्यान ध्यावे तिण ठाम॥ ४॥
तीन दिन पूरा हुवां, आसण चलियो तिण ठाम।
आसण चलियो देखने, अवधि प्रज्यूंज्यो ताम॥ ५॥
अवधि करेने त्यांनें देखने, मांहोमां बोलाय कहे आम।
आपात चिलाती आपां ऊपरे, तेलो कियो तिण ठाम॥ ६॥
तिण कारण आपां भणी, ते श्रेय भलो छे ताय।
तिण ठामे जाय प्रगट हुआ, यारा पूरा मनोरथ जाय॥ ७॥

ढाल : ३८

[गुरु कहे राजा तू एहवो ए]

इम मांहोमां करे विचार ए, सगला वचन कियो अंगीकार ए।
उतकष्टी चाल चाल्या तास ए, आया देवता त्यांरे पास ए॥ १॥

आकाशे ऊभा रुडी रीत ए, म्हानी घूघरी करे सहीत ए।
पंचवर्णा वस्त्र प्रधान ए, त्यारे पहरण सोभायमान ए॥ २ ॥
आपातचिलाती सूं ताम ए, देवता बोले छे आम ए।
किण कारण किया वालू संथार ए, किण कारण म्हांव्या वस्त्र सार ए॥ ३ ॥
मुख ऊंचो करे सूता आम ए, वले तेलो कियो किण काम ए।
म्हांने याद किया किण काज ए, तिण कारण आया म्हे आज ए॥ ४ ॥
म्हे मेघमाली स्वयमेव ए, नाग कुमार छां म्हे देव ए।
थांरा कुल देवता छां तास ए, तिण सूं म्हे आया थांरे पास ए॥ ५ ॥
हिवे कारज भलावो मोय ए, थांरे जे कोई मन माहे होय ए।
म्हांरे छे थांसूं हेत सनेह ए, थे कहिसो ते करसूं तेह ए॥ ६ ॥
ए वचन सुणनें आपात ए, हिया माहे हर्ष न मात ए।
ठाम थी ऊठ ऊभा थाय ए, मेघ माली देव पे आय ए॥ ७ ॥
दोनूं हाथ जोडी शीस नाम ए, वले मुख सूं करे गुणग्राम ए।
त्यांनें जय विजय करेंनें वधाय ए, घणी विरुदावलियां बोलाय ए॥ ८ ॥
विनो करनें कहे छे ताय ए, म्हांनें वेला पडी छे आय ए।
कोई अपत्थ पत्थियो आय ए, म्हांने जुझकर दिया भगाय ए॥ ९ ॥
म्हांरा सुभटां रो कियो विनाश ए, तिणसूं अठे आया म्हे न्हास ए।
इसरी म्हारी तो शक्ति न काय ए, जुझ कर इणने देवां भगाय ए॥ १० ॥
तिणसूं किया तेलादिक आण ए, आपरो ध्यान कीधो जाण ए।
तिणसूं स्वयमेव आया आप ए, मेटो म्हारो सोग संताप ए॥ ११ ॥
इणनें हणो थें सनमुख जाय ए, ज्यूं ओ आघो न सके आय ए।
जुझ कर इणने देवो भगाय ए, तो ज्यूं म्हानें सुख थाय ए॥ १२ ॥
जब मेघमाली तिण ठाम ए, त्यांने उत्तर कहे छे आम ए।
ओतो भरत नामें राजान ए, चक्रवर्ति छे मोटो पुन्नवान ए॥ १३ ॥
तिणरे रिद्धि घणी अथाग ए, मोटी जोत क्रान्ति महाभाग ए।
तिणरा सुख ने शक्ति अत्यंत ए, सूरवीर घणो बलवंत ए॥ १४ ॥
निश्चे नही इण लोक के मांय ए, इणने पाछो वाल्यो जाय ए।
देवता दानव किन्नर अनेक ए, वले किंपुरुष देव विशेख ए॥ १५ ॥
महोरग नें गंधर्व जाण ए, इत्यादिक व्यंतर जाति पिछाण ए।
इत्यादिक देव अनेक ए, यामे समरथ नही कोई एक ए॥ १६ ॥
साह्मो मंडे भरत सूं जाय ए, जुझ कर देवे भगाय ए।
आघो आवा न दे सोय ए, इसरो नहि दीसे कोय ए॥ १७ ॥

वले शस्त्र अगन रे जोग ए, अथवा मंत्र नें प्रजोग ए।
इत्यादिक उपद्रव मांहिं ए, भरत नें करवा समरथ नाहिं ए॥ १८॥
पिण म्हे थांरी प्रीत रे काज ए, उपसर्ग करस्या भरत ने आज ए।
म्हारे स्नेह थांसूं छे ताम ए, तिणसूं करसूं ए काम ए॥ १९॥
इम करे गया त्यांसूं बात ए, जाय कीधी वेक्रे समुद्रघात ए।
भरत राजा तणो अभिराम ए, आया विजय कटक तिण ठाम ए॥ २०॥
विजय कटक ऊपर कियो गाज ए, तिणरो घोर शब्द ओगाज ए।
बिजलियां खिंवे ततकाल ए, झबाझब करे विकराल ए॥ २१॥
शीघ्र मेह कियो ततकाल ए, ते पाणी पडे दगचाल ए।
धारा मूसल प्रमाणे जाण ए, तिण पाणी रो नही प्रमाण ए॥ २२॥
ओघ मेह समूह वर्षांत ए, बूठो सात दिवस ने रात ए।
जब भरत राजा तिण वार ए, पाणी बूठो जाण्यो एक धार ए॥ २३॥
जब चर्म रत्न तिण वार ए, तिणने लीधो हाथ मझार ए।
तिणरो श्रीवच्छ रूप आकार ए, हाथ लागा कियो विस्तार ए॥ २४॥
जाझेरो बारे जोजन प्रमाण ए, कटक हेठे पसर्‍यो जाण ए।
हिवे छत्र रत्न लियो हाथ ए, ऊंचो करवाने नरनाथ ए॥ २५॥
एहवा चर्म छत्र रत्न ए, त्यारा देवता करे जत्न ए।
त्यानें त्यागसी वेराग आए ए, इण भव मे जासी निर्वाण ए॥ २६॥

दुहा

छत्र रत्न छे तेहने, सिलाका निन्नाणू हजार।
ते कचन मे रलियामणी, ते सोभे घणो श्रीकार॥ १॥
तिण छत्र रत्न रे दड छे, ते पिण अमोलक तांहि।
गांठादिक दोष रहित छे, रूडा लक्षण तिण माहि॥ २॥
विशिष्ट मनोगत अति घणो, हृष्ट पुष्ट सोवन मे ताम।
भार नो सहणहार छे अति घणो, इसडो छे दड अभिराम॥ ३॥
सुख माल घठार्‌यो मठारियो, वाटलो रूपा माहि वखाण।
ते छत्र मनोहर अति घणो, ते ऊजलो श्वेत पिछाण॥ ४॥
अरविंद फूल नी कर्णिका, ते समरूप वखाण।
मझ भागे आकार पिंजर तणो, ते घणो मनोज्ञ पिछाण॥ ५॥
तिणरे भांत छे विविध प्रकार नी, विविध प्रकार नां चित्राम।
मणि चंद्रकांतादिक तेहने, मोती प्रवाली रची ठाम ठाम॥ ६॥

तपाया रक्त सोवन मझे, पच प्रकारे रत्न बखाण।
त्या करे रूप रच्या घणा, पूर्णकलशादिक मंगलीक जाण ॥ ७ ॥

ढाल : ३६

[बावीसमा श्री नेम०]

रत्नां री किरण रूडी तिणरी क्राति ए, समी रचना तिणरे कीधी भांति ए।
अनुक्रमें जथाजोग रंग ठाम ठाम ए, त्यां रग रचना सोभे अभिराम ए॥ १ ॥
राज नें लक्ष्मी रा चिन्ह तिण माहिं ए, अर्जुन सोवन करे ढाक्यो छे ताहि ए।
ते पूठलो भाग छत्र तणो जाण ए, ऊजलो पडूर श्वेत दखाण ए॥ २ ॥
तवणीज्ज रक्त सोवन मांहे तास ए, पाटिया छे तिणरे चिहु पास ए।
ते अधिक सश्रीक अतिही सोभत ए, देखणहार नो मन हर्षंत ए॥ ३ ॥
रूप पूनम चद मडला समाण ए, लाबो पोहलो नरिंद्र री भुजा प्रमाण ए।
सहज स्वभाव निरतर जाण ए, विस्तरे जब अनेक जोजन प्रमाण ए॥ ४ ॥
चन्द्रविकासी कमल वन खड ए, तेह समान धवलो प्रमड ए।
भरत राजा नो चलतो विमाण ए, एहवो छत्र रत्न बखाण ए॥ ५ ॥
सूर्य आताप वायरो वर्षात ए, या तीनूंई दोष ने करदे निपात ए।
एहवो सुखकारी छे छत्र रत्न ए, सर्व सेना तणो कर दे जत्न ए॥ ६ ॥
पूर्व तप गुण किया प्रधान ए, तिण करे पामियो छे एह निधान ए।
घणा गुण अखडित तेहनों दातार ए, इण सूं बड बडा गुण पामे श्रीकार ए॥ ७ ॥
छहू रितु तणा सुखनो छे दातार ए, वले दुखा रो दूर निवारण हार ए।
तिण छत्र री छाया घणी सुखदाय ए, सर्व रोग नें सोग विले होय जाय ए॥ ८ ॥
उतकष्टो छत्र रत्न प्रधान ए, गुणोपेत सोभ रह्यो उनमान ए।
अल्प पुन्निया जीवनें पामणो दोहिलो ए, जिण तिण ने नहिं पामणो सोहिलो ए॥ ९ ॥
तिणरो अधिपति हुवे छे घणो गुणवत ए, ते छव खंडरो राज निश्चे करंत ए।
एक सहंस आठ लक्षण हुवे ताय ए, इण गुण विना अधिपति इणरो न थाय ए॥ १० ॥
पूर्व भव तप गुण तणे प्रताप ए, एहवो छत्र रत्न पाया भरत जी आप ए।
ए रत्न चक्रवर्ति विना सर्वने दोहिलो ए, विमाणवासी देव ने पिण नहि सोहिलो ए॥ ११ ॥
तिणरे लहक रही घणी फूला री माल ए, चन्द्रमा सरीखो प्रकाश उजवाल ए।
तिणरे अधिष्ठायक छे सहस देवता ए, ते पिण छत्र रत्न ने सेवता ए॥ १२ ॥
धरणी नले जाणे ऊगो छें चंद ए, तिण दीठां पामे सर्व जीव आनद ए।
इसडो छे छत्र रत्न निधान ए, तिणमे गुण घणा अदभुत असमान ए॥ १३ ॥
एहवो छत्र रत्न गुण खाण ए, तिणरे भरतजी हाथ लगावत पाण ए।
जव विस्तरयो जाभेरो जोजन बार ए, ते शीघ्र ततकाल तिरछो तिणवार ए॥ १४ ॥

तिण छत्र ने स्वयमेव भरत जी आप ए, सर्व सेना ऊपर छत्र दियो थाप ए।
वले मणिरत्न लियो हाथ मझार ए, छत्र दंड रे मध्य मूंक्यो तिण वार ए॥ १५॥
तिण मणिरत्न तणो अत्यंत उद्योत ए, घणी लाग रही छे झिगमिग जोत ए।
तिण जोत न्हसाड दियो अधकार ए, झाझेरो बार जोजन विस्तार ए॥ १६॥
जब गाथापति रत्न प्रधान निधान ए, धानादिक निपजावणने सावधान ए।
तिणरो रूप घणो छे अत्यंत अनूप ए, तिण रत्न रो अधिपति भरतजी भूप ए॥ १७॥
जिहां चर्म रत्न विस्तास्यो राजान ए, तिण ऊपर बाह्यो गाथापति धान ए।
साल जव गेहूं मूंग ने मास ए, तिल ने कुलत्थ चिणादिक खास ए॥ १८॥
इत्यादिक धान अनेक प्रकार ए, त्यांरो जुवो छे घणो विस्तार ए।
वले कद आदादिक तेहनी जात ए, वले आंबा ने आबली प्रसिद्ध विख्यात ए॥ १९॥
हरी तरकारी नी जात अनेक ए, घणी जातरा फल ने फूल विशेख ए।
तोरी तूंबादिक अनेक रसाल ए, जे छहू रितु मे निपजे सदा काल ए॥ २०॥
पत्र साकादिक अनेक रसाल ए, ते पिण निपजे छहू रितु काल ए।
इत्यादिक अनेक रसाल बखाण ए, त्याने निपजावण हो छे चतुर सुजाण ए॥ २१॥
एहवो गाथापति रत्न श्रीकार ए, तिणरे अधिष्ठायक देवता एक हजार ए।
तिणरा मनोगत चिंतव्या करे छे काज ए, धानादिक निपजावे जब तेहनो साज ए॥ २२॥
ज्यारे देवता किंकर जेम हजूर ए, तिण पुन्न पाछिल भव मंचिया पूर ए।
तिणरा गुण छे प्रसिद्ध लोक बिख्यात ए, तिणरी देवता पिण नही लोपे छे बात ए॥ २३॥
दिवसे बावे छे धानादिक सर्व रसाल ए, तिण हिज दिन लूणे ततकाल ए।
ऊगा ने आथमियां निपजावे धान ए, इसडो छे गाथापति रत्न निधान ए॥ २४॥
रूपा मे कलश अनेक हजार ए, ते पिण करदे ततकाल मे त्यार ए।
त्यांने भर भर धानादिक सूं अति पूर ए, ते आण म्हेले भरत हजूर ए॥ २५॥
गाथापति निपजावे ते सर्व रसाल ए, ते सर्व सेना ने पोहचावे काल'रा काल ए।
ऊणायत रहे नही किणरेई कांय ए, सर्व सेना तिरपत रहे ताय ए॥ २६॥
तिण अवसर सेना नें भरत राजान ए, त्यारे नीचे छे चर्म रत्न निधान ए।
ऊपर छे छत्र रत्न त्यारे तास ए, मणिरत्न तणो होय रह्यो परकाश ए॥ २७॥
सुखे सुखे इण रीते काढ्या दिन सात ए, भूख पिण किण ही न काढी अस मात ए।
दीनपणो नें भय पामिया नांहि ए, दुख पिण किण ही न पाम्यो मन मांहि ए॥ २८॥
एहवो पुन्न तणो छे प्रताप ए, त्यांने पिण जाणे छे भरतजी विलाप ए।
ज्याने पिण छोड देसी ततकाल ए, मोख जासी सुध सजम पाल ए॥ २९॥

दुहा

भरत नरिंद्र तिण अवसरे, सात दिवस पूरा हुआ ताम।
जब अध्यवसाय मन ऊपनो, वले इसडा वरत्या परिणाम॥ १॥
ओ कुण छे अपत्थ पत्थियो, लज्जा लिछमी करने रहीत।
तिण म्हारी सेना कटक ऊपरे, विरखा करे कुरीत॥ २॥
मूसलधारा पाणी पडे, विरखा करे छे अपार।
ते भाव भरतजी रा देवता, जाण लिया तिण वार॥ ३॥
इम जाणे ततकाल त्यारी हुआ, देवता सोले हजार।
आयुध ठामो ठाम बांधनें, शस्त्र लीवा हाथ मझार॥ ४॥
जिहां मेघ माली छे देवता, तिण ठामे आया ततकाल।
मेघ माली देवता भणी, करला वचन बोल्या विकराल॥ ५॥

ढाल : ४०

[चउपई नीं]

अरे मेघ मुखिया थे नागकुमार, अपत्य पत्थिया थे मूढ गिंवार।
अकाले मरण रा वांछण हार, थामे लज्जा न दीसे मूल लिगार॥ १॥
किसूं रे तुम्हे नहीं जाणो छो आम, ए भरत क्षेत्र रा अधिपति स्वाम।
चाउरत चक्रवर्ति भरत राजान, छव खड रो इद्र मोटो रिद्धिवान॥ २॥
म्हे सोले सहस छा सेवग देव, म्हे तेहनी सेव करां नितमेव।
एहवो भरत नरिंद्र राजिंद, जाणे पूनम केरो चद॥ ३॥
त्याने देव दानव व्यतर नी जात, च्यारूंई जातरा देव विख्यात।
ते भरत नरिंद्र राजिंद्र ने सोय, उपद्रव करे न सके कोय॥ ४॥
तो पिण तुम्हे इण ठामें आय, जिहां सेना सहित भरतेस्वर राय।
त्यांरा कटक ऊपरे थे मूसलधार, विरखा आण कीधी इण वार॥ ५॥
पाणी वर्षायो थे मूसलधार, सात दिवस लगतो इण वार।
अजेस थारो ओहीज ध्यान, थारी भिष्ट हुई छे अकल विज्ञान॥ ६॥
थे कीधो घणो छे दुष्ट अकाज, तिणसू लाज शर्म थारी जासी आज।
केतो अजेस सावटलो मेह, नही तर किया पावोला एह॥ ७॥
केतो सावटलो तरत सताव, राखी चावो जो इज्जत आब।
जेज करोला सहल गिणंत, तो जीतव नो आयो दीसे अत॥ ८॥
इम सुणने मेघ मुख नाग कुमार, अत्यत भय पाम्यो तिणवार।
त्रास घणी पामी तिण ठाम, जाण्यो इसडो कदे करा नही काम॥ ९॥

भय भ्रांत हुआ त्यां साह्मो न्हाल, वर्षा सांवट लीधी ततकाल।
डरता न्हास गया छे तास, आपात चिलाती रे आया पास ॥ १० ॥
आपात चिलाती नें कहे छे आम, ओ भरत नरिंद्र छव खंड रो स्वाम।
ओ चक्रवर्ति छे मोटो राजिंद, जाणे पूनम केरो चंद ॥ ११ ॥
च्यारूंई जातरा देवता माहि, इणने भगावण समरथ नांहि।
वले भरत नरिंद्र राजिंद ने सोय, उपद्रव करे न सके कोय ॥ १२ ॥
म्हे पिण तुम्हारी प्रीति नें काज, उपसर्ग करे गमाई लाज।
तिणने उपसर्ग दुख न हुवो लिगार, म्हे पिण न्हास आया इण वार ॥ १३ ॥
तिणसूं बेगा जावो जिहां भरत राजान, त्यारे पगे पडो छोडे अभिमान।
जीवां वचण रो ओहिज उपाय, ओरतो कारी न लागे काय ॥ १४ ॥
तिण कारण स्नान करे शुद्ध थाय, वलिकर्म करो सताब सूं जाय।
दुःस्वप्ना निवारण काज, प्रायश्चित मंगलीक करनें आज ॥ १५ ॥
भीना वस्त्र पहरो ततकाल, त्यारा छेहडा नीचा राल।
नीचो मुख धरती साहमो न्हाल, वले भारी भेटणो रत्न रसाल ॥ १६ ॥
एहवो भेटणो मोटो लेई साथ, वले दोनूंई जोडे हाथ।
त्यारे पगा भेटणो मेलो जाय, पछे भरत नरिंद्र रे लागो पाय ॥ १७ ॥
उत्तम पुरुष भरतेश्वर राय, तेहिज थाने शरणागति थाय।
त्याने जातां भय म करो लिगार, थाने भरत होसी हितकार ॥ १८ ॥
इम कहे देवता वारूवार, यानें सीख दीधी छे घणी हितकार।
इम कहे देवता गया ठिकाण, यां पिण वचन कियो परमाण ॥ १९ ॥
ते सगलाई राजा नमसी आय, भरत रा पुन्न तणे पसाय।
त्यामे पिण नही राचे महाराय, दीक्षा ले जासी मुगत रे मांय ॥ २० ॥

दुहा

मेघमाली देवता गया पछे, ऊठी ने ऊभो थाय।
स्नान करे वलिकर्म किया, मंगलीक किया छे ताय ॥ १ ॥
भीना वस्त्र पहरने, त्यांरा नीचा छेहड़ा राल।
नीचो मुख राख्यो दिष्टि धरतीये, देवा कह्यो ते वचन रसाल ॥ २ ॥
बहु मोला भारी भारी रत्न रो, भेटणो लीधो ताय।
जिहां भरत नरिंद्र राजिद छे, सगला आण ऊभा छे आय ॥ ३ ॥
अंजली जोड कीधी तिहां, दोनूं मस्तक हाथ चढाय।
जय विजय करेंने वधावता, विरुदावलियां अनेक बोलाय ॥ ४ ॥

बहु मोला रत्ना रो भेटणो, मेल्यो भरत जी रे पाय।
हिवे गुण कीर्ति किण विध करे, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५ ॥

ढाल : ४१

[राजिंद हो हो वात सुणो नारी तणी]

वसुधरा छखंड पृथ्वी तणा, थे गणधर छो गुणवंत। राजिंद।
जयवत छो वेरी जीतनें, लज्जा लिछमी धीरज कर सत। रा०।
थें भला पधास्या इण देश मे* ॥१॥
थे कीर्ति धारक नरिंद्र छो, हजारां गमे लक्षण सहीत। रा०।
थे राज घणा काल पालजो, सुखे समाधे रूडी रीत। रा० ॥२॥
थे हयपति गयपति नरपति, नव निधानपति छो ताम। रा०।
भरत क्षेत्र रा प्रथमपति, बत्तीस सहंस देश ना स्वाम। रा० ॥३॥
चिरजीवी घणा काल जीवजो, प्रथम नरेश्वर छो ताम। रा०।
सहसागमे महिलां तणा, प्राण वल्लभ छो स्वाम। रा० ॥४॥
थे ईश्वर चवदे रत्ना तणा, थांरो जश फेल्यो सगले अत्यत। रा०।
तीन दिशि धरती समुद्र लगे, उत्तर दिशि पर्वत हेमवंत। रा० ॥५॥
थें सर्व भरत क्षेत्र तणा, अधिपति मोटा राजान। रा०।
म्हे छा तुम्हारा देशना, सेवग छा वसिवान। रा० ॥६॥
थें छो म्हारा अधिपति, म्हे छा तुम्हारी रेत। रा०।
म्हे किंकर भूत छां आपरा, थे म्हारा शिर धणी म्हेत। रा० ॥७॥
इचरज कारणी छे तुम तणी, रिध जोत क्रांति अदभूत। रा०।
जश कीर्ति इचरज कारणी, इचरज कारी तुमारा सूत। रा० ॥८॥
बल वीर्य तुम्हारो देखने, म्हे हुआ घणा भयभ्रात। रा०।
पुरुषाकार पराक्रम तुम तणो, तुरत करे दुश्मन री घात। रा० ॥९॥
जोत क्रांति तुम्हारी देवतां जिसी, देवनी परे छे तुम भाग। रा०।
लाधी पामी रिध सनमुख हुई, तिणरो कहिता न आवे थाग। रा० ॥१०॥
पिण म्हे अपराधी छा आपरा, कियो घणो अपराध। रा०।
साहमा मंडिया आप थी, तिणसूं हुई छे म्हारे असमाध। रा० ॥११॥
आप पधास्या इण देश मे, जो म्हे पगा लागता सताव। रा०।
जो म्हे साह्मां न मडता आप थी, तो म्हे क्यांने पडावता आव। रा० ॥१२॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

म्हे ऊंधी करे विचारणा, कियो थांसूं संग्राम। रा०।
तो म्हे वड बडा जोध मराविया, यूंही पराई माम। रा० ॥ १३ ॥
म्हे आपने कानां सुणिया नही, गुण पिण नही सुणिया लिगार। रा०।
तिणसूं अविनो कियो म्हे आपरो, मूल न कियो विचार। रा० ॥ १४ ॥
म्हें अपराध कियो तिको, ते खमजो म्हांरो अपराध। रा०।
आप निजर करो म्हां ऊपरे, तो म्हांने हुवे परम समाध। रा० ॥ १५ ॥
वले इसडो अकारज म्हे करा नही, जीवांजांलग इण भव माय। रा०।
हाथ जोडी पगां पड्या, मस्तक नीचो नमाय। रा० ॥ १६ ॥
म्हें शरणे आया छां आपरे, म्हाने आप तणो छे आधार। रा०।
म्हे किंकर छां आपरे, इम कहिवा लागा वारूंवार। रा० ॥ १७ ॥
जब भरत राजा तिण अवसरे, आपात चिलाती रो ताय। रा०।
भारी भेटणो आण्यो तिको, लीधो भरतेश्वर राय। रा० ॥ १८ ॥
वले आपात चिलाती ने, कहे भरत महाराय। रा०।
जावो तुम्हे देवाणुप्पिया, वसो हमारी बाह छाय। रा० ॥ १९ ॥
सुखे सुखे बसो निर्भय थका, थाने भय नही किनरो लिगार। रा०।
इम कहे भरत राजा तेहने, घणो दियो सतकार। रा० ॥ २० ॥
वस्त्रादिक सूं सतकार ने, दियो सनमान ने बहुमान। रा०।
सतकार सनमान देई तेहने, सीख दीधी भरत राजान। रा० ॥ २१ ॥
त्याने आण मनाय सेवग किया, ते पिण जाणे छे माया फोक। रा०।
वेराग आणने छोडसी, करनी कर जासी पाधरा मोख। रा० ॥२२॥

●

दुहा

आपात चिलात ने भगावियो, सेनापति घोडे चढि ताम।
तिण घोडा तणो वर्णन करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय। १ ॥
कमला मेल अश्व रत्न छे, असी आंगुल ऊंचो प्रमाण।
नीन्नांणू आंगुल मध्य परिधि छे, एक सो आठ आगुल लांबो जाण ॥ २ ॥
ऊंचो मस्तक आंगुल वत्तीश नो, च्यार आंगुल ऊचा छे कान।
बीस आंगुल बाहां मस्तक हेठली, ते गोडां ऊपरली कही भगवान ॥ ३ ॥
च्यार आंगुल प्रमाण गोडा जानुका, बाहां नें जघा विच विचार।
सोले आंगुल जंघा गोडा हेठली, ऊंची छे आंगुल च्यार ॥ ४ ॥
हृष्ट पुष्ट सगलोई अग छे, सगलो अंग सुन्दराकार।
विशिष्ट पसत्थ रलियामणो, रूड़ा लक्षण गुणधार ॥ ५ ॥

जातिवंत निर्दोष छे, विनेवंत छे आज्ञाकार।
वेत चर्म चावखादिक, तिणरो कदे न खाधो प्रहार ॥ ६ ॥
बेहुं पासे ऊंचो मध्य सांकड़ो, तिणरो दिढ घणो छे शरीर।
तेज पराक्रम तिणरो अति घणो, घणो गाढो छे साहस धीर ॥ ७ ॥

ढाल : ४२

[आ अनुकंपा जिन आगन्यां में]

चोकडो तपनीक तपाव्या सोवन मे, वर प्रधान कनक मे रूडो पिलाण।
विचित्र प्रकारनां रत्न में छे रासि, तिणसूं पलाण बाधे बेहूं पासे ताण।
कमला मेल अश्वरत्न अमोलक* ॥ १ ॥
पागडा सोवन में सोभ रह्या छे, ते कचन मणि रत्न में जडत।
नाना प्रकार नी जालिया छे घटा री, लघु घूघरियां नी जाली अनेक लहकंत ॥ २ ॥
वले मोत्या री जाल्यां करे परिमडि छे, वले मोल्या रा झूंबका लटके अनेक।
ते शोभायमान त्यासूं शोभ रह्या छे, इण सरिखो अश्व वले नही कोई एक ॥ ३ ॥
करकेतन रत्न इद्रनील रत्न, वले मरकेतन मसारगल्ल जाण।
च्यारूं जातरा रत्न करे मुख तिणरो, रूडी रीत रचे कियो शोभाय मान ॥ ४ ॥
वले माणक अनेक सूत सूं पोया, त्यासूं पिण मुख सिणगास्यो ताय।
वले कनक रत्न पद्म वर्ण सरीखो, तिणरो तिलक कियो देवां करे चतुराय ॥ ५ ॥
ते वाहन सुरिंद्र जोग अनोपम, सिणगास्यो थको सोभे अति ही सरूप।
उरहा परहा आभूषण चाले, जब देखणहार नें अधिकी चूप ॥ ६ ॥
तिणरा नयण मिले नही निद्रा करनें, कमल पत्र तणी परे शोभायमान।
धणीनों कारज करवा समरथ पूरो, चचल शरीर तिणरो परधान ॥ ७ ॥
सदा शरीर ढाक्यो कचन जडत वस्त्र सूं, डस मस निमिते वले शोभाने काजे।
तालवो जीभ तपाया सोना वरणा छे, श्रीलक्ष्मी रा अभिषेक मुखरे विराजे ॥ ८ ॥
खुरे धुरी रूडा चरण चत्र्रर पुटा छे, धरणी तलाने घणो हणतो २ चाले।
दोनूं चरण समकाले ऊपाडे, पगां सूं धरती खणेनें खाडो नहीं घाले ॥ ९ ॥
शीघ्र पणे चाले कमल नालिका ऊपर, पाणी ऊपर पिण शीघ्र चाले।
कमल पाणी नेश्राय विना पराक्रम छे तिणरो, निज पोतारा वल पराक्रम सू हाले ॥ १० ॥
जात माता री ने कुल पिता रो, ते दोनूं पक्षा करे निर्मल पूरो।
रूप आकार छे सुंदर तिणरो, पसत्थ विसुद्ध लक्षणा करे रूडो ॥ ११ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

शुकल पिता पक्ष आण ऊपनों, ते मेधावी अत्यंत घणो वुधिवान।
दुष्ट वुद्धि नही भद्रीक स्वभावी, घणी कारज करवानें घणो सावधान ॥ १२ ॥
विनीत घणो स्वामी दिष्ट कारी छे, तिणरी पातली सुखमाल छे रोमराय।
ते चीगटी अत्यंत घणी रोमराई, छबि क्राति अत्यंत रूडी छे ताय ॥ १३ ॥
देवता नों मन वाउ नों गमण, त्यांनें वेगे करी जीपे चाली जीपत।
चपल घणो शीघ्रगामी छे चलिवो, रिखेसर नी परे छे खिमावत ॥ १४ ॥
सुशिष्य नी परे विनीत छे परतख, स्वामी वछित करतो आलस नाणे।
इसडो कमला मेल अश्व रत्न छे, भरत नरिंद्र रे मिलियो पुन्न प्रमाणे ॥ १५ ॥
पाणी अगनि रेणु कर्दम कादो, वालु सहित रेत वले नदी तट जाणो।
पर्वत टूंक विषम ठाम सारी, गिरी दरी आदि अनेक पिछाणो ॥ १६ ॥
इत्यादिक भारी भारी विषम थानक में, उलंघतो संकन आणे लिगार।
प्रेरणहारो थोडी संज्ञा करे तो, ततखिण तेहने उतारे पार ॥ १७ ॥
काले अवसर हीस करे छे, निद्रा ने आलस जीतो छे ताम।
वले जीतो छे सीतापादिक नो परीसो, मल मात्रो करे देखी अवसर ठाम ॥ १८ ॥
जातिवंत माता पख पूरे ऊपनो, तिणरी सुगंधी घणी छे घाण इंद्री नास।
प्रधान कमल नां फूल सरीखा, एहवा छे तिणरा सास उसास ॥ १९ ॥
उतकष्ट सुभट ऊपर पडे अचित्यो, दंड पडे ज्यूं पडे संग्राम।
अत्यंत खेद पाम्यों न करे आंसूपात, रक्त तालुओ दोष रहित छे ताम ॥ २० ॥
सूआ नी परे नीले वरण छे, सुकुमाल कोमल काया छे ताम।
इसडो कमला मेल अश्व रत्न छे, ते मन ने लागे छे घणो अभिराम ॥ २१ ॥
इत्यादि गुण अनेक छे तिणमे, ते सगला पूरा कह्या नही जाय।
वले गहणा ने आभूषण तिणरा, ते पिण पूरा न कह्या छे ताय ॥ २२ ॥
इसडी चीज अमोलक भरत खेतर मे, चक्रवर्ति विना ओररे नहीं थाय।
एतो भरत नरिंद्र रे पुन्न प्रमाणे, अश्व रत्न ऊपनो छे आय ॥ २३ ॥
सहस देवता छे तिणरे अधिष्ठायक, तिणरा सेवग जेम करे छे जतन्न।
ते त्यांरा नेणा ने लागे घणो हितकारी, इसडो पुन्नवत छे अश्व रतन्न ॥ २४ ॥
एहवा अश्व रत्न में गिरधी न होसी, त्याग देसी मन वेराग आण।
सीहतणी परे संजम पाले, इण हीज भव मांहें जासी निर्वाण ॥ २५ ॥

दुहा

तिण कमला मेल अश्व ऊपरे, सेनापति हुओ असवार।
खडग रत्न तिण अवसरे, लीधो हाथ मझार ॥ १ ॥

ते खडग रत्न छे केहवो, ते इचरज चीज अनूप।
तिणरो जथातत्थ वर्णन करू, ते सुणजो धर चूंप॥ २॥

ढाल : ४३

[मुनिवर जीव दया व्रत पालीए]

नीलो उत्पल कमल ना दल सरीखो, सावले वर्ण खडग रतन्न।
सहस देवता छे तिणरे अधिष्ठायक, सेवग जिम करे तिणरा जतन्न। भरतेश्वर।
पुन्न तणा फल जोय* ॥ १ ॥

चद्र मंडल सरीखो तेज छे, तिणरो, सत्रु जननो विनासण हार।
कनक रत्न माहे दड छे तिणरो, मुष्टि ग्रहिवाने हाथ मझार। भर०।
खडग रत्न अमोलक चीज॥ २॥

नवमालती ना फूल सरीखो, सुरभि गध सुगध छे ताम।
नाना प्रकार ना मणि रत्न मे, लता वेल आकार छे चित्राम॥ ३॥
भात चित्राम रत्न ना विविध प्रकारे, चित्रकारी घणा छे असमान।
जाणे नीसाणे घसी घसी निर्मल कीधो, तिखी धारा छे दहदीपमान॥ ४॥
ते खडग रत्न खडगा मे प्रधान, लोक माहें अमोलक चीजो।
कोई खडग रत्न इण सरीखो, भरत खेतर मे नहिं छे वीजो॥ ५॥
वश वेणु वृक्ष शृग भेसादिक, हाडनें दात विविध प्रकार।
लोह तथा वले लोहनो दाडो, त्यारो छे भेदणहार॥ ६॥
वज्र हीरां री जात वर प्रधान छे, त्यारो पिण भेदणहार।
वले दुभेद वस्तुनों भेदणहारो, कठे अटके नहिं छे लिगार॥ ७॥
वले सर्व वस्तु मे अप्रतिहत छे, अमोघ शक्ति खडग रत्न एह।
ते क्या ही खले नही मेल्यो हुंतो, तो किसूं कहिवो उदारीक देह॥ ८॥
ते पच्चास आगुल नो दीर्घ लाब पणे छे, सोले आगुल विस्तीरण जाण।
अर्द्ध आंगुल रो जाड पणे छे, उतकष्टो खडग प्रमाण॥ ९॥
एहवो असि रत्न छे खडग अमोलक, नरपत्ति हाथ मझार।
ते खडग भरत राजा रा पास थी, सेनापति लियो तिण वार॥ १०॥
अश्व रत्न रे ऊपर चढियो, सुषेण सेनापति ताम।
हाथ मे लीधो छे खडग रत्न ने, करवा चाल्यो सग्राम॥ ११॥
आपात चिलाती सूं सग्राम कीधो, हठाय दिया तिण वार।
त्याने पगा लगायने सीख दीधी छे, ते लारे कह्यो विस्तार॥ १२॥

---

*यह आकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

एहवो खडग रत्न छे भरत नरिंद्र नें, तिणसूं पिण राचे नही राजान।
तिणने त्यागे वेरागे संजम लेने, जासी पाचमी गति प्रधान ॥ १३ ॥

दुहा

सीख देई आपात चिलात ने, कहे सेनापति ने बोलाय।
जावो तुम्हे देवाणुप्पिया, सिंधु वारे बीजा खड माय ॥ १ ॥
सिंधु नें पश्चिम लवण विचे, वेताढ ने चूल हेमवंत बीच।
सगली ठाम आण मनाय जो, सम विषम ऊच ने नीच ॥ २ ॥
सगलां नें आण मनायने, भेटणो लेले पगा लगाय।
भारी रत्नादि लेईने तिहां थकी, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपे आय ॥ ३ ॥
सेनापति सुण तिमहिज कियो, आगे खंड साध्यो तिमहिज जाण।
भेटणो ले पाछो आवियो, आज्ञा पाछी सूपी भरत जी नें आण ॥ ४ ॥
चक्र रत्न वले एकदा, आयुध शाला थी नीकल्यो वार।
ऊंचो आकाशे उतपत्यो, सहस देवता सहित तिणवार ॥ ५ ॥
वाजत्र अनेक वाजतां थकां, ईशाण कूण मे जाय।
चूल हेमवंत साहमो चालियो, तिणने देख्यो भरत महाराय ॥ ६ ॥
ए पिण लारे सेना ले नीकल्या, भरत राजा पिण ताम।
चूल हेमवंत सूं दूरा नेरा नही, सेना उतारी तिण ठाम ॥ ७ ॥

ढाल : ४४

[नणदल चिदली दे तथा मुनिवर]

पछे पोषदशाला रे माय, सातमो तेलो कियो छे रायहो। राजिंद वडभागी।
चूल हेमवंत गिरि कुमार, तिणदेव साम्हण तिणवार हो। रा० ॥ १ ॥
तीन दिन पूरा हुआं ताहि, आय बेठा अश्व रथ मांहि हो।
अनेक वाजत्र रह्या छे वाज, सीहनाद ज्यूं करता ओगाज हो ॥ २ ॥
जिहां चूल हेमवत छे ताम, भरत नरिंद्र आया तिण ठाम हो।
चूल हेमवंत सूं तिण वार, रथ सिर फरस्यो तीन वार हो ॥ ३ ॥
रथ ऊभो राख्यो तिण वार, मागध तीरथ जिम विस्तार हो।
इषु वाण तिण ठामे चलायो, बहोत्तर जोजन गयो छे ताह्यो हो ॥ ४ ॥
वाण पडियो त्यांरी मरजादा मे देख, जब जाग्यो त्यांने धेप विशेख हो।
वाण लीधो तिण हाथ मझार, नाम वांच कियो निस्तार हो ॥ ५ ॥

जाण्यो ऊपनो भरत नरिंद्र, पाम्यो मन माहे अधिक आनद हो।
मागध तीरथ ज्यूं विस्तार, प्रीति दान ल्यायो तिण वार ॥ ६ ॥
भेटणो ले जाऊ तास, भरत नरिंद्र रे पास हो।
सर्व ओषधी फूलादिक अनेक, वनस्पती जात विशेख हो ॥ ७ ॥
ल्यायो चदन गोसीर्ष ताम, वले फूला री माला अभिराम हो।
पदम दहनो पाणी ल्यायो ताजो, राज अभिषेक करवा काजो हो ॥ ८ ॥
ओर गहणा ल्यायो तिणवार, मागध तीरथ जिम विस्तार।
भेटणो आण मेल्यो छे तास, भरत नरिंद्र रे पास हो ॥ ६ ॥
वेहू हाथ जोडी शीस नाम, वले करवा लागो गुणग्राम हो।
थे भरत नरिंद्र राजान, हूं थांरो छू वसिवान हो ॥ १० ॥
वेहू हाथ जोडी कहे आम, हू सेवग थें माहरा स्वाम हो।
हू आप तणो कोटवाल, उत्तर दिशि तणो रुखवाल हो ॥ ११ ॥
हू किंकर चाकर छू तुम्हारो, रहू छू थारा देश मझारो।
मागध तीरथ जिम सर्व जाणो, वीनो कीधो छे मोटे मडाणो हो ॥ १२ ॥
जव देवता ने भरत राजान, सीख दीधी सतकार सनमान हो।
पछे घोडा ग्रह राख्या घेर, रथ ने पाछो दियो फेर हो ॥ १३ ॥
तिहा थी रिषभकूट तिहा आयो, तीन वार तिणरे रथ अडायो हो।
पछे रथ ने तिण ठामे थाप, हाथे कागणी रत्न लियो आप हो ॥ १४ ॥
रिषभकूट ने पूर्व दिशि ताम, लीखियो भरत जी आपरो नाम हो।
इण अवसर्पिणी काल मे ताहि, तीजा आरा ना तीजा भाग माहि हो ॥ १५ ॥
हूं चक्रवर्ति हुओ छू आम, भरत नरिंद्र म्हारो नाम हो।
हू प्रथम चक्रवर्ति पहलो राय, म्हे सर्व वेरी जीता ताय हो ॥ १६ ॥
हू भरत खेतर रो नरिंद, सगला वस कर कियो आणद हो।
एहवो नाम लिखीने राय, रथ पाछो वाल्यो छे ताय हो ॥ १७ ॥
जिहा विजय कटक तिहा आय, भोजन मडप भोजन कियो ताय हो।
ते आगे कियो तिम कियो सारो, इम जाण लेणो विस्तारो हो ॥ १८ ॥
चूल हेमवत देवकुमार, तिणने आण मनाय एकधार हो।
तिणरा महोच्छव कराया दिन आठ, आगे किया ज्यू किया गहघाट ॥ १६ ॥
चूल हेमवत देवकुमार, तिणरा भरत जी थया सिरदार हो।
तिणमे पिण राचे नही कोय, सजम लेने सिद्ध होय हो ॥ २० ॥

दुहा

अठाई महोच्छब पूरा हुआं, चक्ररत्न तिणवार।
आयुधशाला थकी बारे नीकल्यो, ऊंचो गगन मझार॥ १ ॥
दखिण दिशि वेताढ साहमो चालियो, तिण लारे हुआ भरत महाराय।
वेताढ नो पासो उत्तर तणो, कटक उतारयो ताय॥ २ ॥
तिहां तेलो कियो पोषधशाल मे, नमी विनमी विद्याधर काज।
ध्यान करे छे तेहनो, एकाग्र चित्त भरत महाराज॥ ३ ॥
तीन दिन पूरा हुआं, नमी विनमी विद्याधर नाम।
त्यानें देवता रे कह्ये थके, ठीक पडी तिण ठाम॥ ४ ॥
ते माहोमांहि एकठा मिली कहे, ऊपनो भरत खेतर रे मांय।
भरत नामे चक्रवर्ति हुवो, तिणने करा मिझमानी जाय॥ ५ ॥
जीत आचार छे आपां तणो, तीनोंई काल मझार।
करे चक्रवर्ति ने भेटणो, तिणसूं आपेई चालो इणवार॥ ६ ॥
आपे पिण भारी भेटणो, जाय मेलो भरत जी पाय।
जब विनमी राजा मन चितवे, निज पुत्री सूपे त्याने जाय॥ ७ ॥

ढाल : ४५

[थे तो छोड दो रूड हियारी रे भवियण]

विनमी नामे विद्याधर नी धूया, सुभद्रा नामे अस्त्री रतन्न।
ते भरत नरिंद्र रा पुन्न प्रमाणे, मोटी कीधी छे घणु जतन्न। भरत रे।
अस्त्री रत्न अमोलक रूडी, ते पिण पुन्नवती पूरी। भरत रे।
अस्त्री रत्न अमोलक रूडी* ॥ १ ॥
ते उम्माण पमाण मांहे छे पूरी, तिणमे खोड नही छे लिगार।
एकसो आठ आंगुल प्रमाण जुगत छे, ते छे प्रमाणोपेत श्रीकार॥ २ ॥
तेजवंत शरीर रूपवंत आकार, छत्रादिक लक्षण तिण माय।
अविनासी जोवन निरतर तेहनो, केश नख कदे धवला न थाय॥ ३ ॥
सर्व रोग तणी विनासणहारी, कर फरस्या सर्व रोग जावे।
बल वीर्य नी वधारणहारी, तिण भोगिविया बल नी वृद्धी थावे॥ ४॥
वंछित सीत उष्ण फरस छे तिणरो, छहूं रितु फरस मनोगंत।
सीत रिते तिणरो फरस उष्ण छे, उष्ण रिते सीत लागे तत॥ ५ ॥

---

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तीनां ठामा पातली छे रूडी, तीनां ठामां छे रक्त अत्यंत ।
वले तीनूं ठाम ऊंचा छे तिणरे, तीन ठाम गंभीर सोभंत ॥ ६ ॥
तीन ठाम छे काली अत्यत, तीनां ठामां श्वेत बखाण ।
तीना ठामा छे आयतण लाबी, तीनां ठामा छे पोहली प्रमाण ॥ ७ ॥
समचोरस सठाण शरीर समो छो, तिणरो रूप अनोपम भारी ।
भरत क्षेत्र री सर्व महिला मे, इणसू अधिकी नही नारी ॥ ८ ॥
सुंदर मनोहर थण छे तिणरा, मुख पूनम चंद समाण ।
हाथ नें पाय नेत्र छे तिणरा, इचरज कारी अनोपम जाण ॥ ९ ॥
मस्तक ना केश ने श्रेणी दांतां री, ते पिण घणी श्रीकार ।
देखणाहर नें रमणीक हिरदा माहे लागे, मननी हरणहारी छे नार ॥ १० ॥
सिणगार तणो आगर घर वारू, मनोहर चारू छे वेष ।
वले चालवो बोलवो मित्रीचारा मे, चतुराई घणी छे विशेष ॥ ११ ॥
तिणरो हंसवो गभीर इचरज कारी, नेत्र चेष्टा विकार अत्यत ।
विलास माहोमाहिं बोलवो तिणमे, डाही घणी मतिवत ॥ १२ ॥
इद्र तणी अपच्छरा सरिखो, तिणरो रूप घणो छे अनूप ।
ओर देवांगण इणरे तुले न आवे, इसडो छे तिणरो रूप ॥ १३ ॥
एहवी सुभद्रा नामे अस्त्री रत्न छे, भद्र कल्याण कारणी नार ।
ते जोवन रे विषे वर्ते जोवन मे, तिणमे सगलाई गुण श्रीकार ॥ १४ ॥
एहवो अस्त्री रत्न ल्यावे विनमी राजा, नमी राजा ल्यावे रत्न अनेक ।
वले कडा ने बहा ना आभरण, नमी राजा ल्यावे छे विशेष ॥ १५ ॥
उतकष्टी चाल विद्याधर नी, चाल्या आया भरतजी रे पास ।
नान्ही नान्ही घूघरीया जुगत सु, तिहा ऊभा रह्या छे अकाश ॥ १६ ॥
त्यारे पहरण वस्त्र पाच वर्णा छे, प्रधान घणा श्रीकार ।
विने सहित छे हाथ जोडी ने, नमण करे वारूं वार ॥ १७ ॥
जय विजय करी बधावे नरिंद्र ने, विरुदावलिया बोलावे अनेक ।
थें जीत लियो सर्व भरत खेतर ने, बाकी शत्रु न राख्यो एक ॥ १८ ॥
म्हें सेवग छा थारा आज्ञाकारी, थांरा देश तणा वसिवान ।
म्हे किंकर चाकर आप तणा छा, मुझ शिर छे तुम तणी आण ॥ १९ ॥
तिण कारण म्हासू आप किरपा करेनें, म्हारो भेटणो ल्यो महाराय ।
इम कहेनें विनमी नामे राजा, अस्त्री रत्न सूपे दीधी ताय ॥ २० ॥
नमी राजा रत्न गहणादिक आप्या, करे घणा गुण ग्राम ।
जब भरतजी त्यांने घणा सतकारे, पाछी सीख दीधी तिण ठाम ॥ २१ ॥

नमी विनमी विद्याधर नमाया, त्याने आण मनाई ताम ।
ते पिण थोथी माया जाण संजम लेसी, मोख मे जासी अविचल ठाम ॥ २२ ॥

दुहा

नमी विनमी नें सीख दियां पछे, पोषध शाला थी निकलिया ताहि ।
स्नान कियो मंजण घर मझे, पछे आया भोजन घर माहि ॥ १ ॥
भोजन कियो भोजन मंडप मझे, असणादिक च्यारूं आहार ।
भोजन कर तिहां थी नीकल्या, आया उवठाण शाल मझार ॥ २ ॥
श्रेणी प्रश्रेणी बुलायने, कहे छे भरत महाराय ।
नमी विनमी नें नमाविया, त्यांरा करो महोच्छव जाय ॥ ३ ॥
श्रेणी प्रश्रेणी वचन सतकार ने, महोच्छव करे छे ठाम ।
श्री राणी सूं भरतजी, भोगवे सुख अभिराम ॥ ४ ॥

ढाल : ४६

[देसी मोतीडा नीं तथा सामणी चिरताली धूतारी राम की]

श्री देवी ने भरत वेहू हिल मिलिया, जाणे पय मे पतासा मिलिया ।
पुन्नवंती राणी, भरत ने पुन्न उदे मिली आणी ॥ १ ॥
भारी छे पुन्नवंत भरत राजान, श्री राणी राई पुन्न असमान ॥ २ ॥
चोसठ सहस भरत राजा रे राणी, इण सरिखी ओर दुजी न जाणी ॥ ३ ॥
पूर्व भव तप कीधो अमोलक भारी, तिण सू इसडी आण मिली नारी ॥ ४ ॥
श्री राणी पिण पुन्न उपाया अपार, तिणसूं पायो भरत भरतार ॥ ५ ॥
तिणरे अधिष्ठायक देवता एक हजार, सेवग जिम रहे आज्ञाकार ॥ ६ ॥
सहंस देवता करे मन चिंतव्या काम, किंकर जिम रखवाला ताम ॥ ७ ॥
अस्त्री रत्न छे अमोलक रूडो, तिणरे मिलियो छे सजोग पूरो ॥ ८ ॥
काम भोग माहे पाम रही छे आणद, तिण वस कर लियो भरत नरिंद्र ॥ ९ ॥
मिनखां मांहे उतकष्टा काम ने भोग, भोगवे श्री राणी रे सजोग ॥ १० ॥
जिण काल मे चक्रवर्ति उपजे छे आय, जब अस्त्री रत्न पिण थाय ॥ ११ ॥
चक्रवर्ति विना अस्त्री रत्न न होय, तिणमें संक म राखो कोय ॥ १२ ॥
भरत नरिंद्र जाणे पूनम चद, ते पिण तिण दीठा पामें आणंद ॥ १३ ॥
भरत चक्रवर्ति ने अस्त्री रत्न, तिणरा देवता करे छे जत्न ॥ १४ ॥
मन ममता सयोग मिल्या यारे आण, ते तो करनी तणा फल जाण ॥ १५ ॥
यांरा इचरज कारी छे भोग संजोग, त्यांरो कदेय न वाछे वियोग ॥ १६ ॥

अपछरा सरिखो रूप छे जिणरो, जस कीरत घणो छे तिणरो ॥ १७ ॥
ओ तो समकाले जोग मिले छे एसो, जब जेसा कूं मिल जाए तेसो ॥ १८ ॥
त्यांरे प्रीति मांहोंमा अंतरग लागी, राजा राणी दोनूं बड भागी ॥ १९ ॥
श्री राणी सूं भरत रहे नित भीनों, कीला कर राजा नें मोहि लीनो ॥ २० ॥
लक्षण वंजण गुण तिणरा अनेक, एसी नही भरत खेतर मे एक ॥ २१ ॥
रात दिवस तिणसूं कर रह्या कीला, जाणे इंद्र पुरी समलीला ॥ २२ ॥
अस्त्री रत्न सूं भरतजी करे विलासो, ज्ञान सूं तो जाणे तमासो ॥ २३ ॥
तिणनें पिण निश्चे भरतजी छोडवा कामी, इण हिज भव छे शिवगामी ॥ २४ ॥
तिण राणी सूं भरत रे अत्यंत घणो हेज, तिणने पिण छोडतां नही जेज ॥ २५ ॥
तिणनें छोडने सजम पालसी चोखो, करणी कर जासी पाधरो मोखो ॥ २६ ॥

दुहा

नमी विनमी विद्याधर नमाविया, त्यांरा महोच्छब पूरा हुआ जेह ।
जब चक्ररत्न आयुधशाल थी, बारे निकलियो तेह ॥ १ ॥
सहंस देवता सहित परवर्यो थको, चाल्यो जाए गगन आकाश ।
बाजंत्र अनेक बाजतां थकां, जाए ईसाण कूण मे तास ॥ २ ॥
गंगा देवी नां भवन साह्मो चालियो, भरतजी पिण चाल्या तिण लार ।
नवमों तेलो कियो तिण ऊपरे, सिंधु नदी जिम सगलो विस्तार ॥ ३ ॥
सहंस ने आठ कुभ विचित्र रत्ना रा, अनेक रत्न भात चित्राम ।
नानां प्रकार ना मणि रत्न मे, त्यारा चित्राम छे ठाम ठाम ॥ ४ ॥
वले दोय सिंघासण कनक में, भेटणा मे एतो फेर जाण ।
सेष सिंधु देवी नी परे जाण जो, महोच्छब सूधो सर्व पिछाण ॥ ५ ॥
गंगादेवी महोच्छव पूरो हुवा, चक्र नीकल्यो आयुधशाला बार ।
सहस देवता सहित परवर्यो थको, चाल्यो आकाश मझार ॥ ६ ॥
गगानदी ने पश्चिम कुले, दक्षिण दिशि गुफा खड प्रवाह ।
तिण गुफा साह्मो चक्र चालियो, लारे चाल्या भरत महाराय ॥ ७ ॥

ढाल : ४७

[पुत्र वसुदेव री गजसुख माल तो मोख]

खड प्रवाह गुफा तिहां आविया, डेरा किया भरत जी आय रे ।
तेलो कियो पोषधशाला मझे, नटमाली देव ऊपर ताय रे । नट । २
चक्रवर्ति मोटको, भरत नरिंद मोटो राजान रे ॥ १ ॥

तीन दिन पूरा हुआं, नटमाली देव आयो जाण रे।
भंड भाजन कडा आणिया, सेष कृतमाली जेम मंडाण रे। सेष ॥ २ ॥
नटमाली देव नें भरत जी, सेवग ठहराय पगां लगाय रे।
सीख दीधी सतकार सनमान नें, कृतमाली देवता जिम ताय रे॥ ३ ॥
श्रेणी प्रश्रेणी तेडाय नें, कहे छे भरत महाराय रे।
नटमाली देवता जीतियो, तिणरा करो महोच्छब जाय रे॥ ४ ॥
श्रेणी प्रश्रेणी सुण हर्षित हुआ, महोच्छब किया छे मोटे मंडाण रे।
अठाई महोच्छब पूरा हुआ, आज्ञा सूंपी भरत जी ने आण रे॥ ५ ॥
महोच्छब पूरा हुआं भरत जी, कहे छे सेनापति ने बोलाय रे।
गंगा नदी पेले पार जायने, सगले आण म्हारी वरताय रे॥ ६ ॥
चूल हेमवंत वेताढ बिचे, गंगा ने लवण समुद्र बीच रे।
सगला राजा नें नमाय जे, सगले ठाम ऊंच नें नीच रे॥ ७ ॥
त्यांरा भेटणा रत्नादिक तणा, लेई लेई नें पगां लगाय रे।
सर्व खंड में आण वरताय नें, म्हारी आज्ञा पाछी सूंपे आय रे॥ ८ ॥
सेनापति सुण हरषित हुवो, सिंधु जिम गयो गंगा रे पार रे।
आण मनाई तिंण खंड में, लेई लेई रत्नादिक सार रे॥ ९ ॥
सर्व राजा नें आण मनायने, भेटणा लीधा त्यारे पास रे।
गंगा नदी ऊतर पाछो आवियो, मन माहे अत्यंत हुलास रे॥ १० ॥
विजय कटक मांहें जिहा भरतजी, आय ऊभो तिणारे पास रे।
विनो करे रूडी रीत सू, जय विजय सूं बधाया तास रे। जय २ ॥ ११ ॥
रत्नादिक भेटणो आण्यों तिको, मुख आगल मूंक्यो तिणवार रे।
सिंधु पेलो खंड साझे आवियो, तेहनी परे जाणो सर्व विस्तार रे। ते० २ ॥ १२ ॥
सेनापति आण्यों ते भेटणो, भरत जी कियो छे अंगीकार रे।
सेनापति ने घणो सनमान दे, सीख दीधी देई सतकार रे। सी० २ ॥ १३ ॥
सेनापति घणो हरषित हुवो, पाछो आयो निज ठिकाण रे।
पांच इंद्रीनां सुख भोगवे, ते पिण देव तणी पर जाण रे। ते० ॥ १४ ॥
काल कितोएक बीतां पछे, कहे सेनापति ने बोलाय रे।
खंड प्रवाह गुफा तणा, उत्तर ना द्वार खोलो जाय रे। उ० २ ॥ १५ ॥
सेनापति सुण हरषित हुवो, खड प्रवाह नां खोल्या द्वार रे।
तामस गुफा तेहनी परे, सगलोई कहिणो विस्तार रे। स० २ ॥ १६ ॥
आण वरती गंगा पेला खड मे, वले खंड प्रवाह रा खुलिया कमाड रे।
ए पिण कारिमा पुन्न जाणे भरत जी, छोडने जासी मुगत मझार रे। छो० २ ॥ १७ ॥

दुहा

आगे मंडला किया तिमहिज किया, भरत जी गुफारे माहि।
उमग निमगजला नदी ऊतर्या, आगा ज्यूं उतरिया ताहि॥ १॥
दखिण द्वार आफेई ऊघड्या, जिम तामस उत्तर नां द्वार।
सारी सेना गुफा बारे नीकली, सीहनाद ज्यू करता गुंजार॥ २॥
जब भरत नरिंद तिण अवसरे, गगा सू पछिम दिशि मांय।
तिहां विजय कटक उतारिया, आगली सर्व रीत बणाय॥ ३॥
तिहा पिण तेलो कियो छे इग्यारमो, नव निधान काजे ताहि।
त्यांसूं एकाग्र चित्त थापियो, त्यांरो ध्यान ध्यावे मन माहि॥ ४॥
तीन दिन पूरा हुआं, नव निधान प्रगट हुआ आण।
त्यारा गुणा रो प्रमाण छे नहीं, ते राता छे अत्यंत बखाण॥ ५॥
पांच वर्णा रत्ना करी, पूर्ण भर्या छे नवोई निधान।
इसडा निधान आय परगट्या, भरत भागवली छे राजान॥ ६॥
ते नव निधान छे एहवा, त्यांरा लक्षण गुण छे अथाय।
पिण थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ७॥

ढाल : ४८

[प्रभवो चोर चोरां ने समझावे]

ध्रुव निश्चल द्रव्य हीणा न थावे, त्यारो क्षय पिण कदेय न थायो रे।
देश थकी पिण कदे हीण न होवे, सास्वता छे अमोलक लोका मांह्यो रे।
नव निधान आया छे भरत नरिंद रे*॥ १॥
त्यांरा अधिष्ठायक देवता करे रुखवाली, त्या माहे पुस्तक त्याह्यो रे।
लोकां नां आचार री प्रवृत्ति त्यामें, ते भरत जी रे वस हुआ आयो रे। न०॥ २॥
प्रसिद्ध जस त्यारो तीनूई लोक में, नवोई निधान छे रूडा रे।
ते सास्वती चीज अमोलक भारी, जिणरे होसी तिणरे पुन्न पूरा रे॥ ३॥
नेसर्प[1] नें पडूक[2] पिंगल[3] तीजो, सर्व रत्न[4] ने महापदम[5] जाणो रे।
काल[6] महाकाल[7] माणवक[8] महानिधान, सख[9] निधान नवमो पिछाणो रे॥ ४॥
नेसर्प निधान मे थापना विध रूडी, गाम नगर पाटणादिक री जाणो रे।
वले थापना द्रोण मुख मंडप नी छे, कटक घर हाट नी विधि प्रमाणो रे॥ ५॥
गणित सख्या छे पंडूक निधान मे, नालेरादिक गिणवो ते सारो रे।
वले मापवो तोलवो तेहनो प्रमाण, धान बीजादिक बावण रो विचारो रे॥ ६॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सर्व आभरण पहरण री विधि अस्त्री पुरुष नें, ते पहरणा ठाम रे ठामो रे।
इम हिज आभरण हाथी घोडा नां, ते विधि पिंगल निधान मे तामो रे॥ ७॥
सात रत्न एकेंद्री सात पंचेंद्री, चउदे रत्न चक्रवर्ति रे जाणो रे।
त्यारी उत्पत्ति री विधि छे सर्व रत्न मे, त्याने रूडी रीत पिछाणो रे॥ ८॥
वस्त्र नी उत्पत्ति विधि वस्त्र नीपन विधि, वले वस्त्र रगवानी विधि सारी रे।
वले वत्र धोवानी रचवानी विधि छे, सगली महापदम निधान मझारी रे॥ ९॥
काल नामा निधान तिणमे काल ज्ञान रो, सर्व जोतिप शास्त्र ज्ञान जाणे रे।
अतीत अनागत ने वर्तमान, त्यारा शुभाशुभ इण थी पिछाणे रे॥ १०॥
वले असी मसी कसी ए कामा तीनोई, ते लोकां ने घणा हितकारो रे।
वले एक सो सिल्प कर्म जूआ जूआ छे, ते काल निधान मझारो रे॥ ११॥
वले सोना रूपा नां मणि रत्नां रा आगर, मणि माणक मोती प्रवालो रे।
वले लोहा.देक उत्पत्ति विधि सगलां री, महाकाल निधान मे सभालो रे॥ १२॥
सूर पुरुष ने कायर पुरुष री उत्पत्ति, सनाह बध सेना सिणगारो रे।
प्रहरण खडगादिक ने राजनीति विधि, माणवक निधान मझारो रे॥ १३॥
नाचण री विधि ने नाटक री विधि, वले काव्य च्यार प्रकारो रे।
धर्म अर्थ वले काम ने मोक्ष, त्यांरी विधि संख निधान मझारो रे॥ १४॥
वले संस्कृत ने प्राकृत भाषा, वले भाषा छे विविध प्रकारो रे।
वले तुटितांगादिक बाजत्र नी उत्पत्ति, महासंख निधान मझारो रे॥ १५॥
आठ आठ पईडा छे एकीका निधान रे, आठ आठ जोजन ऊंचा सारा रे।
नव नव जोजन रा पोहला छे सघला, लाबा छे जोजन बारा रे॥ १६॥
मंजूस ने आकारे सठाण छे त्यारो, गंगानदी रे मुख छे ठिकाणो रे।
गंगा समुद्र में मिले तिहां रहे छे, चक्रवर्ति रे प्रगट हुवे आणो रे॥ १७॥
वैडूर्य रत्नां मे किवाड छे त्यांरा, कनक सोवन मे नवोई निधानो रे।
ते विविध प्रकार नां रत्ना करेने, प्रतिपूर्ण भर्‍या छे असमानो रे॥ १८॥
चंद्रमा नां आकार चिन्ह लक्षण छे तिण रे, सूर्य नां चक्र नां लक्षण तामो रे।
ते प्रत्यक्ष चिन्ह आकार छे रुडा, सोभ रह्या छे ठामठामो रे॥ १९॥
एहवा निधान आय मिलिया भरत ने, त्याने जाणे छे माया काची रे।
त्याने छोड संजम ले शिवपुर जासी, नही रहसी ससार मे राची रे॥ २०॥

दुहा

ते अति ही सम छे विसम नही, त्यां निधान रे ऊपरे ताम।
ते निधान नामे रहे छे देवता, त्यांरा आवास घणा अभिराम ॥ १ ॥
पल्योपम स्थिति छे तेहनी, तिहां कीला करे दिन रात।
ते अधिष्ठायक छे निधान तणा, प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
ए तो इचरजकारी निधान छे, चीज अमोलक सार।
मोल साटे मिले नही, तीनोई लोक मझार ॥ ३ ॥
निधान रत्न छे केहवा, त्यां माहे रत्नप्रभूत।
समृद्धि प्रति पूरण भर्‍या, विविध प्रकारे घणा अद्भूत ॥ ४ ॥
ते निधान तिहाथी नीकल्या, भाग वले भरत रे जाण।
देवता सहित भरत नरिंद रे, बस हुआ छे आण ॥ ५ ॥

ढाल : ४६

[कामणगारो कूकडो ए]

भाग बडो भरतेशनों रे, तिणरे पुन्न उदे हुआ आण।
तिणरे रिघ अचिती आय मिली रे, सहुको आण करे परमाण।
भाग बडो भरतेश नों रे.* ॥ १ ॥
षट खंड केरो छे अधिपति रे, भरत नरिंद राजान।
तिणरे भाग वले आय परगट्या रे, सार भूत नवोई निधान ॥ २ ॥
इचरजकारी छे अति घणा रे, नवोई निधान अनूप।
त्यानें खोल जूआ जूआ देखिया रे, जब हरष्यो घणो भूप ॥ ३ ॥
आगे चउदे रत्न घरे परगट्या रे, वले प्रगट्या नव निधान।
दिन दिन अधिकी रिध संपजे रे, तिणरे प्रबल पुन्न छे असमान ॥ ४ ॥
चक्रवर्ति विना नही ओर रे रे, चवदे रत्न नव निधान।
तीर्थंकर वासुदेव त्यारे पिण नही रे, नही छे जिण तिणनें आसान ॥ ५ ॥
अश्व रथ छे अति रलियामणो रे, ते जाणे के देव विमाण।
पवन वेग ज्यू चाले उतावलो रे, ते मिल्यो छे पुन्न जोगे आण ॥ ६ ॥
भरत खेतर ना देवी देवता रे, त्या सगलां ने आण मनाय।
त्याने सेवग ठहराया छे आपरा रे, त्यारो भेटणो ले लेने ताय ॥ ७ ॥
पूर्व पछिम ने दखिण दिशे रे, लवण समुद्र तांई प्रमाण।
चूल हेमवंत उत्तर दिशे रे, त्यामे सगले वरते छे आण ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

हाथी घोडा रथ भरत नें रे, चोरासी चोरासी लाख।
पायदल छिन्नूं कोड आए मिल्यो रे, जंबूद्वीप पन्नत्ती में साख॥ ९॥
मिनखां री तो जिहांई रही रे, देवता करे छे सेव।
वले कारज भरत नरिंद रो रे, करे छे देवता स्वयमेव॥ १०॥
वले आखा भरत क्षेत्र मझे रे, भरत जी सरिखो नही कोय।
इंद्र तणी परे दीपतो रे, त्याने दीठां आनंद होय॥ ११॥
अनमी भोमिया वस किया रे, कोई माथो न सके उपाड।
आखा भरत क्षेत्र मझे रे, शत्रु न रह्यो लिगार॥ १२॥
चक्ररत्न सूर्य सारिखो रे, ते चाले गगन मझार।
देवता सहंस सहित सूं रे, वाजत्र वाजे धुकार॥ १३॥
छत्र रत्न छाया करे रे, जाझेरो अडतालीस कोस।
ते सीत तापादिक परहरे रे, टल जाए विरखादिक दोष॥ १४॥
चर्म रत्न हेठे विस्तरे रे, नाना भूत पिछाण।
जाझेरो अडतालीस कोस मे रे, मिलियो छे पुन्न प्रमाण॥ १५॥
दंड रत्न पर्वत पहाड ने रे, भांज करे चकचूर।
विषम जायमां ने सम करे रे, ऊंच नीच करे सर्व दूर॥ १६॥
असि खड्ग रत्न छे एहवा रे, वज्रादिक नें देवे काट।
कठिन घणी वस्तु तेहने रे, काट करे दोय वाट॥ १७॥
मणि रत्न घणो रलियामणो रे, तिणरो छे अत्यंत उजास।
जाझेरो अडतालीस कोस मे रे, करे चंद्रमा जेम प्रकाश॥ १८॥
कांगणी रत्न कनें थकां रे, घाव न लागे छे ताय।
वले घाव लागां ऊपर फेरियां रे, घाव तुरत मिल जाय॥ १९॥
सेनापति रत्न छे एहवो रे, ते सेना रो नायक सूर।
लाखां ठामे दल तेहनें रे, भाग करे चकचूर॥ २०॥
गाथापति रत्न मे गुण घणा रे, ते धान नीपावे छे ताय।
धानादिक बावे प्रभात रो रे, लूणे छे दिन थकां जाय॥ २१॥
बढई रत्न सेना भणी रे, घर करे जथाजोग सेल।
वले करे भरत नरिंद रे रे, बयांलीस भोमिया म्हेल॥ २२॥
प्रोहित रत्न प्रधान छे रे, ते करवा नें सत्करम।
तिणरा पिण गुण छे अति घणा रे, ते पिण रत्न छे परम॥ २३॥
अनोपम रत्न छे अस्त्री रे, ते गुण रत्ना री भंडार।
इण सरिखी नही दूसरी रे, आखाई भरत मझार॥ २४॥

अश्व रत्न बेरी ऊपरे रे, पडे छे विजली जिम ताम।
धणी ने अहल आवण दे नही रे, तिणमें गुण अभिराम ॥ २५ ॥
हाथी रत्न हाथ्यां रो अधिपति रे, जाणे ऊभो अंजन गिरी पहाड।
सोभे तिण ऊपर नरपति रे, इंद्र तणे उणियार ॥ २६ ॥
चवदे रत्न छे निज घरे रे, जिण घरे नव निधान।
जिण घर छव खंड रो राज छे रे, ते भागबली छे राजान ॥ २७ ॥
एहवी रिध आए मिली रे, त्यानें जाणसी धूल समाण।
संजम लेने केवल उपाय ने रे, पामसी पद निर्वाण ॥ २८ ॥

●

दुहा

नव विधान परगट हुआ, त्यांणे जाणे लिया छे ताहि।
जब पोषधशाला थी नीकल्या, आया मंजण घर माहिं ॥ १ ॥
मंजण कियो विध आगली, आया उवठाण शाला मांय।
तिहां बेठा सिंघासण ऊपरे, कहे छे श्रेणी प्रश्रेणी नें बोलाय ॥ २ ॥
नव निधान मांहरे आय प्रगट्या, तिणरा करो महोच्छव जाय।
जब श्रेणी प्रश्रेणी सुण हर्षिया, किया महोच्छव आय ॥ ३ ॥
अठाई महोच्छव पूरा हूआं, सेनापति नें बोलाय।
कहे जावो तुम्हे देवानुप्रिया, गगा परले दूजे खड जाय ॥ ४ ॥
तिहां आण मनाए मांहरी, भेटणो लेई सेवग ठहराय।
सेनापति सुण तिम हिज करे, गंगा नदी ने पेले पार जाय ॥ ५ ॥
भेटणो ले आण मनायने, पाछो आयो भरत जी रे पास।
आगे कह्यो तिम सगलोई जाणजो, हिवे भोगवे सुख विलास ॥ ६ ॥
हिवे चक्र रत्न ते एकदा, आयुधशाला थी नीकल्यो वार।
सहंस देवता सहित परवर्यो थको, ऊचो गयो गगन मझार ॥ ७ ॥
बाजंत्र शब्द पूरतो थको, विजय कटक रे मांय।
मझोमझ थई नें नीकल्यो, नेरत कूण विनीता दिशि जाय ॥ ८ ॥
विनीता साह्मो जातो देखनें, घणो हरख्यो भरत महाराय।
कहे छे कोडंबी पुरुष बोलाय नें, हस्ती रत्न नें सज करो जाय ॥ ९ ॥

ढाल : ५०

[रघुपति जीतो रे]

चक्र रत्न नें चालतो हो, विनीता साह्मो जातो देख।
नर नारी तिण अवसरे हो, हर्षित हुआ विशेख।
भरत नृप जीतो रे* ॥ १ ॥

रिषभ नंदन धीर, भरत नृप जीतो रे।
वाहुवल नों वडवीर, भरत नृप जीतो रे
गिरवो ने गुण वंत, सूरो नें सतवंत ॥ २ ॥

घर घर रंग वधावणा हो, घर घर मंगला चार।
घर घर गावे गीतडा हो, मुख मुख जय जय कार ॥ ३ ॥
लोक सहु हर्षित हुआ हो, निज घर आवा ताम।
उछरंग पाम्यों अति घणो हो, मन पाम्यो विश्राम ॥ ४ ॥
छव खंड अखंडित भरत मे हो, वरती भरत री आण।
तिणसूं चक्र घरां में चालियो हो, कर मोटे मंडाण ॥ ५ ॥
मागध वरदाम प्रभास देव नें हो, जीत मनाई आण।
सिंधु देवी जीत फते करी हो, तिण आण कीधी परमाण ॥ ६ ॥
वेताढगिरी देव जीतियो हो, जीतो कृतमाली देव।
चूल हेमवंत देव नमावियो हो, त्यांनें किया सेवग स्वयमेव ॥ ७ ॥
गंगा देवी जीत सेवग करी हो, तिणनें आण मनाय।
नमी विनमी विद्याधर जीपनें हो, दिया छे पगां लगाय ॥ ८ ॥
नटमाली देवता भणी हो, जीते मनाई आण।
नव निधान जीता पुन्न जोग सूं हो, ते हजार हुआ प्रमाण ॥ ९ ॥
देव देवी मनाया जोरसूं हो, जोर सूं आण मनाय।
त्यांरो ले ले भारी भेटणो हो, सीख दीधी सेवग ठहराय ॥ १० ॥
अजीत राज तिण पामियो हो, शत्रु सगलां ने जीत।
सर्व रत्न ऊपनां तेहमें हो, चक्र रत्न प्रधान वदीत ॥ ११ ॥
नव निधान नों हुवो अधिपति हो, भरिया कोठार भंडार।
पाछे चाले छे राजा मोटका हो, रायवर वत्तीस हजार ॥ १२ ॥
साठ सहंस वरसां लगे हो, भरत क्षेत्र रे मांहि।
सगले ठामें भरत जी हो, आण वरताई ताहि ॥ १३ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

हिवे भरत नरिंद तिण अवसरे हो, सेवग पुरुष बोलाय ।
हस्ती रत्न ने सज करे हो, मांहरी आज्ञा सूंपे आय ॥ १४ ॥
सेवग सुण तिमहिज कीयो हो, हस्ती सजकर सूंप्यो आण ।
तिण ऊपर चढियो नरपति हो, कर मोटे मंडाण ॥ १५ ॥
नगरी विनीता तिण दिशे हो, चाल्या छे भरत नरिंद ।
जन्म भूमि निज नगरी आपरी हो, तिणसूं पाम्यां अधिक आनंद ॥ १६ ॥
हस्ती रत्न बेठा मुख आगले हो, चाले आठ मगलीक ।
जथा अनुक्रमें चालिया हो, साथियादिक आठोई ठीक ॥ १७ ॥
पूर्ण कलश जल भर्‍यो हो, वले भर्‍यो लोटो भिंगार ।
महिंद्र ध्वजा चाले मुख आगले हो, सहंस ध्वजा तणे परिवार ॥ १८ ॥
छत्र चाले मुख आगले हो, वले ध्वजा पताका विशेख ।
वले चमर मुख आगे चालता हो, इत्यादिक मगलीक अनेक ॥ १९ ॥
सिंघासणा मणि रत्ना जड्यो हो, मुख आगल चालंत ।
आगे कह्यो छे तिम जाणजो हो, सगलोई विरतंत ॥ २० ॥
तिंवारे पछे मुख आगले हो, रत्न एकेंद्री सात ।
अनुक्रमे चाल्या रूडी रीत सूं हो, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २१ ॥
चक्र छत्र रलियामणा हो, चर्म ने दंड बखाण ।
असि मणि रत्न मे कागणी हो, चाल्या विनीता ने जाण ॥ २२ ॥
नव निधान आगे चालिया हो, नगरी विनीता ने जाय हो ।
वले सोले सहस देवता हो, चाल्या अनुक्रमें ताय ॥ २३ ॥
तदनतर पूठे चालिया हो, राजा बत्तीस हजार ।
सात रत्न पंचेंद्री चालिया हो, अनुक्रमे तिणवार ॥ २४ ॥
जीत लीधो ते राज छव खड नों हो, ते तो ससार नो छे सूर ।
आत्मा वेरण जीतनें हो, कर्म करसी चकचूर ॥ २५ ॥

●

दुहा

रितु कन्या छे कल्याण कारिणी, त्यांरो फर्स घणो सुखदाय ।
सुखकारी अमृत समाण छे, ते बत्तीस सहस छे ताय ॥ १ ॥
बत्तीस सहस कन्या रलियामणी, ते पिण रूप अनूप ।
जनपद देश तणा राजा सुखी, त्यांरी पुत्री छे अत्यंत सरूप ॥ २ ॥

ए चोसठ सहंस अंतेवरी, दोय दोय बारंगणा एक एक लार।
इतरी अस्त्री भरत नरिंद रे, एक लाख नें बाणू हजार॥ ३ ॥
ए पिण सारी अनुक्रमे नीकली, विनीता नगरी नें ताय।
बत्तीस सहंस नाटक विध बत्तीस नां, ए पिण आगल चलिया जाय॥ ४ ॥
रसोईदार तीन सो नें साठ छे, अनुक्रमे चाल्या रूडी रीत।
अठारे श्रेणी प्रश्रेणी पिण चालिया, ते प्रसिद्ध लोक विदीत॥ ५ ॥
घोडा हाथी रथ रलियामणा, चोरासी चोरासी लाख जाण।
वले पायक छिन्नूं कोडते, ए पिण चाल्या छे रीत प्रमाण॥ ६ ॥
इत्यादिक सर्व कह्या तिके, अनुक्रमें चाल्या छे जांण।
आ रिद्धि मिली सर्व भरत नें, ते पुन्न तणे परमाण॥ ७ ॥

ढाल : ५१

[झूठो बोल्यो जादवा]

मीठो छे पुन्न संसार में, तिणसूं रांच रह्या सहु लोक।
पुन्न विना इण संसार में, लोक गिणे सहु फोक।
मीठो छे पुन्न संसार में*॥ १ ॥
पुन्न सूं सामें सर्व संपदा, पुन्न छे संपत मूल।
वले पदवी पामें मोटकी, पुन्न सबे अनुकूल॥ २ ॥
भरत नरिंद सर्व लोक ने, मीठो लागे अमिय समाण।
वले पुन्न तणा परताप थी, कुण कुण मिले संपदा आण॥ ३ ॥
भरत नरिंद राजिंद नी, करे छे देवता टहल।
जिहां बासो रहे तिहां करे, बयांलीस भोमिया महल॥ ४ ॥
महल बयांलीस भोमिया, ते सर्व रत्न जडंत।
दीसे घणा रलियामणा, त्यां महलां मे कील करंत॥ ५ ॥
त्यां महलां रे जाल्यां नें गोखडा, कर रह्या अत्यंत उद्योत।
तिहा हीरा मणि रत्नां तणी, लागी झिगामिग जोत॥ ६ ॥
कटक पडाव करे तिहां, त्यां सगलां नें रहिवा निवास।
जथाजोग करे देवता, घर हाट मंदिर आवास॥ ७ ॥
अधिपति भरत क्षेत्र नों, जाणक पूनम चंद।
इंद्र तणी तिणनें ओपमा, तिण दीठा पामें आणंद॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

देव देव्या रा वृंद नमाविया, भेटणा ले सेवग थाप।
सीख दीधी छे आण मनाय ने, ते पिण पुन्न तणे परताप॥ ९ ॥
भरत क्षेत्र नां राजा भणी, सगलां ने कर दीधी रेत।
सगलां ने सेवग ठहराय ने, आप ठहस्था छे सगलां रा म्हेत॥ १० ॥
हुकम फुरमावे जो एक ने, जब हाजर हुवे छे अनेक।
जी जी कार करे सहु, ते पुन्न तणो छे विशेख॥ ११ ॥
तिण बोल्यां थकां आगलो, होय जाए चुपचाप।
वले पुन्न तणा परताप थी, तप तेज घणो छे आताप॥ १२ ॥
गमतो घणो छे सकल नें, तिणरी बोली छे अमिय समाण।
ते बोल्यां लागे सुहामणो, ते पुन्न तणा फल जाण॥ १३ ॥
सर्व संजोग आए मिल्या, शब्दादिक सुख अनूप।
जे जे छे रिध सपदा, ते पुन्न तणो छे स्वरूप॥ १४ ॥
भरत नरिंद सुख भोगवे, पूर्व तपनां फल जाण।
तप करतां पुन्न बाधिया, ते हिज उदे हुआ आण॥ १५ ॥
ज्यां लग पुन्न छे जिण जीव रे, गमतो लागे छे सगलां ने ताय।
पुन्न परवास्थां इण जीव रे, वाहला ते बेरी होय जाय॥ १६ ॥
पुन्नवत रा सगला सझे, मनरा चितव्या काज।
जे हीण पुन्न हुवे जीवडा, त्याने रोयां मिले नही राज॥ १७ ॥
पुन्न विहूणा जे मानवी, त्यारो चिंतव्यो निरफल थाय।
जे आसा मन मे धरे, ते आल माल होय जाय॥ १८ ॥
जे सुख भोगवे संसार मे, ते पुन्न तणा फल जाण।
जे दुख उपजे ससार मे, ते पाप तणे परमाण॥ १९ ॥
जे पुन्न थकी हर्षित हुवे, पाप थी पामे सोग सताप।
दोनूं प्रकारे जीव बापडा, बांधे निकेवल पाप॥ २० ॥
पुन्न तणा सुख कारिमा, जेहवी छे सुपना री माय।
ते वार न लागे विणसता, थोडा मे आल माल होय जाय॥ २१ ॥
पुन्न तो सुख छे ससार ना, मोख लेखे सुख छे नाहिं।
ज्यां मोख तणा सुख ओलख्या, ते रीझे नही इण माहिं॥ २२ ॥
पुन्न तणा सुख रोगला, खाज रोग तणे दिष्टंत।
तिणरी तो वछा करणी नही, ते भाख्यो छे श्री भगवंत॥ २३ ॥
पुन्न तणी जिण वंछा करी, तिण वछिया काम नें भोग।
तिण सार जाण्यो छे ससार ने, तिणरे मोटो मिथ्यात नो रोग॥ २४ ॥

निरवद करणी करे जेहनें, जब पुन्न लागे छे आय।
ते पुन्न भोगविया विना, शिवपुर नगर न जाय ॥ २५ ॥
जीव राजी हुवे पुन्न भोगव्यां, तो बध जाए पाप ना पूर।
तिण पाप थकी दुख भोगवे, दलिद्र रहे छे हजूर ॥ २६ ॥
पुन्न रा तो सुख पुदगल तणा, त्यामे कला म जाणो काय।
निज गुण रा सुख मोख मे, त्यारो अत कदे नही आय ॥ २७ ॥
इण पुन्न थकी भोग पामिया, त्याने जाणे छे जहर समान।
त्याने जाबक छांडेनें भरत जी, लेसी चरित्र निधान ॥ २८ ॥
त्यांने छोडता जेज न आणसी, त्यासू जाबक विरक्त होय।
दिख्या ले जावसी मोख में, सास्ता सुख पामसी सोय ॥ २९ ॥

●

दुहा

भरत नरिंद राजिंद रा, भारी छे पुन्न असमान।
ते आवे छे विनीता ने चालियो, त्यांरे साथे घणा छे राजान ॥ १ ॥
मोटे मडाण सूं आवे चालिया, लारे कह्यो ते सर्व विस्तार।
सुखे सुखे मजल करता थका, चक्र रत्न तणे अनुसार ॥ २ ॥
सारी सेना सहित परवरया थका, पडे बाजत्र नां धुकार।
बत्तीस विध नाटक पडावता, एहवा नाटक बत्तीस हजार ॥ ३ ॥
त्यांरा मुख आगे कुण कुण चालिया, अनुक्रमे जथातत्थ जाण।
आगे कह्या ने कहूं वले, तिणरी बुधिवंत करजो पिछाण ॥ ४ ॥

ढाल : ५२

[धर्म दलाली चित करे]

घणा खडग लियां थका हाथ मे, लष्टि ने धनुष नां धरणहारो जी।
पासा ने पुस्तक हाथां झालिया, घणा रे बीणा हाथ मझारो जी।
ते चाले भरत जी रे आगले* ॥ १ ॥
तबोलधरा ने दीवीधरा, चाल्या पोता पोता ने सरूपो जी।
पोता पोता ने वस्त्र पहरणे, मुख आगले चाले दीसे अनूपो जी ॥ २ ॥
वले कुण कुण चाले मुख आगले, अनुक्रमे शोभे रूडी रीतो जी।
घणा दडधरा दडा लियां, जटाधरा ते जटा सहीतो जी ॥ ३ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

मोर पीछीधरा पिण अनेक छे, वले मस्तक मूंडा अनेको जी।
शिक्षाधारी शिक्षावत अनेक छे, हासा ना करणहार विसेखो जी॥ ४॥
द्रव्यकारी कुतूहलकारी घणा, कंदर्प री कथा कहता अनेको जी।
कुकुई कुचेष्टा करे घणा, मुखअरि वाचाल विशेखो जी॥ ५॥
गीत गावता मुख आगल घणा, घणा बाजा वजावंता तामोजी।
नाचता हसता रमता थका, केई कीला करता ठाम ठामो जी॥ ६॥
केई गीत मांहोंमां सीखावता, केई संभलावे माहोमां गीतो जी।
केई शुभ वचन मुख बोलता, केई शुभ बोलावता रूडी रीतो जी॥ ७॥
केई शोभा सिणगार करता थका, केई करता अनेक विध फेनो जी।
केई ओरा तणो रूप देखता, या सगलां रा जूआ जूआ चेहनो जी॥ ८॥
केई जय जय शब्द प्रजूंजता, केई जय जय बोलता तामो जी।
केई मुख मगलिक बोलता थका, मुख आगल बोले छे ठाम ठामो जी॥ ९॥
अनुक्रमे सगलाई चालता, उववाई सूत्र रे अनुसारो जी।
जाव अश्व नें अश्वधरा, त्यारो विविध प्रकारे विस्तारो जी॥ १०॥
नाग हस्ती बेहूं पासे चालता, वले त्यारा झालणहारो जी।
वले बेहू पासे रथ ने पालख्यां, चालता शोभे छे श्रीकारो जी।
भरत विनीता ने चालियो॥ ११॥
हस्ती रत्न बेठो सोभे नरपति, जाणक पूनम चदोजी।
रिधि करने परवर्यो थको, जाणे सांप्रत दीसे देविंदो जी॥ १२॥
चक्र रत्न देखाले मारगे, चाले छे भरत नरिंदो जी।
त्यारे पूठे पूठे आवे चालिया, अनेक राजा रा वृंदो जी॥ १३॥
मोटे आडबर सूं आवता, समूद्र नीं परे करता किल्लोलो जी।
सर्व रिधि जोत करने परवर्या, सीहनाद ज्यूं करता हिल्लोलो जी॥ १४॥
निर्घोष बाजंत्र बाजता थका, सुखे सुखे चाले तामो जी।
जोजन जोजन रे आतरे, लेता थका विश्रामो जी॥ १५॥
ए तो नगर विनीता आयने, करसी विनीता नो राजो जी।
राज छोडेने जासी मोक्ष मे, सारसी सर्व आतम काजो जी॥ १६॥

●

दुहा

इण विध विनीता आवतां विचे, गाम नगरादिक ताय।
त्या सगलां ने आण मनायणें, भेटणो लेई सेवग ठ्हराय॥ १॥

बासो लेता लेता आविया, विनीता राजधानी ताम।
विनीता सूं नेरा अलगा नही, कटक उतास्यो तिण ठाम॥ २॥
विनीता राजधानी तेहनो, बारमो तेलो कियो तिण ठाम।
तिणरो विस्तार छे पाछली परे, ते सगलोई कहिणो छे आम॥ ३॥
तीन दिन पूरा हुआं, नीकल्या पोषधशाला थी बार।
पाछे कही छे तिण विधे, हस्ती रत्न हुआ असवार॥ ४॥
नव निधान नें सेना चउरगिणी, त्यांनें थापे विनीता बार।
सेष परिवार सहित सूं, हुआ विनीता ने त्यार॥ ५॥
भरत जी ने जाण्यां आवता, घणा हर्ष हुआ छे ताय।
ते बधावे छे भरत नरिंद नें, ते विधि सुणजो चित्त ल्याय॥ ६॥

ढाल : ५३

[सुखे ने बधावो किसन नरिंद ने रे]

सुखे ने बधावो रे भरत नरिंद ने रे, भर भर मोतीडां रा थाल।
वले मणि माणक हीरा पन्ना तेहथी रे, बधावो भरत भूपाल।
सुखेने बधावो रे भरत नरिंद ने रे*॥ १॥
एहवा शब्द सुणे सहु हर्षिया रे, हुय गया तुरत तैयार।
रत्नादिक नां भारी भारी भेटणा रे, त्यां लीधा छे हाथ मभार॥ २॥
सगलो साथ भेलो होय नीकल्यो रे, भरत जी साह्मां जाय।
मनरो उच्छाब छे त्यारे अति घणो रे, जाणे बेगा बधावा जाय॥ ३॥
बाजत्र गीत नाद रलियामणा रे, साथियादिक श्रीकार।
ध्वजा पताकादिक मंगलीक नो रे, त्यारो बहुत कियो विस्तार॥ ४॥
हीरा नें पीस्या दासी चिमठी थकी रे, साथियो कियो श्रीकार।
इसरो बल कह्यो छे दासी तणो रे, ए तो कहि छे कथा अनुसार॥ ५॥
ते हीरा वज्र कठिन छे एहवा रे, त्यांने मेले एरण मभार।
कोई बलवत घणरी देवे जोरसूं रे, तिणरे गोच न पडे लिगार॥ ६॥
के तो उछल हीरो अलगो पडे रे, के पेसे एरण मभार।
के पेसे हीरो घण तेहमे रे, पिण मोच न पडे लिगार॥ ७॥
एहवा हीरा पीस्या चिमठी थकी रे, ते दासी घणी बलवान।
त्या हीरा तणो दासी कियो साथियो रे, बधावण भरत राजान॥ ८॥
ते नगर विनीता विचे होय नीकली रे, गयी भरत जी रे पास।
भरत नरिंद राजा ने देखने रे, त्यारे हुवो हर्ष हुलास॥ ९॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अंजली जोड बोले विरुदावली रे, करे घणा गुणग्राम।
विविध प्रकारे लेवे छे उवारणा रे, विने सहित बोले शीष नाम॥ १० ॥
थे सुखे समाधे भलांई पधारिया जी, विनीता नगर मझार।
तुम दर्शणरा हुंता म्हे सामला रे, ते म्हे दीठो छे आज दीदार॥ ११ ॥
विरहो पड्यो तुमना दर्शणा तणो जी, साठ हजार वर्ष एक धार।
इत्यादिक अनेक वचन कहिता थका रे, हर्ष आंसू काढे तिणवार॥ १२ ॥
भारी भारी भेटणा आण्यां तिके रे, मेल्या भरत जी रे पाय।
त्यांरा तो भेटणा लिया छे रूडी रीत सूं रे, जू जूआ मीठे वचन बोलाय॥ १३ ॥
त्यांमे केयक तो न्यातीला आपरा रे, केयक निज परिवार।
केयक नगरी मांहे हुंता मोटका रे, त्यांरो कारण कुरब अधिकार॥ १४ ॥
त्यां सगलां नें भरत नरिंद रूडी रीत सूं रे, दियो घणो सनमान।
वले सतकार दियो सगलां भणी रे, जथाजोग भरत राजान॥ १५ ॥
सीख दीधी सगलां ने संतोषनें रे, मीठे वचन बोलाय।
सेवग नें स्वामी री रीत सूं रे, घणा राजी करनें ताय॥ १६ ॥
विनीता राजधानी रे बाहिरे रे, उतरिया भरत जी आय।
ते खबर हुई विनीता नगरी मझे रे, हर्ष हुवो छे घर घर माय॥ १७ ॥
उच्छाव लागो लोकां रे अति घणो रे, देखण रो लग रह्यो ध्यान।
उछांछला होय रह्या छे अति घणा रे, जाणक देखां भरत राजान॥ १८ ॥
घणा लोक माहोमां मिलने इम कहे रे, भला ऊगो दिन आज।
भरत जी नगरी विनीता आविया रे, भरत क्षेत्र छ ही खंड साज॥ १९ ॥
राजा देश साजे घर आविया रे, दुख नही दे किणनें लिगार।
वले सार संभाल करे सर्व लोक री रे, तिणसूं हर्ष छे घर घर मझार॥ २० ॥
पुन्न प्रतापे हर्ष सारा तणे रे, तिण हर्ष ने कारमो जाण।
ते हर्ष छोडेनें चरित्र लेवसी रे, कर्म काटे जासी निर्वाण॥ २१ ॥

●

दुहा

हिवे भरत राजिंद तिण अवसरे, कर मोटे मंडाण।
आवे नगरी विनीता मझे, हर्ष घणो मन आण॥ १ ॥
निर्घोष वाजंत्र वाजता थकां, सीहनाद ज्यूं करता गुंजार।
निज भवन घर साह्मां चालिया, साथे लियां रिद्ध विस्तार॥ २ ॥
विनीता राजधानी तेह मे, प्रवेश कियो तिण वार।
कुण कुण महोच्छव देवता करे, ते सुणजो विस्तार॥ ३ ॥

ढाल : ५४

[राम पधारिया जी]

भरत राजिंद पधारिया जी, नगर विनीता तेह।
त्यांरा महोच्छब करे छे देवता जी, आणी अधिक सनेह।
भरत पधारिया जी* ॥ १ ॥

एक एक देवता तिण समे जी, आणी पोरस पूर।
विनीता ने बाहिर भितरे जी, कचरो कर दियो दूर ॥ २ ॥

एक एकीका देवता जी, करे महोच्छव आम।
विनीता नें अभितर बाहिरे छे, पाणी छिड़के ठाम ठाम ॥ ३ ॥

एक एकीका देवता जी, करवा लागा छे आम।
विनीता नें अभितर बाहिरे जी, लीपे छे ठाम ठाम ॥ ४ ॥

एक एकीका देवता जी, पांच वर्णा रंगां नी ताम।
विनीता नें अभितर बाहिरे जी, ध्वजा पताका बांधे ठाम ठाम ॥ ५ ॥

एक एकीका देवता जी, चंद्रवा बांधे ठाम ठाम।
केई गोशीर्ष चंदन तणा जी, छापा देवे अभिराम ॥ ६ ॥

केई रक्त चंदन तणा जी, ठाम ठाम छापा दे ताहि।
केई फूल तणी विरखा करे जी, नगरी बाहिर नें मांहि ॥ ७ ॥

केई ठाम ठाम करे धूपणो जी, अगर तगर उखेव।
केई सुगंध तणी विरखा करे जी, एकीका देवता स्वमेव ॥ ८ ॥

केई रूपा तणी विरखा करे जी, केई सोवन वर्षावे ताम।
केई रत्न तणी विरखा करे जी, मांहि ने बाहिर ठाम ठाम ॥ ९ ॥

केई देवता वज्र हीरां तणी जी, विरखा करे तिणं वार।
केई आभरण विविध प्रकार नां जी, त्यारी बिरखा करे वारूंवार ॥ १० ॥

केई मांचा ऊपर मांचा मांडता जी, रूडी रीत रचे छे ताम।
इत्यादिक किया सर्व देवता जी, भरत जी रा महोच्छव काम ॥ ११ ॥

घर घर रग वधावणा जी, घर घर मंगलाचार।
घर घर गावे गीतडा जी, मुख मुख जय जयकार ॥ १२ ॥

घर घर महोच्छब जू जूआ जी, महोच्छव मंडाणा ताय।
रंगरली, घर घर हुई जी, मन माहें हर्ष नमाय ॥ १३ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

वले विनीता नगरी मझे जी, प्रवेश करत तिणवार।
तीन च्यार मारग मिले तिहां जी, वले महापंथ मझार ॥ १४ ॥
तिहा केई अर्थनां लोभिया जी, ते मुख सूं करे गुणग्राम।
केई अर्थी कामभोग नां जी, लाभ अर्थी छे ताम ॥ १५ ॥
केई अर्थी छे विविध प्रकार ना जी, रिद्धि नां अर्थी अनेक।
ते पिण तिहां आए मिल्या जी, त्यारे जू जूई चाह विशेख ॥ १६ ॥
सखधरा ने चक्रधरा जी, मुंह मंगलिया जाण।
ते पिण अर्थ ना लोभिया जी, बोले छे मीठी वाण ॥ १७ ॥
बांस ना खेलणहारा तिहां जी, पाटिया नां देखाडणहार।
इत्यादिक बहु आविया जी, जातां थकां मारग मझार ॥ १८ ॥
जे जे शब्द बोले घणा जी, ते पडे भरत जी रे कान।
त्याने जाण् विटंवणा त्यागसी जी, जासी पांचमीं गति परधान ॥ १९ ॥

दुहा

ते वचन बोले इष्ट कारिया, कात कारिया वचन विशेख।
प्रीति कारी वचन रलियामणा, मनोज्ञ वचन बोले छे अनेक ॥ १ ॥
कल्याण ने मंगलीक कारणी, इसडी वाणी बोले रह्या ताम।
तिण वाणी रा भेद अनेक छे, निरतर बोले छे ठाम ठाम ॥ २ ॥
अभिनंदता विरुद वचन छे, ते बोले छे वचन आशीष।
अभित्थुणं ता वचन स्तुत्य छे, ते बोले छे नमणकर शीष ॥ ३ ॥
जय जय नदा शब्द बोले घणा, थारे होयजो विरुद विशेख।
जय जय भद्दा शब्द कहे घणा, तुमने होयजो कल्याण अनेक ॥ ४ ॥
वले भरत जी नें देखने, विकसित हुवा छे नैण।
वले आशीष देता रूडी रीत सूं, किण विध बोले गमता वैण ॥ ५ ॥

ढाल : ५५

[वेग पधारो महल थी]

थें अण जीता ने जीपजो, करो जीतां री प्रतिपाल।
थे जीता छे त्यां मांहे वसो, इम बोले वचन रसाल।
थें भला पधार्‍यां राजा भरत जी* ॥ १ ॥

---

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इंद्र विराजे देवतां मझे, करे देवलोक मांहे राज।
तिण विध राज तुम्हे करो, सीहनाद ज्यूं करता ओगाज॥ २॥
चंद्रमा तारां मझे, राज करे श्रीकार।
तिण विध राज तुम्हे करो, भरत खेतर मझार॥ ३॥
चमर इंद्र असुर कुमार मे, राज करे अभिराम।
तिण विध भरत क्षेत्र मझे, राज कीजो सर्व ठाम॥ ४॥
धरणिंद नाग कुमार मे, राज करे छे वदीत।
तिण विध भरत क्षेत्र मझे, राज करो रूडी रीत॥ ५॥
अनेक लाखां पूरव लगे, राज कीजो विनीता मांय।
वले अनेक कोड पूरव लगे, राज कीजो सुखदाय॥ ६॥
अनेक पूरव कोडा कोड रो, थें कीजो अखंडित राज।
आखा भरत खेतर मझे, विनीता मांहि विराज॥ ७॥
छव खंड तणी प्रजा पालजो, लीजो जस सोभाग।
राज कीजो थें मोटा मंडाण थी, थांरा पुन्न छे अत्यंत अथाग॥ ८॥
इत्यादिक अनेक विरुदावली, लोक बोले छे ठाम ठाम।
भरत नरिंद ने चालतां, नगरी विनीता ने ताम॥ ९॥
सहसांगमें माला नयणा तणी, ते देखे छे ठाम ठाम।
वले सहसांगमे माला वदन री, ते मुख सूं करता गुणग्राम॥ १०॥
हृदय माला सहसागमे, हर्ष पामे हियो देख।
ते देख देख तृप्त हुई नही, देखण री वंछा विशेख॥ ११॥
आंगुलियां माला सहसागमे, एक एक ने तिण काल।
जीमणी अंगुलियां सूं भरत नों, रूप दिखाले रसाल॥ १२॥
हजारांगमे नर नारियां, त्यांरी अजली माला अनेक।
ते लेतो थको ग्रहतो थको, ते सगलाई बोले विशेष॥ १३॥
सगलां साहमो जोवतो थको, त्याने देतो थको सनमान।
गमावे नही किणनें गाफले, इसडो छे सावधान॥ १४॥
इण विध आवे छे निज घरे, देतो देतो म्हेलाण।
निर्घोष बाजंत्र बाजतां थकां, आयो मोटे मंडाण॥ १५॥
ए मंडाण जाणे सर्व कारिमा, भरत जी अंतरग मांय।
त्यांनें छोड संजम सुध पालसी, मोख विराजसी जाय॥ १६॥

दुहा

जिहा पोताना आवस छे, तिण प्रसाद नो वारलो द्वार।
तिहां हस्ती रत्न ऊभो राखने, हेठा उतरिया तिणवार॥ १ ॥
हिवे सोले सहंस देवता भणी, घणो दियो सनमान सतकार।
वले बत्तीस सहस राजा तेहने, सतकारया सनमान्या तिणवार॥ २ ॥
सेनापति गाथापति रत्न ने, वढई प्रोहित रत्न मे जाण।
यां च्यारू रत्ना ने भरत जी, घणो दियो सतकार सनमान॥ ३ ॥
रसोईदार तीनसो साठां भणी, वले श्रेणी प्रश्रेणी अठार।
त्यां सगला ने रूडी रीत सू, दियो सनमान ने सतकार॥ ४ ॥
राजा ईसर तलवर आदि दे, त्यानें पिण सनमान ने सतकार।
निज भवन माहे पेसता, किण किण ने लीधा छे लार॥ ५ ॥

ढाल : ५६

[श्रावक धर्म करो सुख०]

भरत जी निज भवन माहे चाल्या, अस्त्री रत्न त्यारे लारो जी।
वले छ रितु ना सुख नी करणहारी, अस्त्री साथे बत्तीस हजारो जी।
भरत जी देश साझे घर आया* ॥ १ ॥
वले बत्तीस सहस कल्याणीक अस्त्री, जनपद देश राजा री बेटी जी।
ते पिण साथे भवन मे जाता, त्यारा रूप रे कुण आवे जेटी जी॥ २ ॥
बत्तीस विधरा नाटक बत्तीस हजार, त्या सहित भरत राजानों जी।
निज आवास माहे प्रवेश करे छे, मन माहे घणो हर्षवानो जी॥ ३ ॥
वेसमण देवता देवता रो राजा, मोटे मडाण आवे केलासो जी।
पर्वत जिम ऊचा छे ज्यारे, सिखर बध महल आवासो जी॥ ४ ॥
मित्र न्यातीला सू आय मिलिया वले, सगा स्वजनादिक जाणो जी।
परिजन दास दासी आदि देई, त्याने बोलावे कर कर पिछाणो जी॥ ५ ॥
कुसल खेम समाचार पूछे, बोलावे स्नेह सहीतो जी।
स्नेह दृष्टि त्या साहमो जोवे, जथाजोग करता थका प्रीतो जी॥ ६ ॥
जथाजोग सगला सू मिलता, वले पूछता थका समाचारो जी।
जब हर्ष रा आसू पडे आख्या मासूं, देख देख भरत जी रो दीदारो जी॥ ७ ॥
इण विध न्यायतीला सू मिलनें भरत जी, गया मजण घर माह्यो जी।
मंजण करनें भोजन घर आया, तेला रो पारणो कियो ताह्यो जी॥ ८ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

भोजन कियां पछे सुखे समाधे, बेठा प्रासाद मझारो जी।
मादंल मस्तक फूटे रह्या छे, नाटक पडे बत्तीस प्रकारो जी॥ ९॥
वर प्रधान तरुणी अस्त्रियां संघाते, भोगवे छे काम ने भोगोजी।
मोटें मंडाण आडंबर करने, आय मिलियो छे सर्व संजोगो जी॥ १०॥
एहवा भोग सजोग मिलिया ते, साराग्यान सूं जाणे वमन आहारो जी।
त्यांने त्यागसी वैराग भाव आण ने, इण भव जासी मोख मझारो जी॥ ११॥

●

दुहा

काल कितोएक वीतां पछे, एकदा प्रस्तावे ताय।
राज धुरा चिंतवतां थकां, ऊपनों मन नो अध्यवसाय॥ १॥
हूं भरत क्षेत्र जीतो सर्वथा, म्हारे बल पराक्रम करे ताम।
चूल हेमवंत ने समुद्र विचे, आण वरताई सर्व ठाम॥ २॥
हू संपूर्ण भरत क्षेत्र जीतने, सगले वरताई आण।
तो श्रेय कल्याण छे मो भणी, राज बेसणो मोटे मडाण॥ ३॥
एहवी राते करे विचारणा, सूर्य ऊगां हुओ प्रभात।
जब गया मंजण घर तेहमें, स्नान कियो आगा ज्यूं विख्यात॥ ४॥
पछे मंजण घर थी नीकले, आया उवठाण शाल मझार।
तिहा बेठा गिंघासण ऊपरे, भरत नरिंद तिणवार॥ ५॥

ढाल : ५७

[जिण भाखे छण०]

देवता सोले हजार, सताब बोलाविया रे।
ते देवता आग्याकार, सताब सूं आविया रे॥ १॥
वले बत्तीस सहंस राजान, त्यानेंई तेडाविया रे।
ते पिण घणा विनेवान, सताब सूं आविया रे॥ २॥
सेनापति गाथापति ताय, बढई ने प्रोहित भणी रे।
या च्यारा ने लिया बोलाय, भरतेसर सिर घणी रे॥ ३॥
तीन सो साठ रसोईदार, त्याने तेडिया इहा रे।
श्रेणी प्रश्रेणी अठार, त्यांनेंई तेड्या तिहां रे॥ ४॥
वले बीजाई घणा राजान, ईसर तलवर घणा रे।
सार्थवाह प्रधान, अधिकारी बहु जणा रे॥ ५॥

इत्यादिक सगलाई आय, विनो भगत करी रे।
अंजली जोडी छे ताय, शीष नमण करी रे॥ ६ ॥
त्यांनें कहे छे भरत जी जाण, म्हे म्हारे बल करी रे।
फेरी भरत मे आण, म्हे जीत फते करी रे॥ ७ ॥
तिण कारण थें म्हाने राज, बेसाणो मो भणी रे।
ज्यूं सीझे मन चिंतव्या काज, आछी लागे घणी रे॥ ८ ॥
इम कहत पाण राजान, आया सारा जणा रे।
हुआ घणा हर्षवान, आनद पाम्यां घणा रे॥ ९ ॥
सारा बोल्या जोडी हाथ, ए आप आछी कही जी।
थें छव खड शिर धणी नाथ, आ थाने जुगती सही जी॥ १० ॥
ए वचन करे परमाण, भरत राजान ने जी।
पाछा गया निज ठिकाण, कह्यो सर्व माननें जी॥ ११ ॥
महाराज अभिषेक काज, मडाण करे घणा जी।
ते पिण छोडे देसी राज, गृद्धी नही तेह तणा जी॥ १२ ॥
संजम ले होसी सूर, कर्मा ने काटसी जी।
सिद्ध होसी सुखा मे पूर, ए खाटवां खाटसी जी॥ १३ ॥

दुहा

यां सगला ठिकाणे गया पछे, भरत जी पोपधशाला आय।
राज निरविघन निमते कियो, तेरमो तेलो ताय॥ १ ॥
निर्विघ्न राज माहरो, सदाकाल रहजो एक धार।
एहवो ध्यान एकाग्र ध्यावता, पोसधशाला मझार॥ २ ॥
एहवो ध्यान ध्यावता थकां, तीन दिन पूरा हुआ ताय।
जब आभियोगी देव बोलायने, तिणने कहे छे भरत महाराय॥ ३ ॥
जावो तुम्हे देवाणुप्पिया, ईसाण कूण रे मांय।
राज अभिषेक करवा जोग माडलो, ते वेगो विकूरवो जाय॥ ४ ॥
ते मंडप कीजो अति मोटको, घणो रलियामणो अनूप।
ते करने म्हारी आगन्या, सताव सू पाछी सूप॥ ५ ॥
ते सुणने आभियोगिया देवता, घणा हर्षित हुवा मन माय।
हिवे मंडप विकूर्वे किण विधे, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ६ ॥

ढाल : ५८

[जंबू द्वीप मझार रे]

नगर विनीता वार रे, कूण ईसाण में।
तिहा गयो आभियोगी देवता ए॥ १ ॥

वेक्रेय समुदघात रे, कीधी तिण शक्ति सूं।
निज प्रदेश विस्तारिया ए॥ २ ॥

तिण ठामे कियो दंड एक रे, अति रलियामणो।
संख्याता जोजन तणो ए॥ ३ ॥

तिण वादर पुद्गल न्हांख रे, सुक्षम खान्चे लिया।
सोले जातरा रत्न नें ए॥ ४ ॥

वले दूसरी वार रे, समुदघात करी।
सम कीधी रमणीक भूमिका ए॥ ५ ॥

मृदंग बाजंत्र ढोल रे, माखण सारिखो।
तिणसूं सुहालो आगणो ए॥ ६ ॥

तिण भूमि भाग रे मध्य रे, तिण ठामे कियो।
अभिषेक मडप रच्यो ए॥ ७ ॥

अनेक सईकडा थभ रे, तिण मडप तणे।
सुर्याभ तणी परे जाणजो ए॥ ८ ॥

तिणरो छे घणो विस्तार रे, राय प्रश्रेणी ए।
पेक्षाघर मंडप ज्यूं कह्यो ए॥ ९ ॥

अभिषेक मंडप मध्य भाग रे, एक मोटो रच्यो।
अभिषेक चोतरी विकूरवियो ए॥ १० ॥

ते निरमल जल रहीत रे, दीठा जल हरे।
ते सुक्षम पुद्गल रत्नां तणो ए॥ ११ ॥

अभिपेक पीढ रे ताम रे, तीन दिशा भणी।
पावडिया तिहा विकूरव्या ए॥ १२ ॥

तिण पावडिया रो वरणन्न रे, राय प्रश्रेणी ए।
जाव तोरण ताई कियो ए॥ १३ ॥

अभिपेक पीढ रे ताम रे, मध्य भागे कियो।
एक मोटो सिंघासण दीपतो ए॥ १४ ॥

तिण सिघासण रो वरणन्न रे, कह्यो सिद्धात मे।
सुर्याभ तणी पर जाणजो ए॥ १५ ॥

फूलारी माला अनेक रे, दडा फूलां तणा।
सिंघासण रे लहकता ए॥ १६॥
अभिषेक मंडप रे पीठ रे, वले सिंघासणे।
सुर्याभ तणी परे जाणजो ए॥ १७॥
अभिषेक मडप अनूप रे, अति रलियामणो।
आभियोगी देवता विकूरव्यो ए॥ १८॥
ते करने आयो सताब रे, भरत राजा कन्हे।
कहे अभिषेक मंडप कियो ए॥ १९॥
आभियोगी देवता पास रे, सुणने भरत जी।
हर्ष संतोष पाम्यो घणो ए॥ २०॥
हिवे भरत नरिंद तिण वार रे, पोषधशाल थी।
ततखिण बारे नीकल्या ए॥ २१॥
सेवग नें कहे बोलाय रे, देवाणुप्पिया।
पट हस्ती रत्न नें सजकरो ए॥ २२॥
हय गय रथ पायक ताम रे, सेना चउरगिणी।
सज करो बेग सताब सूं ए॥ २३॥
सेवग पुरुष ततकाल रे, सेना सजकरी।
पाछी सूंपी तिण आगन्यां ए॥ २४॥
ए वचन सुणेने ताम रे, गया मजण घरे।
स्नान कियो विध आगली ए॥ २५॥
मोलेकर महघा ताहि रे, हलका तोल में।
एहवा आभूषण पहरिया ए॥ २६॥
अभिषेक हस्ती रत्न रे, तिण ऊपर चढ्या।
आठ आठ मंगलीक मुख आगले ए॥ २७॥
जब आया विनीता माहि रे, तब महोच्छव किया।
तेहिज विधि सारी जाणजो ए॥ २८॥
जब एक एकीका देव रे, विरखा करे रत्न री।
केई सोवन तणी विरखा करे ए॥ २९॥
एक एकीका देव रे, वज्र रत्नां तणी।
केई विरखा करे रूपा तणी ए॥ ३०॥
कियो विनीता मे परवेश रे, जब विरखा करी।
ते सगली विधि इहां करी ए॥ ३१॥

कर मोटे मंडाणे ताम रे, विनीता नगरिये।
मध्यो मध्य थई नीकले ए॥ ३२॥
ईसाण कूण रे मांहि रे, अभिषेक मंडप छे।
तिण द्वारे आय ऊभा रह्या ए॥ ३३॥
हस्ती रत्न तिण ठाम रे, ऊभो राखियो।
हस्ती थी हेठा ऊतर्‍या ए॥ ३४॥
अंतेवर चोसठ हजार रे, अस्त्री रत्न वले।
त्या संघाते परवर्‍यो थको ए॥ ३५॥
वले नाटक बत्तीश हजार रे, बत्तीस प्रकार नां।
त्यां संघाते परवर्‍यो थको ए॥ ३६॥
अभिषेक मंडप रे माहि रे, प्रवेश कियो तिहां।
अभिषेक पीठ तिहां आविया ए॥ ३७॥
अभिषेक पीठ ने ताम रे, प्रदक्षिणा करी।
पूरव पावडिया चढ्या ए॥ ३८॥
तिहां रच्यो सिंघासण ताम रे, तिण ठामे आयनें।
बेठा सिंघासण ऊपरे ए॥ ३९॥
पूरव साह्मो मुख राख रे, रूडी रीत सं।
बेठा सिंघासण ऊपरे ए॥ ४०॥
सेव सहु परिवार रे, ते आवे किण विधे।
एक मना थई सांभलो ए॥ ४१॥
एहवा करे मंडाण रे, राज वेसवा।
पिण तिण मे नही राचसी ए॥ ४२॥
आणे समता रस पूर रे, राज त्यांग नें।
इण भव जासी मुगत मे ए॥ ४३॥

दुहा

बत्तीश सहंस राजा तिण अवसरे, आया अभिषेक मंडप मांहिं।
अभिषेक पीढ रे प्रदक्षिणा करे, चढिया उत्तर पावडिया ताहि॥ १॥
जिहां भरत राजा तिहां आयनें, अंजली करे जोडी हाथ।
विनो कियो शीष नमायनें, जाणे शिर धणी नाथ॥ २॥
जय विजय करे वधायनें, नेरा अया ऊभा तिण ठाम।
शुश्रषा करता एकाग्र चित्त, सेवा भक्ति करे गुणग्राम॥ ३॥

सेनापति रत्न नें गाथापति, वढई प्रोहित पिण आम।
शेष राजादिक कह्या तिके, दखिण पावडिये चढिया छेताम ॥ ४ ॥
ए पिण प्रदक्षिणा करता थका, राजा कियो तिमहिज ताम।
सेवा भक्ति तिम हिज करे, भरत जी रा करे गुण ग्राम ॥ ५ ॥
जब आभियोगी देवता भणी, बोलाए कहे भरत जी आम।
शीघ्र करो देवाणुप्पिया, राज अभिषेक काम ॥ ६ ॥
महर्घ मणि रत्नादिक तणो, मोटां जोग अनूप।
राज अभिषेक करवा भणी, सर्व सज करे आण भूंप ॥ ७ ॥
ते देव सुणे हर्षित हुवो, वचन कर लीधो परमाण।
ते ईसाणकूण में जायनें, वेक्रे समुदघात कीधी जाण ॥ ८ ॥
ते विजय पोलिया नी परे, अठे कहणो सर्व अधिकार।
ते जीवाभिगम उपांग में, जोय लेणो विस्तार ॥ ९ ॥

ढाल : ५६

[चतुर विचार करेनें देखो]

एक हजार नें आठ कलसा, सोना रा वेक्रे किया श्रीकारो जी।
वले वेक्रे किया कलस रूपा रा, आठ नें एक हजारो जी।
भरत नरिंद नें राज बेसावे* ॥ १ ॥
एक सहंस नें आठ मणि रत्न में, कलशा किया वेक्रे अनूपो जी।
एक सहंस नें आठ सोवन नें रूपा में, वेक्रे किया घर चूंपो जी ॥ २ ॥
एक सहंस नें आठ सोवण मणि में, कलशा विकूर्व्या तामो जी।
एक सहस ने आठ रूपा ने मणि में, ते पिण कलशा घणा अभिरामो जी ॥ ३ ॥
सोवन रूपा नें मणि रत्न मे, कलशा एक सहंस नें आठो जी।
सहंस ने आठ महीनां विकूर्व्या, कर कर वेक्रेनां थाटो जी ॥ ४ ॥
ए आठ हजार नें चोसठ कलशा, देवता रूडी रीत सूं करिया जी।
ते क्षीरोदधि आदि पाणी तीर्थ नां, गंधोदक जल करनें भरिया जी ॥ ५ ॥
एक सहंस ने आठ भिगार लोटा, आरीसा एक सहंस नें आठो जी।
एक सहंस नें आठ थाली नें पात्री, वेक्रे किया रूडे घाटो जी ॥ ६ ॥
एक सहंस नें आठ रत्न करंडिया, फूल चगेरी सहंस ने आठो जी।
एक सहंस नें आठ छत्र रत्न नें चामर, देवता किया वेक्रेनां थाटो जी ॥ ७ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

धूप कुडछा किया सहंस नें आठ, इत्यादिक अनेक प्रकारो जी।
ते विस्तार तो छे जीवाभिगम मे, विजे पोलिया ने अधिकारो जी॥ ८॥
ए वेक्रे किया ते एकठा करने, विनीता नगरी आयो ताह्यो जी।
विनीता ने प्रदक्षिणा करतो, अभिषेक मंडप तिहा आयो जी॥ ९॥
अभिपेक मंडप तिहां भरत जी बेठा, विनो कियो आण हुल्लासो जी।
राज अभिषेक काजे किया ते, आण मेल्या भरत जी रे पासो जी॥ १०॥
जब बत्तीश सहंस मुकुटबंध राजा, सोभनीक भली तिथि जाणी जी।
वले निर्मलो दिवस ने नक्षत्र रूडो, मुहूर्त रूडो पिछाणी जी॥ ११॥
उत्तरा भद्रपद नक्षत्र रूडो, विजय मुहूर्त चोखो जाणो जी।
तिण काले राज अभिषेक करावे, राज बेसाणे मोटे मंडाणो जी॥ १२॥
आठ सहंस नें चोसठ कलशा जल भरिया, सुरभि गंधोदक त्यामें पाणी रे।
त्यांनें आभियोगी देव वेक्रे किया ते, कमल ऊपर मेल्या छे आणी रे॥ १३॥
तिण सुरभि गंध जल करनें राजां, मस्तक ऊपर जल ढोल्यो ताह्यो रे।
राज अभिषेक करायो मोटे मडाणे, जूओ जूओ सगलांई रायो रे॥ १४॥
इण विध सेनापति गाथापति रत्न, बढई ने प्रोहित तिण वारो रे।
तीनसो नें साठ रसोईदार सारा, वले श्रेणी प्रश्रेणी अठारो जी॥ १५॥
वले ईसर तलवर सार्थवाह ते, इत्यादिक सारा आया ते जाणो जी।
त्यां पिण अभिषेक राजा ज्यू करायो, जूए जूए जल सींच्यो छे आणो जी॥ १६॥
वले सोले सहंस देवता आया त्यां पिण, अभिषेक करायो छे एमो रे।
त्यां सुखमाल वस्त्र अनोपम, तिणसूं अंग लूह्यो धर प्रेमो रे॥ १७॥
चंदन चरचनें वस्त्र गहण पहराया, वले मस्तक मुकुट पहरायो रे।
इत्यादिक आभूषण विविध प्रकारे, सारो सिणगार देवां करायो रे॥ १८॥
देवतां सिणगार करायो ते भरत जी, जाणे सर्व तमासो रे।
त्यांने पिण त्यागेनें सजम लेसी, मुगत मे जाय करसी बासो रे॥ २०॥

●

दुहा

वले देवतां चंदन छापा दिया, तिणमें गंध सुगंध छे पूर।
वले बहु पर्वत थी आणिया, कस्तूरी चंदन कपूर॥ १॥
त्यां करनें गात्र छांटियो, तिणरो पिण गंध अपार।
दिव्य प्रधान माला फूलां तणी, देवतां घाली गलारे मझार॥ २॥
कहि कहिने कितरो कहूं, तिणरो घणो विस्तार।
विभूषित कियो अंग देवतां, जाणे इंद्र तणे उणियार॥ ३॥

राज अभिषेक कियो भरत जी, तिणरो बहुत विस्तार।
ते जीवाभिगम थी जाणजो, विजे पोलिया रे अधिकार ॥ ४ ॥
अभिषेक करावतां जू जूआ, बोल्या वचन रसाल।
राजादिकने सर्व देवता, ते सुणजो सुरत संभाल ॥ ५ ॥

ढाल : ६०

[सलूणी जोगण रूडी वे। अरे हां]

प्रत्येक प्रत्येक जू जूआ बोले, सगलाई राजान।
वले मोटे मोटे शब्दे करी, विने सहित देता सनमान। भरतेसर।
राजिंद रूडो वे, अरे हां सुज्ञानी।
पुन्नवंत पूरो छे* ॥ १ ॥
इष्टकारी वाणी वल्लभ बोले, प्रीतिकारी मनोहर जाण।
आशीष देता भरत नरिंद ने, वाणी बोले छे अमिय समाण ॥ २ ॥
आ नगरी विनीता देवलोक सारीखी, देवता निपजाई ताम।
राज कीजो तुम्हे एहनो, छव खंड रा पृथ्वीपति स्वाम ॥ ३ ॥
घणा लाखां गमे पूरब लग आप, घणा कोडा पूरब लग जाण।
घणा कोडा कोड पूरबा लगे, राज कीजो थे मोटे मडाण ॥ ४ ॥
तारा मझे राज करे चद्रमा, देवता माहे इंद्र महाराज।
तिम राज कीजो विनीता मझे, सीझजो मन वछित काज ॥ ५ ॥
असुर कुमार मे राज करे चमरिंद, नाग कुमार मे धरणिंद।
तिम राज कीजो विनीता मझे, दिन दिन अधिक आनंद ॥ ६ ॥
मुख मुख जय जय शब्द कहे छे, वले विजय शब्द विशेष।
मंगलीक शब्द मुख उच्चरे, भरत नरिंद ने देख देख ॥ ७ ॥
विनीता नगरी मांहे प्रवेश करतां, भरत नरिंद तिण वार।
जब मंगलीक मुख बोलता, तिण विध कहिणो विस्तार ॥ ८ ॥
बत्तीश सहस राजा इम बोल्या, च्यारू रत्न पिण बोल्या एम।
श्रेणी प्रश्रेणी इम बोलिया, आशीष देता धर प्रेम ॥ ९ ॥
सार्थवाहादिक सगला आया ते, मगलीक बोल्या एकधार।
वले इण हिज विध सर्व बोलिया, देवता पिण सोले हजार ॥ १० ॥
इण विध मोटे मडाण करेने, भरत जी बेठा राज।
फलिया मनोरथ तेहनां, सरिया मन चिंतविया काज ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

राज अभिषेक करे भरत जी, सेवग पुरुष ने कहे छे बोलाय।
हस्ती खंधे तूं बेसनें, सताब सूं विनीता मे जाय ॥ १२ ॥
तीन च्यार मारग तिण ठामें, चच्चर नें महापंथ जाण।
तिहां मोटे मोटे शब्दे करी, घोसणा कीजे मोटे मंडाण ॥ १३ ॥
कहिजे दाण मापो थांने सर्वथा मूंक्यो, गवादिकर मूंक्यो छे ताम।
तोला ने मापा वधारजो, सगली नगरी ने ठाम ठाम ॥ १४ ॥
किणरे घरे राजा रो पुरुष म जावो, दंड पिण नहीं लेणो लिगार।
कुदंड पिण लेणो नही, सर्व नगर नें देश मझार ॥ १५ ॥
जो किणरेई माथे रिणो हुवे तो, देजो तुरत चुकाय।
जो घर मे न हुवे तेहने, देजो दरबार सूं ले जाय ॥ १६ ॥
आज पहली कोई देणो म राखो, विनीता नगरी रे मांय।
जो खावा नें न हुवे घर मझे, तो लेजावो दरबार सू आय ॥ १७ ॥
वले विनीता नगरी मे घरणो मत पाडो, वले मत करो कजिया राड।
अशुभ किरतब करो मती, इण विनीता नगर मझार ॥ १८ ॥
घर घर महोच्छब हर्ष सूं मांडो, घर घर बांधो फूलमाल।
घर घर रग बधावणा, घर घर गावो गीत रसाल ॥ १९ ॥
रंगरली घर घर माहे कीजो, कोई मत कीजो सोग लिगार।
महामहोच्छब बारा बरषां लगे, कीजो विनीता नगरी मझार ॥ २० ॥
इत्यादिक महोच्छब विवध प्रकारे, कीजो नगरी में अनेक।
बारे बरषां लग कीजे नवनवा, दिन दिन हर्ष विशेष ॥ २१ ॥
इण विध उदघोसणा जाय कीजो, विनीता नगर मझार।
ठाम ठाम सुणाए सर्व नें, तिणरी मतकर ढील लिगार ॥ २२ ॥
इत्यादिक कह्या ते कारज करेने, पाछी आज्ञा सूंपे आंण।
ते सेवग सुण हर्षित हुवो, वचन कर लीधो परमाण ॥ २३ ॥
सेवग हस्ती खंध बेस चाल्यो, आयो विनता माय।
भरतजी कह्यो सगलो करे, पाछी आज्ञा सूंपी आय ॥ २४ ॥
मगलीक कीधा राज बेठण रा, भरत नरिंद महाराज।
ते तो संजम लेसी राज छोड्ने, मोख जासी सारे निज काज ॥ २५ ॥

●

दुहा

सेवग आय कह्यां पछे, सिंघासण सूं ऊठ्या तिणवार।
अस्त्री रत्न साथे हुई, वले अतेवर चोसठ हजार ॥ १ ॥

वले नाटक वत्तीस हजार सूं, परवस्था थका तिण वार।
पूरव नें पावड्यिे ऊतरे, हुआ हस्ती असवार ॥ २ ॥
बत्तीस सहंस राजा ऊतस्था, उत्तर पावडिया आय।
सार्थवाहादिक ने च्यारूं रत्न, दखिण दिशि उतरिया ताय ॥ ३ ॥
जिम चढिया तिम ऊतस्या, अभिषेक पीढ थी ताहि।
हस्ती रत्न चढिया थका भरतजी, पाछा आवे विनीता माहिं ॥ ४ ॥
आठ आठ मंगलीक मुख आगले, अनुक्रमें चाले छे तेथ।
आगे कह्यो विनीता में पेसतां, ते सगली विधी कहणी एथ ॥ ५ ॥
सतकार कस्यो लोकां घणो, विरूदावलियां अनेक विध जाण।
वले महलां पधास्या भरतजी, आगे कह्यो तिम सर्व पिछाण ॥ ६ ॥
कुबेर ते वेसमण नामें देवता, चढे मेरू पर्वत केलाश।
इण रीते भरतजी महला चढ्या, शिखर भूत गगन आकाश ॥ ७ ॥

ढाल : ६१

[आबू गढ तीथ ताजा]

हिवे भरत नरिंद तिण वार, गया मंजण घर मझार।
स्नान कियो छे रे, भरतेसर पूरवली परे ॥ १ ॥
पछे भोजन मंडप पेस, सुखकारी आसण वेस।
तिहा तेरमां तेला रो रे, भरतेसर कीधो पारणो ॥ २ ॥
भोजन करे तिण वार, तिहां थी निकलिया बार।
महिलां माहें बेठा रे, सारा ऊपरली भूमिका ॥ ३ ॥
ते महिल छे पांच प्रकार, त्यारो बहुत कह्यो विस्तार।
त्यानें देवता निपजाया रे, रत्न अमोलक तेहमे ॥ ४ ॥
आरीसा महल अचंभ, तिण माहे दीसे प्रतिबिंव।
तिण महलां मे रे, भरतेसर केवल पामसी ॥ ५ ॥
शिखर भूत गगन आकाश, ऊंचा छे महल आवास।
बयांलीस भोम्यां रे, महल घणा रलियामणा ॥ ६ ॥
ते महल छे रत्न जडंत, देख देख हर्षंत।
तिहां उद्योत रत्नां रो रे, महला मे सदा होय रह्यो ॥ ७ ॥
तिहां पूतलिया मनहरणी, अनोपम सोवन वरणी।
ते जाणक इंद्राणी रे, मुख आगल- नाटक नाचती ॥ ८ ॥
रंग मंडप तोरण जाली, कोरणियां अति रूपाली।
खांत खंताली रे, ते दीसे अति रलियामणी ॥ ९ ॥

तिहा रूप चित्राम अनेक, ते सोभ रह्या छे विशेख।
त्यारो रूप मनोज्ञ रे, लागे नयणा ने सुहामणो ॥ १० ॥
किनर देवतां रा रूप, ते दीसे घणा अनूप।
विद्याधर ना जोडा रे, रूपाला मांड्या महल मे ॥ ११ ॥
वले लहरूया भांत अनूप, त्यांने कीधी घणी घर चूंप।
ते केसर क्यारी ज्यू रे, पचवर्णी बूंट्या खुल रही ॥ १२ ॥
त्यां महलां में अत्यंत उद्योत, तिहा लागी झिगामिग ज्योत।
चद्रमा सरीखो रे, उजवालो तिण महलां तणों ॥ १३ ॥
राते बीजलिया झलके, तिम महल भरत रा भलके।
सूर्य किरण सरीखो रे, महलां रो चलको चिहु दिशा ॥ १४ ॥
ते महल घणा श्रीकार, त्यांरों सुदर रूप आकार।
देवता निपजाया रे, त्या महिला रो कहिवो किसूं ॥ १५ ॥
महला रो घणो विस्तार, तिणरो जाण लेजो अनुसार।
इंद्र तणा महला री रे, तिण महला छे ओपमा ॥ १६ ॥
मादल ना मस्तक फूटे, त्यारा शब्द मनोज्ञ ऊठे।
सहंस बत्तीस नाटक करे, पडे छे बत्तीस प्रकार नां ॥ १७ ॥
अस्त्री रत्न सघात, सुख भोगवे दिन रात।
तिणसूं भोग भोगवे रे, मनोज्ञ पाच प्रकार ना ॥ १८ ॥
अंतेवर चोसठ हजार, ते अपछर रे उणियार।
त्यासूं पिण मनोज्ञ रे, रात दिवस सुख भोगवे ॥ १९ ॥
भोगवे भोग, रसाल, इम सुखे गमावे काल।
अभिषेक महोच्छब रे, करता बारे वर्ष नीकल्या ॥ २० ॥
महा महोच्छब रूडो, बारे वर्षे हुवो पूरों।
जब भरत राजेसर रे, आया मजण घर तेहमें ॥ २१ ॥
स्नान करे तिण काल, पछे आया उवठाण शाल।
तिहां सिंघासण बेठा रे, भरतजी पूरव सनमुखे ॥ २२ ॥
देवता सोले हजार, सनमाने सतकार।
त्यानें सीख देईने रे, निज ठिकाणे मेलिया ॥ २३ ॥
वले बत्तीश सहस राजान, सेनापति रत्न निधान।
गाथापति बढई रे, वले चोथा प्रोहित रत्न ने ॥ २४ ॥
तीनसो साठ रसोईदार, श्रेणी प्रश्रेणी अठार।
वले अनेक राजेसर रे, सार्थवाहादिक तेहने ॥ २५ ॥

यां सगलांनें भरत राजान, घणो सतकारे सनमान।
त्यांनें सीख देईने रे, निज ठिकाणे म्हेलिया ॥ २६ ॥
सगलानें सीख देई ताहि, आया निज महलां माहि।
तिहां सुख मनोज्ञ रे, तिण महला माहे भोगवे ॥ २७ ॥
त्याने जाणे आल पपाल, ए मोटो माया जाल।
त्याने अंतरग माहे रे, जाणे छे विष फल सारिखा ॥ २८ ॥
त्यांसूं उतर जासी हेज, छोडतां नही करसी जेज।
संजल लेईने रे, सिद्ध गति मे जासी पाधरा ॥ २९ ॥

दुहा

चक्र रत्न ने छत्र रत्न, दंड ने असी रत्न बखाण।
ए च्यारूं रत्न एकेंद्री, आयुधशाला मे ऊपनां आण ॥ १ ॥
चर्म रत्न ने मणि कांगणी, ए तीनूं रत्न एकेंद्री जाण।
नव निधान मे श्रीघर भंडार छे, तिण माहे ऊपना आय ॥ २ ॥
सेनापति नें गाथापति, बढई ने प्रोहित ताहि।
ए च्यारूं रत्न पचेंद्री, ऊपनां छे विनीता माहिं ॥ ३ ॥
अश्व रत्न हस्ती रत्न ते, ए दोनूं रत्न पचेंद्री जाण।
ते वेताढ पर्वत तेहनें, मूले ऊपनां आण ॥ ४ ॥
सुभद्रा नामे अस्त्री रत्न ते, वेताढ ने उत्तर दिगि ताम।
तिहां विद्याधरनी श्रेण छे, अस्त्री रत्न ऊपनी तिण ठाम ॥ ५ ॥
ए चवदे रत्ना री उतपत कही, त्यांरो अधिपति भरत महाराय।
त्यारी रिद्ध तणो वर्णन करू, ते साभलजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल : ६२

[कपूर हुवे अति ऊजलो रे]

तिण काले नें तिण समे जी, नगरी विनीता नाम।
लोक बहु सुखिया वसे जी, मोटा राजानो ठाम। भरतेसर।
पुन्न तणा फल जोय, पुन्न पाप दोनूं क्षय हुवे जी।
तव मुगत तणा सुख होय* ॥ १ ॥
भाई नीन्नाणू भरत नां जी, जाणी अथिर संसार।
श्री आदेश्वर आगले जी, पाले संजम भार ॥ २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

मोरा देवी मुगते गया जी, भावे भावना सार।
केवल ज्ञानी वखाणियो जी, साल रूंख रे साल परिवार ॥ ३ ॥
सितंतर लाख पूरव नीकल्या जी, जब राज बेठा साहसीक।
एक सहस वर्ष लगे रह्या जी, मोटा राजा मंडलीक ॥ ४ ॥
सहस वर्ष मंडलीक राजा रह्या जी, सीह जिम करता ओगाज।
पछे पुन्न जोग सूं आवी मिल्या जी, चक्रवर्ति पदवी नां साझ ॥ ५ ॥
साठ सहंस वर्षां लगे जी, वरताई भरत में आण।
वस किया सहु भोमिया जी, केहनो न चाले प्राण ॥ ६ ॥
चवदे रत्न त्यांरे घरे जी, वले प्रगट्या नव निधान।
सोले सहंस देवता सेवा करे जी, वले बत्तीश सहंस राजान ॥ ७ ॥
बत्तीश सहंस रितु कल्याणिका जी, रितु रितुना सुख नी देणहार।
बत्तीश सहंस राजा री बेटियां जी, ते कल्याणिका बत्तीश हजार ॥ ८ ॥
ए चोसठ सहंस अतेवरी जी, दोय दोय एकण लार।
गिणती आई छे एतली जी, एक लाख नें बाणू हजार ॥ ९ ॥
इतला रूप चकवर्ति करे जी, तेहसूं भोगवे भोग।
पूरव पुन्न उदे हुआ जी, तिणसूं मिलियो जोग ॥ १० ॥
चोसठ सहंस राजेसरू जी, सेवा करे मान मोड।
तप वरतायो एहवो जी, केहनो न चाले जोर ॥ ११ ॥
बत्तीश सहंश नाटक पडे जी, त्यांरा उठ रह्या धुंकार।
इचरजकारी अति घणा जी, ते जूआ जूआ बत्तीश प्रकार ॥ १२ ॥
रसोईदार तीनसो नें साठ छे जी, बुधिवंत चतुराईदार।
वले आग्याकारी छे भरत नां जी, वले श्रेणी प्रश्रेणी अठार ॥ १३ ॥
घोडा हाथी रथ अति घणा जी, चोरासी चोरासी लाख।
वले पायदल छिन्नूं कोड छे जी, त्यांरी सूत्र में छे साख ॥ १४ ॥
बहोत्तर सहंस नगर कह्या जी, गाम छे छीन्नूं कोड।
अडतालीस सहंस पाटण अछे जी, दलवल पायक जोड ॥ १५ ॥
बत्तीश सहंस जन पद देश छे जी, द्रोण मुख छे निन्नांणू हजार।
चोबीस सहंस कवड कह्या जी, चोबीस सहंस मंडप विचार ॥ १६ ॥
सोना रूपादिक तेहनां जी, आगर वीस हजार।
सोले सहंस खेडा कह्या जी, सोले सहंस संबाह सुविचार ॥ १७ ॥
छप्पन अंतरोदक पाणी मझे जी, गुणचास भीलां रा कुराज।
इत्यादिक सगलाई तेहनो जी, अधिपति भरत महाराज ॥ १८ ॥

चूल हेमवंत नें समुद्र विचे जी, सगले भरतजी री आण।
संपूर्ण भरत क्षेत्र मझे जी, सारा आण करे परमाण ॥ १६ ॥
सार्थवाह राजा सहु जी, इत्यादिक सगलाई जाण।
त्यांरो अधिपतिपणो करतो थको जी, विचरे छे मोटे मंडाण ॥ २० ॥
महल बयांलीस भोमिया जी, चोबारा चित्र साल।
बत्तीश विध नाटक पड़े जी, एम गमावे काल ॥ २१ ॥

●

दुहा

कोई बेरी दुश्मण नहीं तेहनें, सुखे करे छे राज।
मन रा मनोरथ पूरतो थको, करे मन चिंतविया काज ॥ १ ॥
राज करे छे निर्भय थको, दिन दिन अधिक आणंद।
काम भोग मनोज्ञ भोगवे, षट खंड केरो छे इंद ॥ २ ॥
काल गमावे काम भोग में, चिंता फिकर नही छे लिगार।
भरत नरिंद रा सुखां तणो, पूरो कह्यो न जाये विस्तार ॥ ३ ॥
एहवा सुख आए मिल्या, पर्व तपनो फल जाण।
तप करता पुन्न बाधिया तिके, उदे हुआ छे आण ॥ ४ ॥
कथा मांहे इम कह्यो, भरतजी करे छे विचार।
रखे काम भोग में खूतो थको, काल करजाऊं राज मझार ॥ ५ ॥
म्हारे लेणो छे निश्चे साधुपणो, काम भोग देणा छे छिटकाय।
रखे भूल पडे यूंही रहूं, तो याद आवे ते करणो उपाय ॥ ६ ॥

ढाल : ६२

[कुमार इसो मन चिंतवे]

हिवे भरत नरिंद मन चिंतवे, म्हारे लेणो छे निश्चे संजम भार।
जो हूं काल करूं इण राज में, तो हूं जाऊं रे निश्चे नरक मझार।
भरत भावे रूडी भावनां* ॥ १ ॥
एहवी करे विचारणा, घडयालो रे बंधायो छे ताम।
घडी घडी जूई जूई बाजिया, विचार लेसूं रे मन मे तिण ठाम ॥ २ ॥
घडी घडी घटी भरत तांहरी, आउ मांसूं रे घटी जाण सूं ताय।
मोनें याद रहसी घर छोडणो, तो हूं लेसूं रे संजम सुखदाय ॥ ३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

इण कारण घडियालो बांधियो, ते सुणतां २ रे बीतो कितोएक काल।
वले बीजो करे छे जाबतो, तिणसूं म्हारे रे हिये लेसूं संभाल॥ ४॥
दोय सेवग बोलाय नें इम कहे, हूं आय बेसूं रे सिंघासण दरीखान।
जब थें कहिजो बार बार मो भणी, चेत चेत हो चेत भरत राजान॥ ५॥
ए दोनूंई जाबता बांधिया, ते तो निश्चे रे दिख्या लेवा रे काज।
पिण कर्म उदे छे भोगावली, तिणसूं त्यानें रे मीठो लागे छे राज॥ ६॥
जब जब आय बेसे सिंघासणे, राज सभा रे तिहां करे दरीखान।
तब तब सेवग इम उच्चरे, चेत चेत हो चेत भरत राजन॥ ७॥
ते वचन सुणेने भरत जी, मन मांहें रे घणो हर्षित थाय।
दिख्या लेवारी मन मांहे लग रही, तिण कारण रे एहवा कीधा उपाय॥ ८॥
काम भोग मनोज्ञ तेहनें, अंतरंग मे रे जाणे जाल समान।
तिणसूं चारित्र लेवारी भावनां, साचे मन रे भावे भरत राजान॥ ९॥
एहवा परिणाम छे तेहनां, त्यांरा सीझे रे मन वंछित काम।
जो कर्म थोडा हुवे तेहनां, एक धारा रे चोखा रहे परिणाम॥ १०॥

●

दुहा

तिण काले नें तिण समें, विनीता नगर मझार।
तिहां रिषभ जिनंद पधारिया, साथे साधां रो बहु परिवार॥ १॥
ते आय उतरिया बाग मे, भव जीवां रे भाग।
मारग दिखावे मोख रो, उपजावे बेराग॥ २॥
खबर हुई नगरी मझे, लोक आवे हर्ष मन आण।
भरत जी सुणे मन हर्षिया, वादण आया छे मोटे मंडाण॥ ३॥
बंदणा कीधी हर्ष सूं, बेठा सनमुख आय।
भगवंत दीधी देसनां, सगलां नें हित ल्याय॥ ४॥
वाणी सुणनें परिखदा, आई जिण दिशि जाय।
हिवे भरत नरिंद पूछा करे, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ५॥

ढाल : ६४

[सामी म्हारा राजा नें धर्म...]

हाथ जोडी विनती करे, नीचो शीश नमाय हो स्वामी।
आ परिषदा आय मिली घणी, त्यामें बडबडा मुनिराय हो स्वामी।
हू अर्ज करू छूं वीनती* ॥ १॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सारा साधु नें साधवी, श्रावक श्राविका जाण हो स्वामी।
ते मोडा बेगा पहला पछे, सगला जासी निर्वाण हो स्वामी॥ २॥
ते पूछा हू करूं नही, त्यांरी सका पिण नही काय हो स्वामी।
पिण परिखदा आय मिली घणी, आप सरिखो कोई थाय हो॥ ३॥
जब रिषभ जिनेश्वर इम कहे, सुण तूं राखे चित्त ठाम हो भरत।
ओ त्रिदंडियो बेटो तांहरो, मरीची तिणरो नाम हो भरत।
ओ होसी तीर्थंकर चोबीसमो॥ ४॥
ते पहली दोय पदवी पामसी, वासुदेव चक्रवर्ति सोय हो।
वले असख्याता भव कीधा पछे, छेहलो तीर्थंकर होय हो।
वीर जिनद चोबीसमो॥ ५॥
ए वचन सुणेने भरत जी, मन मे हर्षित थाय हो स्वामी।
ए आप कह्यो ते सतवाय छे, म्हारे संका नहीं मन मांय हो स्वामी।
ओ होसी तीर्थंकर चोबीसमों। ६॥
बंदणा करने नीकल्या, आया समोसरण बार हो भरत जी।
तिहां मरीची बेठो तिणनें कह्यो, तूं होसी तीर्थंकर अवतार हो।मरीची।
तूं वीर जिनद चीबीसमों॥ ७॥
ए वचन सुणे मरीची हर्षियो, पामे मनमे आनंद हो स्वामी।
रोम उकसित हुआ तेहना, जाण्यो हू होसू जिनंद हो स्वामी।
हूं वीरजिनद चोबीसमो॥ ८॥
हिवे गणधर रिखभ जिन्द ना, विनोकर शीष नमाय हो स्वामी।
प्रश्न पूछू हूं आपने, कृपा करदो बताय हो स्वामी।
हू अर्ज करूं छूं वीनती॥ ९॥
भरत नरिंद मोटो राजवी, छव खड रो सिरदार हो स्वामी।
काल करेने इहा थकी, जासी किण गति मझार हो स्वामी।
हूं अर्ज करूं छूं वीनती॥ १०॥
रिषभ जिनेश्वर इम कहे, सुण तूं चित्त लगाय हो मुनिवर।
भरत आउखो पूरो करे, जासी सिद्ध गति माय हो मुनिवर।
कर्म आठोई खपायने॥ ११॥
ए वचन सुणेने परिषदा, हिवडे हर्षित थाय हो स्वामी।
आप कह्यो ते सतवाय छे, तिणमे सका न रहि काय हो स्वामी।
भरत मुगत जासी इण भवे॥ १२॥

●

दुहा

ए बात लोकां में विस्तरी, रिषभ देव जी कह्यो छे आम।
भरत जी आउखो पूरो करे, मोख जासी अविचल ठाम॥ १॥
काल कितोएक बीतां पछे, भरत जी बेठा सभा मझार।
कोटवाल पकड एक चोर ने, तिणनें लेई आया दरबार॥ २॥
चोर आण्यो ऊभो देखनें, पूछे छे भरत महाराज।
इणनें बाध आण्यो किण कारणे, इण कांई कीधो छे अकाज॥ ३॥
जब कोटवाल कहे हाथ जोडनें, इण चोरी कीधी नगरी मांय।
इम सुणनें कहे छे भरतजी, इणनें मारो इहां थी ले जाय॥ ४॥
जब चोर विनो करे बोलियो, जोडे दोनूंई हाथ।
आप अबके छोडो मोनें जीवतो, हूं चोरी न करूं पृथ्वीनाथ॥ ५॥
जब भरत जी कहे कोटवाल ने, इणरी घात मत करजो आज।
चोरी छोड्यां तो चोर मर गयो, हिवे इणनें मारो किण काज॥ ६॥
ते चोर नें जीवतो छोडियो, ते चोर गयो निज ठाम।
तिण चोर चोरी कीधी वले, जब वले पकड लियो ताम॥ ७॥
चोर नें फेर ल्यायो सभा मझे, आणनें ऊभो राख्यो ताय।
भरत जी सूं मालुम करी, चोर ऊहीज छे महाराय॥ ८॥
जद कहितो हूं चोरी करू नही, वले चोरी कीधी घर फोड।
जब भरतजी कह्यो कोटवाल नें, इणरो मस्तक न्हांखो तोड॥ ९॥

ढाल : ६५

[मेघ मुनीसरू०]

ए बात प्रसिद्ध हुई लोक में रे हां, भरतजी मरायो छे चोर।
केई धर्म तणा धेषी हुंता रे हां, त्यांरो लागे हिवे जोर।
कर्म बिटंबणा* ॥ १॥

एक अग्यानी धेषी धर्म नो रे हां, कहे रिषभदेवजी भाख्यो छे आम।
भरत मुगत जासी इण भवे रे हां, त्यां पिण कीधी खुसामदी ताम। क०॥ २॥
मिनख मरावता भरत जी रे हां, सके नही तिलमात।
तिणनें मोख जासी कहे इण भवे रे हां, ओ प्रत्यक्ष झूठ साख्यात। क०॥ ३॥
काम भोग मनोग्य भोगवे रे हां, वले छव खड रो करे राज।
वले घात करे मिनखा तणी रे हां, इसडा करे छे अकाज। क०॥ ४॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

इसडा अकारज करतो थको रे हां, मुगत जासी आतम काज साझ।
तो निन्नाणू बेटां भणी रे हां, क्यानें छोडावता राज। क० ॥ ५ ॥
राज करतां मिनख मारता रे हां, जाये मुगत मझार।
ते वात झूठी छे सर्वथा रे हां, हूं साच न मानूं लिगार। क० ॥ ६ ॥
ते वात चलती चलती गई रे हा, भरत नरिंद रे कान।
झूठा घाल्या जाण्यां भगवान नें रे हा, कोप्या छे भरत राजान। क० ॥ ७ ॥
तिणने बोलायनें कहे भरत जी रे, थें आ वात कही के नाहिं।
जब ओ कहे म्हे कहितो सरी रे हां, म्हारे निकल गई मुख माहिं। क० ॥ ८ ॥
जब भरतजी कहे छे एहनें रे हां, म्हें क्यूं न जावां मोख मांय।
थें रिषभ जिनद नें झूठा कह्या रे हा, ते किसा ज्ञान रे न्याय। क० ॥ ९ ॥
जब ओ कहे दोनूं हाथ जोडनें रे हां, मोमें ज्ञान अकल नही कांय।
हूं तो विना विचार्‍यो बोलियो रे हां, सुध बुध विना काढी वाय। क० ॥ १० ॥
जब भरत जी इणनें समझायवा रे हां, कहे सेवग पुरुष बोलाय।
नगरी बारे इणने ले जायने रे हां, जूआ करो जीव काय। क० ॥ ११ ॥
इम सुणनें लागो घर धर धूजवा रे हां, मरण सूं डरियो ताय।
जब ओ कहे मोनें मारो मती रे हां, म्हारो सर्व धन ल्यो महाराय। क० ॥ १२ ॥
भरत जी कहे इमतो छोडूं नही रे हां, छोडण री छे एक बात।
चिहुं दिश फिरे बाजार में रे हां, तेल भरियो बाटको ले हाथ। क० ॥ १३ ॥
तेल टबको न्हाखे नही रे हा, पाछो कुसले ल्यावे मो ताय।
जब तोनें छोडां जीवतो रे हां, ओर उपाय नही कांय। क० ॥ १४ ॥
जब ओ कहे ओतो म्हांसूं हुवे नही रे हां, जीवां राखो भावे न्हांखो मार।
जब किणही कह्यो तूं मान ले रे हां, वचन कर ले अंगीकार। क० ॥ १५ ॥

दुहा

जब डरतो थको बारे हुवो, तेल भर बाटको दियो हाथ।
च्यार पुरुषा रा हाथ मे खडग दे, त्यांनें मेल्या छे तिणरे साथ ॥ १ ॥
जब तेल टबको बारे पडे, तब मारजो इणने तिण ठाम।
इण सांभलतां तो इम कह्यो, छानें कह्यो मत मारजो ताम ॥ २ ॥
बाटको हाथ मे ले नीकल्यो, हद कीधी तठा ताई ताम।
तिहां नाटक विविध प्रकार नां, मडाय दिया ठाम ठाम ॥ ३ ॥
ओ धीरे धीरे चालतो थको, राखे बाटका ऊपर ध्यान।
हद कीधी तिहां सगले फिरे, आयो जिहां भरत राजान ॥ ४ ॥

हाथ जोडी नें इम कहे, म्हे साख्या मन वंछित काज।
ओ तेल भस्यो लो बाटको, हूं बचियो छूं महाराज॥ ५ ॥
जव कहे भरतजी एहने, तूं फिर आयो सगली ठाम।
तिहां विरतंत कांई देखिया, ते कहि बताय तूं आम॥ ६ ॥
जब हाथ जोडी ने इम कहे, म्हारी निजर थी बाटके महाराज।
ओर वस्तु देखूं हू किहां थकी, म्हारे विपत गले पडी आज॥ ७ ॥
जब वलता भरत इसडी कहे, हूं करे कर्मा रो सोख।
जिम थारी निजर थी बाटके, तिम माहरी निजर छे मोख॥ ८ ॥
हूं संजम ले कर्म काटने, जासूं मुगत गढ मांय।
रिषभ देवजी कह्यो ते सत छे, जा तू इसरी म काढजे वाय॥ ९ ॥

ढाल : ६६

[सोरठियां की देशी]

हिवे भरत तिण वार रे, भोग मनोगत भोगवे।
छव खड तणा सिरदार रे, राज रीत सर्व जोगवे॥ १ ॥
छव खंड केरो राज रे, करता विचरे छे भरत जी।
त्यांरो किण विध सीझे काज रे, एक मना थई साभलो॥ २ ॥
एक दिवस मझार रे, स्नान करेने भरत जी।
ते करे घणो सिणगार रे, आया आरीसा भवन मे॥ ३ ॥
तिहां बेठा सिंघासण आय रे, पूरव दिशि सनमुख करी।
निज रूप निरखे छे ताय रे, देख देख हर्षित हुवे॥ ४ ॥
बेठा थका तिणवार रे, नही हाथ री मूंदडी।
जब देही जाण असार रे, प्रति बूझ्या भरतेश्वरू॥ ५ ॥
जब एक आंगुली ताम रे, अडोली दीसे बूरी।
विचार करे तिण ठाम रे, अशुभ कर्म दूरा हुआं॥ ६ ॥

दुहा

भरत नरिंद तिण अवसरे, किण विध ध्यावे ध्यान।
किण विध केवल ऊपजे, ते सुणो सुरत दे कान॥ १ ॥

ढाल : ६७

[मुगध नर खूतो रे]

काच तणा महिलां मझे रे, आंगली विदरूप देख।
तिण अवसर श्री भरत जी, जव कियो विचार विशेख।
भरत नृप खूतो रे, खूतो रे भईया जाण विगूतो।
रे जीव ओ संसार असार, भरत नृप खूतो रे॥ १ ॥
विना मूंदडी आंगुली रे, दीसे छे विदरूप।
ते रूप नही भरत तांह रो, ओतो पुदगल नों छे सरूप॥ २ ॥
तूं जाणे रूप तांहरो रे, ते रूप थारो नांहि हो।
तिणमे तूं राचे किसूं, ते तो सोच देख मन मांहि हो॥ ३ ॥
भाई निन्नाणू तेहनो रे, थे खोसे लियो राज।
इण विषया रस के कारणे, थे तो किया अनेक अकाज॥ ४ ॥
देश वत्तीश सहंस म्हे साजिया रे, फिर फिर मनाई आण।
वडवडा राय नमाविया, वले गाल्या घणा रा मान॥ ५ ॥
देव देवी म्हे नमाविया रे, ते सेवग ज्यूं रहे हजूर।
तूं हुवो सगलां री अधिपति, ते तो जावक सर्व फितूर॥ ६ ॥
काम भोग म्हे भोगव्या रे, ते सर्व जहर समाण।
मीठा लागा मो भणी, ते तो मोह कर्म वस जाण॥ ७ ॥
चोसठ सहंस अतेउरी रे, ते अपच्छर रे उणियार।
पुन्न जोगे आए मिली, ते तो ले जावे नरक मझार॥ ८ ॥
आगे चक्रवर्ति हुआ घणा रे, त्यांरो कहितां न आवे पार।
जे काम भोग मांहें मूंआ, ते गया निश्चे नरक मझार॥ ९ ॥
काम भोग छे एहवा रे, ते किंपाक फल सम जाण।
भोगवतां मीठा लगे, पिण आगे दुखां री खान॥ १० ॥
चवदे रत्न छे मांहरे रे, वले म्हांरे नव निधान।
यांसूं निज कारज सीझे नही, पाडे मुगत सुखां री हान॥ ११ ॥
जे जे कामां म्हे किया रे, ते सार नही छे लिगार।
जो ए कामां छोडूं नही, तो वध जाए अनंत संसार॥ १२ ॥
भव अनंता म्हे किया रे, त्यांरो कहितां न आवे पार।
जिन धर्म विना ओ जीवडो, घणो रडवडियो संसार॥ १३ ॥
रिद्धि संपत आए मिली रे, तिणमें कण नहीं मूल लिगार।
जो इणमें राचे रहूं, तो हूं हारूं नर अवतार॥ १४ ॥

भाई निन्नाणू मांहरा रे, राज छोड हुआ अणगार।
हूं राज मांहें राचे रह्यो, धिग मांहरो जमवार ॥ १५ ॥
चारित्र लेऊं हिवे चूंप सूं रे, राज रमण रिद्धि छोड।
करणी करे जाऊं मुगत मे, जब तो पूरीजे मन रा कोड ॥ १६ ॥

●

दुहा

आभूषण पहरण थकां, किया सर्व सावद्य रा त्याग।
ते पचख्या मन परिणाम सूं, वले चढियो छे अत्यंत वेराग ॥ १ ॥
भरत नरिंद नें तिण अवसरे, शुभ घणा परिणाम।
अध्यवसाय रूडा प्रसस्थ भला, लेश्या विसुद्ध शुक्लादिक ताम ॥ २ ॥
ईहा पोह मारग विचारणा, निरणो करतां अत्यंत।
जब च्यार कर्म घनघातिया, त्यांरो कियो तिण ठामें अंत ॥ ३ ॥
आरीसा भवन मझे, भरत नरिंद राजान।
च्यारूं कर्म तिण ठामें क्षय करे, पाम्यां केवल ग्यान ॥ ४ ॥
स्वयमेव भरतजी उतारिया, आभरण नें अलंकार।
पांच मुष्टी लोच स्वयमेव कियो, छोड्यो गृहस्थ नो आकार ॥ ५ ॥
आरीसा भवन थी नीकल्या, नीकले अंतेउर मझार।
त्यांरो रूप देख अंतेउरी, धसको पड्यो तिण वार ॥ ६ ॥

ढाल : ६८

[जी हो धनो साल भद्र दोय]

अंतेवर तिणवार, साधु नो रूप देख रूदन करे रे।
कोलाहल हुवो महलां मझार, ते उछल उछल धरती पडे रे।
जी हो भरतेश्वर भावना भाय, हुआ महलां मांहे केवली जी ॥ १ ॥
देखे साधु रो सांग, शब्द मोटे मोटे रोवती रे।
बोले पाडती पाडती बांग, भरत नरिंद साह्मो जोवती रे ॥ २ ॥
श्री राणी हुंती सुकमाल, ते सुणने हुई घणी गलगली रे।
जिम चंपक नी डाल, ते पिण धसको पडे धरणी ढली रे ॥ ३ ॥
ओर अंतेवर इम हिज जाण, अचेत होय धरती पडी रे।
रोम रोम लागा जाणे बाण, सावचेत हुआं सहु आरडी रे ॥ ४ ॥
वले बोले मांहोमांहिं वेण, हिवे आपानें दिन नहिं सोहिला रे।
ते रोवे छे भर भर नेण, कंत बिना दिन दोहिला रे ॥ ५ ॥

ते कहे भरत जी ने एम, रोवती थकी हाथ जोडने रे।
थां विण काढां जमारो म्हे केम, थे तडके जाव छो म्हांसूं तोडने जी ॥ ६ ॥
थे तडके म तोडो नेह, जावो प्रीत पुराणी तोडने जी।
म्हांनें इम किम दीजे छेह, आसा अलुधी म्हांने छोडने रे ॥ ७ ॥
म्हानें छोडो मती महाराज, नारी नी अबला जात नें रे।
म्हे विलखी हुई सर्व आज, म्हांरी जावक बिगडी देख बात ने रे ॥ ८ ॥
रवि आथमिये जिम सूर, वदन कमल जिम कामणी रे।
जिम विगड गयो मुख नूर, भरतार दीठां विन भामणी रे ॥ ९ ॥
पडे वाहलां तणो रे विजोग, ते साल तणी परे सालसी जी।
दिन दिन करती सोग, ते विसारे किण विध घालसी जी ॥ १० ॥
म्हे विल विल करां छां महाराज, त्याने ऊभी म छोडो रोवती रे।
आप रहो महलां मे विराज, ज्यूं म्हे हर्ष पामां थाने जोवती रे ॥ ११ ॥
म्हारी दया आणो मन मांय, म्हे गाढी दुखी छां सारी जणी रे।
ओ दुख सह्यो रे न जाय, कृपा करो म्हां अबला तणी रे ॥ १२ ॥
ए बयांलीस भोमिया महल, ते लगसी म्हांनें डरावणा रे।
ते पिण दुख मत जाणजो सहल, था विन किण विध लागे म्हांने सुहावणा रे ॥ १३ ॥
ए तुमना आईठाण, साल तणी परे म्हांने सालसी रे।
जीव जाए ज्यां लग प्राण, हिया माहे हिल्लोला हालसी रे ॥ १४ ॥
थें प्रीतम प्राण आधार, पपैया ने आधार जिम मेहनों रे।
तिणसूं मत करो म्हांने निराधार, ओर आधार नही म्हाने केहनो रे ॥ १५ ॥
भरत जी रा महलां मझार, केई रोवे पीटे केई आरडे रे।
जबर हुवो घणो भयकार, त्यांरा शब्दां री समझ न का पडे रे ॥ १६ ॥
भरत जी •ल्यो संजम भार, जब दुख घणा जीवां पामियो रे।
त्यांरो कह्यो न जाए विस्तार, मोह कर्म उदे त्यारे आवियो रे ॥ १७ ॥
काचो हुवे तो चल जाए तिण ठाम, ए मोह तणा शब्द सांभली रे।
किंण विध चले भरत जी ताम, च्यारू कर्म खपाए हुआ केवली रे ॥ १८ ॥

●

दुहा

भरत नरिंद महलां मझे, पाम्या केवल ग्यान।
ओर तपसा तो कीधी नही, एक ध्याया निर्मल ध्यान ॥ १ ॥
अनित्य भावना भावता, ध्याया ध्यान नें पाया ग्यान।
कुण कुण परिग्रहो त्यागियो, ते सुणो सुरत दे कान ॥ २ ॥

ढाल : ६६

[गिरनारी सोरठ कुमर जी]

अनित्य भावनां भाई भरतेश्वर, च्यार कर्म गया भागी।
केवल ग्यान पायो महलां मे, थे हुआ अत्यंत वेरागी रा। भरत जी।
भूप भया छो वेरागी, मगन भया छो वेरागी॥ १॥
आभरण अलंकार उतारया, मस्तक सेती पागी।
आपो आप थईने बेठा, तब दीसे देही नागीरा। भरतजी॥ २॥
सांग देखी भरतेश्वर केरो, केई राण्यां हसवा लागी।
हिवे हासा नी खबर पडेसी, थें रहिजो मुझसूं अधीरा॥ ३॥
डाही रमणी सांग देखे दुमणी, भोली दोली लागी।
ओपमा अपच्छर चंद बीजल री, पिण भरत रो गयो मन भागी रा॥ ४॥
चोरासी लाख हयवर गयवर, छीन्नू कोड छे पागी।
लख चोरासी रथ संग्रामी, पिण ततक्षण होय गया त्यागी रा॥ ५॥
च्यार कोड मण नितको सीझे, दस लाख मन लूण लागी।
चोसठ सहंस राजा मुख आगल, पिण सुरत मुगत सूं लागी रा॥ ६॥
तीन कोड गोकल घर दूजे, एक कोड हल त्यागी।
चोसठ सहंस अंतेवर जांके, त्यांसूं विरक्त थया वेरागी रा॥ ७॥
अडतालीस कोस में पडेज लस्कर, दुस्मण जाये भागी।
चवदे रत्न आगन्यां मानें, पिण न धरयो त्यांसूं रागी रा॥ ८॥
गज मतवाला हयवर हीसत, कनडा पायक घणा रागी।
पुत्र अंतेवर रह्या झूरंता, वले नगरी विनीता त्यागी रा॥ ९॥
सगलाई रह्या मोह झूरंता, संसार दियो छे त्यागी।
कुटंब कबीलो ने सेण सगा त्यांसूं, तुरत गयो मन भागी रा॥ १०॥
नव निधान सार भूत अमोलक, त्यांरा गुण छे अत्यंत अथागी।
वले छव खंड केरो राज अखंडित, ते समकाले दीधो त्यागी रा॥ ११॥
बीस सहंस सोना रूपा रा आगर, त्यांरो पिण नही आवे थागी।
मणि माणक मोती रत्नांदिक थी, मूल न धरियो रागी रा॥ १२॥
महल बयांलीस भोमिया तिणमे, ज्योत झिगमिग लागी।
तिण ऊपर पिण चित्त नही दीधो, थें ऊठ खडा रह्या जागी रा॥ १३॥
रिद्धि विस्तार ते इंद्र तणी पर, कांई पाछा रही नही लागी।
ते धूर समान धन जाणी ने, तुरत दीधो तिणनें त्यागी रा॥ १४॥

जोगी जटा ऊपर पाछणो फेर्‌यां, सिर सू पडे मुख आगी।
जोगी जटा जिम रिद्धि सगली ने, मन सू कर दीधा त्यागी रा ॥ १५ ॥

●

दुहा

कोलाहल करता तेहने, ऊभा महल तिण ठाम।
हेठा उतरिया महल थी, केई कहवा लागा आम ॥ १ ॥
केई कहे भरत जी गहला हुआ, केई कहे छे धन छक ताम।
केई कहे विद्या बावला हुआ, केई राज छक कहे छे आम ॥ २ ॥
इण विध मुख मुख जू जूआ, बोले आवे ज्यू मन री दाय।
केई चतुर विचक्षण इम कहे, चारित्र लियो दीसे छे ताय ॥ ३ ॥
हिवे आया दरीखाने भरत जी, सभा जुडी छे ताय।
आग्या लेई तिहां भरत जी, बेठा सिंघासण ताय ॥ ४ ॥
घणा राजा ने समझता जाणने, उपदेश दियो तिण वार।
जीवादिक नां सरूप नो, कह्यो घणो विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल : ७०

[तू तो समझ पदमनाभराय कहें तोनें]

हिवे सुणजो सहु राजान, थे चित्त लगायने जी।
म्हे तो लीधो छे चारित्र निधान, सुमता रस लायने जी।
थे तो समझो रे समझो राजान, श्री जिन धर्म मे जी ॥ १ ॥
म्हे तो छोड्यो छव खड रो राज, ममता सर्व परहरी जी।
सर्व छोडी सघली रिद्धि आज, सुमता रस मन धरी जी ॥ २ ॥
म्हे तो ध्याए निर्मल ध्यान, चारित्र लियो चूप सू जी।
वले उपजाए केवलग्यान, आयो इण रूप सूं जी ॥ ३ ॥
थांने समझावण काज, इण ठामे आवियो जी।
म्हारी वाणी सुणे थे आज, अवसर आछो पावियो जी ॥ ४ ॥
जब बोल्या छे राजान, हाथ जोडी तिहां जी।
सुणावो म्हांने अपूरव ग्यान, उपदेश देवो इहां जी ॥ ५ ॥
हिवे भरत जी दे उपदेश, त्याने समझायवा जी।
कहे दया धर्म नी रेस, मुगत पोहचायवा जी ॥ ६ ॥
म्हे तो दियो छे थाने राज, कण नही तेहमे जी।
तिणसू नही सीझे आतम काज, छाडो जाणो एहने जी ॥ ७ ॥

ओ संसार छे असार, रीझो मती तेहमें जी।
तिणमें सार नही छे लिगार, सुख नही एहमें जी॥ ८॥
जेहवो संध्या नों वान, पाको पीपल पानडो जी।
जेहवो आउखो जाण, वले कुंजर कानडो जी॥ ९॥
जेहवो डाभ अणी जल जाण, वीज झबूकडो जी।
तेहवो अथिर आउखो पिछाण, मरण नेरो ढूंकडो जी॥ १०॥
अथिर काचो माटी भंड, माया सुपनां तणी जी।
ज्यूं जेहवी थांरी सर्व मंड, थोथी रिद्धि नां घणी जी॥ ११॥
देव गुरु धर्म नो सरूप, इण जीव न जाणियो जी।
तिणसूं जाय पड्यो अध कूप, कर्मा नों ताणियो जी॥ १२॥
तिणसूं परखो देव गुरु धर्म, नव तत्व निरणो करो जी।
संजम ले तोडो आठूं कर्म, ज्यूं शिव रमणी वरो जी॥ १३॥
ओतो इण संसार मझार, ओ जीव अनाद रो जी।
सेवे सेवे पाप अठार, नरक गयो पाधरो जी॥ १४॥
तिहा खाधी अनंती मार, परमाधाम्यां रे धके जी।
पामी छेदन भेदन तार, परवस पडिये थके जी॥ १५॥
वले क्षेत्र वेदनां अनंत, सही इण जीवडे जी।
तिणरो कहितां न आवे अंत, ते कहितां नही नीवडे जी॥ १६॥
काम भोग दुखां री खान, किंपाक फल सारिखा जी।
त्यांसूं हुवो जीव हेरान, त्यांरी नाई पारिखा जी॥ १७॥
काम भोग जोरावर जोध, ते तो घणा मारका जी।
त्यांसूं मूरख मानें प्रमोद, लियां फिरे लारका जी॥ १८॥
काम भोग सूं करसी प्रीत, बांधे कर्म रासनें जी।
ते होसी चिहुं गति मांहे फजीत, पड्या मोह पास में जी॥ १९॥
राज रिध संपत मे राजान, थें राचे रह्या सही जी।
वले तिणसूं रली रह्या मान, पिण साथे आवे नही जी॥ २०॥
काम भोग मोहकर्म रोग, ते पिण नही सासता जी।
तिणसूं छोड दो काम नें भोग, राखो धर्म आसता जी॥ २१॥
साधु नें श्रावक रो धर्म, दोनूं कह्या जू जूआ जी।
त्यांसूं टूटे आठोई कर्म, अनंत सुखी हुआ जी॥ २२॥
साधपणो पाल्या जाए मोख, वासो देवलोक में जी।
आठू कर्म तणो हुवे सोख, पूजनीक हुवे लोक मे जी॥ २३॥

दुहा

वाणी सुणे भरत जी तणी, घणा हर्षित हुआ तिण वार।
दस सहंस राजा तिण अवसरे, हुआ संजम ने तयार॥ १ ॥
हाथ जोडी ने इम कहे, सरध्या तुमनां वेण।
थें तारक भव जीवा ना, मोनें मिलिया साचा सेण॥ २ ॥
म्हें संसार जाण्यो कारमो, मोख तणा जाण्या सुख सार।
बीहना जामण मरण थी, म्हे लेस्यां संजम भार॥ ३ ॥
जब बलता भरत इसडी कहे, थारे लेणो संजम भार।
घडी जाए ते पाछी आए नही, मत करो ढील लिगार॥ ४ ॥
दस सहस राजा तिण अवसरे, ईसाण कूण मे जाय।
गहणा आभूषण दूरा करे, पच मुष्टि लोच कियो ताय॥ ५ ॥
साधु रो रूप बणायने, आय ऊभा भरत जी रे पास।
विने सहित वेहू हाथ जोडनें, बोले वचन विमास॥ ६ ॥
इण ससार मे दुख अति घणो, लागी जनम मरण री लाय।
तिण वारे काढो आप मो भणी, सर्व सावद्य त्याग कराय॥ ७ ॥

ढाल : ७१

[तूगिया गिरी सिखर सोहे राम मु०]

दस सहस राजान त्यांरो, जाण लियो छे वेराग रे।
तेहने कराया भरत मुनिवर, सर्व सावद्य रा त्याग रे।
एहवा मुनिराज वादू* ॥ १ ॥
एक वेलां सुणत वाणी, काम भोग दियो छिटकाय रे।
राज रमण रिद्धि सर्व त्यागी, त्यां पाछ न राखी काय रे॥ २ ॥
दस सहस राजान मोटा, थया मोटा साध रे।
तेहना पद कमल नमता, थाए धर्म अगाध रे॥ ३ ॥
सवेग आण्यो परम घट मे, खारो लागो ससार रे।
दस सहस राजा भरत पासे, थया मोटा अणगार रे॥ ४ ॥
त्या सीह नी परे लियो संजम, सूर वीर साख्यात रे।
ज्ञान आगर बुद्धि सागर, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात रे॥ ५ ॥
जात कुल वल रूप पूरा, विनेवंत साहसीक रे।
परिषह उपनां अडिग सेठा, त्या कीधी मुगत नजीक रे॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सुमति गुप्ति आठे सुध पाले, पाले पांच आचार रे।
मेरू नी परे धीर धरता, न चले मूल लिगार रे॥ ७ ॥
आहार निर्दोषण सुद्ध लेवे, दोष बयालीस टाल रे।
गोचरी करे गउचर्या, छव काय तणा छे दयाल रे॥ ८ ॥
शील व्रत नववाड पाले, दस विध जती धर्म धीर रे।
तप तपे मुनि बारे भेदे, ते साधु भला बड वीर रे॥ ९ ॥
गाम नगर निवेस पाटण, तिहां कठे नही प्रतिबंध रे।
किरियावत महा मुनिवर, वले किणसूं नही सबंध रे॥ १० ॥
शत्रु मित्र गिणे सरिखा, सकल साधु सिणगार रे।
पांच इंद्री विषय वर्जित, साधु गुण भंडार रे॥ ११ ॥
नही माया नही ममता, नही च्यार कषाय रे।
च्यार विकथा मूल नाणे, समता रस घट ल्याय रे॥ १२ ॥

दुहा

भरत नरिंद घर छोडने, लीधो संजम भार।
त्यां पहली वाणी वागरी, त्यां प्रतिबोध्या दस हजार॥ १ ॥
दस हजार राजा भणी, दीधो सजम भार।
सर्व सावद्य पचखाय ने, किया मोटा अणगार॥ २ ॥
आचार सीखाए परिपक किया, पछे कियो तिहा थी विहार।
ते किण विध विचर गया मोख मे, ते सुणजो विस्तार॥ ३ ॥

ढाल : ७२

[धिन धिन जंबू स्वाम नें]

दस सहस अणगार सहित सूं, राज सभा थकी ऊठ हो मुनिंद।
तिण ठाम थकी आघा नीकल्या, देई सघलां नें पूठ हो मुनिंद।
धिन धिन भरत जिनंद ने* ॥ १ ॥

दस सहस साधां सूं परवर्‍या थका, आया विनीता नगर मझार हो।
विनीता राजधानी तेहने, मध्यो मध्य थई तिण वार हो॥ २ ॥
विनीता राजधानी थी नीकल्या, चाल्या जनपद देश मझार हो।
विनीता सहित राज रिद्धि सर्व नी, ममता नहीं राखी लिगार हो॥ ३ ॥
एक भरत जी समझ्यां थकां, हुवो घणो उपगार हो।
पहली वाणी मे समझाविया, राजान दस हजार हो॥ ४ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जिहां जिहां भरत जी विचरिया, तिहां तिहा हुवो घणो उपगार हो।
हुई बधोतरी जिन धर्म री, जनपद देश मझार हो ॥ ५ ॥
शासन श्री रिषभदेव रो, भरतजी दीपायो ठाम ठाम हो।
घणा जीवा ने तारिया, हलुकर्मी जीवां ने गाम गाम हो ॥ ६ ॥
ऊगो ऊगो नें ऊगिया, त्यां कियो अत्यंत उद्योत हो।
रिषभदेवजी रा कुल मझे, कीधी दिन दिन अधिकी ज्योत हो ॥ ७ ॥
लोकिक लेखे रिषभ जिनंद रे, भरतजी हुआ सपूत हो।
धर्म लेखे पिण सपूत छे, त्यां सासण दिपायो अद्भूत हो ॥ ८ ॥
सुखे समाधे विहार करतां थकां, करता थका उपगार हो।
आउखो नेड़ो आयो जाणने, करे सथारा री त्यार हो ॥ ९ ॥
अष्टा पद पर्वत तिहां आविया, तिण ऊपर चढिया तिण वार हो।
मेघघन सिला रलियामणी, पुढवी सिला श्रीकार हो ॥ १० ॥
ते पुढवी सिला पडिलेहनें, तिण ऊपर बेसे तिणवार हो।
च्यारूं आहार भरत जी पचखने, कीधो पादोपगमन सथार हो ॥ ११ ॥
आउखा रो काल अणवाछता, भरत जी केवलग्यानी ताय हो।
हिवे गणती कहूं त्यारा वर्ष री, ते साभलजो चित्त ल्याय हो ॥ १२ ॥
सितंतर लाख पूरब लगे, रह्या कुमारपणे ग्रहवास हो।
एक सहंस वर्ष लगे रह्या, मंडलीक राजापणे तास हो ॥ १३ ॥
एक सहस वरष ऊणा पणे, छव लाख पूरब लग जाण हो।
चक्रवर्ति पदवी भोगवी, छव खण्ड मे वर्ती आण हो ॥ १४ ॥
एक लाख पूरव लगे, पाली श्रामण परयाय हो।
कांयक ऊणा लाख पूरब लगे, केवल पर्याय पाली ताय हो ॥ १५ ॥
सर्व आउखो* भरत जी तणो, चोरासी लाख पूरब जाण हो।
एक मास तणो सथारो करे, त्यां त्याग दियो भात पाण हो ॥ १६ ॥
श्रवण नक्षत्र आया थकां, चद्रमा साथे पाम्या थके जोग हो।
वेदनी आउखो नाम गोत्र नें, त्यारो क्षय कर मेट्यो संजोग हो ॥ १७ ॥
जब आउखो पूरो कियो, काल कियो तिण ठाम हो।
जनम मरण सर्व छेदने, सास्या आतम काम हो ॥ १८ ॥
भरतजी हुआ सिद्ध सासता, सर्व दुखां रो करे अंत हो।
तिहां सुख अनोपम पामिया, त्यां पूरी मन री खात हो ॥ १९ ॥
तिहां अजरामर सुख सासता, सदा अविचल रहणो तिण ठाम हो।
तीन काल रा सुख देवतां तणा, त्यासूं अनत गुणा छे ताम हो ॥ २० ॥

दुहा

भरतजी मोख पधारिया, आवागमण मिटाय।
यांरो परिवार मोख कुण कुण गया, ते सांभलजो चित्त ल्याय॥ १ ॥
रिषभ देवजी मुगते गया, वले त्यांरों परिवार।
अंगजात बेटा बेटी पोतरा, ते सुणजो विस्तार॥ २ ॥

ढाल : ७३

[थें तो जीव दया व्रत पालो]

धुरसूं तो मोरादेवी माता रे, करे आठ कर्मां री घाता।
सारां पहली मुगत सिधाया रे, सासता सुख निश्चल पाया॥ १ ॥
श्री रिषभ तणा सो पूतो रे, ज्यां दिया मुगत नां सूतो।
करणी कीधी काकडाभूतो रे, सुख पाम्यां छे अदभूतो॥ २ ॥
जिण माता रे कूखे आया रे, तिके सोई मुगत सिधाया।
करणी कर कर्म निठाया रे, ते फिर पाछा नहीं आया॥ ३ ॥
ब्राह्मी नें सुंदरी हुई वहेनो रे, त्यां पाम्यो सजम मे चेनो।
वरत्यो तप तेज सवायो रे, तिण बाहुबल समझायो॥ ४ ॥
साल रूंख रे साल परिवारो रे, ज्यांरो जस फेल्यो संसारो।
छोड दियो कजियो कारो रे, त्यांरो खेवो हुवो पारो॥ ५ ॥
आंबा रूंख रे आंबा चाखे रे, तिणने कोई दोष न दाखे।
जो लागे आंबा रे केरो रे, ते बात घणी दीसे गेरो॥ ६ ॥
ज्यांरी सोभा जग में फेली रे, ते हुआ तिर्थंकर पहेली।
ते हुआ धर्म नां धोरी रे, ते मुगत गया कर्म तोडी॥ ७ ॥
वले आठ भरतजी रा पाटो रे, ते पिण मुगत गया कर्म काटो।
ते पिण इण विध ध्याए ध्यानों रे, उपजायो केवलग्यानों॥ ८ ॥
त्यां तो सारिया आतम कामों रे, त्यारा जूआ जूआ छे नामो।
आदितजस महाजस तामों रे, अतिबल नें महाबल नामो॥ ९ ॥
ततवीर्य नें कर्णवीरज रे, त्यां पिण कीधी घणी धीरज।
दंडवीर्य नें जलवीर्य नामों रे, त्यां पिण सार्‍या आतम कामों॥ १० ॥
ए आठ पाट भरतजी रा जाणो रे, आठूंई गया निर्वाणो।
भरतजी जिम ध्याया ध्यानो रे, उपजाए केवलग्यानों॥ ११ ॥
नवमें पाट हुवो भारी कर्मो रे, तिण जाण्यो नहीं जिण धर्मो।
तिण माठी मन मे विचारो रे, आंगुण काढ्या महलां मझारो रे॥ १२ ॥

भरती सूंचा नव पाटो रे, सगलां रो हुवो एहिज घाटो।
सगलां दियो राज छिटकाई रे, एहवी अकल इण महलां में आई ॥ १३ ॥
पूरो राज न कीधो धापो रे, ते महलां तणो परतापो।
सगला भेख ले हुआ साधो रे, इण महलां तणो परसादो ॥ १४ ॥
रखे मोनेई करे खुराबो रे, तो यांनें पडाय देण सताबो।
ए ऊंची अकल हियामे आई रे, तिण दीधा महल पडाई ॥ १५ ॥
ए तो पुन्नवंता रा छे महलो रे, जिण तिणनें नही छे सहलो।
भरत जी पूरा पुन्नं कीवा रे, त्यांनें तो देवता कर दीधा ॥ १६ ॥

●

दुहा

जाति वंश त्यांरो निर्मलो, ते प्रसिद्ध लोक विदीत।
चारित्र लीधो चूंप सूं, आराध्यो रूडी रीत ॥ १ ॥

ढाल : ७४

[धिन प्रभु राम जी]

श्री आदेश्वर शासन वरते, रिषभ सेण गणधार वे।
त्यांरा शासन माहे हुआ मुनिवर, भरत मोटा अणगार वे।
धिन प्रभु आदि जी, धिन त्यांरा साध जी ॥ १ ॥
रिषभ सेण आदि दे सगला, चोरासी गणधार वे।
सहंस चोरासी साधु मुनिसर, हुआ मोटा अणगार वे ॥ २ ॥
त्यामे वीस सहंस मुनि केवल उपाया, करे कर्मा रो सोख वे।
ते छूटा संसार दावानल थी, जाय विराज्या मोख वे ॥ ३ ॥
ब्राह्मी आदि दे वैडी वडी सतियां, अजिया हुई तीन लाख वे।
ते गुण सागर गुणा री आगर, त्यांरी दीधी तीर्थंकर साख वे ॥ ४ ॥
त्यांरी चालीस सहंस अजिया उतकष्टी, त्यां उपजाओ केवल ग्यान वे।
ते कर्म खपाए मुगते पोहती, ध्याए निर्मल ध्यान वे ॥ ५ ॥
शेष साधु साधवियां सगली, श्रावक श्राविका जाण वे।
ते करणी कर गया देवलोके, ते वेगा जासी निर्वाण वे ॥ ६ ॥
एक लाख पूरव लग मारग दीपायो, ते आदेश्वर आप वे।
तिरण तारण श्री प्रथम जिनेश्वर, मेट्यो घणा रो संताप वे ॥ ७ ॥
श्री आदेश्वर जी मुगत गयांनें, पांच लाख पूरव हुआ जाण वे।
जब भरत नरिंद आरीसा भवन में, पाम्यो केवल नाण वे ॥ ८ ॥

एक लाख पूरब वर्षां लग, भरत दीपायो जिन धर्म बे।
ए पिण अनेक जीवां नें तारे, मुगत गया तोडे कर्म बे॥ ६॥
श्री आदेश्वर तेहनें लारे, मोख गया असंख्याता पाट बे।
सासता सुखां में जाय विराज्या, कर्म तणी जड काट बे॥ १०॥
चरित्र कियो भरतेश्वर केरो, जंबू द्वीप पन्नती सूं जाण बे।
वले कथा अनुसारे कह्यो छे, जे ग्यानी वेदे ते प्रमाण बे॥ ११॥
भव जीव समझावण काजे, जोड कीधी माधोपुर मझार बे।
संवत अठारे वर्ष अडताले, आसोज सुदि बीज गुरुवार बे॥ १२॥
रणत भंवर किला री तलहटी, ते देश ढूंढाड में जाण बे।
तिहां नवो शहर माधोपुर बाजे, जोड कीधी छे तेह ठिकाण बे॥ १३॥

रत्न : १८

जंबू कुमार चरित

दुहा

तिण काले ने तिण समे, चोथा आरा नी बात।
राजग्रही रलियामणी, प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ १ ॥
तिहां गुणशिल नामे बाग थो, ईसाण कूण रे माहि।
राय श्रेणिक राणी चेलणा, राज करे छे ताहि ॥ २ ॥
तिहां श्री वीर समोसस्या, भव जीवां रे भाग।
आज्ञा लेई उतस्या, गुणशिल नामे बाग ॥ ३ ॥
श्रेणिक सुणी बधावणी, हिवडे हर्षित थाय।
मोटे मडाणे करी निकल्यो, आय वादयां जिन पाय ॥ ४ ॥
भगवंत दीधी देशनां, मोटी परिषदा माय।
दान शील तप भाव नो, विस्तार कह्यो जिनराय ॥ ५ ॥

ढाल : १

[हमीरिया नीं । स्वारथ सहु नें बालहो]

न्हासी जाए दलिद्र दान थी, शील थी दुर्गति रो नास। राजेश्वर।
कर्मां रो नास छे तप थकी, भावनां सू भवा रो विनास। राजेश्वर।
ए च्यारूई मार्ग मुगत रा* ॥ १ ॥
दान सूं जीव तिस्या घणा, तिण रो कहिता न आवे पार।
ते दान सुपात्र दोहिलो, जोगवाई नही वार वार। राजेश्वर ॥ २ ॥
चित्त वित्त पातर तीनूं मिल्यां, कर्म हुवे चकचूर।
अडकल दानु दे हाथ सूं, तो दलिद्र जाए दूर। राजे० ॥ ३ ॥
उतकष्टा परिणामा दान दे, तो टल जाए कर्मां री छोत।
छेहडो आणे संसार नो, केइ बाधे तीर्थंकर गोत। राजे० ॥ ४ ॥
भारी मोहकर्म रा जोग सूं, पात्र दान दियो नही जाय।
ते मोहकर्म पतलो पड्या, कदे मिले जोगवाई आय। राजे० ॥ ५ ॥
दानांतराय तूटां विना, देणी न आवे दान।
भारीकर्मा जीव ने, सुपात्र दान नही आसान। राजे० ॥ ६ ॥
दांनतराय तूटो घणो, पिण भारी उदे मोहकर्म।
जब पोषे कुपात्र ने हर्ष सूं, वले जाणे तिण माहे धर्म। राजे० ॥ ७ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दानांतरांय तूटो घणो, वले तूटो छे मोहनी कर्म।
जब अडलक दान दे साधु नें, निपजावे निरवद्य धर्म। राजे० ॥ ८ ॥
कुपात्र दान दियां धर्म नही, सुपात्र दान दियां धर्म।
केई धर्म कहे दोनूं नें दियां, ते भूला अज्ञानी भर्म। राजे० ॥ ९ ॥
सुपत्र दान मांहें तो गुण घणा, ते पूरा कह्या न जाय।
हिवे शील तणा गुण वर्णवूं, सांभलजे चित्त ल्याय। राजे०।
शील सूं जीव तिरया घणा ॥ १० ॥
शील सगला व्रतां मझे, मोटो घणो असमान।
तिण व्रत नें सूरा आदरे, कायर नें नहीं छे आसान। राजे० ॥ ११ ॥
च्यारूं जात रा देवता, करे ब्रह्मचारी नां गुण ग्राम।
जिण नव कोटि शील आदरयो, तिणनें नित नित बांदे शीष नाम। राजे० ॥ १२ ॥
इणनें बतीस दीधी ओपमां, दसमां अंग रे मांय।
शील रा गुण छे अति घणा, मोसूं पूरा केम कहिवाय। राजे० ॥ १३ ॥
कर्मकटे तपसा कियां, तपसा छे मोटो निधान।
कोड भवा रा कर्म संचिया, ते कट जाए तप सूं आसान। राजे० ॥ १४ ॥
तिण तपसा तणा बारे भेद छे, तिणरो जुओ जुओ विस्तार।
अनंता सिद्ध मुगते गया, त्यां तपसूं किया कर्म न्यार। रा० तपसूं जीव० ॥ १५ ॥
तपसा करणी अति दोहिली, तेतो सूरां हुंदो काम।
तिण तप मांहें छे गुण अति घणा, पूरा करणी नावे गुण ग्राम। रा० तप सूं जीव० ॥ १६ ॥
भावनां सुध भायां थकां, तो थोडा मे कटे कर्म जाल।
अनंत भव करणा छेदनें, मुगत जाए तत्काल। रा० भावना० ॥ १७ ॥
दान शील तप तीनूं भला, ते भव तणो प्रताप।
ए तीनूंइ भाव सहित हुवे, जब कटे छे जीव रा पाप। रा० भावना० ॥ १८ ॥
ए भावनां पिण भेद तप तणो, ते भावे उत्तम जीव।
विरक्त रहे संसार थी, तिण दीधी मुगत री नीव। रा० भावना० ॥ १९ ॥
इण भावनां सूं भवजल तिरे, उतरे संसार थी पार।
इण भाव रा भेद अनेक छे, तिणरो सुत्र मे विस्तार। राजेश्वर ॥ २० ॥
दान शील तप भावना, ए च्यारूंइ वस्तु अमूल।
यानें उत्तम जीव ते आदरे, ते रह्या समता रस झूल। राजेश्वर ॥ २१ ॥

●

दुहा

बाणी सुणने परिषदा, हिवडे हर्षित थाय।
सक्ति सारू व्रत आदरे, आया जिण दिशि जाय॥ १ ॥
हिवे राय श्रेणीक पूछा करे, मोटी परिषदा मांय।
पछे आप तणा शासण मझे, छेहलो केवली कुण थाय॥ २ ॥

ढाल : २

[रामचन्द्र के बाग चाम्पो मोरी रह्योरी]

हिवे भाखे श्री वर्धमान, राय सुणे तूं मनरली रे।
होसी जंबू कुमर बुधवान, छेहलो केवली रे॥ १ ॥
इण राजग्रही नगर सुठाम, उत्पती एह तणी रे।
तिण री जात कुल सुध मान, जस महिमा होसी घणी रे॥ २ ॥
ते सुधर्म गणधर पास, शील रत्न तिहां आदरी रे।
पछे चारित्र लेसी आण हुलास, अव्रत छोड अनाद री रे॥ ३ ॥
रिषभदत सेठ विख्यात, धारणी तस घरे रे।
तिण रो आतम जात, जबू आठूं कन्या वरे रे॥ ४ ॥
बाल ब्रह्मचारी ते सुध, चलायो चलसी नही रे।
संख मांहें न विगडे दूध, ज्यू शील मांहे सेंठो रही रे॥ ५ ॥
आठांई नें समझाय, मारग आणसी रे।
ते पिण ग्यान अपूर्व पाय, जिन धर्म नें जाणसी रे॥ ६ ॥
आठोंई अस्त्री सहीत, दिख्या लेसी हर्ष धरी रे।
संजम पाले रूडी रीत, प्रमाद नें परहरी रे॥ ७ ॥
करे घनघातिया चकचूर, केवल पावसी रे।
पछे शेष कर्म करे दूर, मुगत सिधावसी रे॥ ८ ॥
तिण री सांभल श्रेणिक बात, पाछल च्यार भवां तणी रे।
थोडी सी कहूं अल्पमात, वारता तो छे अति घणी रे॥ ९ ॥

●

दुहा

पाछिल च्यार भवां तणो, वीर करे विस्तार।
श्रेणिक राजा सांभले, मन में हर्ष अपार॥ १ ॥

ढाल : ३

[रे जीवडला दुलहो मानव भव कांई तुमे हारीये]

तिण काले नें तिण समें, नगर हुंतो सुग्राम हो। श्रेणिक राय।
तिहां कोटव कुल राठोड नाम थो, तिण रे रेवती भार्या ताम हो। श्रे०।
चित्त लगाय नें सांभले* ॥ १ ॥
तिण ब्राह्मण रे दोय पुत्र हुंता, भवदेव दूजो भावदेव हो।
भवदेव बाल ब्रह्मचारी थेट सूं, ते करतो साधां री सेव हो। श्रे० ॥ २ ॥
वले साधां री वाणी सुणतां थकां, आयो अधिक वेराग हो।
जब चारित्र लियो तिण अवसरे, इण इधिकी कीधी अथाग हो। श्रे० ॥ ३ ॥
भावदेव ते जीव जंबू तणो, ते परणी नागला नार हो।
कांकण डोरडा पिण छोड्या नहीं, वले न कियो ओर विचार हो। श्रे० ॥ ४ ॥
भवदेव साधु तिहा विचरतो, ते आयो छे नगर सुग्राम हो।
भावदेव सुणे मन हर्षियो, आयो भाइ वांदण तिण ठाम हो। श्रे० ॥ ५ ॥
भवदेव भाई भावदेव नें, उपदेश दियो, तिण वार हो।
वेराग विन भाई री लाज सूं, भावदेव लियो संजम भार हो। श्रे० ॥ ६ ॥
विना परिणामां भाई री शर्म सूं, भावदेव पाले देखा देख हो।
पाछो घर आवा सूं मन छे घणो, पिण भाई री लाज विशेष हो। श्रे० ॥ ७ ॥
इण परिणामां बारे वर्ष निकल्या, तोही रह्यो विषे रस भाल हो।
हिवे भवदेव साधु तिण अवसरे, कीधो तिहां थी काल हो। श्रे० ॥ ८ ॥
जब भावदेव पाछो घर ने नीकल्यो, आयो नगर सुग्राम हो।
जाणे भेष छोडे पाछो होऊं गृहस्थी, इसडा वरत्या परिणाम हो। श्रे० ॥ ९ ॥

दुहा

आए उतरियो बाग में, घणी नार्यां निकले छे ताहि।
गीत गावती जक्ष पूजवा, जब नागला छेंव त्यां मांहि ॥ १ ॥
ते नागला छे सुध श्राविका, तिण दीठो साधु नें ताय।
घणी लूगायां मांसूं टले, आया वांद्या साधु रा पाय ॥ २ ॥

ढाल : ४

वांदे नें ऊभी हो क, पूछे मुनि ताहि।
आरज रेवंती हो क, जीवे के नांहि ॥ १ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

मूंआ घण दिन का हो, गुणका आगला।
मुनि फिर पूछे हो, तस बहू छे नागला ॥ २ ॥
ओलख ने बोली हो, तिणसूं काम किसो।
ते मुझ नारी हो, रूप रंभा जिसो ॥ ३ ॥
मुनि झूठ म बोलो हो क, मुनि ने नार किसी।
ए बात सुणी ने हो, तुझने सहु हससी ॥ ४ ॥
हू नही मुनिवर हो, अतरंग वेरागी।
म्हे मन परिणामां हो, नारी नही त्यागी ॥ ५ ॥
तो ओ भेष क्यूं पहर्यो हो, मुनि थे साधु रो।
नारी किम छोडी हो, पाछी किम आदरो ॥ ६ ॥
आछी सिणगारी हो, भाई मोने छोडावी।
म्हे तेहनी लज्या हो, माथो मूंडावी ॥ ७ ॥
म्हें भेष पहर्यो हो, नही भीजे धर्म सूं।
दोहरा दिन काढ्या रे, भाई री शर्म सूं ॥ ८ ॥
गज बंधन में हो, पंखी पिंजरे जेम।
साप पिटारे हो, बध पड्यो एम ॥ ९ ॥
ज्यूं म्हें दिन काढ्या हो, साधु रा भेष में।
म्हे भेष न न्हांख्यो हो, यूंही रह्यो टेक में ॥ १० ॥
भूखा ने भोजन हो, जल मे तिरसा को।
मन रहे नारी मे हो, जिम मेहे करसा को ॥ ११ ॥
ज्यूं म्हारो चित्त हो क, लागो तेह सूं।
पाछो घर आयो हो, तिणरा नेहसूं ॥ १२ ॥
तो अब क्यूं छोडी हो, शर्म भाई तणी।
ओलंभा देसी हो, तुझ भाई तुम भणी ॥ १३ ॥
भाई मुझ मूवा हो, हिवे हूं आयो घरे।
गृहवासो करस्यूं हो, तिणसूं प्रीति धरे ॥ १४ ॥
भोग भोगव नें हो, पूरां मनरली।
ओ मिनख जमारो हो, नही छे वली वली ॥ १५ ॥
थे भेष छोडी ने हो, होसो गृहस्थी।
उवा छे सेठी हो, शीलवती सती ॥ १६ ॥
उणनें तो साधू हो, समझाइ धर्म मे।
उवा निरलज नांही हो, रहे छे शर्म में ॥ १७ ॥

जब तडक निखेदे हो, नागला भणी।
तोनें ठीक किसी छे हो, परना मन तणी ॥ १८ ॥
मोनें पिण साधु हो, सेठो जाणता।
परतीत घणी थी हो, शंक न आणता ॥ १९ ॥
ज्यूं तूं तिणनें हो, सेंठी जाणे सही।
मोनें नित ध्यावे हो, तोनें ठीक नहीं ॥ २० ॥
उवा बेमुख होसी हो, प्रीत थी एक रूखी।
नारी मुझ विना हो, होसी महा दुखी ॥ २१ ॥
सारसडी हंसी हो, चकवी जोड विना।
नित रहे उदासी हो, नारी नाह विना ॥ २२ ॥
ते नार विछोवो हो, मेंइज घालियो।
ते दुख मोनें हो, गाढोइज सालियो ॥ २३ ॥
म्हे दुख दीधा हो, नारी ने थेट सूं।
तिणसूं मिल सूं हो, सारा दुख मेटसूं ॥ २४ ॥
गृहवासो करस्यां हो, पाछी प्रीत जोडने।
हिवे कदेय न जाऊं हो, तिण सूं तोडने ॥ २५ ॥
इण कारण पूछी हो, बाइ में नागला।
कंत काजे कामण हो, उडावे कागला ॥ २६ ॥
जब आ बोली हो, थे विकल हुवा सही।
साधु तजी नारी हो, बाट जोवे नहीं ॥ २७ ॥
थांरो हियो फूटो हो, करो थोथी आसो।
उवा कदेय न वांछे हो, तोसूं गृहवासो ॥ २८ ॥
जब ओ बोल्यो हो, अकबक क्रोध करे।
विकल परी जाए, तूं थारे घरे ॥ २९ ॥
आमां साह्यां हो, रहिया छे बेहूं।
नागला जाण्यो हो, इण विकल नें कासूं कहूं ॥ ३० ॥

●

दुहा

इण रा परिणाम चलिया जाण ने, घरे आइ नागला नार।
हिवे किण विध समझावे तेहने, ते सुणजो विस्तार ॥ १ ॥

ढाल : ५

[मूरख जीवडा रे गाफल म०]

एक बाई बेटा सहित समझाय नैं, आइ साधु रे पास।
लारा सूं आयो तिणरो डाबडो, ते किण विध बोले रे भास।
भावदेव ने समझावे नागला* ॥ १ ॥
खीर खांड थें मा मोने घालियो, ते म्हे खाधो सराय।
उलटी होय नें पाछो नीकल्यो, ते पिण खाधो छे ताय ॥ २ ॥
म्हैं खेरू न कियो थें घाल्यो तिको, ताजो जीमण अदभूत।
जब घणो सरायो मा तिणने तिहां, तूं म्हांरे आछो सपूत ॥ ३ ॥
जब भावदेव कहे छे तेह नें, इण कीधो घणो रे अजोग।
तिणने सरावे तूं गहली थकी, आ तोनें नही जोग ॥ ४ ॥
जब भावदेव नें कहे छे नागला, थे बमिया छे काम भोग।
ते पाछा लेवा वाछो तेहनें, इसरी थेई करो छो अजोग ॥ ५ ॥
भांत भात निषेध्यो नागला, सेठी थकी साहसीक।
जब भावदेव सुणी मन चितवे, आ बात कहे छे रे ठीक ॥ ६ ॥
म्हे वारे वर्ष अहल गमाविया, बाछ्या काम नें भोग।
साधुपणो पिण मूल न नीपनों, म्हारा वरत्या माठा रे जोग ॥ ७ ॥
अंतरंग कीधी एहवी विचारणा, आण्यो घट में वेराग।
हिवे चारित्र लीधो छे तिण समझने, लागो मुगत रे रे माग ॥ ८ ॥
सीह तणी परे संजम पालने, कियो तिहांथी रे काल।
दूजे भव तीजैं देवलोक उपनो, पाम्यो भोग रसाल ॥ ९ ॥

●

दुहा

देव तणा सुख भोगवे, पाम्यो नर अवतार।
महा विदेह क्षेत्र मझे, ते सुणजो विस्तार ॥ १ ॥

ढाल : ६

[मारग वहे रे उतावलो]

वीतसोगा नगरी रलियामणी, पदमरथ राय।
पटराणी तिण राय रे, वनमाला छे ताय।
तीजो भव जंबूकुमार नों* ॥ १ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

तिण राणी री कूखे ऊपनों, जनम लियो ताम।
जनम महोच्छब किया घणा, शिवकुमार दियो नाम ॥ २ ॥
आठ वर्ष वीतां पछे भण्यो, कला बहोतर बखाण।
नव अंग सूता जागिया, डाहो चतुर सुजाण ॥ ३ ॥
रायवर कन्या पांचसो, परणाई मा बाप।
ससार नां सुख भोगवे, नही सोग संताप ॥ ४ ॥
एक दिवस बेठो आवास में, साधु दर्शन देख।
जब अथिर जाण्यो संसार नें, आयो वेराग विशेख ॥ ५ ॥
काढी दिख्या लेवा री वारता, लेवा न दे मा बाप।
जब वेले वेले पारणो करे, पारणे आबिल थाप ॥ ६ ॥
वले आहार निरदोपण भोगवे, पाले व्रत रसाल।
बारे वर्ष उग्र तप करी, कीधो तिहां थी काल ॥ ७ ॥
जइ पहले देवलोक उपनों, चोथा भव मांय।
देव तणा सुख भोगवे, निज पुन्न पसाय ॥ ८ ॥
देव आऊखो पूरो करी, पाम्यो नर अवतार।
राजग्रही नगरी मझे, होसी जबू कुमार ॥ ९ ॥
ए पांचूंई भव जंबू कुमार नां, भाख्या वीर जिणद।
राय श्रेणिक सुण हर्षियो, पाम्यो परमानंद ॥ १० ॥
श्रेणिक उठ बंदणा करे, आयो जिण दिश जाय।
हिवे जंबू कुमर नी वारता, सुणजो चित्त लगाय ॥ ११ ॥

दुहा

कहूं जंबू कुमर री वारता, जंबू पइन्ना रे अनुसार।
वले कथा अर्थ माहे कह्यो, ते सुणजो विस्तार ॥ १ ॥
तिण काले ने तिण समें, राजग्रही नगर मझार।
रिषभदत्त सेठ तिहां वसे, तिणरे धारणी नामे नार ॥ २ ॥
एक जंबू वृक्ष अति सोभतो, तिणरे सोना रूपा रा पान।
गहर गंभीर फल फूला करी, जाणे कल्प वृक्ष समान ॥ ३ ॥
एहवो वृक्ष आकाश थी आवतो, धारणी देखे सुपनां मांहि।
जब हर्षित हुई अति घणी, अनुक्रमे जन्म हुवो ताहि ॥ ४ ॥

माता जंबू वृक्ष देखियो, पुत्र उपनो गर्भे ताम।
तिणसू न्यायतीलां सुणतां थका, जबूकुमर दियो नाम॥ ५ ॥
तिण रिषभदत्त सेठ रो डीक रो, धारणी रो अग जात।
जंबू कुमर तिणरो नाम छे, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात॥ ६ ॥
तिणरी आठ ठामा सगाई करी, ववहारिया रा कुल मांय।
त्यांरे पिण रिध घर में घणी, कमी न दीसे काय॥ ७ ॥
जबू कुमर हुवो सोले वर्ष मे, तिण रो सुन्दर रूप आकार।
भोग समर्थ जाण माता पिता, करे परणावण री तयार॥ ८ ॥
तिण काले ने तिण समें, सुधर्म स्वाम अणगार।
श्री वीर जिनद रा पाटवी, त्यारा गुणा रो कहू विस्तार॥ ९ ॥

ढाल : ७

[राग गउडी, चउपइनी देशी]

चउ नाणी चवदे पूर्व धार, सूत्र ग्यान तणा भडार।
पहलो सघयण ने पहलो सठाण, मोटा गुण रत्ना री खाण॥ १ ॥
घोर तपसी मोटा सत, दया सजम ने लज्यावत।
जसवत त्यारो वचन महत, शरीर प्रभा क्रात छे तेजवत॥ २ ॥
जीता क्रोध मान माया लोभ, परिषह उपना न पामे क्षोभ।
जीता निद्रा दिठ मन माहि, जीवण मरण तणो भय नाही॥ ३ ॥
त्यां री जात माता री निर्मल जाण, कुल पिता रो उत्तम बखाण।
पराक्रम त्यांरो अति ही ताम, रूप घणो त्यामे अभिराम॥ ४ ॥
ग्यान दर्शण चारित्र करने सहीत, सद्गुरु रा पूरा सुविनीत।'
लाघव नें धीरज बुधवान, ध्याया रह्या नित रूडो ध्यान॥ ५ ॥
व्रत ने गुण त्यारो छे प्रधान, करण चरण सत्त री सुधमान।
त्यारो जतीधर्म दश विध प्रधान, सर्व जीवा ने दियो अभयदान॥ ६ ॥
गुण घणाईज छे त्या माय, ते एकण जीभ सु केम कहवाय।
आर्य क्षेत्र मे करे उग्र बिहार, भव जीवा रा तारण हार॥ ७ ॥
राजग्रही नगरी अभिराम, विचरत आया छे तिण ठाम।
जंबू कुमर रे मस्तक भाग, उतरिया जिहा गुणशिल बाग॥ ८ ॥
साथे छे पांचसो अणगार, त्यामे पिण छे गुण अपार।
खबर हुई छे नगरी माय, नर नारी बादण नें जाय॥ ९ ॥

दुहा

जंबू कुमर तिण अवसरे, घणा लोकां ने जाता देख।
चाकर नें पूछ निरणो करे, हर्षित हुवो विशेख ॥ १ ॥
हिवे साध वांदण ने निकल्यो, कर मोटे मंडाण।
वंदणा करने हर्ष सूं, सन्मुख बेठो आण ॥ २ ॥
सुधर्म स्वामी तिण अवसरे, वागरी वाणी अनूप।
जीवादिक नव तत्व तणो, कह्यो विवरा सुध स्वरुप ॥ ३ ॥
वले ससार ने ओलखायवा, भिन भिन दिया भेद वताय।
ते जथातथ प्रगट करू, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : ८

[धन्या श्री आज नगर में वाई]

ओ संसार हटवाडा को मेलो, निग पड्यां विछड जासी रे लो।
आ हिज विध तुमें तननी जाणो, वार वार नरभव नही पासी रे लो।
देखो रे आधा चेते नाही* ॥ १ ॥
मात पितादिक कुटुंक कवीलो, स्वारथ रा सगा जाणो रे लो।
दोहरी विरियां आय पडे जव, कोइ आडो न फिरे आणो रे लो ॥ २ ॥
कूडकपट कर धन भेलो कीवो, ते पिण साथे न आवे रे लो।
तिण धन मेलतां अशुभ कर्म लागे, तिणसूं आगे वणो दुख पावे रे लो ॥ ३ ॥
आप जीवे ज्यां लग वेठो खावे, इतरी तो घर मांहे आथो रे लो।
तो पिण संतोप आणे नही घट मे, तलफे घणो दिन रातो रे लो ॥ ४ ॥
कामभोग 'आसीविष सरिखा, वले किंपाकफल सम जाणो रे लो।
त्यांने अमृत सरिखा जाणे, ते पूरा मूढ अयाणो रे लो ॥ ५ ॥
नरक दीवी नारी जिन भाखी, वले मोख री आगल नारी रे लो।
तिणसूं अंतरग प्रीत लगावे, ते हूतीन जाणे निज खुवारी रे लो ॥ ६ ॥
जोवन जाए ने हीणी पडे इंद्रया, वले जरा दिन दिन नेडी आवे रे लो।
देही खीण पडे वर्ण फिरे छे, तोही धर्म करण री मन नावे रे लो ॥ ७ ॥
ए संसार असार छे जावक, थिर नही कठेई ठिकाणो रे लो।
च्यारूंगति मांहे जीव रुलियो अनादरो, तिणरी न करे पिछाणो रे लो ॥ ८ ॥
मोहअंध जीव फिरे मतवालो, त्याने सदगुरु री सीख न लागे रे लो।
हंस हंस कर्म वाधे दिन राते, त्यांरी खवर पडेसी आगे रे लो ॥ ९ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

आरा मोसर आरंभ माहे आंगा, छकाय मारण हुसियारो रे लो।
दान शील तप भावना च्यारूं, त्यारो लाहो न ले मूर्ख लारो रे लो ॥ १० ॥
कुपातर दान सूं कुगति मे जावे, तिण दान देवण घणो खातो रे लो।
सुपात्र दान सूं सुदगति जावे, त्यांने देतां थड थड धूजे हाथो रे लो ॥ ११ ॥
पहुडे मात-पिता सुत वधव, वले पहुड जाए निज नारी रे लो।
पहुडे सेण सगा मित्र सारा, तोहि करे तिण सूं प्यारी रे लो ॥ १२ ॥
एक न पहुडे धर्म श्री जिन भाख्यो, ते ले जावे मुगत मझारो रे लो।
कदा बासो बसे तो देवलोक माहे, तिण सूं तो रहे मूढ न्यारो रे लो ॥ १३ ॥
जीवादिक नवतत्व न जाणे, वले कुगुरां री करे पखपातो रे लो।
देवगुरु धर्म री परख कियां विन, यूंही बके दिन रातो रे लो ॥ १४ ॥
संसार रो मारग सेंदो काल अनादरो, मुगत रो मारग असेंदो रे लो।
ए दोनूं मार्ग ओलखे नही तेहनो, कदेई मिटे नही वेदो रे लो ॥ १५ ॥

दुहा

बाणी सुण ने परिखदा, हिवडे हरपित थाय।
जंबूकुमर तिण अवसरे, किण विध बोले वाय ॥ १ ॥
हाथ जोडी ने इम कहे, मै सरध्या तुमनां वेण।
थे तारक भव जीव ना, मोने मिलिया साचा सेण ॥ २ ॥
मात पिता ने पूछ नें, हू लेस्यूं सजम भार।
संसार जाण्यो कारमो, ए मोक्ष तणा सुखसार ॥ ३ ॥
वलता सुधर्म स्वामी इम कहे, थारे दिख्या आई दाय।
आज की घडी जाए तिका, फिर पाछी नही आय ॥ ४ ॥

ढाल : ६

[वेग पधारो महल थी]

हिवे वंदणा करने नीकल्यो, आयो जिण दिश जाय।
संजम लेवा उछरंग घणो, आवे नगरी मांय।
वेरागे मन वालियो* ॥ १ ॥
तिण अवसर नगरी मझे, छूटी छे एक नाल।
दरवाजा रे लाग सिला पडी, जंबूकुमर सूं टाल ॥ २ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

शिला नेडी पडी जाणने, करवा लागो विचार।
जो आ शिला पडती मो ऊपरे, तो संजम लेतो किण वार ॥ ३ ॥
मात पिता नें पूछने, संजम लेसूं ताय।
पिण विच में विघ्न छे अति घणा, तो शील आदरूं जाय ॥ ४ ॥
इम चिंतवने नीकल्यो, आय बांद्या गुरु पाय।
हाथ जोडीनें इम कहे, मोनें शील देवो अदराय ॥ ५ ॥
जब सुधर्म स्वामी जबूकुमर नें, चोथो व्रत दिढाय।
सेंठो कर जंबूकुमर ने, शील दियो अदराय ॥ ६ ॥
ब्रह्मव्रत जबू आदरे, पाम्यो अत्यत हुलास।
गुरु नें बांद आयो घरे, मात पिता रे पास ॥ ७ ॥
मात पिता नें इम कहे, सुणी साधां री वाण।
ते वचन सरवे परतीतिया, मोनें लागा अमिय समाण ॥ ८ ॥
हूं बीहनो जामण मरण थी, लेसूं संजम भार।
मोनें कृपाकर दो थें आगन्या, म करो ढील लिगार ॥ ९ ॥

दुहा

बचन सुणे बेटा तणो, मात पडी मुरछाय।
सिंघासण सूं ढल गई, मुख दियो कुमलाय ॥ १ ॥
सावचेत हुवां पछे, बोले बाणी एम।
मोह छकी माता कहे, ते सुणजो धर प्रेम ॥ २ ॥

ढाल : १०

[दिवाली दिन मोटको]

पुत्र पिता धन संचियो, तिण धन रो घणो विस्तार।
सात पीढी खातां खरचतां, तोही न आवे पार।
माता कहे जंबूकुमर नें ॥ १ ॥
ते धन खाओ पीओ विलसलो, सुख भोगवो संसार।
लाहो ल्यो मिनख रा भव तणो, ते नही पामसो बार बार ॥ मा० २ ॥
हिवे जबू कहे सुणो मातजी, धन मे घणा रो सीर।
दोहरी वेलां पडे जीव नें, ते मूल न भागे भीड।
जंबूकुमर कहे मात नें ॥ ३ ॥
इण धन नें राजा खोसले, कदा लाय माहें पिण बल जाय।
चले न्यातीलां झगडे धन वेंचले, चोर सातो दे ले जाय ॥ जं० ४ ॥

वले सिडे गले विणसे विले हुवे, असाश्वतो अनंत असार।
तिण कारण इणमे राचूं नही, लेसूं संजम भार ॥ जं० ५ ॥
वले परभव जाता जीव नें, साथे न आवे एक तार।
कृपा करे दो मोने आगन्या, म करो ढील लिगार ॥ जं० ६ ॥
जब माता कहे मुख रोवती, मा साह्मों तूं जोय।
तो विन हू दुखणी घणी, म्हारे ओर पुत्र नही कोय ॥ मा० ७ ॥
म्हे पाल पोस मोटो कियो, बूढापे आडो आसी एह।
हिवे आशा अलूधी मोनें राखनें, इम किम दीजे छेह ॥ मा० ८ ॥
बालपणे दुखे मोटो कियो, ते सुणजो सियाला री रात।
तो जामण ने छोडण तणी, मूल न काढे वात ॥ मा० ६ ॥
हिवडां तो वेठो रहे तूं घर मझे, आपणो वश बधार।
म्हे बूढा हुवां काल गयां पछे, लीजे सजम भार ॥ मा० १० ॥
हिवे जंबू कुमर कहे मात नें, आ मोने खबर न कांय।
कदा था पहली हो माता मो भणी, काल झपट ले जाय ॥ जं० ११ ॥
के जेहने काल मित्री होसे, के जाणे जासूं न्हास।
के जाणे मरसूं नही, ते बांधे आगली आस ॥ जं० १२ ॥
एहवी शक्ति नही माहरी, वले स्वास रो नही विश्वास।
वले वश बधारण री कही, ते कुणले गला मे पास ॥ जं० १३ ॥
एक पाणी रा विंदू मझे, मात पिता असंख्याता होय।
त्यारो नित गटको करू, त्या साह्मो क्यूं नही जोय ॥ जं० १४ ॥
थे वार अनंती माता हुवा, हूं पुत्र अनती वार।
हिवे मोह निवारो माता माहरो, आग्या री ढील म करो लिगार॥ जं० १५ ॥

●

दुहा

इम सुणने माता बिलखी थई, कहे हट मतकर इण वार।
साधु मार्ग अति दोहिलो, जेहवी खडग नी धार॥ १ ॥

ढाल : ११

[केदारो। काची कलियां अनार की रे हां]

सुकुमाल सेज्जा छोडने रे हां, धरणी करणो सथार। मेरे नदना।
कनक कचोला परहरे रे हां, काछलियां व्यवहार। मेरे नंदना।
कोमल केशां लोच करावणो रे हां, सहणो घणो सी ताप।
कठिन वचन खमणा लोक नां रे हां, ओ जीवे ज्यां लग सताप। मेरे० ॥ २ ॥

कदे आहार पाणी मिलसी नही रे हां, वले भूख तिरखा लागे आय।
जब हीन दीन हुवणो नही रे हां, तोसू सेंठो केम रहवाय। मेरे० ॥ ३ ॥
बावीस परीसा खमवा दोहिला रे हां, वले फिरवो घर घर बार।
पाय अलवाणे चालणो रे हां, करणो अरस विरस आहार। मेरे० ॥ ४ ॥
वले रोगादिक आय ऊपनां रे हां, कुण करसी तुझ सार।
सुकुमाल देही छे तांहरी रे हां, तिणसूं कहूं छूं वार वार। मेरे० ॥ ५ ॥
पांच महाव्रत दोहिला रे हां, तूं हिरदा मे जोय विचार।
पछे तूं पिछतावसी रे हां, जिम कियो मेघकुमार। मेरे० ॥ ६ ॥
आगे चारित्र ले भागा घणा रे हां, ते पूरा केम कहवाय।
तोसूं साधुपणो सझसी नही रे हां, सुखे बेठो रहे घर मांय। मेरे० ॥ ७ ॥
थे कठिन मारग कह्यो साधु नो रे हां, जंबू कुमर कहे तिण वार। मेरी मातजी।
पिण कायर ने छे दोहिलो रे हां, सूरां नें नही छे लिगार। मेरी० ॥ ८ ॥
हूं सूर वीर ज्यूं सुध पालने रे हां, समता रस घट आण।
जो हांचल थांहरा मैं चूंगिया रे हां, ते वेगी लेऊं निर्वाण। मेरी० ॥ ९ ॥
हिवे माता सुणे वले इम कहे रे हां, तूं ग्रही न छोडे टेक।
म्हें विविध वचन कह्या घणा रे हां, पिण थें नहीं मानी एक। मेरे० ॥ १० ॥
हिवे कह्यो करे एक मांहरो रे हां, पछे लीजे संजम भार।
जो मात पिता कर लेखवो रे हां, परणे आठोंइ नार। मेरे० ॥ ११॥
अठोंइ अस्त्री परण्यां पछे रे हां, चारित्र लीजो निसंक।
आ पूर तूं मांहरी मनरली रे हां, ओर तो म्हांरे कर्मां रो वंक। मेरे० ॥ १२ ॥
तोने परणावण तणी रे हां, म्हारे हूंस घणी मन माँहि।
ओ पूर मनोरथ म्हांरो रे हां, मोने साले नही मन मांहिं। मेरे० ॥ १३ ॥
थांरी मांगां नें ओर परणीजसी रे हां, म्हांरे जीवे ज्यां लग साल।
तिण कारण मे तो कनें रे हां, करां लाल ने पाल। मेरे० ॥ १४ ॥
म्हे कर कर रंग वधावणा रे हां, धन खरचां उद्यम आण।
सेण सगा भेला करे रे हां, तोनें परणावां मोटे मंडाण। मेरे० ॥ १५ ॥
आठ अस्त्री परणीज ने रे हां, म्हारे आण पगे लगाय।
पछे तोनें म्हारी आगन्यां रे हां, तूं चारित्र लीजे सुखदाय। मेरे नंदना ॥ १६ ॥

दुहा

मात पिता विलविल करे, ते सुणियो जंबू कुमार।
दुखिया देख अति घणा, हिवे करे कवण विचार ॥ १ ॥

ढाल : १२

[गउडी । जंबूद्वीप मझार रे भरत क्षत्र में]

जंबूकुमर तिण वार रे, सुणने चिंतवे ।
माहरा मात पिता विलविल करे ए ॥ १ ॥

म्हे आदरियो व्रत शील रे, तेतो भाजू नही ।
पिण परणवा रो अगार छे ए ॥ २ ॥

तो परण आठोंई नार रे, याने राजी करे ।
साधुपणो लेसूं पछे ए । ३ ॥

इम मन में गाढी धार रे, मानी विनती ।
जब मात पिता हर्षित हुआ ए ॥ ४ ॥

जंबूकुमर रो विवाह रे, मंगलिक दिन थापियो ।
हिवे करे महोछव अति घणा ए ॥ ५ ॥

जंबूकुमार करे विचार रे, म्हे शीलव्रत आदर्‍यो ।
ते खबर नही माहरे सासरे ए ॥ ६ ॥

ओ मोटो दगो साख्यात रे, कहूं छू जाणतो ।
ते श्रेय नही छे मो भणी ए ॥ ७ ॥

तो हूं प्रगट करदू वात रे, माहरे सासरे ।
शीलव्रत मे आदर्‍यो ए ॥ ८ ॥

ज्यू जाणे आठोंई नार रे, वले जाणे सासर्‍या ।
सासु सुसरा पिण जाणले ए ॥ ९ ॥

जो जाण परणे मो नार रे, परणावे सासर्‍या ।
तो कपट दगो नही मांहरे एं ॥ १० ॥

इसडो करै विचार रे, दूत बोलावियो ।
कहें जा तूं माहरे सासरे ए ॥ ११ ॥

म्हें आदरियो व्रत शील रे, जीवूं ज्या लगे ।
ते कहिजे म्हांरे सासरे ए ॥ १२ ॥

सासु सुसरा ने सुणाय रे, सुणायजे अवर नें ।
वले कहिजे आठोई नार नें ए ॥ १३ ॥

इम कहे घणा समाचार रे, दूत ने मोकल्यो ।
हिवे दूत तिहां थी चालियो ए ॥ १४ ॥

आठोंइ ठामा जाय रे, सुणायो सर्व ने ।
जंबकुमर शील आदर्‍यो ए ॥ १५ ॥

विवरा सुध सुणाय रे, दूता पाछो वल्यो।
जंबूकुमर कने आवियो ए ॥ १६ ॥

इम सुण नें आठोंई नार रे, विचारे जूजूई।
पछे सगली जण्यां भेली हुई ए ॥ १७ ॥

कहे आपारे कंत रे, शीलव्रत आदर्यो।
परणीजेनें छोडसी ए ॥ १८ ॥

हिवे करवो कवण विचार रे, जब केयक इम कहे।
शील पालसी किण विधे ए ॥ १९ ॥

जो पड्यो आपांरी फेट रे, तो करद्या पाधरो।
थोडा मे चलायदां ए ॥ २० ॥

देखे सगल्यां रो रूप रे, देवंगणा सारिखो।
जब शील पालणो दोहिलो ए ॥ २१ ॥

काचा दीसे परिणाम रे, शील पालण तणा।
सेठा हुवे तो परणे नही ए ॥ २२ ॥

जो परणे छे धर प्रेम रे, कहे मा बाप रे।
तो आपां नें किम लोपसी ए ॥ २३ ॥

कदा आपा सगल्यां नें लोप रे, लेवे साधुपणो।
तो आपे पिण साथे नीकलां ए ॥ २४ ॥

जंबूकुमर ने छोड रे, परणा अवर नें।
ते आपां नें जुगती नही ए ॥ २५ ॥

सुणे माहो मांहि ना वेण रे, सगली सेठी हुई।
जंबूकुमर ने धारने ए ॥ २६ ॥

इम सुण ने मा बाप रे, करे विचारणा।
पुत्री नें किम परणाविए ए ॥ २७ ॥

निज पुत्री पासे आयरे, विरतत सगलो कह्यो।
जंबूकुमर शील आदर्यो ए ॥ २८ ॥

परणे आठोंई नार रे, संजम आदरूं।
इम चोडे कहवाडियो ए ॥ २९ ॥

कहे म्हारा मात पिता ने कोड रे, परणावण तणो।
तिण सूं माड्यो म्हे परणवो ए ॥ ३० ॥

पुत्री सुणने कहे एम रे, मात पिता कने।
थें सोच फिकर करो मती ए ॥ ३१ ॥

म्हें परणा तो जंबूकुमार रे, नही परणा अवर ने।
ओछा जीतव्य कारणे ए ॥ ३२ ॥
जंबू कुमर जो पाले शील रे, घर माहे थकां।
तो म्हेई शील व्रत पालस्या ए ॥ ३३ ॥
जो लेसी सजम भार रे, तो म्हे लारे लागी।
साधुपणो ले नीकलां ए ॥ ३४ ॥
जो करसी गृहवास रे, घर माहे वसी।
तो ऊ कंत म्हे कामणी ए ॥ ३५ ॥
जे करसी ते प्रमाण रे, इच्छा छे तेहनी।
म्हे पिण कारस्या तिण विधे ए ॥ ३६ ॥
जंबू कुमर विन नेम रे, ओर न परणवां।
थें अवर विचार म आदरो ए ॥ ३७ ॥
आठूं बोली एकधार रे, मात पिता भणी।
पाछो उत्तर आपियो ए ॥ ३८ ॥
मात पिता सुण वेण रे, निज पुत्री तणा।
मन मे धीरप आणियो ए ॥ ३९ ॥
निज पुत्री नें सेठी जाण रे, धन खरचे घणो।
विवाह तणा ओछव करे ए ॥ ४० ॥
महोछव दिन ने रात रे, मात पिता करे।
पूरे मन री मन रली ए ॥ ४१ ॥

दुहा

मात पिता जबू कुमर नां, लगन आयो दिन जाण।
सेण सगा बोलाय भेला किया, जान कीधी मोटे मडाण ॥ १ ॥
जबू कुमर ने तिण अवसरे, पाट ऊपर बेसाय।
मरदन करायो सुगध द्रव्य सूं, सुध पाणी सूं न्हवराय ॥ २ ॥
मोले कर मुहघा घणा, तोल मे हलका जाण।
एहवा वस्त्र गहणा पहराविया, ते दीठा करे बखाण ॥ ३ ॥
रूप जबू कुमर तणो, देखत पामे आनंद।
जाणे बादला मांसूं नीकल्यो, रज रहित पूनम रो चंद ॥ ४ ॥
इण विध निकल्यो परणवा, साथे भारी जान ले जाय।
जानी माडी आया घणा, सामेलो कर तोरण बंधाय ॥ ५ ॥

सासू कीधी आरती, चंवरी माहिं वेसाय।
हथलेवे माईतां दियो डायचो, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ६॥

ढाल: १३

[धर्म आराधिये ए]

मात पिता आठा तणे ए, दीधो हथलेवे दान।
विस्तार कहू तेहनो ए, सुणो सुरत दे कान।
पुत्री ने दियो डायचो ए॥ १॥
निनाणू कोड तो सोनईया दिया ए, वले रूपईया जाण।
दीधा घणा हर्ष सूं ए, मन माहे उद्यम आण।
पुत्री ने आपिया ए॥ २॥
आठ थाल सोना तणा ए, आठ रूपा रा वखाण।
प्याला आठ आपिया ए, ते पिण सोनां रूपा रा जाण॥ पुत्री० ३॥
हार कनकावली रत्नावली ए, वले एकावली हार।
अठारे सर तणा ए, आठ आठ दिया श्रीकार॥ पुत्री० ४॥
अर्द्धहार सर नव तणा ए, वले तीन सर रा वखाण।
दिया अनेक जात रा ए, ते पिण आठ पिछाण। पुत्री० ५॥
आठ बाजूबंध रत्नां जड्या ए, आठ काकण रत्न जडंत।
गहणा अनेक जातरा ए, ते पिण रत्नां जडिया शोभंत॥ पुत्री० ६॥
आठ ढोलिया सोवन तणा ए, पागा रत्न जडाय।
वले आठ रूपा तणा ए, त्यांरा पागा सोनां मे मडाय॥ पुत्री० ७॥
इम आठ सिंघासण आपिया ए, वले आठ इमहीज बाजोट।
सोभे ते अति घणा ए, त्यां माहे नही मूल खोट॥ पुत्री० ८॥
वस्त्र जात अनेक रा ए, मोल मूंहघा ने हलका तोल।
पाचूं वर्णा तणा ए, दीधा पेइ मंजूस ने खोल॥ पुत्री० ९॥
आठ तवा सोनां रूपा तणा ए, आठ सोना रूपा री परात।
आठ चमच दिया ए, इम हिज आठ दीवां री जात॥ पुत्री १०॥
दास दासी दिया घणा ए, वले खोजा घणा दिया ताय।
गहणा वस्त्र पहराय नें ए, आठांही रे बाप नें माय॥ पुत्री० ११॥
एकसो बाणू बोल नों ए, दियो डायचे दान।
अणगणियो दियो वलि ए, घणो देई आदर सनमान॥ पुत्री० १२॥

डायचो तो दीधो अति घणो ए, पिण सोच घणो घट माय।
खटक मिटी नही ए, रखे ऊभी देलो छिटकाय।
म्हांरी पुत्र्यां भणी ए॥ १३॥
म्हें लाड कोड किया घणा ए, पूरी मन री हूस।
ते सगली बातां विगडसी ए, जंवू रे पाल्यां सूंस॥ १४॥
वले मात पिता जंवू कुमर नां त्यांने पिण ओहिज सोच।
मांड्यो घर विखेर ने ए, साधु थई करे लोच।
तो दुख हुवे मो भणी ए॥ १५॥
आ फिकर घणी मा वाप ने ए, वले सासू सुसरां ने अत्यत।
हिंवे किम नीवडे ए, जंवूकुमर तणो विरतंत।
चोखे चित्त सांभलो ए॥ १६॥

●

दुहा

जंबूकुमर परणे घरे आवियो, लागो मात पिता रे पाय।
आठ वहुआं पिण सासू तणे, पगे पडी छे आय॥ १॥
डायचो पीहर थी आणियो, मूंक्यो सासू सुसरा तणे पाय।
सासू सुसरे त्यांरो त्यानें सूंपियो, घणे मिठे वचनें वोलाय॥ २॥
जंवूकुमर आठ अस्त्र्यां, आया महल आवास।
ते महल घणा रलियामणा, ऊचा गगन आकाश॥ ३॥
जाल्यां ऊपर जालियां, गोखा रत्न जडाय।
भिगमिग लागी रत्न हीरां तणी, ते दीठां नयण ठराय॥ ४॥
जंवूकुमर, वेठो सिंघासणे, अस्त्र्यां वेठी जाजम ढाल।
हिवे जंवूकुमर मन चिंतवे, देखे नार्‍यां रो रूप रसाल॥ ५॥

ढाल : १४

[सोरठ। जतनी]

जेहनी मीजी भेदाणी, पलटे किम तेहनी वाणी।
लागो रंग चोल मजीठो, ते जातो किण ही न दीठो॥ १॥
व्रत लेवारी मनसा जे आणी, तिणमे नहीं पेमे पाणी।
अवसर लहि चतुर न चूके, लीधो पिण नेम न मूंके॥ २॥
मुनिवर नों पिण मन चूके, कामण जो पासे आय ढूके।
पिण जंवू कुमर इम जाणी, साची दुर्गति नी सहनाणी॥ ३॥

यांरो सुंदर रूप आकार, मल मूत्र नो भंडार।
हाड मांस लोही त्यां मांय, त्यांमें रूडी वस्तु न काय॥ ४॥
असुचि अपवित्रनो छे ठाम, यांसूं मूल नही म्हांरे काम।
रहिवो आछो नही त्यांरे पास, यांसूं कुण करे घरवास॥ ५॥
पिण यां जोड्या छे म्हांसूं हाथ, तो हिवे आ तो पूरी करूं रात।
परणी लेखे छे म्हांरी नार, हूं पिण यांरो भरतार॥ ६॥
पिण हूं ब्रह्मचारी सुघमान, तिण लेखे छे मा बेन समान।
तो यांसूं माठी निजर न भालूं, शीलव्रत चोखे चित्त पालूं॥ ७॥
ए मोनें परणे मो पासे आई, तो आठांई ने हूं समझाई।
यांनें पिण ले नीकलूं लार, ज्यूं यांरोई खेवो हुवे पार॥ ८॥
बेठो चित्रशाला मांय, भामण बेठी वेहूं पासे आय।
तो पिण किणही सूं मन नही ल्यावे, वातां सूं सहु ने परचावे॥ ९॥
यांनें समझावण री मन मांय, बीजी ओर वंछा नही काय।
रखे पूरी होय जायला रात, तो हिवे करणी तिण सूं वात॥ १०॥
जंवूकुमर पहली वतलावे, अंतरंग री बात सुणावे।
सवारे लेसूं संजम भार, थें कांइ करसो बेठी लार॥ ११॥
करणी हुवे तो करो मोसूं वात, उतावल सूं वीती जाए रात।
हिवडा लगती बेठी मो तीर, सवारे ते पिण नहीं छे सीर॥ १२॥
आठां अस्त्र्यां रो माठो घ्यान, त्यांरो विषय सेवण सूं तान।
कुमर रे न्हांखे मोह पास, जाणे भोगवलां गृह वास॥ १३॥
इसडा यांरा परिणाम, आठां रा जुदा जुदा नाम।
समुद्रश्री[१] पद्मश्री[२] बीजी, पद्मसेना[३] अस्त्री तीजी॥ १४॥
कनकसेना[४] चोथी जाण, पांचमी नभसेना[५] बखांण।
कनकश्री[६] छठी छे ताम, रूपश्री[७] सातमीं रो नाम॥ १५॥
जयंतश्री[८] आठमीं नार, आठोंइ करे मन में विचार।
आठ कथा कहसी आठ नार, आठ कथा कहसी जंबूकुमार॥ १६॥
अस्त्र्यां री कथा में कुहेत, कूड कपट नें अग्यान समेत।
वातां करसी वणाय वणाय, संसार में पारण रो उपाय॥ १७॥
जंबूकुमर कथा कहसी रूडी, तिणमें हेत दिष्टंत जुगत पूरी।
यांनें समझावण री मन मांय, ओर वंछा नही तिणरे काय॥ १८॥

दुहा

समुद्रश्री कहे हिवे कत नें, थे छोडो आठोई नार।
थांनें खवर नही थारा डील री, तोही हुआ सजम ने तय्यार ॥ १ ॥
म्हे म्हारे स्वारथ वरजां नही, वरजां तुम देख शरीर।
इसडी सुकुमाल काया रा धणी, किम होसो साहस धीर ॥ २ ॥
जो कह्यो मानो थे माहरो, तो मत लो संजम भार।
सुखे बेठा रहो घर मझे, भोगवो आठोइ नार ॥ ३ ॥
ए मन गमता सुख छोडने, यांसूं अधिकी करो छो टाप।
जिम पिछतायो बग नामा करसणी, तिम पिछतावो ला आप ॥ ४ ॥
कुण बगनामां करसणी, पिछतायो कहो केम।
जबूकुमर कहे कहो मो कने, हूं सुणसूं धर कर प्रेम ॥ ५ ॥
जंबूकुमर यांरी कथा सुणे, यांने समझावण रे काम।
जो बुववत हुवे तो खप कीजिए, साभले इण परिणाम ॥ ६ ॥

ढाल : १५

[कपूर हुवे अति उजलो]

हिवे समुद्रश्री कहे कंत नें जी, सुण हो जबूकुमार।
बग नामां कर्षणी थली तणोजी, गयो देश मेवाड। कुमरजी।
थे सुणो हमारी बात* ॥ १ ॥
गुल खाड साकर सेलडी तणा जी, खाधा विविध पकवान।
त्यारो स्वाद लेई रीझ्यो घणो जी, अनेक जात रे मिष्टान। कुमरजी० ॥ २ ॥
जब शाला नें इण पूछा करी जी, यारो बीज नीपजे किण ठाम।
जब सालां कह्यो इणरो बीज सेलडी जी, मोकली नीपजे इण गाम।कुमरजी ॥ ३ ॥
इण सुणने विचार इसडो कियो जी, इण रो बीज हू देश मे जाय।
वाय नीपजाऊं खेत सांवठा जी, तो दलिद्र दूर पलाय। कु० ॥ ४ ॥
इम चितव काची सेलडी जी, घणी मोल लीधी तिण ठाम।
गाडा ऊंट पोठिया भाडे करी जी, ल्यायो आपणे गाम। कु० ॥ ५ ॥
आए न्यातीला ने इम कहे जी, साख दूरी करो थे बढाय।
तिण ठामे बावां सेलडी जी, ज्यू दलिद्र दूर पलाय। कु० ॥ ६ ॥
जब तिणने न्यातीलां इम कहे जी, साख डोडे पोटे आई पूर।
सईकडां मन धान तेहनें जी, ते वाढे न्हांखे किम दूर। कु० ॥ ७ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

जब इण कह्यो धान रो जाणियो जी, आ नीपजसी रसाल।
एक क्यारा मे खेत जाए वूहो जी, ते लेखो लीजो संभाल। कु० ॥ ८ ॥
जब न्यातीलां कहे साख लियां पछे जी, तूं वायजे भारी रसाल।
आ आई साख गमायने जी, किम घालां घर मांहे काल। कु० ॥ ९ ॥
जब ओ कहे पछे नीपजे नही जी, तेह सूकां रितु जाय।
तिण कारण इण साख ने जी, सताब सूं बेगी दो वढाय। कु० ॥ १० ॥
चिंता मूल करो मती जी, थें चाखे जोवो रसाल।
इसडी चीजां ज्यांरे नीपजे जी, त्यांरे कदे म जाणो काल। कु० ॥ ११ ॥
इम आमां साह्मां कह्या घणा जी, पिण किण री न मानी वाय।
साख वढाय दूरे करी जी, मांहे दिया हल जोतराय। कु० ॥ १२ ॥
खडे चोके ने धरती रस करी जी, पछे सेलडी दीधी वूहाय।
पछे कूओ खोदायो त्यांने पायवा जी, पिण पाणी नही तिण मांय। कु० ॥ १३ ॥
सेलडी पाणी पीधां विना जी, सूके गई धरती मांय।
हिवे पश्चाताप करे घणो जी, पिण कारी न लागे काय। कु० ॥ १४ ॥
वीज भाडो सगलो गयो जी, वले आई साख गमाय।
वोहरा रो रिण माथे रह्यो जी, उण दलिद्र लियो साह्मो वोलाय।कु०॥ १५ ॥
उण रितु विन वाही काची सेलडी जी, रितु आयो धान उखाल।
पछे दोनूंई साख विना रह्यो जी, पिछतायो मूर्ख बोए माल। कु० ॥ १६ ॥
जाणे जीमूं रसाल सेलडी तणी जी, पूरूं मन तणी कोड।
ते जीवे ज्यां लगे दुखी हुवो जी, करे मेवाड री होड। कु० ॥ १७ ॥
थे पिण जिम पिछतावसो जी, छोडे शब्दादिक सुख।
इण काया.सूं संजम पलसी नही जी, मत ल्यो उदीरी ने दुख। कु० ॥ १८ ॥
आठ अस्त्र्यां अपछरा सारिखी जी, तरुणी बाल जवान।
वले घर मांहे पिण रिध अति घणी जी, ते नीपनी साख असमान। कु० ॥ १९ ॥
थे चारित्र लो छो ए सुख छोडने जी, थांरे अधिका पामण री चाय।
उण कर्षणी ज्यूं आ थें करी जी, पाम्यां सुख क्यूं दो गमाय। कु० ॥ २० ॥
थें थां सरखी वय रा साधु देखने जी, थे जाण्यो हूं पिण साधु होय।
त्यांरी थे होड करो मती जी, ए पाम्यां सुख मत खोय। कु० ॥ २१ ॥
आई साख गमाई कर्षणी जी, नही मानी न्यातीलां री वात।
ज्यूं कह्यो न मानों थे मांहरो जी, आया सुख गमावो साख्यात। कु० ॥ २२ ॥
तिणसूं थे उण कर्षणी सारिखा जी, तिणमें कूड नही तिल मात।
आप वूरो मूल मानों मती जी, म्हे साची कही छे वात। कु० ॥ २३ ॥

जंबूकुमर इम सांभली जी, इणने जाणी घणी बुधवान।
भूठोंई कुहेत कह्यो मेलने जी, तो हिवे घालूं इण रे घट ज्ञान। कु० ॥ २४ ॥
इण ने समझती जाणने जी, पाछो उत्तर देवे एम।
आ किण विध समझे कंत कने जी, ते सुणजो धर प्रेम। कुमरजी ॥ २५ ॥

●

दुहा

हिवे जंबूकुमर कहे सुण कामणी, काम ने भोग जहर समान।
थोडा छोडेने घणा री वंछा करू, इसडो नही माहरो ध्यान ॥ १ ॥
म्हारे वंछा एक मुगत री, अवर न आवे दाय।
थे मोने कह्यो कर्षणी जिसो, कूडो कुहेत लगाय ॥ २ ॥
काम भोग विषय रस भोगव्यां, पडे मुगत सुखां री हान।
हू काग सरिखो मूर्ख हुवां, तो थारो कह्यो लेऊ मान ॥ ३ ॥
काग मूर्ख किण विध हुओ, तिणरी माडे कहो मोने वात।
हिरदे वेसे जो माहरे, हूं पिण नीकलू थांरी साथ ॥ ४ ॥

ढाल : १६

[कपूर हुवे अति उजले]

जंबू कहे सुण सुन्दरी ए, एक हाथी मूओ वन माय।
घणा पखी माटी भखे जी, साझ पड्या उड जाय।
ए सुन्दर मान हमारी बात* ॥ १ ॥
एक कागलो मास गृद्धी हुवो जी, तिहा रह्यो मालो घालं।
मास खाऍ कलेवर तणोजी, वले होय रह्यो तिणमे लाल ॥ २ ॥
कदे रात समे बिरखा हुई जी, पाणी पडियो दग चाल।
ते कलेवर पाणी थी वूहो जी, ते आए पड्यो छे खाल ॥ ३ ॥
मास गृद्धी अति कागलो जी, न हुवो कलेवर सू दूर।
इसडो मूर्ख कागलो जी, ते गयो बहती रे पूर ॥ ४ ॥
खाल थकी गगा गयो जी, गगा सू गयो समुद्र।
उठ देखे तो तीर दीसे नही जी, उणरी आख्या उघडी जद्द ॥ ५ ॥
पछे उड उड चिहू दिस थाकियो जी, रह्यो तीर ने रीच।
पोह फाटी पिछतावतो जी, मूओ पाणी रे बीच ॥ ६ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

उ मांस गृद्धी एक भव मूओ जी, डूबो समुद्र मझार।
जो गृद्धीपणो करूं थांहरो जी, तो मरूं अनंती वार॥ ७॥
अशुची अपवित्र थारो पुतलो जी, मल मूत्र रो भंडार।
थांसूं रीझे घर में रहूं जी, तो डूबूं इण संसार॥ ८॥
कामभोग आमिष जिसा जी, काग जिसा जे जीव।
ते रति पामसी कामभोग में जी, त्यां दीधी नरक री नींव॥ ९॥
हूं काग सरिखो मूर्ख नही जी, आमिष जिम छे भोग।
तिण में हूं राचूं नहीं जी, लेसूं संजम जोग॥ १०॥

●

दुहा

वचन सुणे जंबूकुमर ना, आयो घट में ज्ञान।
विरक्त हुई संसार थी, भोग लागा विष समान॥१॥
अतर मांहे विचारियो, जाण्यो अस्थिर संसार।
जो जंबूकुमर सजम लिए, तो हूं पिण नीकलूं लार॥२॥
इसड़ी मन मे विचारनें, मून साझे रही ताम।
जब जबूंकुमर इम जाणियो, इणरा सुलट्या दीसे परिणाम॥३॥
पछे पद्मश्री कहे तेहने, थे कांइ न कीवी वार।
थोड़ा में तूं म्हांसूं फिर गई, हुई कंत रे लार॥४॥
म्हे थारे पास नचित थी, तूं राखसी समझाय।
तूं मून साझे बेठी रही, हिवे हूं राखूं घर मांय॥५॥

ढाल : १७

[थांरा मेलां उपर मेह झरोखे बीजली मारूजी]

हिवे बोले पद्मश्री नार, इसड़ी किम कीजिए। कुमरजी।
म्हे तो आठोंई सुविनीत नार, त्यांनें छेह न दीजिए॥कुमरजी १॥
ए सुकुलीणी आठूंई नार, थांने रही जोवती।
त्याने मत मूको निरधार, ऊभी मेल रोवती॥२॥
मन गमता भोगवो काम भोग, पूरो थांरो मनरली।
पुन्न जोगे सगली जोगवाय, थांने आए मिली॥३॥
ए मिनख तणो भव पायने, लाहो लीजिए।
यासूं ही अधिका काम भोग री, चाह न कीजिए॥४॥

अति लोभे छे विणास, अधिका किम पावसी।
अधिक वछा कीधी तो, वानर जिम पिछतावसी ॥५॥
वानरो पिछतायो केम, जब कहे कामणी।
वानरा री कथा सुणो आप, घणी रलियामणी ॥६॥
एक वानरो वानरी ताहि, वसे उजाड मे।
तिण उजाड़ मे बावड़ी एक, हुती तिण बार मे ॥७॥
ते बावडी देवनामी अनूप, दीठा नयण ठरे।
जो वानर करे स्नान तो, वानर ने नर करे ॥८॥
वानरो वानरी तिण ठाम, फिरता आया जिहा।
मतो करे बेहू बावड़ी माहि, स्नान कियो तिहा ॥९॥
वानर रो हुवो मिनख, वानरी मिनषणी।
जब वानर ने हुई अधिकी चाहि, ममता लागी घणी ॥१०॥
जब उ कहे अस्त्री ने एम, डबोलो ल्यो वली।
तो हू देवता थे देवी होय, पूरां मन री रली ॥११॥
जब अस्त्री कहे अधिको लोभ, वले नही कीजिए।
ओ मिनख तणो भव पायो तो, लाहो लीजिए ॥१२॥
उणने वर्ज्या घणो समझाय, ते अस्त्री तेहनें।
पिण सीख न लागी मूल, हीणा पुन्न जेहनें ॥१३॥
देवता होयवारो लोभ, भूखो अभिमान रो।
जब पडियो वावडी माहिं, पाछो हुवो वानरो ॥१४॥
वावडी रे बारे आय, निज स्वरूप ने जोवियो।
वानरो पाछो हुवो देख, घणो जब रोवियो ॥१५॥
छाती माथो कूटे तिण ठाम, पिछतावे अति घणो।
हिवे करे अस्त्री सू अरज, कह्यो करो मो तणो ॥१६॥
थेइ वानरी पाछी होय, करे वले स्नान ने।
थे मत करो ढील लिगार, म्हारो कह्यो मानने ॥१७॥
ज्यू हू सुखे करू गृहवास, आगा सू आप सू।
गई वस्तु री चिंता छोड, छूटू विलाप सू ॥१८॥
जव अस्त्री कहे मिनष भव, पामे किम हारसू।
था वानरा हीण बुद्धी भरतार, विनाई सारसू ॥१९॥
इतला मे राजा आयो एक, देखी तिहा जेहने।
रीझ्यो रूप देखी अत्यत, लेग्यो घर तेहने ॥२०॥

पटराणी थापी तिण राय, सुखणी हुई घणी।
हिवे वात सुणीज्यो आप, दुखी वानरा तणी ॥२१॥
वानरा नें तो पकड़ ले गया, बाजीगर आयनें।
मारे कूटे पक्को कियो ताहि, कला सीखायनें ॥२२॥
वानरो करे नाच अनेक, लोकां नें रीझाविया।
वानरे बाजीगरां रे, द्रव्य अनेक उपाविया ॥२३॥
फिरता फिरता आया तिण शहर, नार वानरा तणी।
उण राजा रे पासे नाच, रामत कीधी घणी ॥२४॥
परेच नें आतरे राणी देख, जाण्यो कत आपरो।
भरतार जाणे आयो मोह, दुखियो बापडो ॥२५॥
जब राणी राजा रे पास, वानर ने सरायने।
वानरा ने राणी लीधो मोल, राजा ने जणायने ॥२६॥
वानरां ने महलां माहि, आणने बाध्यो बारणे।
तिणने बटका न्हांखे प्रीत, पुराणी कारणे ॥२७॥
सुख भोगवे राणी नं राय, ते देखे वानरो।
देख देख खीजे मन मांय, कर्म आडो पानरो ॥२८॥
म्हारी अस्त्री भोगवे राय, हूं तो झिलतो रह्यो।
मो हीण पुन्निया जीव ने, इण तो घणो कह्यो ॥२९॥
छाती माथा कूटे दिन रात, पिछतावो करे घणो।
म्हे कह्यो न मान्यो मूल, इण अस्त्री तणो ॥३०॥
दुखे दुखे घणो पिछताय, जन्म पूरो कियो।
थे पिण पिछतावोला एम, हठ तो इसडो लियो ॥३१॥
वानरे कीधो अधिको लोभ, अत्यंत हुवो दुखी।
ज्यूं थे करो अधिको लोभ, किण विध होसो सुखी ॥३२॥
वानरा ज्यूं पिछतावोला आप, कह्यो मानो माहरो।
अन्तर माहे विचार, छोडो हठ थाहरो। कुमरजी ॥३३॥

●

दुहा

जबूकुमर सुणे इम जाणियो, आ पिण दीसे बुधवान।
तो इणने पिण समझायलू, घट माहे घाले ज्ञान ॥१॥
हिवे जबूकुमर कहे सुण कामणी, काम ने भोग जहर समान।
थोडा छोडे ने घणा री वछा करे, इसडो नहीं माहरो ध्यान ॥२॥

म्हारे वंछा एक मुगत री, अवर न आवे दाय।
थें मोने कह्यो वानर जिसो, कूडो कुहेत लगाय ॥ ३ ॥
कामभोग विषय रस भोगव्यां, पडे मुगत सुखा री हान।
हूं कठियारा मूर्ख जिसो होवूं, तो थारो कह्यो लेऊं मान ॥ ४ ॥
कठियारो मूर्ख किण विध हुवो, तिणरी माडे कहो मोनें बात।
हिरदे वैसे जो मांहरे, हूं पिण नीकलूं थांरी साथ ॥ ५ ॥

ढाल : १८

[वीरमती कहे चद नें]

जंबूकुमर कहे नार ने, कठियारो थो एक।
हीण पुन्नियो हीण बुद्धियो, माहे नही विवेक।
जंबूकुमर कहे नार नें ॥ १ ॥
ते कोयला करवा गयो, सूका वन माय।
थोरो सो पाणी साथे लियो, एक वेला पी जाय ॥ जंबू० २ ॥
खेर रा लकडा भेला करे, दीधी अग्नि लगाय।
तिरखा लागी तिण अवसरे, पाणी पी गयो ताय ॥ जं० ३ ॥
जद ग्रीष्म रितु तावडो पडे, बाजे लू दोभाल।
वले अग्नि रा ताप सूं, तिरखा लागी असराल ॥ जं० ४ ॥
जब वन मे फिरे पाणी ढूंढतो, पाणी न मिल्यो ताहि।
एक वृक्ष देख राजी हुवो, सूतो तिण री छांहि ॥ जं० ५ ॥
जब निद्रा आई तेहने, सुपनां रे मांय।
समुद्रां पाणी पी गयो, तिरखा जाय के न जाय ॥ जं० ६ ॥
अस्त्री कहे • तृखा जाये नही, बिन पीधा किम जाय।
जब जंबू कहे कामभोग तो, स्वप्नां री छे माय ॥ जं० ७ ॥
वले भीनां तिणा नीचोय ने, पीए सुपना रे माय।
जंबूकुमर कहे तेह नी, तिरखा जाय के न जाय ॥ जं० ८ ॥
अस्त्री कहे तिणा चूसियां, तिरखा किम जाय।
समुद्र पीधाई गई नही, तो हिवे सुण तूं न्याय ॥ जं० ९ ॥
कामभोग सुख देवता तणा, समुद्र समान।
तिणा समा सुख मिनख रा, ते पिण करे हिरान ॥ जं० १० ॥
म्हे कामभोग देवता तणा, भोगव्या अनती वार।
पिण सुपना जिम विललाविया, रह्या नही लिगार ॥ जं० ११ ॥

समुद्र सरिखा भोग भोगव्या, तिरखा न गई ताय।
तो तिणा सरिखा भोग भोगव्यां, तिरखा किम जाय ॥ जं० १२ ॥
मीगंण्यां री अग्नि उकरालिमां, घप अधिकी आय।
ज्यूं कामभोग भोगव्यां थकां, तृष्णा अधिकी थाय ॥ जं० १३ ॥
कामभोग नर नार नां, काची वले काय।
काचा सगपण संसार नां, जेहवी सुपनां री माय ॥ जं० १४ ॥
कामभोग विषय रस भोगव्या, बंधे कर्मां रा जाल।
अनंत काल दुख भोगवे, वधे अनंत जंजाल ॥ जं० १५ ॥
कठियारे समुद्र पीधा घणा, तेतो स्वप्नां मांय।
पछे जाग्यो जब तिरषो घणो, गरज सरी नही काय ॥ जं० १६ ॥
कठियारे उण अटवी मझे, न सक्यो तिरखा टाल।
विलविल करते वापडे, पाणी विन कीधो काल ॥ जं० १७ ॥
अटवी मोटी उण जाणी नही, न जाण्यो ग्रीष्म काल।
ओछा पाणी भरोसे ते मूंओ, इसडो मूढ बाल ॥ जं० १८ ॥
ज्यूं आ मोटी अटवी संसार सूं, किस विध पामूं पार।
जो इण सुखा तणे भरोसे रहूं, तो हारूं नर अवतार ॥ जं० १९ ॥
कठियारो मूर्ख थको, मूंओ अटवी मझार।
तिण सरीखो हू मूर्ख नही, लेसूं संजम भार ॥ जं० २० ॥
पद्मश्री सुण हर्षित हुई, जंबूकुमर नां वेण।
कामभोग जाण्या विष सारिखा, खुलिया अन्तर नेण ॥ जं० २१ ॥
जो जंबूकुमर घर छोडसी, हूं पिण छोडूं लार।
अणबोली बेठी रही, दिख्या री मन धार ॥ जं० २२ ॥

दुहा

पद्मसेना तिण अवसरे, पद्मश्री ने कहे एम।
तूं कहती कंत समझावसूं, तो रही अबोली केम ॥ १ ॥
म्हे रही भरोसे तांहरे, तोनें डाही जाणी भली भांत।
तूं पिण केडे हुई कंत रे, बेठी दीसे पहली री पांत ॥ २ ॥
हिवे हूं कंत समझावसूं, अनेक चोज लगाय।
हेत जुगत दृष्टांत दे, सुखे राखूं घर माय ॥ ३ ॥
पद्मसेना कहे जंबूकुमर ने, सुख भोगवो संसार।
कह्यो मानें लो मांहरो, मत चुको इण बार ॥ ४ ॥

जो कह्यो न मानो माहरो, ते जीवे ज्यां लग दुखिया थाय।
कपिला राणी ज्यूं पिछतावसो, पछे कारी न लागी काय ॥ ५ ॥
जंबूकुमर पद्मसेना ने इम कहे, नही कामभोग री चाय।
उवा राणी पिछताई किण विधे, ते मोनें दो समलाय ॥ ६ ॥

ढाल : १६

[धीज करे सीता सती रे लाल]

तिण काले ने तिण समे जी, वसंतपुर मझार हो। कुमर जी।
जितशत्रु राजा तिणरो धणी जी, तिहां बसे देवदत्त सोनार हो। कु०।
बात सुणो कंत मांहरी रे लाल* ॥ १ ॥
तिण सोनार रे बहु बेटा तणी रे, पर पुरुषां सूं सेवे अणाचार हो।
तिणने सुसरो निजरां देखने रे लाल, घणो कह्यो बेटा नें बारूबार हो। कु० ॥ २ ॥
बेटो न माने कह्यो बाप रो रे, तिणरे अस्त्री सूं अतरग प्रीत हो।
साची सती जाणे तेहनें रे लाल, बाप री नही मूल प्रतीत हो। कु० ॥ ३ ॥
जब सुसरो छिद्र जोवतो रहे रे, भेलो सूतो देख्यो तिणरे जार हो।
निद्रा आई दोनूं जणा रे लाल, सुसरे नेवर लियो उतार हो। कु० ॥ ४ ॥
जागी जब नेवर न देखियो जी, जाण्यो ए सुसरा रा काम हो।
जब उण पेली कह्यो भरतार नें रे लाल, सुसराजी नां दुष्ट परिणाम। कु० ॥ ५ ॥
हू राते सूती तिहा आयने जी, म्हारा नेवर लेगा उतार हो।
परिणाम उतास्या बाप थी रे लाल, आप रे वस कियो भरतार हो। कु० ॥ ६ ॥
पछे बाप कह्यो बेटा भणी रे, तूं मान नही म्हारी लिगार।
पिण आ जार पुरूष भेली सूतां रे लाल, ओ नेवर लीधो उतार हो। कु० ॥ ७ ॥
नेवर देख बेटे कहे बाप नें रे, थांरा धवला माहे धूर हो।
तूं आल देवे छे माथे एहनें रे लाल, इसरो कांय बोले कूर हो। कु० ॥ ८ ॥
झूठो घाल्यो इण बाप ने रे, कर कर तिण ऊपर खीज हो।
थारे माहोमा विवाद हुवो घणो रे लाल, जब अस्त्री कहे हूं करसूं धीज हो। कु० ॥ ९ ॥
इण झूठी थकी झगडो झालियो रे, जब भेला हुवा घणा लोक हो।
फिट फिट सुसरा ने सहु करे रे लाल, ओ बूढलो घणो छे अजोग हो। कु० ॥ १० ॥
तूं आल दे इणने झूठो थको रे, लोक बोले तिण ऊपर करे खीज हो।
जब अस्त्री कहे लोका भणी रे लाल, हूं चोडे करसूं धीज हो। कु० ॥ ११ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

इण लोकां ऊभां धीज थापनें रे, पछे छाने बोलाय लियो जार हो।
हूं धीज करण नें नीकलूं रे लाल, जब तू गहलो वणे तिण वार हो। कु० ॥ १२ ॥
हूं धीज करण जाता चोक मे रे, घणा लोकां रो देख प्रयोग हो।
तूं विलगे मो थकी आयने रे लाल, ज्यू देखे सगलाई लोग हो। कु० ॥ १३ ॥
इम समझायो जार पुरुष नें रे, सीख दीधी तिण वार हो।
पछे धीज करण नें नीकली रे लाल, आई मध्य बाजार हो। कु० ॥ १४ ॥
जब जार पुरुष गहलो थई रे, विलग्यो तिणसूं आय हो।
जब लोका गहलो जाण तेहने रे लाल, दूरो कीधो तिणथी छुडाय हो। कु० ॥ १५ ॥
जब गहलो लोकां सुणता कहे रे, धीज करवा लागी कुपात्र राड हो।
तूं करे अकारज नित मो थकी रे लाल, अगल डगल बोल्यो जिम भांड हो। कु० ॥ १६ ॥
जब लोकां इणनें गहलो जाणियो रे, मार्‍यो धका दे अलगो ले जाय हो।
इण री धीज थापी देवी ऊपरे रे लाल, लेगा देवी रा देवल मांय। कु० ॥ १७ ॥
देवी रो परचो घणो लोक मे रे, साचो हुवे तो पाछो आय हो।
झूठा नें देवी मारे तिहां रे लाल, देवल वारे जीवतो न जाय हो। कु० ॥ १८ ॥
आ देवल माहे ऊभी कहे रे, देवी आगे जोडी दोनूं हाथ हो।
हूं साच बोलूं तो मत मारजो रे लाल, नही तो करजे देवी मारी घात हो। कु० ॥ १९ ॥
पहलो परण्यो पुरुष मांहरो रे, दूजोडो गहलो प्रसिद्ध विख्यात हो।
म्हारे पलो लागो यां दोयां तणो रे लाल, ओर लागो हुवे तो कीजे घात हो। कु० ॥ २० ॥
जद देवी तो लागी विचारवा रे, इणरे पेलो गेलो कुण दोय।
निरणो कियां विन मारूं नही रे लाल, देवी सांसे पडी रही जोय हो। कु० ॥ २१ ॥
जितरे देवी रा पगा विचे रे, नीकली गई साख्यात।
धीज उतरी बारे नीकली रे लाल, लोकां जाण्यो आ सती विख्यात हो। कु० ॥ २२ ॥
घिन घिन करे लोक तेहनें रे, सुसरा रे मुख देवे धूंर हो।
धोका धमका धका दे घणा रे लाल, कहे थें इसरो कांय बोल्यो कूर हो। कु० ॥ २३ ॥
सुसरा री हेला निदा करे रे, इणसूं लोक पाम्यां रीझ हो।
इण कूड कपट कर देवी कनें रे लाल, झूठी थकी उतरी धीज हो। कु० ॥ २४ ॥
जब सुसरो मन माहिं चिंतवे रे, आ प्रत्यक्ष झूठी नार हो।
ते जीवती रही धीज उतरी रे लाल, देवी रे ई इसडो अधार हो। कु० ॥ २५ ॥
सेण सगा मित्री विचे रे, झूठो पडियो सोनार हो।
बहू साची थई धीज उतरी रे लाल, तिणरी साख भरे संसार हो। कु० ॥ २६ ॥

●

दुहा

हिवे सोनार अति दुखियो हुओ, नीद न आवे दिन रात।
लोक खीजावे अति घणा, कोइ माने नही तिणरी बात॥ १॥
नीद न आवे सोनार ने, ते विस्तरी लोकां मे बात।
जब राजा राख्यो तिणने पोलियो, इणने नीद नावे दिन रात॥ २॥
पटराणी तिण राजा तणी, मावत सू सेवे अणाचार।
तिणने हाथी उतारे सूड सूं, पाछी पिण मेले महल मझार॥ ३॥
कदे राजा थो राणी रा महल मे, जब लागी बेलां बार।
मोडी आई तिण रात मे, जब मावत कोप्यो अपार॥ ४॥
हाथी री सांकल तणी, दीधी मोरा मांहि।
आज मोडी आई किण कारणे, म्हे नीद गमाई ताहि॥ ५॥
जब हाथ जोडी राणी कहे, राजा थो महला मांय।
हू मोडी आई इन कारणे, मोसूं कृपा करो हित ल्याय॥ ६॥
जब मावत इणसू सुख भोगव्या, पछे हाथी मेली महल मझार।
ए सगलो विरतंत दोयां तणो, देख लीधो सोनार॥ ७॥
राजा रा घर मे ए कर्म नीपजे, तो माहरी कुण सी बात।
दुख विसारे घाल्यो आपरो, तिणसू नीद आई तिण रात॥ ८॥
सूतो देख सोनार ने, राजा बोल्यो एम।
आज पहली देख्यो तोने जागतो, आज नीद आई छे केम॥ ९॥

ढाल : २०

[विना रा भाव छण छण गूजे]

सुण हो रजा म्हारी बात, इचरज पाम्यो आज रात।
थारा घर रो देख विचार, म्हारो दुख घाल्यो विसार॥ १॥
तिणसूं नीद आई मोने रात, ते विवरा सुध सुण मोरी बात।
थारा महला हेठे बधे हाथी, तिणरो मावत छे कुपाती॥ २॥
थारी रांणी सूं करे अकाज, ते मे निजरा देखे लीधी आज।
म्हांरो दुख गयो हू भूल, तिणसूं नीद आई मोने सूल॥ ३॥
घर मे काइ हुतो दुख तोने, ते पिण कहि बतलाय तूं मोने।
जब इण राजा ने सघली सुणाई, बात बीती ते सर्व बताई॥ ४॥
राजा कहे याने किम देख्या रात, आ पिण कहे तूं मोनें वात।
जब कहिवा लागो सोनार, यांरो विवरा सुध विचार॥ ५॥

राणी ऊभी झरोखे आय, हाथी सूंड सूं लीधी उठाय।
सुखे हेठी मेले दीधी तास, जब आई मावत रे पास॥ ६॥
मावत राणी ऊपर रीस कीधी, पछे सांकल री मोरां मांहे दीधी।
कह्यो मोडी क्यू आई आज, हिवे मांहरे नही तोसूं काज॥ ७॥
जब राणी बोली जोडी हाथ, आप सुणो म्हारी एक बात।
महलां माहे हुता महाराज, तिणसूं मोडी आई छूं आज॥ ८॥
घणो विनो करे नरमाय, मावत नें दियो रीझाय।
मावत सूं कियो संजोग, तिणसूं भोगविया कामभोग॥ ९॥
पछे सीख मागे मावत पास, हाथी कनें आए उभी तास।
हाथी सूंड सूं गाढी संभाय, राणी नें मेली महलां मांय॥ १०॥
इसडो विरतंत दीठो म्हे रात, तिणमें झूठ नहीं तिल मात।
जो थांरे संका हुवे मन मांय, तो राणी रा मोर जोवो जाय॥ ११॥
सांकल उपडी देखो साख्यात, तो म्हांरी सगली साची जाणो बात।
इसडा देख्या थांरा घर रा फेन, मोनें नीद आई इण चेन॥ १२॥
इम सुणे राजा चिंतवे एम, सांकल लागी सही छे केम।
म्हें फूलां रो दडो बायो तेथ, तिणरी पिण लागां हुई थी अचेत॥ १३॥
ओतो सांसो छे मोने पूरो, ओ सोनार साचो के कूडो।
तो हिवे राणी रा मोर सभाल, वेगो जायने काढूं निकाल॥ १४॥
राजा आयो महलां मांय, राणी ने हेत सूं बतलाय।
मीठे शब्दे राणी ने बोलाय, हाथ खांची ने नेडी बेसाय॥ १५॥
राणी डरती शरीर नें ढाके, मन माहें पिण घणी सांके।
जब राजा करे मन मे विचारो, इणरो शरीर कियो उघाडो॥ १६॥
मोरा में सांकल उपडी देख, जब राजा ने जागियो धेख।
इणनें जांणी कुपात्र नार, कूड कपट तणो भंडार॥ १७॥
फूल दडा थी हुई अचेत, सांकल लागां दीसे सचेत।
इसडी छे धूतारी एह, इणनें सांकल लागी पूछूं तेह॥ १८॥
म्हारा इण महला रे मांय, थारे सांकल री दीधी किण आय।
तिणरो मोने नाम बताय, राणी सूं मूल बोल्यो न जाय॥ १९॥
जब राजा कहे हे दुष्ट नार, तूं मावत सूं सेवे अणाचार।
घणी निभंछी तिण वार, हिवे जा तूं मावत रे लार॥ २०॥
इम कहे काढी महलां रे वार, चावी हुई सहर मझार।
मावत ने जाण्यों घणो अजोग, आ राणी छे इण जोग॥ २१॥

राणी ने देइ मावत लार, याने काढिया देश रे बार।
हाथी ने पिण वारे काढ्यो ताय, जव अमरावां अरज कीधी आय ॥ २२ ॥
हाथी हुवे छे मावत रो विनीत, इणमे कांय करो कुपीत।
इणने तो राखो राज माय, ओर मावत ने दो भलाय ॥ २३ ॥
जव राजा मानी अमरावा री वाय, हाथी ने राख्यो राज माय।
मावत राणी ने लेइ लार, गयो छे राजा रा देश बार ॥ २४ ॥
एक देवल थी शहर रे पास, तिण ठामे आय लियो वास।
तिण राते तिण शहर रे मांहि, एक चोर चोरी कीधी ताहि ॥ २५ ॥
धन माल ले नीकल्यो बार, लारे हुई सताब सूं बहार।
जब चोर आयो देवल माहि, बहार पगे पगे आवे ताहि ॥ २६ ॥
चोर रो रूप राणी देख, तिणसू लागी प्रीति विसेख।
जो तू हुवे म्हारो भरतार, तो तोने जीवा राखू इण वार ॥ २७ ॥
चोरी दे काढू इणरे माथे, हू चालू तुमारे साथे।
चोर कहे तूं माहरी नार, हू थारो होसू भरतार ॥ २८ ॥
चद सूर्य री छे साख, हिवे तूं मोने जीवतो राख।
जब राणी कहे चोर ने आम, म्हारों भरतार सूतो छे ताम ॥ २९ ॥
माल मेल दे तिण कने जाय, इणरा डील रे लोही लगाय।
मो कने सूतो काढ तूं घोर, वहार जाण लेसी इणने चोर ॥ ३० ॥
इण कह्यो तिम कियो चोर सारो, जितरे पगे पगे आई बहारो।
मावत रे पासे धन माल देख, वहारवाला ने जाग्यो धेख ॥ ३१ ॥
मावत नें पकड लियो ताहि, मारे कूटे तिण देवल मांहि।
मावत कहे हूंतो चोर नाय, मोने अन्हाखी थका कूटो काय ॥ ३२ ॥
चोर सूतो ऊ देवल माय, म्हारी अस्त्री ने पास जाय।
माल मेल्यो मो पासे ताम, ते तो खोज मांगण रे काम ॥ ३३ ॥
जो थारे सका हुवे मन मांय, तो म्हारी अस्त्री ने पूछो जाय।
जब यां अस्त्री नें पूछ्यो जगाय, या मे चोर हुवे तिणने वताय ॥ ३४ ॥
जब मावत ने कहे चोर राणी, इणने थे लेवो चोर पिछाणी।
चोर ने कह्यो भरतार, इणनें मत देज्यो कोई मार ॥ ३५ ॥
वहारवाला सुणे इण री वाण, मावत ने पकड्यो चोर जाण।
पछे सूली दियो तिणने आण, वहारू गया निज ठिकाण ॥ ३६ ॥
तिण हिज शहर रे माहि, जिनदास श्रावक छे ताहि।
चोर सूली दीधी तिण ठाम, तठे सहजां आयो छे ताम ॥ ३७ ॥

मावत कहे सुणो सेठ जी वात, हूं चोर नही साख्यात।
सेठ नें कही छे धरा मूली, मोने यूही दियो छे सूली॥ ३८॥
सेठ कहे तूं समता आण, मन ने तूं आण ठिकाण।
पोता रा सचिया जाण कर्म, साचो जाणजे श्री जिन धर्म॥ ३९॥
सेठ गयो परिणाम चढाय, इणरा शुभ आया अध्यवसाय।
निज अवगुण जाणी लिया ताय, मरे देव हुवो छे जाय॥ ४०॥

दुहा

चोर कुशले खेम रह्यो, हुई मावत री घात।
ओ कूड कपट राणी करे, हिवे चली चोर के साथ॥ १॥

ढाल : २१

[थें तो जीव दया धर्म पालो रे]

चोर सूं प्रीत बाधी राणी रे, तिणने आपरो भरतार जाणी।
चलिया जाए चोर रे गामो रे, विचे नदी वहे तिण ठामो॥ १॥
दोनूं आया नदी रे तीरो रे, तिणरो ऊंडो वहे छे नीरो।
जब चोर कहे सुण राणी रे, नदी रो वहे ऊंडो पाणी॥ २॥
थांरा गहणा कपडा छे सारो रे, भेला कर बाध दो म्हारी लारो।
त्याने पेली तीर पोहचायो रे, पछे थाने उतारसूं आयो॥ ३॥
जब गहणा कपडा भेला कीधा रे, सगला चोर रे हाथे दीधा।
चोर लेगो पेली तीर आगो रे, पछे मन मे विचारवा लागो॥ ४॥
आ तो दुष्ट छे कपटण नारी रे, मावत ने मरायो हत्यारी।
तिणने कीधो थो इण भरतारो रे, तिणरी दया न आणी लिगारो॥ ५॥
इण रे अवर पुरुष आवे दायो रे, तो आ मोने पिण देवे मरायो।
राजा ने छोड मावत सूं लागी रे, आ निपट निर्लज छे नागी॥ ६॥
मावत ने ई मरायो कुरीतो रे, तो आ मोसू किम पालसी प्रीतो।
इण रो माल आयो म्हारे हाथो रे, इणने क्याने ले जाऊं साथो॥ ७॥
आ ऊभी कहे वेगा पधारो रे, मोनेंई थे पार उतारो।
जब चोर पाछो कहे आमो रे, थासू मूल नही म्हारे कामो॥ ८॥
थे मावत नें इण विध मरायो रे, तो मोनें किम होसी सुखदायो।
इम कही आगो चाल्यो चोरो रे, राणी ने लागो अति दोरो॥ ९॥

ऊभी रोवे बागा पाडे रे, किण आगे जाय पुकारे।
गहणा कपडा न रह्या लिगारो रे, आ नग्न ऊभी निरधारो ॥ १० ॥
मावत देव हुवो थो सोयो रे, तिण राणी रो विरतंत जोयो।
राणी ने दुखणी देखी तायो रे, जब देव आयो तिण ठामो रे॥ ११ ॥
सियाल रूप करे तिहां आयो रे, वले मांस मूंढा मे वणायो।
राणी पासे ऊभो आयो रे, तिण माछलो देख्यो नदी माह्यो ॥ १२ ॥
मांस मेली माछला पाछे धायो रे, माछलो पेस गयो जल माह्यो।
मांस लेगो पखी भूखो रे, ओ सियाल दोया सूं चूको ॥ १३ ॥
राणी सगलो विरतत देखो रे, जब खख खख हसी विशेखो।
फिट फिट रे मूढ सियालो रे, तूं रह्यो दोयां सूं पालो ॥ १४ ॥
बलतो सियाल बोल्यो एमो रे, मोने मूढ कह्यो छे केमो।
राणी कहे म्हे कह्यो मूढ लेखे रे, थारा लखण तूं निजरां न देखे ॥ १५ ॥
मुख माहिलो मांस गमायो रे, माछलो पिण हाथे न आयो।
माछला दिश दोड्यो मास नें मूंको रे, मूढ छे तो दोया सूं चूको ॥ १६ ॥
मोनें मूढ कह्यो इण लेखे रे, तू पिण आपा साह्यो नही देखे।
तूं दोया सूं चूका साह्यो जोवे रे, तूं तीनां सूं चूक बेठी रोवे ॥ १७ ॥
पहलो राजा नें मावत बीजो रे, चोर पुरुष वले तीजो।
थें तीन किया भरतारो रे, तीना सूं चूक हुई निराधारो ॥ १८ ॥
मो विचेई तूं मूढ छे गाढी रे, तो ही बोले छे मोसूं आडी।
जब चितवे मन में राणी रे, म्हारी बात ने इण किम जाणी ॥ १९ ॥
सियाल रूप फेरी देव थावो रे, राणी नें विरतंत सुणायो।
कहे तें तो मोनें मरायो रे, पिण हूं देव हुवो छू जायो ॥ २० ॥
घणी निभंछी* राणी ने ताह्यो रे, देवता आयो जिण दिश जायो।
राणी दुखे काढे दिन दोरा रे, नित रा नित पडिया फोडा ॥ २१ ॥
हिवे राणी घणी पिछतावे रे, उवे सुख किहा थी पावे।
रोवे भूरे विललायो रे, पिण गरज सरे नही कायो ॥ २२ ॥
ज्यूं थें आठां नें ऊभी मूंको रे, राणी ज्यूं थें पिण मत चूको।
जो म्हारो कह्यो न मानो आपो रे, तो राणी ज्यूं करसो पश्चातापो ॥ २३ ॥
आप दीसो घणा बुधवानो रे, तो आ बात म्हारी ल्यो मानो।
सुख भोग लो संसारो रे, ओ मिनख जमारा रो सारो ॥ २४ ॥

दुहा

हिवे जंबू कहे सुण कामणी, काम भोग न जाणू सार।
संजम ले शिवपुर वरूं, कर देवूं खेवो पार॥ १ ॥
कपिला राणी तेहनो, मोनें दियो दृष्टंत।
कूडो कुहेत लगावियो, ते कुण माने मतिवंत॥ २ ॥
कपिला राणी पापणी, कियो घणो अकाज।
राजा छानें कुकर्म करे, न्याय गमायो राज॥ ३ ॥
राणी पर पुरुष ने सेवियो, तिणसूं हुई कुपीत।
हूं घर अस्त्री नें पर अस्त्री, दोयां सूं न करूं प्रीत॥ ४ ॥
जो कह्यो करूं हूं तांहरो, तो हूं भोग मांहे लपटाय।
विद्युत्माली विप्र नी परे, हूं पिण मूर्ख थाय॥ ५ ॥
विद्युत्माली कुण मूर्ख हुवो, तिणरी कहो मोनें बात।
जो हिरदे वेठे मांहरे, तो निकलूं थांरे साथ॥ ६ ॥

ढाल : २२

[अलवेल्यो। आनंद समकित उचरे रे लाल]

जंबूकुमर कहे नार ने लाल, इण जंबूद्वीप रे माहि। सुण कामणी रे।
तिहां भरत क्षेत्र में कुष्ट नगर थो रे लाल, तिहां ब्राह्मण वसे दोय भाय। सुण०।
जंबूकुमर कहे नार ने लाल* ॥ १ ॥
विद्युत्माली नें मेघमाली रे लाल, ते निरधन विद्या रहीत।
दुखिया थका फिरे शहर में रे लाल, दोनूंई दलिद्र सहीत॥ सुण० जं० २ ॥
गांव बारे सूता वृक्ष छांहडी रे लाल, तिहां आयो विद्याधर एक।
तिण पुछी हकीकत तेहनी रे लाल, विवरा सुध विशेख॥ जं० ३ ॥
जब अणुकंपा आणी दोयां तणी रे लाल, मेघधर विद्याधर ताय।
कहे मांगो तुम्हे दोनूं मो कनें रे लाल, जब आं विद्या मांगी दोनूं भाय॥ जं० ४ ॥
जब कहे विद्याधर तेहनें रे लाल, एक मानो थे म्हांरी वाय।
थें पुत्री परणो चंडाल नीं रे लाल, त्यांसूं भोग म भोगवो ताय॥ जं० ५ ॥
छ मास व्यतीय हुवां पछे रे लाल, चंडालणी विद्या प्रगट थाय।
इम कहे विद्याधर तेहनें रे लाल, आयो जिण दिश जाय॥ जं० ६ ॥
यां कह्यो विद्याधर रो मान ने लाल, दोनूं परण्यां चंडालणी ताहि।
विद्युत्माली तिण उपरे रे लाल, गृधी थयो तिण मांहि॥ जं० ७ ॥

चडालणी सूं सुख भोगवे रे लाल, तिणरे विद्या न आई हाथ।
रह्यो दलिद्री रो दलिद्री रे लाल, वले बारे काढे दियो न्यात ॥ ज० ८ ॥
ते ब्राह्मण दुखियो हुवो घणो रे लाल, कीधी चडालणी सूं प्रीत।
तिण जन्म विगोयो ब्राह्मण तणो रे लाल, वले न्यात मे हुवो फजीत ॥ ज० ६ ॥
एहिज विध हुवे मांहरी रे लाल, जो माडूं थासू प्रीत।
कामभोग थासू भोगवू रे लाल, तो चिहुंगति मे होऊं फजीत ॥ जं० १० ॥
चडालणी सू सुख भोगवे रे लाल, हुवो एकण भव मे खुवार।
थांसूं काम भोग भोगव्या रे लाल, खराब हुवो अनती वार ॥ ज० ११ ॥
हूं विद्युतमाली सरिखो नही रे लाल, म्हारा उघडिया अतर नेण।
मेघमाली री मोने ओपमा रे लाल, सो किण विध मानू थांरा बेण ॥ ज० १२ ॥
मेघमाली परण्यो चडालणी रे लाल, एक घर मे रह्यो तिण पास।
भोग न भोग्या तेहसू रे लाल, अडिग रह्यो छमास ॥ ज० १३ ॥
छमास बीता प्रगट हुई रे लाल, चडालणी विद्या प्रसिद्ध।
पंडित बाज्यो लोक मे रे लाल, वले बहुत मिली तिण ने रिद्ध ॥ ज० १४ ॥
घणा राजा तिणने पडित जाणने रे लाल, त्यां कन्या दीधी परणाय।
तिण अनेक अस्त्री सूं सुख भोगव्या रे लाल, उणरे कुमी रही नही काय ॥ ज० १५ ॥
ऊ चंडालणी सू अलगो रह्यो रे लाल, तो राय कन्या वरी घणी सोय।
ज्यू चडालणी सू अलगो रहू रे लाल, तो मुगत वरू सिद्ध होय ॥ ज० १६ ॥
चडालणी ने परण्यो विद्या साधवा रे लाल, विद्या आया न राखी तिणने पास।
हू परण्यो छू माइता रे कहे रे लाल, नही परण्यो करण घरवास ॥ जं० १७ ॥
मात पिता मोने कह्यो रे लाल, परणाए आग्या देसा ताम।
हिवे आग्या ले संजय आदरू रे लाल, पिण थासू नही कोई काम ॥ ज० १८ ॥
पदमसेना इम साभली रे लाल, जाण्यो अथिर संसार।
जो जबूकुमर घर छोडसी रे लाल, तो हू पिण निकलूं लार ॥ ज० १६ ॥
इसडी मन माहे धारने रे लाल, अबोली रही तिण वार।
जब जबूकुमर इम जाणियो रे लाल, आ तीजी पिण समझी दीसे नार। सु० ॥जबू० २०॥

दुहा

हिवे कनकसेना चोथी अस्त्री, कहे पद्मसेना ने एम।
तूं कहती हू कत समझावसू, तो रही अबोली केम ॥ १ ॥
तूं पिण दीसे छे एहवी, आगली दोया जेम।
पिण हूं राखू समझायने, मोने लोपेला केम ॥ २ ॥

हिवे कनकसेना कहे कंत ने, जो आय मिल्यो छे सजोग।
मानव नो भव पायनें, भोगवलो कामभोग ॥ ३ ॥
अति लालच नहीं कीजिए, अति लालच दुख पाय।
खेत्रकुटुंबी ज्यूं पिछतावसो, के मानो हमारी वाय ॥ ४ ॥
खेत्रकुटुंबी कुण हुवो, किम पिछतायो ताय।
अति लोभ उण किण विध कियो, मोनें दो तेह सुणाय ॥ ५ ॥

ढाल : २३

[राग आसावरी। धिन धिन संप्रति साचो राजा]

कनकसेना कहे सुणहो कुमरजी, एक कुटुंबी खेत वायो रे।
ते संख पूरे राते खेत रूखाले, खेती सूं करे आजीवकायो रे ॥ कनक १ ॥
सुरपुर रा ढांढा चोर ल्याया, वले ओर घणो धनमालो रे।
चोर निकलता था तिण ठामें, जब उण संख बजायो हाथ भालो रे ॥ क० २ ॥
संख सुणे चोरां इम जाण्यों, बहार आइ दीसे लारो रे।
ढांढा छोडे धनमाल न्हांख नें, न्हास गया तिण वारो रे ॥ क० ३ ॥
खेत्रकुटुंबी संखधमो ते, तिण ठामे आयो चालो रे।
ते ढांढा धन देख हर्ष्यो मन मांहे, वले हर्ष्यो देख धन मालो रे ॥ क० ४ ॥
खेत्रकुटुंबी संखधमो तिण, ढांढा धन माल ल्यायो घर मांह्यों रे।
लोक पूछे तूं किहां थी ल्यायो, जब ओ कहे ठाकुर मिलिया आयो रे ॥ क० ५ ॥
जब लोकां पिण ठाकुर आवतो जाणी, इणरी महिमा बधारी ताह्यो रे।
पूजा चढावो कियो लोकां तिणरो, घणी ऋध हुई घर मांह्यो रे ॥ क० ६ ॥
तोही संखधमा ने समता नाई, वले खेत वाह्यो तिण ठामो रे।
खेत पाको तिहां वले रह्यो वासो, संख पूर्‌यो छे तामो रे ॥ क० ७ ॥
कदे चोर तिहां वले आए निकलियो, त्यां संख सांभलियो तिण ठामो रे।
जब चोर कहे आपे बहार जाणेने, माल न्हांखे न्हाठा तामो रे ॥ क० ८ ॥
जब चोर कहे बहार तो नहीं दीसे, कोइ मिनख रहे इण ठामो रे।
चोर चाल्या संख शब्द अहलाणे, आय पकड्यो तिण नें तामो रे ॥ क० ९ ॥
पकड़ लेगा तिणनें चोर पल्ली मे, पाडे घणा हवालो रे।
थें संख बजायो तिण सुं म्हे न्हाठा, न्हाखे गया सर्व मालो रे ॥ क० १० ॥
ते माल म्हांरो तूं लेगो ते मांगा, खून गुना सहीतो रे।
मारे कूटे दुख दे नित नित, करे घणी कूपीतो रे ॥ क० ११ ॥
तिण मारसूं डरते आगलो पाछलो, सगलोई धनमालो रे।
चोरां ने देनें बंध थी छूटो, इण नें अति लोभ पाड्या हवालो रे ॥ क० १२ ॥

उण इतरे माले सतोष न पाम्यों, वले खेत वाह्यो मूढ जायो रे।
आगलो गमायो टाप अधिकी राखी तो, ओ बूडो सख वजायो रे॥ क० १३॥
संखधमो पिछतायो मूर्ख, तिम पिछतावोला आपो रे।
आठ अस्त्री ने छोड चलो छो, करो छो अधिकी टापो रे॥ क० १४॥
जो कह्यो मानो म्हारो इण वेलां, तो भोगवो आठोई नारो रे।
धन जोवन रो लाहो लीजे, पामी ने मत हारो रे॥ क० १५॥

●

दुहा

जबूकुमर इम साभली, इणनें पिण जाणी बुधवान।
तो हू खप करू वले एहनी, घालूं घट माहे ज्ञान॥१॥
जबूकुमर कहे सुण कामणी, सांभल म्हारी वाय।
मोने सखधमा सरिखो कह्यो, तें कुड़ो कुहेत लगाय॥२॥
कामभोग मन गमता माहरे, पुन्न जोगे मिलिया छे आय।
त्यांने जहर समान जाणे परहरू, तो अधिकारी कुण करे चाय॥३॥
भोग विटवणा किया थका, तृप्त कदेय न थाय।
जो लिप्त होवू काम भोग मे, तो वानर ज्यू दुखियो थाय॥४॥
वानरो किम दुखियो हुवो, तिणरी मानें देवो सुणाय।
जो बात हिरदे बेठी मांहरे, तो हू पिण साध्वी थाय॥५॥

ढाल : २४

[इण बहनी पीउडो परदेशी]

जम्बूकुमर घण नें परचावे, नर भव अस्थिर दिखावे रे।
कुल माहे तेहिज सेण कहावे, जे जिनधर्म सुणावे। जम्बू०॥१॥
जम्बूकुमर कहे सुण ए कामण, एक वन हुतो अति सुखदायो रे।
फल फूल पान घणा तिण वन मे, वानर वानरी वसे तिण मांह्यो रे॥२॥
एक वानरो तरुण आयो तिण ठामे, त्यारे लागो विरोध माहो माह्यो रे।
जव ऊ वानर डरते छोड ठिकाणो, ओर अटवी मे गयो चलायो रे॥३॥
डूंगर पर्वत घणा तिण ठामे, पिण पाणी नहीं तिण माह्यो रे।
इतला मे तिण वानर नें तिण ठामे, तिरखा घणी लागी आयो रे॥४॥
तिण अटवी मे पाणी जोयो घणी ठामे, पिण पाणी न लाधो लिगारो रे।
फिरता फिरता पाम्यो तिण कादो, जव मुख घाल्यो कादो मझारो रे॥ ५ ॥
तो पिण तिरखा नहीं गई छे तिणरी, जव लीपी उण सगली कायो रे।
उरहो परहो लोट्यो तिण कादा मे, तोही तिरखा न गई छे ताह्यो रे॥ ६ ॥

जिम जिम तिरखा लागे छे तिणनें, तिम तिम कादो लगावे रे।
तिण कादा सूं काया ठरे छे उपर सूं, पिण अभितर तिरखा न जावे रे॥ ७॥
जिम जिम सूर्य किरण लागे शरीर रे, तिम तिम कादो सूके रे।
जब शरीर भेलो हुवे तिण वानर रो, जब दुखी थको वन मे कूके रे॥ ८॥
जिम जिम किरण लागैं अति ताप थी, तिम तिम वेदना थावे रे।
कादो लगाय दुखी हुवो वानर, तिणसूं घणो पिछतावे रे॥ ६॥
ऊ दुखे दुखे मूंओ वनचर मूरख, उण मोटी अटवी माह्यो रे।
कादा सूं कुपीत हुई तिणमे गाढी, पछे कारी न लागी कायो रे॥ १०॥
कादो लागां साता हुवे शरीर उपरली, ते पिण थोडा मे विललावे रे।
कादो सूकां पछे वेदना हुवे तिणथी, दुख माहे दुःख पावे रे॥ ११॥
एहवी साता हुवे थारा शरीर भोगवियां, ते पिण थोडा में विललावे रे।
वलें कर्म कादो लागैं इण साता थी, तिणसूं आगे घणो दुःख पावे रे॥ १२॥
हूं वानर सरिखो मूर्ख जो होऊं, तो काम भोग माहें रहूं राचो रे।
पिण मोने तो मोटा सद्गुरु मिलिया, म्हे जाण्यो जिन धर्म साचो रे॥ १३॥
कनकसेनां जब जंबूकुमर नां, बचन सुणे प्रतिबूझी रे।
वेराग आयो घट भितर तेहनें, तिणसूं संचली सूझी रे॥ १४॥
जो कंत म्हारो घर छोड दिख्या लेवे, तो हूं पिण निकल सूं लारो रे।
ईसडी धारेनें रही मून साझी, समझी जाणी जंबूकुमारो रे।
जबूकुमर घण ने परचावे॥ १५॥

●

दुहा

हिवे नभसेना नार पाचमी, कहे कनकसेना ने एम।
तूं कहती कंत समझावसू, तो हिवे रही अबोली केम॥ १॥
मे बेठी भरोसे ताहं रे, पिण तोनेइ लीधी भरमाय।
हिवे हूं राखूं कंत नें घर मझे, भली भांत समझाय॥ २॥
हिवे नभसेना कहे जंबूकुमर नें, थे मति करो अधिको लोभ।
आठाई ने परणे परहरो, आ बात थाने नही सोभ॥ ३॥
अति लोभ कियासूं दुख हुवे, थे मानों हमारी बात।
नही तो सिद्धी बुद्धी ज्यूं पिछतावसो, तिणमे कूड नही तिल मात॥ ४॥
सिद्धी बुद्धी दोनूई कुण हुई, किण विध पछताई ताय।
त्यारी बात कहो थे मो कने, हूं सुणसूं चित्त लगाय॥ ५॥

ढाल : २५

[इन्द्र कहे नमीराय ने]

सिद्धी बुद्धी दलीद्रणी दोनूं जणी, त्यारे धन नही घर माह्यो रे।
ते पेट भरे राघणो करे, छाणा बीणे गांव बारे जायो रे।
बात सुणो सिद्धी ने बुद्धी तणी* ॥ १ ॥
ते छाणा बीणती बुद्धी ने मिल्यो, एक ब्राह्मण तिण ठामो रे।
तिणने दुखणी देखनें पूछियो, थारे घरे छे काई कामो रे॥ २ ॥
जब इण कही हकीगत तेहने, जब अनुकपा ब्राह्मण नें आई रे।
कहे सेवा करे विनायक तणी, ऊ तुष्ट होसी छ मासां मांही रे॥ ३ ॥
इम कहे ब्राह्मण चलतो रह्यो, बुद्धी आपणे घर मांयो रे।
हिवे सेवा करे गणेश तणी, छ मास बीता छे ताह्यो रे॥ ४ ॥
हिवे तूठो विनायक तेहनें, एकेकी मोहर नित नित आपे रे।
अनुक्रमे बुद्धी धनवत थई, तोही तृष्णा मूल न धापे रे॥ ५ ॥
हिवे सिद्धी मन माहे चिंतवे, इण धन किहा थी पायो रे।
इण लाधो के बटाउ नें मारियो, इणसूं हेत करे पूछू ताह्यो रे॥ ६ ॥
मन मे कपट इणरे घणो, वारे हेत करे पूछे ताह्यो रे।
थारा घर मे दोलत दीसे घणी, थे धन कठा थी पायो रे॥ ७ ॥
इणने वार वार पूछयो घणो, करे घणी नरमायो रे।
बुद्धी थी सरल हिया तणी, तिणने दियो भेद बतायो रे॥ ८ ॥
म्हे सेवा कीधी गणेश री, छ मास लगे हाथ जोडी रे।
जब तूठो गणेश कह्यो माग तू, आशा पूरू हिवे तोरी रे॥ ९ ॥
जब म्हें मोहर मागी एकेकी नित, तिण सूं दे छे गणेश देव मोनें रे।
इण विध म्हारे दोलत हुई, ते माड कही छे तोने रे॥ १० ॥
हिवे सिद्धी सुणे मन चिंतवे, हू पिण गणेश ने सेवू रे।
घणो रीझाय गणेश ने, दोय मोहरा नित नित लेवू रे॥ ११ ॥
हिवे करे छे सेवा गणेश री, शीस नामे हाथ जोडी रे।
तुठो छ मास पूरा हुवा, हिवे माग आशा पूरूं तोरी रे॥ १२ ॥
जब सिद्धी कहे देवो छो बुद्धी भणी, तिणसू विमणो मोने आपो रे।
हिवे दोय दोय मोहर देवे तेहनें, तो पिण न मिटी टापो रे॥ १३ ॥

---

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

इणरे पिण दोलत हुई देखनें, बुद्धी करे मन मे विचारी रे।
इण पिण दीसे गणेश नें पूजियो, मो विचेई इणरे रिध भारी रे॥ १४॥
तो हिवे मागूं गणेश नें पूजनें, सिद्धी विचे विमणो मालो रे।
एहवी करे विचारणा, आई गणेश कने चालो रे॥ १५॥
सेवा पूजा करेने इम कहे, म्हारा पूरा न सरिया काजो रे।
जब कहे गणेश तूं मागले, थारा पूरू मनोरथ आजो रे॥ १६॥
आप सिद्धी नें द्यो छो दिन प्रते, तिणसूं बिमणा मोने आयो रे।
जब गणेश मोहरां च्यार च्यार दिये, तो पिण न मिटी टापो रे॥ १७॥
वले सिद्धी विमणो मांग्यो बुद्धी थकी, वले विमणो मागे छे बुद्धी रे।
इम चढती चढती आगे गई, ए तृष्णा माहे विलूद्धी रे॥ १८॥
यारे लागो माहोमां ईसको, गणेश ने घणो सतायो रे।
हिवे बुद्धी मन माहे चिंतवे, इणनें आधी कियां जक थायो रे॥ १९॥
हिवे बुद्धी गणेश ने इम कहे, मोने तो कर देवो काणी रे।
जब एक आख फोडी एहनी, पाछी आई आपरे ठिकाणी रे॥ २०॥
बीजे दिन सिद्धी आयने इम कहे, बुद्धी थी मोने विमणो आपो रे।
जब आंख फोडी दोनूं एहनी, आंधी हुई अधिको कर टापो रे॥ २१॥
एक आंखे आंधी एक काणी हुई, त्या कीधो घणो पश्चातापो रे।
सिद्धी बुद्धी ज्यूं आप पिछताव सो, थे पिण करो छो अधिकी टापो रे। बात॥२२॥

दुहा

जंबूकुमर इम साभली, इणने पिण जाणी बुधवान।
तो समझावूं इणने खप करी, घालूं घट मे ग्यान॥ १॥
हिवे जंबूकुमर तिणनें कहे, थे बोल्यो मूसा वाय।
सिद्धी बुद्धी सरिखो मोने कह्यो, ते कूडो कुहेत लगाय॥ २॥
सिद्धी बुद्धी रे लागो ईसको, वले लागी धन री चाहि।
पिण धन री नही म्हारे चावना, म्हारे मुगत जावा री मन माहि॥ ३॥
कह्यो करू जो थांहरो, तो हूं अवनीत घोडा ज्यूं दुखियो थाय।
कह्यो न मानू जो तुम तणो, तो विनीत घोडा ज्यूं सुख पाय॥ ४॥
विनीत घोडो सुखियो किम हुवो, अवनीत दुखी हुवो केम।
यारी बात कहो थे मो कने, हू सुणसू धर कर प्रेम॥ ५॥

ढाल : २६

[रे प्राणी कर्म समों नहीं कोइ]

हिवे जंबूकुमर कहे नभसेना नें, एक जितसत्रू नामे राय।
तिण राजा रे दोय घोडा हुता, विनीत ने अवनीत ताय।
हे सुंदर तूं साभल चित्त ल्याय॥ १ ॥
तिण अविनीत घोडा ने चोरां काढ्यो, राते उजड चलियो जाय।
ते घास पाणी दाणा विन अटवी मे, दुखे दुखे मुंओ छे ताय॥ हे सु० २ ॥
तिण घोडा नें चोर ललचाय नें लेगा, जिम थें ललचावो मोय।
थें तो प्रत्यक्ष चोर सरीखी, पिण हूं तिण घोडा सरीखो न होय ॥ हे सु० ३ ॥
ते घोडो दुखी थको मूंओ अटवी मे, ते एकण भव मझार।
ज्यूं थें मोनें न्हाखो संसार अटवी मे, तठे मरू अनंती बार॥ हे सु० ४ ॥
बीजो घोडो ते सुविनीत हूंतो, तिणनें जिनदास श्रावक सिखायो।
तिणनें अनेक कष्ट दुख देवे कोई, ते उन्मार्ग कदेय न जायो॥ हे सु० ५ ॥
तिण घोडा री जस सो भाग सुण ने, अनेरे राजा तिणने कढायो।
चोरां आए तिणनें रात रो काढ्यो, पिण घोडो उन्मारग न जायो॥ हे सु० ६ ॥
चोरां हाव भाव कियो तिण घोडा सूं, वले विविध पणे ललचायो।
पिण सीखायो घोडो उन्मारग साह्यो, पग भर न सके ताह्यो॥ हे सु० ७ ॥
चोर काया होय छोड घोडा नें, ते पोहता आपरे ठिकाण।
प्रभाते घोडा ने मारग माहे दीठो, चोरां साथे न गयो जाण॥ हे सु० ८ ॥
तिण विनीत घोडा सू राजा रीझ्यो, तिणरी रातबादिक वधारी।
ते जीवे ज्या लगे सुखियो हुवो घोडो, सीख जिनदास श्रावक री धारी॥ हे सु० ९ ॥
जिम मोनें सुधर्म स्वामी सीखायो, पाप रूप उन्मारग ससार।
थें चोर सरीखी मोने आप मिली हो, नाखवा मोटी अटवी मझार॥ हे सु० १० ॥
हाव भाव मीठा वचन तुम्हारा, तिण माहे चित नही घालूं।
पाप रूपिए उन्मारग भूंडे, तिण पंथ किण विध चालूं॥ हे सु० ११ ॥
हूं सजम लेनें शिवपुर जासू, जन्म मरण रा फेरा टालूं।
काम भोग विष सरीखा जाणूं, त्यां साह्मो कदेय न भालूं॥ हे सु० १२ ॥
ए जंबूकुमर रो वचन सुणनें, समझी नभसेना नार।
जो जंबूकुमर घर छोड दिख्या ले, तो हू पिण लेसूं संजम भार।
त्यां साथे घर छोडे नें साध्वी थाय॥ हे सु० १३ ॥

इसडी मन में धारे रही अबोली, जब जाण्यो जंबूकुमार।
आपिण समझी दीसे नारी, पाछी बोली नही ईण बार ॥ हे सु० १४ ॥

●

दुहा

हिवे छूठी कनक श्री अस्त्री, कहे नभसेना नें एम।
तूं कहती कंत समभावसूं, तो हिवे रही अबोली केम ॥ १ ॥
थें कह्यो मान्यों दीसे कंत रो, तूं रही अबोली न्याय।
हिवे हूं हेत जुगत करे कंत नें, बैठा राखूं घर मांय ॥ २ ॥
हिवे कनकश्री कहे कंत नें, हठ छोड दो मारो स्वाम।
आठ अस्त्रां सूं सुख भोगवो, वले अधिकी मत राखो हाम ॥ ३ ॥
हठ पकडे सैंठो रह्यो, ब्राह्मण नो पुत्र गामोट।
लीधी टेक न छोडी तो दुखी हुवो, लोका पिण तिणनें कह्यो फोट ॥ ४ ॥
थें पिण हट नही छोडसो, तिण नी परे दुखिया होय।
जंबूकुमर कहे ऊ कुण हुवो, ते कहि बतावो मोय ॥ ५ ॥

ढाल : २७

[धूतारो नाचणो जी]

हिवे कहे कनकश्री नार, कुमरजी थें सुणो सही जी।
ब्राह्मण नों पुत्र मूढ गिंवार, ते ठोठ भण्यो नही जी।
थें तो छोडो कुमरजी हठ, कह्यो मानों मांहरो जी ॥ १ ॥
तिणरे पिता कियो छे काल, माता कहे पूत सूं जी।
हिवे तूं आपो संभाल, चालो घर सूत सूं जी ॥ थें० २ ॥
माता कहे तूं पंडित होय, अनेक विद्या भणी जी।
कारज लीधो न मूके सोय, आ रीत पंडित तणी जी ॥ थें० ३ ॥
तूं पिण लीधो काम म छोड, कह्यो कर मांहरो जी।
ओरां री मत कर तूं होड, ज्यूं चले घर तांहरो जी ॥ थें० ४ ॥
इणने संवली दीधी घणी सीख, पिण मूरख समझ्यो नही जी।
घर बारे निकली भरी वीख, चाल्यो मारग वही जी ॥ थें० ५ ॥
कुंभार नों गधो न्हाठो जाय, तिण हेलो मारियो जी।
इण गधा नें झाले राखो ताहि, ए बचन उण धारियो जी ॥ थें० ६ ॥
पकडतां आयो छे पूंछ हाथ, तिण काठो झालियो जी।
गधो मारे मूंढा ऊपर लात, दोड्यो जाए चालियो जी ॥ थें० ७ ॥

इण मन माहे कीधो विचार, माता मोने इम कह्यो जी।
तो इणने छोड़ू नही इण वार, ते पूंछ झाली रह्यो जी॥ थे० ८॥
इणरे लातां लागी अनेक, गाढी मुख ऊपरे जी।
तोही छोडी नही इण टेक, रह्यो हठ पकडे जी॥ थे० ९॥
पडिया मूढा माहिला दांत, होठां रे लोही झरे जी।
छाती माथे लागी भात भात, तिहा पिण लोही परे जी॥ थे० १०॥
जब लोका तिणने छोडाय, गधा सूं न्यारो कियो जी।
फिट फिट लोकां कियो ताहि, तूं क्यूं गयो घीसियो जी॥ थे० ११॥
जब ओ कहे लोकां आगे आम, माता मोने इम कह्यो जी।
तूं लीधो म छोडे काम, तिणसू झाली रह्यो जी॥ थे० १२॥
जब लोकां जाण्यो ओ पूरो मूढ, नही इणरे पारिखा जी।
ज्यू थे पिण झाले रह्या रूढ, दीसो तिण सारीखा जी॥ थे० १३॥
नही तो मानो हमारी वाय, ग्रहवासो जोगवो जी।
आठ अस्त्री मिली आय, त्यासूं सुख भोगवो जी॥ थे० १४॥
जो म्हारो कह्यो न मानो आप, तो दुखी होसो सही जी।
करो ला घणो पश्चाताप, सका तिणमे नही जी॥ थे० १५॥

दुहा

जबूकुमर इम साभली, इणने पिण जाणी बुधवान।
तो समझाउं इण नें खप करी, घालू घट मे ज्ञान॥ १॥
हिवे जबूकुमर कहे तेहने, थे बोल्यो मूसावाय।
थे गामोट सरीखो मोने कह्यो, ते कूडो कुहेत लगाय॥ २॥
गामोट मूढ मूरख थके, तिण झाली खोटी रूढ।
म्हे साची वस्तु सेठी ग्रही, हू तिण सरीखो नही मूढ॥ ३॥
जो कह्यो मानू हू तुम तणो, चारक ब्राह्मण ज्यूं दुखियो थाय।
कनकश्री कहे ते कुण हुवो, ते मोने दो आप सुणाय॥ ४॥

ढाल : २८

[भव जीवां तुम जिन धर्म ओलखो]

जबूकुमर कहे सुण कामणी, कुसस्थल हे हूंतो एक गाम।
तिहां क्षत्री वसतो एक मोटको, तिणरे हुंती ए घोडी तुरगणी नाम।ज०॥ १॥
एक चाकर राख्यो घोडी ऊपरे, धान वावे हे घोडी ने देवा तास।
पिण धान तो खाए ऊ चोर ने, घोडी ने हे न्हांखे निकेवल घास॥ २॥

घोडी तो मरनें वेश्या हुई, ओतो हुवो ए चाकर ब्राह्मण कुरूप।
गमतो न लागे केहने, शरीर भूडो ए नही कठेई सरूप ॥ ३ ॥
उण वेश्या देखीनें ओ मोहियो, काम भोग हे सेवण री तिणरे चाहि।
जब अरज करे वेश्या थकी, पिण वेश्या हे आदरे नही ताहि ॥ ४ ॥
जब ओ चाकर रह्यो वेश्या तणो, हीजरतां हे इणरा जाए दिन रात।
पिण वेश्या इणने मन करे वांछे नही, दुखी थको हे कर कर विलापात ॥ ५ ॥
उण आग्या लोपी क्षत्री तणी, घोडी नें ए दीधी खावा री अतराय।
हुओ विश्वासघाती दोयां तणो, चोरी दगो ए उण कीधो थो ताय ॥ ६ ॥
भारी कर्म उपाया तिण अवसरे, तिण कर्मां सूं ए विपत पडी छे ताहि।
वेश्या पिण इणने नही आदरे, तो ओर नारी ए कुण परणीजे ताहि ॥ ७ ॥
इण दुखे दुखे जन्म पूरो कियो, माथे ऋणो हे करतो डरियो नांहि।
पिण हूं कर्म ऋण करूं नही, हू रहसूं ए जिन आग्या मांहि ॥ ८ ॥
क्षत्री आग्या जिम श्री जिन आगन्यां, धान सरीखा हे थांरा काम नें भोग।
पिण हूं नही चाकर पुरुष सारिखो, मोनें मिलियो हे सदगुरु रो संजोग ॥ ९ ॥
चोर ऋणो कीधो तिण घोडी तणो, तो चाकर हुवो ए तिण वेश्या रो आय।
जो हूं कर्म ऋणो करूं थांने भोगवे, तो दुखियो ए भव भव माहे थाय ॥ १० ॥
हूं कह्यो मानूं जो तुम तणो, तो हूं पिण ए चोर जिम दुखी थाय।
तिण कारण संजम आदरू, तिणसूं जाय जाऊं हे वेगो मुगत रे माय ॥ ११ ॥
कनकश्री इम सांभले, तिणरे आयो हे वेराग मन माय।
जो जंबू कुमार घर छोडसी, त्यारे लारे हे हूं पिण साध्वी थाय।
कत विन रहिवो नही घर भलो ॥ १२ ॥
इसडी मन धार वेठी रही, तिण पाछो हे नही काढ्यो मुख वाय।
जब जंबूकुमर इम जाणियो, आ पिण समझे ने हो आइ दीसें ठाय।
जंबूकुमर अत्यत राजी हुवो ॥ १३ ॥

दुहा

हिवे सातमी रूपश्री अस्त्री, कहे कनकश्री ने एम।
तूं कहती कंत समझावसूं, तो रही अबोली केम ॥ १ ॥
म्हे तोने डाही जाणती, पिण थे पाछी न काढी वाय।
हिवे हूं कत समझायने, वेठा राखूं घर मांय ॥ २ ॥
हिवे रूपश्री कहे कंत ने, थे मानो हमारी बात।
नहीं तो पंखी जिम पिछतावसो, दुखी होवो ला साख्यात ॥ ३ ॥

जंबूकुमर कहे पंखियो, दुखी किण विध हुवो छे ताय।
तेहनी बात विवरा सुधे, मोने देवो ने सुणाय ॥ ४॥

ढाल : २६

[खटमलियो मेवासी । तथा नणदल बींदली]

हिवे कहे छे रूपश्री नार, सुणजो पखी रो विस्तार हो। कुमर वेरागी।
एक पर्वत अटवी मांय, तिहां बाघ रहे छे आय हो। कुमर वेरागी ॥ १ ॥
बाघ दिवसे सूए छे ताहि, तिणरो मुख फाटे निद्रा माहि हो।
सिंचाणो पखी तिहां आय, दाता विचलो मास खाय हो ॥ २ ॥
ओर पखियां वर्ज्यो ताय, पिण मानी नही मूर्खवाय हो।
नितरो तिन सिंचाणो आवे, दाता विचलो मास खावे हो ॥ ३ ॥
एक दिन मास खाए छे लाग, इतला माहे जागियो बाघ हो।
जब कोप चढ्यो तत्काल, गटको कर दीधो उगाल हो ॥ ४ ॥
ओर पंख्या री न मानी बात, तिणसू पामी अकाले घात हो।
सिंचाणो अति दुखी हूवो, बाघ रा मुख माहे मूओ हो ॥ ५ ॥
हू पिण वरजू इण वार, आप मतलो सजम भार हो।
साधपणो नही छे सोरो, आचार पालणो अति दोरो हो ॥ ६ ॥
बाघ मास नही छे सोहिलो, वले दाता विचलो तो अति दोहिलो।
बाघ मास जिम संजम जाणो, म्हारी बात हिया माहे आणो हो ॥ ७ ॥
थारी काया छे अति सुखमालो, तिणसू साधपणो किम पालो हो।
तिणसूं कह्यो मानो म्हारो आप, नही तो सिचाणा ज्यू करसो पश्चाताप हो ॥८॥

दुहा

जंबूकुमर इम साभली, इणने पिण जाणी घणी बुधवान।
तो खपकर समझाऊ एहनें, घालू घट मे ग्यान ॥ १ ॥
हिवे जबूकुमर कहे तेहने, थे बोल्यो मूसवाय।
सिंचाणा सरीखो मोने कह्यो, कूडो कुहेत लगाय ॥ २ ॥
सिंचाणो तो मास गृद्धो हुवो, पिण हू मास गृद्धी नही थाय।
हू सिंह जिम सजम पालने, जासूं मुगत रे माय ॥ ३ ॥
हू काचा मित्री किण विध करू, ते थोडा मे फिर जाय।
सुबुद्धी प्रधान काचा मित्री करे, काम पड्या पिछतायो ताय ॥ ४ ॥
रूपश्री कहे कत ने, सुबुद्धी प्रधान पिछतायो केम।
तिण री बात कहो आप मो कने, हू सुणसू धरकर प्रेम ॥ ५ ॥

ढाल : ३०

[धर्म दलाली चित करे]

हिवे जवूकुमर कहे नार ने, एक जितसत्रू नामे रायो जी।
सुवुद्धी प्रधान थो तेहने, ओ राज चलावे ताह्यो जी।
जंवूकुमर कहे नार ने* ॥ १ ॥
नित मित्री छे देही ने अस्त्री, त्याने नित नित माल खवावे जी।
पर्व मित्री तिणरे न्यातीला, त्याने वार तेवार जीमावे जी ॥२॥
तीजो मित्री सेठ तिण गांव मे, तिणसूं उजलो छे राम रामो जी।
वार तेंवार पर्व दिने, तिणसूं नावे कवडी रे कामो जी ॥३॥
घणो माल खावो देही ने अस्त्री, तिणसूं तो न्यातीलां खाधो थोड़ो जी।
सेठ कवड़ी न खाधी प्रधान री, राम राम पिण करे कदे मोड़ो जी ॥४॥
कदे राजा कोप्यो प्रधान थी, जव अस्त्री कने घरे आयो जी।
कहे राजा कोप्यो मो ऊपरे, तूं मोने घर मे राख छिपायो जी ॥५॥
जव अस्त्री कहे घर मे छाने रह्यां, पिण मोनें पूछे कोई आयो जी।
जव हूं न वताऊं जो तेहने, कदा आय देखे घर मांह्यो जी ॥६॥
तो मोनेई दुख हुवे अति घणो, मारे कूटे इज्जत माहरी पाड़े जी।
घन माल खोसे घर लूट ले, तिणसूं वेगा जावो थे बारे जी ॥७॥
तिणनें अस्त्री घर में राख्यो नही, ते न्यातीला रे घरे गयो ताह्यो जी।
छानेसो हेलो मारियो रात रो, न्यातीला जागे ऊभा आयो जी ॥८॥
त्यांने कहे राजा मोसूं कोपियो, रहवाने नही ठोर कायो जी।
तिणसूं डरतो इहां आवियो, द्वार खोले लो मांह्यो जी ॥९॥
हू छानो रहसूं थांरा घर मझे, थें मोने राखो घर मांह्यों जी।
जव ए कहे म्हे थांने छाने राखियां, म्हे पिण मार्‍या लूंट्या जायो जी ॥१०॥
खिण मात्र अठे उभा रहो मती, कोई जाणेला म्हारो घेखी ताह्यो जी।
आप वेगा पधारो इहां थकी, कोई म्हाने लफरो लगायो जी ॥११॥
ओ सगला न्यातीला तणे घरे, अरज घणी कीधी जायो जी।
पिण किणही न राख्यो घर मझे, इम हिज उत्तर दियो ताह्यो जी ॥१२॥
न्यातीलाई उत्तर दिया थकां, आमण दुमण पाछो चाल्यो जी।
उजलो राम राम एक सेठ थी, हिवे तिण दिश ने ओ हाल्यो जी ॥१३॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

हिवे आठमीं जयंतश्री अस्त्री, कहे जबूकुमर ने एम।
आ कथा मिले आ नही मिले, आ प्रतीत आवे केम ॥३॥
एक ब्राह्मण री डीकरी, कही राजा कनें साची बात।
पिण राजा मूल मानी नही, ज्यूं थे पिण न मानो तिल मात ॥४॥
उण साची ने राजा झूठी करी, ज्यूं थे पिण करो छों आम।
जब जंबूकुमर कहे किण विधे, मोने कहे बतावो ताम ॥५॥

ढाल : ३१

[सल्य कोई मत राखज्यो]

हिवे जयतश्री कहे कत नें, एक श्रीपुर नगर विख्यातो रे।
तिहां सागर नामे राजा हुतो, ते कथा सुणे नित प्रभातो रे।
जयंतश्री कहे कंत नें* ॥१॥
बार वार ब्राह्मण कथा कहे तिहां, एक ठोठ ब्राह्मण वसे ताह्यो रे।
कदे वारो आयो ब्राह्मण ठोठ रो, तिण ने चिंता हुई अथायो रे ॥२॥
तिणने वेटी कहे चिंता मत करो, हूं कथा कहिसूं राजा कनें जायो जी।
जब पिता कहे जा तूं उतावली, हिवे आ गई राजा पे चलायो जी ॥३॥
इणनें राजा आदर देई इम कहे, तूं मोने आछी कथा सुणायो रे।
जब आ हाथ जोड़ी कहे राय नें, एक चरित्र सुणो चित ल्यायो रे ॥४॥
म्हारे पिता म्हारी सगाई करी, म्हारो रूप सुणीनें कतो रे।
ते जोवा ने आयो म्हारे घरे, मोनें जोवे ऊभो एकतो रे ॥५॥
जब म्हे म्हारी बुध सूं अटकल्यो, ओ निश्चे म्हारो भरतारो जी।
तिणने जीमायो आछा भोजन करी, अशणादिक च्यारू आहारो जी ॥६॥
म्हारो रूप देखीने मोहियो, मोने कहे मोसूं भोगव भोगो जी।
जब म्हें कह्यो उतावल करो मती, कवारी ने ए कर्म अजोगो जी ॥७॥
जो अत्यंत भूख लागी घणी, तोही बे हाथा फेम जीमायो जी।
ज्यूं पाणीग्रहण कियां विना, आतो बात न थायो जी ॥८॥
जब उण मरण पाम्यों मोहे थके, मे गाड्यो पिछोकडे जायो जी।
जब राजा कहे आतो मानूं नही, आ थे कीधी छे बात बणायो जी ॥९॥
जब इण कह्यो राजा भणी, थे कथा घणी सुणी रायो जी।
उवे साची तो आपिण साची होसी, उवे भूठी तो आ पिण भूठी थायो जी ॥१०॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

हिवे राजा इणने किण विध कहे, म्हें कथा सुणी सर्व भूठी जी।
जब राजा कहे थे साची कही, हिवे जा तूं थारे घरे उठी जी ॥११॥
ज्यूं आप कथा कही तिके, जो त्यांनें तो आप साची जाणो जी।
तो थांरी पिण कथा साची जाणजो, निकेवल आपरी मत ताणो जी ॥१२॥
थांरी कथा तो भूठी कहूं, थारी कथा साची लेऊ मानो जी।
थांने भूठी कर थांनें साचा करू, इसडो नही म्हांनें ज्ञानो जी ॥१३॥
आमी सामी बाता कही ते मै सुणी, माहरो कह्यो मत उलागो जी।
घर हाण हासी हुवे लोक मे, बातां साटे घर मत भांगो जी ॥१४॥
हिवे कथा री बाता सगली छोड ने, बेठा रहो घर मांह्यो जी।
आठ अस्त्री सूं सुख भोगवो, आछी आय मिली जोगवायो जी ॥१५॥

दुहा

जंबूकुमर इम साभली, इणने पिण जाणी बुधवान।
तो खपकर समभाऊं एहने, घालू घट मे ज्ञान ॥१॥
हिवे जंबूकुमर कहे तेहने, थे कामभोग बताया मोय।
पिण हू ललितकुमर सरीखो नही, थारी बात न मानूं कोय ॥२॥
ललितकुमर ते कुण हुवो, उणमे विपत्ति पडी छे आय।
तिणरी कथा कहो आप मो कनें, हू सुणसू चित्त लगाय ॥३॥

ढाल : ३२

(रे जीव मोह अनुकम्पा न आणिये]

ललितकुमर थो सेठ रो डीकरो, तिणरे धन घणो घर माहि रे।
भोगी भमर थको फिरे शहर मे, तिणमें रूप घणो छे ताहिं रे।
जंबूकुमर कहे सुण कामणी* ॥१॥
एक दिवस सहजाई आयने, उभो राजा रा महलां हेठ रे।
भारी गहणा कपडा पहर्यां थका, जब पडियो राणी रे फेट रे ॥२॥
राणी मोही इणरो रूप देखने, इणरी हुई राणी रे चाहि रे।
फूलां री माला रे चीठी बाधने, इणरे न्हाखी गला रे माहि रे ॥३॥
चीठी माहे राणी इम लिख्यो, तू आव म्हारा महलां माय रे।
तोसूं सुख भोगवूं संसार ना, राजा तो गयो मूहम सिधाय रे ॥४॥
ओतो चीठी वांचे राजी हुवो, सानी कीधी राणी नें ताहि रे।
राणी तक देखे तिण नें बोलावियो, ओ गयो महला रे माहि रे ॥५॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

एकण सेज्जा ऊपर वेठा बेहूं, राणी नें ललितकुमार रे।
कटक में राजा ने प्रोहित कह्यो, आछो मुहूर्त नही इण बार रे॥६॥
एकर सूं पधारो महलां मझे, आछो मुहूर्त देसूं बताय रे।
जब पाछा कटक मे पधारजो, ज्यूं सर्व कारज सिध थाय रे॥७॥
इम साभलने राजा नीकल्यो, छडी असवारी आवे चलाय जी।
ललितकुमर राणी दोनूं जणा, देख डरप्या घणा मन माय जी॥८॥
ललितकुमर कहे राणी भणी, हिवे करवो कवण उपाय रे।
राजा आवे छे महलां पाधरो, मानें तों कठे देवों छिपाय रे॥९॥
राणी कहे महिला माहे दीसे नही, तिण मे थाने राखूं छिपाय रे।
कहो तो वारी करे उतार दूं, सेतखानां रा घर मांय रे॥१०॥
जब ओ कहे जेज करो मती, नेडो आयो दीसे छे राय रे।
हिवे राणी उतार्‍यो सताब सूं, सेतखानां रा घर मांय रे॥ ११॥
इतले आयो राजा महलां मझे, राणी विनो कियो ऊभी थाय रे।
छ मास राजा रह्यो तिहां, प्रोहित मुहूर्त न दियो ताय रे॥ जं० १२॥
ललितकुमर सेतखाने पड्यो, राणी न्हांखे तिहां एंठवाड रे।
ते एंठो खाए रहे तिहां, पिण नीकलवाने न लाभे द्वार रे॥ १३॥
मुहूर्त दियां राजा चढ्यो मूहम मे, कदे विरखा हुई छे ताय रे।
सेतखाना भरिया पाणी थकी, जब बारण खोल्या चाकर आय रे॥ १४॥
जब ललितकुमर बूहो बूहो, आय पडियो छे बाजार रे माँहि रे।
किणही जाय कह्यो तिणरे घरे, ललितकुमर बूहो आयो ताहि रे॥ १५॥
जब न्यायतीला आएनें ले गया. पोता रा निज घर माँहि रे।
पच पाणी जल करे घणा, आगा ज्यू चका कियो ताहि रे॥ १६॥
ललितकुमर विषय गृद्धी थके, तिण कीधी राणी सूं प्रीत रे।
तो ऊ पडियो सेतखाना घरे, तिणमे इण विध हुई कुपीत रे॥ १७॥
हूं कह्यो मानूं जो तुम तणो, तो हू मांडूं थांसूं प्रीत रे।
पछे पड जाऊं नरक निगोद मे, चिहूंगति माँहि होवूं फजीत रे॥जं० १८॥
हूं ललितकुमर सरिखो मूर्ख नही, थांरी मूल न मानूं बात रे।
चारित्र लेई जासूं मुगत मे, करे आठ कर्मां री घात रे॥ १९॥
वले ललितकुमर फिरतो थको, तिण महलां हेठो ऊभो आय।
फूलां री माला रे चिठी बाधने, राणी वले न्हाखी गला माय रे॥ २०॥
हिवे ललितकुमर महल मे, वले जाय के ऊ नही जाय रे।
जब अस्त्री कहे ऊ जाये नही, दुख देख लिया उण ताय रे॥ २१॥

ज्यूं म्हे पिण नरक दुख देखिया, सुणीसुधर्म स्वामी रा वेण रे।
हू पिण कह्यो न मानूं तुम तणो, म्हारा उघड्या अतर नेण रे॥ २२॥
पछे ललितकुमर सेठो रह्यो, नही मानी राणी री वाय रे।
तो कुशले खेमे घरे आवियो, न पड्यो सेतखाना रे माय रे॥ २३॥
ज्यूं हू पिण हिवे सेठो रहूं, नही मानूं तुमारी वाय रे।
तो हू पिण जाऊ मुगत मे पाधरो, सारो आवागमण मिटाय रे॥ २४॥
इम सुण ने आठमी अस्त्री, आतो समझ गई मन मांय रे।
जो जबूकुमर घर छोडसी, तो हू पिण साध्वी थाय रे।
इण वेरागे मन वालियो॥ २५॥
आ पिण अण बोली बेठी रही, गाढी बात हिया मे धार रे।
जब जंबूकुमर इम जाणियो, आ पिण समझी दीसे छे नार रे।
इण समता रस मन आणियो॥ २६॥

●

दुहा

जबूकुमर नी आठोई अस्त्री, समझी छे रूडी रीत।
त्या लाज शर्म छोडी नही, ए सुकुलीणी सुविनीत॥ १॥
वले चरचा त्यांसू करी घणी, कीधी जीवादिक री जाण।
काम भोग आठोई अस्त्री, जाणिया जहर समान॥ २॥
जंबूकुमर कहे आठां भणी, म्हारे दिख्या लेणी प्रभात।
जब ए कहे मे जेज क्यांने करां, म्हे पिण नीकलां थारे साथ॥ ३॥
जबूकुमर ने आठ अस्त्री, दिख्या ने त्यारी हुआ तिण ठाम।
हिवे आठ अस्त्री जबूकुमर ना, किण विध करे गुण ग्राम॥ ४॥

ढाल : ३३

[सोरठ। भरतजी भूप भया छो वेरागी]

हाथ जोडी आठूं अस्त्री बोली, थे न धरयो म्हासू मूल रागी।
परणीजेने विन भोगविया, सगली नारया ने साथे त्यागी।
रा कुमरजी अधिक भया छो वेरागी, रा कुमरजी मगन भया छो वेरागी॥ १॥
ए मन्दिर महलायत भारी, वले घर मे रिध अथागी।
वले मात पिता ने कुटुब कबीलो, त्याने पिण दीधा ऊभा त्यागी॥रा० कु० २॥
वले आठ आठ दात डायचे आया, वले वागा वेस नें पागी।
वले कोड निनाणू आया सोनइय्या, त्याने छोडे मुगति लिव लागी॥ ३॥

आठ आठ थांरे सासू सुसरा, वले सर्व सजन थांरा रागी।
त्यां सगलां ऊपर निजर न दीधी, सुरत करी तुम्हे आगी॥ ४॥
म्हे आठोंई अस्त्री कुंवारी हुती जब, आपसूं अतरंग प्रीत लागी।
हिवे वचन सुणे कुमर जी तुमनां, म्हे उठ खडी रही जागी॥ ५॥
म्हे काम भोग विषय रस सेवा, विल विल करवा लागी।
वले हाव भाव म्हे किया घणा पिण, थांरी रुचि ससार थी भागी॥ ६॥
म्हे मोह मतवाली आठोई कामण, थाने चलावण लागी।
थे अडिग रहे समझाई म्हांने, जब म्हे आठोई पगा आय लागी॥ ७॥
म्हे विषय वाही जब ऊंची उकसी, जब थे ज्ञान रूप नाल दागी।
वेराग रूप गोला आय लागा जब, भरम गयो म्हारो भागी॥ ८॥
म्हे म्हारा रूप नें अकल भरोसे, जब थांनें परणवा लागी।
म्हे जाण्यों थांनें घर में बेठा राखा, पिण थे उलटी समझाय आणी मागी॥ ९॥
थारो मन संजम लेवासूं एकंत, पिण म्हे तो दीधी घणी भागी।
तोही थे तो साधुपणो लेसो प्रभाते, म्हे पिण लेसां लारे लागी॥ १०॥
थें बाल ब्रह्मचारी सोले वर्ष रा, लीधो मुगत रो मागी।
कुटुंब कबीलो रह्यो सर्व झूरतो, पिण तत्क्षिण हुवा त्यागी॥ ११॥
संसार सुखां ऊपर निजर न दीधी, मुगत सुखां सूं धुन लागी।
थे सूरवीर ज्यूं मडिया साह्मां, जब मोह मेवासी गयो भागी॥ १२॥
थें विषय रस स्वाद मूल न चाख्यो, वले मूल न थया तिणरा रागी।
हाड मिंजा जिनधर्म सूं रंगी, जब रह्या गुरु वचने लागी॥ १३॥
केकां तो कुंवारी थकी त्यागी, केई परण भोगवनें त्यागी।
थे परणीजे नें भोगव्या विन त्यागी, आ कीधी घणी अथागी॥ १४॥
म्हांसूं उपगार कियो आप मोटो, तिणसूं म्हांरे पिण आ लिव लागी।
सगली अस्त्री सहित घर छोडे, ते विरला वड भागी॥ १५॥
म्हे चाला चरित्र अनेक किया थांसूं, वले लाज शर्म छोड आगी।
थे मुनिवर ज्यूं ध्यान लागे रह्या, थांरी प्रीत शिव रमणी सूं लागी॥ १६॥
जबूकुमर रा गुण करे मुख सूं, लुल लुल ने पाय लागी।
म्हांरो जन्म सुधारयो छे कुमर जी, तिण सूं आप अधिक सोभागी॥ १७॥
सूर संग्राम चढे वेरी हठावण, जब उपाड म्हांखे वागी।
ज्यूं आठ कर्म हणवा नें थे सूरा, थारी सुरत मुगत सूं लागी॥ रा कुमरजी० १८॥

दुहा

तिण काले ने तिण समे, प्रभव नामें चोर।
ते कुमर छे राजा तणो, तिणमे चोरी कुलछण खोर ॥ १ ॥
ते पांचसो परिवार सूं, करे चोर पल्ली मे विचार।
सुणे जबूकुमर रो डायचो, आयो राजगृही नगर मझार ॥ २ ॥
पाणी सू छाट्या ताला झर पड्या, माहे आयो खोल किंवाड।
इण हिज विध जंबूकुमर ना, आयो घर मझार ॥ ३ ॥
सूता सगला मिनखां भणी, दीधी निद्रा घोर।
सोनइया तणा गज ऊपरे, हलकार्‍या पाचसो चोर ॥ ४ ॥
चोर सगला सोनइया तणी, गाठ बाधी तिण ठाम।
जब जिन शासण रागी देव ना, वरत्या कुण परिणाम ॥ ५ ॥

ढाल : ३४

[सल्हा मारू ना गीत]

जंवूकमर हो घर छोडसी प्रभात, तिण रिण संपत्ति सगली जाणी कारवी जी।
ए सोनइया हो चोर लेजासी इण रात, तो कुशले जासी चोर पल्ली मे धारवी जी ॥ १ ॥
तो घणा बकसी हो मूढ मिथ्यात्वी लोक, कहसी जवूकुमर रे रिध नही कर्म मे जी।
हेला निंदा हो करे कहसी दिख्या मे दोख, वले दोष कहेसी जिनेश्वर धर्म मे जी ॥ २ ॥
तो हूं जाऊ हो चोरां ने थाभे राखू ठाम, तो सोनय्या ने चोर लेजाय सके नही जी।
ज्यूं हेला निंदा हो न हुवे धर्म री ताम, तो हू इसडो उपाय जाए करूं सही जी ॥ ३ ॥
इसडी धारे हो देवता सताव सूं आय, पग धरती रे चेहटाया चोरां तणा जी।
हाथ दीधा हो गाठडिया रे चेहटाय, थभा ज्यू ऊभा सगला दुखिया' घणा जी ॥ ४ ॥
प्रभवो कहे छे हो सगला चोरा ने एम, हिवे जेज करो छो किण कारणे जी।
जब चोर बोल्या हो पग चेहट्या धरती चाला केम, म्हासूं तो नीकल्यो न जाए वारणे जी ॥ ५ ॥
इम सांभल ने हो प्रभवे दीठा चोरा ने आय, मन माहे सोच फिकर चिंता करे जी।
सूरज ऊगा हो चोर चावा होसी ताय, रखे परिवार सगलो पूरो पडे जी ॥ ६ ॥
तो हू कहू हो चोरां ने छोडण रो उपाय, म्हारा चोरा ने धरती थामे सेठा किण किया जी।
जब ओ जोवे हो सगला ने दीठा निद्रा माय, ते घोर काढे छे त्यारा वाजे हिया जी ॥ ७ ॥
जब ऊचो जोयो हो प्रभवे चोर तिण वार, तिण दीवो वलतो दीठो महला मझे जी।
शब्द सुणी हो मिनखा रो तिण महल मझार, जब इण जवूकुमर जाण्यो जागतो अजे जी ॥ ८ ॥
इण थाम्या हो विद्या सूं म्हारा पाचसो चोर, इणमे करामात दीसे अति घणी जी।
तो इण आगे हो जाए नमूं शीस कर जोड, म्हारा पाचसो चोरां रो छूटको करवा भणी जी ॥ ९ ॥

म्हारी विद्या हो सीखाऊं इणने दोनूं सिरदार, पाछी एक विद्या सीखू इणरी थंभणी जी।
इसडी धारे हो प्रभवो चढियो महलां मझार, इणरे विद्या लेवण री हूस लागी घणी जी ॥ १० ॥

दुहा

आगे जंबूकुमर चरचा करे, ते सुणे आठोई नार।
प्रभवो चोर ऊभो तिहां, ते पिण सुणे तिण वार ॥ १ ॥
जंबूकुमर कहे सुण कामणी, ओ संसार असार।
पंखी विश्राम ज्यू आए मिल्या, पिण विछडता नही बार ॥ २ ॥
पंखी रात समे वृक्ष ऊपरे, आए भेला हुवे रात।
पछे पोह फाटे पगडो हुवे, जब उड जाए प्रभात ॥ ३ ॥
इण दिष्टंते जीव रे, भेला हुआ न्यातीला आय।
शुभ अशुभ बाध्या ते भोगवे, पंखी ज्यू विखर जाय ॥ ४ ॥
प्रभवो चोर तिण अवसरे, बोले वचन विलाप।
दोय विद्या ले तूं मांहरी, एक थभणी विद्या आप ॥ ५ ॥
जंबूकुमर कहे सुण प्रभवा, म्हारे विद्या सूं नही कोई काम।
हू प्रभाते घर छोडसूं, धन जाणे धूर तमाम ॥ ६ ॥
इम सुणनें प्रभवो मन चितवे, आ इचरजवाली बात।
ओ इतरी रिध छोड नीकले, हूं चोरे ल्याउं आथ ॥ ७ ॥
हिवे प्रभवो कहे जंबूकुमर ने, तूं कांय ले संजम भार।
सुख भोगव ससार नां, वले भोगव आठोंई नार ॥ ८ ॥
थारे इचरजकारी अस्त्री, ते अपछर रे उणियार।
वले रिध सपत थारे घणी, भोगवता नावे पार ॥ ९ ॥

ढाल : ३५

[म्हारा राजा ने धर्म सुणावजो]

हिवे वलतो जंबूकुमर कहे, भोग छे विषय विकार रे। प्रभवा।
वार अनंती म्हे भोगव्या, पिण तृप्त न हुवो लिगार रे। प्रभवा।
तूं चित्त लगायने सांभले ॥ १ ॥

ए सुख थोडानें दुख घणा, त्यामे रीझे कुण करी खत रे।
ए काम भोगने ऊपरे, सांभल एक दृष्टंत रे ॥प्र० २॥
एक मानवी जातो देशांतरे, घणा साथ रे माय रे।
साथ विछोहो पडियो तेहने, ते पडियो अटवी में जाय रे ॥ ३ ॥

ते मारग भूलो लाधे नही, भटके अटवी रे मांहि रे।
तिहां हाथी मदोन्मत्त तेहने, धायो मारण ताहि रे॥ ४ ॥
ते पुरुष न्हाठो हाथी देखने, हाथी केडे जाय रे।
जब दोड चढ्यो वड ऊपरे, हेठो कूओ छे ताय रे॥ ५ ॥
तिण झंपापात लीधो तिहां, पडतो कूआ माहि रे।
बड साखा आई पडतां हाथ मे, हिवे टिरे छे कूआ मे ताहि रे॥ ६ ॥
दोय अजगर तिण कूआ मझे, बेठा छे मुख फाड रे।
वले च्यार सापा मुख फाडियो, ते चिहु दिश कूआ मझार रे॥ ७ ॥
कालो धवलो दोय ऊंदरां, ते साखा काटे बेहूं पास रे।
तिहा हाथी आयो रीसे भर्यो, वड डाल हलावे तास रे॥ ८ ॥
वृक्ष ऊपर माखी मूहाल छे, माखी उड चेहटी आय रे।
ते चटका दे तिण पुरुष ने, जब अति वेदन हुवे ताय रे॥ ९ ॥
वले हाथी तिणने लेवा भणी, सूड ने नीची पसार रे।
एक मधु टपको उपर थी पड्यो, ते आयो मुख मझार रे॥ १० ॥
सुख एक मधु विंदवा तणो, तिणमे होय रह्यो गरक रे।
ए दुख सगला आण घेरिया, तिणने नही काई धरक रे॥ ११ ॥
तिहा विद्याधर विमाण बेठो थको, आय नीकल्यो तिण ठाम रे।
इणरी आपदा देख ऊभो रह्यो, इणने कहिवा लागो आम रे॥ १२ ॥
आव तूं वेस विमाण मे, तोने मेलू कहे तिण ठाम रे।
जब ओ कहे एक मधु विंदुओ, टिर रह्यो छे ताम रे॥ १३ ॥
इण मधु विंदुआ रो स्वाद चाखने, आऊं तुम्हारे लार रे।
ओ दूजोई टबको चाख्यां कहे, तीजो वले हुवो तयार रे॥ १४ ॥
तीन च्यार[°] विंदु चाख्या कहे, आऊं पूरा करे पांच रे।
ए सर्व दुख विसारे घालिया, रह्यो मधु टबका मे राच रे॥प्र० तूं० १५ ॥

●

दुहा

जब विद्याधर इम जाणियो, ओ कूडी करे छे बात।
मधु बिंदु माहे लपटे रह्यो, ते किम आवे म्हारी साथ॥ १ ॥
विद्याधर तो चलतो रह्यो, इणने टिरतो मेहली ताहि।
लारे साखा पूरी काटी ऊदरां, पड्यो अजगर रा मुख माहिं॥ २ ॥
इण टबका सुख रे कारणे, पूरण मन री खात।
तो पहिला पछे दुखी हुवो घणो, वले पामी अकाले मांत॥ ३ ॥

जंवू कहे सुण प्रभवा, ऊ डाहो के मूढ अयाण।
जब प्रभवो कहे ऊ तो मुर्खो, विवेक विकल समाण॥ ४॥
हिवे जवू कहे तूं साभले, ओ मेल छूं दृष्टंत।
ससार ना सुख कहु तो कने, ते सुणजे कर खत॥ ५॥

ढाल : ३६

[वीछडियां घणो०]

हिवे जबू कहे प्रभवा सुणे, तू अंतरग कीजे विचार। राजेश्वर।
उण पुरुष ज्यूं जीव नें जाणजे, अटवी जिम छे ससार। राजेश्वर।
जंवूकुमर कहे प्रभवा सुणे* ॥ १॥
हाथी जिम छे मरण केडे जीव रे, कूआ जिम तूं जन्म दुख जाण। रा०।
नरक तिर्यंच गति अजगर जिसी, क्रोधादिक च्यारू सर्प समान। रा०॥ २॥
वड साखा ज्यूं आऊखो जीव रो, ऊदरा ज्यूं छे दिवस ने रात।
ते काटे आऊखो जीव रो, ते दिन दिन ओछो थात॥ ३॥
माखी जिम व्याधि ने वेदना, वले ओर चडा चूंटी जाण।
घर माहे वसे तिण जीव रे, लागे अनेक विघ आण॥ ४॥
मधु टीपा समा सुख विपय तणा, विद्याधर सम सद्गुरु जाण।
विमाण सरीखो जिनधर्म छे, अविचल ठाम रूडो निर्वाण॥ ५॥
मधु विंदु सम सुख छे विषय तणा, इण संसार रे माय।
सुख इतरा ने दुख एता भोगवे, तिण वेलां मिले सद्गुरु आय॥ ६॥
तिणनें काढे भव कूआ थी खाचने, धर्म रूप विमाण बेसाण।
दुख सागला थी मूंकायने, पोहचावे रूडे ठाम निर्वाण॥ ७॥
एहवो सद्गुरु आण मिले, ते काढे छे भव कूआ रे बार।
जब नीकलवो के तिहा रहिवो सिरे, पाछो उत्तर दे तूं विचार॥ रा० ८॥
जब प्रभवो कहे एहवी विपत थी, नीकल जाणो बेग सताव।
जब जवू कहे प्रभव प्रते, तो साभल तू इणरो जाव। रा०। ९॥
ससार अटवी भूला जीवडा, ते जाणे नही धर्म विचार।
त्याने मारग वतावे सद्गुरु मोख रो, मेल देवे मुगत मझार॥ १०॥
ज्यूं मोने पिण सद्गुरु आण मिल्या, सुधर्मस्वामी मोटा अणगार।
त्यारा वचना सू मे पिण जाणियो, मधु विंदु सम सुख छे ससार॥ ११॥
एहवा सुख छोडने सद्गुरु कने, प्रभाते लेसू सजम भार।
संसार अटवी थी मारग पडे, वेगो जावा मुगत मझार॥ १२॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

मधु बिंदु सम सुख मे राचे रहू, तो पडूं नरक निगोद रे मांय।
काल अनतो दुख भोगवूं, तिणरो पार वेगो नही पाय ॥ १३ ॥
हिंसा भूठ चोरी जावक छोडने, कनक कामणी ने कर दूर।
पांच महाव्रत आदरे, कर्म करू चकचूर ॥ १४ ॥
घूघू ने सूर्य गमतो लागे नही, चोर ने चादणो नही सुहाय।
ज्यूं भारी कर्मा जीव तेहने, थी जिनधर्म नावें दाय। रा० ॥ जं० १५ ॥

●

दुहा

हिवे प्रभवो कहे जंबूकुमर नें, मात पितादिक सहु कोय।
त्यानें छोड चारित्र लिये, आगे आछी गति किम होय ॥ १ ॥
तोनें माईतां पाल मोटो कियो, रूडी रीत सू पोष।
त्यांने ऊभा छोडसी रोवता, ओ मोटो घणो छे दोप ॥ २ ॥
जंबूकुमर कहे सुण प्रभवा, मात पितादिक सहु जाण।
ए स्वार्थ रोवे छे आपरे, त्याने मोह मतवाला ज्यूं जाण ॥ ३ ॥
सगपण मात पिता तणा, हुआ अनती वार।
एक एकीका जीव सू, ते कहितां न आवे पार ॥ ४ ॥
ऊहिज जीव माता हुई, उहाई होय गई नार।
एक भव मे अठारे नाता हुआ, ते सुणजे विस्तार ॥ ५ ॥
मथुरापुर नगरी मझे, अक्वा वेश्या तिण माहिं।
कुबेर सेना तिणरे डीकरी, रूप घणो छे ताहि ॥ ६ ॥
भोगी पुरुप अनेक सूं, भोगवे विपय विकार।
गर्भ वध्यो छे तेहमे, वेलो जायो तिण वार ॥ ७ ॥
एक वेटो एक डावडी, दोनू देख्या मात।
कुवेरसेना ने अक्वा कहे, ते सुणजो विख्यात ॥ ८ ॥

ढाल : ३७

[स्वामी म्हारा राजा नें धर्म०]

जनम्यां थें डावडो डावडी, सो वधिया आछा न थाय। ए बाई।
शस्त्र विप नें जोगे करी, परभव दे तू पोहचाय। हे वाई।
आपां घर बालक सोभे नही ॥ १ ॥
विनय करीनें इम कहे, नीचो शीप नमाय। हो माजी।
अंगजात नों ऊपनां, मोसूं मार्या न जाय। हो माजी।
बाल हत्या करूं किण विधे ॥ २ ॥

पसु पंखी जात तिर्यंच नी, करे घणी रुखवाल। हो माजी।
अंगजात मारे नही, तो हूं किम मारूं बाल। हो माजी। बा०॥ ३ ॥
उदर ऊपना ए मांहरे, वासो लियो इहां आय हो। हो माजी।
माय विणासे बालक भणी, एतो मोटो अन्याय। हो माजी। बा० ॥ ४ ॥
तब वलती अक्वा इम कहे, तोसूं मारुया न जाय। ए बाई।
घाल कठंजरे एहने, दे तूं नदी मे वहाय। ए बाई॥ ५ ॥
पुन्न पाप जासी एहनें, मिटे आपा रो जंजाल। ए बाई।
इसडो कुल नहीं आपणों, ते मोटा कीजे पाल। ए बाई॥ ६ ॥
जिण घर बालक बालिका, मल मूत्र तिण ठाम। ए बाई।
अशुच कपडा हुवे मात रा, आपांरो नही काम। ए बाई॥ ७ ॥
बास दुर्गंघ हुवे अति घणी, बल पराक्रम घट जाय। ए बाई।
बालक नें मोटो किया, कुण पेसे घर मांय। ए बाई॥ ८ ॥
सोले सिणगार सभ्भां नव नवां, पर पुरुषां सूं काम। ए बाई।
किला करे विनोद सूं, ल्यां पेलां रा दाम। ए बाई। आ० ॥ ९ ॥

●

दुहा

वचन अक्वा रो मान ने, खाती बोलायो तिण वार।
घराय कठंजरो मोटको, पाणी न पेसे लिगार॥ १ ॥
मांहें बेसाण नें बीडियो, मूंदडी दीधी लार।
कुबेरदत्त नें कुबेरदत्ता, नाम लिख्यो तिण वार॥ २ ॥
जाया जिण उत्तर दियो, करली कीधी माय।
कांठे आय नदी तणे, बहती में दिया चलाय॥३॥

ढाल : ३८

[तिणनें साधू किम०]

बेन भाई दोनूं तणे, कोई नही आधारो रे।
बहता बहता आविया, सोरीपुर नगर मभ्कारो रे।
जोयजो रे चलगत कर्म री* ॥ १ ॥
दोय जणा दीठो दूर थी, पाणी मांसूं बारे लायो रे।
खोल कठंजरो जोवियो, दोय बालक देख्या तिण मांयो रे॥जो० २॥
एक एक दोनूं ले गया, आप आप रे घर मांहि रे।
मोटा हुआं सगाई करी, भाई ने बेन परणाई रे॥जो० ३॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

सुख भोगवे ससार ना, मन मे हर्षित थायो रे।
गृहवासो कियो बेन सू, तिणरी खबर न कायो रे॥जो० ४॥
रामत माडी दोनूं जणा, चोपड बीच पसारी रे।
दीठी पासो नाखता, मूंदडी एक उणियारी रे॥जो० ५॥
नाम बाच निरणो कियो, हुओ घणो मन फीकों रे।
चिंता हुई दोनू जणा, ए कारज नही नीको रे॥जो० ६॥

दुहा

कुबेरदत्त हिवे चितवे, हुवो कवण अन्याय।
हिवे मुझ इहा रहिवो नही, रहसू मथुरा जाय॥१॥
कर विचार तिहा थी चल्यो, मथुरापुर गयो तेह।
द्रव्य उपायो अति घणो, रहिवा लागो जेह॥२॥
धन जोवन मद सू भर्यो, मनमथ करे विकार।
काम भोग इच्छा थई, गयो वेश्या रे वार॥३॥
कुबेरसेना तिण अवसरे, कर सोले सिणगार।
घर मे तेडी इसडी कहे, तू म्हारो भरतार॥४॥
इम साभल वसियो तिहा, मांहो मां रक्त अपार।
सुख भोगवता बेंहू तणो, थयो पुत्र अवतार॥५॥
कुबेरदत्ता तिण अवसरे, जाण्यो अथिर संसार।
वेरागे मन वालियो, लीधो सजम भार॥६॥
रत्नावली कनकावली, तपसा कीधी अपार।
अवधिज्ञान तेहने थयो, देखे बहु ससार॥७॥
बधव ने माता तणो, पेख्यो बुरो आचार।
कुबेरदत्ता प्रतिबोधवा, आई नगर मझार॥८॥
कुबेरदत्ता तिण अवसरे, कुबेरसेना घर पास।
तिहा कण आय समोसर्या, मन मे बहुत हुलास॥९॥
वेश्या मन में चितवे, आई साध्वी गेह।
अम घर साधु पेसे नही, इचरज मोटो एह॥१०॥
अणाचार अम घर वसे, पर पुरुषां सूं नेह।
एक तजा दूजो ग्रहा, धिग जीतव्य छे एह॥११॥
आदरमान वेश्या दियो, उठ कर लागी पाय।
कुबेरसेना घर साध्वी, बेठी तिहां कने जाय॥१२॥

वेश्या नो बालक तबे, रोवा लागो ताम।
कुंवेरदत्ता अवसर लह्यो, हुलरावे कहे आय॥ १३॥

ढाल : ३९

[कपूर हुवे अति उजलो]

मा भाई ने प्रतिबोधवा रे, गावे गीत सधीर।
पहलो सगपण भाई तणो रे, जामण जायो वीर रे।
बधव रोतो रहे रे बाल, बीजा भवा रो लेखो नही रे।
इण भव रो विस्तार रे॥बं० १॥

बेटो कहू इण कारणे रे, म्हारा भरतार नो पूत।
आगे सगपण छे घणा रे, ते कर्मा करने बिगूत रे॥ब० २॥

तीजे देवर दीपतो रे, तिणरो सुण विस्तार।
छोटे भाई म्हारा कत नो रे, धिग थारो जमवार रे॥ ब० ३॥

भतीजो तू माहरो खरो रे, भाई घर जनम्यो आण।
भूआ आई थारे आंगणे रे, तूं सका मन मत आण रे॥ ब० ४॥

काको लागे तूं पांचमें रे, साभलजे चित्त ल्याय।
माता रो कंत पिता अछे रे, तिणरो तूं छोटो भाय रे॥ बं० ५॥

पोतो कहूं इण कारणे रे, म्हारी सोक रा पूत रो पूत।
छठो हालरियो तो भणी रे, ए कर्मा री बात अद्भूत रे॥ ब० ६॥

ए हालरिया जूजूवा रे, गाया ले ले नाम।
हूतो आई समझायवा रे, पिण नाई गावण रे काम रे॥ ब० ७॥

म्हारी माता ने वीरा तणो रे, विगड्यो दीठो काम।
मोटो अणाचार सेवियो रे, यांरी किण विध रहसी माम रे॥ बं० ८॥

ए छ नाता बालक सूं कह्या रे, वेश्या रे घर बार।
आगे पिण वले छे घणो रे, इण नाता रो विस्तार रे॥ ब० ९॥

●

दुहा

कुबेरदत्त तिण अवसरे, चमक्यो चित्त मझार।
बहन ओलख वदणा करी, पूछ करे निरधार॥ १॥

किम हालरिया गाविया, अठे आई किण काज।
एक बहन दूजी साधवी, तो बेठां आवे लाज॥ २॥

ढाल : ४०

[डाभ मूंजादिक नीं डोरी]

तूं तो लाजे मती म्हारा भाई, हूतो थारे कारण आई।
म्हारी शक म राखे काई, हूं बहन थारी मा जाई॥ १ ॥
तोने समझावण आई, थे कीधी खोटी कमाई।
साभल तू म्हारी वाता, आ तो वेश्या थारी माता॥ २ ॥
हिवे थारे म्हारे छ नाता, ते साभलजे विख्याता।
आपा रे जन्म री दाता, दोयां रे एकज माता॥ ३ ॥
इण कारणे म्हारे भाई, म्हारी शंका म आणे काई।
पहलो सगपण रे वीरा, हिवे बीजो सुणजे सधीरा॥ ४ ॥
बीजे सगपण हू घरणी, थारा सात फेरा नी परणी।
तूं तो म्हारो भरतारो, पूर्वली वात चीतारो॥ ५ ॥
तीजे सगपण म्हारो बाप, थे मोटो सेव्यो पाप।
घर मे घाली म्हारी मायो, थारो मूहढो दीठो न जायो॥ ६ ॥
वले साभल तूं विरतत, तो नें वीर कहू के कत।
बाप छे तूं म्हारा काका रो, चोथो सगपण दादा रो॥ ७ ॥
पाचमे वले पूत कहायो, म्हारी सोकज तोने जायो।
तू तो कर्मा रो वायो, इण वेश्या रे घरे आयो॥ ८ ॥
छठे छे तूं म्हारे सुसरो, ते बाप म्हारा देवर रो।
एतो नाता कह्या सर्व भाई, ते एहवी कीधी कमाई॥ ९ ॥
ते कर्मज कीधा भारी, थारो किम हुवेला निस्तारी।
संसार ना सुख छे एह, हिवे छोड तू इणसू नेह॥ १० ॥
ए तो नाता कह्या अनेक, सुण बधविया विशेख।
तू तो राख धर्म सूं प्रेम, सद्गति पामेलो एम॥ ११ ॥

दुहा

वहन तणी वाणी सुणे, रोवे बागा पार।
मे मानव भव क्यू लह्यो, धिग म्हारो जमवार॥ १ ॥
जो धरती विवर दिए, तो कूद पडू नरक माय।
मे अनर्थ कीधो अति घणो, कह्यो कठा लग जाय॥ २ ॥
सोग संताप घणो थयो, सुण पूर्व विरतत।
वेश्या आई तिण अवसरे, कांय विलखाणा कंत॥ ३ ॥

वतलायो बोले नही, साह्मो जोयो न जाय।
आ जाणे म्हारो भरतार छे, पिण प्रत्यक्ष म्हारी माय॥ ४॥
साध्वी बोले तिण अवसरे, नहीं थारो भरतार।
हूं बेटी ओ डीकरो, सांभल तूं विस्तार॥ ५॥

ढाल : ४१

[शील कहे जग हूं बडो]

माता छे तूं मांहरे, दोयां ने थें जाया ए।
ऊ दिन याद चितार ले, कठंजरे घाल बहाया रे।
जोयजो रे काम विटंबणा* ॥ १॥
दोयां रे पाने पड्यो, कठंजरो देख दोड्या वेगा ए।
वहन भाई दोनूं भणी, जूदा जूदा लेगा ए ॥जो०२॥
कोइक जोग इसो मिल्यो, मा बापां कीधो परण्यो ए।
म्हांनें तो ठीक न का पडी, म्हारो भाईज मोनें परण्यो ए॥ ३॥
संसार नां सुख भोगतां, ठीक पडी तरे पिछतायो ए।
मूंदडी बांच नें चमकियो, ओ तो मूंढो लेनें धायो ए॥ ४॥
म्हें तो लीधो साधपणो, ओ थारे घर वसियो ए।
म्हारो वीरो थारो डीकरो, तो सूं आयनें फसियो ए॥ ५॥
तिण कारण माता अछे, ओ पेलो सगपण जाणू ए।
बीजे दादी इण विधे, म्हारा काका री माता पिछाणू ए॥ ६॥
तीजे तूं म्हारे भोजाई, म्हारा भाई रे घर नारो ए।
एहवो अकारज तें कियो, धिग थारो जमवारो ए॥ ७॥
चोथे बहू इण कारणे, सोक रा बेटा रे घर आई ए।
कहतां लाज आणे मती, तोने खबर न काई ए॥ ८॥
सासू कहूं वले पांचमें, म्हारा भरतार नी तूं मायो ए।
बडो अकारज तें कियो, तोनें कह्यो किसी पर जायो ए॥ ९॥
छठे सगपण तूं म्हारे सोक छे, भरतार नी दूजी कामण ए।
इण परे तोनें देखनें, म्हारो मन हुवो आमण दूमण ए॥ १०॥
बात सुणे बेटी तणी, ठलके आंसूडा आया ए।
मन में डरपी अति घणी, संसार नी काची माया ए॥ ११॥
हूं पापण छूं मोटकी, मै विषय रूपियो विष पीधो रे।
अंगजात रो ऊपनो, तिणसं कुण अकारज कीधो रे॥ १२॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

मा बेटे दोनू जणा, लीधो सजम भारो रे।
कर्म तोडी सद्गति गया, कीधो खेवो पारो रे॥ १३॥
जंबू कहे सुण प्रभवा, ससार नो एह स्वरूपो रे।
इण माहे जे राचसी, ते जाय पडसी अंध कूपो रे॥ १४॥
जात जोन बाकी रही नही, कुल थानक रह्यो नही लारो रे।
सगले ठामे मूंओ ने जन्मियो, अनंत अनती बारो रे॥ ज १५॥
इसडा नाता जीव आपणे, कीधा अनंती बारो रे।
हिवे मोह किसो इण कुटुब नो, त्यामे मूल नही तंत सारो रे॥ १६॥
एक सार तो धर्म जिनराज रो, तिण कीधां पामे आणंदो रे।
शिव सुख पामे सास्वता, इम भाख गया छे वीर जिनंदो रे॥ १७॥
इम जाणी नें प्रभवा, छोड दे विषय विकारो रे।
साधपणो सुध पालनें, कर दे खेवो पारो रे॥जं० १८॥

●

दुहा

हिवे प्रभवो कहे जंबू कुमर ने, ससार मांहे तंत सार।
घर सुदर सार पुत्र विना, निरर्थक छे जमवार॥ १॥
पुत्र नही कोई ताहरे, कुण राखसी तांहरो नाम।
पुत्र बिना लक्ष्मी महलायतां, ए सगला छे बेकाम॥ २॥
पुत्र बिना घर सूनो अछे, दिश सूनी विन बधव जाण।
हृदय सूनो मूर्ख हुवे, दलिद्री सर्व सून पिछाण॥ ३॥
तिण कारण पुत्र हुवां पछे, लीजे संजम भार।
ज्यूं सूनो न हुवे घर ताहरो, तूं अंतर मांहि विचार॥ ४॥
पुत्रा बिना पिंड कुण सारसी, पाणी कुण देसी लार।
श्राद्ध करसी कुग तांहरो, फूल कुण घाले गंगा मझार॥ ५॥
अपुत्रिया ने सद्गति नही, कह्यो पुराण मझार।
तिणसूं एक पुत्र हुवां पछे, छोड दीजे संसार॥ ६॥
हिवे जबू कहे सुण प्रभवा, इम भूला अग्यानी भर्म।
बाप बेटा सहु आप आपना, कीधा भुगते कर्म॥ ७॥
पुत्र करे श्राद्ध पिता तणो, ते पिता न पामे तिल मात।
तिण ऊपर कहूं छूं तो कने, महेसरदत्त नी बात॥ ८॥

ढाल : ४२

[जगत गुरु त्रिशलानंदन वीर]

तिण काले नें तिण समे, विजयपुर नगर सुठाम।
तिहां महेसरदत्त ववहारियो, तिणरा भद्रीक छे परिणाम। प्रभवा।
सुणजे पुत्र नो स्वरूप* ॥ १ ॥
तिणरो बाप मरे भेसो हुओ, मा मरे कुती हुई जाय। प्रभवा।
घर नारी ओर पुरुष सूं जी, करवा लागी अन्याय ॥ २ ॥
ते निजरां देख ववहारियो जी, चिंतवे चित्त मझार।
इणरे प्रीति लागी ओर पुरुष सूं, रखे मोनें जीवां दे मार ॥ ३ ॥
तो विश्वास किसो इण नार नों, आतो दीसे अजोग साख्यात।
अस्त्री मांहें तो सदा हुवे जी, सहजाई दोषण सात ॥ ४ ॥
नित प्रीति नही निज कंत सूं जी, करे विना विचास्यो काम।
साता नी अभिलाष हुवे घणी, वले मूर्खपणो हुवे ताम ॥ ५ ॥
वले लोभ घणो हुवे एहने जी, असुच वहे दिनरात।
अस्त्री निर्दय हुवे घणी, सके नही करती घात ॥ ६ ॥
ए सात दोष सहजा हुवे तो, आतो छे निरलजी नार।
तो इणरो जार पुरुष मास्या विना, मोने जक नही पडे लिगार ॥ ७ ॥
इणने मारण री मन धारने, छल छिद्र जोवे दिनरात।
कदे भोग भोगवतो देखने, तिणरी तिण ठामे कीधी घात ॥ ८ ॥
जार पुरुष अवगुण देख आपरा, आपो निंद्यो सुध परिणाम।
मर ऊपनो तिणहिज जोन मे, निज पुत्र हुओ तिण ठाम ॥ ९ ॥
अनुक्रमें जन्म हुवो तेहनो, जब घणी हर्षित हुई मात।
किया महोच्छव तेहनां, वले धन खरच्यो बहु तात ॥ १० ॥
दिन दिन पुत्र मोटो हुवे जब, हर्षे महेसर आप।
जाणे छे पुत्र आपरो, पिण उणरो तो ऊहिज बाप ॥ ११ ॥
महेसरदत्त तिण नार नो, ए दोषण ढांक्यो ताम।
इणने ओलंभो पिण दीधो नही, राख्या समतां परिणाम ॥ १२ ॥
जब अस्त्री मन माहे जाणियो, म्हारो उत्तम दीसे भरतार।
मोने प्रत्यक्ष जाणी कुलक्षणी, पिण न कस्यो म्हारो उघाड ॥ १३ ॥
तिणसूं भाव भक्ति करे घणी, तिण मोह लियो भरतार।
जब महेसरदत्त उण बात नें जी, घाले दीधी विसार ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

हिवे महेसरदत्त तिण पूतने जी, पाले पोपे रूडी रीत।
रमावे खेलावे उछरंग सूं, वले अंतरग तिणसूं प्रीत ॥ १५ ॥
बाप महेसरदत्त नो जी, भेसो हुवो छोड प्राण।
कदे श्राद्ध आयो पिता तणो जव, उण भेंसा नें मास्त्रो पाणी आण ॥ १६ ॥
उणरी मा मर कुत्ती हुई तिहां, भेसा रा हाड चिगल्या आय।
मारी लाठी सू तेहने, जब कडियां भागे गई ताय ॥ १७ ॥
तिहां ग्यानी पुरुष जातां देखियो, इणरा घर रो एह अकाज।
श्लोक कह्यो माथो धूणनें, इणनें प्रतिवोधण रे काज ॥ १८ ॥
देखो बेरी ने खोले बेसारियो, पिता री कोधी छे घात।
वले लकडी सूं कडिया भागने, लूली कीधी छ मात ॥ १९ ॥
वले लोकां आगे इम कहे, आज कियो पिता रो श्राद्ध।
जाणे पूरो विनीत मा वाप रो, पिण परमार्थ नही लाध ॥ २० ॥
ए अजाणपणो इण जीव रे, ते मोह तणी मतवाल।
जव महेसर तिण अवसरे, पूछा करे तिण काल ॥ २१ ॥
आप बात कांई कीधी तिहा, ते मोने खबर न काय।
हिवे किरपा करे मो ऊपरे, तो मोने दो सर्व सुणाय ॥ २२ ॥
जव साधु महेसरदत्त ने, सगलोई कह्यो संवध।
इसरो विरतंत देखे ताहरो, तोनें जाण लियो मोह अध ॥ २३ ॥
जव महेसर वलतो कहे, इम किम मानू मुनिराय।
साचो सहलाण कह्यो थें मो भणी, तो म्हारे संका रहे नही काय ॥ २४ ॥
जव साधु कहे थारी माय रे, हूतो लोभ अथाय।
जो घर मे जावा दे एहने तो, धन ऊपर उभी रहे जाय ॥ प्र० २५ ॥

दुहा

जव महेसरदत्त कुत्ती भणी, आवा दीधी घर माय।
ते कुत्ती लोभ संज्ञा थकी, धन ऊपर ऊभी आय ॥ १ ॥
जव महेसरदत्त तिण अवसरे, उवा जागा सभाली ताय।
तिहा सोना तणा चरू नीकल्या, साध री जाणी सत वाय ॥ २ ॥
जव छोडे पिता रा श्राद्ध ने, आय लागो सद्गुरु पाय।
मोनें धर्म कहो जिन भाषियो, हूं सुणसू चित्त लगाय ॥ ३ ॥
जव धर्म कथा साधु कही, ते सुणने हर्षित थाय।
श्रावक ना व्रत आदस्या, अस्त्री पिण श्राविका हुई ताय ॥ ४ ॥

त्यां श्रावक नां व्रत पालने, गया देवलोक मझार।
हिवे जंबू कहे सुण प्रभवा, इसडो लोकां माहे अंधार ॥ ५ ॥
इण विध पिताने तृप्त करे, इण विध करे छे श्राद्ध।
लोक पडिया छे मोह मिथ्यात में, तिणरो परमार्थ कोई लाध ॥ ६ ॥
प्रभवो सुण प्रतिबूझियो, जाण्यो अथिर ससार।
वेरागे मन वालने, हुओ सयम नें तय्यार ॥ ७ ॥

ढाल : ४३

[बारी हूं थां पर साहिबा]

हिवे प्रभवो मन माहे चितवे, मुझ अवगुण अनेक।
दुकृत म्हे कीधा घणा, सुकृत नही कियो एक ॥ १ ॥
म्हे राजा रे घर जन्म लियो, पिण संगत कीधी खोटी।
चोरी कुलंछण सीखियो, आ पिण खामी मोटी ॥ २ ॥
चोरी कर धन लेई पारको, ते म्हे पोष्या चोर।
दाह देई पर जीव रे, बांध्या कर्म कठोर ॥ ३ ॥
इणने इतरी रिध आए मिली, पिण धूर सम जाणी।
ते छोडतां विलंब करे नही, एतो उत्तम प्राणी ॥ ४ ॥
इणनें आठ कामण इसडी मिली, ते अपछर उणियार।
त्यांने परणीजेने परिहरे, विन भोगवियां नार ॥ ५ ॥
आप तरुण तरुणी घरे, वय चढती छे यांरी।
भर जोवन मे व्रत आदरे, मुगत सूं दृष्टी त्यांरी ॥ ६ ॥
इसडो मानव इण जगत मे, म्हे तो नयणा न दीठो।
सोम निजर सीतल अग छे, मुझने लागे मीठो ॥ ७ ॥
हूं जाणतो सुख मोने घणा, पिण तृणा सम जाण।
अनोपम एक धर्म विना, जीतव्य अप्रमाण ॥ ८ ॥
जंबूकुमर तणा सुख देखतां, म्हारा सुख अल्पमात।
ओ इसडाई सुख छोड नीकले, आ इचरज वाली बात ॥ ९ ॥
मोनें पिण इणरो वेराग देखने, खारो लागो संसार।
जंबूकुमर साथे लगो, लेऊं संजम भार ॥ १० ॥
ओ सीह जिम आगल सच रे, हूं पिण इणरी लार।
कामभोग सर्व छाडने, कर देवू खेवो पार ॥ ११ ॥

दुहा

हिवे प्रभवो कहे जबूकुमर ने, थे बात कही ते सर्व ठीक।
जितरी कही मो आगले, ते सगली छे तहतीक ॥ १ ॥
थें सुधर्म स्वामी री वाणी सुणी, जाण्यो अथिर ससार।
ते हिज वचन मो आगल कह्यो, विवरा सुध विचार ॥ २ ॥
जब जंबूकुमर प्रभवा प्रते, कह्यो जीवादिक नो स्वरूप।
प्रभवे सुणने सरदह्या, आयो ज्ञान अनूप ॥ ३ ॥
हिवे हूं पिण थां लारे लगो, लेसू संजम भार।
हूं घरे पिण जाउं नही, थें वेगा होय जावो तयार ॥ ४ ॥
महलां थकी हेठो उतर्‌यो, प्रभवो चोर तिण बार।
आयो पांच सो चोरा कने, कहिवा लागो विचार ॥ ५ ॥

ढाल : ४४

[वीनती मानो ज्यू सेवग सुख पावे]

हूं जबूकुमर नां वचन सुणेने, अतरग माहे भीनों रे।
मुगत तणा सुख जाण्या अनोपम, ससार दुखा सूं वीनों रे।
प्रभवो चोर चोरा ने समझावे ॥ १ ॥
जबूकुमर दिख्या लेसी प्रभाते, तिणने ससार लागो छे खारो रे।
हू पिण दिख्या लेसू तिण लारे, थे ढील म जाणो लिगारो रे ॥ प्र० २ ॥
आपे चोरी कर २ परधन माल ल्याया, दाह घणा रे दीधी रे।
ते धन तो न्यातीलां मिल सगला खाधो, पाप री पांती किणही न लीधी रे ॥ प्र० ३ ॥
मोह अध जीव हुआ मतवाला, त्याने न्यातीलां मीठा लागे रे।
अनत जन्ममरण दुखदायक, ते म्हे सुणिया जंबूकुमर आगे रे ॥ प्र० ४ ॥
ओ मेलो मिल्यो ते वीछुड जासी, ससार नी काची माया रे।
हाथ घसंता रह्या न्यातीला, यां रोय रोय नेण गमाया रे ॥ प्र० ५ ॥
नित नित उठ रोवे प्रभाते, याद आवे ज्यूं फाटे छाती रे।
त्यांने सपनां माहे पिण मेलो न दीधो, सुख दुख री न पूछी वाती रे ॥ प्र० ६ ॥
देवगुरु धर्म रत्न तीनूई, याने रूडी रीत ओळखाया रे।
वले जीवादिक पदार्थ नव रा, भिन्न भिन्न भेद बताया रे ॥ प्र० ७ ॥
पाचसो चोर प्रभवा रा वचन सुणेने, वेराग सगलां रे ई आयो रे।
दिख्या लेवारी सगलां मनधारी, ज्ञान अपूर्व पायो रे ॥ प्र० ८ ॥

पांचसो चोर प्रभवा चोर आगे, सगला बोले जोडी हाथो रे।
जो थें जंबूकुमर साथे घर छोडो, तो म्हे पिण घर छोडां थांरी साथो रे॥ प्र० ९ ॥
थें ठाकर म्हे चाकर हुंता, म्हे रहता थांसूं भेला रे।
थें चारित्र लो तो म्हे पिण लेसां, म्हे किम चूका आ वेलां रे॥ प्र०१० ॥
प्रभवो चोर पांच सो चोरां सूं, हुवो संयम ने तयारो रे।
त्यां मुगत तणा सुख शाश्वता जाण्या, अथिर जाण्यो ससारो रे॥ प्र० ११ ॥

●

दुहा

जंबूकुमर आठोंई अस्त्री भणी, हेत जुगत करे समझाय।
वले प्रभवा चोर ने समझायने, आण्यो मारग ठाय॥ १ ॥
हिवे जंवूकुमर महलां थकी उतर्‌यो, पोह ऊगते सूर।
आयो बेग सताब सूं, मात पिता री हजूर॥ २ ॥
कहे वचन मानें म्हें तुम तणो, परण्यों आठोंई नार।
हिवे आज्ञा दीजे मो भणी, हूं लेसूं संजम भार॥ ३ ॥
विरत विहूणी जे घडी, निश्चे निर्फल जाय।
मन उठ्यो छे मांहरो, हिवे मत दीजो अंतराय॥ ४ ॥
ए वचन सुणे जंबूकुमर नों, रोवे भर भर नेण।
वले विलखा वेदल हुवे घणा, ते किणविध बोले वेण॥ ५ ॥

ढाल : ४५

[धना आज निहेजो रे कांय]

ए आठोई कामणी, दीसे अपछर रे उणियार।
यांने परणीजेनें तूं परहरे, ए किम काढेली जमवार। जंबू तूं मान रे।
जाया इम किम दीजे रे छेह॥१॥
ए दुखणी हीसी घणी, तो विन सारी विलखी थाय।
रवि आथमतां जिम हुवे, जंबू वदन कमल ज्यूं कुमलाय।जं०॥२॥
ए आठोई अस्त्री तेहसूं, तूं सुख भोगवले संसार।
दिन पाछा पडिया पछे, तूंतो लीजे संजम भार।जं०॥३॥
जे भामण सूं भीना रहे, माता न करे ते धर्म विचार।
पिछतावो ज्यांनें पडे, ते यूही हारे जमवार। माता तुम्हे मानलो हो।
माता हूं लेसूं हो संजम भार॥४॥
मत हीणा जे मानवी, ते मिथ्यामत मे भरपूर।
रमणी रूप मे ते रमें, ज्यांसूं दुर्गति नही छे दूर।मा० ॥५॥

ए आठोई अस्त्री, त्याने समभाई म्हे इण रात।
त्यां श्री जिनधर्म ओलख्यो, ते दिख्या लेसी मो साथ।मा०॥ ६ ॥
तूं मुझ आवा लाकडी, तू हीज मुझ जीवन प्राण।
तुझ विन जग सूनो अछे, तूं भावे जाण म जाण।जं०॥ ७ ॥
तोने पाले पोपे मोटो कियो, त्याने इम किम दीजे छिटकाय।
माता पिता मेले जाए रोवता, त्यांरी दया नावे दिल माय।जं० ॥ ८॥
एक लोटी पाणी पीऊ, तिणमे मात पितां छे अनंत।
हिवे दया सगला री पालसूं, सारा आत्म समा गिणत।मा० ॥ ९॥
श्वास रो विश्वास मोने नही, माता खिण माहे रग विरग।
तो रति किम पामू संसार मे, तिणसूं गयो मन भग। मा०॥ १०॥
हिवे मोह न कीजे मांहरो, माता मोह सूं बंधे पाप कर्म।
थें आड डोड मे क्यूं पडो, थें पिण पालो साधु रो धर्म।मा०॥ ११॥
ए सावपणो सुध पालिया, माता कटे छे कर्मा रा जाल।
शिव रमणी वेगी वरे, वले मिट जाए सर्व जजाल।मा०॥ १२॥
ए काचो सगपण ससार नो, माता काचो स्नेह छे एह।
मो साथेई सजम आदरो, करो अविचल धर्म स्नेह।मा०॥ १३॥

●

दुहा

माता पिता जबूकुमर नां, सांभल्यो जिनधर्म सार।
वेराग आयो घट भितरे, जाण्यो अथिर संसार॥ १॥
म्हारो जबूकुमर दिख्या लिये, म्हे पिण लेसा लार।
काल कितोएक जीवणो, हिवे कर दा खेवो पार॥ २॥
इमहिज *आठ अस्त्र्यां तणा, माता पिता तिण वार।
म्हारी पुत्री जमाई दिख्या लिये, तो म्हेई लां संजम भार॥ ३॥
आठ अस्त्री ने जंबूकुमर नां, मा वाप सहित सतावीस।
वले पाच सो चोर ने प्रभवो, ए पांचसो ने अठावीस॥ ४॥
ए पाच सो अठावीसा तणा, किया दिख्या महोच्छव पूर।
धन खरचे तिहा अति घणो, बाजंत्र बाजे रह्या छे तूर॥ ५॥
आय ऊभा सुधर्मस्वामी कने, हिवे बोले जोडी हाथ।
काढो जन्ममरण री लाय थी, म्हाने दिख्या दो स्वामीनाथ॥ ६॥
पाच सो अठावीस भणी, दिख्या दीधी तिण ठाम।
आचार सीखाय परिपक किया, त्यां सगला रा सुध परिणाम॥ ७॥

ढाल : ४६

[श्री सीमंधर साहिब०]

जंबूकुमर चारित्र लियो, पांच सो ने सतावीस लार हो। मुनिंद।
त्यां सीह जिम सजम आदस्यो, ते पाले छे निरतीचार हो। मुनिंद।
धिन धिन जंबु स्वाम ने* ॥ १ ॥
एक जंबूकुमर ने समझाविया, हुवो घणो उपगार हो। मु०।
हुई वधोतर जिनधर्म री, वले हुवो घणा रो उधार हो। मुनिंद ॥ २॥
किणही भारीकर्मां ने चारित्र दिया, हुवे छे घणो इज बिगाड़ हो। मु०।
वले हेला हुवे जिनधर्म री, घणा रे बधे अनत संसार हो। मुनिंद॥ ३॥
पांच सो चोरां ने प्रतिबोधिया, त्यामे हुता केई प्रकृति रा फुणिंद हो। मु०।
त्यांनें समझाय मारग आणिया, ते पिण पाम्यां परम आनद हो। मुनिंद॥ ४॥
केई काछ लंपटी कुसीलिया, ते हुंता धाडा पाड हो। मु०।
त्याने उपदेश देई ठाय आणिया, किया मोटा अणगार हो। मुनिंद॥ ५॥
चोर हुता सगलाई पापिया, ते करता अनेक अकाज हो। मु०।
त्या सगलां ने धर्म पमायने, दियो मुगतपुरी नो राज हो। मुनिंद ॥ ६॥
भगवत श्री वर्धमान रे, पाटवी सुधर्म स्वाम हो। मु०।
त्या सुधर्म स्वामी रे पाटवी, जबू स्वाम त्यारो नाम हो। मुनिंद॥७॥
गजहस्ती री त्यानें ओपमा, पुरुषा माहे सीह समान हो। मु०।
त्यां सीह जिम संजम आदस्यो, सीह जीम पाल्यो चारित्र निधान हो। मुनिंद॥८॥
ते बालब्रह्मचारी थेटरा, जिनशासन रा सिणगार हो। मु०।
तीजे पाट भगवान रे, हुवा घणा साधा रा सिरदार हो। मुनिंद॥ ९॥
हुवा च्यार तीर्थ माहे दीपता, त्यारी सोम निजर शीतल अंग हो। मु०।
सूर्य जिम तप तेज आकरो, चंदकला ज्यूं चढते रंग हो। मुनिंद ॥ १०॥
गुण तो त्यामे छे अति घणा, समुद्र जेम अथाय हो। मु०।
कोड जिभ्या करे वर्णवे, तोही पूरा कह्या न जाय हो। मुनिंद॥ ११॥
वले गमता लागे तीर्थ च्यार नें, तिण दीठा पामे आनद हो। मु०।
त्यारी वाणी अमृत सारिखी, सुणवा आवे नर नारया रा बृद हो। मुनिंद॥१२॥
त्यानें धर्मकथा भिन भिन कहे, कहे जीवादिक नव भेद हो। मु०।
केई सुण नें श्रावक व्रत आदरे, केई चारित्र ले आण उमेद हो। मुनिंद॥१३॥
ते सोले वर्ष घर में रह्या, वर्ष चोसट चारित्र पाल हो। मु०।
तिणमे बीस वर्ष छद्मस्थ रह्या, केवली रह्या वर्ष चमाल हो। मुनिंद॥ १४॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए सर्व आऊखो अस्सी वर्ष नो, पाल्यो छे जंबूस्वाम हो । मु० ।
घणा जीवा ने प्रतिबोधनें, पहुंता अविचल ठाम हो । मुनिद ॥ १५ ॥
ते छूटा संसार ना दुख थकी, पाम्यां सुख अनंत हो । मु० ।
वले जन्म मरण नही मुगत मे, त्यारो कदेय न आवे अंत हो । मुनिद ॥ १६ ॥
ओर साधु ने साववी, गया छे देवलोक माय हो । मु० ।
ते पिण मुगत सिधावसी, आठुई कर्म खपाय हो । मुनिद ॥ १७ ॥
शासन श्री वर्धमान रो, आछो दीपायो जबू स्वाम हो । मु० ।
आप तिरयां ओरांने तारिया, त्यांरो लीजे नित प्रति नाम हो । मुनिद ॥ १८ ॥
शीष नमी नित तेहने, बांदीजे बारूवार हो । मु० ।
ज्यूं कर्म कटे निर्जरा हुवे, पामे भव जल पार हो । मुनिद ॥ १९ ॥
जबू स्वामी छेहला केवली, श्री वीर ना शासण मझार हो । मु० ।
ते मुगत गया आरे पांचमे, त्यांरो नाम लियांइ निस्तार हो । मुनिद ॥ २० ॥
ए चोपी जोडी जंबूकुमर नी, जंबू पइन्ना कथा रे अनुसार हो । मु० ।
इण में अधिको ओछो कह्यो हुवे, तो ज्ञानी वदे ते तत सार हो । मुनिद ॥ २१ ॥
समत अठारे चालीसे समें, जेठ सुदी बारस सोमवार हो । मु० ।
चोपी पूरी कीधी बीठोरा मझे, ते समझावण नर नार हो । मुनिद ॥ २२ ॥

रत्न : १६

सुदर्शन चरित

दुहा

श्री जिन चरण प्रणाम कर, भाव भगत उर आण।
श्री सुदर्शन सेठ को, कहूं चरित्र बखाण ॥ १ ॥
शीलव्रत जिण शुद्ध मने, पाल्यो निरतिचार।
घोर परिषहा ऊपना, पिण डोल्यो नही लिगार ॥ २ ॥
शीलवंत, सब ही बडा, जे पाले निर्मल शील।
पिण सुदर्शन बखाणिये, तिण पामी अविचल लील ॥ ३ ॥
शील थकी जे गिर पड्या, तेह सुणे चित्त ल्याय।
तेहने पिण प्रेम बधे घणो, पाछो तत्पर थाय ॥ ४ ॥
कायर सुण हुवै सूरमा, सूरा पिण होय अति ही अडोल।
सुदर्शन गुण साभली, पाले शील अमोल ॥ ५ ॥
सुदर्शन शील पालने, गयो पचमी गति प्रधान।
जे गुण गावे साभले, पवित्र करे जीभ कान ॥ ६ ॥
सेठ सुदर्शन कुण हूंतो, तिण किण विध पाल्यो शील।
घोर परीषा किम सह्या, ज्यूं फोजा मे पील सलील ॥ ७ ॥
घोर परीषा जिण सह्या, पाल्यो निर्मल शील।
तास चरित्र वखाणतां, पामे अविचल लील ॥ ८ ॥

ढाल : १

[धीज करे सीता सती रे लाल]

तिण काले नें तिण समे रे, चंपानगर बखाण रे। सोभागी।
भरतक्षेत्र अंगदेश मे रे लाल, इंद्रपूरी सम जाण रे। सोभागी।
शील तणा गुण साभलोरे लाल* ॥ १ ॥
तिहां राज करे रलियामणो रे, धात्रीवाहन नामे राय रे। सो०।
जात ने कुल त्यारा निर्मला रे लाल, ते खंडे नही नीत नें न्याय रे। सो० ॥ २ ॥
धात्रीवाहन राजा तणी रे, पटराणी अभिया नार रे।
रूपे रंभा सारखी रे, अपछर रे उणियार रे ॥ ३ ॥
तिहा जिन धर्म नी महिमा घणी रे, सुध साधां री घणो प्रवेश रे।
त्यां श्रावक श्राविका वसे घणा रे, दया धर्म तणी बहु रेस रे ॥ ४ ॥
सेठ वृषभदास तिहा वसे रे, तिण रे घन घणो प्रभूत रे।
ते धर्म पाले श्रावक तणो रे, निज कुटुंब मे मेढी भूत रे ॥ ५ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जिनमती भार्या तेहनें रे, रूप गुणे श्रीकार रे।
चतुरा चतुराई कर सोभती रे, पाले श्रावक नां व्रत बार रे॥ ६॥
सुख सेज्या में सूती एकदा रे, सेठाणी मध्य रात रे।
मेरू सुदर्शन दीठो सुपनां मझे रे, तेहनों फल पूछ्यो प्रभात रे॥ ७॥
सुपन पाठक इम भाखियो रे, थांरे होसी पुत्र सपूत रे।
थांरा कुल मांहें दीपक सारिखो रे, होसी कुटुंब में मेढी भूत रे॥ ८॥
सुपनां तणो फल सांभली रे, पाम्यों हर्ष हुलास रे।
दान सनमान दे पाछा मोकल्या रे, यारे मन मांहे मोटी आस रे॥ ६॥
सवा नव मास पूरा हुवां रे, जनम्यो पुत्र सुकमाल रे।
रूप लक्षण गुण तेहनां भला रे, व्यंजनादिक सर्व विशाल रे॥ १०॥
जन्म महोच्छव किया तेहनां रे, करे घणा हगाम रे।
मेरू सुदर्शन नो सुपनो लह्यो रे, तिणसूं दियो सुदर्शन नाम रे॥ ११॥
आठ वर्ष बीतां पछे भण्यो रे, हुवो बहोत्तर कलानों जाण रे।
सुखे समाधे मोटो हुवे रे, डाहो चतुर सुजाण रे॥ १२॥
कपिल प्रोहित तिण साथे भण्यो रे, तिणसूं बंधाणी प्रीत अत्यंत रे।
जब मित्री भाई थाप्यो तेहने रे, मांहों मांहि दीठां निजर ठरंत रे॥ १३॥
कपिल प्रोहित तेहनें रे, कपिला नारी छे ताम रे।
तिणरा लक्षण घणा छे पाडूआ रे, वले सुद्ध नही छे परिणाम रे॥ १४॥
त्यां बेटी सागरदत्त सेठनीं रे, नाम मनोरमा जाण रे।
सुदर्शन जोग जाणी करी रे, परणाई मोटे मंडाण रे॥ १५॥
मनोरमां मोटी सती रे, पाले श्रावक नां व्रत बार रे।
तिण मे शीलादिक गुण छे घणां रे, पात्र दान देवे वारूंवार रे॥ १६॥
पुत्र विवाह कियो हर्ष सूं रे, धन खरच्यो विविध प्रकार रे।
सज्जन सहुनें संतोषिया रे, सुख विलसे संसार रे॥ १७॥
सेठ सेठाणी एकदा रे, जाण्यो अथिर संसार रे।
निज पुत्र ने घर सूंपने रे, लीधो संजम भार रे॥ १८॥
सुदर्शन ने पदवी दीधी सेठ नी रे, धात्रीवाहन राजान रे।
प्रसिद्ध चावो छे लोक मे रे, प्रभूत घणो रिधवान रे॥ १६॥
संसार नां सुख भोगवतां थकां रे, पुत्र जनम्यों सुखमाल रे।
तिणरो नाम सुकंत दियो पिता रे, तिणमे पिण सगला गुण छे विशाल रे॥ २०॥
सेठ सुदर्शन श्रावक तणा रे, बारे व्रत पाले रूडी रीत रे।
देवादिक रो डिगायो डिगे नही रे, तिणरी लोकां मे घणी प्रतीत रे॥ २१॥

च्यार पोसा करे एक मास मे रे, मसाण भूमि में जाय रे।
राते पिण रहे छे मसाण मे रे, निर्भय थका मन मांय रे॥ २२॥
यारे भाग वले सरीखी मिली रे, जेहवी अस्त्री तेहवो भरतार रे।
दोनूं पाले छे व्रत श्रावक तणा रे, त्यारे मांहो मांहि प्रीति अपार रे॥ २३॥

●

दुहा

सहु सयोग आवी मिले, जेहनें जेहवी चाय।
करणी रे लारे सुख पामिए, ते सुणज्यो चित्त ल्याय॥ १॥

ढाल : २

[सोरठा]

विद्या अरु वर नार, संपद देह शरीर सुख।
माग्या मिले नही च्यार, पूर्व सुकृत कीधां विना॥ १॥
एक नर पडित प्रवीण, एकण ने अखर ना चढे।
एक नर मूर्ख दीन, भाग विना भटकत फिरे॥ २॥
एक एक रे भर्‍या भडार, रिद्ध संपत्ति घर में घणी।
एकण रे नही अन्न लिगार, दीधा सोई पाइए॥ ३॥
एकण रे भूषण अनेक, गहणा वस्त्र नित नवा।
एकण रे नही एक, वस्त्र विना नागा फिरे॥ ४॥
एक नर जीमे कूर, सीरा पूरी ने लापसी।
एक बूके बूकस बूर, भीख मांगत घर घर फिरे॥ ५॥
एक नर पोढे खाट, सेज विछाइ ऊपरे।
एक नर जीमे हाट, आदरमान पावे नही॥ ६॥
एक नर होवे असवार, चढे हस्ती ने पालखी।
एक चले शिर भार, गाम गाम हिंडतो फिरे॥ ७॥
एक एक नर ने हजूर, हाथ जोडी हाजर रहे।
एक नर ने कहे दूर, निजर मेले नही तेहसूं॥ ८॥
एक सुदर रूप सरूप, गमतो लागे सकलनें।
एकज कालो कुरूप, गमतो न लागे केहनें॥ ९॥
एक एक नी निर्मल देह, एक ने रोग पीडा घणी।
किसो कीजे अहमेव, कियो जिसोई पाईए॥ १०॥

एक बालक विधवा नार, रात दिवस झूरे घणी।
एक सज सोले सिणगार, नित नवला सुख भोगवे ॥ ११ ॥
एक नर क्षत्र धराय, आण मनावे देश मे।
एक अलवाणे पाय, घर घर टुकडा मागतो ॥ १२ ॥
एक बेठे सिंघासण पाट, हुकम चलावे लोक मे।
एक फिरे हाटो हाट, एक कोडी के कारणे ॥ १३ ॥
एक सारे निज काज, संयम मारग आदरी।
एकज विलसे राज, काज बिगाडे आपणो ॥ १४ ॥
एक रमे पर नार, मद्य मांस तणो भक्षण करे।
त्यांरे दया नही छे लिगार, ते सुख पावे किण विधे ॥ १५ ॥
एक नर पाले शील, साधु तणी सेवा करे।
ते पामें अविचल लील, मोख तणा सुख शाश्वता ॥ १६ ॥
निर्फल रूंखज होय, निर्फल होय जावे अस्त्री।
सुणज्यो भवियण लोय, पिण करणी कदे निर्फल नही ॥ १७ ॥
सती मनोरमा नार, सेठ सुदर्शन तेहनी।
पाले श्रावक नां व्रत बार, पुन्न जोगे जोडी मिली ॥ १८ ॥
पूर्व भव तिण सेठ, सेवा कीधी थी साध नी।
एकज रात नी नेठ, ते अधिकार आगे चालसी ॥ १९ ॥

●

दुहा

सुदर्शन ए सेठजी, बीजी मनोरमा नार।
धर्म कर्म हिल मिल करे, सुख विलसे ससार ॥ १ ॥
सेठ सुदर्शन तेहने, उपसर्ग उपजे केम।
ते शील मे सेंठो किण विध रहे, ते सुणज्यो धर प्रेम ॥ २ ॥
एक दिन सेठ सुदर्शन, घर काज गयो किण काम।
कपिल मित्री तणे घर आय नें, खिण एक लियो विश्राम ॥ ३ ॥
कपिल मित्री तणे घर भारज्या, कपिला नामे नार।
ते रूपे रंभा सारखी, अपच्छर रे उणियार ॥ ४ ॥
ते कपिला नार छे निर्लज्जी, शीलादिक गुण रहीत।
रूपवंत देखी पुरुष पारको, तिणसूं करती न सके प्रीत ॥ ५ ॥
तिण सेठ सुदर्शन देखियो, घणी इचरज हुई तिण वार।
धन्य जमारो तिण नार नो, तिणरे एह भरतार ॥ ६ ॥

रूप देख विरहणी थई, वाछे सुदर्शन सूं भोग।
काम आरत करती थकी, जाणे मेलू एह सजोग ॥ ७ ॥

ढाल : ३

[जाणपणो जग दोहिलो रे लाल]

कपिला काम आतुर थइ रे लाल, कह्यो कठा लग जाय।
कपटण कामणी रे।
तिणरे सेठ सूं जोग मिले नही रे लाल, तिणसू दुख मांहे दिन जाय।
कपटण कामणी रे ॥ १ ॥
तिणरे रात दिवस ध्यान सेठ नो रे, ते मूल ने घाले विसार। क०।
तिणरी आशा वंछा छूटे नही रे, एहवो छे काम विकार। क० ॥ २ ॥
पूरी निद्रा न आवे तेहने रे, धान पिण पूरो न खाय।
घर काम पिण हाथ लागे नही रे, विषय मे रही लपटाय ॥ ३ ॥
रति न पामे तिण कत सू रे, तिणने वाछे नही घर माय।
जाणे कंत जाए देशातरे रे, तो सेठ मिलवा रो करू उपाय ॥ ४ ॥
सेठ सू सुख भोगव्या विना रे, म्हारो जन्म अख्यारत जाय।
एहवी आशा मे अलूभी रही रे, म्हारी देख करो कोइ सहाय ॥ ५ ॥
काम तणे वस कामणी रे, गिणे नही काज अकाज।
सासरिया पीहरिया मूसाल री रे, छोड दीधी तिण लाज ॥ ६ ॥
मद चढियो हाथी तेहनी परे रे, आ घूम रही दिन रात।
मद मतवाली कामणी रे, ते गिणे नही जात कुजात ॥ ७ ॥
आ कूड कपट नी कोथली रे, कपिला नामे नार।
तिणमे अवगुण अति घणा रे, कहिता न आवे पार ॥ ८ ॥
ओ श्रावक श्री भगवान रो रे, सेठ सुदर्शन नाम।
ते परत्रिया मूल वाछे नही रे, तिणरा दृढ घणा परिणाम ॥ ९ ॥
एहवा सेठ सुदर्शन तेहसू रे, सेववा वाछे काम भोग।
आगल पाछल सोचे नही रे, एहवी छे नार अजोग ॥ १० ॥

दुहा

जेहनें जेहवी इच्छा ऊपजे, ते तेहिज करे उपाय।
विगडो भावे सूधरो, भावे ज्यू होय जाय ॥ १ ॥
कपिला विरह व्यापी थकी, करे अनेक उपाय।
डाव कोइ लागे नही, सेठ मिलण की चाय ॥ २ ॥

कपिला केरो शिरधणी, गयो किणही गाव।
सेठ लेवा ने दासी मोकली, कूडी बात बणाय ॥ ३ ॥
जे कर साही घोलिए, सात समुद्र जल आण।
कागद एतो आणिए, तीन लोक प्रमाण ॥ ४ ॥
सर्व वनराइ आण के, तेहनी कलम कराय।
त्रिया केरा चरित्र ने, लिखे जो जुगत वणाय ॥ ५ ॥
सर्व कागद स्याही खपे, कलम सर्व खप जाय।
त्रिया चरित्र तो छे घणा, न लिख्या कोई न लिखाय ॥ ६ ॥
त्रिया मे अवगुण घणा, भाख्यो श्री जिनराय।
तदुल वेयालिया ग्रथ मे, दीवा तिहा बताय ॥ ७ ॥
सती कुसती आतरो, भाख्यो श्री भगवान।
कुसती मे अवगुण घणा, सती शील गुणखान ॥ ८ ॥
इहा काम पड्यो कपिला तणो, तिण रा चरित्र अनेक।
ते सेठ सुदर्शन वोलायवा, उपाय कियो तिण एक ॥ ९ ॥

ढाल : ४

[चितोडी राजा रे मेवाडी ताजा]

दासी तुमे जावो रे, सेठ ने लेइ आवो रे।
थारो आब बधारू ए, दासी अति घणो रे ॥ १ ॥
सेठ रे पासे जाई रे, कीजे घणी नरमाई रे।
कहीजे तुम मित्री ने वेदना उपनी रे ॥ २ ॥
त्यारे घणी असाता रे, जक नही दिन राता रे।
तिण सूं बोलाया छे आपने वेग सताब सूं रे ॥ ४ ॥
दासी सुण वाणो रे, कर लीधी प्रमाणो रे।
सेठ ने बोलावण दासी नीकली रे ॥ ४ ॥
सेठ रे पास आइ रे, करे घणी नरमाइ रे।
हाथ जोड विनो कर दासी इम भणे रे ॥ ५ ॥
आप वेगा पधारो रे, ढील न करो लिगारो रे।
थाने बेग बोलाया छे मित्री तुम तणे रे ॥ ६ ॥
सेठ कहै किण काजो रे, वेग वोलाया आजो रे।
मोने उतावल सू वोलायो किण कारणे रे ॥ ७ ॥
जब बोले दासी रे, तुम मित्री उदासी रे।
त्यारे व्याध कष्ट शरीर मे ऊपनो रे ॥ ८ ॥

दासी नी सुण वाणो रे, हिये हेज भराणो रे।
सर्व काम कारज छोडे उठ चालियो रे॥ ६॥
मित्री ने घर जायो रे, ऊभो चोक मे आयो रे।
तिण कपट न जाण्यो चरिताली नार नो रे॥१०॥
सेठ बोले आमो रे, मित्री किण ठामो रे।
जब दासी कहे मित्री सूतो छे महलमे रे॥ ११॥
आप ऊभा रहीजो रे, उतावल मत कीजो रे।
थारा मित्री नें था आयारी देवू बधावणी रे॥ १२॥
सेठ ऊभो तिबारे रे, दासी चढी चोबारे रे।
कपिला सूं जायकरी जणावणी रे॥ १३॥
सुण कपिला हरखी रे, वणी अपच्छर सरिखी रे।
आभूषण पहरीनें अंग सिणगारियो रे॥ १४॥
सेज्जा माहे सूती रे, विषय माहे विगूती रे।
अंग सर्ब ढाक्यो ओढ पछेवडो रे॥ १५॥
उतावल मत कीजो रे, सेठ ने भेद म दीजो रे।
किमाड आडा जड रहीजे बारणे रे॥ १६॥
दासी सुण तामो रे, कर ने सर्व कामो रे।
पछे कपिला चरिताली ने आय दासी कह्यो रे॥ १७॥
कपिला कहे आमो रे, नही ढील रो कामो रे।
हिवे सेठ ने ल्यावो सताव सू मोकने रे॥ १८॥
दासी उतरी हेठो रे, आइ छे तिहां सेठो रे।
आप ऊंचा पधारो सेठजी महल मे रे॥ १९॥
सेठ ऊपर आयो रे, बेठो चोकी बिछायो रे।
निज मित्री सेज्जा मे सूतो जाण नें रे॥ २०॥
सेठ पूछी समाधो रे, कुण उपनी व्याधो रे।
कुण कुण वेदन हुइ तुम तणे रे॥ २१॥
इतरी सुणी बातो रे, नही वोली असमातो रे।
मून साझे रही कपिला कपट सू रे॥ २२॥
हिवे किसी लाजो रे, सेठ आयो वस आजो रे।
तो हिवे ढील किसी कीजे इण बात री रे॥ २३॥
पछेवडो दूरो नाखो रे, सेठ देख्यो आंखो रे।
सूत उठने झाल्यो सुदर्शन सेठ ने रे॥ २४॥

अंग सूं अंग भीडी रे, विषय सूं अति पीडी रे।
झाले रही सेठ सूं दूरी हुवे नही रे॥ २५॥
कूड कपट री खाणी रे, बोले मधुरी वाणी रे।
आशा पूरो थे सेठजी अम तणी रे॥ २६॥
म्हांसं भोगवो भोगो रे, नीठ मिलियो छे जोगो रे।
थें पूरो मनोरथ म्हारी मन रलीए॥ २७॥
म्हांरो मनुष्य जमारो रे, ते मुज आप सुधारो रे।
थांरी आशा वछा लागी म्हारे घणा दिन तणी रे॥ २८॥
मोसूं लाज मूंको रे, आज अवसर मत चूको रे।
मनुष्य जमारा रो लाहो लीजिये ए॥ २९॥

●

दुहा

वचन सुणे कपिला तणा, वले देख्यो रूप अनूप।
वलि अग सं अग भीडियो, जब विलखो थयो सेठ सरूप॥ १॥
गात्रे प्रसेवो चल्यो, वलि कंपण लागी देह।
मै चरित्र न जाण्यों नार नो, तिण सूं आय फस्यो छूं एह॥ २॥
पिण शील न खंडू माहरो, आ करे अनेक उपाय।
जो वस छे म्हारी आत्मा, तो न सके कोइ चलाय॥ ३॥
समदृष्टी वेवे समों, पाले व्रत अभंग।
ज्यूं ज्यूं परिषह ऊपजे, तिम तिम चडते रंग॥ ४॥
कष्ट पड्या कायम रहे, ते साचेला सूर।
कोइ कायर क्लीव हुवे, ते भाग हुवे चकचूर॥ ५॥
वेरी तो पाछे पड्या, जब भागां भलो न होय।
पग रोपी साह्मो मंडे, त्यांसूं गज न सके कोय॥ ६॥
चतुर ने भोल मूर्ख करे, इसी नारी नी जात।
जो हूं इण आगे सेठो रहूं, तो म्हारो बिगडे नही तिलमात॥ ७॥

ढाल : ५

[वेग पधारो महल थी]

हिवे सेठ सुदर्शन चिंतवे, कीजे कवण विचार।
आ करडी बात आए बणी, ते किम हुवे छुटकार।
वैरागे मन वालियो* ॥ १॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

जो इण उपशर्ग थी ऊबरू, व्रत रहे कुशले खेम।
तो शील छे म्हारे सर्वथा, जावजीव लगे नेम॥ वै० २॥
मन दृढ कर लियो आपणो, शील कियो अंगीकार।
कपिला नारी तो ज्यांही रही, तजी मनोरमां नार॥ ३॥
अरिहत सिद्ध नी साखे करी, पहर्यो शील सन्नाह।
मन वच काया वस किया, तिणरे स्यानी परवाह॥ ४॥
आतो कपिला छे बापडी, मल मूत्र नी भडार।
जो आय उभी रहे अपच्छरा, तोही शील न खंडू लिगार॥ ५॥
अरिहंत सिद्ध साधु धर्म रो, लेवे शरणा च्यार।
तिण भोग जाण्यां विष सारिखा, तिणरी वछा न करे लिगार॥ ६॥
कपिला झाले रही सेठ ने, न हुवे अंग सूं दूर।
जब सेठ जाण्यों कोइ देखसी, तो हुवे लोकां मे फितूर॥ ७॥
कपिला कहे हू छोडूं नही, आप करो मोसूं हेज।
सुख भोगवो ससार नां, आ बिछाय राखी सुख सेज॥ ८॥
म्हासू सुख भोगव्यां विना, जावा नही देऊं गेह।
मोनें आशा अलूधी मेलने, किण विध देसो थे छेह॥ ९॥
जब सेठ जाण्यो आ पापणी, न हुवे अंग सूं दूर।
इणनें अलगी करवा भणी, डरतो बोले छे कूर॥ १०॥
सेठ कहे कपिला भणी, तू तो मूढ गिंवार।
पुरुषपणो नही मो भणी, नही तोने परख लिगार॥ ११॥
जो पुरुषपणो हुवे मो भणी, तो तुरत करू तोसू प्रेम।
तोने अपछरा सरीखी देखने आघो काढूं केम॥ १२॥
हाव भावें मोसू किया घणां, वले रही मोसूं अंग लगाय।
जो पुरुषपणो हुवे मो भणी, तो रह्यो किसी पर जाय॥ १३॥
इन्द्रादिक सुर नर वडा, नारी तणा हुवे दास।
ज्यामे पुरुषाकार पराक्रम हुवे, ते उलटा करे अरदास॥ १४॥
जेहवो कंचन फूलडो, दीसे घणो सोभंत।
पिण फल नही लागे तेहनें, एहवो मुज विरतत॥ १५॥
थे वचन कह्या ते मे सांभल्या, म्हांसूं बोल्यो न जाय।
हू भोग जोग समर्थ नही, तिणसूं रह्यो मुरझाय॥ १६॥
हिवे छोड देवो थे मो भणी, पाछो जाऊं निज गेह।
वले आस म राखज्यो माहरी, मोसूं किसो रे स्नेह॥ १७॥

दुहा

कपिला सुण विलखी थइ, मूंके ऊंडा निश्वास ।
हाथ घसी यूंही रही, जाबक हुइ निरास ॥ १ ॥
म्हारी लाज शर्म दोनूं गइ, वले कोइ न सरियो काज ।
मोनें निपट निर्लजी सेठ जी, जाणे लीधी आज ॥ २ ॥
पश्चाताप करे घणो, वले हुइ घणी विरग ।
पुरुष न जाण्यों सेठ ने, जब छोड दियो तिण अंग ॥ ३ ॥
दासी ने तेडी कहे, खोल देवो सर्व द्वार ।
सेठ ने पाछो घर जाण दे, तूं मत कर ढील लिगार ॥ ४ ॥
जब दासी द्वार खोली दिया, तब सेठ भागो तत्काल ।
पछै आयो निज घर आपणे, तिण मूल न भांगी पाल ॥ ५ ॥
चरित्र देख कपिला तणो, मूके उंडा निश्वास ।
हिवे नारी जात छे तेहनो, कदे न करूं विश्वास ॥ ६ ॥
कदा वले मिले जो एहवी, तो छूटीजे केम ।
तिणसूं पर घर जावा तणो, आज पछे छे नेम ॥ ७ ॥
विघ्न टल्यो साता हुई, व्रत रह्यो कुशले क्षेम ।
तिणसूं सेठ तणो शील ऊपरे, दिन दिन अधिको प्रेम ॥ ८ ॥
कपिला नारी कुलक्षणी, तेह तणो प्रसंग ।
ओ कुसत्यां ने प्रगट करूं, ते सुणज्यो मनरंग ॥ ९ ॥

ढाल : ६

[ते किम तिरसी संसार में]

सतियां ते सीता सम कही, त्यांरा जिनवर किया वखाण। भवियण।
कुसत्यां कपिला सारिखी, त्यांरा लीज्यो लखण पिछाण । भवियण ।
चरित्र सुणो नारी तणा* ॥ १ ॥

कुसत्यां में अवगुण घणा, पूरा कह्या न जाय । भ० ।
पिण थोडा सा प्रगट करूं, ते सुणज्यो चित ल्याय । भ० ॥ च० २ ॥
चरित्र सुणे नारी तणा, छोड संसार नो फंद । भ० ।
शीलवंत नर सांभले, ते पामे हर्ष आनद । भ० ॥ ३ ॥
नारी कूड कपट नी कोथली, अवगुण नो भंडार । भ० ।
कलह करवाने सांतरी, भेद पडावणहार । भ० ॥ ४ ॥
डेली चढती डिग डिग करे, चढ जाये डूंगर असमान ।
घर मांहे बेठी डर करे, राते जाए मसाण । भ० ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

देख बिलाइ ओजके, सिघ नें सनमुख जाय । भ० ।
साप ओसीसे दे सुवे, ऊंदर सूं भिड़काय । भ० ॥ ६ ॥
कोयल मोर तणी परे, बोलेज मीठा बोल । भ० ।
भितर कडवी कटुकसी, वाहिर करैं क्लिोल । भ० ॥ ७ ॥
खिण रोवे खिण मे हसे, खिण मुख पाडे बूंब । भ० ।
खिण राचे विरचे खिणे, खिण दाता खिण सूम । भ० ॥ ८ ॥
धर्म करतां धूंकल करे, एसी नार अलाम । भ० ।
वादर ज्यू नचावे निज कत ने, जाणक असल गुलाम । भ० ॥ ९ ॥
नारी ने काजल कोटडी, वेहू एकज रंग । भ० ।
काजल अंग कालो करे, नारी करे शील भग । भ० ॥ १० ॥
नारी ने वन वेलडी, वेहू एक स्वभाव । भ० ।
कंटक रूंख कुशील नर, ताहि विलवे आय । भ० ॥ ११ ॥
नाम छे अवला नार नो, पिण सबली इण ससार । भ० ।
सबला सुर नर तेहने, निवला कर दिया नार । भ० ॥ १२ ॥
सुर नर किन्नर देवता, त्याने पिण वस किया नार । भ० ।
नाख्या नरक निगोद मे, त्यारी बूब न वार । भ० ॥ १३ ॥
नैण वाण नारी तणा, वचनज तीखा सेल । भ० ।
अग तीखो तलवार सो, इण मास्या सकल सकेल । भ० ॥ १४ ॥
विरची वाघण सू बुरी, अस्त्री अनर्थ मूल । भ० ।
पाप करी पोते भरे, अग उपावे सूल । भ० ॥ १५ ॥
मोर तणी पर मोहनी, बोलै मीठा बोल । भ० ।
पिण साप सपूंछो ही गिलै, आ ले नर ने भोल । भ० ॥ १६ ॥
पुरुप पोतै कपडा जिसो, निर्गुण नित नवी भात । भ० ।
नारी कातर वस पड्यो, काटत है दिन रात । भ० ॥ १७ ॥
बाघण बुरी वन माहिली, विलगी पकडे खाय । भ० ।
ज्यूं नारी वाघण वस पड्यो, नर न्हासी किहां जाय । भ० ॥ १८ ॥
फाटा काना री जोगणी, तीन लोक ने खाय । भ० ।
जीवत चूटे कालजो, मूंआ नरक लेजाय । भ० ॥ १९ ॥
नारी लखण नाहरी, करे निजर नी चोट । भ० ।
केयक सत जन उवस्था, दया धर्म नी ओट । भ० ॥ २० ॥
त्रिया मदन तलावडी, डूवो वहु ससार । भ० ।
केइक उत्तम उगस्था, सद्गुरु वचन सभार । भ० ॥ २१ ॥

विषय मे डूबा घणा, इण संसार मझार। भ०।
काढणहारो को नही, बूडां बूंब न बार। भ०॥ २२॥
जिम जलोक जल माहिली, तिम नारी पिण जाण। भ०।
उवा लागी लोही पीवे, नारी पिए निज प्राण। भ०॥ २३॥
राता कपडा पहर ने, काठा बांध्या माथा रा केश। भ०।
हाथां महदी लगाय ने, नारी ठगियो देश। भ०॥ २४॥
लोक कहे ग्रह बारमो, लागां हणे कहे प्राण। भ०।
आ न्हांखै नरक सातमी लगे, नारी नव ग्रह जाण। भ०॥ २५॥
नारी दीवलो चून को, मेल्यो किहांइ न जाय। भ०।
घर मे कुरटे ऊंदरा, बाहिर काग ले जाय। भ०॥ २६॥
इण संसार असार मे, सुणज्यो मोटी गाल। भ०।
माणस खोडै मारीजै, गावै टोडरमाल। भ०॥ २७॥
उज्जेणी नो राजियो, हरिश्चंद्र नामे राय। भ०।
सोमिला ऊपर मोहियो, न्हाखो नदी बहाय। भ०॥ २८॥
जहर दियो निज कंत नें, राय जसोधरा नार। भ०।
कंत मार काठ चढ गई, ते गई नरक मझार। भ०॥ २९॥
ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति बारमो, तेहनी चूलणी मात। भ०।
विषय री बाही थकी, करवा मांडी पुत्र नी घात। भ०॥ ३०॥
प्रदेशी राजा तणी, सूरीकंता नार। भ०।
निज स्वारथ न जाण्यो पूगतो, जहर देइ मार्यो भरतार। भ०॥ ३१॥
बारे वर्ष बन सेवियो, लिछमण ने श्रीराम। भ०।
तिण दुख दशरथ दुख सह्यो, ते तो केकइ नां काम। भ०॥ ३२॥
कोणिक वहल कुमार के, रच्यो महा सग्राम। भ०।
हार हाथी रे कारणे, ते तो पद्मावती रा काम। भ०॥ ३३॥
धारा नो नाथ धूजावियो, एसी नार अजोग। भ०।
वले मुज राजा तणे खय कियो, ते पिण नारी तणे सजोग। भ०॥ ३४॥
महाशतक श्रावक घरे, हुइ रेवती नार। भ०।
ते भ्रष्ट करण भरतार ने, आई संथारा मझार। भ०॥ ३५॥
देवदत्त सोनार ना पुत्र नी, बहू कुपातर नार। भ०।
तिण देवी छले धीज उतरी, ससुरा ने झूठो पार। भ०॥ ३६॥
कपिला पटराणी राजा तणी, तिण कीधी मावत सूं प्रीत। भ०।
तिणंने आल देई अनाखी मरावियो, ते प्रसिद्ध हुई फजीत। भ०॥ ३७॥

अभियाराणी नेकपिला ब्राह्मणी, सेठ नें दिया उपसर्ग अनेक। भ०।
पिण सेठ सुदर्शन चलियो नही, मन माहें आण विवेक। भ०॥ ३८॥
ए अवगुण कह्या कुसत्या तणा, कहितां न आवे पार। भ०।
सतियां माहे गुण छे घणा, त्यारो बहुत विस्तार। भ०॥ ३९॥
अठे कपिला रा अवगुण तणो, चाल्यो छे अधिकार। भ०।
तिण' सेठ नें अंग सू भीडियो, पिण सेठ न चलियो लिगार। भ०॥ ४०॥

●

दुहा

नर नारी दोनू सारिखा मिले, तो अधिको वधे स्नेह।
सुगुणा ने निगुणो मिले, तो तटके तूटे नेह॥ १॥
हिवे सेठ डरपे सर्व नार सूं, उपसर्ग ऊपनो जाण।
एक मास मे च्यार पोसा करे, राते जाय रहे मसाण॥ २॥
हिवे कर्म धर्म सांभलतो, सुखे गमावे काल।
वले किण विध उपसर्ग ऊपजे, किण विध आवे आल॥ ३॥
धात्रीवाहन राजा तणी, पटराणी अभिया नार।
रूपे रंभा सारखी, सुख विलसे ससार॥ ४॥
तिण चपा नगरी बाहिरे, ईसाण कूण रे माय।
एक बाग घणो रलियामणो, छहू रितु मे सुखदाय॥ ५॥
फल्यो फूल्यो रहे सदा, पिण वसत रितु विशेख।
तिहां नरनारी अनेक कीला करे, हर्ष पामे निजरा देख॥ ६॥
अभिया राणी तिण समे, आई बसत रितु जाण।
बाग सुण्यो फल फूलियो, जब बोले एहवी बाण॥ ७॥

ढाल : ७

[तोरण आयोए सखी कहि०]

आयो आयो हे सखी कहीजे मास वसत, ते रितु लागे छे अति ही सुहामणी जी।
सहु नर नारी हे सखी इण रितु हुवे मयमत, त्याने रमण खेलण नें छे रितु रलियामणी॥ १॥
फूल्यो रहे सखी चपो मरवो अथाय, फूल्या छे जाइ जुही ने केतकी जी।
फूल्या फूल्या हे सखी पाडल फूलडा ताय, वले फूल्या छे रूख धवला ने सेतकी॥ २॥
फूल्या फूल्या हे सखी वले फुल गुलाब, वले फूल्या छे रूख केवडा तणा जी।
नाहना मोटा हे सखी फलिया रूख सताब, ते फल फूल पानां कर ढलिया घणाजी॥ ३॥
फूली फूली रहे सखी मोरी सहु वनराय, वले आबा लागी छे मांजर रलियामणी जी।
महक रही छे हे सखी तिण बागरे माय, तिण गध सुगध सूं लागे सुहामणी जी॥ ४॥

तिण ठामें हे सखी कोयल करे टहूकार, वले मोर किगार शब्द करे घणा जी।
चकवा चकवी हे सखी शब्द करे श्रीकार, वले अनेक शब्द गमता पंखियां तणा जी॥ ५॥
एहवो सुणियो हे सखी मे तो वाग सरूप, नंदन वन तणी ओपमा जेहने।
ते वन देखण हे सखी हुई मुझ चूंप, प्रत्यक्ष जाय नेणा देखूं तेहने जी॥ ६॥
राजा साथे हे सखी जाऊं वाग रे मांय, क्रीडा करूं जाय रितु वसत मे जी।
एहवी वंछा हे सखी पूरूं तिण ठामे जाय, एहवी क्रीडा करवी मोने गंमें जी॥ ७॥

●

दुहा

वलती सखिया इम कहे, करवो छे तुम हाथ।
रूडी रीत राजा नें वीनवी, ले जाओ महाराजा ने साथ॥ १॥
इम सुणी राणी हर्षित हुई, कहे राय समीपे आय।
आप वसंत रितु नां सुख भोगवो, रूडी रीत सूं बाग में जाय॥ २॥
ए वचन सुणी राय हर्षियो, कहे सेवग पुरुष बोलाय।
चउरगणी सेना सझ करो, पाछी आग्या सूपो आय॥ ३॥
वले राजा पडहो फेरावियो, चंपा नगरी मझार।
नर नारी सहु आवज्यो, रूडी रीत सूं करे सिणगार॥ ४॥
चाकर सुण तिम हिज कियो, पाछी आग्या सूंपी आय।
जब राय स्नान मर्दन करे, पहरिया भूपण ताय॥ ५॥
राय हस्ती बेस नीकल्यो, चउरगणी सेना ले लार।
अभियाराणी नीकली, कर सोले सिणगार॥ ६॥
राजा आय उतरियो बाग मे, बेठो सिहासण ताम।
ओर बीजा पिण वेठा सहु, आप आप तणे सर्व ठाम॥ ७॥
अभियाराणी पिण निज परिवार सूं, आय बेठी बागरे माय।
विषय में रंग राती थकी, तिणरे परभव चिंता न काय॥ ८॥

ढाल : ८

[चपानगरी ना वाणिया]

तिहां आई छे कपिला ब्राह्मणी, तिणरे अभिया राणी सं प्रीत रे।
इण कपिला तणी संगत थकी, अभिया राणी पिण होसी फजीत रे।
तुमे चरित्र सुणो नारी तणा*॥ १॥
यारे जोडी मिली छे सारिखी, ए तो दोनूं कुपात्र नार रे।
अभिया उपसर्ग देसी सेठ ने, तिणरो आगे चालसी विस्तार रे॥ २॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वडा वडा सेठ सेनापती, त्यारे साथे निज परिवार रे।
ते पिण आया छे वाग मे, रूडी रीत सूं कर सिणगार रे॥ ३ ॥
सेठ सुदर्शन पिण आवियो, साथे छे मनोरमां नार रे।
च्यार पुत्र छे सेठ री पाखती, रूप मे जाणे देव कुमार रे॥ ४ ॥
त्यारे गहणा आभूषण पहरणे, त्याने दीठां पामे आणद रे।
सेठ सुदर्शन सगला सेठ मे, सोभे जाणे पूनम चद रे॥ ५ ॥
राणी वेठी झरोखे वाग मे, तिहां आयो सुदर्शन सेठ रे।
च्यार पुत्र सहित मनोरमां, आय उभा छे महलां हेठ रे॥ ६ ॥
अभियाराणी जाली रे आंत रे, तिण देख्यो सुदर्शन सेठ रे।
च्यारूं पुत्र सहित मनोरमां, राणी दीठा महलां रे हेठ रे॥ ७ ॥
राणी रूप देख मूर्छित हुइ, करवा लागी मन में विचार रे।
एहवा पुरुष थकी सुख भोगवे, धिन धिन छे तेह नार रे॥ ८ ॥
एहवा पुत्र एह थकी ऊपनां, जाणेक देव कुमार रे।
एहवा पुत्र ने एहवो कंत छे, धिन धिन तेहनो जमवार रे॥ ९ ॥
हिवे राणी पूछे दासी भणी, एतो कुण पुरुष कुण नार रे।
यारे च्यार पुत्र दीसे पाखती, जाणेक देव कुमार रे॥ १० ॥
दासी कहे सुदर्शन सेठ छे, मनोरमा तेहनी नार रे।
ए च्यार पुत्र छे एहना, सारा सेठां रो सिरदार रे॥ ११ ॥
कपिला ब्राह्मणी तिण अवसरे, मुह मचकोडे वोली वाय रे।
च्यार पुत्र नही छे सेठ रा, ते थांनें खवर न काय रे॥ १२ ॥
दाहे वलिया सूका रूख रे, फल फूल न लागे कोय रे।
ज्यूं पुरुष नपुंसक तेह सूं, पुत्र नी उत्पत्ति नही होय रे॥ १३ ॥
नपुंसक छे सेठ सुदर्शन, तिण मे संका नही छे लिगार।
ए कपिला रा वचन राणी सुणे, छाने पूरा करे तिण वार रे॥ १४ ॥
अभिया राणी कहे कपिला भणी, थें नपुंसक जाण्यो केम रे।
जब वात वीती कही मांडने, अरु वरु जाणे लियो एम रे॥ १५ ॥
जब अभिया राणी हंसनें कहे, कपिला तूं मूढ गिंवार रे।
तो पुरुष वस करवा तणी, तो में कला न दीसे लिगार रे॥ १६ ॥
सुदर्शन सेठ तोने छल गयो, भूठ वोले तिण वार रे।
तोने पुरुष तणी नही पारिखा, तूं भूले गई गर्भ गिंवार रे॥ १७ ॥
जब कपिला कहे राणी भणी, आप छो घणा चतुर सुजाण रे।
जो सेठ ने वस कर सुख भोगवो, तो थांरो वोल्यो प्रमाण रे॥ १८ ॥

जब राणी कहे कपिला भणी, सेठ नें आण म्हारी हजूर रे।
तिण सूं सुख भोगव संसार नां, थारे मूंहढे देसूं धूर रे॥ १९॥
वडा वडा सुर नर जोगी जती, त्याने वस किया नारी री जात रे।
त्यांनें बांदर नी परे रोलव्या, तो सेठ कितियक वात रे॥ २०॥
राधा मोही लियो श्रीकृष्ण नें, आपरे बस कीधो ताण रे।
अहेल्या इंद्र नें वस कियो, नारी एहवी छे चतुर सुजाण रे॥ २१॥
नारी घणा पुरुषां नें वश किया, त्यारो कहितां न आवे पार रे।
तोसूं एक पुरुष बस नहीं हुवो, इण लेखे तूं मूढ गिंवार रे॥ २२॥
जब कपिला कहे राणी भणी, सेठ ने वस करो सोय जी।
तो थांने चतुर विचक्षण जाण सूं, नही तो म्हां सरीखा थे पिण होय जी॥ २३॥
जब राणी कहे कपिला भणी, हूं तो सरीखी नही छूं ताम रे।
जो हूं सेठ थकी सुख भोगवूं, तो अभिया राणी म्हारो नाम रे॥ २४॥
जब कपिला बद बद ने कहे, आप मत करो गाढ लिगार रे।
सेठ सुदर्शन ने वस करे, एहवी नही छे जगत में नार रे॥ २५॥

●

दुहा

कदा सेठ नपुंसक नही हुवे, ते मोनें खबर न कांय।
जो सेठ सुदर्शन पुरुष छे, तो पिण कोइ न सके चलाय॥ १॥
कदा मेरु चल विचल हुवे, वले पच्छिम ऊगे भाण।
पिण सेठ डिगायो नही डिगे, मिले अनेक अप्सरा आण॥ २॥
तिण कारण राणीजी तुमें, म करो सेठ री आस।
मैं खप कीधी सेठ री घणी, तिण रो देख लियो में तमास॥ ३॥
राणी नें कपिला तणे, पड्यो विवाद अत्यंत।
राणी हठ मूंके नही, करे कवण विरतंत॥ ४॥
गति सारू मति ऊपजे, करे अनेक उपाय।
ज्यांकी थित पूरी हुई, मेटी किण विध जाय॥ ५॥
वसंत रितु खेल्यां पछे, राणी आइ महलां मांय।
सेठ मिलण के कारणे, करे अनेक उपाय॥ ६॥
दाव कोइ लागे नही, तब बिचार करे मन मांय।
जब पंडिता धाय सूं, राणी कहे वेग बोलाय॥ ७॥

ढाल : ६

[तीजी बाड हिवे चित्त विचारो]

अभिया राणी कहे धायने, म्हारी बात सुणो चित्त ल्याय। हे माय।
थें बालक सू मोटी करी, थांसूं बात न राखूं छिपाय। हे माय॥ अ० १ ॥
मुझ एक मनोरथ ऊपनो, वस रह्यो मन मांय। हे माय।
ते बात लजालू छे घणी, तोने कह्यां विन सरे नाय। हे०।
इण पर राणी वीनवे॥ २ ॥
हूं वसंत रितु खेलण गइ, राय सहित वन मझार। हे०।
तिण ठामे चपा नगरी तणा, आया घणा नर नार। हे०॥ ३ ॥
पुत्र सहित परिवार सूं, तिहां आयो सुदर्शन सेठ। हे०।
ओर सेठ घणाइ तिहां आविया, ते सहु सुदर्शन हेठ। हे०॥ ४ ॥
तिण रा अणियाला लोयण भला, जाणेक सोभे मसाल। हे०।
मुख पूनम चद्र सारखो, तेहनो रूप रसाल। हे०॥ ५ ॥
काया कचन सारखी, सूर्य जिसो प्रकाश। हे०।
सीतल छे चंद्रमा जिसो, हस सरीखो उज्जल छे तास। हे०॥ ६ ॥
जेहने दीठा आख्या ठरे, जेहनों सोम सभाव। हे०।
तिण आगे बीजा स्यूं बापडा, कुण राणा कुण राव। हे०॥ ७ ॥
म्हारो मन लागो छे तेहसू, जाणे रहू सेठ रे पास। हे०।
एहवो मनोरथ माहरो, रात दिवस रही छूं विमास। हे०॥ ८ ॥
तिणसू भूख त्रिखा भूले गइ, निस दिन रहूं उदास। हे०।
मन म्हारो कठेई लागे नही, तिणसूं कही छे तो पास। हे०॥ ९ ॥
हूं मोही सुदर्शन सेठ सू, तिणसूं लागो म्हारो रग। हे०।
तिणसूं मिलूं नही त्या लगे, नित नित गले छे म्हारो अग। हे०॥ १० ॥
मै कपिला नें बद बद कह्यो, वस करने सुदर्शन सेठ। हे०।
हू सुख भोगवसूं तेहसूं, ते वचन जावे म्हारो हेठ। हे०॥ ११ ॥
ए वचन तो ज्यांही रह्यो, म्हारी वछा पूरण की हाम। हे०।
ए मनोर्थ पूर्‍यां विना, म्हारे हाथे न लागे काम। हे०॥ १२ ॥
ए वात सहू तुमने कही, अतर न राख्यो कोय। हे०।
हिवे सेठ सुदर्शन तेहने, वेगो मेलावो मोय। हे०॥ १३ ॥
सो वातां एक वात छे, ते कही कठा लग जाय। हे०।
ए लाड पूरे माता मांहरो, तो जाणू साचेली धाय। हे० माय॥ अ० १४ ॥

दुहा

ए वचन सुणे राणी तणा, माथो धूणे छे धाय।
हिवे मीठे वचने राणी भणी, धाय कहे समभाय ॥ ॥ १ ॥

ढाल : १०

[तोरण आयो ए सखी कहिये नेम कुमार]

हिवे राणी नें हो समभावे पडिता धाय, सुणो बाइ चित्त ल्याय।
एक सीखावणा मांहरी जी ॥ १ ॥

इसडी बातां हो बाइ कहे मूढ गिवार, थे राय तणी पटनार।
ए बात थांने जुगती नही जी ॥ २ ॥

ऊचां कुल में हो बाइ थें ऊपना आण, वले थे छो चतुर सुजाण।
ए नीच बात किम काढिये जी ॥ ३ ॥

एक पीहर हो बाइ दूजो सास रो जाण, बिहुं पख चंद समाण।
दोनूं कुल छे थांरा निर्मला जी ॥ ४ ॥

इण वातां हो बाइ लाजे तुम तात, वले लाजे तुम मात।
पीहर लाजे तुम तणो जी ॥ ५ ॥

एहवी बातां हो बाइ लाजे माय मूसाल, निज कुल साह्यो निहाल।
त्यानें लागे घणी मोटी मेहणी जी ॥ ६ ॥

इण बातां हो बाइ लागे कुल ने कलंक, लागे पीढ्यां लग लंक।
ते सुण सुण माथो नीचो करे जी ॥ ७ ॥

सासरिया हो बाइ लाजे अत्यत, सांभल ए विरतंत।
ते पिण नीचो चोगसी जी ॥ ८ ॥

एहवी वातां हो सुणसी बाइ देश विदेश, वले सुणसी राय नरेस।
निंदा करसी सहु तुम तणी जी ॥ ९ ॥

राज माहे हो बाइ थांरी मोटी मांड, होसो जगत मे भाड।
शील विनां इण पलक में जी ॥ १० ॥

शील विनां हो बाई फिट फिट करे लोय, अजस अकीरत होय।
नर नारी मुंह मचकोडसी जी ॥ ११ ॥

पिता सूंपी हो बाइ घणा पुरुषां री साख, तिण पर निश्चो राख।
तिण पुरुष तणी सेवा करो जी ॥ १२ ॥

पर पुरुष हो बाइ जाणो भाई समान, ए सीख म्हारी ल्यो मान।
ज्यूं महिमां बधे थांरी जगतमें जी॥ १३ ॥

ज्यू सोभे हो बाइ चंद्रमा सूं रात, तिम नारी नी जात।
शील थकी सोभे घणी जी ॥ १४ ॥
नही सोभे हो बाइ नदी जल बिन लिगार, तिम नारी सिणगार।
शील बिना सोभे नही जी ॥ १५ ॥
शील बिना हो बाइ लागे कुल नें कलंक, ज्यूं राजेसर लंक।
तिण कुल नें कलक चढावियो जी ॥ १६ ॥
शील थकी हो सीता हुइ गुणवत नार, ते गइ जन्म सुधार।
कुल निर्मल कर आपणो जी ॥ १७ ॥
शील विना हो बाइ जसोधरा नार, तिण कत ने म्हाखो मार।
मरने छठी नरके गई जी ॥ १८ ॥
शील थकी हो बाइ बध्यो द्रोपदी नो चीर, पाल्यो शील सधीर।
तिण जन्म सुधास्यो आपणो जी ॥ १९ ॥
शील विना हो बाइ घणा नर नार, ते गया जमारो हार।
पडिया छे नरक निगोद मे जी ॥ २० ॥
शील थकी हो बाइ घणा नर नार, ते गया जन्म सुधार।
त्यारी जस कीरत छे लोक मे जी ॥ २१ ॥
शील थकी हो थारी मोती जिसी आब, ते पिण उतरसी सताव।
शील बिना एक पलक मे जी ॥ २२ ॥
ऐसो सील हो बाइ पालो मन चित्त ल्याय, पाछो मन समझाय।
वछा तजो पर पुरुष नी जी ॥ २३ ॥
म्हारी मती सू हो बाइ सीख द्यू छू तोय, निज कुल साह्मो जोय।
पुरुप परायो परहरो जी ॥ २४ ॥

दुहा

ए धाय वचन राणी सुणी, मूल न मानी बात।
इहलोक ने परलोक सूं, डरी नही तिलमात ॥ १ ॥
आशा अलूधी हू रहू, जो हू वस न करूं सेठ।
तो कपिला वचन ऊचो रहे, म्हारो वचन रहे हेठ ॥ २ ॥
हिवे राणी कहे छे धाय ने, थे वचन कह्या ते न्याय।
पिण सेठ सुदर्शन तेह बिना, मोसू रह्यो न जाय ॥ ३ ॥
सेठ सुदर्शन सू सुख भोगवी, म्हारो ऊपर आणू वोल।
ज्यू कपिला ब्राह्मणी तिण कने, रहे हमारो तोल ॥ ४ ॥

वचन काजे बडा बडा राजवी, करे अनेक अकाज।
तो एक अकारज करतां थकां, मोनें किसी छे लाज॥ ५॥

ढाल : ११

[तोरण आयो हे सखी कहि०]

वचन काजे हो धाय जी, हरिश्चंद्र वड वीर।
भरियो डूम घर नीर, नीच तणी सेवा करी जी॥ १॥

वचन काजे हो श्री लछमन ने राम, ज्यांको प्रसिद्ध नाम।
बारे वर्ष वन में रह्या जी॥ २॥

वचन काजे हो धाय जी हनुमंत वड वीर, गयो लंका नी तीर।
सीताजी रे सदेशडे जी॥ ३॥

राम दियो हो बभीखण ने लका नो राज, करी रावण को अकाज।
लकपति बभीखण ने थापियो जी॥ ४॥

पांचू पांडू हो धाय जी वचना के काज, गया जब हारी ने राज।
नगर वेराट सेवा करी जी॥ ५॥

वचन चूको हो त्यांरी न रही जी शर्म, इणरो तो ओहिज मर्म।
ज्यूं हूं पिण खपूं म्हारा वचन ने जी॥ ६॥

एहवा वचन हो राणी ना सुणनें जी धाय, फेर बोली वली वाय।
इसडी वेठाइ बाइ मत करो जी॥ ७॥

एहवा वचन हो बाइ सुणसी श्री महाराज, तो थासी वडो अकाज।
मोत कुमोत कर मारसी जी॥ ८॥

ओर सगला हो बाइ लागा थांरे प्रसंग, त्यांरो पिण होसी भंग।
इण बाता में सांसो को नही जी॥ ९॥

तिण कारण हो बाइ कहूं छूं ताय, निज मन ल्यो समझाय।
ग्रही टेक पाछी परहरो जी॥ १०॥

जब राणी हो कहे सुण मोरी तूं धाय, सेठ विण रह्यो न जाय।
बात साची तुमने कही जी॥ ११॥

सेठ नें हो धाय तुम ल्यावो छिपाय, ज्यूं नही जाणे राय।
पाछो पिण छाने पोहचावज्यो जी॥ १२॥

छाने आण हो छांने दीज्यो पोहचाय, तो किम जाणसी राय।
थे चिंता करो किण कारणे जी॥ १३॥

धाय भाखे हो छानी किम रहसी वात, राय करसी तुम घात।
ए बात छिपाई नही छिपे जी॥ १४॥

पर पुरुष हे बाइ जाणो लसण समान, ते खूणे वेस खाये जाण।
जिहां जावे तिहां परगट हुवे जी ॥ १५ ॥
सेठ चावो हे बाइ चपानगर मभार, थे राय तणी पटनार।
तरे छिपाया किम छिपे जी ॥ १६ ॥
होणहार हो होणो ज्यूं होसी मोरी माय, सेठ ने ल्यावो वेग बोलाय।
नही तो कंठ कटारी पहरी मरु जी ॥ १७ ॥
धाय रोवे हो सुण राणी रा वेण, आंसूडा नाखे छे नेण।
कर मसले माथो धूणती जी ॥ १८ ॥
मोटा कुल में हो इसडी हुवे बात, जब किहा थी हुवे बात।
कोई विघ्न होसी इण राज में जी ॥ १६ ॥
पूर्व सच्या हो उदे आया दीसे पाप, उपनो एह संताप।
सुख माहे दुख उपनो घणो जी ॥ २० ॥

दुहा

हिवे धाय करे विचारणा, इण मूल न मानी बात।
जो नही ल्याऊ सेठ ने, तो राणी करे अपघात ॥ १ ॥
तो हिवे ल्याऊ सेठ ने, करने अनेक उपाय।
तो राणी कुसले रहे, पछे बणसी ते बण जाय ॥ २ ॥
एहवी करे विचारणा, कहे राणी न तास।
थें चिंता मूल करो मती, हू सेठ ल्याऊ तुम पास ॥ ३ ॥
जब राणी कहे इण काम री, ढील न कीजो काय।
सेठ विना एका घडी, मोसूं रह्यो न जाय ॥ ४ ॥

ढाल : १२

[म्हारी सासू रो नाम छे फूली]

धाय कहे तू काम आतुरी, तू भोली दीसे छे पूरी।
सेठ नही छे कपडो किराणू, मोल ले तो आगे आणू ॥ १ ॥
सेठ किम मानसी म्हारी बात, तुरत किम आवसी म्हारी साथ।
दस दिन मन राखो ठाय, सेठ ने ल्याऊ करे उपाय ॥ २ ॥
दस दिन रो राणी दूओ दीधो, जब धाय बीडो भाली लीधो।
हिवे धाय तिहां थी हाली, सेठ ना घर साहमी चाली ॥ ३ ॥
धाय आइ छे सेठ आवास, फिरे छे तेहने आस पास।
धाय करे अनेक उपाव, सेठ ऊपर खेले डाव ॥ ४ ॥

सेठ नें पकड़वानें करे डाव, पिण महलां न दीसे लगाव।
एकदा सेठ बाहिर जावे, धाय देखीनें साह्मी आवे ॥ ५ ॥
सेठ पर नारी साह्मो न जोवे, आगे हर कोंइ नारज होवे।
आगे कपिला तणा चरित्र देख, नारी जात सूं डरे विशेख ॥ ६ ॥
पर नारी सूं न करे बात, तिणसूं बोले नहीं तिलमात।
वले न करे किणरो सग, त्यांसूं होय गयो मन भंग ॥ ७ ॥
नारी जात सूं हुवो उदास, किणरो ई न करे विस्वास।
ओपरी स्त्री घर माही, किणनेइ आवा दे नाहीं ॥ ८ ॥
तिणसूं सेठ तणा घर माही, धाय पिण आय सके नाही।
धाय करे विमासण तास, सेठ करतो न दीसे विश्वास ॥ ९ ॥
इणनें बोलाऊ तो बोले नाही, ओर दाव न लागे कांइ।
धाय करवा लागी संताप, म्हारे उदे हुवा दीसे पाप ॥ १० ॥
इम काल कितोएक बीतो, सेठ रहे छे नारी सू बीहतो।
परब रो सेठ करे उपवास, राते रह्यो मसाण मे वास ॥ ११ ॥
सेठ ने धाय जातो देख, आतो हर्षित हुई विशेख।
अबे सेठ ने बांधे उठाय, मेल देसू राणी पे जाय ॥ १२ ॥
आतो सहल घणी छे बात, पिण राणी आडी पोल सात।
बेठा रहे पोलिया जेह, पुरुष जावा न देसी तेह ॥ १३ ॥
जो सात पोलिया मे एक देखे, तो म्हारी हुवे खराबी विशेखे।
जो राय जाणे म्हारी बात, तो कर नाखे म्हारी घात ॥ १४ ॥
तो एहवो करू उपाय, पोल पोलिया वस करू उपाय।
त्यांने भर्म मे देऊ भूलाय, उलटा डरे मोसू ताय ॥ १५ ॥

दुहा

एहवी करे विचारणा, गइ कुभार ने गेह।
हिवे धाय कहे कुभार ने, एक माहरी बात सुणेह ॥ १ ॥

ढाल : १३

[सोरठा की]

कहे राणी लियो पतिव्रत रे, पुरुष पूजी भोजन करे।
ते पिण करे अर्द्ध रत्त रे, अन्न पाणी एक टक लिये ॥ १ ॥
गार तणा पूतला सात रे, करजे हलका फूलसा।
जाणे पुरुष साख्यात रे, ज्यूं दाम देसूं तोने रोकड़ा ॥ २ ॥

ए वचन कियो प्रमाण रे, तुरत किया तिण पूतला।
ते सूप्या धाय ने आण रे, जब धाय देख हर्षित हुई ॥ ३ ॥
एक लेई पूतलो धाय रे, आय पेली पोल उभी रही।
जब रोकी पोलिये आय रे, कहो नारी तुमे कवण छो ॥ ४ ॥
जब धाय बोली छे आम रे, हूं धाय राणी अभिया तणी।
पडिता म्हारो नाम रे, ओ पुरुष छे गार को ॥ ५ ॥
राणी लियो पतिव्रत रे, पुरुष पूजी भोजन करे।
एक टक करे छे निरंत रे, अन्न पाणी लेवे अध रात रो ॥ ६ ॥
पोलियो बोल्यो तिण वार रे, ओ तो पुरुष साख्यात छे।
हू नही मूढ गिवार रे, तूं पुरुष ले जाय पाखड करे ॥ ७ ॥
जब बोली धाय रीसाय रे, सुण रे मूर्ख पोलिया।
पूतलो पटक्यो ताय रे, खंड खंड तिण आगे किया ॥ ८ ॥
बले बोली धाय रीसाय रे, ते व्रत राणी तणों खडियो।
कहसूं राणी ने जाय रे, जब जीवां मरासूं तो भणी ॥ ९ ॥
ए वचन सुणे तिण वार रे, पग पकड्या तिण धाय नां।
माता करो उपगार रे, ए गुण कदेय न वीसरूं ॥ १० ॥
इण विध पूतलो आण रे, प्रथम पोलियो वस कियो।
इम सातूंई जाण रे, धाय किया वस आपणे ॥ ११ ॥
एहवो चरित्र वणाय रे, पोलिया सातू वस किया।
धाय ने कोई अटके नही ॥ १२ ॥

दुहा

पोलिया सांतू बस किया, हुइ नचिंती धाय।
हिवे सेठ खांधे बेसाण ने, मेलूं राणी ये जाय ॥ १ ॥

ढाल : १५

[सल्य कोई मत राखज्यो]

ज्यूं दूध देखी मंजारिका, फिरे छे उली सोली रे।
ज्यू सेठ सुदर्शन ऊपरे, धाय आय फिरे छे दोली रे।
धिग धिग काम विटंवणा* ॥ १ ॥
इण रीते धाय फिरतां थकां, नीठ जोग मिल्यो छे आयो रे।
अशुभ कर्म उदे हुवा, किणसूं मेट्या न जायो रे ॥ धि० २॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सेठ निर्भय बेठो मसाण में, घोर रुद्र बिहामणी जायगां रे।
वाजे रात डरावणी, दुष्ट जीव ते बोलवा लागा रे॥ ३॥
एहवा शब्द सुणे सेठ तिण समें, तोहि ध्यान थकी नही चूके रे।
दृढधर्मी दृढ आत्मा, लीधा नेम न मूंके रे॥ ४॥
मेरु चले पृथ्वी चले, चल जावे चंद नें सूरो रे।
पिण सेठ चले नही धर्म थी, प्रिय धर्मी छे पूरो रे॥ ५॥
रात समें तिण अवसरे, सेठो रह्यो धर ध्यानो रे।
तिण काले धाय पंडिता, आइ सेठ कनें धर मानो रे॥ ६॥
साहसीकपणे धाय पंडिता, सेठ नें लीधो उठायो रे।
खांधे बेसाण नें नीकली, आण वेसाण्यो महलां मांह्यो रे॥ ७॥
आय कह्यो राणी अभिया भणी, सुणजो बाइ म्हारी बातो रे।
हूंस थांरी पूरी करो, सेठ ल्याइ कुशलातो रे॥ ८॥
बात सारी कही मांडनें, राणी समीपे धायो रे।
राणी सुण हर्षित हुइ, आनंद अंग न मायो रे॥ ९॥
काया फलफूलित हुइ, विकसी सर्व रोमरायो रे।
धिन दिहाडो धन्य घडी, सेठ आयो महलां मांयो रे॥ १०॥
हिवे सेठ कनें जावा भणी, पहरे आभूषण पूरा रे।
अभिया राणी अति हर्ष सूं, करे सोले सिणगार रूडा रे॥ ११॥

●

दुहा

स्नान मर्दन राणी किया, चोवा चंदन लेप लगाय।
खुसबू विविध प्रकार नी, तिणसूं महक रही छे ताय॥ १॥

ढाल : १५

[सुकोमल साध०]

अभियाराणी रूप अपार, जाणे बिजलनी चमत्कार। सुकोमल लाल।
जाणेक अप्सर सारखी ए॥ १॥
अंग उपंग श्रीकार, किया सोले सिणगार।
जाणेक उभी देवंगणा ए॥ २॥
जोबन बालै वेस, तिण सिर नां गूंथ्या केस।
काया कंचन सारिखी ए॥ ३॥
बाजे झांजर ना झिणकार, त्यांरा शब्द घणा श्रीकार।
ते कानां नें लागे सुहामणा ए॥ ४॥

चालती गज गत गेल, चावती नागर वेल।
जाणेक मुलके अपच्छरा ए॥ ५॥
करे अनेक विध तान, धरती अति अभिमान।
जाणे मो सम नही कोइ कामणी ए॥ ६॥
मे कपिला ने कह्यो साख्यात, ओ सेठ कितियक वात।
ते वचन म्हारो सफलो करु ए॥ ७॥
एहवो मन मे करती हगाम, अभिया राणी छे म्हारो नाम।
तो हू सेठ थकी सुख भोगवूं ए॥ ८॥
छांटती सुगंध सुवास, मन माहि अधिक हुलास।
अभिया राणी चाली अति हर्ष सूं ए॥ ९॥
हाथ मे लीधी फूल माल, ओर मेवा विविध रसाल।
सेठ के ताइ लीधो भारी भेटणो ए॥ १०॥
देव देवी री बोलती जात, म्हारी सफल करो ए वात।
समरण करती कुल देव रो ए॥ ११॥
इण विध आइ सेठ पास, बोलती वचन विलास।
नयण निहाली देखे सेठ ने ए॥ १२॥
सेठ तणो रूप देख, मोह रही छे विशेख।
निजर न खडे तेहसूं ए॥ १३॥
भोग भोगव सूं आज, पूरूं मन वंछित काज।
सेठ थकी सुख भोगवी ए॥ १४॥
अभिया राणी छोडी निज मान, दियो घणो सनमान।
सेठ सूं अभियाराणी वीनवे ए॥ १५॥
हूं अभियाराणी छूं एह, म्हारो लागो छे थांसूं नेह।
तिण सूं धाय ले आइ छे आपने ए॥ १६॥
म्हारो धिन दिहाडो छे आज, महलां पधास्या छो राज।
सफल जमारो कियो हम तणो एं॥ १७॥
आगोत्तर * सुख ने काज, तपस्या करो छो राज।
ते तप तुमारो इहाई फल्यो ए॥ १८॥
म्हासूं भोगवो भोग रसाल, जोवो नयण निहाल।
आवतो जन्म किण देखियो ए॥ १९॥
आ मानो म्हारी अरदास, भोगवो भोग विलास।
आशा पूरो आज माहरी ए॥ २०॥
हुं छूं तुमारी दास, मोने यूंही म राखो निराश।
आ अरज मानो अभिया तणी ए॥ २१॥
ए नीठ मिल्यो छे जोग, आप भोगवो मोसूं भोग।
जन्म सफलो करो माहरो ए॥ २२॥
हू धन पिण देसूं अपार, हीरा रत्न जुहार।
कुमी न राखं किण वात री ए॥ २५॥

आ बोली वचन अनेक, पिण सेठ न मानी एक।
वले चूको नही धर्म ध्यान सूं ए ॥ २६ ॥

●

दुहा

अभिया ऊभी रंग भर, सेठ सुदर्शन पास।
काम किलोल करती थकी, करे घणी अरदास ॥ १ ॥
सेठ ध्यान पूरो करी, देखे नयन निहाल।
चरित्र देख अभिया तणा, सेठ कप्यो तत्काल ॥ २ ॥
ओ उपसर्ग मोटो ऊपनो, मन गमतो परीसो जाण।
जब सेठ मन गाढो कियो, जाणेक मेरू समान ॥ ३ ॥
गमतो परीसो अस्त्री तणो, सहिवो घणो दुलभ।
दृढ परिणामी पुरुष ने, सहिवो घणो सुलभ ॥ ४ ॥
गमता अण गमता बेहू, उपसर्ग उपजे आय।
जब शूर पुरुष साह्मा मडे, कायर भागी जाय ॥ ५ ॥
भव स्थिति पाकी जेहनी, वले पतलो मोह कर्म।
त्यांने सहिवो सोहिलो, ते किम छोडे जिनधर्म ॥ ६ ॥
अभिया ऊभी देखने, सेठ थयो सावधान।
शील तणा गुण चिंतवे, ते सुणो सुरत दे कान ॥ ७ ॥

ढाल : १६

[वीर सुणो मोरी वीनती]

सेठ इसो मन चिंतवे, शील व्रत हो व्रतां मे प्रधान।
तिण शील थकी सुद्ध गति मिले, अनुक्रमे हो पामे मुगत निधान। सें० ॥ १ ॥
ग्रहं नक्षत्र तारां ना वृंद मे, घणो सोभे हो मोटो जिम चद।
रत्नां मे वैडूर्य मोटको, फूला में हो मोटो फूल अरविंद।
ज्यू व्रतां मे शील व्रत बडो ॥ २ ॥
रत्नां रा आगर में समुद्र बडो, आभूषण मे हो माथा रो मुकट।
वस्त्र मांहे क्षोम वस्त्र मोटको, नदियां मांहे हो सीता नो पट ॥ ३ ॥
इत्यादिक शील व्रत ने ओपमा, सूत्र मे हो जिन भाषी बत्तीस।
ए व्रत चोखे चित्त पालसी, तिणरी करणी हो जाणो विश्वावीस ॥ ४ ॥
शील थकी संकट कटे, शील थकी शीलल हुवे आग।
शील थी सर्प न आभडे, शील थकी हो वाधे जस सोभाग ॥ ५ ॥

शील थी विष अमृत हुवे, शील सेती हो देवे समुद्र थाग।
वाघ सिंघ टले शील थी, शील पाले हो तेहनो मोटो भाग ॥ ६ ॥
सुर नर देव सेवा करे, सूली सेती हो सिंघासण थाय।
अनेक विघ्न टले शील थी, शील रा गुण हो पूरा कह्या न जाय ॥ ७ ॥
शील थकी अनेक जीव उद्धर्या, कहिता कहिता हो त्यांरो नावे पार।
इण शील थकी चूका तिका, जाय पडिया हो नरक निगोद मझार ॥ ८ ॥
तो हू पिण नही चूकूं शील थी, इण सरीखी हो नारी मिले अनेक।
जो आवे इंद्र नी अप्सरा, तो पिण नही हो छोडू धर्म नी टेक ॥ ६ ॥

●

दुहा

इण उपसर्ग थी हू बचू, तो लेसू संजम भार।
घर थापे निज पूत ने, तो कर देऊं खेवो पार ॥ १ ॥
एहवो अभिग्रह आदरी, साहसीकपणो मन आण।
सूर वीर सुद्ध परिणाम सू, त्यारी कदेय न पलटे बाण ॥ २ ॥
अभिया काम आतुर थइ, ऊभी सेठ रे पास।
वचन विषय रा बोलती, वले करे घणी अरदास ॥ ३ ॥
वचन सुणी अभिया तणा, सेठ पकडी छे मून।
आ विषे री बाही थकी, बोले घणी जबून ॥ ४ ॥
अभिया चरित्त किया घणा, वले करी अनेक विध तान।
वचन बाण बाह्या घणा, पिण सेठ न छोड्यो ध्यान ॥ ५ ॥
सेठ ध्यान मे देखने, अभिया छोडी लाज।
अंग सूं अंग भीडी लियो, गिणे न काज अकाज ॥ ६ ॥
सेठ ने अंग सूं भीडियो, पिण डिग्यो नही तिल मात।
दोय मास तणा बालक भणी, जाणेक फरस्यो मात ॥ ७ ॥

ढाल : १७

[जी हो धन्नो ने सालभद्र दोय साधु०]

अभिया राणी वारूंवार, करे विकलाइ अति घणी जी।
विषे अंध हुइ तिण वार, तिणरे ममता लागी विषे तणी जी।
जी हो सेठ सुदर्शन ताम, तिण दृढ कर लीधी निज आत्मा जी ॥ १ ॥
सेठ ने नही छोडे ताम, अलगी न हुवे तेहसूं जी।
तिणरे विषे सेवारा परिणाम, गाढी लाग रही तिणरी देह सू जी ॥ २ ॥

हिवे सेठ करे रे विचार, ए काई होय जासी कामणी जी।
ए आपेइ जासी हार, ए कांई करेला माहरो भामणी जी ॥ ३ ॥
ए आय बणी छे मोय, ते कायर हुवां किम छूटिये जी।
होणहार जिम होय, मो अडिग ने कहो किम लूंटिये जी ॥ ४ ॥
ए प्रत्यक्ष काम नें भोग, मोनें लागे छे वमिया आहार सारिखा जी।
तो हूं किम करूं भोग संजोग, मोनें मुगत सुखां री आइ पारिखा जी ॥ ५ ॥
जो हूं करूं राणी सूं प्रीत, तो हूं कहूं कर्म बांधे जाऊं कुगत मे जी।
चिहुं गत मे होऊं फजीत, घणो भ्रमण करूं इण जगत मे जी ॥ ६ ॥
मोनें मरणो छे एक बार, आगल पाछल मो भणी जी।
सुख दुख होसी कर्म लार, तो सेठो रहू न चूकूं अणी जी ॥ ७ ॥
आ मल मूत्र तणो भंडार, कूड कपट तणी कोथली जी।
इणमे सार नहीं छे लिगार, तो हूं किण विध पामूं इणसूं रली जी ॥ ८ ॥
अनेक मिले अपछरा आण, रूप करे रलियामणो जी।
त्याने पिण जाणू जहर समान, म्हारे मुगत नगर मे जावणो जी ॥ ९ ॥
इसडी रह्यो सेठ धार, थिर करने मन थापियो जी।
राणी रा चरित्र देख तिण बार, तो पिण काम न व्यापियो जी ॥ १० ॥

दुहा

अभिया राणी देख रंग सेठ नों, चलतो न जाण्यो लिगार।
जब कोपी शीघ्र उतावली, करडा वचन कहे तिण वार ॥ १ ॥

ढाल : १८

[दया भगोती छे सुखदायी]

रीस चढी बोले छे राणी, सुणो सेठ म्हारी बातो जी।
कह्यो हमारो मानी लीजो, जो चावो कुसलातो जी ॥ १ ॥
आशा अलूधी हूं किम रहसूं, मे तुज अठे अणायो जी।
आशा वंछा पूरी करो हमारी, करू थांरो तोल सवायो जी ॥ २ ॥
ए वचन सुणी सेठ नही बोल्यो, जब राणी बोली विकरालो जी।
कह्यो न मानें तूं सेठ हमारो, तो थारो नेडो आयो दीसे कालो जी ॥ ३ ॥
पुरुष सुकोमल हुवे छे हियारो, पिण तूं तो कठण कठोरो जी।
म्हारा वचन सुणीनें तूं न प्रगलियो, तूं तो दीसे निपट निठोरो जी ॥ ४ ॥
प्रगलायो भाटो पिण प्रगले, पिण तूं न प्रगले प्रगलायो जी।
लोक भलो कहे छे तोनें, पिण म्हारे तो मन नही भायो जी ॥ ५ ॥

थोडी सी समझ तो आण हिया मे, कह्यो हमारो मानो जी।
नही तो खुराबी करसू थारी, कर देसूं जाबक हेरानो जी ॥ ६ ॥
हूं वलि वलि वचन कहू छूं तोनें, तू नही माने छे मूली जी।
वांका दिन आया दीसे थारा, तोने तुरत दिरासूं सूली जी ॥ ७ ॥
तूं बोलायो पिण मूल न बोले, थें मुहडो राख्यो छे भीचो जी।
अजेंस कह्यो मान हमारो, नही तो मराऊं तोने कुमीचो जी ॥ ८ ॥
वार वार कहूं छूं सेठ तोने, म्हासूं कर मन मानी प्रीतो जी।
नही तो कूडोई आल देसू तो माथे, करसू लोकां मे फजीतो जी ॥ ९ ॥
इण विध सेठ तणा मुख आगे, विविध वचन कह्या राणी जी।
जाणे पाषाण की मूरत आगे, कहिवा लागी काणी जी ॥ १० ॥
इण विध अगडा झगडा करतां, बीत गइ सर्व रातो जी।
जब राणी पूर्व दिग झाकी, प्रगट हुवो प्रभातो जी ॥ ११ ॥

●

दुहा

पोह फाटी प्रकट थयो, राणी थइ निराग।
सेठ अंग छिटकायने, मूके हिये निसास ॥ १ ॥

ढाल : १६

[खिम्यावत जोय भगवत रो जी ज्ञान]

राणी सेठने छोडने जी, ऊभी बाहिर आय।
ऊडा निसासा मूंकती जी, लीधी धाय बोलाय।
ए माइ हिवे कीजे कवण उपाय*॥ १ ॥
सेठ नपुंसक नीकल्यो जी, तिणसूं सर्‍यो नही कोइ काज।
लेणा सूं देणे पडी जी, वले उलटी खोइ लाज ॥ २ ॥
हरत परत दोनू गइ जी, विगड गइ सर्व वात।
ए वात राय जो साभले जी, तो तुरत करे म्हारी घात ॥ ३ ॥
वले आंख्या आंसूं नांखती जी, करे घणो सताप।
आ वात थाल किम बेससी जी, म्हारे कवण उदे हुवा पाप ॥ ४ ॥
म्हारी सुध बुध तो दोनू गई जी, वले घट्यो पुन्याइ रो जोर।
ए सुख माहे दुख ऊपनो जी, वले उलटो लागो रोग ॥ ५ ॥
राणी धाय ने वीनवे जी, कही सेठ तणी सहु वात।
हिवे सेठने बाहिर काढिये जी, ज्यू हुवे कुशलात ॥ ६ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ए बात सुणी राणी तणी जी, बोली पडिता धाय।
में तो सीख दीधी घणी जी, पिण थे नही मानी काय॥ ७॥
हिवे रात गइ दिन ऊगियो जी, जाग्या नगरी ना जी लोग।
सेठ बारे ले जाणको जी, नही अवारूं जोग॥ ८॥
तो सोभा रहे आपणी जी, कोइ एहवो करो उपाय।
ज्यूं भूठो जाणे सेठने जी, अवगुण न जाणे तो मांय॥ ६॥
धाय वचन राणी सुणी जी, फाड्यो महमद चीर।
लट्टी विखेर कस तोडने जी, नयणा नाखे नीर॥ १०॥
वले अंग विलूख्यो आपरो जी, मुख सू करती जी सोर।
चोकी पोहरायत किहा गया जी, वेगा आवज्यो दोर॥ ११॥
पोहरायत आया सताव सूं जी, सुण राणी नो जी सोर।
किण कारण म्हांने तेडिया जी, पूछे वेकर जोड॥ १२॥
ओ सेठ सुदर्शन पापियो जी, तिण मुझसूं कियो अति जोर।
ओ किण मारग होय आवियो जी, वले बोली वचन कठोर॥ १३॥
म्हारो अग विलूरी कस तोडनें जी, फाड्यो महमद चीर।
हिवे घणी बात केही कहू जी, मे राख्यो शील सधीर॥ १४॥
ए बात कहो सहु रायने जी, ज्यूं करे सेठ नी जी घात।
वले अर्ज न माने केहनी जी, जेज न करे खिण मात॥ १५॥
ए बात सुणी राणी तणी जी, राज लोक मे थयो हाहाकार।
दास दासी मिलने सहु जी, राजा सूं करी पुकार॥ १६॥

दुहा

ए बात सुणी राय कोपियो, तीन लीहटी चाढ निलाड।
इण सेठ सुदर्शन ने मारवा, किण विध देऊं प्रहार॥ १॥
प्रसिद्ध सूली देऊ एहने, नर नारी देखे तिण ठाम।
तो राय अतेउर तेहमे, कोइ न करे एहवो काम॥ २॥
राय नफर विदा किया, ते गया सेठ रे पास।
अंग उपग मरोड नें, गाढो बांध्यो सेठ ने तास॥ ३॥
ए बात सुणी छे सेठ नी, सारा नगर मझार।
इचरज मोटो ऊपनो, हुवो घणो हाहाकार॥ ४॥
नगर लोक भेला थई, ते करे माहोमाहिं बात।
राय सेठ सूं कोपियो, करसी सेठ नी घात॥ ५॥

मांहोमांही बातां करे, सहुको करे विचार।
सेठ महा गुणवंत छे, शील न खडे लिगार ॥ ६ ॥
पूर्व कर्म सन्च्या तिके, उदे हुवा छे आय।
ते खबर नही छे आपा भणी, जाणे श्री जिनराय ॥ ७ ॥
तो आपे मिली सहु एकठा, गाढी मन मे धार।
राय समीपे जायने, प्रसिद्ध करां पुकार ॥ ८ ॥
मतो करे सहु नीकल्या, गया राजा के पास।
कर जोडी राजा कने, करे सेठ तणी अरदास ॥ ९ ॥

ढाल : २०

[ते किम तिरसी संसार में]

राजद हो राजद, अर्ज सुणो एक मांहरी।
म्हे विनवा सहर नां लोग, कोप निवारीने सांभलो।
एक अर्ज सुणवा जोग। रा० अ०*॥ १ ॥
सेठ महा गुणवत छे, नगर तणो अगवाण।
तिण घर नारी पिण परिहरी, पर त्रिया मात समान ॥ २ ॥
पूर्व थकी पश्चिम दिशे, कदाच ऊगे भाण।
तो पिण सेठ शील थी न चले, जो जावे निज प्राण ॥ ३ ॥
कदा मेरु चलायो पिण चले, कदा शशि मूंके अगार।
तो पिण सेठजी शील थी, चले नही लिगार ॥ ४ ॥
कदा गंगा ही उलटी वहे, सायर लोपे कार।
तोही सेठ शील थी नही चले, व्रत पाले एक धार ॥ ५ ॥
ग्रह नक्षत्र तारा मझे, चद सोभे श्रीकार।
ज्यूं सेठ सुदर्शन सोभतो, चपा नगर मझार ॥ ६ ॥
परिवार कर पूरो घणो, भली भार्या री जोर।
दाता रो सिर सेहरो, शीलवंता सिर मोर ॥ ७ ॥
पर उपगार मे आगलो, पर दुख भंजण वीर।
गुणग्राही अवगुण तजे, जिन धर्म माहे धीर ॥ ८ ॥
देश प्रदेशा मे दीपतो, सोभागी सतवत।
जाति कुल कर निर्मलो, वड भागी पुण्यवत ॥ ९ ॥
पूर्व कर्म इण सेठ रे, उदे हुवा छे आय।
ते खबर नही छे म्हा भणी, जाणे श्री जिनराय ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

नगर तणा लोकां मिली, किया सेठ तणा गुणगान।
जो इणमें अवगुण हुवे, तेहना लोक जमान ॥ ११ ॥
आप छो मोटा राजवी, मोटा छो सूर वीर।
प्रजा सारी इम वीनवे, माफ करो तकसीर ॥ १२ ॥
सेठ सरीखो थांरा राज मे, हुवो न होसी होय।
मार्‍या पछे पिछतावसो, थे कहसो कह्यो न कोय ॥ १३ ॥
चंद सरीखो सेठ निर्मलो, नगर तणो सिणगार।
बारूंबार प्रजा वीनवे, म्हांरी अर्ज करो अंगीकार ॥ १४ ॥

●

दुहा

प्रजा तणी सुण वीनती, अधिक कियो मन रोस।
देखो प्रजा इम कहे, नही सेठ मे दोष ॥ १ ॥
कहो वात किम मानिये, ए प्रत्यक्ष पकड्यो चोर।
एह प्रजा छे बावली, करे अणहुंतो सोर ॥ २ ॥
प्रजा नें राजा निषेधतो, बोल्यो अति ही रूठ।
सेठ चोर साख्यात छे, थे क्यू बोलों छो भूठ ॥ ३ ॥
भूठा ने साचो करो, आ किहां की रीत।
थें घर जावों आपणे, नही तों होसो फजीत ॥ ४ ॥
जब नगर लोक पाछा फिर्‍यां, न सरी गरज लिगार।
प्रजा तणो सारो नहीं, चाल्या मूंह विगार ॥ ५ ॥
गाढे-बंधण बांधी सेठ ने, पकड माथा नां केश।
राज-पंथ ले चालिया, राजा तणे आदेश ॥ ६ ॥
नगरी में दुख हुवो घणो, वले हुवो घणो संताप।
सेठ तणो दुख देखनें, प्रजा करे विलाप ॥ ७ ॥

ढाल : २१

[विनय करीजे वाइ विनय करीजे]

सेठ मांहें दुख हुवो अति ही करूरो रे, नगरी तणी प्रजा रही भूरो रे।
हाहा रे राय ते यो स्यूं कीधो रे, उत्तम पुरुष नें एसो दुख दीधो रे ॥हा०१ ॥
नगर लोक बोले एहवी वाणी रे, सेठजी तो छे उत्तम प्राणी रे ॥ २ ॥
विलखा थया नगर तणा नर नारी रे, हाट बाट सूनी थई सारी रे ॥ ३ ॥
दिन दोय हुवा छे बिन अन्न पाणी रे, गाढे बंधण बांध्यो छे खांच ताणी रे ॥ ४ ॥

केश खांची नें राज पंथ ले चाले रे, ते दुख बहु जणा ने साले रे ॥ ५ ॥
सेठ ने काढे छे नगर मझारी रे, तिणने देख रोवे नर नारी रे ॥ ६ ॥
वचन कठोर बोले राज दिवाणो रे, जाणेक लागा छे तीखा वाणो रे ॥ ७ ॥
मार मार करता आया सेठ रे पासो रे, देख मनोरमां करे पुकारो रे ॥ ८ ॥
देख्यो मनोरमा सेठ तणो सूलो रे, छटक पडी धरती बेभूलो रे ॥ ९ ॥
करे विलाप नें मसले हाथो रे, कुण दुख हुवो त्रिभुवन नाथो रे। १० ॥
मनोरमा जाणे सेठ सुद्ध ब्रह्मचारी रे, तिणरे तो शंका न पडे लिगारी रे ॥ ११ ॥
कुण विघ्न हुवो आज एकंतो रे, मुझने कहो सहु विरतंतो रे ॥ १२ ॥
सेठ कहे सुण मनोरमा नारी रे, पूर्व पाप कियो मे भारी रे ॥ १३ ॥
ते पाप उदे आया अब म्हारो रे, भुगत्या विन नही छुटकारो रे ॥ १४ ॥
इण बात रो किणनें नही दीजे दोषो रे, वले किणसूंइ न करणो रोषो रे ॥ १५ ॥
तुम्हे चिंता म करो म्हारी लिगारो रे, म्हारो न हुवे मूल बिगारो रे ॥ १६ ॥
हू शील प्रभावे कुशले घर आऊं रे, जब थांने बीती बात सुणाऊं रे ॥ १७ ॥
इम सेठ संतोषी मनोरमां नारी रे, ते सुण संतोष पामी मन मझारी रे ॥ १८ ॥
सेठ नें पिण संतोषे मनोरमा नारी रे, थें पिण मत कीज्यो चिंता लिगारी रे ॥ १९ ॥
केवली ए भाव दीठा जिम हुसी रे, थें पिण राखज्यो घणी खुसी रे ॥ २० ॥
दुख हुवे छे पूर्व सचित कर्मो रे, थे पिण गाढो राखज्यो जिन धर्मो रे ॥ २१ ॥
इम सीख देईं मनोरमा नारी रे, पाछी आइ घर मझारी रे ॥ २२ ॥
काउसग्ग कियो महलां मे जाइ रे, धर्म ध्यान रही चित्त ध्याइ रे ॥ २३ ॥
सेठ कुशले खेमे घर आवे रे, ते मुझ काउसग्ग आय परावे रे ॥ २४ ॥
तो हूं काउसग्ग पारू जाणो रे, नहितर जावजीव पच्चखाणो रे ॥ २५ ॥
काउसग्ग कियो मनोरमा नारी रे, तिण एहवो अभिग्रह मन धारी रे ॥ २६ ॥
तिहां थी सेठ नें आगो ले जावे रे, तिण बेला मे कुण छोडावे रे ॥ २७ ॥
नगर ना लोक देखे तिण काले रे, नर नारी चढी चोबारे निहाले रे ॥ २८ ॥
अलाणा अधाणा पड्या सारा शहर माहि रे, सेठ रो दुख देख्यो न जाइ रें ॥ २९ ॥
महल चढी अभिया राणी देखे रे, सेठ दुख देखी हर्षे विशेखे रे ॥ ३० ॥
हरखे अभिया राणी घडी दोय च्यारो रे, पछे साच भूठ होसी निस्तारो रे ॥ ३१ ॥
ज्यूं हरखे ज्यूं रोवणो पडसी रे, वले भूंडी कुमीचे मरणो पडसी रे ॥ ३२ ॥
ओर हर्षे त्यानें विलखो होणो पडसी रे, वले मस्तक पिण नीचो करसी रे ॥ ३३ ॥
वले विलखा होय रोवे छे त्यांने रे, सुख साता होय जासी यांने रे ॥ ३४ ॥
साच भूठ रो जब होसी निकालो रे, अब कर देसी केइ मुख कालो रे ॥ ३५ ॥
केइ फलफूल होसी तिण काले रे, सेठ नां गुण हिये सभाले रे ॥ ३६ ॥
मार मार करता ले गया मसाणो रे, सेठ ने ऊभो कियो सूली कने आणो रे ॥ ३७ ॥

दुहा

तिहां राय तणा हुकम तणी, वाट जोवे तिण वार।
राय नफर सुसता थया, कांइ ढील करी छे लिगार॥ १॥
तिण काले तिण अवसरे, सेठ चितवे एम।
म्हारे अशुभ कर्म उदे हुआ, हिवे काची आदरू केम॥ २॥
सुख दुख तो ससार मे, सब काहूको होय।
ग्यानी भुगते ग्यान कर, मूर्ख भुगते रोय॥ ३॥

ढाल : २२

[साधुजी नगरी आया सदा भला जी]

सेठ सुदर्शन करे छे विचारणा रे, ऊभो सूली रे हेठ।
कर्म तणी गति बांकडी रे, ते भोगवणी मुझ नेठ॥ १॥
किहां अभिया राणी राजा तणी रे, किहां हूं सुदर्शन सेठ।
किहां हूं मसाण भूमिका मांही रह्यो रे, किहा हूं आय ऊभो सूली हेठ॥ २॥
इण चंपा नगरी में हूं मोटको रे, ते हूं सुदर्शन सेठ।
म्हारा बांधा पाप कर्म उदे हुवा रे, तिणसूं आय ऊभो सूली हेठ॥ ३॥
कर्म सूं बलियो जग मे को नही रे, विन भुगत्यां मुगत न जाय।
जे जे कर्म बाध्या इण जीवडे रे, ते अवश्य उदे हुवे आय॥ ४॥
ज्यूं मे पिण कर्म बाध्या भव पाछले रे, ते उदे हुवा छे आय।
पिण याद न आवे कर्म किया तिके रे, एहवो ग्यान नही मो माय॥ ५॥
के मे चाडी खाधी चोतरे रे, दिया अणहुंता आल।
ते आल अणहुंतो आयो शिर मांहरे रे, निज अवगुण रह्यो छे निहाल॥ ६॥
के मे दोपद चोपद छेदिया रे, के छेदी वनराय।
के भात पाणी किणरा मे रूंधिया रे, के मे दीवी त्यानें अंतराय॥ ७॥
के मे साधु सती सतापिया रे, के मे दिया कुपात्र दान।
के मे शील भाग्या निज पारका रे, के मे साधां रो कियो अपमान॥ ८॥
तीर्थंकर चक्रवर्त्ति छे महा बली रे, बासुदेव नें बलदेव।
त्यारे पिण अशुभ कर्म उदे हुवा रे, जब भुगत लिया स्वयमेव॥ ९॥
मोटी मोटी सतिया थी तेहमें रे, दिखा पड्या छे आय।
वले बडा बडा ऋषिश्वर त्यां भणी रे, कष्ट पड्यो त्यां मांय॥ १०॥
त्यां समे परिणामें परीसा सही रे, पोहता मुगत मझार।
एहवा साधु सती हुवा त्यां भणी रे, सेठ याद किया तिण बार॥ ११॥

जेहने जेहवा कर्मज संचिया रे, तेहवा उदे हुवे आय।
जिण बोंयो छे पेड बंबूल को रे, ते अब किया थी खाय ॥ १२ ॥
तो हूं कर्म भुगतू छू माहरा रे, ते मे बाध्या छे स्वयमेव।
तो हूं आमण दुमण होऊ किण कारणे रे, हिवे किसो करणो अहमेव ॥ १३ ॥

●

दुहा

घोर परीसा खमी करी, पोहता मुगत मझार।
सेठ सुदर्शन तिण समे, एहवा याद किया अणगार ॥ १ ॥
परिणाम किया दृढ आपणा, सेठ महा बड बीर।
भय रहित निर्भय थको, ऊभो सूली नी तीर ॥ २ ॥
वले सेवग राजा ना मेलिया, आया बीजी बार।
सूली देज्यो सेठ ने, म करो ढील लिगार ॥ ३ ॥
तिण काले ने तिण समें, शील सहाइ देव।
आप आपणी ठाम मे, सुख भोगवे नितमेव ॥ ४ ॥
आसण चलिया तेहना, वले अग फुरक्या तिण बार।
अवधि प्रजुज्या तिण समे, सेठ देख्यो तिण बार ॥ ५ ॥
गाढे बधण बाधियो, कष्ट देख्यो तिण बार।
आया आपस मे मिल देवता, करण सेठ नी सार ॥ ६ ॥

ढाल : २३

[म्हारी सासू रो नाम छे फूली]

त्या देवता* किया सिणगार, पहस्या छे आभूषण सार।
मोल मूगा ने हलका तोल, एहवा वस्त्र पहस्या अमोल ॥ १ ॥
काना कुडल झलके विसाल, शिर मुकट बण्यो छे रसाल।
हिये हार विराजे अति नीको, सोभे भाल रत्न तणो टीको ॥ २ ॥
ते आभूषण अति ही झलके, जाणे आभे बिजलिया चलके।
ते आभूषण रमझम बाजे, जाणे आकाशे अवर गाजे ॥ ३ ॥
मिलने आवे देवता सारा, जाणे तूटा आवे अबर सू तारा।
तिहा आया देवतां रा वृद, त्यांरी चिहु दिश फूटी सुगंध ॥ ४ ॥
आकाशे देव दुदुमी बाजे, जाणे आकाशे अवर गाजे।
देव निर्घोप शब्द करंता, आवे छे सहु हर्षता ॥ ५ ॥

आय ऊभा सेठ रे पास, हाथ जोड करे अरदास।
घणो सनमान दीधो छे ताम, करे सेठ तणा गुण ग्राम॥ ६॥
धिन धिन छे तूं ब्रह्मचारी, ते शील पाल्यो एकधारी।
अभिया राणी आगे रह्यो सेंठो, अडिग परिणामां रह्यो बेठो॥ ७॥
उण चाला चरित्र किया अनेक, थारो रोम न चलियो एक।
उण दियो थो शिर आल, ते मे काढण आया निकाल॥ ८॥
तोनें उपसर्ग दियो करूर, तिणसूं आया में अठे जरूर।
शील महिमा बधारण काज, थारी राखवा शर्म ने लाज॥ ९॥
इसडो विश्वास सेठ ने दीधो, सूली पाड सिंहासण कीधो।
सेठ नें बेसाणी तास, ऊंचो कियो गगन आकाश॥ १०॥
सिंघासण रे सोनां रा पाया, हीरा माणक बिचे लगाया।
आस पास मोत्यां री जाली, चिहुं दिश घटारी बनरवाली॥ ११॥
कुभ प्रमाण दिग मोत्या री माला, विचे लटके छे परम रसाला।
सिघासण रो सिखर अति सोहे, देखणहार तणो मन मोहे॥ १२॥
एहवो सिघासण देवा बणायो, सेठ ने तिण ऊपर बेसायो।
आभूषण पहराया श्रीकार, देवता करे जय जयकार॥ १३॥
देवता सेंठ रा गुण गावे, ते लोकां ने शब्द सुणावे।
ओ तो सेंठ बडो ब्रह्मचारी, इणमे कलंक नही छे लिगारी॥ १४॥
अभिया राणी कपट कूड कीधो, तिण आल अणहुतो दीधो।
ते आल उतारण काज, देवता अठे आया छा आज॥ १५॥
सेवग ऊभा छ सेंठ रे पास, सेंठ ने सूली देवण तास।
त्यांनें देवता मारने ताड्या, तिण ठाम थी दूर नसाड्या॥ १६॥
एक नफर न्हासी तिण बार, आय राजा पे कीधी पुकार।
सेंठ तणी मांडे कही बात, तिणमें कूड नही तिल मात॥ १७॥
ए बात सुणने राजा रीसायो, परमार्थ पूरो नही पायो।
तिणसूं राय सेवक ने बोलाय, कहे सेना ने सज करो जाय॥ १८॥

●

दुहा

चउरंगणी सेना सज करी, पाछी आग्या सूंपी आय।
ए वचन सुणी राय सेवगां तणो, हस्ती स्कंध बेठो राय॥ १॥

ढाल : २४

[आस फली रे मेरी आस फली]

तुरत चढ्यो रे राय तुरत चढ्यो, तुरत चढ्यो न लगाइ बार।
चउरगणी सेना लेइ लार ॥ १ ॥
साथे चढ्या राय ने वहु सूर, आगल बाजे रणतूर ॥ २ ॥
दे घूस्यो चाल्यो राजान, मन मे धरतो अति अभिमान ॥ ३ ॥
आगे कर हाथ्या री हलकार, चाल्यो चपा नगर मझार ॥ ४ ॥
जब चंपा नगर तणा नर नार, चढ चोबारा देखे तिण बार ॥ ५ ॥
तेहनें इचरज थयो छे अत्यत, ए कुण विघ्न थासी विरतत ॥ ६ ॥
हिवे राजा नगरी वाहिर आय, सेठ तणो दल देख्यो राय ॥ ७ ॥
जव राय जाण्यो ए सर्व फितूर, त्याने मार करूं चकचूर ॥ ८ ॥
इम जाणी राय आगो चाल्यो धकाय, सेठ तणा दल साह्मो धाय ॥ ९ ॥

दुहा

दोनू दल सनमुख थया, मच्यो महा सग्राम।
इहा शील सहाइ देवता, उहा अभिया केरो स्वाम ॥ १ ॥

ढाल : २५

[नमू अनत चोवीसी]

राजा तणा छूटे, गोला ने बडनाल।
सुभट हलकाऱ्या, बोले सेठ ने गाल ॥ १ ॥
राजा तणा सुभटा, तीर कबाण हाथ लेह।
दल सनमुख बावे, जाणक वर्षे मेह ॥ २ ॥
सेठ तणा दल ऊपरे, राजा तणा छूटे बाण।
कोकाट शब्द करता, पडे बिजली जिम आण ॥ ३ ॥
सूरा सुभट राजा रा, ते हुवा साहस धीर।
सग्राम मे सूरा, कानी कानी लागा वड वीर ॥ ४ ॥
जब देवता देख्यो, राजा तणो सग्राम।
देवता इम जाण्यो, ओ राय लडे वेकाम ॥ ५ ॥
सुदर्शन सेठ री, मे करवा आया छा सहाय।
सेठ शीलवत मोटो, ते नही जाणे राय ॥ ६ ॥

राय नी राणी अभिया, सेठ नें दीधो आल।
तिणसूं मे आया, सेठ तणी करण रूखवाल ॥ ७ ॥
तो कांयक राजा न, देखालां चमत्कार।
हिवे इण राजा ने, त्रास पाडा इण बार ॥ ८ ॥
हिवे देवता मिल ने, विद्या पढी एक आम।
तिणसूं राय नी सेना, मूर्छागत हुइ तिण ठाम ॥ ९ ॥

●

दुहा

सेना सर्व मूर्छित हुई, एक राय ऊभो स्वयमेव।
ते पिण डरते न्हासे गयो, तिणरे लारे हुवा छे देव ॥ १ ॥
जब राजा ने कहे छे देवता, तूं जासी कितियक दूर।
स्वर्ग मृत्यु पाताल छोडां नही, तोनें मार करां चकचूर ॥ २ ॥
जो तूं सेठ सुदर्शन तेहनो, सरणो पडिवजे जाय।
तो जीवा बचे आज म्हा कने, ओर नही छे उपाय ॥ ३ ॥
वचन सुणी देवतां तणा, राय न्हासी गयो सेठ पास।
जाय बेठो सिहासण तले, मूके ऊंडा निसास ॥ ४ ॥

ढाल : २६

[पूज्य नें नमे रे सोभो गुण करे]

सेठ ने नमे रे राजा गुण करे, मूंके छे ऊंडा निसास। सुज्ञानी रे।
वले कर जोडी ऊभो सेठ आगले, राजा सेठ सूं करे अरदास। सु० ॥ से० १ ॥
थे गुण कर गहर गभीर छो, थे छो ब्रह्मचारी सुध मान। सु०।
आज पहलीं मे तुम तणा, कदे अवगुण सुणिया न कान ॥ सु० ॥ से० २ ॥
अभियाराणी कूड कपट सूं, तिण दीधो छे आप शिर आल।
मे कूड कपट न जाण्यो तिण तणो, तिणसूं मे पिण न काढ्यो निकाल ॥ सु० ३ ॥
में वचन सगलां तणो सांभले, हूंतो कोप चढ्यो तत्काल।
हूतो क्रोध सूं अकल बिकल हुवो, तिणसूं किण विध काढू निकाल ॥ ४ ॥
राजलोक सारो आय कूकियो, त्यारी बात लीधी मे मान।
निकाल न काढ्यो इण बात रो, तिणसूं हुवो छूं घणो हेरान ॥ ५ ॥
मे पिण बिना विचार्या आपने, दीधो छे मोटो आल।
सूली देणा माड्यां आपने, विनां काढ्याई नीकाल ॥ ६ ॥
मोने नगरी ना लोकां कह्यो घणो, सेठ मे नही दोष तिलमात।
जब हू क्रोध चढ्यो थो अति आकरो, तिणसूं किणरी न मानी मे बात ॥ ७ ॥

इण चंपा नगरी मे तुम तणी, शील तणी सारां ने परतीत।
पिण में अनाखी थके आपमें, कीधी छे घणी कुप्रीत ॥ ८ ॥
में अपराध कियो घणो आपरो, उपजाई असाता पीर।
ते खमज्यो अपराध सर्व मांहरो, माफ करो म्हारी तकसीर ॥ ९ ॥
आप ब्रह्मचारी सुद्ध मान छो, चलाया नहीं चल्या थे सूर।
पिण अभिया राणी अति पापणी, तिण आल दियो छे कूर ॥ १० ॥
हिवे कृपा करो मो ऊपरे, तो रहे म्हारी शर्म नें लाज।
हूं शरणे आयो छूं तुम तणे, जीवत राखो मोनें आज ॥ ११ ॥
आज जीवां वचूं यां देवतां कनें, ते तो आप तणो उपगार।
आप शरणे आयां नें राखसो, यो गुण कदेय न घालूं विसार ॥ १२ ॥

दुहा

ए वचन सुणे राजा तणा, सेठ वोल्यो तिण वार।
आप गिर धणी छो मांहरा, थें म करो फिकर लिगार ॥ १ ॥
मो आगे ऊभा ए देवता, आप तणी न करे घात।
इण वात री संका राखो मती, डरो मती तिल मात ॥ २ ॥
ए सेठ रो वचन राजा सुणे, आयो मन विश्वास।
ओ सेठ मरावण में नही, तो हूं रहूं सेठ नें पास ॥ ३ ॥
सेठ तणो शरणो पडिवजी, राय वेठो रह्यो तिण ठाम।
करडा वचन कहे छे देवता, घणी रीस करनें तमाम ॥ ४ ॥

ढाल : २७

[चन्द्रगुप्त राजा सुणो]

रुठो शील सहाइ देवता, हुवो छे विगविगाय मानो रे।
करडा वचन मुख उच्चरे, सुण रे धात्रीवाहन राजानो रे। ध्रु० ॥ १ ॥
अपथपथियो तूं खरो, काली अमावस रो जायो रे।
लज्जा नें लक्ष्मी वाहिरो, भूंडा लक्षण तो मांयो रे ॥ २ ॥
कोइ अकाले मरण वंछे नही, तिणरो तूं वंछण हारो रे।
सुध बुध विगडी तांहरी, पुन्न गया परवारो रे ॥ ३ ॥
ओतो सेठ सुदर्शन मोटको, शीले कर शुद्ध ब्रह्मचारी रे।
तिणनें दुख दिया किण कारणे, सूली देवानें कांय कियो त्यारी रे ॥ ४ ॥
हिवे अवगुण वताय तूं सेठ नें, के में करसां थांरी आज घातों रे।
थें सेठ नें थाप्यो कुसीलियो, माने राणी री वातो रे ॥ ५ ॥

सेठ नें दुख दिया घणा, निज नारी नो न लियो मर्मो रे।
सेठ नें सूली देणो मांडियो, इसडा किया थे कर्मो रे॥ ६॥
किणरोई पुत्र हुवे कुसीलियो, तिणसूं डरे घणी मायो रे।
जब सीख न देवे तेहने, लडे सतियां सूं जायो रे॥ ७॥
ज्यूं तूं न्याई ने अन्याई करे, अन्याई ने करे छे तूं न्याई रे।
अभियाराणी चरित्र किया तिके, राजा नें दिया सुणाई रे॥ ८॥
राजा सेठ समीपे बेठां थका, सुणी अभिया राणी री बातो रे।
स्नेह भागो सर्व राय नो, हाथ मसले धूणे माथो रे॥ ९॥
मोनें अभिया राणी इम कह्यो, सेठ आगे शील नीठ राख्यो रे।
तिणनें जाण लीधी कुसीलणी, तिण कपटण कूडो दाख्यो रे॥ १०॥
वले करडा वचन कहे देवता, सुण रे राजा तूं पापी रे।
सेठ शीलवंतो पुरुष छे, तूं तेहनो छे संतापी रे॥ ११॥
जब सेठ कहे देवता भणी, करडा मत बोलो आमो रे।
राजा पिता सम मांहरे, अभिया राणी माता सम तामो रे॥ १२॥
राजा शील चावो कियो मांहरो, तिणसू सुजस फेल्यो ससारो रे।
करडा वचन मत बोलो एहने, म्हांसूं तो कियो राय उपगारो रे॥ १३॥
अभियाराणी इतरी करती नही, तो मुझ गुण चावा हुता नाही रे।
तिणसूं अभिया राणी ने राजा भणी, दुख मत दीज्यो कांइ रे॥ १४॥
ए सेठ वचन सुणने देवता, घणा हर्षित हुवा मन मायो रे।
सेठ ने दुख राय राणी दिया, त्याने दियां सेठ बचायो रे॥ १५॥
आंगुण ऊपर गुण करे, ते विरला इण संसारो रे।
राय राणी' इसडा अजोग सू, इसडो कियो सेठ उपगारो रे॥ १६॥
राय तणीं सेना तिहां, जाबक पडी थी अचेतो रे।
सेठ. . रा कह्या थी देवता, राय री सेना कीधी सचेतो रे॥ १७॥
फूल तणी वर्षा करी देवता, शील महिमा बधारी रे।
निर्घोष शब्द पाड्यो देवता, ओ सेठ बडो ब्रह्मचारी रे॥ १८॥
शील तणी महिमां सुणी, घणा हर्षित हुवा नर नारी रे।
त्यांमें कितलाएक नर नारी रे, हुवा घणा ब्रह्मचारी रे॥ १९॥

●

दुहा

घणी महिमां बधारी देवता, वले किया घणा गुणग्राम।
जब नर नारी हर्षित हुवा, गुणग्राम करे ठाम ठाम॥ १॥

घणा गहणा वस्त्र आपिया, भूषण विविध प्रकार।
सेठ सुदर्शन तेहनें, देवां दिया तिण वार॥ २ ॥
वले करे महोच्छब सेठ नां, जस कीर्ति करे छे ताय।
पछे देव मिली ने तिहां थकी, आया जिण दिस जाय॥ ३ ॥

ढाल : २८

[तीजी बाड हिवे चित्त विचारो]

हिवे सेवग पुरुष बोलायने, कहे छे धात्रीबाहन राय हो लाल।
चंपा नगरी सिणगार ने, म्हारी आग्या सूंपो आय हो लाल।
राय करे महोच्छब सेठ नां* ॥ १ ॥
सेठ तणे घर जायने, दीज्यो वधाई ताय हो लाल।
सेठ तणी अस्त्री तेहनें, दीज्यो सारी बात सुणाय हो लाल॥ २ ॥
ऊंचे शब्द कीज्यो उद्घोषणा, चंपा नगर मझार हो लाल।
गुणग्राम कीज्यो थे सेठ रा, ज्यूं हर्षे सहु नर नार हो लाल॥ ३ ॥
चउरंगणी सेना सजो, पटहस्ती ने सिणगार हो लाल।
ए कारज करो सताबसूं, मत करो ढील लिगार हो लाल॥ ४ ॥
सेवग सुण तिम हिज कियो, पाछी आग्या सूंपी आय हो लाल।
आप कह्यो ते सगलो कियो, ते सुणने हर्षे राय हो लाल॥ ५ ॥
हिवे कर जोडी राजा कहे, सेठ सूं करे अरदास हो लाल।
हूं करूं छूं महोच्छब आपरा, म्हारा मन मे अति ही हुलास हो लाल।
सेठ तणो जग जश बध्यों हो लाल॥ ६ ॥
मे आल दियो थो आपने, वले कीधी मे थांमे कुप्रीत हो लाल।
ते दुख साले छे मो भणी, ते आल उतारू रूडी रीत हो लाल॥ ७ ॥
आ चंपा नगरी तेहमे, वले म्हारा राज मझार हो लाल।
हाल हुकम सर्व आपरो, थारी कोइ न लोपे कार हो लाल॥ ८ ॥
हूं आग्याकारी आपरो, थें राज चलावो रूडी रीत हो लाल।
थें देसो ते हूं खावसूं, मोनें आप तणी प्रतीत हो लाल॥ ९ ॥
हाल हुकम सर्व आपरो, राज तणा धणी छो आप हो लाल।
मन मान्यो कीज्यो सर्व आपरो, आप तणी छे थाप उत्थाप हो लाल॥ १० ॥
जब सेठ सुदर्शन कहे राय ने, आप छो म्हारे पिता समान हो लाल।
आप विना इतरी कुण कहे, पिण एक बात सुणो मोरी कान हो लाल॥ ११ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

मे अभिग्रह लीधो एहवो, राणी उपसर्ग दियो तिण वार हो लाल।
जो इण उपसर्ग थी कुसले रहूं, तो हूं लेऊं संजम भार हो लाल ॥ १२ ॥
तिण उपसर्ग थी हूं कुसले रह्यो, म्हारे लेणो संजम भार हो लाल।
आप कृपा करे दो आगन्यां, में जाण्यो अथिर संसार हो लाल ॥ १३ ॥
अभिया राणी नें धाय पडिता, त्यांरे कह्यो में कियो अकाज हो लाल।
ते खमजो अपराध सर्व मांहरो, वारूबार खमाऊं छूं आज हो लाल ॥ १४ ॥
अभिया राणी नें धाय पंडिता, थांरे आल दियो गिर कूर हो लाल।
ए दोनूं दुष्टण छे पापणी, यांरी जीव काया करूं दूर हो लाल ॥ १५ ॥
जब सेठ सुदर्शन कहे राय ने, एक आप मानो म्हारी बात हो लाल।
तो अभिया राणी नें धाय री, आप दोयां री मत करो घात हो लाल ॥ १६ ॥
अभिया राणी नें धाय पंडिता, यां तो कियो छे म्हांसूं उपगार हो लाल।
यां तो गुण चावा किया मांहरा, चंपा नगर मझार हो लाल ॥ १७ ॥
जो ए म्हांसूं इतरी करती नही, इसडो न जाणता मोय हो लाल।
देवता अठे नही आवता, जस कीर्त्ति न करता कोय हो लाल ॥ १८ ॥
तिणसूं अभिया राणी नें धायनी, यां दोयां री मत करज्यो घात हो लाल।
आ अर्ज मानो आप मांहरी, याने दुख मत देवो तिलमात हो लाल ॥ १९ ॥
ए वचन सुणी राय सेठ नो, राज हर्षित हुवो तिण वार हो लाल।
एहवा आंगुण ऊपर गुण करे, ते तो विरला छे संसार हो लाल ॥ २० ॥

दुहा

हिवे सेठ सुदर्शन तेहने, घरे जावा उपनी मन मांय।
न्यातीलां सूं मिलवा तणी, जब जाण लियो छे राय ॥ १ ॥
जब सेठ सूं राजा कहे, मिलो कुटुंब सूं जाय।
वले मनोरमा स्त्री तणा, पूरो मनोरथ ताय ॥ २ ॥
घरे ले जावण सेठ ने, राय सेना करी तयार।
पट हस्ती ऊपर सेठ ने, बेसाण्यो तिण वार ॥ ३ ॥
पूठे राजा बेठने, चामर लिया निज हाथ।
सेठ ऊपर चामर करे, रूडी रीत नरनाथ ॥ ४ ॥

ढाल : २६

[म्हारी सासू रो नाम छे फूली]

हस्ती चढने चाल्यो नरनाथ, सेठ सुदर्शन रे साथ।
लारे सुभट चाले घणा सूर, आगे बाजा बाजे रणतूर ॥ १ ॥

आगे हाथ्यां री हलकार, चउरगणी सेना छे लार।
आगे चाल्या नेजा नें निसाण, इत्यादिक कर मोटे मंडाण ॥ २ ॥
ते पिण चंपा नगरी मे आवता, सेठ ना सहु गुण गावता।
नगरी नी पोल आयने ऊभा, सहु को लोक हुवा अचंभा ॥ ३ ॥
सेठ ने सहु करे प्रणाम, वले मुख सू करे गुणग्राम।
कहे सेठ वडो ब्रह्मचारी, तिणमे कलंक न दीसे लिगारी ॥ ४ ॥
नर नारी बोले एहवी वाणी, ओ सेठ छे उत्तम प्राणी।
भलो हुवो इण नगरी माह्यो, सेठ कुशले खेमे घर आयो ॥ ५ ॥
गुण गावे सेठ समीपे आय, सुण सुण ने हर्षित थाय।
मन माहिं करे सेठ विचार, ओ तो अभिया राणी तणो उपगार ॥ ६ ॥
चंपानगरी ना मिल नर नारी, गीत गावे छे मगलाचारी।
सेठ ने कुशले आयो देख, हर्षित हुवा छे विशेख ॥ ७ ॥'
तिहा याचक मिलिया अनेक, बोले विरूदावलिया विशेख।
सेठ ने देवे छे आशीष, थे जीवज्यो कोड वरीष ॥ ८ ॥
चपानगरी तणा वनपाल, ल्याया घणा मेवा रसाल।
पांच वर्ण फूला री माला तास, सेठ ने आण आपी हुलास ॥ ९ ॥
त्याने देतो थको सेठ दान, वले धन खरचे राजान।
सेठ रूडी रीत बधायो, इण विध नगरी मे आयो ॥ १० ॥
भाइ सजन सहु साह्मा आय, त्या पिण रूडी रीत वधाय।
सेठ नें सर्व नयणा देख, ए पिण हर्षित हुवा विशेख ॥ ११ ॥
सेठ आयो छे मध्य बाजार, बडा बडा सेठ करे छे जुहार।
थे भला आया होय वदीत, थारी बधी घणी प्रतीत ॥ १२ ॥
सेठ पिण* मूके निज अभिमान, सारा ने देतो आदर सन्मान।
चंपानगरी रे मझ बाजार, धीरे धीरे चाले तिण वार ॥ १३ ॥
बाजा वाज रह्या घन घोर, लोक करे छे मुखसूं सोर।
ऊंचा चढ चढ लोक अनेक, नर नारी हर्षे सेठ ने देख ॥ १४ ॥
तिण अवसर चंपानगर मझार, कल कल शब्द हुवो तिण वार।
एहवा शब्द सुणे राणी तास, ऊंची चढी महल आवास ॥ १५ ॥
सेठ ने देख्यो हस्ती मझार, राजा ने बेठो देख्यो लार।
राणी पूछ्यो दासी ने एकत, ओ नगरी मे कुण विरतत ॥ १६ ॥
दासी माड कही सर्व वात, सकी नही तिल मात।
राणी सुण हुइ सोग सतापी, ओ बचियो दीसे सेठ पापी ॥ १७ ॥

धड धड धूजे तिण ठाम, ओतो बिगड्यो दीसे म्हारो काम।
जब धाय नें कहे बोलाय, अब कीजे कवण उपाय ॥ १८ ॥
राणी तणा वचन सुण धाय, पाछी बोली घणी रीसाय।
बाइ म्हारो न कोई सारो, हिवे आछी हुवे ते विचारो ॥ १९ ॥
इम कही नें सलके गई धाय, राणीने ऊभी मेली ताय।
भागी गई पाडली पुर मांय, वेश्या रे दासी रही जाय ॥ २० ॥
राणी करे छे सोग संताप, म्हारे उदे आया दीसे पाप।
मांहरी रहती न दीसे शर्म, जीवां मूंआं रहे कर्म धर्म ॥ २१ ॥
ए विचार करे तिण ठाम, झंपापात ले पड गइ ताम।
राणी मूंई करे अपघात, तिणरी बिगडी लोका मे बात ॥ २२ ॥
राणी करी इहां थी काल, व्यंतरणी हुई विकराल।
पाडलीपुर तणो मसाण, तिण ठामे तिणरो आवण जाण ॥ २३ ॥
सुदर्शन सेठ वले राय, सेठनें घरे आया चलाय।
ऊभा खडा रह्यो सेठ पोल, बाजे बाजां ना घमरोल ॥ २४ ॥
सुदर्शन सेठ नें वले राय, हस्ती सूं उतरिया ताय।
राय सूं कहे छे सेठ आम, आप सुखे करो विश्राम ॥ २५ ॥
हूं मिलूं न्यातीलां सूं जाय, ज्यूं संतोष सगलां नें थाय।
जब राय कहे मत करो जेज, उपजावो न्यातीलां नें हेज ॥ २६ ॥
थांरी सीख मिल्यां जासूं पाछो, थां मिल्यां सारो हूसी आछो।
सेठ न्यातिलां सूं तिण बार, मिलिया लबी बाह पसार ॥ २७ ॥
मिलिया छाती सूं छाती भीड, आख्यां मांसू काढता नीर।
बले बडा - बडा सेठ वदीत, त्यांसूं पिण मिलिया रूडी रीत ॥ २८ ॥
कबीला तणी नार्‍यां नां वृंद, ते सेठ नें देख पामी आनंद।
तेतो पोल मे ऊभी आय, मनोरमां नही त्या माय ॥ २९ ॥
त्यांरी हर्ष सूं आख्यां भराणी, नेणा मांसूं काढे छे पाणी।
त्यां सगला ने दीठी सेठ त्यांही, पिण मनोरमा नही त्यां मांही ॥ ३० ॥
नही दीठी मनोरमां नार, जब सेठ पूछ्यो तिण बार।
मनोरमां थांमे छे नाही, तिणरो छे कारण काइ ॥ ३१ ॥
जब एक कहे सेठ रे पास, उवे तो ऊंचा चढ्या आवास।
त्यां तो काउसग्ग दीधो छे ठाय, धर्म ध्यान रह्या छे ध्याय ॥ ३२ ॥
में तो कह्यो घणोई जाई, कुशले आयारी दीधी बधाई।
तो पिण काउसग्ग नही पार्‍यो, न जाणा काइ अभिग्रह धार्‍यो ॥ ३३ ॥

दुहा

सेठ सुदर्शन रे घरे, बेठो धात्रीवाहन राजंद।
बाजत्र अनेक वाजता, मिल्या नर नास्या ना वृंद ॥ १ ॥
सेठ कुशले खेमे आविया, न्याती गोती तिण बार।
सहु कोई हर्षित हुवा, वरत्या जय जय कार ॥ २ ॥
बेटा बहू आदि मिल्या सहु, हर्षे सहु नयण निहाल।
पिण एक न आइ मनोरमा, तिण अभिग्रह लियो तिण काल ॥ ३ ॥
तिणने कह्यो राजा घर आवियो, सेठजी आया कुशले खेम।
ते सुणने अति हर्षित हुई, तिणरो पूरो न हुवो नेम ॥ ४ ॥
सेठ एक न दीठी नार नें, जब जाण लियो मन माय।
जो उण अभिग्रह लियो हुवो माहरो, तो हूं काउसग्ग पराऊ जाय ॥ ५ ॥

ढाल : ३०

[स्वामी म्हारा राजा ने धर्म सुणावजो]

एहवी करे विचारणा, आयो स्त्री ने तीर। हे सुदर!
हूं कुशले खेमे घर आवियो, शीले कर साहस धीर। हे सुदर।
तूं सोच फिकर राखे मती* ॥ १ ॥
म्हारे आल अणहूंतो आवियो, पूर्व पाप पसाय। ए सती।
तिणसूं राय कोप्यो मो ऊपरे, मोनें सूली दियो चढाय। हे० ॥ २ ॥
पिण शील तणा प्रताप सूं, कीधी देवता सहाय।
सूली तणो सिंहासण कियो, म्हारो कलक उतास्यो आय। हे० ॥ ३ ॥
हूं आयो कलक उतारने, मोमे कोइ न जाणे दोष।
थे चिता मूकज्यो इण वात री, हिवे राखो घट मे सतोष। हे० ॥ ४ ॥
हिवे राजा आयो घर आपणे, चउरगणी सेना सहीत।
घणा लोक मिलिया घर आपणे, हूं आयो विघन रहीत। हे० ॥ ५ ॥
जो अभिग्रह लियो हुवे थे माहरो, तो हूं कहूं छूं थाने एम।
हिवे काउसग्ग थे पूरो करो, पूरो हुवो थारो नेम। हे० ॥ ६ ॥
ए वचन सुणेने मनोरमा, काउसग्ग पास्यो ताम।
आय पगा पडी कत रे, मुख सूं करे गुणग्राम। हे० ॥ ७ ॥
अग सूं अग लगायने, मिलिया रूडी रीत।
बले वार बार लेवे उवारणा, मनोरमा सुविनीत। हे० ॥ ८ ॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले आंसू हर्ष रा काढिया, मनोरमा तिण वार।
नवी कलसूं आयो जाण्यो कतनें, तिणसूं जाग्यो मोह अपार। हे० ॥९॥
हिवे सेठ कहे निज नार नें, तूं पतिव्रता सुविनीत।
तो विन इसडी कुण करे, थें राखी म्हारी प्रतीत। हे० ॥१०॥

●

दुहा

मनोरमां स्त्री तेहसूं, सेठ मिलियो रूडी रीत।
न्यातीला ने संतोष ने, पाछो आयो हर्ष सहीत ॥ १ ॥
जब राजा कहे किण कारणे, इतरी लागी वार।
जब सेठ कहे मुज अस्त्री, अभिग्रह ले ऊभी महल मझार ॥ २ ॥
ते अभिग्रह पूरो करवा भणी, ऊंचो गयो महल मझार।
अभिग्रह पूरो करावतां, तिणसू लागी छे बेलां वार ॥ ३ ॥
राजा कहे कांइ अभिग्रह लियो, जब सेठ कहे कर जोड।
काउसग्ग ले उभी तिहा, हियो कर कठिन कठोर ॥ ४ ॥
ए काउसग्ग तो जद पारसूं, जो सेठ परावे आण।
नही तो काउसग्ग पारण तणा, जावजीव पचखाण ॥ ५ ॥

ढाल : ३१

[धर्म आराधिये ए]

ए अभिग्रह सुणे राय चितवे ए, देखो सेठ तणे घर नार।
सेठ नें कष्ट ऊपनो ए, एहवो अभिग्रह ले ऊभी लार।
राजा मन चितवे ए* ॥ १ ॥
में तो अनाखी थके सेठ ने ए, सूली देणो माड्यो थो आज।
पिण सेठ रा शील सू ए, देवता आय दियो साज ॥ २ ॥
जो देवता नही आवता ए, तो सेठ री घात हूती आज।
तो हत्या मोने लागती ए, मे इसडो कियो छे अकाज ॥ ३ ॥
वले मनोरमां स्त्री सेठ नी ए, आ पिण मरती इण रीत।
ते पिण हत्या लागती ए, मे इसडी कीधी विपरीत ॥ ४ ॥
ते अभिया राणी रा कह्या थकी ए, मे मोटो कियो रे अकाज।
दुख दियो दोयां भणी ए, म्हारी गइ लोका मे लाज ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

सती छे स्त्री सेठ नी ए, गुण तणी छे भंडार।
अभिया राणी माहरे ए, कुशीलणी कुपात्र नार॥ ६॥
ओ जिसोई सेठ जेसी अस्त्री ए, जुगती जोड मिली आण।
मोने अभिया मिली ए, ते पाप प्रमाणे जाण॥ ७॥
ए उत्तम नर नारी बेहू जणा ए, त्यारो फेल्यो छे जस सोभाग।
ते वसे म्हारा नगर मे ए, तो म्हारे छे मस्तक भाग॥ ८॥
सेठ सेठाणी दोनूं भणी ए, भारी गहणा आभूपण आप।
सारा सेठां सिरे ए, सेठ सुदर्शन ने थाप॥ ९॥
भारी भारी भेटणा मोटका ए, हीरा माणक मोती सार।
राजा ने सेठ आपिया ए, सेठ पगा लागो तिण बार॥ १०॥
राय करे महोच्छव सेठनां ए, पछे सीख मागेनें राय।
जब कीधी सेठ बीनती ए, म्हारो भोजन करो महाराय॥११॥
तो राय मानें लीधी बीनती ए, जब सेठ हर्षो तिण बार।
राजा रे कारणे ए, भोजन किया तुरत तयार॥१२॥
भोजन विविध प्रकार सु ए, सर्व साथ ने रूडी रीत पोष।
सघला नें देइ भेटणो ए, सीख दीधी सघला ने सतोष॥१३॥
सेठ नें राय घणो सतोप ने ए, पाछो चाल्यो निज ठिकाण।
उवठाण साला आयने ए, बेठा सिंघासण आण॥१४॥

दुहा

सेठ सेठानी कीधो पारणो, पूरा हुवा जाणे पचखाण।
साधा री भावे भावना, पछे मुख मे घाल्यो अन्न पाण॥ १॥
वले भोजन विविध प्रकार सू, न्यातीलां ने पोष।
जीमाया त्याने तिरपत किया, सगलां ने रूडी रीत सतोष॥ २॥
बाजत्र विविध बजावता, गावे मगलाचार।
दान सनमान सहु ने दिया, पाछी सीख दीधी तिण बार॥ ३॥
विघन टलियो साता हुइ, शील तणे प्रभाव।
हिवे सजम लेवारे कारणे, सेठ करे छे उपाव॥ ४॥

ढाल : ३२

[बाडी फूली अति घणी]

मनोरथ पूरो थयो, सुण प्राणी रे।
मन चितव्या सरिया काज, आज सुण प्राणी रे।
जग मे जस बध्यो घणो, सुण प्राणी रे।
म्हारी रही शील सं लाज, आज सुण प्राणी रे॥ १॥

संजम पाखे तूं जीवडा, पामे नही भवपार।
जामण मरण करतो थको, भमियो ए ससार॥ २॥
कबहुक नरक निगोद मे, कबहू तिर्यंच मझार।
कबहुक सुर नर देवता, इण रीते भम्यो संसार॥ ३॥
कबहुक इष्ट सजोगियो, कबहुक इष्ट वियोग।
कबहुक भोगज भोगव्या, कबहुक अति घणो रोग॥ ४॥
इण रीते भमतां थकां, मेट्यो नही भ्रमजाल।
अवे अपूर्व पामियो, श्री जिन धर्म रसाल॥ ५॥
धर्म तणा जत्न करो, अब एसो अवसर पाय।
धर्म विहूणा मानवी, गया ते जन्म गमाय॥ ६॥
अब पांच महाव्रत आदरूं, छाडी परिग्रह तास।
बारे भेदे तप तपूं, ज्यूं पामूं शिवपुर बास॥ ७॥
इम भावनां भावतां, मन आण्यो अति वेराग।
जो इहां साधु पधारसी, तो करसूं ससार नो त्याग॥ ८॥
इण विध भावनां भावतां, साधा री बाट जोवे ताय।
संजम लेसूं निश्चय करी, तिणमे नही संका काय॥ ९॥
शुद्ध परिणामे भावे भावनां, दुविधा दूरी टाल।
साचे मन त्यारी भावना, सफल हुवे तत्काल॥ १०॥

●

दुहा

तिण काले ने तिण समे, चउनाणी अणगार।
धर्मघोष स्थविर समोसर्या, साथे साधां रो बहु परिवार॥ १॥
बन पालक दीधी बधावणी, सेठ सुदर्शन ने आय।
सेठ सुणे हर्षित हुवो, आनंद अंग न माय॥ २॥
सेठ इसो मन चिंतवे, भला पधार्या आज।
हिवे पूरूं मनोरथ मांहरा, सारूं आत्म काज॥ ३॥
सेठ वांदण नें चालियो, साथे लियो बहु परिवार।
साथे लीधी मनोरमां स्त्री, तिणरी रिध रो घणो विस्तार॥ ४॥
मोटा आडम्बर सूं नीकल्यो, चंपा नगर मझार।
सेठ तणी रिध देखवा, आया घणा नर नार॥ ५॥
इण रीत सूं सेठ सुदर्शन, आयो छे बाग मझार।
पांच अभिगमन साचवी, वांद्या धर्मघोष अणगार॥ ६॥

सुखसाता पूछ साघा भणी, वेठो सभा मझार।
धर्मकथा धुन सू कही, चउनाणी मोटा अणगार॥ ७॥

ढाल : ३३

[अहो अहो दुर्जन मोहणी]

अहो अहो भव जीवां सांभलो, धर्म तणो जे विचारज रे।
करणी करो कर्म काटवा, ज्यूं पामो भव तणो पारज रे॥अ०१॥
वेठी सुणे सहु परिषदा, मुनिवर अमृत वाणज रे।
गति पांचूं तिहां वरणवी, तेहनो करे वखाणज रे॥ २॥
प्रथम गति नरक तणी, अनंत दुखां री खानज रे।
किण कर्मां ओ जीवडो, उपजे नरक मे आणज रे॥ ३॥
हणे पंचेंद्री जीव ने, मद्य मांस नित खायज रे।
रुद्र ध्यान वहु आरभी, सो उपजे नरक मे जायज रे॥ ४॥
वीजी गति तिर्यंच नी, ते पिण अनंत दुखारी खानज रे।
किण कर्मे कर ऊपजे, तिर्यंच गति मे आणज रे॥ ५॥
हिंसा झूठ अदत्त लिये, सजम शील न भायज रे।
आर्त माया मे मरे, सो निश्चे तिर्यंचज थायज रे॥ ६॥
कूड कपटज केलवे, कूडा लेख लिखायज रे।
भूठा वोले कूडा तोलवे, सोभी तिर्यंच थायज रे॥ ७॥
धर्म कारण हिंसा करे, मन मे माने मोदज रे।
जे नर भारी होयने, उपजे जाय निगोदज रे॥ ८॥
तीन काल रा दुख नरक ना, भेला कीजे कुलज रे।
जेहनें अनत वर्ग वधारिये, नथी निगोद रे तुल्ज रे॥ ९॥
तीजी गति मनुष्या तणी, भाखी श्री मुनिरायज रे।
कण कर्मे यो जीवडो, उपजे मनुष्य मे आयज रे॥ १०॥
सहज विनीत भद्रीक छे, मच्छर रहित सुखदायज रे।
सत्यवादी करुणा घणी, सो निश्चे मनुष्यज थायज रे॥ ११॥
अदत्त ग्रहे परधन हरे, मन मे हर्ष धरायज रे।
दलिद्रीपणा मे उपजे, अन्न तन पूरो न मिलायज रे॥ १२॥
पगां अलवाणो नागो फिरे, नित प्रति मजूरी जायज रे।
पोट वहे गाम गाम फिरे, तो पिण पेट न भरायज रे॥ १३॥
साधु कदे नही वादिया, दान देवानें सूमज रे।
तो भीख मांगता घर घर फिरे, भाट भांड ने डूमज रे॥ १४॥

साधां नें वांदे भाव सूं, दिया अडलक दानज रे।
जे भरतेश्वर जाणजो, ज्याको प्रसिद्ध नामज रे॥ १५॥
साधां नें वादतां थकां, कटे कर्म ना फंदज रे।
नीच गोत्र रो क्षय करे, ऊंच गोत्र रो बंधज रे॥ १६॥
चोथी गति देवां तणी, भाखी श्री मुनिरायज रे।
सुख ते तिहां नित भोगवे, ते कुण कर्मे उपजे आयज रे॥ १७॥
सराग संजम पाले सदा, और श्रावक धर्मज रे।
ते स्वर्ग लोक मे उपजे, सो बांधीने शुभ कर्मज रे॥ १८॥
ओर अकाम निर्जरा करी, अज्ञान तप कर जाणज रे।
शील पाले लज्जा करी, सो उपजे देव में आणज रे॥ १९॥
पांचमी गति सिद्धा तणी, ते अनत सुखां री खानज रे।
कुण करणी कर ऊपजे, सिद्ध गति मांहे आणज रे॥ २०॥
पांच महाव्रत आदरे, सहे परीषा बीश दोयज रे।
बारे भेदे तप तपे, तेहनें सिद्ध गति होयज रे॥ २१॥
देव अरिहंत ने ओलखो, ओलखो गुरु निग्रंथज रे।
धर्म दया मे आदरो, एही मुक्ति रो पंथज रे॥ २२॥
तीन काल नां सुख देवां तणा, भेला कीजे कुलज रे।
जेहना अनत वर्ग बधारिये, नही सिद्ध सुखां के तुलज रे॥ २३॥
ते पिण सुख छे शाश्वता, तेहनों आवे नही पारज रे।
संसार नां सुख स्थिर नही, जातां न लागे बारज रे॥ २४॥
संसार नां सुख स्थिर नही, जेसी आभा नी छांयज रे।
विणसतां बार लागे नही, जेसी कायर नी बाहज रे॥ २५॥
किंपाक फल छे मनोहरू, मीठो जेहनो स्वादज रे।
ज्यूं विषय तणा सुख जाणजो, परगम्या करे खराबज रे॥ २६॥
तन धन जोवन कारमो, जेसो कसुंबल रगज रे।
दिन पांच सात नो पेखवो, पछे होसी निश्चे भंगज रे॥ २७॥
गर्भ जन्म मरण तणा दुख, भाख्या श्री जिनरायज रे।
ते धर्म कियांसूं छूटिये, ते धर्म दया मे थायज रे॥ २८॥
इम जाणी धर्म आदरो, ढील न कीजे लिगारज रे।
जो खिण जावे सो आवे नही, इम भाखे अणगारज रे॥ २९॥

दुहा

धर्म कथा सुण परिषदा, हिवडे हर्षित थाय।
शक्ति सारूं व्रत आदरे, आया जिण दिशि जाय ॥ १ ॥
सेठ सुदर्शन तिण समे, बोले जोडी हाथ।
हूं पाछल भव मे कुण हुतो, मोनें कहो स्वामीनाथ ॥ २ ॥
धर्मघोष साधु तिण अवसरे, सेठ सुदर्शन ने कहे आम।
पाछल भव कहुं ताहरो, ते सुणजे राखे चित्त ठाम ॥ ३ ॥

ढाल : ३४

[श्रेणिक राय चित्त लगाय नें०]

विंध्याचल पर्वत तिहा, एक दुष्ट भील हुतो ताय हो। सुदर्शन।
ते आर्त ध्यान मांहे मूओ, श्वान हुवो गोकुल माय हो। सुदर्शन०।
पाछल भव तुमे साभलो* ॥ १ ॥
ते गुजरा तणे पाडे वसे, फिरे गुजरा रे साथ। हो। सु०।
फिरता फिरता ए श्वान एकदा, देख्या साधु सुनाथ हो। सु० ॥ २ ॥
साधु देख तिण श्वान का, आया शुभ परिणाम।
तिण बाध्यो आऊखो मनुष्य नो, पुन्न उपजाए तिण ठाम ॥ ३ ॥
ते श्वान आऊखो पूरो करी, उपनो तिण नगरी माय।
ते हुवो गुजरा तणे कुल मझे, तिहा बहुत घणी भेस गाय ॥ ४ ॥
थारो तात वृषभदास तेहनी, चरावतो नित नित गाय।
ए तीजो भव ताहरो, गाय चरावतो ताय ॥ ५ ॥
एक दिन गाय चरायवा, तू गयो वन मझार।
तिहा बस्त्र रहित साधु देखिया, एकलमल अणगार ॥ ६ ॥
ते सीत मास अति आकरी, बाजे सीतल वाय।
तिहां रात समय काउसग्ग रह्यो, ध्यान ध्यावे चित्त माय ॥ ७ ॥
तूं तो गाय चराय घरे आवता, थे कीधो मन मे विचार।
ए वस्त्र रहित साधु एकलो, किम सहसी सीत एकधार ॥ ८ ॥
इम करुणा करतो थको, घर ले आयो तू गाय।
पछे इधन अग्नि हाथे करी, पाछो आयो बन माय ॥ ९ ॥
चिहु दिशि अग्नि लगायने, तपायो सारी रात।
ध्यान पूरो हुवो साधु रो, उदे हुवो प्रभात ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ध्यान पाख्यो जब साधुजी, तोनें देख्यो तिण वार।
जब साधु जाण्यो ओतो गुवालियो, जिनधर्म न जाणे लिगार॥ ११॥
तिण गोबाल ने साधुजी इम कह्यो, थें अग्नि आरंभ कियो आज।
साधु अर्थे आरंभ नही कीजिये, ओ तो मोटो अकाज॥ १२॥
सुलभबोधी जाण तेहनें, साधु दियो उपदेश।
जीव म मारे तूं जाणनें, नित नवकार जपेस॥ १३॥
ए साधु बचन थे मानियो, नित समस्यो नवकार।
रात दिवस जपवो कियो, थें नही घाल्यो बिसार॥ १४॥
थें निश्चो तिण ऊपर राखियो, राख्या शुद्ध परिणाम।
बाध्यो आऊखो मनुष्य रो, परत संसार कियो तिण ठाम॥ १५॥
तिहां काल करीनें ऊपनो, वृपभदास घर आण।
थारो नाम सुदर्शन इहां दियो, थारो ओ चोथो भव जाण॥ १६॥
कुरगणी नामे भीलणी, ते पिण मूंई आर्त माय।
राजद्वारे छाली हुई, कर्म तणे वस जाय॥ १७॥
ते अनुक्रमे हुई मनुष्यणी, तप कियो तिण वार।
वले सगत कर साध्व्यां तणी, ते हुइ मनोरमा नार॥ १८॥

●

दुहा

ए सेठ सेठानी दोनूं तणो, पाछ्ल भव कह्यो ताम।
हिवे गुण कहूं छू नवकार ना, ते सुणज्यो राखें चित ठाम॥ १

ढाल : ३५

[जिन जप जप जीवडा]

नवकार तणी महिमा सुणो, जग माहे ए तंत सारो जी।
कर्म कटे संकट मिटे, पामे भव तणो पारो जी॥ न० १॥
चोर धाड संकट टले, सब जन मित्री थायो जी।
डाकण साकण भूत नां, विघन सारा टल जायो जी॥ २॥
इण नवकार में गुण अति घणा, कहितां न आवे पारो जी।
एहनां गुण ओलख जपवो करे, ते बेगो जावे मुक्त मझारो जी॥ ३॥
चवदे पूर्व रो ग्यान छे, त्यांमे सारां शिरे नवकारो जी।
त्यामे गुण कह्या पाच पदां तणा, देवगुरु धर्म तणो अधिकारो जी॥ ४॥
इण नवकार मंत्र नां जाप थी, तिरिया जीव अनेको जी।
हिवे नाम कहूं छूं तेहनां, सुणजो आण विवेको जी॥ ५॥

वाछड़ा बालक चरावतो, नदी आइ विकरालो जी।
तिण समरयो नवकार ने, नदी फाट हुइ दोय डालो जी॥ ६ ॥
श्रीमती बेटी सेठ नी, सुदर रूप सुकुमालो जी।
तिण मुख जप्यो नवकार ने, सर्प थयो फूला री मालो जी॥ ७ ॥
राजा सूली दियो चोर ने, सेठ सीखायो नवकारो जी।
तिण जाप जप्यो नवकार नो, ते पाम्यो सुर अवतारो जी॥ ८ ॥
सेठ डूबतो समुद्र मे, तिण समरयो नवकारो जी।
तिणरी जिहाज उठायने देवता, मेल दीधी पेले पारो जी॥ ९ ॥
दलिद्री सेठ वेच्यो निज पुत्र ने, सोनइया बरोबर ताह्यो जी।
नवकार गुणे बेठो होम मे, तो तुरत हुइ तिणरी साह्यो जी॥ १० ॥

दुहा

साधु वचन सुण सेठ हर्षियो, बोले जोडी हाथ।
निज पुत्र थापी परिवार मे, हूतो दिख्या लेसूं स्वामीनाथ॥ १ ॥
जब वलता मुनिवर इम कहे, जो थारे लेणो सजम भार।
घडी जावे ते पाछी आवे नही, तिणसू मतकर ढील लिगार॥ २ ॥
ए वचन सुणे सेठ हर्ष ने, वदणा कर शीष नमाय।
घर आया न्यात जीमायने, दान सनमान दियो छे ताय॥ ३ ॥
निज पुत्र ने समझायने, रूडी रीत पाट वेसार।
सहु परिवार नी साख कर, सूप्यो सहु घर भार॥ ४ ॥
मनोरमा स्त्री तेडायने, सेठ कहे तिण बार।
मोनें आग्या दो थे हर्ष सू, हू लेसू सजम भार॥ ५ ॥

ढाल : ३६

[आछे लाल]

इम सुणनें मनोरमां नार, छूटी आसूडा नी धार। अ.छेलाल।
मूर्च्छागति आय धरणी ढली॥ १ ॥
वले कुटुब सहु परिवार, ते पिणरोवे बागा पार। आ०।
विलखा थइ ने विलविल करे॥ २ ॥
सेठ छे सगला रो आधार, तिणसू रुदन करे बारूंबार। आ०।
सुख मांहे दुख ऊपनो॥ ३ ॥
रुदन करतो देखी परिवार, सेठ बोल्यो तिण बार। आ०।
काहिकूं रुदन करो तुमें॥ ४ ॥

ए संसार असार, विछड़तां नही वार । आ० ।
किसो भरोसो इण काल रो ॥ ५ ॥
थें सज्जन न्यातीला लोक, नही कोइ राखवा जोग । आ० ।
परभव जातां जीव ने ॥ ६ ॥
काचा सगपण एह, तिणसूं किसो रे स्नेह ।
ए मेलो मिल्यो ते सहु कारमो ॥ ७ ॥
ए वासो वसियो आय, ते नही नेठाऊ ताय ।
निश्चो तिण नही एक पलक रो ॥ ८ ॥
काल चटक्का देह, ते आधी गिणे ने मेह ।
कागद आया उठ जावणो ॥ ९ ॥
हूं प्रदेशी ज्यूं ताम, मोने कोइ नही विश्राम ।
हू किसे भरोसे रहूं घर मझे ॥ १० ॥
मेल्या लाखा ऊपर कोड, ते पिण जाए ऊभा छोड ।
लियो कणदोरो पिण तोडने ॥ ११ ॥
ऊंचा महल कराया कर कर होड, ते पिण जाए पलक मे छोड ।
त्यानें मेल्या जाय मसाण मे ॥ १२ ॥
जीव भोगवे निज पुन्य पाप, क्याने करो सोग संताप ।
जग मे कोइ केहनो नही ॥ १३ ॥
मात पिता सुत भाय, को केहनो नही ताय ।
एकलो आयो जासी एकलो ॥ १४ ॥
इम जाणी करो जिनधर्म, ज्यूं रहे सहू नी शर्म ।
धर्म सखाइ इण जीव रे ॥ १५ ॥
धर्म सूं सीझे आत्मकाज, पामे अविचल राज ।
शिव सुख पामे शाश्वता ॥ १६ ॥
इत्यादिक दियो उपदेश, सुणायो दया धर्म रेस ।
सेठ न्यातीला ने संतोषिया ॥ १७ ॥
मोनें हुवे छे अबार, आग्या री म करो जेज लिगार ।
जे खिण आवे ते आवे नही ॥ १८ ॥
इम सुणने सहु परिवार, हिवे बोले मनोरमा नार ।
आप कह्यो ते सतवाय छे ॥ १९ ॥
पिण म्हाने आधार छो आप, तिणसू करा छा मोह विलाप ।
जिम सुख हुवे थाने तिम करो ॥ २० ॥

आप सुखे ल्यो संजम भार, म्हांरो मकरो मोह लिगार। आ०।
मे जास्यां कमाइ आप आपरी॥ २१॥

दुहा

सेठ सुदर्शन तेहनें, आग्या दीधी रूडी रीत।
हिवे करे महोच्छव दिख्या तणा, ते सुणज्यो धर प्रीत॥ १॥
मर्दन स्नान कराय नें, आभूषण बिविध प्रकार।
सिणगार वेसाण्यों शिविका मझे, जब सेठ गुणे नवकार॥ २॥
सहंस पुरुष उपाडी शिविका, चाल्या नगर मझार।
चारण भाट बोले विरुदावली, साथे सहु परिवार॥ ३॥
धात्रीबाहन राजा तिण अवसरे, सेठ रो निखमण जाण।
ते आयो महोच्छव करवा भणी, कर मोटे मंडाण॥ ४॥
वाजंत्र बाजे विविध प्रकार नां, अंबर ज्यूं करे गुंजार।
ते लागे कानां ने सुहामणा, मन मांहे हर्ष अपार॥ ५॥

ढाल : ३७

[दान सूं दालिद्र दूर]

आगे करनें जा निसाण, वले ध्वजा पताका जाण। आज हो।
महिंद्र ध्वजा घणी रलियामणी जी॥ १॥
हाथी घोडा रथ सिणगार, पायक विविध प्रकार। आ०।
चउरंगणी सेना राजा सजकरी जी॥ २॥
राजा चाल्यो आगेवाण, कर मोटे मंडाण। आ०।
अनेक सुभटां करनें राजा परवर्यो जी॥ ३॥
किया छे घणा हगाम, करे सेठ तणा गुणग्राम। आ०।
जय जय शब्द सहु मुख ऊचरे जी॥ ४॥
मांचा ऊपर मांचा मंड, बेठा नर नार्यां रा झुंड। आ०।
नयणा निहाले सुदर्शन सेठ नें जी॥ ५॥
दिख्या रा महोच्छव जाण, जमाली जेम पिछाण। आ०।
मोटे आडंबर ले गया बाग मे जी॥ ६॥
शिविका नें भूमिका थाप, सेठ हेठो उतरियो आप। आ०।
पांच अभिगमण साचविया तिहां जी॥ ७॥
भाव सूं बांद्या मुनिराय, नीचो शीश नमाय। आ०।
कृपा करो स्वामी मो ऊपरे जी॥ ८॥

जन्म मरण री लाय, ते लागी चिहु गति मांय। आ०।
तिण लाय मांहे हूं परजल रह्यो जी॥ ९ ॥
आप छो मोटा अणगार, इण लाय थी काढो बार।
जन्म मरण दुख मेटो मांहरो जी॥ १० ॥
मोनें द्यो संजम आप, पचखावो अठारे पाप।
जिम सुख पावे जीव मांहरो जी॥ ११ ॥
जव बोल्या मुनिराय, ज्यूं तोनें सुख थाय।
जे खिण जावे ते आवे नही जी॥ १२ ॥
जव ईसान कूण मे जाय, आभूषण उतास्या ताय।
मनोरमा लिया पलगट माडने जी॥ १३ ॥
आंसूडा पडे ततकाल, जाणे तूटी मोत्यां री माल।
मनोरमा विलखी वेदल हुइ घणी जी॥ १४ ॥
पांच मुष्टि कियो लोच, मूंक दियो सर्व सोच।
साधां रे समीपे आय ऊभो रह्यो जी॥ १५ ॥
सेठ बोल्यो जोडी हाथ, मोसूं कृपा करो स्वामीनाथ।
सामायक चारित्र दीजे मो भणी जी॥ १६ ॥
इम सांभल नें मुनिराय, सर्व सावद्य दिया पचखाय।
सामायक चारित्र दियो सेठने जी॥ १७ ॥
हिवे थया सुदर्शन साध, पाम्यां परम समाध।
गुरां रे समीपे बेठा रूडी रीत सूं जी॥ १८ ॥
राजादिक वांदे ताम, वले करे घणा गुणग्राम।
आंसूंडा न्हांखी नें सहु पाछा वल्या जी॥ १९ ॥

दुहा

मनोरमा कहे शीष नाम नें, आप म्हांनें छोड्या छे आज।
जत्न घणां कर पालज्यों, सारजो आत्म काज॥ १ ॥
पांच प्रमाद ने छांडने, आलस अंग म आण।
आराधज्यो गुरु आगन्या, पोहचो वेगा निर्वाण॥ २ ॥
इम कही मनोरमां स्त्री, वंदना करे वारूंवार।
ते पाछी घर आइ रोवती, साथे सहु परिवार॥ ३ ॥
संजम आदर नें सेठ जी, गुरु साथे कियो विहार।
तप जप संजम री खप करे, ते सुणज्यो तुमें विस्तार॥ ४ ॥

ढाल : ३८

[गांधीडा कहे थारी वींदली री मोल]

पांच महाव्रत पालतो रे, पाले पांच आचार।
पांच सुमते सुमतो सदा रे, तीनूंई गुप्त इकधार।
सुदर्शन साधु गुणा रा भंडार* ॥ १ ॥

पांचूं इंद्री वस करी रे, टाले च्यार कपाय।
शत्रु मित्र तिणरे सारिखा जी, राग द्वेष टाले दिया ताय ॥ २ ॥

सूरवीर थको परिषा सहे रे, उपसर्ग उपना समभाव।
तिणो ने त्रिया गिणे सारिखा रे, सरिषा गिणे रक ने राव ॥ ३ ॥

प्रमाद तजी सूत्र भणे रे, भण गुण परिपक्व हुवा जोर।
जीवण मरण तणी वछा नही, तपस्या करे अति घोर ॥ ४ ॥

मास मास खमण करे पारणो, साहसीकपणो मन धार।
आहार निर्दोषण भोगवे, तीजा पोहर मझार ॥ ५ ॥

पहले पोहर सझाय करे रे, बीजो पोहर ध्यावे ध्यान।
तीजे पोहर करे गोचरी रे, आहार लेवे शुद्ध मान ॥ ६ ॥

शीत काले बहुलो शी पडे रे, जब वाजे शीतल वाय।
तब वीरासण आदि आसण करे रे, शी खमे चोखो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ग्रीष्म काले रवि तपे आकरो रे, जब सूके सरवर नीर।
जब शैल सिखर तिहां तप तपे रे, तब दाझे नग्न शरीर ॥ ८ ॥

वर्षा रितु रयण डरावणी, बीज चमके मेह घन घोर।
डांस मांस माकण चटका भरे रे, ते परिषा सहे कठिन कठोर ॥ ९ ॥

इण रीते मुनिवर तप तपे रे, तीनूंई काल मझार।
एक मुक्त जावण री लाग रही रे, ओर वछा न रही लिगार ॥ १० ॥

प्रियधर्मी प्रिय धर्म छे रे, दृढधर्मी साहस धीर।
कर्म काटण ने सूरमो रे, दिन दिन पाडे पतलो शरीर ॥ ११ ॥

एकदा सुदर्शन चितवे रे, कहे गुरु समीपे आय।
जो आग्या हुवे स्वामी तुम तणी रे, तो हू एकल विहारी थाय ॥ १२ ॥

ए वचन सुण गुरु बोलिया रे, मुनि ज्यूं तोने सुखदाय।
आग्या लेइ विचरया एकला रे, मन माहे हर्ष ओछाय ॥ १३ ॥

गामां नगरा विचरता रे, करता उग्र विहार।
कर्म संजोगे मुनि आविया रे, पाडलीपुर नगर मझार ॥ १४ ॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

पाडलीपुर नगर रे बाहिरे रे, वन खड बाग उद्यान।
तिहां साधु सुदर्शन समोसर्या रे, ध्यावे निर्मल ध्यान ॥ १५ ॥

●

दुहा

तिण काले नें तिण समे, पाडलीपुर नगर रे मांय।
देवदत्ता नामे वेश्या वसे, तिणरे रिद्धी घणी छे ताय ॥ १ ॥
ते रूपे अपछरा सारिखी, जोवनवाली वेस।
तिणरो मुख चद्रमा सारिखो, तिण मोह्या राय नरेश ॥ २ ॥
तिणमें चोसठ गुण महिला तणा, ते डाही चतुर सुजाण।
बले भाषा अठारे देश नी, त्यांरी छे जाण पिछाण ॥ ३ ॥
ते लोक रीत जाणे घणी, तिणमे कला बहोत्तर विज्ञान।
तिण वडा वडा नर बस किया, सर्व गणिका मांहें प्रधान ॥ ४ ॥
तिणने छत्र चामर राजा दिया, ध्वजा दीधी पचरंग।
ते महलां ऊपर लहकती, दीसे घणी सुचंग ॥ ५ ॥
सहंस नाणो आपे तेहने, आवा देवे घर मांय।
तिणसूं सुख भोगवे संसार नां, एहवी रीति मर्याद छे ताय ॥ ६ ॥
अभिया राणी तणी धाय पडिता, कर्म जोग पाडलीपुर आय।
देवदत्ता गणिका घरे, दासी पणे रही छे ताय ॥ ७ ॥

ढाल : ३६

[कामण गारो छे कुण···]

हिवे सेठ सुदर्शन साधु ने रे, वेश्या देसी उपसर्ग अनेक।
पिण साधु सुदर्शन चलसी नही रे, ते सुणज्यो सहु आण विवेक।
वेश्या धूतारी छे कामणी रे* ॥ १ ॥
तिण काले नें तिण समें रे, सुदर्शन मुनिराज।
मास खमण तणे पारणे रे, उठ्या छे भोजन काज ॥ २ ॥
नगरी मांही फिरतां थकां रे, साधु आया छे वेश्या रे द्वार।
साधु नें धाय पंडिता देखने रे, चमकी चित्त मझार ॥ ३ ॥
जब पडिता धाय सताबसूं, तिण कह्यो छे वेश्या ने जाय।
अभियाराणी तणी सहु बारता रे, देवदत्ता ने दीधी सुणाय ॥ ४ ॥
अभियाराणी ने कपिला नामे ब्राह्मणी रे, त्यां छोड़ी शर्म नें लाज।
विषय सेवण एह थी रे, त्यांरो सरियो नहीं कोइ काज ॥ ५ ॥

यां दोनूं जण्या खप कीधी घणी रे, पिण ओतो चलियो नही तिलमात।
ओ सेठों रह्यो दोया आगले रे, ते माड कही सर्व बात ॥ ६ ॥
ए धायनों वचन वेश्या सुणी रे, कहे मुह मचकोडी नें ताम।
जो हू सेठ सुदर्शन बस करूं रे, तो देवदत्ता छे माहरो नाम ॥ ७ ॥
दिया जजकारा तिण धाय नें रे, उभी थइ तत्काल।
नारी ना चरित्र करवा भणी रे, कुकला कीधी सुरत सभाल ॥ ८ ॥
कूड कपट केलव वणी श्राविका रे, कियो श्राविका नो हद वेश।
देखण वालो जाणे शुद्ध श्राविका रे, कूड न दीसे लवलेस ॥ ९ ॥
धीरे धीरे इर्या सोधती रे, आइ साधु सुदर्शन पास।
कर जोडी बंदना करे रे, उभी करे अरदास ॥ १० ॥
मुख जयणा करती थकी रे, साधु ने छलवा काम।
बोली अमृत बोलती रे, कपट थकी करे गुणग्राम ॥ ११ ॥

●

दुहा

आज आगण आंबो फल्यो, जाणे दूधा वूठो मेह।
मन चित्या मनोरथ फल्या, मे दीठा मुनिवर एह ॥ १ ॥

ढाल : ४०

[वीर बखाणी राणी चेलणा]

इ नित प्रते भावना भावती, चिंतवती मन माय जी।
साधु सुदर्शन तेहनो, मोने दर्शन किण दिन थाय जी।
भला पधारया मेरे साधु जी* ॥ १ ॥
धिन घडी माहरे आज री, मे बांदिया मोटा अणगार जी।
हिवे अर्ज सुणो एक माहरी, आप करो मुज तणो उद्धार जी ॥ २ ॥
मंदिर पधारो आप हम तणे, बहिरो मुज शुद्ध आहार जी।
कृपा करो मुज ऊपरे, ज्यूं हम तणो हुवे निस्तार जी ॥ ३ ॥
ए वचन वेश्या तणो सांभले, ते मान लियो तिण बार जी।
मुनिवर कपट जाण्यो नही, पेठो छे मदिर मझार जी ॥ ४ ॥
मुनिवर उभो जाए चोक मे, वेश्या उभी मुनिवर पास जी।
भोजन मगायो भत्तसाल थी, मुनिवर सू करे अरदास जी ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

खेद निवारो स्वामी तुम तणो, टुक एक ल्यो विश्राम जी।
भोजन करो स्वामी जगत सूं, बेसी ने एकत ठाम जी॥ ६॥
पटरस भोजन ले करी, मेलिया मुनिवर आगे आण जी।
ते भोजन मुनिवर देखिया, मेवा घणा विविध पकवान जी॥ ७॥
नवा नवा भोजन देखनें, साधु समज गयो मन मांय जी।
आतो अस्त्री नही श्राविका, आतो दीसे छे कुपात्र ताय जी॥ ८॥
जब ए फंद जाणने साधु जी, पाछा फिरया तिण बार जी।
जब वेश्या मारग सहु बंध किया, ते फिर आया चोक मझार जी॥ ९॥
खिण एक काल बीतां पछे, वेश्या कर सोले सिणगार जी।
हाव भाव करती थकी, आय दोली फिरी तिण बार जी॥१०॥
इं देवदत्ता नामे गणिका अछूं, हूं श्राविका वणी तुम काम जी।
हिवे सुख भोगवो आप मुज थकी, म्हारी मूल म राखो लाज जी॥११॥
सुख भोगवो संसार नां, सफल करो अवतार जी।
कीला करी पूरो मन रली, मनुष्य जनम तणो सार जी॥१२॥
हू सेवा करूं नित आपरी, थे वसो म्हारा घर मांय जी।
मन गमता सुख भोगवो, छहू रितु ना सुखदाय जी॥ १३॥
घर घर भिक्षा नो मांगवो, अरस विरस खाणो आहार जी।
पाय अलवाणे हिंडवो, वले करणो छे नित विहार जी॥ १४॥
नही न्हावणो नही धोवणो, वले मस्तक करणो लोच नष्ट जी।
आगोतर सुख ने कारणे, एहवो क्यांने करो आप कष्ट जी॥ १५॥
आगोतर सुख किण देखिया, तो सांप्रत सुख भोगवो हाल जी।
तप तुम तणो तो इहां ही फल्यो, भोग भोगवो महलां मे चाल जी॥ १६॥
ए वचन वेश्या तणा सांभले, चलियो नही अशमात जी।
जब वेश्या विषे री बाही थकी, पकड्या मुनि तणा हाथ जी॥ १७॥
पकड लेगी वेश्या महल मे, सेज्या ऊपर दिया वेसाण जी।
तिण कामणी चरित्र किया घणा, विविध पणे बोली वाण जी॥ १८॥
इण रीते दिन तीन बीती गया, तिण करी अनेक विध तान जी।
तिहां साधु सेठो रह्यो तेहथी, मूल चूको नही ध्यान जी॥ १९॥

दुहा

जेहवो गोलो मेणको, ताप लागां गल जाय।
ज्यूं कायर पुरुष नारी कनें, तुरत डिग जावे ताय॥ १॥

जेसो गोलो गार को, ज्यूं धमे ज्यूं लाल।
ज्यूं सूर पुरुष स्त्री कने, अडिग रहे व्रत झाल॥ २॥
गार गोला री दीधी ओपमा, साधु सुदर्शन नें जिनराय।
जिम जिम उपसर्ग ऊपजे, तिम तिम गाढो थाय॥ ३॥
उपसर्ग उपनो वेश्या तणो, समस्यो श्री नवकार।
सागारी अणसण लियो, सरण पडिवजिया च्यार॥ ४॥
तीन रात तीन दिन लगे, खम्यो घोर परिषह जाण।
शील माहे सेंठो रह्यो, तिणरा जिनवर किया बखाण॥ ५॥
अस्त्री आगे डिगिया घणा, ते हुआ घणा हेरान।
पिण साधु सुदर्शन तिण समें, मन कियो मेरू समान॥ ६॥
तीन दिन रात वेश्या खपी, तिण दीठो मुनि रो गाढ।
जब वचन आक्रोस डांडा मारने, घर बारे दियो छे काढ॥ ७॥

ढाल : ४१

[देशी हमीरिया नी]

साधु जी तिहा थी नीकल्यो, हिवे करवा लागो विचार। मुनिसर।
इण उपसर्ग आगे उबस्यो, हिवे गिरे छे मोने संथार। मुनिसर।
वेरागे मन वालियो* ॥ १॥
जिम रण सनमुख सूरमो, साह्यो जाय धकाय। मु०।
ज्यूं सथारा ऊपर मुनि तणा, दिया परिणाम चढाय। मु॥ वे० २॥
मुनिवर तो भावे चढ्यो, गयो मसाण मझार।
तिहा डाभ सथारो पाथरी, कियो सथारो श्रीकार॥ ३॥
अभियाराणी मर हुइ राक्षसी, तिण साधु देख्यो तिण बार।
तो हिवे आय चलाऊं इण साधु नें, एहवो कियो मन मे विचार॥ ४॥
जब तो इणने देवता राखियो, अब कुण छे इणनें आधार।
तो बोल ऊपर करू माहरो, इणने भिष्ट करे इण बार॥ ५॥
सोले सिणगार करे तिहा, आइ साधु रे पास।
बतीश विध नाटक किया, उभी करे अरदास॥ ६॥
थारे तो कारण साधु जी, हू मूइ कर अपघात।
ते व्यतरीपणे जाए ऊपनी, हिवे सुख भोगवो मो साथ॥ ७॥

---

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

ए वचन सुणे व्यंतरी तणा, ध्याय रह्या शुभ ध्यान।
निश्चल मन नें थिर कर्यो, जाणेक मेरू समान ॥ ८ ॥
बले व्यंतरणी फेर बोली तिहा, सुण रे सुदर्शन कान।
नेण निहालो मोने हर्ष सूं, कह्यो हमारो मान ॥ ९ ॥
तो पिण मुनिवर मूल चलिया नही, जब फेर बोली तीजी बार।
जब तो तोनें देवां राखियो, हिवे कुण छे तोनें राखणहार ॥ १० ॥
इण रीते वचन कहे राक्षसी, अग सू रही छे लपटाय। मु०।
कामणी चरित्र किया घणा, ते कह्या कठा लग जाय ॥ ११ ॥
तो पिण मुनिवर ध्यान डोल्यो नही, जब आ कोप चढी तत्काल।
उष्ण परीषह दियो साधुने, रूप करी विकराल ॥ १२ ॥
तो पिण मुनिवर मूल डिग्या नही, राख्या समता भाव।
जब राक्षसणी फेर कोपे चढी, करवा लागी अन्याय ॥ १३ ॥
रूप फेर पंखणी थई, दुख देवा ने हुइ तयार।
जल सूं भर भर चाचडी, साधु ने छाट्यो तिण बार ॥ १४ ॥
रोस भरी थकी पापणी, शीत नों परीषह दियो करूर।
मुनिवर समे परिणामे सह्यो, कर्म किया चकचूर। मु० ॥ वे० १५ ॥

दुहा

तिण काले ने तिण समे, शील सहाइ देव।
आप आप तणा भवन मझे, सुख भोगवे नितमेव ॥ १ ॥
जब आसण तेहना कंपिया, तब देख्यो अवधि विचार।
कष्ट उपनो देख सुदर्शन भणी, सताब सूं आया तिण बार ॥ २ ॥
देवता सहु माहोमां मिली, हाक करी तिण बार।
व्यतरणी ने मसाण थी, दीधी तुरत नसार ॥ ३ ॥
कष्ट निवार मुनिवर तणो, साधु ने कियो प्रणाम।
कर जोडी ऊभा साधु आगले, घणा करे गुण ग्राम ॥ ४ ॥

ढाल : ४२

[धिन धिन जंबू स्वाम ने]

तिण काले ने तिण समे, सुदर्शन नामे अणगार हो। मुनिंद।
त्यां राग न आण्यो देवता थकी, देवी सूं नाण्यो द्वेष लिगार हो। मुनिंद।
धिन धिन सुदर्शन अणगार ने* ॥ १ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

चढ़ता परिणामे वेरागे चढ्या, ध्याया छे शुक्ल ध्यान हो। मु०
घनघातिया कर्म खपायने, पाम्या केवल ग्यान हो। मु० ॥ धि० २ ॥
केवल महिमां देखतां करी, किया घणा गुणग्राम हो।
धर्म देशना सुण साधु तणी, देवता गया निज ठाम हो॥ ३ ॥
केवल महिमा देखने, राक्षसी पिण आइ मुनिवर पास हो।
भाव भक्ति कीधी वदना करे, कर जोडी करे अरदास हो॥ ४ ॥
अपराध खमावे देवी आपरो, थे खमज्यो मोटा मुनिराय हो।
हूं पापण छू मोटकी, मे कीधो अत्यंत अन्याय हो॥ ५ ॥
मैं अनेक उपसर्ग दिया आपने, कीधो छे पाप अघोर हो।
तिण पाप थकी किम छूटसूं, खमाऊं वारूंवार कर जोर हो॥ ६ ॥
ए वचन सुणी बोल्या मुनि, अभियाराणी ने कहे तिण वार हो।
ओ उपगार छे सर्व तांहरो, थासूं नही म्हारे वेष लिगार हो॥ ७ ॥
भिन भिन उपदेश देइ तेहने, साधु अभिया देवी ने दीधी समझाय हो।
तिण हर्ष संतोष पाम्यो घणो, आणी मारग ठाय हो॥ ८ ॥
पाछली रात ना समय नें विषे, सर्व कर्म तणो करी सोख हो।
छूटा संसार ना दुख थकी, पहुता अविचल मोख हो॥ ९ ॥
तिहां सदा काल सुख सासता, त्यांरो कहितां न आवे पार हो।
ते अनोपम सुख निराबाध छे, तिनूंई काल मझार हो॥ १० ॥
शील मांहें सेठा रह्या, ते प्रसिद्ध हुवा लोक मझार हो।
तिणसूं शील तणा गुण वर्णव्या, शील सर्व व्रतां मे सिरदार हो॥ ११ ॥
ए कथा रे अनुसारे कह्यो, अधिको ओछो कह्यो हुवे अजाण हो।
ते मिच्छामि दुक्कडं मांहरे, ग्यानी वदे ते प्रमाण हो॥ १२ ॥
ए चरित्र कियो सुदर्शन सेठ रो, नाथ द्वारे मेवाड मझार हो।
संवत अठारे पचासे समे, काती सुद पाचम शुक्रवार हो। मु०॥ धि० १३ ॥

●

सोरठा

सुण्यां तणो ओही सार, शील पाले नर जे सदा।
ते पामे भव तणो पार, इण वात में शका नही॥ १ ॥
एसो शील निधान, भव जीव हितकरी आदरे।
ते जासी निश्चे निर्वाण, देवलोक मे सांसो नही॥ २ ॥

षट दरसण के मांय, शील अधिको बखाणियो।
तप जप सहू खप जाय, शील विनां एक पलक में ॥ ३ ॥
किहां ताई कीजे बखाण, शील व्रत नां गुण तणा।
जोवो सूत्र पुराण, शील सारां ही अधिको कह्यो ॥ ४ ॥
ए शील तणा वखाण, पढे सुणे जे हितकरी।
होवे पवित्र जीभ कान, सुख पामे स्वर्गां तणा ॥ ५ ॥

रत्न : २०

चेलणा रो चोढालियो

दुहा

राय श्रेणिक राणी चेलणा, त्यांरे श्रद्धा तणो छे विवाद।
राजा रे गुरु छे बोधमती, चेलणा रे गुरु छे साध॥ १॥
राजा थापे ते राणी उत्थाप दे, राणी थापे ते उत्थापे राय।
मांहोमां दोनूं छल जोवता, करे अनेक उपाय॥ २॥
राजा जाणे राणी भणी, घालूं म्हारा धर्म मांय।
इमहिज जाणे राणी चेलणा, राजा नें देऊं समझाय॥ ३॥
राजा राणी रा गुरु थकी, मन भांगण रो करे उपाय।
इम हिज खप राणी करे, जाणे कुगुरां नें देऊं ओलखाय॥ ४॥
तिणसूं बोद्ध मत्यां नें राणी नेंतने, जीमाय किया त्यांनें खिष्ट।
वले अग्नि लगाय नसाय ने, जाबक मेल्या भिष्ट॥ ५॥
जब राय श्रेणिक कोपे चढ्यो, उपनी मन में गेर।
भूंडा देखाऊं इणरा गुरु भणी, प्रगट लेऊं पाछो बेर॥ ६॥
राजा ने भक पडे नही, तिणसूं करे छे आल पंपाल।
अन्हाखी थको शुद्ध साध ने, खप करे छे देवा आल॥ ७॥

ढाल : १

[ते किम तिरसी ससार नें]

तिण कालने तिण समें, सुदर्शन नामें अणगार हो। भवियण।
एकल पडिमां तिण आदरी, करता उग्र बिहार हो। भवियण।
साधु सदाई सुहामणा*॥ १॥
हाड मिजा रंगी जिनधर्म सूं, त्यांरो पूरो साधा सूं प्रेम हो। भ०।
त्यांरे हिवडा में भितर बस रह्या, जाणे हीरा जडियो हेम हो। भ०॥ २॥
ज्यां तप कर काया सोखवी, वले समता रस भरपूर हो। भ०।
आचार माहे अति उजला, सत्यवादी अति सूर हो। भ०॥ ३॥
ज्यांके सोनो पत्थर सारिखो, ज्यांके अस्त्री तृणा समान। भ०।
ज्यांके शत्रू ने मित्र सारिखा, निश्चल ज्यांरो ध्यान हो। भ०॥ ४॥
जीवण री वछा नही, मरण तणो भय नाही हो। भ०।
त्यां पूठ दीधी संसार नें, सुरत मुगत रे मांहि हो। भ०॥ ५॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

अटल विहारी एकला, सहे रह्या शी ताप हो। भ०।
पराक्रम त्यांरो अति घणो, पंचख्या अठारे पाप हो। भ०॥ ६॥
लब्धि जिणाने ऊपनी, करता उग्र विहार हो। भ०।
सीह सर्पादिक सूं डरे नहीं, नहीं बाछे किण रो आधार हो। भ०॥ ७॥

दुहा

राजग्रही नो अधिपति, श्रेणिक नामे राय।
तस राणी चेलणा सती, त्यांरी बात सुणो चित्त ल्याय॥ १॥

ढाल : २

[भरत खेतर रे]

भरत क्षेत्र रे, दक्षिण दिश सुहामणो।
तिण ठामें रे, मगध देश रलियामणो।
तिण देश में रे, नगरी छे राजग्रही भली।
सुंदर सोभती रे, सूत्र सिद्धात माहे चली।
सूत्र माहे वर्णन तेहनो, धन धान ऋद्ध करने भरी।
महल मंदिर अति ही सोभता, जाणे अलका नी पुरी॥ १॥

तिण नगरी रो रे, राय श्रेणिक छे अधिपति।
पटराणी रे, चेलणा मोटी सती।
तिण संघाते रे, सुख भोगवे ससार नां।
काम भोग रे, भोगवे पांच प्रकार ना।
पांच प्रकार नां सुख भोगवे, प्रीति मांहोमां अति घणी।
पिण धर्म श्रद्धा जूदी जूदी छे, राय राणी दोयां तणी॥ २॥

चेलणा राणी रे, पुत्री छे चेडा राजान री।
ते तो श्राविका रे, भगवत श्री वर्धमान री।
तिण जीवादिक रे, जाण लियो रूडी परे।
देवादिक थी रे, केहनी डराइ नही डरे।
डरे नहीं देवादिक त्यांसूं, श्रद्धा सेठी घणी।
चलाई नही चले किणसूं, तिण रे मिथ्यात्वी मिलियो घणी॥ ३॥

त्यांरे मांहोमां रे, झोड झपाड हुवे घणी।
पिण चेलणा रे, संक न राखे घणी तणी।
जब श्रेणिक रे, एकदा चिंतवे मध्य रात रो।
हिवे कायक रे, जत्न करूं इण बात रो।
कांइ जत्न करे इण बात केरो, भिष्ट मेलूं एहनां गुरु भणी।
फजीत करूं इण लोक माहें, तो बात शिरे हुवे हम तणी॥ ४॥

दुहा

तिण काले नें तिण समे, सुदर्शन नामे अणगार।
ते नगरी राजग्रही समोसर्‍या, ते सुणज्यो विस्तार ॥ १ ॥

ढाल : ३

[हूंतो केसर चदन चरचू, हूंतो जिन जी अंगिया अरचू]

ते स्वामीजी राजग्रही मे आया, राणी चेलणा रे मन भाया हो। स्वामी जी।
थारा दर्शण री बलिहारी* ॥ १ ॥
थे शील सजम दृढ धारी, वले एकला उग्र बिहारी हो ॥ २ ॥
चेलणा ने दीधी वधाई, सुण हर्ष हुई मन मांहि हो ॥ ३ ॥
साधु बेठा देवल माही, तिहा चेलणा वांदण आई हो ॥ ४ ॥
स्वामी जी ने निजरा दीठा, लागा अमृत सम मीठा हो ॥ ५ ॥
मोने मोटा सगुरु मिलिया, जाणे मुह माग्या पाशा ढलिया हो ॥ ६ ॥
म्हे तो चरण तुमारा भेट्या, म्हे तो भव भवनां दुख मेट्या हो ॥ ७ ॥
मुख सूं करे गुणग्राम, बंदणा कीधी शीश नाम हो ॥ ८ ॥
म्हे तो हर्ष सू वाद्या आज, म्हारा सरिया छे बंछित काज हो ॥ ९ ॥
म्हे तो पूर्व सुकृत कीनो, तिणसूं स्वामी जी दर्शन दीनो हो ॥ १० ॥
म्हारे आज भला भाग ऊगो, म्हारो मन रो मनोरथ पूगो हो ॥ ११ ॥
हूंतो आज हुई कृतकार, म्हे तो स्वामीजी नो दीठो दीदार हो ॥ १२ ॥
म्हे दर्शण दीठो साधु रो रूडो, म्हारा कर्म हुवा चकचूर हो ॥ १३ ॥
थे तो तप जप करो दिनरात, करो छो कर्मां री घात हो ॥ १४ ॥
थे गुण कर गहर गभीर, थेतो पाम्या भवजल तीर हो ॥ १५ ॥
थे तो सेठा छो साहस धीर, थेतो कर्म काटण वड वीर हो ॥ १६ ॥
थे तो साचेला सूर वीर, थे तो जाणो छो पर तणी पीर हो ॥ १७ ॥
थे तो मोटा छो मुनिराज, थे तो तारण तिरण जिहाज हो ॥ १८ ॥
थे तो शील सजम मे सेंठा, मुक्ति महल रे बारणे बैठा हो ॥ १९ ॥
आप अभय दान रा दाता, थे तो संजम मे रग राता हो ॥ २० ॥
थे तो भव तारण गुरु मिलिया, म्हारा भव भव ना दुख टलिया हो ॥ २१ ॥
सेणी श्राविका चेलणा राणी, तिणने श्री वीर वखाणी हो ॥ २२ ॥
साधु ने वांदी ने वारूंवार, पाछी आई महल मझार हो ॥ २३ ॥
राणी श्रेणिक राजा रे पास, साधु ना गुण किया हुलास हो ॥ २४ ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

दुहा

श्रेणिक समदृष्टी नही, नही माने राणी री बात।
राणी गुण करे साधां तणा, ते गमे नही तिल मात ॥ १ ॥
वले राणी चेलणा कहे, सांभलजो महाराज।
मोटा गुरु छे मांहरा, तारण तिरण जिहाज ॥ २ ॥
ज्यां भोग छांडे जोग आदर्‍यो, करणी ज्यारी सार।
ज्यां त्यागी कनक नें कामणी, ते विरला इण संसार ॥ ३ ॥
जब श्रेणिक कहे राणी सुणे, म्हारा गुरु री होड न होय।
थारा गुरु म्हांसूं छानां नहीं, तूं गाढ म राखे कोय ॥ ४ ॥
तो पिण चेलणा चरचा करे घणी, राजा नें समभावण ताय।
राजा जाणे इणनें करू पाधरी, एहवो करूं उपाय ॥ ५ ॥
राजा सेवग नें हुकम कियो, जाय जोवो शहर रे माय।
राणी गुरु किण ठामे उतर्‍या, मोने कहिजे सताब सू आय ॥ ६ ॥
जब सेवगां शहर मे जोय ने, कह्यो राजा नें आय।
महाराणी रा गुरु देवल मझे, उतरिया छे ताय ॥ ७ ॥
जब राय श्रेणिक तिण अवसरे, एक वेश्या ने 'कहे छे बोलाय।
एक साधु देवल माहे उतर्‍यो, तिणनें भिष्ट कर दे तिहा जाय ॥ ८ ॥
जब वेश्या हांथ जोडी कहे, साभलजो महाराज।
जाऊं देवल मे सताब सूं, साधू नें भिष्ट करसं आज ॥ ९ ॥
इम कहे वेश्या निकली, आइ देवल मझार।
चोकीदार चिहुं दिश राखिया, त्यां आडा जडिया कमाड ॥ १० ॥
राणी ने खिष्ट करवा भणी, ए राय श्रेणिक कियो काम।
धर्म तणो धेषी घणो, तिणरा दुष्ट घणा परिणाम ॥ ११ ॥

ढाल : ४

[चौपाई]

वेश्या ने साधु देखी देवल मझार, वले आडा जडिया देख कमाड।
जब साधु विचार कियो मन मांय, ओतो उपसर्ग उपनो आय ॥ १ ॥
ओतो दीसे धेषी रो काम, साधु ने भांड करवा आम।
सूर्य ऊगां लोग देखसी नार, साच भूठ रो कुण काढेला तार ॥ २ ॥
ओ तो आवतो दीसे अणहूंतो आल, इण बात रो कुण काढे नीकाल।
इं तो भूठो पडू इण लोकां मांय, ते तो मोसूं खमियो न जाय ॥ ३ ॥

वले जिनमारग री हेला थाय, ओर साधां री संका पडे लोकां माय।
तो जिनमारग री बिगडे बात, तो मो मे लब्धि छती साख्यात॥ ४॥
तो हू लब्धि फोरवने जोगी होय, ज्यू मोने साधु न जाणे कोय।
हिवे इण वात रो आधो काढू नही, पछे प्रायश्चित ले शुद्ध होसूं सही॥ ५॥
लब्धि फोड मुख काढी आग, वेश्या देख गई दूर भाग।
वले भय भ्रांत हुइ अत्यंत, ओ साधु कुण कुण करे विरतंत॥ ६॥
वस्त्र पात्र ओघो मुहपती, बाकी उपकर्ण नही राख्यो रती।
सगलाई वाल किया तिण छार, जोगीश्वर वणियो तिण वार॥ ७॥
वर्ण फेर लगाइ बभूत, जाणे अगड वंब वेठो अवधूत।
भांग कुडी ने घोटो खास, ते पिण पडिया छे तिण पास॥ ८॥
लांबी लटिया जटा री असराल, गले घाली रुद्राक्ष री माल।
सिंदूर री टीकी ने आंख्यां लाल, विछाय बेठो चीता री छाल॥ ९॥
हाथ मे पकड्यो हरिण रो सीग, जाणे होय बेठो बाबा रो धीग।
तूबी हाथ वले लोहनो कडो, ऊचो वेठो कर राखरो दडो॥ १०॥
ए विरतंत देखने वेश्या नार, धड धड धूजे छे तिण वार।
रखे वाल करे मोने छार, तो कुण मोने राखणहार॥ ११॥
वले टुगर टुगर वेश्या रही जोय, इहां तो जोर न लागे कोय।
जो हू नीकल जाऊं जीवती इण वार, तो हू नवीकला आइ संसार॥ १२॥
हाथ जोडी कहे वेश्या नार, बाबा म करजो म्हारी छार।
म्हे तो न जाणी इसडी वात, म्हे देखी छे आप तणी करामात॥ १३॥
जब साधु कहे रहे म्हांसूं दूर, छोड दीजे सर्व कपट ने कूर।
जब वेश्या जुलक जुलक रही जोय, ओ चले जिसो दीसे नहीं कोय॥ १४॥
जो हूं करू विषय री बात, तो बाल जाल करे म्हारी घात।
जो हूं अवके छूटूं जीवती आम, तो इण भेष रो कदे नही लेवूं नाम॥ १५॥
हिवे राय कहे सुण राणी वाय, थारा गुरु वेश्या देवल मांय।
वले देवल कंवाड जड दिया ताय, जो संका हुवे तो जोवो जाय॥ १६॥
जब राणी कहे सुणजो महाराज, जे एहवो मोटो करे अकाज।
वेश्या ने मेली राखे सोय, ते तो गुरु थांराइज होय॥ १७॥
वले राणी कहे चालो महाराय, आपे जाय जोवां देवल मांय।
आपे चोडे देख लेसां महाराज, गाडो उललियां किसो विनायक काज॥ १८॥
जेहना गुरु होसी महाराज, ते नीचो मुख घालने लाजसी आज।
इण वात रो काढो तुरत नीकाल, अप अणहूतो मत दो आल॥ १९॥

इम सुणनें राय कियो मन गाढ, वले राय राणी ने पोगां चाढ।
दोनूं आय ऊभा छे देहरा बार, जब लोक घणा मिलिया नर नार ॥ २० ॥
जोवे देवल रा खोल कमाड, मांहे जोगी रूप देख्यो तिण बार।
जब लाज्यो श्रेणिक राय विशेख, तिण जोगी साह्मों रह्यो छे देख ॥ २१ ॥
राय विचार कियो मन एम, इयां थी साधु नीकल गयो केम।
जोगी नें आण घाल्यो इण ठाम, तिण पाडी लोकां मे म्हारी माम ॥ २२ ॥
हाको बाको हुवो छे राय, साधु उठीने कठी गयो ताय।
राय माथो नीचो रह्यो घाल, चेलणा राणी रे हुवो छे ख्याल ॥ २३ ॥
राणी कहे पहली म्हे कह्यो महाराज, अबे गुरु चेला री न रही लाज।
म्हे साची थकी कही थी इसी, राणी राजा साह्मों जोवे हसी ॥ २४ ॥
ऊंचो रह्यो राणी रो बोल, श्री जिनधर्म रो वधियो तोल।
श्रेणिक रो बोल नीचो थयो, आल दियो पिण यूं ही रह्यो ॥ २५ ॥
राय जाण्यों गइ छे म्हारी शर्म, म्हे आल देने यूंही बांध्या कर्म।
साचां री आइ लोकां ने प्रतीत, श्रेणिक लोकां में हुवा फजीत ॥ २६ ॥
जिनमारग री महिमां वधी, राय श्रेणिक आल दीधो जदी।
करडी आण वणी तिण ठाम, साधु लब्धि फोरवी ताम ॥ २७ ॥
ते पिण आलोवण कर मुनिराय, प्रायश्चित ले सुद्ध हुवो ताय।
साधु तो अणसण कर ताम, सुर लोकमे गयो तिण ठाम ॥ २८ ॥
श्रेणिक ने चेलणा रो अधिकार, पूरो कियो गोगुंदा मझार।
संवत अठारे गुणचासा मझार, वेसाख विद इग्यारस सनीश्चर वार ॥ २९ ॥

रत्न : २१

सास बहू रो चोढालियो

दुहा

श्री अरिहंत देव तेहनों, एहवो छे उपदेश।
राग द्वेष करो मती, छांड दो सकल कलेश ॥ १ ॥
राग द्वेष सूं अनर्थ नीपनों, बाधे कर्म अथाय।
ते मरनें माठी गति मे गया, ते सुणजो चित ल्याय ॥ २ ॥
तिण काले ने तिण समें, वसंतपुर नगर मझार।
तिहां धनावो नांमे सेठ थो, तिणरे भद्रा नामें नार ॥ ३ ॥
दोय पुत्र धनावा सेठ रे, भद्रा ना अंगजात।
धनदत्त नें धनमित्र हुतो, ते प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ ४ ॥
धन करनें प्रभूत छे, तिणसूं गंज न सके कोय।
मेढी भूत थो सारा कुटुंब मे, दिन दिन दोलत बधती होय ॥ ५ ॥
दोनूं बहू दोनूं बेटां तणी, सासू रा मुख आगल ताय।
राग छोटा बेटा री बहू ऊपरे, बडी री गिणत न काय ॥ ६ ॥
तिणसूं फेर राखे खाणे पहरणे, बले काम काज विशेष।
तिणने बादी नी परे रोलवे, तिणसूं राखे अभितर द्वेष ॥ ७ ॥
घर मांहे आछी वस्तु बाप रे, ते पिण तिणनें देवे नांही।
छोटी नें देवे छाने ने देखतां, तिणसू आ पिण धुखे मन मांही ॥ ८ ॥
राग द्वेष घर माहे ऊपजे, सगलो सासू रा पख सूं जाण।
तिणसू जमे उठी त्यारा घर तणी, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ९ ॥

ढाल: १

[रे जीव मोह अनुकपा न आणिये]

सासू हुती अति पापणी, तिणरे राग ने द्वेष अत्यंत रे।
वले लोभ लालच तिणरे घणो, सीख दे तिणसूं तुरत लडंत रे।
राग द्वेष जगत मे अति बुरा* ॥ १ ॥
घर में विश्वास न करे केहनों, घर री ममता घणी दिन रात रे।
कलेस करवाने ताती घणी, किससूं सकती नही तिल मात रे ॥ २ ॥
वले धर्म तणी धेषण घणी, तिणरो रहतो माठो ध्यान रे।
कोइ साधु जातो तेहने घरे, त्याने कदेय न दीधो दान रे ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

वले बर्ज राख्या घर रां भणी, मत दीजो साधां नें दान रे।
कुपात्रदान ने आगी घणी, तिणरे मन मे घणो अभिमान रे॥ ४ ॥
कोइ दान देतो साधां भणी, तिणनें बर्ज देती अंतराय रे।
जब साधु निजर पडे तेहनीं, तो तिणनें दीठांई न सुहाय रे॥ ५ ॥
वले निंदा करती साधां तणी, श्रावक श्राविका ऊपर द्वेष रे।
कोइ बात कहे तिणने धर्म री, तो जागे द्वेष विशेष रे॥ ६ ॥
दान शील तप भावना तणो, तिणमें गुण मूल नही लिगार रे।
वले बतलायां विलगे घणी, लडबानें हुय जाय तयार रे॥ ७ ॥
बडी बहू सूं द्वेष राखे घणो, आछो खावा न दे घर मांय रे।
तिणनें जुदी पिण करे नही, तिणरे नित नित दे अंतराय रे॥ ८ ॥
उणरे पिण सासू सूं द्वेष अति घणो, सासू री बांछे नित घात रे।
इण पापणी मूंआं विना, मोनें सुख नही तिलमात रे॥ ९ ॥
बडी वहू अति दुखणी थकी, सासू नें देवे नित सराप रे।
इणरो जोग मिल्यो छे मांह रे, म्हारे प्रकट्या छे पूर्व पाप रे॥ १० ॥
दोया मे समता नही केहनें, तिणसूं दिन दिन बधे छे राड रे।
राग द्वेष ज्यांरा घर में बध्यो, त्यांरो निश्चे भूंडो होणहार रे॥ ११ ॥

●

दुहा

सासू वहू नें दुख देतां थकां, नित देतां देतां अंतराय।
त्यांरे किण विध अनर्थ नीपनो, ते सुणजो चित ल्याय॥ १ ॥

ढाल : २

[डाभ मूंनादिक नी डोरी]

बडी बहू चिंतवे मन मांय, म्हारी गिणत न दीसे काय।
मोने जूदी पिण करे नांही, आछी वस्तु न देवे कांई॥ १ ॥
दूध दही नही घाले म्हांने, तो हूं पिण खाय लेसूं छाने।
इसडो मतो बडी बहू कीधो, छाने दोय पली दूध लीधो॥ २ ॥
तिणनें देखे देराणी ताय, सासू नें सिलगाई आय।
विवरा सुध कही बात विशेष, सुण सासू ने जाग्यो द्वेष॥ ३ ॥
तिणरे कने सताब सूं आई, तिणसूं कीधी बहुत लडाई।
कहे तूं तो हुइ चीदाई, चोरी करता पिण लाज न आई॥ ४ ॥
कु घराणा री तूं इहां आई, म्हारा घर री घरबट गमाई।
मोसा मर्म बोल्या बारूंबार, इणरो कीधो लोकां मे उघाड॥ ५ ॥

जब इणने पिण जाग्यो द्वेष, आ पिण करडी बोली विशेष।
यांरे प्रीति रही नहीं काई, तूटी सासू बहू री सगाई॥ ६ ॥
दोनूं हुई घणी विकराल, दोनूं बोले घणी असराल।
आप मुलायदो आप सारे, आप बिगाड्यां सूं बिगड़े छे लारे॥ ७ ॥
वहू तो सासू रे दुख दाधी, तिण क्रोध सूं पासी खाधी।
उण कीधो तिहां थी काल, सर्पणी हुई विकराल॥ ८ ॥
सर्पणी फिरे तिण घर मांय, देवर ने भटीस्यो आय।
अकाले हुई विष सूं घात, देराणी हुइ रीते हाथ॥ ९ ॥
काल वीतो कितोएक ताय, देराणी ने पिण खाधी आय।
देराणी पिण कर गइ काल, सासू रोवे आंसूडा राल॥ १० ॥
सासू ने दुख लागो छे ताम, तिण हाथ कमाया काम।
थोडे वेबज कियो राग धेष, तिणरा फल लिया निजरा देख॥ ११ ॥
सासू दुख करे छे ताण ताण, तिणने पिण भटीरी आण।
इणरे पिण उठी भालोभाल, सासू पिण कर गइ काल॥ १२ ॥
आतो राग द्वेष री घाली, आ पिण आसा अलूधी चाली।
क्रोध रे वस मूंई छे ताह्यो, मरनें कांवली हुई छे जायो॥ १३ ॥
कांवली सर्पणी ने देख, तिणने जाग्यो द्वेष विशेख।
पूंछडी थी सर्पण ने उपाडी, ऊंची ले जाय सर्पण ने पछाडी॥ १४ ॥
ऊंची लेजाय लेजाय, नीची नीची न्हाखे छे ताय।
इण रीते दुखे दुखे मार, सर्पणी ने खाधी तिण वार॥ १५ ॥
सर्पणी मर होय गइ मिनकी, उदरादिक खाए नितकी।
सासू रो जीव कांवली ताहि, तिणने भपट लीधी मुख माहि॥ १६ ॥
कांवली मर कुत्ती होय, तिण मिनकी ने मारी सोय।
तिण हिंसा रा पाप सूं ताहि, सासू गई पहली नरक मांहि॥ १७ ॥
वहू रो जीव मिनकी ताय, आ पिण क्रोध तणे वस थाय।
आ पिण गई पहली नरक मांय, सासू रे समीपे जाय॥ १८ ॥
तिहा पिण मांहोंमांहि जाग्यो द्वेष, पूर्वलो वेर विशेष।
एक सागर लागे मार खाय, तिहां दुख अनतो पाय॥ १९ ॥

●

दुहा

लारे धनावो सेठ धनमित्र रह्या, त्याने फिकर घणी छे ताय।
विरहो पड्यो मिनखां तणो, ते दुख सह्यो न जाय॥ १ ॥

तिहां विचरत आया केवली, वसतपुर, नगर मझार।
त्यांने बाप बेटे आया सुणे, पाम्यां हर्ष अपार॥ २॥
त्यां समीपे आय वदणा करे, पूछा करी तिण बार।
म्हांरा तीन मिनखां ने खाधा सर्पणी, तिणरो कहो आप विचार॥ ३॥
अब केवल ग्यानी माडे कही, विवरा सुध सर्व बात।
सासू बहू रे बेर उगट्यो, तिणसूं पामी अकाले घात॥ ४॥
बाप बेटे बेहूं सांभली, सासू बहू री बात।
त्यांनें संसार खारो लागो तिहां, छोड दीधी निज आथ॥ ५॥
चारित्र लीधो बेहूं जणा, रूडी रीत सूं पाल।
पहले देवलोके ऊपनां, त्यां पाम्यां सुख रसाल॥ ६॥
पहला देवलोक थी चवी, पामें नर अवतार।
चारित्र चोखो पालने, गया अचू देवलोक मझार॥ ७॥
अचू देवलोक सूं चवी, उपना महाविदेह क्षेत्र मांय।
तिहां साधपणो सुध पालने, बेहू मुगत विराज्या जाय॥ ८॥
हिवे सासू नें बहू दोनूं जणी, पहली नरक थी नीकली ताय।
कुण कुण ठिकाणे ऊपनी, ते सुणजो चित ल्याय॥ ९॥

ढाल : ३

[धर्म आराधिये ए]

पहली नरक थी नीकली ए, दोनूं कागली हुइ छे आय।
मोटी हुआं पछे ए, बेर जाग्यो त्यांरे मांहो माय।
बूडी रागद्वेष सूं ए* ॥ १॥
ते दोनूंई माहोमां लड मूई ए, गई बीजी नरक मझार।
आउखो सागर तीन रो ए, तिहां खाधी अनती मार। बू० २॥
सासू नीकली बीजी नरक थी ए, चीतरी हुइ छे ताय।
बहू पिण चीतरी हुइ ए, देखीने जाग्यो द्वेष अथाय॥ ३॥
ए दोनूं माहोमां लड मूई ए, तिहां कीधी मांहोमां घात।
तीजी नरके गइ ए, तिहां दुख भोगव्या सागर सात॥ ४॥
तीजी नरक थी नीकली ए, दोनूं जणी सीह थाय।
तिहा पिण मांहोमां लड मूंआ ए, दोनूं गया चोथी नरक मांय॥ ५॥
चोथी नरक थी नीकली ए, ए दोनूं जणी हुई साप।
एक एक नें विनाश ने ए, पांचमी नरक गई बांधे पाप॥ ६॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।

ए पांचमी नरक थी नीकली ए, ए सोक हुई माहो मांय।
लडाई त्यारे अति घणी ए, किणरी संक न मानी काय॥ ७ ॥
ए लडती लडती पाणी गई ए, कूआ रे काठे आय।
धक्को दियो शोक नें ए, न्हाखी कूआ मांय॥ ८ ॥
वहू शोक कूआ मे पडतां थकां ए, पकड्यो सासू सोक रो हाथ।
दोनूं कूआ में पडी ए, तिहां पामी अकाले घात॥ ९ ॥
ते मरनें छठी नरके गई ए, कर कर माहोमां रीस।
अनंतो दुख भोगव्यो ए, आउखो सागर बावीस॥ १० ॥
छठी नरक थकी नीकली ए, हुआ मछीगर नी जात।
मछलां रे कारणे ए, कीधी मांहोमां घात॥ ११ ॥
ते मरनें गया नरक सातमी ए, तिहां आउखो सागर तेतीस।
ज्यां लगे दुख भोगव्या ए, दोनूं जणी कर कर चीस॥ १२ ॥
सातमी नरक थी नीकली ए, दोनूं हुई माछलां री जात।
तिहां पिण वेर जागियो ए, त्या पिण कीधी माहोमां घात॥ १३ ॥
तिहां अनेक भव दोनूं जणी ए, कीधी मांहोंमां घात।
जलचरादिक तेहमे ए, दीठा जाग्यो बेर साख्यात॥ १४ ॥
इण विध बेर विरोध थी ए, मूंइ छे बार अनेक।
नरक तिर्यंच मे ए, तिहां मित्री न पाम्यो एक॥ १५ ॥

●

दुहा

विच माहे भव किया घणा, त्यांरो कहितां न आवे पार।
पछे अचोखी वेश्या पणे उपनी, दोनूं व्रजपुर नगर मझार॥ १ ॥
अछेप कुजात रा ऊपना, त्यासूं कुकर्म करे दिन रात।
लज्जा रहित दोनूंई निर्लज्जी, त्यारा इण रीते दिन जात॥ २ ॥
एक दिवस दोनूंई भेली हुई, मांहोंमांहि जाग्यो बेर।
कषाय ऊठी दोनूं तणे, ते लागे माहोमां जेर॥ ३ ॥
एक एक तणे मन ऊपनी, जीवां मारण री मन मांय।
ते मांहोंमा कद मूंइ किण विधे, ते सुणजो चित्त ल्याय॥ ४ ॥

ढाल : ४

[लोभ बुरो संसार में]

सासू रो जीव वेश्या हुइ रे, तिणरे माठी उपनी मन माहिं।
इणने जीवां मार्यां विना रे, म्हारो मान बधे नही ताहि। भविकजन।
द्वेष बुरो संसार* ॥ १ ॥
आहीज उपनी बहु वेश्या तणे रे, इणरी घात करू हू जाय।
तो रिजक रोटी सुखे मिले रे, म्हारो साल मिट्यां सुख थाय। भ० ॥ २ ॥
इण एहवी करे विचारणा रे, शस्त्र लीधो हाथ।
रात समें घर थी नीकली रे, कोई नही तिण साथ ॥ ३ ॥
उण रे पिण आहीज ऊपनी रे, शस्त्र लीधो हाथ।
आपण घर थी निकली रे, इण पिण कोइ न लीधो साथ ॥ ४ ॥
मारग मांहे बेहूं जणी रे, मेली हुइ छे ताहि।
मांहोमां शस्त्र थकी रे, घात कीधी छे ताहि ॥ ५ ॥
ते मरनें दोनं गइ रे, छठी नरक रे मांय।
तिहां थी मरनें हुइ माछली रे, पछे पडी निगोद में जाय ॥ ६ ॥
अनंत काल निगोद में रे, भोगव्या दुख अनंत।
तिणरो कहितां पार आवे नही, तिहां दुख मांहे दुख अत्यंत ॥ ७ ॥
आदि अंत रहित ससार मे रे, भ्रमण करसी तिण मांय।
इम जाणी राग द्वेष परहरो रे, ज्यूं मुगत विराजो जाय ॥ ८ ॥
जिण घर में राग द्वेष ऊपजे रे, तिणसूं आछो कदेय म जाण।
अजस अकीर्ति हुवे अति घणी रे, अनेक वस्तु नी हाण ॥ ९ ॥
राग द्वेष ओलखायवा रे, जोड कीधी माधोपुर मझार।
संवत अठारे अडताले समे रे, काती विद आठम गुरुवार ॥ १० ॥

---

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है।